निकोलाई ऑस्त्रोवस्की

अग्नि-दीक्षा

अनुवादक
अमृतराय

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा०) लि०,
नयी दिल्ली

N. Ostrovsky
How The Steel Was Tempered
का हिन्दी अनुवाद

पहला हिन्दी संस्करण नवंबर १९५४
दूसरा हिन्दी संस्करण जुलाई १९६३
तीसरा हिन्दी संस्करण जनवरी १९७३
चौथा हिन्दी संस्करण दिसंबर १९७७
पांचवां हिन्दी संस्करण फरवरी १९८०
छठा हिन्दी संस्करण सितंबर १९८१
(PH-92)

मूल्य : १० रुपये

जितेन सेन द्वारा न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस, रानी झांसी रोड, नयी दिल्ली-५५ से
मुद्रित और उन्हीं के द्वारा पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लिमिटेड,
रानी झांसी रोड, नयी दिल्ली-५५ की ओर से प्रकाशित ।

निकोलाई आॅस्त्रोवस्की के उद्देश्य के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए फ्रांस के मनीषी श्री रोम्या रोला ने लिखा था

"विप्लव के बीच जिन नये मनुष्यों का जन्म होता है, वे ही मनुष्य विप्लव की सबसे महान रचना होते हैं। कष्टों से पीडित पृथ्वी को विदीर्ण करके उसीके भीतर से एक महान, उदात्त सगीत की तरह नवजीवन का विस्फोट होता है। वह एक ऐसे अग्निमय प्राण के समान होता है जो नये विश्वास की घोषणा करके सातो आकाशो को गुजाता दिखाई देता है। ऐसे मनुष्य जब पृथ्वी से उठ जाते हैं, तो उसके बहुत दिनो बाद तक भी उनकी विश्वासभरी वाणी दसो दिशाओ मे प्रतिध्वनित होती रहती है। भविष्य मे ये ही व्यक्ति महाकाव्यो और वीरचरित गाथाओ के नायक और प्रेरक बनते हैं।

"निकोलाई आॅस्त्रोवस्की ऐसे ही मनुष्य थे। साहसपूर्ण और उद्दीप्त प्राण के लिये समर्पित उनकी जीवन कहानी मानो एक उदात्तमय सगीत है। आॅस्त्रोवस्की का समग्र अस्तित्व कर्ममुख सग्राम की एक अग्निमय शिखा के समान था। मृत्यु की रात्रि उसे जितना ही चारो ओर से घेरती थी, वह शिखा उतनी ही उज्वल ज्योति से उद्भासित हो चमक उठती थी।

"आॅस्त्रोवस्की ने एक बार भावनापूर्ण भाषा मे मेरे पास अभिनन्दन भेजा था और उसके उत्तर मे मैंने लिखा था· 'आपको जीवन के अनेक अन्धकारमय दिनों के बीच से गुजरना पडा है, किन्तु इसमे सन्देह नहीं कि आपका यही जीवन आकाशदीप की तरह सहस्रो व्यक्तियो को दिशाओ का निर्देश करायेगा। दुनिया के लिये आप एक उदाहरण हैं। व्यक्तिगत मुसीबतो के आप पर जो छिपे प्रहार हुए, उनके खिलाफ आपका जीवन आत्मिक शक्ति की विजय का एक प्रेरणाप्रद उदाहरण है। कारण कि आपने अपना जीवन स्वदेश की महान जनता के साथ एकाकार कर दिया था—उसी जनता के साथ जो अपनी शक्ति के बल पर आज पुनर्जीवित हो सफलता के साथ अधिकारों का उपभोग कर रही है। जनता के उसी शक्तिप्रद आनन्द और दुर्दम्य प्राणशक्ति को आपने अपने जीवन मे आत्मसात किया। जनता के साथ आपका यह एकाकार होना पूर्ण रूप से सफल हुआ है।' "

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की और उनका उपन्यास

सोवियत साहित्य के इतिहास में निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के उपन्यास अग्नि-दीक्षा की बहुत महत्वपूर्ण जगह है। इस पुस्तक की रचना, और इसी की रचना नहीं, ऑस्त्रोवस्की का समूचा साहित्यिक कृतित्व एक वीर बोल्शेविक के साहस की कहानी है।

ऑस्त्रोवस्की का जन्म १६०४ में रोवनो प्रदेश के ऑस्त्रोवस्की जिले के विलिया नामक ग्राम में हुआ था। उसका पिता मजदूर था मगर आमदनी इतनी कम थी कि उसकी माँ और छोटी बहनों को खेत-मजदूर का काम करना पड़ता था। उसका बड़ा भाई एक लुहार का अपरेन्टिस था जो अपने मजदूरों के साथ बहुत बुरा बर्ताव करता था। इस भावी लेखक के बचपन पर बेहद गरीबी और कठोरतम शोषण की जो छाया पड़ी थी, उसने उसके हृदय में अपने वर्ग-शत्रुओं के विरुद्ध तीक्ष्ण घृणा का बीज बो दिया था और सामाजिक अन्याय और मनुष्य के अपमान के विरुद्ध प्रतिवाद करने की प्रेरणा भी डाल दी थी। नौ बरस की उम्र में वह गड़ेरिये का काम करता था और ग्यारह बरस की उम्र मे उक्रेन के शेपेतोवका नामक नगर के स्टेशन पर एक छोटे से रेस्तोरां मे बावर्चीखाने में काम करता था।

रेस्तोरां में गन्दगी और गुलामी का जो वातावरण था, उससे बचने के लिए किशोर निकोलाई अपना अधिकांश समय अपने भाई के साथ गुजारता था जो रेलवे डिपो मे एक मिस्त्री था।

इसी जगह पर उसने मानव अधिकारों के लिए मजदूरों के संघर्ष की बात सीखी और बोल्शेविकों के मुंह से लेनिन और उनके विचारों के बाबत सुना।

गांव के स्कूल में किशोर निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने अपना परिचय एक असाधारण मेधावी विद्यार्थी के रूप में दिया। जब वे लोग शेपेतोवका आ गये तो निकोलाई के माता-पिता ने उसको एक-दो साल स्कूल में भेजा। मगर कुछ ही महीनों बाद धर्मशास्त्र पढ़नेवाले पादरी की सिफारिश पर उसको वहां से निकाल दिया गया क्योंकि वह टेढ़े-टेढ़े सवाल करके पादरी साहब को तंग किया करता था।

१९१७ की क्रान्ति ने निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के लिए शिक्षा के दरवाजे खोले। वह बिजलीघर में आगवाले का काम भी करता था और उसके साथ ही साथ पढ़ता भी था और स्कूल से निकलनेवाले एक साहित्यिक पत्र और अपनी ही स्थापित की हुई एक साहित्यिक गोष्ठी के संचालन में भी योग देता था। किशोरावस्था में निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के सबसे पूजनीय वीर गैरीबाल्डी और गैड-फ्लाई जैसे लोग थे। वह बहुत पढ़ता था और उक्रेन के महान क्रान्तिकारी कवि तारस शेवचेन्को की कृतियां, गोगोल की रोमानी कहानी 'तारस बुल्बा' और दूसरे महान प्राचीन लेखकों की कृतियां किशोर ऑस्त्रोवस्की को सबसे ज्यादा भाती थीं और उसके मन पर उन्हीं का सबसे ज्यादा असर था।

उक्रेन में घमासान गृहयुद्ध हो रहा था और नयी पीढ़ी के लोगों को अपनी ओर खींच रहा था। किशोर ऑस्त्रोवस्की और उसके अन्य मित्र, आक्रमणकारियों से और देश के साथ विश्वासघात करके जर्मन सेनाओं से मिल जानेवाले उक्रेनी पूंजीपतियों से लड़ने में गुप्त क्रान्तिकारी कमिटी को मदद पहुंचाते थे। शेपेतोवका के मुक्त हो जाने पर नौजवान ऑस्त्रोवस्की ने आगे बढ़कर वहां की जिन्दगी को व्यवस्थित करने और चोरबाजारी करनेवालों और क्रान्ति के दुश्मनों से लड़ने में क्रान्तिकारी कमिटी को मदद पहुंचाई।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की शेपेतोवका के सबसे पहले के पांच नौजवान कम्युनिस्टों में से एक था। अगस्त १९१९ में वह घर से भाग गया और लाल सेना में दाखिल हो गया और वहां पर उसने अपना परिचय एक बहादुर सैनिक के रूप में दिया। १९२० के ग्रीष्म में वह पहली घुड़सवार सेना की एक टुकड़ी के साथ, जिसने क्रान्ति-विरोधी पोलों के विरुद्ध संघर्ष में बड़ी कीर्ति अर्जित की थी, अपने नगर लौटा। मगर युद्ध अभी खत्म नहीं हुआ था और पन्द्रह वर्षीय ऑस्त्रोवस्की फिर मोर्चे पर जाने के लिए सेना में भर्ती हुआ। लुओव की लड़ाई में वह बुरी तरह घायल हुआ और उसकी दाहिनी आंख की रोशनी जाती रही। अस्पताल में दो महीना गुजारने के बाद उसे सेना से छुट्टी दे दी गई और वह शेपेतोवका लौट आया।

१९२१ के ग्रीष्म में ऑस्त्रोवस्की कीव चला गया जहां वह एक स्थानीय कोमसो-मोल (नौजवान कम्युनिस्ट) संगठन का प्रधान बना और उसके साथ ही साथ

एक रेलवे कारखाने में एलेक्ट्रीशियन का काम भी करता रहा। ये बहुत कठिन दिन थे। रोटी और ईंधन की सख्त कमी थी। निकोलाई आँस्त्रोवस्की नौजवान मजदूरों की एक टुकड़ी का नेता बना जिसका काम कुछ दूर के एक जगल से शहर में लकड़ी लाने के लिए नई रेलवे लाइन बिछाना था। यह काम बहुत ही कठिन हालतों में किया गया और गोकि इस काम में कामयाबी मिली मगर इसमें शक नहीं कि निकोलाई आँस्त्रोवस्की की तन्दुरुस्ती टूट गई। इसके तुरन्त बाद ही पतझड़ के दिनों में, जब कि अभी निकोलाई आँस्त्रोवस्की अपनी बीमारी के बाद ठीक भी नहीं हो पाया था, वह अपने कोमसोमोल साथियों के साथ मिलकर बाढ़ में से लकड़ी के पट्टे बचाकर निकालने में लग गया और इस काम के लिए उसे नीपर नदी में घुटने घुटने भर बर्फानी पानी में खड़ा रहना पड़ता था।

लड़ाई का उसका ज़ख्म, टाइफस बुखार और भयकर गठिया—तीनों ने मिल कर आँस्त्रोवस्की की तन्दुरुस्ती को इस बुरी तरह से तोड़ दिया कि उसे कीव का अपना काम छोड़ना ही पड़ा। मगर यह बात उसके गले के नीचे नहीं उतरती थी कि उसे बाकायदा रोगी करार दिया जाय और देश के राजनीतिक और रचनात्मक जीवन से उसका सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया जाय। वह बराबर आग्रह करता था कि उसको काम दिया जाय और तब फिर मजबूर होकर उसकी इच्छा का पालन करने के लिए उसे बेरोज़दोव भेजा गया। बेरोज़दोव पुरानी पश्चिमी सीमा पर एक छोटा सा उक्रेनी नगर था और वहा पहुचकर आँस्त्रोवस्की तुरन्त ही पार्टी और कोमसोमोल के महत्वपूर्ण काम में जुट गया।

१९२४ में आँस्त्रोवस्की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बना। तब तक उसकी तन्दुरुस्ती इतनी चौपट हो चुकी थी कि उसके लिए कोई भी काम करना असम्भव था। अच्छे से अच्छे विशेषज्ञों ने उसकी चिकित्सा की और उसे बहुत दिन तक सेनेटोरियम में भी रखा गया, मगर उस सबसे कोई नतीजा नहीं निकला और उसकी बीमारी बराबर तेजी से बढ़ती गई। १९२६ के अन्त तक आते-आते यह बात साफ हो गई कि यह वीर नवयुवक इसी तरह आजीवन शैया-ग्रस्त ही रहेगा। तीन साल बाद वह बिलकुल अन्धा हो गया और १९३० में हाथों और कुहनियों को छोड़कर सारा शरीर ऐसा जकड़ गया कि हिल-डुल भी न सकता था।

अब उसके अच्छे होने की कोई उम्मीद न थी और ऐसी हालत में निकोलाई आँस्त्रोवस्की ने एक ऐसी योजना अपने लिए निकाली, "जो उसके जीवन को कुछ सार्थकता दे सके।" उसकी अपनी स्थिति चाहे जितनी करुण रही हो, यह नौजवान बोल्शेविक ऐसे जीवन की कल्पना भी न कर पाता था जो जनता के कार्यों और सघर्षों से अलग हो। उसने लड़नेवालों की कतार में एक बार फिर शरीक होने का सकल्प किया और इस बार उसके हाथ में एक नया हथियार था—उसकी कलम। उसको

एक ऐसी किताब लिखने की लौ लगी थी जिसमें गुजरे हुए बहादुर जमाने की कहानी हो और जो पार्टी की नई पीढी को कम्युनिस्ट भावना के अनुसार ढालने में मदद पहुचा सके। पार्टी के प्रति उसकी यही सेवा होगी।

शायद १६२५ या १६२६ मे अपनी भयानक बीमारी के पहले दौर में, यह विचार पहली बार ऑस्त्रोवस्की के मन मे आया। बीते हुए सबसे शुरू के दिनों के कोमसोमोल सदस्यो के बहादुरी से भरे कारनामो और उन बीते दिनों के बारे में बाते करना उसे अच्छा मालूम होता था। और जिस तरह वह कहानी सुनाता था, उससे साफ पता चलता था कि उसको कहानी कहना आता है। मगर उन दिनों ऑस्त्रोवस्की यह नहीं सोचता था कि वह लेखक बनेगा। वह तो बाद मे जब कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय ने चिट्ठी-पत्री के कोर्स के जरिए उसको मार्क्सवाद और लेनिनवाद की खूब अच्छी शिक्षा दी, तब वह अपने अनुभवो को नई रोशनी मे देखने लगा और उसने इस बात को समझा कि उसकी मातृभूमि की आजादी मे लेनिन की पार्टी ने कितना अधिक योग दिया है और कम्युनिज्म के विचारो मे वह कौन-सी ताकत है जिसने उसके देश, देशवासियो को और खुद उसको भी एकदम बदल दिया है।

ऑस्त्रोवस्की बड़े मनोयोग से पुराने रूसी लेखको—पुश्किन, गोगोल, तुर्गनेव, तोल्सतोय, चेखोव और, सबसे अधिक गोर्की की कृतिया पढता था। गोर्की की कुछ चुनी हुई रचनाओ का एक सग्रह, 'मा' और ऐसी ही कुछ और किताबे ऑस्त्रोवस्की बराबर पढा करता था। बाद के सालो मे जब उसकी आख की रोशनी चली गई थी, तब वह अपने दोस्तो और सम्बन्धियो से अनुरोध करता था कि वे उसको गोर्की पढकर सुनायें और साहित्य के सम्बन्ध मे और मजदूर वर्ग के लेखक के कर्तव्यों के सम्बन्ध मे गोर्की के विचार नकल करके उसको दे। उसने गृहयुद्ध के बारे में समस्त राजनीतिक साहित्य बहुत अच्छी तरह पढा और उसमे भी खास तौर पर दिमित्री फुर्मानोव की दो कृतिया 'चपाइयेव' और 'म्युटिनी', सेराफिमोविच का 'आयरन फ्लड' और फादियेव का 'डिबैकिल'। इन सभी किताबों मे रूस के स्वतत्रता सग्राम और नये सोवियत मानव के जन्म की कहानी थी।

इसके बाद प्रथम पचवर्षीय योजना के वर्ष आए।

अन्य सोवियत नागरिको की तरह लाखो कोमसोमोल सदस्यो ने भी मेगनिटोगोर्स्क के लोहे के कारखाने, नीपर के लेनिन हाइड्रो-एलेक्ट्रिक स्टेशन, स्तालिनग्राद ट्रैक्टर प्लान्ट और इसी तरह के दूसरे विशाल निर्माण-कार्यों मे हाथ बटाया। दूसरी ओर इन्हीं दिनो करोडो किसानो ने सामूहिक खेती के आन्दोलन मे अपना योग दिया।

इन्हीं महान घटनाओं के असर से निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के नायक का अन्तिम रूप उसके मन में आया, वह नायक जिसे उसका सृष्टा "हमारे युग का चरित-नायक" पुकारता है।

नवम्बर १९३० में एकदम अन्धे और अशक्त हो जाने पर उसने अपने उपन्यास 'अग्नि-दीक्षा' पर काम करना शुरू किया। इस किताब का कुछ हिस्सा लेखक ने अपने हाथ से लिखा था, बावजूद उन तमाम कठिनाइयों और उस दर्द के जो निश्चय ही उसे महसूस हुआ होगा। बाकी उसने अपनी पत्नी, बहन और सबसे आत्मीय मित्रों को बोलकर लिखाया था। जून १९३३ में यह किताब पूरी हुई।

* * *

'अग्नि-दीक्षा' नये मानव के जन्म की कहानी है, समाजवादी युग के उस नये मनुष्य की जो मानवता के सुख के लिए होनेवाले संघर्ष में सब कुछ करने की योग्यता अपने अन्दर दिखलाता है, जो बड़े-बड़े काम अपने सामने रखता है और उन्हें पूरा करके दिखलाता है।

जिस हालत में यह किताब लिखी गई—इसको लिखने के लिए लेखक को जिस तरह यन्त्रणा से और रोग से लड़ना पड़ा, पार्टी और सोवियत अधिकारियों ने जिस तरह उसकी सहायता की जो न तो उसके मित्र थे और न सम्बन्धी—वह खुद इस बात का परिचायक है कि मानव-सम्बन्धों में कितना बड़ा परिवर्तन आ चुका है और नये मनुष्य का जन्म हो गया है।

जीवन की घोषणा करनेवाले जिस सशक्त विचार ने इस युवा लेखक के मन को पकड़ लिया था, और जिस तरह लेखक ने अपने-आपको "संसार की श्रेष्ठतम वस्तु मानवता की स्वतन्त्रता" के संघर्ष पर अपने-आपको न्योछावर कर दिया था, यही वह चीज थी जो उन सब लोगों को अपनी गिरफ्त में ले लेती थी जो निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के सम्पर्क में आते थे।

'अग्नि-दीक्षा' लेखक की अपनी जिन्दगी की कहानी है मगर वह इससे भी ज्यादा कुछ है—"यह एक उपन्यास है और केवल कोमसोमोल के सदस्य ऑस्त्रोवस्की का जीवन-चरित्र नहीं है," जैसा कि उसके लेखक ने स्वयं लिखा है। यह बात कि पावेल कोर्चागिन के रूप में हम आसानी से उसके सृष्टा को पहचान लेते हैं, ऑस्त्रोवस्की का एक विशेष गुण है—अपने नायक के साथ उसका अत्यन्त घनिष्ठ सम्पर्क। नायक और लेखक दोनों के निजी, सामाजिक व रचनात्मक जीवन घनिष्ठ रूप में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और दोनों ही का लक्ष्य जनता की सेवा है। यह गुण सभी सोवियत लेखकों में पाया जाता है और यही कारण है कि उनके विचित्र चरित्रों में सच्चाई और विश्वसनीयता आती है।

अपने जीवन-चरित्र को नये साँचे में ढालते हुए, जो कि बहुत हद तक उसकी समूची पीढ़ी का जीवन-चरित्र है, निकोलाई आॅस्त्रोवस्की अपना उपन्यास अपने नायक के बचपन की एक तस्वीर देकर शुरू करता है और पाठक को दिखलाता है कि किस तरह एक शत्रुता से भरे हुए परिवेश के विरुद्ध संघर्ष करते हुए पावेल कोर्चागिन के मन और चरित्र का निर्माण होता है, कैसे उसके विचार पक्के हैं और उसकी इस आवश्यकता की जागृति होती है कि परिवेश और सम्पूर्ण समाज-व्यवस्था को नये सिरे से बनाना है, कैसे समाजवाद के लिए जनता का संघर्ष सामाजिक जीवन की आर्थिक स्थितियों को बदलकर एक नई समाजवादी चेतना को जन्म देता है और सामाजिक और वैयक्तिक आचरण के एक नये मानदंड की स्थापना करता है, जो कि वास्तव में एक मानवीय आचार का आधार है।

समाजवादी प्रणाली में श्रम की प्रकृति, उसका रूप और प्राण दोनों बदल जाते हैं और करोड़ों आदमी निर्माण में लगी हुई एक ही समष्टि के अंग बन जाते हैं जो एक ही योजना के अन्तर्गत अपनी मातृभूमि के लिए एक नये जीवन का निर्माण करते हैं। ये परिवर्तन फिर आॅस्त्रोवस्की के नायकों के विचारों, भावनाओं और उनके आपसी सम्बन्धों को बदल देते हैं।

जहां तक पावेल कोर्चागिन की बात है, श्रम और समाजवादी सम्पत्ति के प्रति नया दृष्टिकोण उसके अन्दर लड़ाई के मोर्चे से लौटने के तत्काल बाद ही दिखाई देने लग जाता है। उसके अन्दर इस भावना का जन्म होता है कि वह अपने कारखानों और अपने देश का मालिक है। उत्पादन के नये सम्बन्धों से पैदा होनेवाली यह नई भावना ही कोर्चागिन के उस संघर्ष की अनुप्रेरक शक्ति है जो वह आलसी और स्वार्थी लोगों के खिलाफ करता है, उन मजदूरों के खिलाफ जो अपने औजारों के प्रति लापरवाही बरतते हैं और इस बात को भूल जाते हैं कि वे सब अब जनता की मिल्कियत हैं। यही भावना कोर्चागिन को कोमसोमोल का एक कर्मठ कार्यकर्ता बनाती है, तोड़-फोड़ करनेवालों और चोरी-छिपे व्यापार करनेवालों के खिलाफ डट कर लड़नेवाला सैनिक बनाती है और गांवों में सामूहिक खेती का एक अत्यन्त उत्साही संगठनकर्ता बनाती है। समाजवादी निर्माण के युग में स्वामित्व की भावना एक नये उच्चतर धरातल पर पहुंच जाती है। करोड़ों आदमी समाजवादी उद्योग-धन्धों और सरकारी व सामूहिक खेतों के सजग निर्माता बन जाते हैं। अपनी जनता के रचनात्मक श्रम में योग देने की अदम्य भावना ही पावेल को अपनी उस अन्तिम रचनात्मक सिद्धि के पास पहुंचाती है।

पावेल कोर्चागिन की वीरता रूस के मजदूर वर्ग के अन्दर निहित वीरता है। इस वीरता की प्रकृति पावेल कोर्चागिन की जिन्दगी के हर नये दौर के साथ बदलती जाती है। वह लड़का जो जुखराई को पेतल्यूरा के सिपाही के चंगुल से छुड़ाता है,

अभी पूर्ण रूप से क्रान्तिकारी नहीं है। अपनी जीवन स्थिति के खिलाफ जो सहज प्रतिवाद पावेल कोर्चागिन करता है, वह उसको वर्ग-संघर्ष के भीतर खींच लाता है और उसी रास्ते पर बढ़ते हुए उसके अन्दर समाजवादी चेतना का उदय होता है। गृहयुद्ध के दिनों में ऊंचे आदर्शों के लिए उसके भीतर जो आत्मोत्सर्ग की भावना रहती है, उसीसे उस सजग कम्युनिस्ट आत्म-अनुशासन का जन्म होता है जो जनता के लिए एक उदाहरण बनता है और फिर धीरे-धीरे उपन्यास के अन्त तक पहुंचते-पहुंचते एक प्रौढ़ समाजवादी चेतना का रूप ले लेता है, जो कोर्चागिन के चरित्र और आचरण का नियमन करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह बीमार और अशक्त नायक निर्माण के संघर्ष में लगे हुए लोगों की पंक्ति में एक बार फिर से आने के लिए जिस तरह का अनोखा संघर्ष करता है, उसके लिए वह किसी रूप में बाध्य नहीं है और अगर कोई बाध्यता है तो यही कि वह भी समाजवाद के लिए संघर्ष करनेवाली करोड़ों जनता का एक अंग बनना चाहता है और इसी की अदम्य प्रेरणा उसको निरन्तर आगे बढ़ाती रहती है।

पावेल कोर्चागिन ने शुरू-शुरू में क्रान्ति के प्रति अपने कर्त्तव्य को जिस रूप में समझा था उसमें अपनी व्यक्तिगत जिन्दगी के लिए कोई भी जगह न थी, यहां तक कि उस प्रेम के लिए भी कोई जगह न थी जो यौवन का एक नैसर्गिक गुण है। पावेल मध्यवर्गी घराने की लड़की तोनिया से अपनी दोस्ती को खतम कर देता है और कम्युनिस्ट लड़की रिता उस्तिनोविच के प्रति अपने प्रेम को शुरू में ही दबा देता है। मगर कुछ ही वर्षों बाद पावेल कोर्चागिन अपने स्रष्टा की भांति, अपने वैराग्य को छोड़ता है अपनी इच्छाशक्ति का कड़े-से-कड़ा इम्तहान लेने के लिए अकारण ही अपने-आपको कष्ट देना, जो कि उन दिनों कोमसोमोल के पहले सदस्यों में बहुत हुआ करता था, बन्द कर देता है।

पावेल की मां और उसकी पत्नी ताया क्रान्तिकारी संघर्ष में उसकी साथिनें हैं। वह खुद उन्हें कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर लाता है और इस तरह उनके जरिए निःस्वार्थ भाव से जनता की सेवा करता और उस क्रम को टूटने नहीं देता है।

* * *

अपने नायक का चित्रण करने में निकोलाई आस्त्रोवस्की दिखलाता है कि किस तरह पावेल कोर्चागिन के सबसे अच्छे गुण, समाजवाद के लिए जनता के संघर्ष में योगदान देने की प्रक्रिया में पैदा होते, मजते और निखरते हैं। आस्त्रोवस्की के नायक का जो आन्तरिक सौन्दर्य है, जिस चीज के लिए वह खड़ा है, उसकी विजय का बीज उन तमाम घटनाओं में है और उनकी ऐतिहासिक सच्चाई में है जिसका चित्रण उपन्यास में हुआ है। यही वह चीज है जो पावेल कोर्चागिन को अपनी पीढ़ी का एक प्रतिनिधि नायक बनाती है।

समष्टि से हटकर हम पावेल कोर्चागिन की कल्पना भी नहीं कर सकते। हम उसे अपने ऐसे साथियों से अलग करके देख ही नहीं सकते—जैसे सर्योजा ब्रुजाक जो कि इसलिए युद्ध में जाता है ताकि फिर युद्ध न हो, जैसे सर्योजा की बहन वालिया, वह वीर युवती देशभक्त जिसे क्रान्ति-विरोधी पोल मार डालते हैं, जैसे इवान जार्की, वह अनाथ लडका जिसे लाल सेना की एक कम्पनी गोद ले लेती है, जैसे जिला कोमसोमोल का मत्री ओकुनेव, और नौजवान जहाजी मजदूर इवान पान्क्रातोव।

अपने साथियों की भाति पावेल कोर्चागिन ने भी अपने सबसे अच्छे गुण पुराने बोल्शेविकों से पाये हैं, जो क्रान्तिकारी सघर्ष में उन नौजवानों के नेता और शिक्षक हैं। उपन्यास में इस पुरानी बोल्शेविक पीढी का नेतृत्व इस तरह के लोग करते हैं, जैसे बोलोस्त की गुप्त क्रान्तिकारी कमिटी का प्रधान दोलिनिक जो थकना नहीं जानता, जैसे वह बहादुर क्रान्तिकारी फियोदार जुखराई जो पहले मल्लाह था और १९१५ से ही बोल्शेविक पार्टी का सदस्य था, जैसे तोकारेव जो गुप्त क्रान्तिकारी आन्दोलन का कार्यकर्ता था, जैसे फौजी कमिसार क्रेमर और इसी तरह के और भी बहुत से लोग। ये दोनों पीढिया आपस में ऐसे धागों से जुडी हुई हैं जो दिखायी नहीं देतीं मगर अटूट हैं।

कोर्चागिन के बहादुरी के कारनामे वैसे ही हैं जैसे उसके साथियों के। पावेल कोर्चागिन किसी मतलब में उन हजारों लोगों से अलग नहीं है जो उसी रास्ते पर चलते हैं। बिना इस बात की चिन्ता किए कि इसका क्या नतीजा होगा, पावेल गिरफ्तार जुखराई को पकडकर ले जाने वाले पेतल्युरा सैनिकों पर हमला बोल देता है, सर्योजा ब्रुजाक, जिसके मन में अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह और मानवता के प्रेम की भावना है, अपने को एक बूढे यहूदी के आगे डाल देता है जब एक नशे में चूर पेतल्युरा सैनिक बुड्ढे पर अपनी तलवार चलाता है। पावेल कोर्चागिन पहली घुड़सवार सेना की मशहूर कार्रवाइयों में हिस्सा लेता है, इवान जार्की क्रान्ति-विरोधियों के हाथ से क्रीमिया को मुक्त कराने की लडाई में नाम कमाता है।

रेल की पटरी बिछाने के काम में कोर्चागिन के मित्र भी उसी लगन और निस्स्वार्थ सेवा-भावना का परिचय देते हैं जो स्वय पावेल में पाई जाती है। यह भी गौर करने की बात है कि सेर्गेई ब्रुजाक का चरित्र भी ऑस्त्रोवस्की ने जीवन से ही लिया है। इस उपन्यास के अनेक चरित्रों में एक से ही मानव-गुण पाये जाते हैं और यही चीज उनको उतना सजीव और प्रातिनिधिक बना देती है।

पावेल और उसके मित्रों के सामने प्रेम और मैत्री का एक बहुत ही ऊचा और नैतिक दृष्टि से अत्यन्त पवित्र मानदण्ड रहता है। उपन्यास में प्रेम और मैत्री

की भावना अजस्र भाव से बहती रहती है और उसको अनेक दृश्यों में विशेष महत्त्व दिया गया है—जैसे पावेल और तोनिया की मुलाकात और सर्योजा और रिता की मुलाकात, जिसमें कि प्रेम के उदय का वर्णन किया गया है, और पावेल व ताया, उसकी पत्नी और साथिन, के परस्पर सम्बन्ध का चित्रण। रिता उस्तिनोविच, आना बोर्हार्ट, लिदिया पोलेविख और दूसरे नारी पात्र, सभी पवित्र और ऊंचे चरित्र वाले हैं और उन सबसे पता चलता है कि मानव-सम्बन्धों में कितने महान परिवर्तन हो चुके हैं।

यह उपन्यास उन सभी बातों की भर्त्सना करता है जो कुत्सित हैं और मनुष्य का अधःपतन दिखलाती हैं। इस चीज का पता बहुत सी बातों से चलता है—जैसे पावेल का रवैया उस पतित त्रात्स्कीपन्थी दुबावा की ओर, उस दुश्चरित्र फाइलो से उसकी मुलाकात, और फिर लेखक ने रावालिखिन और लिदा के बीच की बातों का चित्रण जिस प्रकार से किया है, उससे भी इस बात का पता चल जाता है। निकोलाई ऑस्त्रोवस्की दिखलाता है कि किस तरह राजनीतिक जिन्दगी में दुरंगी चाल चलने और अपनी निजी जिन्दगी में नैतिक रूप से पतित होने का चोली-दामन का साथ है। वह दिखलाता है कि जनता के दुश्मन और पार्टी और कोमसोमोल के क्षणिक अनुयायी किस प्रकार स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को कुत्सित दृष्टि से देखते हैं। इस उपन्यास के भीतर-भीतर चलनेवाला एक सबसे महत्त्वपूर्ण विचार यह है कि बोल्शेविक आदर्श ऊंचे-से-ऊंचे नैतिक मानदण्ड के साथ अभेद्य रूप में जुड़े रहते हैं और दोनों को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

इस उपन्यास के अलग-अलग जो व्यक्ति पात्र हैं, वे सब मिलकर जनता की एक विशाल मूर्ति बन जाते हैं और यह कहा जा सकता है कि जनता ही इस उपन्यास की नायक है। पूरे उपन्यास में जनता की सामूहिक कार्रवाइयों के जो चित्र मिलते हैं, उन सबमें जनता का चित्रण बहुत अच्छी तरह किया गया है—जैसे लड़ाई, रेल की पटरियों का बिछाना, पार्टी और कोमसोमोल की मीटिंगें जिनमें त्रात्स्कीपन्थियों को पीछे ढकेला जाता है, सोवियत-पोलिश सीमा पर उत्सव मनाया जाना। ये दृश्य पात्रों के निजी जीवन के साथ जुड़े हुए हैं। इन सभी दृश्यों में वे बड़ी-बड़ी समस्याएं, जो कि समूचे राष्ट्र के सामने हैं, अपना हल पा लेती हैं। देश से प्रेम, देश के शत्रुओं से दुर्दान्त घृणा, सभी छोटी-बड़ी बातों में वीरता और ऊंचे आदर्श, अन्तर्राष्ट्रीयता की एक गहरी चेतना जो कि मजदूर वर्ग की अपनी खास चीज है और समाजवादी मानवता—ये सब चीजें ऑस्त्रोवस्की के नायकों के वैयक्तिक गुण या विशेषता न होकर एक समूचे राष्ट्र का गुण बन जाती हैं। यह ध्यान देने की बात है कि जहां रेल की पटरी बिछाने का वह कमर-तोड़ काम हो रहा था, वहीं पर ये शब्द बोले गये थे—लोहा इसी तरह आग में तप कर फौलाद बनता है।

कलाकार ऑस्त्रोवस्की जीवन के तीक्ष्ण अन्तर्विरोधों से कन्नी नहीं काटता और न अत्याचार और शोषण के दम तोड़ते हुए संसार के खिलाफ एक नये संसार, रचनात्मक श्रम के संसार के निर्माण के लिए होनेवाले संघर्ष की कठिनाइयों को ही कम करके देखता है। वह इस बात को नहीं छिपाता कि वह पिछला अभिशप्त अतीत किस प्रकार मजदूर वर्ग पर अपना प्रभाव डालता रहता है और किस प्रकार यह प्रभाव नये समाज के निर्माण की क्रिया में ही खतम होता है। वह अपने नायक पावेल कोर्चागिन की कमजोरियों से भी आँख नहीं चुराता। ऑस्त्रोवस्की के उपन्यास की लोकप्रियता का एक बड़ा कारण यह है कि वह जहाँ यह दिखलाता है कि किस प्रकार एक वीर चरित्र का निर्माण होता है, वहाँ साथ ही यह भी दिखलाता है कि व्यक्तियों की चेतना में से पूंजीवाद के अवशेषों को कैसे दूर किया जाता है।

रूसी उपन्यास की यह जो ख्याति रही है कि उसमें भावों की गहराई और सामाजिक अन्तर्विरोधों और सामाजिक संघर्षों के भीतर गहरी अन्तर्दृष्टि मिलती है, रूसी उपन्यास की इस परम्परा को ऑस्त्रोवस्की आगे ले जाता है। रूसी साहित्य में अब तक जितने भी वीर चरित्रों की सृष्टि हुई है, उन श्रेष्ठतम वीर चरित्रों में से पावेल भी एक है। मगर ऑस्त्रोवस्की ने अपने नायक में एक नये गुण का समावेश किया है जो कि पावेल कोर्चागिन के किसी भी पूर्वज में नहीं था। समाजवाद के निर्माण की क्रिया ने, समाजवादी समाज ने उसके अन्दर इस गुण का समावेश किया और वह गुण था एक आगे बढ़े हुए सामाजिक आदर्श के संघर्ष की क्रिया में व्यक्ति का अभिव्यक्ति-स्वातन्त्र्य। १६२८-२६ के आसपास से लेकर १६३३-३४ के आसपास तक की जिन्दगी ने ही लेखक को यह बात दिखला दी थी कि सोवियत मनुष्य केवल नेता या सेनापति या संगठनकर्ता नहीं है, बल्कि एक साधारण बोल्शेविक या साधारण कोमसोमोल सदस्य के नाते उसके पास अपनी एक समृद्ध आन्तरिक दुनिया है और अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति अपना नया दृष्टिकोण है, और खुद अपनी निजी जिन्दगी है। पावेल कोर्चागिन, जो अपने-आपमें एक बहुत संगठित चरित्र है, सोवियत समाज के विकास के एक पूरे दौर का प्रतिनिधित्व करता है, उस दौर का जिसमें इतिहास के प्रांगण में एक नये मनुष्य का आविर्भाव होता है।

जनता समाजवाद के लिए जो संघर्ष करती है, वही इस उपन्यास के कथानक की पृष्ठभूमि है। लेखक ने जिस प्रकार इस संघर्ष का चित्रण किया है और जिस प्रकार उपन्यास के चरित्रों के अनुभवों, कार्यों और भाग्यों का चित्रण किया है, जिस प्रकार उसने श्रम का चित्रण किया है जो जीवन का रूपान्तर कर देता है और उसके साथ ही श्रम करने वालों का भी रूपान्तर कर देता है, और सबसे अन्त में जिस प्रकार उसने मनुष्यों के पारस्परिक नये सम्बन्धों का चित्रण किया है—उस सब के कारण ऑस्त्रोवस्की का उपन्यास समाजवादी यथार्थवाद की एक सच्ची कृति

बन गया है। दूसरे सोवियत लेखकों की तरह निकोलाई ऑस्त्रोवस्की भी गोर्की की परम्परा का लेखक था। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वह केवल अनुसरण करता था। ऑस्त्रोवस्की ने नई बातों का आविष्कार भी किया और एक नये साहित्यिक नायक की सृष्टि की।

आनेवाली अनेक पीढ़ियों तक पावेल कोर्चागिन नवयुवकों का आदर्श रहेगा। हर पीढ़ी पिछली पीढ़ी से ज्यादा बड़ी संख्या में कोर्चागिन की धातु के नवयुवकों को जन्म देती है। उसके महान शिक्षक मैक्सिम गोर्की में जो अन्तर्दृष्टि थी, वैसी ही अन्तर्दृष्टि ऑस्त्रोवस्की में भी दिखाई देती है जिसके द्वारा उसने अपने काल की वास्तविकता में से आगे आनेवाले सत्य को पहचान लिया। पावेल कोर्चागिन की वीरतापूर्ण विशेषताएं सोवियत नवयुवकों में अधिकाधिक मिलती हैं। पिछली लड़ाई ने इस बात को दिखलाया कि ऐसे ही गुण लाखों-करोड़ों सोवियत जनता में भी पाये जाते हैं। आज के रोज बहुत से विशाल कारखानों में सबसे अच्छे काम करनेवाले नौजवान मजदूरों की टोलियों ने अपने नाम निकोलाई ऑस्त्रोवस्की और उनके नायक पावेल कोर्चागिन के नाम पर रखे हैं।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की एक सोद्देश्य कलाकार था जो अच्छी तरह इस बात को जानता था कि उसे क्या करना है। वह जानता था कि उसे एक ऐसे युवा सैनिक के चित्र की सृष्टि करनी है, जिसके उदाहरण पर देश के नवयुवक चलें। इस काम को पूरा करने के लिए यह जरूरी था कि उसकी पुस्तक किसी एक सामान्य व्यक्ति का जीवन-चरित्र हो, जो यह दिखला सके कि कोई भी नवयुवक उस रास्ते पर आगे बढ़ सकता है। मगर उसके साथ ही साथ यह भी जरूरी था कि वह एक वीरतापूर्ण जीवन-चरित्र हो, क्योंकि ऑस्त्रोवस्की प्रतिदिन के जीवन में देश की सामान्य मेहनतकश जनता को जिस प्रकार संघर्ष करते देखता था, उसमें उसको एक गहरा रोमानी गुण मिलता था और ऐसी बहुत सी बातें मिलती थीं जो कि अनुकरणीय थीं और यही वह भावना थी जिसे उसने अपने मुख्य नायक और दूसरे पात्रों के अन्दर डाली। कहानी की तफसीली बातों को उसने अपने और अपने साथियों के तजुर्बों से लिया और उन्हें चित्रित किया।

यह ध्यान देने की बात है कि उसने जिन्दगी के बहुत से बहादुरी के कारनामों के बारे में सिर्फ इसलिए नहीं लिखा कि उसको डर था कि उनके बारे में लिखते समय वह बात को बढ़ा-चढ़ा देगा। उसने कहीं भी इस बात का उल्लेख नहीं किया कि एक बार जब वह अभी छोटा सा लड़का ही था तब उसने गुप्त क्रान्तिकारी कमिटी के बहुत से इश्तिहार एक जर्मन सन्तरी के ठीक नाक तले दीवार पर चिपकाये थे और न इस घटना का कि जब वह पन्द्रह साल का छोकरा ही था तभी उसने नोवोग्राद-वोलीन्स्की के पास एक पुल को बारूद से उड़ा दिया था और न यही

कहानी उसने कहीं पर लिखी कि कैसे वह एक कुलक गिरोह के कब्जे में आये हुए एक कस्बे के अन्दर गया और वहा की सारी बातें, जिनकी क्रान्तिकारी आन्दोलन को जरूरत थी, पता लगाकर लौट आया। एक सच्चे कलाकार की भाति ऑस्त्रोवस्की ने वे सभी चीजें छोड दीं जिनके समावेश करने के कारण उसके नायक के जीवन की कहानी असाधारण बन जाती।

जहा यह बात सच है कि ऑस्त्रोवस्की ने अपनी पुस्तक में अपने जीवन के कुछ जोखिम के कारनामे लिये हैं, वहा यह भी सच है कि उनको लेते समय वह उनके जोखिम को और इनके पीछे काम करनेवाली बहादुरी को कम करके दिखाता है। उदाहरण के लिए जब वह यह वर्णन करता है कि वह कैसे एक जोखिम से भरी हुई सड़क पर होकर बहुत सी बेशकीमत चीजें येरेजदोव से सूबाई केन्द्र ले गया, तब वह सिर्फ इतना कहता है कि वे चीजें हिफाजत के साथ पहुच गईं, जब कि सच बात यह है कि ऑस्त्रोवस्की और उसके साथ के दो सैनिकों के साहस के कारण ही यह यात्रा सफल हुई थी और उन्हे रास्ते में डाकुओं के एक हमले का मुकाबला भी करना पड़ा था।

कोर्चागिन के बाद के जीवन में रेडियो एक बहुत महत्व की चीज हो जाती है। उपन्यास में जो रेडियो सेट शय्याग्रस्त पावेल के जीवन में आनन्द का सचार करता दिखलाया गया है, उसके बारे में बताया गया है कि उसके दोस्त बेरसेनेव ने उसको बनाया था। मगर सच बात यह थी कि ऑस्त्रोवस्की ने खुद उसको बनाया था और इस काम में उसको डेढ-दो महीना लगा था। इस काम को पूरा करने के बाद खुद ऑस्त्रोवस्की ने कहा था

"जरा सोचो। मैं एकदम अन्धा और उस पर से मैंने एक रेडियो फिट करना शुरू किया और पुर्जे भी मुझे कितने गये-गुजरे मिले कि अच्छी भली आखवाला आदमी भी पसीने-पसीने हो जाता। कैसा मुश्किल काम था वह। उस समय मुझे केवल स्पर्श ज्ञान का सहारा था। जहन्नुम में जाय। जब यह काम पूरा हुआ और मेरा रेडियो सेट बन कर तैयार हुआ तो मैंने कसम खाई कि फिर कभी ऐसा कोई काम न करूगा।"

इसमें सन्देह नहीं कि ऑस्त्रोवस्की के जीवन की सबसे बडी वीरता थी उन अत्यन्त कठिन स्थितियो में उपन्यास को लिखना। आज जब हम ऑस्त्रोवस्की के बारे में सोचते हैं तो उसकी इसी वीरता का ध्यान हमको आता है। मगर तब भी उपन्यास में इस वीरता पर जोर नहीं दिया गया है, बल्कि नायक के जीवन की उन बातों पर ही जोर दिया गया है जो कि दूसरों के भी उन्हीं गुणो का प्रतिनिधित्व करती है। ऑस्त्रोवस्की के जीवन में जिस चीज को पाने में बरसों का

वीरतापूर्ण संघर्ष लगा था, वह सब कोर्चागिन की कहानी में कुछ महीनों में ही पूरा हो जाता है। सच्चे वीर की सहज विनय-शीलता से ऑस्त्रोवस्की इस पुस्तक की सृष्टि के बारे में केवल दो-तीन पृष्ठ लिखता है।

* * *

१९३५ में जब उसने सुना कि उसको आर्डर आफ लेनिन का पदक मिला है, तब निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने उत्तर में धन्यवाद देते हुए लिखा था

"मेरा लालन-पालन पार्टी की सच्ची सहायिका कोमसोमोल ने किया है और जब तक मेरी जान में जान है, तब तक मेरा जीवन अपनी समाजवादी मातृभूमि की नई पीढ़ी की बोल्शेविक शिक्षा-दीक्षा के लिए लगा रहेगा।"

इस नौजवान लेखक ने अपने कौल को पूरा किया। जनता के भीतर उसका मान बढ़ा, समाज के निर्माताओं की कतार में वह एक बार फिर और बड़ी शान से शामिल हुआ, उसके उत्साही पाठकों की हजारों चिट्ठियां उसके पास आईं और सैकड़ों मिलने-जुलने वाले आये जो उसका परिचय प्राप्त करना चाहते थे, उसके देश ने, सोवियत राज्य ने, कम्युनिस्ट पार्टी और कोमसोमोल ने हर तरह से उसकी देख-रेख की और इन सब चीजों से ऑस्त्रोवस्की के जिन्दगी के आखिरी साल सुखी जीवन की दीप्ति से भर उठे और उन्होंने उसकी प्रतिभा को और भी पैना बनाया।

अभी जब वह अपने पहले उपन्यास के ही एक नये संस्करण पर काम कर रहा था, तभी निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने एक दूसरी पुस्तक की रचना में भी हाथ लगा दिया था। उसका नाम था "तूफान के बेटे"। उस वक्त क्षितिज पर दूसरे विश्वयुद्ध के काले-काले बादल मंडरा रहे थे। अंग्रेज-अमरीकी साम्राज्यवाद की ओर से प्रोत्साहन पाकर जर्मन और जापानी फासिस्ट समाजवाद के देश के खिलाफ युद्ध की तैयारी कर रहे थे।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने लिखा, "हम सब शान्तिपूर्ण श्रम में लगे हुए हैं। शान्ति ही हमारा झण्डा है। पार्टी और सरकार ने इस झण्डे को ऊपर उठाया है . हम शान्ति चाहते हैं क्योंकि हम कम्युनिज्म की आधारशिला रख रहे हैं। मगर हम अपने देश के साथ गद्दारी करेंगे अगर हम उन क्रूर दुश्मनों को भूल जायें जो हमें घेरे हुए हैं।"

ऑस्त्रोवस्की ने अपनी नई पुस्तक में अपने सामने यही लक्ष्य रखा था कि नई पीढ़ी को, जो समाजवादी समाज में ही पली और बढ़ी थी, यह दिखलाये कि उसके दुश्मन कौन हैं।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने अपने इस उद्देश्य की व्याख्या करते हुए लिखा, "मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूं ताकि अगर आगे चलकर लड़ाई होती है—यानी अगर

हमारे ऊपर लड़ाई थोपी जाती है—तब उस हालत में किसी नौजवान का हाथ अपनी बन्दूक पर कांपे नहीं।"

अपने इस नये उपन्यास में लेखक का ध्यान पोलैंड की उच्च मध्यवर्गीय और जमींदार श्रेणियों पर जाता है और पोलैंड उस समय फासिज्म के रास्ते पर था। वह अपनी इस किताब का केवल पहला ही भाग पूरा कर पाया था जब उसकी मृत्यु हो गई। निकोलाई ऑस्त्रोवस्की की मृत्यु २२ दिसम्बर १९३६ को हुई, ठीक उसी दिन जिस दिन उसके दूसरे और अन्तिम उपन्यास "तूफान के बेटे" का पहला भाग प्रकाशित हुआ था।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने कहा, "इससे अच्छी बात किसी आदमी के लिए और क्या हो सकती है कि वह मरने के बाद भी मानवता की सेवा करता रहे।"

इस बोल्शेविक उपन्यासकार की रचनाएं, उसके उत्साह से भरे हुए लेख और भाषण जो उसने नवयुवकों के सामने दिये थे, आज भी संसार की जनता के उस संघर्ष को उसकी एक अनमोल देन है, जो शान्ति और रचनात्मक श्रम के लिए तथा मानवता के सुख के लिए किया जा रहा है।

—एन वेन्ग्रोव

पहला भाग

एक

"खोटे तो ही जाओ तुम सब जो ईस्टर की छुट्टियों के पहले इम्तहान देने मेरे घर पर आये थे।"

बोलने वाला पादरी की पोशाक पहने एक मोटा थुलथुल आदमी था। एक बडा सा क्रॉस उसके गले मे लटक रहा था। उसने क्लास के लडको को गुस्से की निगाहों से देखा।

ऐसा लगता था कि उसकी दो छोटी-छोटी कठोर आखें उन छ बच्चों को, जिनमे चार लडके थे और दो लडकिया, आर-पार छेद देंगी। बच्चे सीट पर से उठे और उन्होंने पादरी का चोगा पहने हुए उस आदमी को सहमी-सहमी निगाहों से देखा।

पादरी ने लडकियों की ओर सकेत करते हुए कहा—"तुम लोग बैठ जाओ।"

लडकियो ने इतमीनान की सास ली और तुरन्त आदेश का पालन किया।

फादर वासिली की छोटी-छोटी आखें उन बाकी चार पर गड गई।

"अच्छा भाई जान, अब आप जरा इधर तशरीफ लाइए।"

फादर वासिली उठे, अपनी कुर्सी उन्होंने पीछे सरकाई और उन लडको के पास पहुचे जो एक-दूसरे मे बिलकुल सटे खडे थे।

"तुम मे से कौन बदमाश तम्बाकू पीता है?"

"हम लोग नही पीते, फादर," चारो ने डरते-डरते जवाब दिया।

पादरी के चेहरे पर खून उतर आया।

"अच्छा, तो तुम लोग तम्बाकू नही पीते, क्यो ? बदमाश कही के! तब फिर मेरे आटे मे तम्बाकू किसने मिलाई ? बोलो! ठहरो अभी पता चल जाता है कि पीते हो कि नही। उलटो, अपनी जेब उलटो! देर मत करो, मैं कहता हू उलटो, फौरन उलटो!"

तीन लडको ने अपने-अपने जेब की चीजें निकाल-निकाल कर मेज पर रखना शुरू किया।

पादरी ने तम्बाकू के चूरे की तलाश मे सीवनो को बडे गौर से देखा मगर उन्हे कुछ नही मिला। और तब वह उस चौथे लडके की तरफ मुखातिब हुए। इस छोकरे की आखे काली-काली थी और वह भूरे रग की कमीज और नीला पतलून पहने हुए था जिसके घुटने पर थेगडा लगा था।

"तुम ऐसे कैसे खडे हो पुतले की तरह ?"

लडके ने सवाल करने वाले को खामोश नफरत की आखो से देखा।

उसने आक्रोशपूर्ण स्वर मे जवाब दिया—"मेरे कोई जेब-वेब नही है।"

"जेब नही है, क्यो! तुम समझते हो मुझे मालूम नही है कि किसने मेरा आटा खराब किया ? कि यह बदमाशी किसकी है ? तुम समझते हो कि इस बार भी मैं तुमको छोड दूगा ? वह नही होने का, तुम्हे इसकी सजा मिलेगी। पिछली बार मैंने तुमको स्कूल मे रहने दिया था, क्योकि तुम्हारी मा मेरे पास आकर रोई गिडगिडाई, मगर अब बस। बाहर निकल जाओ!" उसने लडके का कान उमेठ कर उसे बरामदे मे ढकेल दिया और अन्दर से किवाड झटके से बन्द कर लिया।

लडके खामोश बैठे रहे, सहमे हुए। उन बच्चो मे से कोई भी नही समझ सका कि क्यो पावेल कोर्चागिन को क्लास से बाहर किया गया। किसी की समझ मे यह बात नही आई, एक सर्गेई ब्रुजाक को छोड कर जो पावेल का सबसे गहरा दोस्त था। उसने पावेल को पादरी साहब के बावर्चीखाने मे ईस्टर के केक के आटे मे मुट्ठी भर घर की उगाई तम्बाकू छिडकते देखा था—वहीं, पादरी साहब के उसी बावर्चीखाने मे, जहा क्लास के छ पिछडे हुए लडके पादरी साहब का इन्तजार कर रहे थे कि वे आयें और उनका सबक सुनें।

क्लास से निकाला जाकर पावेल स्कूल की इमारत की सबसे निचली सीढी पर बैठ गया और परेशान होकर सोचने लगा कि जब वह आज की घटना अपनी मा को बतायेगा तब वह क्या कहेगी, उसकी गरीब, मेहनती मा जो सबेरे से लेकर रात तक आबकारी के दरोगा साहब के यहा रसोई मे बेटे के लिए खटती थी।

आसुओ से उसका गला रुध गया।

"मैं क्या करू अब ? यह सब उसी कम्बख्त पादरी के कारण हुआ। मगर मुझे भी क्या सूझी कि गया और उसके आटे में तम्बाकू मिला आया। यह सर्योजका की सूझ थी। उसने कहा था, आओ जरा इस बूढे खूसट की खबर ली जाय। और वही हमने किया। मगर सजा तो देखो, सर्योजका तो साफ निकल गया और मेरी शामत आ गई, ठोकर लगा कर मुझे क्लास से बाहर कर दिया गया।"

फादर वासिली से उसका झगडा बहुत पुराना था। इसकी शुरुआत उस दिन हुई थी जब मिश्का लेव्चुकोव से उसका झगडा हुआ था और सजा के तौर पर स्कूल के बाद उसको रोक लिया गया था। खाली कमरे मे लडका कोई शरारत न करे, इस खयाल से मास्टर साहब उसे दर्जा दो मे ले गये जहा पढाई चल रही थी।

पावेल पीछे की एक सीट पर बैठ गया। मास्टर साहब, जो दुबले-पतले, चुसे हुए से छोटे से आदमी थे और काला कोट पहने हुए थे, क्लास को पृथ्वी के बारे मे और आकाश के ग्रह-नक्षत्रो के बारे मे बतला रहे थे, और पावेल ने तब मारे अचरज के मुह बा दिया जब उसे पता चला कि यह पृथ्वी करोडो साल से अस्तित्व मे है और ये तारे जो दिखाई देते है, ये भी दुनियाए हैं। उसने जो कुछ सुना उससे उसे इतना अचम्भा हुआ कि बडी मुश्किल से वह यह कहने से अपने को रोक पाया : "मगर बाइबिल मे तो ऐसा नही लिखा है।" पर बोला नही क्योकि वह और मुसीबत मे नही पडना चाहता था।

पादरी साहब ने हमेशा पावेल को धर्मशास्त्र मे पूरे-पूरे नम्बर दिये थे। उसे प्रार्थना की लगभग पूरी किताब कठस्थ थी—और बाइबिल के पुराने और नये टेस्टामेन्ट भी। उसे ठीक-ठीक पता था कि सप्ताह के किस दिन परमात्मा ने क्या बनाया था। अब उसने निश्चय किया कि फादर वासिली से इसके बारे मे सवाल पूछेगा।

अगले ही दिन क्लास मे, इसके पहले कि पादरी साहब ठीक से अपनी कुर्सी पर बैठ पायें, पावेल ने हाथ उठा दिया और बोलने की इजाजत पाते ही सीट पर से उठ खडा हुआ।

"फादर! दर्जा दो के मास्टर साहब यह क्यो कहते है कि यह पृथ्वी करोडो साल पुरानी है, जब कि बाइबिल मे लिखा है कि वह पाच ह—जा—र . "

फादर वासिली की भारी चीख ने उसकी बात को बीच ही मे काट दिया।

'क्या कहा तुमने ? बदमाश कही के! तो इसी तरह तुम अपनी धर्म पुस्तक पढते हो।"

इसके पहले कि पावेल समझ पाये कि बात क्या हुई, पादरी साहब ने उसका कान पकडा और दीवार से उसका सिर टकराने लगे। कुछ मिनट बाद,

दहशत और दर्द से कापते हुए उसने क्लास के बाहर के बरामदे मे अपने आपको खडा पाया।

उस बार मा ने उसको खूब फटकार बताई थी और उसके दूसरे रोज वह स्कूल गई थी और फादर वासिली से उसने विनती की थी कि पावेल को फिर से स्कूल मे रख लें। उस दिन से पावेल जी-जान से पादरी साहब से घृणा करने लगा था। वह उनसे घृणा करता था और डरता था। उसका बच्चे का हृदय किसी भी अन्याय के खिलाफ, चाहे वह कितना ही छोटा क्यो न हो, विद्रोह करता था। वह कभी उस मार के लिए, जो उस पर बेजा पडी थी, पादरी साहब को माफ नही कर सका और उसका मन गुस्से और नफरत से भर उठा था।

उसके बाद पावेल को बराबर फादर वासिली से द्वेषपूर्ण उपेक्षा ही मिली। पादरी साहब बराबर उसे क्लास के बाहर कर देते थे, जरा-जरा सी गलती के लिए उसे लगभग रोज ही कोने मे खडा कर देते थे और कभी उससे कोई सवाल नही पूछते थे। नतीजा यह कि ईस्टर की छुट्टियों के ठीक पहले पावेल को क्लास के दूसरे पिछडे हुए लडकों के साथ पादरी साहब के मकान पर दुबारा इम्तहान देने के लिए जाना पडा। और वही बावर्चीखाने मे उसने उनके आटे में तम्बाकू मिला दिया था।

किसी ने उसको ऐसा करते देखा नही था, लेकिन पादरी साहब फौरन ताड गये कि यह किसकी करतूत होगी।

आखिरकार क्लास खतम हुआ और बच्चे बाहर निकल कर हाते मे आये और पावेल को घेर कर खडे हो गये। पावेल उदास खामोशी मे डूबा खडा रहा। सर्गेई ब्रूजाक क्लास में ही रुका रहा। वह महसूस कर रहा था कि वह भी अपराधी है। मगर, वह अपने दोस्त की मदद के लिए कुछ नही कर सकता था।

हेडमास्टर, एफ्रेम वासीलियेविच ने मास्टरों के कमरे की खुली खिडकी में से सिर बाहर निकाला और आवाज लगाई·

"कोर्चागिन को फौरन मेरे पास भेज दो।" हेडमास्टर साहब की गहरी भारी आवाज सुन कर पावेल चौंक पडा और धडकते हुए दिल से वह उनके पास चला।

रेलवे स्टेशन रेस्तोरा के मालिक ने, जो पीला सा अधेड आदमी था और जिसकी आखें बेरग और बुझी-बुझी सी थी, कनखियों से पावेल को देखा।

"क्या उम्र है इसकी ?"

"बारह।"

"ठीक है। रह सकता है। इसे महीने मे आठ रूबल मिलेंगे। और खाना भी, जिन दिनो काम करेगा। एक दिन छोड कर हर दूसरे रोज चौबीस घटे काम करना होगा। लेकिन हा, एक बात अच्छी तरह समझ लो : चोरी-चमारी नही चलेगी।"

"अरे नही साहब, कैसी बात कहते हैं। वह चोरी नही करेगा। मैं इसका जिम्मा लेती हू," मा ने डर कर फौरन आश्वस्त करने के लिये कहा।

"तो फिर आज से ही काम शुरू कर दे," मालिक ने आदेश दिया और काउटर के पीछे खडी औरत की ओर मुडते हुए कहा "जीना, इस लडके को बावर्चीखाने मे ले जाओ और फ्रोसिया से कहो कि ग्रिश्का की जगह इसको काम पर लगा दे।"

उस औरत ने अपने हाथ की वह छुरी रख दी जिससे वह गोश्त के टुकडे कर रही थी, पावेल को इशारा किया और आगे-आगे चलते हुए हॉल को पार करके किनारे के दरवाजे पर पहुची जो बर्तन धोने की कोठरी में खुलता था। पावेल उसके पीछे-पीछे गया। उसकी मा भागती हुई आई और जल्दी-जल्दी उसके कान मे फुसफुसा कर कहा · "देखो बेटा पावलुश्का, खूब जी लगा कर काम करना और कभी कोई गन्दी हरकत मत करना।"

उदास आखों से मा ने उसे जाते हुए देखा और फिर वापस चली गई।

भीतर काम जोरो के साथ चल रहा था। रकाबियो, काटो, छुरियो का ढेर मेज पर लगा हुआ था और बहुत सी औरतें अपने कधो पर पडे तौलियो से उन्हें पोछ रही थी।

एक लडका जिसके सिर मे बड-बडे लाल-लाल बालो का गुच्छा था, और जो पावेल से थोडा बडा था, दो बडे समोवारो* को ठीक कर रहा था।

वह जगह बडे से कडाल मे खौलते हुए पानी की भाप से भरी हुई थी। उसी पानी से रकाबिया धुल रही थी। भाप के कारण पावेल एकाएक उन औरतो के चेहरो को न देख सका। वह अनिश्चय की हालत मे खडा रहा कि कोई उसे बतलाए कि क्या करना है।

शराबखाने की नौकरानी जीना ने एक रकाबी धोने वाली के पास जाकर कधा छुआ और बोली

"देखो फ्रोसिया, मैं तुम्हारे लिए ग्रिश्का की जगह एक नया लडका ले आई हू। तुम इसको काम बतला दो।"

---

* एक खास तरह का बड़ा चूल्हा जिसके ऊपर सोने की भी जगह होती है। —अनु.

जिस औरत को उसने फ़ोसिया कह कर पुकारा था, उसकी ओर इशारा करते हुए जीना ने पावेल से कहा, "यहा का इन्तजाम इन्ही के हाथ मे है। यह तुम्हे बतला देंगी कि तुमको क्या करना है।" यह कह कर वह मुडी और वापस अपनी जगह पहुच गई।

"अच्छा," पावेल ने धीरे से कहा और प्रश्न करती हुई आखो से फ़ोसिया को देखा। फ़ोसिया ने माथे का पसीना पोछते हुए बडे गौर से पावेल को सिर से पैर तक देखा जैसे उसे परख रही हो और आस्तीन ऊपर चढाते हुए, जो कुहनी के नीचे आ गई थी, गहरी और बडी प्यारी आवाज मे कहा

"ऐसा कुछ बहुत काम नही है, भैया! मगर फसे रहोगे खूब। वह तावे की जो चीज तुम वहा देखते हो न, सवेरे से ही उसको सुलगा देना पडता है और हमेशा गरम रखना पडता है ताकि खौलता हुआ पानी हमेशा तैयार मिले! और फिर लकडी चीरनी होती है और समोवार है जिनकी फिक्र करनी पडती है। कभी तुम्हे छुरी-काटे भी साफ करने पडेगे और गन्दे पानी की बाल्टी भी बाहर ले जानी पडेगी। काम की यहा कोई कमी नही है भाई!"

उसका बोलने का ढग और तमतमाया हुआ चेहरा और उसकी छोटी सी उठी हुई नाक, यह सब पावेल को बहुत अच्छे लगे।

"काफी भली मालूम होती है," उसने अपने मन मे कहा। फिर अपनी झप को बस मे करते हुए बोला, "अब मुझे क्या करना है मौसी ?"

रकाबी धोने वाली औरतें ठहाका मार कर हस पडी

"हा! हा! देखो तो फ़ोसिया को बैठे-बिठाये एक भानजा मिल गया"

पर फ़ोसिया दूसरो से भी ज्यादा जोर से हस रही थी।

भाप के बादलो के बीच से पावेल ठीक से नही देख सका था कि फ़ोसिया जवान लडकी है। उसकी उम्र किसी भी हालत मे अठारह से ज्यादा न थी।

घबरा कर वह दूसरे लडके की तरफ मुडा और उससे पूछा

"अब मुझे क्या करना है ?"

मगर वह लडका बेफिक्री से खडा रहा और बोला "अपनी इन्ही मौसी से पूछो, यही तुमको सब बतलायेंगी। मैं तो चला।" यह कहते हुए वह बावर्चीखाने मे खुलने वाले दरवाजे से तीर की तरह निकल गया।

"यहा आओ, इन काटो को पोछो।" एक रकाबी धोने वाली अधेड औरत ने कहा।

"अपनी यह खी-खी बद करो" दूसरो को डपटते हुए वह बोली "लडके ने ऐसी कोई बात नही कही जिससे तुमको हसी आ रही है। यहा आओ, यह लो," कहते हुए उसने पावेल को रकाबी पोछने का तौलिया दिया, "इसका एक सिरा अपने दात से पकड लो और दूसरा सिरा हाथ से पकडकर कस कर

तानो। यह देखो, काटा है। इसके दातो के बीच-बीच तौलिये को अन्दर-बाहर करो और देखो जरा भी मैल न रहने पाये। इन चीजो के मामले मे यहा बडी सख्ता बरती जाती है। गाहक हमेशा काटो को बडे गौर से देखते हैं और अगर जरा सा भी मैल मिल जाता है तो बडा बावेला मचाते हैं। और तब, मालकिन खडे-खडे तुमको निकाल बाहर करेंगी।"

"मालकिन ?" पावेल ने उसकी बात को दुहराते हुए कहा, "मैं तो समझता था कि वह साहब जिन्होने मुझे रखा वही मालिक हैं।"

रकाबी धोने वाली हमी और बोली, "इस मालिक को तो बस यहा की एक सजावट समझो। असली मालिक तो है मालकिन। आज वह यहा नही है। लेकिन अगर कुछ दिन यहा टिके तो खुद ही देख लोगे।"

बर्तन धोने की कोठरी का दरवाजा खुला और तीन नौकर बडी-बडी ट्रे लिये हुए दाखिल हुए जिन पर गन्दी रकाबियो का ढेर लगा हुआ था।

उनमे से एक ने जिसका कधा बहुत चौडा था और जिसकी आखें तिरपट और जबडे भारी और चौखुटे थे, कहा, "जरा तेजी से हाथ चलाओ। बारह बजे की गाडी आने ही वाली है, और अभी तुम लोग यहा मेल ही कर रहे हो।"

उसने पावेल को देखा और पूछा, "यह कौन है ?"

"अरे वही नयावाला लडका है," फ्रोसिया ने कहा।

वह बोला, "अच्छा, वह नयावाला लडका।. अच्छा जरा सुनो तो," कहते हुए उसने अपना भारी हाथ पावेल के कधे पर रखा और उसे ठेल कर समोवार के पास ले जाते हुए बोला "तुम्हारा काम इनको सदा खौलाते रखना है। यह देखो, इनमे से एक तो बुझ भी गया और दूसरा किसी तरह आखिरी सासें गिन रहा है। आज तो तुम्हे माफ किया जाता है, लेकिन कल से ऐसा हुआ तो तुम्हारी मरम्मत होगी।"

पावेल बिना एक शब्द बोले समोवारो को ठीक करने मे जुट गया।

और इस तरह उसकी मशक्कत की जिन्दगी शुरू हुई। आज पहले रोज उसे जितना काम करना पडा था, उतना अपनी जिन्दगी मे पावुस्का ने और कभी नही किया था। उसने महसूस किया कि यह उसका घर नही था जहा मा का हुक्म टाला जा सकता है। उस तिरपट आख वाले बैरे ने यह बात बिलकुल साफ कर दी थी कि अगर वह बहे मुताबिक ठीक-ठीक काम नही करेगा तो उसे इसकी सजा भुगतनी पडेगी।

उसने अपना एक जूता चिमनी के ऊपर रखा और दूसरे से धौंकना शुरू किया। थोडी ही देर मे उन बडे बडे मटके जैसे समोवारो से चिनगारिया निकलने लगी। उसने गन्दे पानी की बाल्टी उठाई और जाकर कूडे की टीन मे उलट दी, गरमे मे और ईधन डाल दिया, रकाबी पोछने वाली गीली तौलियो

को गरम समोवार पर सुखाया—गरज, उसने वह सब कुछ किया जो उसे करने को कहा गया था। बहुत रात बीत जाने पर जब थका हुआ पावेल बावर्चीखाने की तरफ चला तो उस अधेड रकाबी धोने वाली ने पावेल के पीछे बन्द होते दरवाजे की ओर देखते हुए कहा

"उस लडके मे कुछ अजीब सी बात है। देखो, कैसे पागल की तरह दौडता है। कौन जाने इसीलिए उसे काम से लगाया गया हो।"

फ्रोसिया ने कहा "अच्छा काम करने वाला है। उसे ठेलना नही पडता।"

लूशा की राय थी, "जल्दी ही उसका जोश ठडा हो जायगा। शुरू-शुरू मे सब इसी तरह जोरो से काम करते हैं ।"

दूसरे रोज सवेरे सात बजे रात भर खडे रहने के कारण थक कर चूर पावेल ने खौलते हुए समोवार को उस लडके को सभलवाया जो उसकी जगह लेने वाला था। इस लडके ने, जिसके गाल फूले-फूले से थे और आखो मे बडी भद्दी-सी चमक थी, खौलते हुए समोवारो का मुआइना किया और इस बात का इतमीनान हो जाने पर कि सब कुछ ठीक है, उसने अपने हाथ जेब मे डाल लिये और पावेल को नीची नजर से देखते हुए बडी ऐंठ से, दात बन्द किये पिच्च से थूका।

"सुन बे नकचपटे!" उसने चुनौती के स्वर मे कहा और पावेल को अपनी बेरग आखो से देखा। "देखना, कल तुझे ठीक छ बजे सवेरे अपने काम पर हाजिर हो जाना है।"

"क्यो, छ बजे क्यो?" पावेल ने जानना चाहा, "शिफ्ट तो सात बजे बदलती है न?"

"इसकी फिकर तू छोड दे कि शिफ्ट कब बदलती है, कब नही बदलती। तुझे यहा पर छ बजे हाजिर हो जाना है। और देख, ज्यादा बकबक मत करना नही तो वह झापड रसीद करूगा कि मुह टेढा हो जायगा। जरा ढिठाई तो देखो, आज ही काम शुरू किया और अभी से दिमाग सिकहर पर।"

रकाबी धोने वाली औरतें, जिन्होने अभी-अभी अपनी पाली का काम खतम किया था, दोनो लडको की बातचीत बडी दिलचस्पी से सुन रही थी। पावेल को उस लडके के इस तरह गुडई ढग से बात करने पर गुस्सा आ गया। वह उस बदमाश की तरफ एक कदम बढा और करीब था कि उस पर हाथ छोड दे। लेकिन, यह सोच कर कि नई-नई लगी नौकरी से हाथ धोना पडेगा, वह रुक गया।

उसने गुस्से से स्याह पडते हुए कहा: "बन्द करो यह शोर मचाना और मुझसे जरा दूर ही रहना, नही तो ठीक नही होगा। मैं यहा कल सात बजे आऊगा। और जहा तक झापड की बात है, मैं तुमसे कमजोर नही हू, यह बात

याद रखना। या यह चाहते हो कि एक-एक हाथ हो ही जाय ? बोलो ? मैं इसके लिए भी तैयार हू।"

उसका दुश्मन डर कर पीछे हटा और गरमे से लग कर खडा हो गया वह आश्चर्य से क्रोधित होकर पावेल को देख रहा था। उसे उम्मीद नही थी कि पावेल इतना तगडा प्रतिवाद करेगा।

"अच्छा-अच्छा देखेंगे," उसने बुदबुदाते हुए कहा।

काम का पहला रोज विना किसी दुर्घटना के बीत गया था, इसलिए पावेल जल्दी-जल्दी घर की ओर चला। उसके मन मे यह भाव था कि उसने ईमानदारी से मेहनत करके अपने विश्राम के इन घटो को अर्जित किया है। अब वह भी एक मजदूर था। अब कोई उस पर यह तोहमत नही लगा सकता था कि वह कुछ नही करता और दूसरे पर आश्रित है।

लकडी चीरने के कारखाने की छिटपुट फैली हुई इमारतो पर सुबह का सूरज चढने लगा था। थोडी ही देर मे पावेल का छोटा सा मकान लेशचिन्स्की के बगीचे के पीछे दिखाई देने लगेगा।

"मा अभी-अभी उठी ही होगी और देखो मैं काम पर से लौट रहा हू।" पावेल ने सोचा और अपनी रफ्तार तेज कर दी। चलते-चलते वह सीटी बजाता जा रहा था। "स्कूल से निकाला जाना बहुत बुरा नही रहा। वह कम्बख्त पादरी किसी तरह मुझे चैन न लेने देता। और अब मुझे क्या, जहन्नुम मे जाय वह, मेरे ठेंगे से," यही सोचते हुए पावेल घर पहुचा और दरवाजे को खोला। "जहा तक उस नवाब के नाती का ताल्लुक है, मैं जरूर किसी दिन उसको ठोकूगा।"

उसकी मा ने, जो आगन मे समोवार सुलगा रही थी, अपने बेटे को आते हुए देखा तो कुछ चिन्ता के स्वर मे पूछा

"कहो, कैसा रहा ?"

"बहुत अच्छा," पावेल ने जवाब दिया।

मा कुछ कहने ही वाली थी कि खुली हुई खिडकी से पावेल को अपने भाई आर्तेम की चौडी पीठ दिखाई दी।

"अच्छा, तो आर्तेम आ गया ?" उसने उद्विग्नता से पूछा।

"हा, कल आया था। अब वह यही रहेगा और रेलवे यार्ड मे काम करेगा।"

कुछ झिझकते हुए उसने सामने का दरवाजा खोला।

उस आदमी ने, जो मेज के सामने दरवाजे की ओर पीठ किये बैठा था,

कमरे में दाखिल होते हुए पावेल की ओर अपनी विशाल काया को मोड़ा। घनी काली भवों के नीचे उसकी आखों में कठोरता का भाव था।

"अच्छा, यह आया तम्बाकू वाला लड़का! कहो क्या हालचाल हैं?"

अब जो सवालों की झड़ी लगेगी, उससे पावेल को डर मालूम हो रहा था। उसने सोचा, "आर्तेम को पहले से ही सब बातों का पता है। लगता है अच्छी-खासी झड़प होगी और शायद मरम्मत भी।" पावेल अपने बड़े भाई से कुछ-कुछ डरता हुआ खड़ा रहा।

मगर आर्तेम का कोई इरादा लड़के को डाटने-डपटने का नहीं था। वह मेज पर कोहनी टेके स्टूल पर बैठा रहा और पावेल के चेहरे को कुछ मनोरंजन और कुछ उपेक्षा के मिले-जुले भाव से ध्यानपूर्वक देखता रहा।

"अच्छा तो तुम युनिवर्सिटी से दीक्षित होकर निकल आये, क्यों? जो कुछ लिखना-पढ़ना था, लिख-पढ़ चुके और अब रकाबियां धोने में लग गये हो, क्यों?"

नीचे फर्श में एक दरार थी। पावेल उसी पर आंख गड़ाए, एक कील के सिरे को बहुत बारीकी से देख रहा था। आर्तेम उठा और रसोई घर में चला गया।

इतमीनान की सांस लेते हुए पावेल ने सोचा, "लगता है मार-बार नहीं पड़ेगी।"

बाद में चाय के वक्त आर्तेम ने पावेल से स्कूल वाली घटना के बारे में पूछा। पावेल ने सब कुछ बतला दिया।

"बड़े होकर तुम इतने आवारा निकलोगे, तो जिन्दगी में क्या करोगे," उसकी मां ने उदास आवाज में कहा। "हम लोग इसके संग क्या करें? मेरी समझ में ही नहीं आता कि यह लड़का किस पर गया है! हे भगवान, इस लड़के के पीछे मुझे क्या-क्या नहीं भोगना पड़ा," उसने शिकायत के लहजे में कहा।

आर्तेम ने अपना खाली प्याला अलग सरकाया और पावेल की ओर मुड़ा।

"अब तुम मेरी बात सुनो दोस्त," उसने कहा। "जो हो गया सो हो गया। उसका कोई इलाज नहीं। हां इतना है कि अब आगे से सावधान रहो और जी लगा कर अपना काम करो। और देखो, कोई शरारत न करना। अगर इस जगह से भी तुम निकाले गये तो याद रखना, मैं तुम्हारी खूब ही मरम्मत करूंगा। तुम मां को काफी दुख दे चुके हो। जब देखो कोई न कोई मुसीबत खड़ी किये रहते हो। मगर अब इस चीज को बन्द होना है। तुम यहां साल-छः महीना काम कर लो, फिर मैं कोशिश करके तुमको डिपो में अपरेंटिसी पर लगवा दूंगा। क्योंकि इस तरह तमाम जिन्दगी गन्दी रकाबियां धोते रहने से तो बेड़ा पार नहीं होगा। तुम्हें कोई न कोई धंधा सीखना ही होगा।

अभी तुम जरा छोटे हो। मगर साल भर मे मैं कोशिश करूगा कि तुम्हारा कुछ बन्दोबस्त हो जाय और शायद वे लोग तुमको लगा भी लें। अब मैं यही काम करूगा। मा को अब काम पर नही जाना पड़ेगा। सारी जिन्दगी उन्होंने बहुत काफी गुलामी की, एक से एक हरामजादो की। पावका, देखो तुम्हे आदमी बनना है।"

वह उठ खड़ा हुआ। उसकी विशाल काया के आगे आसपास की सारी चीजें बौनी नजर आती थी। कुर्सी पर लटकते कोट को पहनते हुए उसने अपनी मा से कहा, "मुझे घटे भर के लिए जरा बाहर जाना है," और बाहर निकल गया। दरवाजे मे से निकलने के लिए वह जरा झुका।

बाहर के गेट की ओर बढ़ते हुए वह खिड़की के पास से निकला और अन्दर झाकते हुए उसने पावेल को आवाज देकर कहा, "मैं तुम्हारे लिए एक जोड़ा जूता और एक चाकू लाया हू। मा से ले लेना।"

स्टेशन का रेस्तोरा दिन-रात खुला रहता था।

छः रेलवे लाइनें इस जक्शन पर मिलती थी और स्टेशन हमेशा मुसाफिरो से खचाखच भरा रहता था, सिर्फ रात को दो-तीन घटे के लिये, दो गाड़ियो के दरमियान, वहा कुछ शान्ति रहती थी। सभी दिशाओ के लिए सैकडो गाड़िया इस स्टेशन से गुजरती थी। गाड़िया, जो मोर्चे के एक भाग से दूसरे भाग को जाती थी और एक जैसे भूरे रग के ओवर कोट पहने हुए नये लोगो को ले जाती थी और यह आना-जाना अनवरत चलता रहता था।

पावेल ने दो बरस तक उस जगह काम किया—दो बरस, जिनमे उसने सिवाय रकाबी धोने की जगह और बावर्चीखाने के और कुछ नही देखा। वे बीस-बाईस लोग जो बावर्चीखाने मे काम करते थे, दिन-रात पागलो की तरह जुते रहते थे। रेस्तोरा और बावर्चीखाने के बीच दस बैरे बराबर दौड लगाते रहते थे।

अब पावेल को आठ के बदले दस रूबल मिलने लगे थे। इन दो सालो मे वह और लम्बा और चौड़ा-चकला हो गया था। इन्ही दो बरसो मे उसे बहुत सी परीक्षाओ का सामना भी करना पड़ा था। छ महीने उसने बावर्चीखाने मे काम किया था, मगर फिर उसे गन्दी रकाबिया धोने के काम पर भेज दिया गया। बात यह थी कि सर्व शक्तिमान खानसामा उससे रुष्ट था—बड़ा खतरनाक छोकरा है यह, ज्यादा मारते डर लगता है, कौन जाने कब वह छुरा भोक दे। और इसमे सन्देह नही कि अब तक न जाने कभी की अपने गुस्सैल मिजाज के कारण पावेल की नौकरी छूट गई होती, बशर्ते उसमे कड़ी मेहनत

का भी जबरदस्त माद्दा न होता। क्योंकि यह बात सही है कि वह दूसरे किसी आदमी से ज्यादा काम कर सकता था और थकता तो जैसे कभी था ही नही।

जिन घटों में काम की बहुत भीड होती, वह लदी हुई ट्रे लिये बावर्ची-खाने की सीढी पर ऊपर नीचे, बार-बार, पाच-पाच सीढियो को एक-एक डग में भरता तूफान की तरह दौडता था।

रात को, जब रेस्तोरां के दोनो हॉलों में शोर-गुल मद्धिम पड जाता, सब बैरे नीचे बावर्चीखाने के भडारघरों में इकट्ठे होते और सुध-बुध खोकर दीवानों जैसे ताश के जुए खेलने लगते। कई बार पावेल ने बडी रकम के नोटों को एक हाथ से दूसरे हाथ मे जाते देखा था। उसे इतना ढेर सा पैसा इस तरह पडे हुए देख कर अचम्भा नहीं होता था, क्योंकि उसे मालूम था कि हर बैरे को रुबल-आधा रुबल की बख्शीश से शिफ्ट के पीछे तीस-चालीस रुबल मिल जाते थे जिनको वे शराब और जुए में खर्च कर देते थे। पावेल को इनसे नफरत थी।

"सुअर के बच्चे हैं," उसने सोचा। "एक वह आर्तेम है, आला दर्जे का मेकैनिक और उसे महीने में कुल अडतालीस रुबल मिलते हैं और मुझे मिलते हैं दस। और ये लोग हैं कि दिन भर ही मे इतना सारा पैसा बटोर लेते हैं। और किस बात के लिए? सिर्फ इस बात के लिए कि यहा से वहा ट्रे लाते-ले जाते हैं। और फिर यह सारा पैसा शराब और जुए मे खर्च किया जाता है।"

पावेल के लिए ये बैरे भी उतने ही बेगाने और दुश्मन जैसे थे जितना कि मालिक। "ये सुअर यहा तो पेट के बल रेंगते हैं मगर वहा शहर में इनकी बीबिया और बेटे रईसों की तरह इठलाते चलते हैं।"

कभी-कभी वे लोग अपने बेटो को भी लाते जो हाई स्कूल की ठाठदार वर्दिया पहने होते। कभी-कभी वे अपनी बीबियों को भी लाते जो अच्छी आराम की जिन्दगी के कारण नर्म और गुदाज नजर आती। पावेल ने सोचा, "मैं दावे के साथ कह सकता हू कि इन लोगों के पास उन रईसजादो से ज्यादा पैसा है जिनकी मेज पर दौड-दौड कर वे चीजें पहुचाते हैं।" रात को बावर्चीखाने के अधेरे कोनो और भंडारघरो में जो कुछ हुआ करता था उससे भी अब पावेल को कोई आघात न लगता था। उसे अच्छी तरह मालूम था कि कोई भी रकाबी धोनेवाली या शराबखाने की नौकरानी ज्यादा दिन तक अपनी नौकरी सलामत नहीं रख सकती थी, अगर वह चन्द रुबलो के लिए उन लोगो को अपना शरीर न बेचे जो वहा उसके स्वामी थे।

पावेल को जिन्दगी की घिनौनी खन्दक की सबसे निचली तहो की एक झलक मिलती थी और वहा से एक अजीब खट्टी बदबू निकल रही थी जो कि

सड़ते हुए दलदल की बदबू थी। और यह बदबू पहुंची उसके पास जो दूर नई और अनजान चीज को पाने के लिए ललक रहा था।

आर्तेम अपने भाई को रेलवे यार्ड मे अपरेंटिसी पर लगाने मे नाकाम रहा; पन्द्रह साल से कम उम्रवाले की उनको जरूरत नही थी। मगर पावेल धुएं से काली उस ईंट की इमारत की तरफ एक खिंचाव महसूस करता था और उस दिन का इन्तजार कर रहा था जब वह रेस्तोरां से छुट्टी पा सकेगा।

वह अक्सर आर्तेम से मिलने के लिए यार्ड मे जाया करता था और तब उसके संग गाड़ियों की देख-भाल पर निकल जाता और जो मदद बन पड़ती, उसे दे देता था।

फ्रोसिया के चले जाने पर उसने खास तौर से अकेलापन महसूस किया। उस खुशदिल हंसती हुई लड़की के चले जाने पर पावेल को इस बात का और भी पैना एहसास हुआ कि उसके संग उसकी दोस्ती कितनी पक्की हो गई थी। अब, जब वह सवेरे काम पर आता और शरणार्थी स्त्रियो के झगड़ो और तेज चीख-पुकार को सुनता तो उसे अपना अकेलापन, अपना खालीपन और भी शिद्दत से महसूस होता।

एक रात गरमे को सुलगाते हुए वह आतिशदान के सामने बैठा लपटों को देख रहा था। स्टोव की गरमी उसे सुख पहुंचा रही थी। इस वक्त वहां पर वह अकेला ही था।

न जाने कैसे अनायास वह फ्रोसिया के बारे मे सोचने लगा और हाल ही में उसने जो एक दृश्य देखा था, वह उसकी मन की आंखो के आगे घूम गया।

सनीचर की रात को फुर्सत के वक्त पावेल नीचे बावर्चीखाने मे जा रहा था, जबकि कुतूहलवश वह लकड़ी के एक ढेर पर चढ गया और वहां से उसने नीचे भंडारघर को देखा जहां जुआड़ी अक्सर इकट्ठा हुआ करते थे।

खेल पूरे जोर पर था। इस वक्त जालीवानोव नाल इकट्ठा कर रहा था। आवेश से उसका चेहरा लाल हो रहा था।

तभी सीढ़ी पर पैरो की आहट सुनाई दी। घूम कर पावेल ने प्रोखोश्का को नीचे उतरते हुए देखा और सीढ़ी के नीचे छुप गया ताकि वह आदमी बावर्चीखाने मे चला जाय। सीढ़ी के नीचे अंधेरा था और प्रोखोश्का उसको देख न सका।

प्रोखोश्का ने जैसे ही सीढ़ी के मोड़ को पार किया, पावेल ने उसकी चौड़ी पीठ और बड़े से सिर की एक झलक पाई। ठीक तभी कोई और हलके पैरो से भागता हुआ उस बैरे के पीछे-पीछे आया और पावेल ने एक परिचित आवाज को बोलते सुना।

"रुको प्रोखोश्का!"

प्रोखोश्का रुक गया और पीछे घूम कर सीढ़ी के ऊपर की ओर उसने देखा और गुर्रा कर बोला, "क्यों क्या चाहिये ?"

कदमो की आहट पास आ गई और फ्रोसिया दिखाई दी।

उसने बैरे की बाह पकड ली और टूटती सी रुधती हुई आवाज मे बोली "प्रोखोश्का ! लेफ्टिनेन्ट साहब ने तुमको जो पैसा दिया वह कहां है ?"

आदमी ने झटक कर लडकी से अपनी बाह छुडा ली।

"कैसा पैसा ? मैंने तुम्हे दे दिया था न ?" उसकी आवाज तेज और दुष्टता से भरी हुई थी।

"मगर उसने तो तुम्हे तीन सौ रूबल दिये थे ?" फ्रोसिया की आवाज रुधी हुई सिसकियो में तबदील हो गई।

"कही दिया न हो ! तीन सौ, हु !" प्रोखोदका ने व्यग्य के स्वर मे कहा। "सबका सब लेना चाहती हो, क्यो ! जरा देखिये तो साहबजादी को, धोती तो हैं आप रकाबिया और दिमाग आसमान पर है ! पचास जो मैंने तुमको दिए, बहुत हैं। तुमसे कही ज्यादा खूबसूरत और पढ़ी-लिखी लडकिया भी इतना नही लेती। जो कुछ तुम्हें मिला, उसके लिए तुमको मेरा एहसान मानना चाहिए—एक रात के लिए पचास रूबल बहुत होते हैं। मगर खैर, तुम कहती हो तो तुम्हें दस और दे दूगा, बीस भी दे सकता हू, मगर और नही। और, तुम अगर बेवकूफ न होगी तो कुछ और भी कमा लोगी। मैं तुम्हारी मदद कर सकता हू।" यह कह कर प्रोखोश्का घूमा और बावर्चीखाने मे पहुचकर आख से ओझल हो गया।

"बदमाश ! सुअर !" फ्रोसिया ने चीखते हुए कहा और लकडी के ढेर से टिक कर जोर-जोर से सिसकिया लेने लगी।

पावेल के उस वक्त के मनोभावो को शब्द नही बयान कर सकते जब सीढी के नीचे अधेरे मे खडे-खडे उसने फ्रोसिया को पागलो की तरह लकडी के कुन्दो पर सर पटकते देखा। मगर वह सामने नही आया, सिर्फ उसकी उगलिया रह-रह कर जीने के लोहे के खम्भो को पकड लेती थी।

"अच्छा तो उन्होंने इसको भी बेच डाला, खुदा गारत करे ! हाय फ्रोसिया, फ्रोसिया..."

प्रोखोश्का के लिए उसकी नफरत उसके दिल को पहले से कही ज्यादा सुलगाने लगी और अपने चारो तरफ वह जो कुछ भी देखता था, उसीसे उसको नफरत और घिन मालूम होती थी। "अगर मुझ में ताकत होती तो मैं उस हरामजादे को पीट-पीट कर उसका हलुआ बना देता ! मैं आर्तेम की तरह लम्बा-चौडा और मजबूत क्यो नहीं हुआ।"

गरमे के नीचे लपटें उठी और बुझ गईं, उनकी कापती हुई लाल जीभ एक लम्बी नीली रेखा के सग लिपटी हुई थी। पावेल को ऐसा लगा मानो कोई नन्हा सा शरारती भूत उसे जीभ दिखा-दिखाकर उसका मजाक उडा रहा हो।

कमरे मे खामोशी थी।' सिर्फ आग के चटकने की आवाज सुनाई दे रही थी और बम्बे से पानी रुक-रुक कर टपक रहा था।

किलम्का ने आखिरी बर्तन, जो इतना माजा गया था कि चमक रहा था, आलमारी पर रखा और अपने हाथ पोछे। बावर्चीखाने मे और कोई नही था। ड्यूटी पर का रसोइया और उसका मददगार गुसलखाने मे सो रहे थे। रात के तीन घटो के लिए बावर्चीखाने पर खामोशी छा गई। यह घंटे किलम्का, पावेल के सग ऊपर गुजारा करता था क्योंकि उस बावर्चीखाने के छोकरे और इस काली आख वाले पावेल मे, जो गरमे की देख-रेख करता था, गहरी दोस्ती हो गई थी। ऊपर किलम्का ने पावेल को खुले हुए आतिशदान के आगे पालथी मारे बैठा पाया। पावेल ने एक परिचित, झबरे बालो वाली आकृति की छाया दीवाल पर पडते देखी और बिना उस ओर मुडे बोला

"बैठ जाओ, किलम्का।"

लडका लकडी के ढेर पर चढ गया, और इतमीनान के साथ लेट कर, खामोश पावेल को देखने लगा।

"आग में अपना भाग्य पढ रहे हो, क्या ?" उसने मुस्कराते हुए पूछा।

पावेल ने जोर लगा कर अपनी दृष्टि लपटो की उन लल्हिान जिह्वाओ से फेरी और किलम्का को अपनी उन दो बडी-बडी चमकती हुई आखो से देखा जो एक अव्यक्त व्यथा से भरी हुई थी। किलम्का ने कभी अपने दोस्त को इतना उदास नही देखा था।

थोडी देर की खामोशी के बाद किलम्का ने पूछा, "आज तुम्हे क्या हुआ है पावेल ? कोई खास बात हो गई है क्या ?"

पावेल उठा और जाकर किलम्का के पास बैठ गया।

उसने धीरे से जवाब दिया, "नही, कुछ हुआ नही है। बस यह है किलम्का कि मेरा यहा रहना कठिन है।" और घुटनो पर टिके हुए उसके हाथो की मुट्ठिया बध गईं।

"क्या हो गया है तुम्हे आज ?" किलम्का ने कुहनियो का सहारा लेकर उठते हुए जानने के लिए आग्रह किया।

"आज ? आज की बात नहीं है। जिस दिन से मैं इस काम पर आया, उसी दिन से मुझे ऐसा लग रहा है। जरा देखो कैसी जगह है यह ! हम खच्चरो की तरह काम करते हैं और हमें मिलता क्या है ? शुक्रिया नही, लात-घूसे ! कोई भी तुम्हे मार सकता है, फिर कोई नही मिलेगा जो तुम्हारी तरफदारी

करे। मालिक लोग हमको रखते हैं नौकरी करने के लिए, मगर कोई भी आदमी जिसके बदन मे ताकत हो, बड़े अधिकार के साथ हमको पीट सकता है। भले तुम दौड-दौड कर अपनी जान ही क्यो न दे दो, तुम कभी सबको खुश नही कर सकते और जिसको खुश न कर सको, वही तुम्हारी खबर लेने के लिये तैयार रहता है। तुम चाहे कितनी कोशिश इस बात की क्यो न करो कि हर काम ठीक से हो ताकि कोई गलती न निकाल सके। मगर फिर भी, कोई न कोई ऐसा आदमी निकल ही आता है जिसका काम उसकी मनचाही मुस्तैदी से नही हो सका और बस फिर तो तुम्हारी मरन रखी ही है, कुछ भी करो, ऐसे भी, वैसे भी।"

"इस तरह चिल्लाओ मत, कोई यहा चला आयेगा और सुन लेगा!" क्लिम्का ने डरते हुए उसको टोका।

पावेल उछल कर खड़ा हो गया।

"सुनने दो, मैं तो काम छोडने जा ही रहा हू। यहा इस चाइयो, बदमाशो के अड्डे पर काम करने से अच्छा बेलचा भर-भर कर बरफ फेंकने का काम होगा। देखो तो इनके पास कितना पैसा है। हमको तो ये धूल समझते हैं और लडकियो के सग जो मन आए करते हैं। भली लडकिया, जो उनके इशारों पर नही नाचती, ठोकर मारकर बाहर कर दी जाती हैं और उनकी जगह भूख से मरती हुई शरणार्थी औरतें लगा ली जाती हैं जिन्हे दुनिया मे और कहीं जगह नहीं है। और फिर वे जरूर यहा टिक जाती हैं क्योकि यहा उन्हें कम से कम दोनो वक्त खाने को तो मिल जाता है और इतनी बदहाल होती हैं वे कि एक टुकडा रोटी के लिये कुछ भी कर सकती हैं।"

वह इतने आवेश मे बोल रहा था कि क्लिम्का को डर लगा कि कही कोई सुन न ले। बावर्चीखाने मे खुलने वाले दरवाजे को बन्द करने के लिए वह जल्दी से उठ खडा हुआ। पावेल बदस्तूर अपनी आत्मा मे भरे हुए तीखेपन को उडेलता रहा।

"और तुम क्लिम्का, पिटते हो और कभी कुछ नही बोलते। यह ठीक नही है!"

पावेल मेज के सहारे एक स्टूल पर बैठ गया और थकान के मारे उसने अपना सिर हथेली पर टिका लिया। क्लिम्का ने आग मे कुछ लकडी डाल दी और वहीं आकर बैठ गया।

उसने पावेल से पूछा, "आज हम लोग पढेंगे नही क्या?"

"कुछ नहीं है पढने को," पावेल ने जवाब दिया, "बुकस्टाल बन्द है।"

क्लिम्का ने आश्चर्य से पूछा, "क्यो? आज बन्द क्यो है?"

पावेल ने जवाब दिया, "पुलिस वालों ने बुकसेलर को गिरफ्तार कर लिया। उसके यहा उनको कुछ मिला है।"

"गिरफ्तार कर लिया ? काहे के लिये ?"

"कहते हैं कोई सियासी बात है।"

पावेल की बात का मतलब समझने मे असमर्थ किलम्का उसे आख फाडे देखता रहा।

"सियासी बात ? वह क्या होती है ?"

पावेल ने कधे उचका दिए

"पता नही क्या होती है। जार के खिलाफ जाओ, तो वही सियासी बात कहलाती है, ऐसा लोग कहते हैं।"

किलम्का अचम्भे से देखता रहा

"लोग ऐसा क्यो कहते हैं ?"

पावेल ने जवाब दिया, "मैं क्या जानू।"

दरवाजा खुला और फ्रोशा कमरे में दाखिल हुई। उसकी आखें नीद के कारण सूजी हुई थी।

"तुम दोनों सो क्यों नहीं रहे हो ? अगली गाडी आने के पहले घटे भर की नीद निकाल लेने का वक्त है। तुम जरा आराम कर लो पावेल और मैं तुम्हारी तरफ से अगीठी को देख लूगी।"

जितनी जल्दी सोचा था, उससे भी पहले ही पावेल ने काम छोड दिया। और इस तरह छोडा जिसकी उसने कल्पना भी न की थी।

जनवरी के महीने में एक दिन जब खूब पाला गिर रहा था और पावेल अपना काम खतम करके घर जाने की तैयारी कर रहा था, तो उसने देखा कि उसकी जगह लेने वाला लडका नहीं आया है। पावेल मालिक की स्त्री के पास गया और उसने उसको बतलाया कि जो भी हो, वह तो घर जायगा ही। मालिक की स्त्री यह सुनने को भी तैयार नही थी। लिहाजा पावेल को मजबूरन काम पर लगे रहना पडा, गोकि पूरे एक दिन और एक रात की मेहनत के बाद वह थक कर चूर हो गया था। शाम होते-होते उसकी यह हालत हो गई थी कि लगता था कि थकान के मारे वही ढेर हो जायगा। रात मे फुर्सत के वक्त उसे गरमे को भरना पडा और तीन बजे वाली गाडी के लिए समय से पानी खौला कर तैयार रखना पड़ा।

पावेल ने बम्बा खोला मगर उसमे पानी नही था। जाहिर था कि पम्प काम नही कर रहा है। बम्बे को खुला छोड कर वह लकडी के ढेर पर लेट

गया, मगर थकान ने उस पर काबू पा लिया और थोडी ही देर मे वह गहरी नीद मे डूब गया।

कुछ ही मिनट बाद बम्बे मे गुर्र-गुर्र सू-सू की आवाज होने लगी और गरमे मे पानी भरने लगा। थोडी ही देर मे गरमा लबालब हो गया और फिर पानी बह कर कोठरी के फर्श पर फैलने लगा। हस्ब मामूल कोठरी इस वक्त वीरान थी। पानी बहता रहा, बहता रहा—यहां तक कि फर्श डूब गया और पानी दरवाजे के नीचे से बह कर रेस्तोरा मे पहुचने लगा।

ऊघते हुए मुसाफिरो के बिस्तरो और बक्सो के नीचे छोटे-छोटे चहबच्चे तैयार हो गए, मगर किसी का ध्यान इस चीज की तरफ तब तक नही गया जब तक कि पानी फर्श पर सोये हुए एक आदमी के पास नही पहुचा और वह घबरा कर चीख कर जल्दी से उठ नही खडा हुआ। तब तो फिर सामान को बचाने के लिए बडी रेल-पेल मची और गजब का शोर-हल्ला हुआ।

पानी बह कर लगातार अन्दर आता रहा।

प्रोखोश्का, जो दूसरे हॉल मे मेजो की सफाई कर रहा था, शोर सुन कर अन्दर दौडा। पानी के ढेर से छलाग लगाते हुए वह दरवाजे की ओर लपका और तेजी से धक्का देकर उसे खोला। दरवाजे का खुलना था कि वह रुका हुआ पानी तेजी से हॉल मे बह निकला।

तब तो फिर और ज्यादा शोर मचा। ड्यूटी पर के बैरे भाग कर गन्दे बर्तनो वाली कोठरी मे पहुचे। प्रोखोश्का सोते हुए पावेल पर टूट पडा।

लडके के सिर पर लात-घूसे बरसने लगे। वह हक्का-बक्का रह गया।

अभी भी वह आधी नीद मे था और उसकी समझ मे नही आ रहा था कि यह क्या हो रहा है। उसे सिर्फ आख के आगे टूटती हुई बिजलियो की तेज चमक, और जिस्म भर मे दौडते हुए दर्द की ऐंठन की चेतना थी।

पावेल को तो इस बुरी तरह मार पडी थी कि बडी मुश्किल से, लडखडाते हुए, वह घर पहुच पाया।

सवेरे, गुस्से मे भरे आर्तेम ने छोटे भाई से पूछा कि क्या बात हुई।

पावेल ने उसे सब कुछ बतला दिया।

आर्तेम ने भारी फटी हुई आवाज मे पूछा, "तुमको किसने मारा ?"

"प्रोखोश्का ने।"

"अच्छा अब तुम चुपचाप पडे रहो।"

बिना और एक शब्द बोले आर्तेम ने अपना कोट चढाया और बाहर निकल गया।

"बैरा प्रोखोर कहा है ?" उसने एक रकाबी धोने वाली से पूछा। ग्लाशा ने अपने सामने खडे हुए मजदूर की पोशाक पहने इस अजनबी को देखा।

उसने जवाब दिया, "अभी आता है।"

यह भारी-भरकम आदमी दरवाजे के हैंडिल से टिक कर खडा हो गया।

"अच्छा. मैं यही इन्तजार करता हू," उसने कहा।

एक ट्रे मे रकाबियो का एक पहाड लादे प्रोखोर पैर से दरवाजे को धक्का देता हुआ कोठरी मे दाखिल हुआ।

ग्लाशा ने बैरे की तरफ इशारा करते हुए कहा, "यही प्रोखोर है।"

आर्तेम आगे बढा और प्रोखोर के कधे पर जोर से हाथ मारते हुए उसकी आखो मे आखे डाल कर देखा।

"तुमने मेरे भाई पावका को क्यो मारा ?"

प्रोखोर ने अपने कधो को उसकी गिरफ्त से छुडाने की कोशिश की, लेकिन एक घूसा जो कस कर पडा तो वही फर्श पर लम्बा हो गया। उसने उठने की कोशिश की। मगर पहले से भी ज्यादा भयानक दूसरा घूसा पडा तो वह लेटा का लेटा ही रह गया।

डर के मारे रकाबी धोने वाली औरतें इधर-उधर जा खडी हो गईं।

आर्तेम घूमा और दरवाजे की तरफ बढा।

प्रोखोरका फर्श पर पडा रहा, उसके घायल चेहरे से खून बह रहा था।

उस शाम आर्तेम रेलवे यार्ड से घर नहीं लौटा।

उसकी मा को पता चला कि पुलिस ने उसको पकड रखा है।

छ दिन बाद बहुत रात गये आर्तेम घर लौटा जब उसकी मा सो गई थी। वह पावेल के पास गया जो अपने विस्तर में बैठा हुआ था और बडी नरमी से उसने पूछा

"अब कैसी तबियत है भैये ?" आर्तेम पावेल के पास बैठ गया। "मामला और भी बिगड सकता था।" फिर एक मिनट की खामोशी के बाद उसने कहा "कोई बात नही, तुम बिजली घर मे काम करने जाना। मैंने उनसे तुम्हारे बारे मे बात की है। वहा तुम सचमुच ढग का काम सीख सकोगे।"

पावेल ने आर्तेम के मजबूत हाथ को अपने दोनो हाथों मे थाम लिया।

दो

उस छोटे से कस्बे मे एक तूफान की तरह यह जबर्दस्त खबर फैल गई कि "जार का तख्ता उलट दिया गया।"

कस्बे वालो ने इस खबर को मानने से इनकार किया।

उन्होंने इस खबर को तब माना जब एक गाडी तूफान मे धीरे-धीरे रेंगती हुई सी स्टेशन मे दाखिल हुई और उसमे से फौजी बरानकोट पहने और कधो पर राइफिलें लटकाए दो विद्यार्थी और लाल-लाल फीते बाहो मे बाधे हुए क्रान्तिकारी सैनिको का एक दस्ता प्लेटफार्म पर उतरा और उसने स्टेशन के फौजी सिपाहियो, एक बूढे कर्नल और गैरिसन के प्रधान को गिरफ्तार कर लिया। बर्फ से ढकी सडको पर चलते हुए हजारो आदमी कस्बे के चौक मे आ पहुचे।

आजादी, बराबरी और भाईचारा—ये लफ्ज, जो उन्होंने पहले कभी नही सुने थे, अब सुने और उन्हे प्यासो की तरह पी गए।

उसके बाद तूफानी दिन आए, हलचल और खुशी से भरे हुए दिन। फिर एक ठहराव सा आ गया, और उस टाउन हॉल पर लहराता हुआ लाल झडा ही होने वाले परिवर्तन की अकेली निशानी रह गया। उसी टाउन हॉल मे मेन्शेविकों और बुन्द के मानने वालो ने अपनी किलेबन्दी की थी। उस पर फहराते हुए लाल झडे के अलावा और सब कुछ ज्यो का त्यों रहा।

जाडे के अन्त मे एक घुडसवार रेजिमेन्ट उस कस्बे मे ठहराई गई। सवेरे ये घुडसवार अपने दस्ते बना कर दक्खिनी-पच्छिमी मोर्चे से भागने वाले सैनिकों की तलाश मे रेलवे स्टेशन पहुचते थे।

ये सैनिक बहुत मोटे-ताजे थे और उनके चेहरो से जाहिर था कि उन्हें खाने-पीने का आराम है। उनके ज्यादातर अफसर बडे-बडे काउन्ट और राज-कुमार थे, उनके कधो पर सुनहरी पट्टिया थी और बिरजिसो पर पतली-रुप-हली गोट लगी हुई थी, ठीक वैसी ही जैसी कि जार के जमाने मे—गोया क्रान्ति नाम की कोई चीज हुई ही न हो।

पावेल, क्लिमका और सर्गेई ब्रुजाक के लिए कुछ भी नही बदला था। मालिक लोग अब भी बदस्तूर कायम थे। नवम्बर के महीने मे पहुच कर ही कुछ असाधारण बातें शुरू हुईं। स्टेशनो पर एक नई तरह के लोग नजर आने लगे जिन्होंने व्यवस्था मे कुछ हलचल पैदा करनी शुरू की। इनमे से ज्यादातर लोग मोर्चे पर से लौटे हुए सैनिक थे और उन्ही की सख्या बराबर बढती आ रही थी। उनका नाम कुछ अजीब सा था—"बोल्शेविक।"

किसी को नही मालूम था कि यह तगडा और वजनदार लफ्ज़ कहा से आया।

मोर्चे से भागे हुए सैनिको को रोक कर रखना इन सैनिको के लिए उत्तरोत्तर मुश्किल होता जा रहा था। स्टेशन पर राइफिलें दगने और शीशे टूटने की आवाजें बराबर बढती जा रही थी। ये लोग दल बाध कर मोर्चे से आते थे और जब उन्हे रोका जाता, तो सगीनो से लडते थे। दिसम्बर के शुरू मे गाडी भर-भर कर ये लोग आने लगे।

सन्तरी लोग अपनी पूरी ताकत से स्टेशन पर आए, इस इरादे से कि उन सैनिको को रोक रखेंगे। मगर उन्होने अपने को मशीनगनो की बौछार का सामना करते पाया। रेल के डिब्बो से निकलने वाले इन सैनिको के लिए मौत मानो एक खिलवाड थी।

मोर्चे पर से लौटे, भूरे रग के कोट पहने इन लोगो ने सन्तरियो को वापिस कस्बे के अन्दर ढकेल दिया और फिर स्टेशन पर लौट आए और गाडिया भर-भर कर अपनी अगली मजिल के लिए रवाना हो गए।

१९१८ के वसन्त मे एक रोज तीन दोस्त सर्गेई ब्रुजाक के घर से लौटते हुए, जहा पर वे ताश खेल रहे थे, कोर्चागिन के बागीचे मे आए और घास पर लेट गए। वे लोग जिन्दगी से ऊबे हुए थे। अब तक जो काम वे करते आ रहे थे, उनसे उनको उकताहट मालूम हो रही थी और वे अपने दिन ज्यादा उमग और उत्साह से बिताने का तरीका खोजने के लिए परेशान होने लगे थे और तभी उन्होने अपने पीछे घोडो की टापो की आवाज सुनी और एक घुडसवार को तेजी से अपनी तरफ आते हुए देखा। एक छलाग मे घोडे ने सडक और बागीचे की नीची मा वाडी के बीच का गढा पार कर दिया और घुडसवार ने अपनी चाबुक से पावेल और क्लिम को इशारा किया।

"ओ छोकरो, जरा यहा आओ!"

पावेल और क्लिम उचक कर खडे हो गए और दौड कर बाडी के पास गए। घुडसवार धूल से भरा हुआ था, धूल की एक मोटी सी परत उसकी टोपी पर जमी हुई थी जिसे वह माथे से दूर पीछे की ओर सरका कर पहने हुए था। उसके खाकी ब्लाउज और बिरजिस पर भी धूल की परत जमी हुई थी। उसके भारी फौजी कमरबन्द से एक रिवाल्वर और दो जर्मन दस्ती बम लटक रहे थे।

घुडसवार ने उनसे पूछा, "क्यो लडको, तुम मुझे पानी पिला सकते हो?"

पावेल पानी लेने घर की तरफ भागा तो घुडसवार अपनी ओर घूरते हुए सर्गेई की तरफ मुडा। "बतलाओ तुम्हारा कस्बा किसके कब्जे मे है?"

सर्गेई ने आगन्तुक को एक सांस में सारी मुकामी खबरें सुना डाली।

"दो हफ्तो से यहा पर किसी का कब्जा नही है। आजकल तो होमगार्डों की ही सरकार है। यहा के सारे रहने वाले रात को शहर की गश्त करते हैं। मगर तुम कौन हो ?" सर्गेई ने पूछा।

घुडसवार मुस्कराया और बोला, "देखो अभी से बहुत ज्यादा जानने की कोशिश मत करो—सब बात अभी से जान जाओगे तो जल्दी बूढे हो जाओगे।"

पावेल एक मग्गे मे पानी लिये घर से भागता हुआ आया।

घुडसवार ने एक घूट में मग्गे को खाली कर दिया और उसे वापस पावेल को पकडा दिया। इसके बाद लगाम को झटका देते हुए वह तेजी से चीड के जगलो की तरफ निकल गया।

पावेल ने क्लिम से पूछा, "वह कौन था ?"

क्लिम ने कधे उचकाते हुए जवाब दिया, "मुझे क्या मालूम।"

"लगता है कि फिर सरकार मे रद्दोबदल होगी। इसीलिए लेशचिन्स्की परिवार कल ही यहा से चला गया। अगर अमीर लोग भाग रहे हैं, तो इसका मतलब होता है कि छापेमार आ रहे हैं।" सर्गेई ने ऐलान किया, और दृढता के साथ इस राजनीतिक सवाल को यू हल कर दिया जैसे अब उसमे और कुछ कहने-सुनने को बाकी न रह गया हो।

इस बात का तर्क इतना प्रबल था कि पावेल और क्लिम को झट विश्वास हो गया और उन्होने फौरन सर्गेई की बात मान ली।

अभी इन लडको की बहस खतम भी नही हुई थी कि बडी सडक से आती हुई घोडो के टापो की आवाज सुन कर वे तीनो फिर दौड कर बाडी के पास आ गए।

उधर जगल के हाकिम के बगले के पास, जो पेडो की झुरमुट मे इस तरह छिपा हुआ था कि मुश्किल से ही दिखाई देता था, उन्होने जगल मे से आदमियो और गाडियो को निकलते देखा और निकटतर, बडी सडक पर, उन्होंने लगभग पन्द्रह घुडसवारो के एक दल को देखा जिनके घोडो की काठी से राइफिलें लटक रही थी। घुडसवारो के आगे-आगे एक अधेड आदमी अपने घोडे पर सवार चला आ रहा था। वह खाकी फौजी कोट पहने और अफसरो का कमरबन्द लगाए हुए था। दूरबीन उसके गले से लटक रही थी। उस आदमी के ठीक पीछे था वह जिससे अभी-अभी लडको की बात हुई थी। उस अधेड आदमी के सीने पर एक लाल फीता टका हुआ था।

सर्गेई ने पावेल की पसली मे उगली गडाते हुए कहा, "मैंने क्या कहा था तुमसे ? उस लाल फीते को देखते हो ? ये लोग छापेमार हैं, चाहे शर्त बद लो।" और खुशी से नाचते हुए वह कूद कर बाडी के पार सडक पर जा खडा हुआ।

दूसरो ने भी ऐसा ही किया और तीनो सडक के किनारे खडे हो गए और गौर से अपने करीब आते घुडसवारो को देखते रहे।

जब ये घुडसवार काफी पास आ गए, तब उस आदमी ने जिससे उनकी मुलाकात पहले हो चुकी थी, उनको इशारा किया और लेशचिन्स्की के मकान को अपनी चाबुक से दिखलाते हुए पूछा

"उसमें कौन रहता है ?"

पावेल घुडसवार के सग-सग चलने लगा।

"लेशचिन्स्की वकील। वह कल भाग गया। जरूर आप लोगो का डर लगा होगा उसे. .।"

"तुम्हें क्या मालूम कि हम लोग कौन हैं ?" अधेड आदमी ने मुस्कराते हुए पूछा।

पावेल ने फीते की ओर इशारा करते हुए कहा, "क्यो, वह क्या है ? कोई भी बतला सकता है...।"

शहर मे दाखिल होती हुई फौजी टुकडी को देखने के लिए कुतूहल के मारे लोगों की भीड सडक पर जमा हो गई। हमारे ये तीन नौजवान दोस्त भी इन गर्द से ढके हुए, थक कर चूर लाल सैनिकों को वहा से गुजरते हुए देखते रहे। और जब उस टुकडी की अकेली तोप और मशीनगनो की गाडिया सडक के पत्थर पर आवाज करती हुई आगे बढी तो लडको की कतारें भी छापेमारो के पीछे हो ली और लोग तब तक अपने घर नही गए जब तक कि यह टुकडी शहर के बीचोबीच रुक नही गई और सिपाहियो को लोगो के घरो पर ठहराने का काम शुरू नहीं हो गया।

उस शाम को लेशचिन्स्की के मकान मे, उसके लम्बे-चौडे बैठकखाने मे उस नक्काशीदार पायो वाली लम्बी-चौडी मेज के इर्द-गिर्द चार लोग बैठे हुए थे : टुकडी के कमाडर कामरेड बुलाकोव, जो एक अधेड आदमी थे और जिनके बाल पकने शुरू हो गए थे और उनके तीन सहायक।

बुलाकोव ने उस सूबे का नक्शा मेज पर फैला रखा था और उनकी उगलिया उस पर चल रही थी।

"कामरेड एरमाचेंको, तो तुम्हारा कहना यह है कि हम लोग इस जगह पर पैर जमाए," उन्होने अपने सामने बैठे हुए उस आदमी को सम्बोधित करते हुए कहा जिसके गाल की हड्डिया बहुत चौडी और दात बहुत मजबूत थे। "मगर मेरा तो खयाल है कि सवेरे ही हमे यहा से चल देना चाहिए। रात ही को चल दें तो और अच्छा हो। मगर वह शायद मुमकिन न हो, हमारे जवानों को आराम की जरूरत है। हमारा काम है जर्मनो के यहा पहुचने के पहले खुद पीछे हट कर कॅजातिन पहुँच जाना। अपनी मौजूदा ताकत से उनका

मुकाबला करना बेवकूफी की बात होगी। एक तोप और तीस गोले, दो सौ पैदल सिपाही और साठ घुड़सवार ! क्या कहने हैं, बड़ी दुर्दान्त सेना है न, जब कि जर्मन लोग फौलाद का एक पहाड़ लेकर आगे बढ़ रहे हैं। जब तक हम लोग पीछे हटती हुई दूसरी लाल टुकड़ियो के सग मिल नही जाते, तब तक हम मोर्चा नहीं ले सकते। इसके अलावा कॉमरेड, हमको यह भी याद रखना चाहिए कि जर्मनो के अलावा दूसरे क्रान्ति-विरोधी दस्ते भी होगे जिनका मुकाबला हमें करना होगा। मेरा प्रस्ताव है कि हम लोग कल सवेरे स्टेशन के उस पार वाले रेलवे पुल को उड़ाने के बाद पीछे हट जाय। उसकी मरम्मत करने में जर्मनों को दो-तीन दिन लग जायेंगे और इस बीच रेलवे लाइन से उनका आगे बढ़ना रुक जायगा। क्यो, तुम्हारा क्या खयाल है साथियो ? हम लोगों को ही निश्चय करना है ..।" इतना कह कर यह मेज के चारो ओर बैठे हुए दूसरे लोगो की ओर देखने लगे।

स्त्रुजकोव, जो बुलगाकोव के ठीक सामने बैठा हुआ था, अपने ओठो को चूस रहा था। उसने पहले नक्शे को और फिर बुलगाकोव को देखा और अन्त में अपनी राय दी :

"मैं बुलगाकोव से सहमत हू।"

उनमें जो सबसे कम उम्र का आदमी था और जो मजदूरों के कपड़े पहने हुए था, उसने भी अपनी सहमति प्रकट की। बोला

"बुलगाकोव ठीक कहते हैं।"

लेकिन एरमाचेंको ने सिर हिलाया। एरमाचेंको वही आदमी था जिसने लड़को से पहले बात की थी।

"अगर यही था तो हम लोगो ने फिर टुकड़ी बनाई ही क्यो ? बिना लड़े जर्मनों को पीठ दिखाने के लिए ? मैं समझता हू कि हम लोगों को इसी जगह पर जर्मनों से मोर्चा लेना चाहिए। भागते-भागते मैं तो थक गया। अगर मुझे तय करना हो तो मैं जरूर इसी जगह पर उनसे मोर्चा लू।" उसने तेजी से अपनी कुर्सी पीछे को सरकाई, उठा और कमरे मे टहलने लगा।

बुलगाकोव ने असहमति प्रकट करते हुए उसकी ओर देखा।

"एरमाचेंको ! हमको अपनी अक्ल से काम लेना चाहिए। हम अपने आदमियो को किसी ऐसी लड़ाई मे नही झोक सकते जिसका अन्त हार और तबाही मे हो। यह भारी बेवकूफी की बात होगी। हमारे ठीक पीछे बड़ी-बड़ी तोपें और बख्तरबन्द गाड़ियों की एक पूरी डिवीजन है...कामरेड एरमाचेंको, यह लड़कपन का वक्त नही है कि हम झूठ-मूठ बहादुरी दिखलाए.. ," दूसरो की ओर मुड़ते हुए उसने बात जारी रखी . "अच्छा तो यह तय हो गया, कल सवेरे हम लोग यहा से जा रहे हैं . और अब आइए अगले सवाल

को तय करें। दूसरी फौजी टुकडियों के साथ अपना सम्बध कायम करने का सवाल है। . चूंकि हम लोग इस जगह को छोडने वाले आखिरी लोग हैं, इसलिए यहा जर्मन पातो के पीछे काम के सगठन की जिम्मेदारी हमारी है। यह बहुत बडा रेलवे जकशन है और शहर मे दो स्टेशन हैं। रेलवे के काम को जारी रखने के लिए हमे एक बहुत भरोसे का कॉमरेड चाहिए। हमको यहीं पर फैसला करना होगा कि काम को शुरू करने के लिए हम किसको पीछे छोड जायें। क्या तुम्हारे जेहन में कोई आदमी है?"

एरमार्चेको ने मेज के पास आते हुए कहा: "मेरा खयाल है कि मल्लाह फियोदोर जुखराई को यहां पर रहना चाहिए। पहली बात तो यह कि वह यही के आदमी है। दूसरी बात यह कि वह फिटर और मेकेनिक है और उनको स्टेशन पर काम मिल सकता है। और किसी ने फियोदोर को हमारी टुकडी के साथ देखा भी नही है। आज रात को वह यहां पर आयेंगे। वह काफी समझदार आदमी हैं और काम को अच्छी तरह चला सकेंगे। मैं समझता हू कि इस काम के लिए वही सबसे माकूल आदमी हैं।"

बुल्गाकोव ने हामी भरते हुए सिर हिलाया

"ठीक है, मैं तुम से सहमत हू एरमार्चेको। साथियो, किसी को कोई आपत्ति तो नही है?" उन्होने दूसरो की ओर मुडते हुए पूछा। "कोई नही। तो यह मामला भी तय। हम लोग जुखराई के लिए कुछ पैसा छोड जायेंगे और कुछ परिचय-पत्र जिनकी उसको जरूरत पडेगी .। अच्छा, अब तीसरा और आखिरी सवाल साथियां। इस शहर मे जो हथियार जमा हैं, उनका क्या हो? यहा पर हथियारो का अच्छा खासा स्टाक है, बीस हजार राइफिलें, जो जार के खिलाफ लडाई के वक्त यहा पर छूट गयी थी और जिनके बारे मे सब लोग भूल चुके हैं। वे सब एक किसान के शेड मे जमा हैं। शेड के मालिक ने यह खत मुझे लिखा है। वह जल्दी ही उनसे अपना पीछा छुडाना चाहता है। हम लोग खामखा जर्मनो के लिए उनको नही छोड जायेंगे। मेरी राय मे उनको आग लगा देनी चाहिए, और फौरन, ताकि सवेरे तक यह काम खतम हो जाय। डर सिर्फ इस बात का है कि आग कही आस-पास के मकानो तक न फैल जाय। गरीब किसान शहर के एक छोर पर रहते हैं।"

स्त्रुजकोव अपनी कुर्सी मे हिला। वह बहुत मजबूत, पुख्ता आदमी था और उसके चेहरे पर जगल की तरह दाढी उगी हुई थी, क्योंकि एक अर्से से उसने उस्तरे की शक्ल नही देखी थी।

"मगर राइफलो मे आग क्यो लगाई जाय? मेरी राय मे तो उन्हें लोगों मे बाट देना चाहिए।"

बुल्गाकोव तेजी से उसकी ओर मुडा

"क्या कहा तुमने, बांट देना चाहिए ?"

एरमाचेंको ने बड़े उत्साह के साथ उस बात की तसदीक करते हुए कहा, "सचमुच बहुत अच्छा खयाल है। हमे उनको मजदूरों को दे देना चाहिए, और और भी जो लोग लेना चाहे उन सबको। जब जर्मन उनकी जिन्दगी दूभर कर देंगे उस वक्त उनके पास पलट कर हमला करने के लिए कुछ होगा तो। लाजिमी बात है कि वे लोगो को ज्यादा से ज्यादा सतायेंगे। और, जब यह चीज लोगो की बर्दाश्त से बाहर हो जायगी तो प्रतिकार के लिए उनके पास ये हथियार होगे। स्त्रुजकोव ठीक कहता है, राइफलें जरूर बांट देनी चाहिए। उनमे से कुछ को गांव मे ले जाना भी बुरा नही होगा। किसान उन्हे छिपा कर रख सकेंगे और जब जर्मन सभी कुछ हथियाने लगेंगे, उस वक्त राइफलें बहुत कारगर साबित होंगी।"

बुल्गाकोव मन ही मन मुस्कराया।

"बात तो तुम लोग ठीक कहते हो। मगर भूलो मत कि जर्मन जरूर यह हुक्म निकालेंगे कि सारे हथियार जमा कर दिए जायें और फिर सभी उनकी आज्ञा का पालन करेंगे।"

एरमाचेंको ने आपत्ति की "सब ऐसा नही करेंगे। कुछ लोग करेंगे, और बहुत से लोग नही करेंगे।"

बुल्गाकोव ने मेज के इर्द-गिर्द बैठे लोगों को प्रश्न करती हुई आंखो से देखा।

"मैं राइफलों को बांट देने के पक्ष में हूं," जवान मजदूर ने भी एरमाचेंको और स्त्रुजकोव की बात का समर्थन किया।

बुल्गाकोव मान गया। "अच्छा तो यह बात भी तय हो गई," अपनी कुर्सी से उठते हुए उसने कहा, "इस वक्त तो इतने ही सवाल थे। अब हम लोग सवेरे तक आराम कर सकते हैं। जुखराई आए तो उसे मेरे पास भेजना, मैं उससे बात करना चाहता हूं। एरमाचेंको, तुम जाकर जरा सन्तरियो की चौकियां देख लो।"

जब सब चले गए तो बुल्गाकोव बैठकखाने के बगल मे अपने सोने के कमरे मे गया, गद्दे पर उसने अपना बरानकोट फैलाया और लेट रहा।

-

दूसरे रोज सुबह पावेल बिजली घर मे अपने घर लौट रहा था। वह पिछले एक साल से वहा फायरमैन के मददगार के रूप मे काम कर रहा था।

उसे फौरन पता चल गया कि आज शहर मे असाधारण खलबली है। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया उसे और और लोग मिलते गए जो एक, दो

और कोई-कोई तो तीन-तीन राइफिलें लिए चले जा रहे थे। उसकी समझ मे नही आया कि हो क्या रहा है। वह तेजी से अपने घर की ओर लपका। लेशचिन्स्की के बागीचे के सामने उसे कल के अपने परिचित लोग मिले। ये लोग अपने घोडो पर सवार हो रहे थे।

पावेल भाग कर घर के अन्दर गया, जल्दी-जल्दी मुह-हाथ धोया और मा से यह मालूम करके कि आर्तेम अब तक घर नही लौटा है, फिर तेजी से बाहर निकल गया और जल्दी-जल्दी सर्गेई ब्रुजाक के घर की ओर चल दिया जो कि शहर के दूसरे छोर पर था।

सर्गेई का पिता इजन ड्राइवर का सहायक था और उसका अपना एक छोटा सा मकान और थोडी सी जमीन थी।

सर्गेई घर मे नही था और उसकी मा ने जो एक मोटी सी पीले चेहरे की स्त्री थी, पावेल को अरुचि की निगाहों से देखा।

"पता नहीं वह कहा है। सवेरे-सवेरे जो पहली चीज उसने की वह यही थी कि ऐसे भाग निकला जैसे भूत सवार हो। कहता था, कही पर राइफिलें बट रही है। मेरा खयाल है वही गया होगा। तुम सब जो चपटी-चपटी नाक वाले योद्धा हो न, उनको जरूरत इस बात की है कि उनकी जरा अच्छी तरह कुन्दी की जाय---बिलकुल कहे मे नहीं रहे अब तुम लोग। अभी दूध के दात भी तो तुम्हारे टूटे नही और चले हैं राइफिलो के पीछे। तुम उस आवारे को बतला देना कि अगर घर मे एक भी कारतूस लाया तो उसकी खाल उधेड लूगी। कौन जाने वह क्या उठा लाए और फिर मुझको तो उसकी जवाबदेही करनी पडेगी। तू भी तो कही उसी जगह नहीं जा रहा, क्यो ?"

अभी सर्गेई ब्रुजाक की बातूनी मा अपनी बात खतम भी न कर पाई थी कि पावेल उधर सडक पर दौडता चला जा रहा था।

बडी सडक पर उसे एक आदमी मिला जो दोनो कधो पर एक-एक राइफिल लिये हुए था। पावेल भाग कर उस आदमी के पास पहुचा।

"काका! काका! जरा मुझे भी बता दो कि ये कहा से मिली हैं ?"

"वहा वेर्खोवीना मे लोग बाट रहे हैं।"

पावेल जितनी तेजी से दौड सकता था, दौट चला। दो सडकें पार करने पर वह एक दूसरे लडके से टकरा गया जो एक भारी सी सगीन लगी राइफिल घसीटता आ रहा था। पावेल ने उसको टोका

"तुम्हें यह बन्दूक कहा से मिली ?"

"वहा स्कूल के सामने फौजवाले बाट रहे हैं। मगर अब तो एक भी नही बची। सब खतम। रात भर बाटते रहे और अब तो सिर्फ खाली बक्से रह गए हैं। यह मेरी दूसरी है।" लडके ने गर्व के साथ बतलाया।

इस खबर से पावेल को गहरी निराशा हुई।

सोचते-सोचते उसका मन तीखेपन से भर उठा "छि, मैं भी कितना बेवकूफ हूं। मुझे सीधे वहीं जाना चाहिए था। मैं कैसे गफलत कर गया?"

एकाएक उसके मन में एक विचार आया। घूम कर उसने दो-तीन छलांगों में उस लडके को जा पकडा और उसके हाथ से राइफिल छीन ली।

"तुम्हारे लिए एक काफी है। यह मेरी है।" उसने अधिकार के स्वर मे कहा।

दिन दहाडे इस डकैती से गुस्सा होकर वह लडका पावेल पर टूट पडा। मगर पावेल कूद कर पीछे हट गया और अपने दुश्मन की ओर संगीन साधकर जोर से चिल्लाया

"जरा सम्भल कर रहना नहीं तो चोट खा जाओगे।"

वह लडका खीज के मारे रोने लगा और बेबस गुस्से मे बकता-झकता भाग गया। अपने से बेहद खुश पावेल ठाठ से घर आया, छलांग लगा कर बाडी को पार करते हुए भाग कर शेड मे गया, ऊपर चढ कर अपनी यह दौलत छत की बल्लियों पर टिका कर रख दी और खुशी मे सीटी बजाता हुआ घर के अन्दर दाखिल हुआ।

उक्रैन की गर्मी की शामें बडी प्यारी होती हैं। शेपेतोवका जैसे छोटे शहरों मे, जो कि सच पूछिए तो मुफस्सिल के गांवों जैसे होते हैं, गर्मी की ये रेशम रातें तमाम नौजवानों को जैसे अपने जादू से घर के बाहर आने पर मजबूर कर देती हैं। आप उनको टोलियों मे और जोडों मे देख सकते हैं— मकानों के सायबानों मे, घर के सामने की छोटी सी बगिया मे, या सडक के किनारे पडी हुई इमारती लकडी के ढेरों पर आराम के साथ बैठे हुए। उनकी खुशी से उछलती हुई हंसी और गाने शाम की निस्तब्धता मे गूंजते रहते हैं।

हवा फूलों की खुशबू से भारी है और कांप रही है। आसमान की गह-राइयों मे नन्हे-नन्हे तारे चमक रहे हैं और आवाजें हवा के परों पर दूर-दूर जा रही हैं।

पावेल को अपने अकार्डियन[1] से बहुत प्यार था। वह उस सुरीले बाजे को बहुत प्यार से अपने घुटनों पर लिटा लेता और उसके परदों की दोनों पंक्तियों पर बडी कोमलता से अपनी उंगलियों को ऊपर-नीचे दौडाने लगता। और कभी एक भारी आह और कभी उमंग और खुशी के संगीत का इन्द्रधनुषी झरना उसमे

---

[1] एक तरह का बाजा।—अनु

जब धौंकनी चल रही हो और अकार्डियन मे से नर्म-नर्म सगीत, पागल कर देने वाले सुर निकल रहे हो, तब भला कोई चुप कैसे बैठ सकता है। इसके पहले कि आप जानें कि क्या हो रहा है, आपके पैर उस सगीत का आदेश मान कर नाचने लग जाते हैं। आह, जिन्दगी भी कितनी अच्छी चीज है, कितनी प्यारी, कितनी सुन्दर!

आज की शाम खास तौर से खुशी में डूबी हुई है। पावेल के मकान के सामने लकडी के मोटे-मोटे कुन्दो का जो ढेर है, उस पर नौजवानो और नवयुवतियो की एक भीड इकट्ठी है। और उनमे भी सबसे ज्यादा मस्ती मे है गालोचका, पावेल के बगल के मकान वाले राजमिस्त्री की लडकी। गालोचका को लडको के सग नाचना-गाना बहुत ही अच्छा लगता है। उसकी अच्छी बुलन्द आवाज बहुत गहरी मखमली और मीठी है।

पावेल को उससे थोडा डर लगता है। वजह यह है कि गालोचका जबान की तेज है। वह पावेल के बगल मे बैठ जाती है और हसते हुए अपनी बाह उसके गले मे डाल देती है।

कहती है: "कितने सजते हो तुम इस अकार्डियन के साथ! सचमुच बडे दुख की बात है कि तुम अभी जरा छोटे हो, वर्ना तुम से अच्छा आदमी मेरे लिए दूसरा न होता। मैं अकार्डियन बजाने वाले आदमियो पर जान देती हू। उनके सामने मेरा यह नन्हा दिल जैसे पिघल जाता है।"

पावेल लाज के मारे लाल पड जाता है—गनीमत है कि बहुत अधेरा है और कोई देख नही सकता। वह उस चचल छोकरी से दूर खिसक जाता है, मगर वह उसका पीछा छोडने वाली नही।

वह हसते हुए कहती है. "प्यारे अब क्या तुम मुझे छोड के भाग जाना चाहते हो, कैसे बेदर्दी हो! तुम तो लडकियो को भी मात करते हो।"

उसकी अच्छी कसी हुई छातिया पावेल के कधे से छू जाती है और वह एक अजीब ढग से अनायास अपने को आन्दोलित होता महसूस करता है, और टोली के दूसरे लोगो की जोरदार हसी खामोशी को तोडती है, जो कि उस गली की हमेशा की साथिन है।

पावेल ने उसके कधे को हलका सा धक्का देते हुए कहा "जरा सरक कर बैठो न, मुझे बजाने मे दिक्कत होती है।"

इस पर हसी का एक और कहकहा फूट पडता है, मजाको के नये तीर छूटने लगते हैं।

मरुसिया पावेल की रक्षा करती है. "कोई दर्दीली चीज बजाओ पावेल, जो दिल के तारों को खीच कर झनझना दे।"

अकार्डियन की धौकनी धीरे-धीरे फैलती है। पावेल की उगलिया बडी

नरमी और बड़े प्यार से परदों को सहलाती हैं और एक बहुत जानी-पहचानी और सबकी प्यारी धुन हवा में भर उठती है। सबसे पहले गालीना गाना शुरू करती है, फिर मरुसिया और फिर बाकी सब

एक जगह पर जमा हुए मल्लाह सभी मस्ताने
कितने अच्छे, कितने मीठे लगते दुख के गाने

गाने वालों की गूंजती हुई जवान आवाजें हवा की लहरों पर दूर जंगलों तक पहुंच रही थीं।

"पावका"—यह आर्तेम की आवाज थी।

पावेल ने अपने अकार्डियन की धौंकनी दबा कर उसकी हवा निकाली और फीता लगा दिया।

"घर पर लोग मुझे बुला रहे हैं। मुझे जाना होगा।"

मरुसिया ने रुकने के लिए आग्रह करते हुए कहा "उह, जाना, मगर थोड़ी देर और बजाओ। ऐसी जल्दी तुम्हें किस बात की है ?"

मगर पावेल जाने का निश्चय कर चुका था।

"नहीं, अब और नहीं रुक सकता। कल फिर और गाना-बजाना करेंगे, मगर अब तो मुझे जाना ही होगा। आर्तेम बुला रहा है।" यह कहते हुए वह दौड़ कर सड़क के उस पार अपने छोटे से मकान में घुस गया।

उसने दरवाजा खोला और कमरे में आर्तेम के अलावा और भी दो आदमियों को पाया जिनमें से एक आर्तेम का दोस्त रोमान था और दूसरे को पावेल नहीं जानता था। वे सब मेज के सामने बैठे थे।

पावेल ने पूछा "तुमने मुझे बुलाया ?"

आर्तेम ने सिर हिला कर हामी भरी और उस नये आदमी की तरफ मुड़ते हुए कहा

"यही मेरा भाई है, जिसके बारे में अभी हम लोग बातें कर रहे थे।"

उस नये आदमी ने अपना गठीला हाथ पावेल की तरफ बढ़ाया।

आर्तेम ने भाई से कहा "सुनो पावका, तुमने मुझे बतलाया था कि बिजली घर का एलेक्ट्रीशियन बीमार है। अब मैं चाहता हूं कि तुम कल पता लगाओ कि उन्हें उस आदमी की जगह क्या किसी दूसरे आदमी की जरूरत है। अगर हो तो तुम आकर मुझे बतलाना।"

उस नये आदमी ने आर्तेम को टोकते हुए कहा

"नहीं, उसकी कोई जरूरत नहीं। ज्यादा अच्छा होगा कि मैं ही खुद इसके साथ चला जाऊं और बड़े साहब से बातें कर लूं।"

"यह भी कोई पूछने की बात है। जरूरत तो उन्हें होगी ही। आज बिजली घर सिर्फ इसलिए बन्द रहा कि स्टैंकोविच बीमार है। बडे साहब दो बार आए—उन्हे बडी तलाश थी ऐसे आदमी की जो उसकी जगह ले सके। मगर कोई मिला नही। सिर्फ एक फायरमैन के भरोसे बिजली घर चालू करने में उन्हे डर मालूम हुआ। एलेक्ट्रीशियन को टाइफस[1] हुआ है।"

उस नये आदमी ने पावेल से कहा, "अच्छा तो बात तय हो गई। मैं कल तुम्हारे पास आऊगा और फिर हम लोग साथ चलेंगे।"

"अच्छा।"

पावेल की आखें उस नये आदमी की शान्त भूरी आखो से मिली। वह गौर से पावेल को देख रहा था। उसकी दृढ अपलक दृष्टि से पावेल को उलझन सी महसूस हुई। आगन्तुक भूरे रग का एक कोट पहने था जिसके बटन ऊपर से नीचे तक बन्द थे—जाहिर था, कोट उसके लिए जरूरत से ज्यादा चुस्त था क्योंकि उसकी मजबूत चौडी पीठ पर की सीवनें बहुत तनी हुई और उघडने के करीब थी। उसके सिर और कधो को जोडने वाली चीज थी उसकी बैल की जैसी, मोटी, कसी हुई गर्दन। उसके पूरे शरीर को देखकर किसी पुराने शाहबलूत के दरख्त की मजबूती का खयाल आता था।

आर्तेम ने दरवाजे तक उनको पहुचाते हुए कहा, "अच्छा जुखराई, सलाम, खुदा तुम्हें कामयाब करे। कल तुम मेरे भाई के साथ जाना और वहा उस नौकरी को ठीक कर लेना।"

इस टुकडी के जाने के तीन दिन बाद जर्मन शहर मे दाखिल हुए। उनके आने की घोषणा काफी दिनो से उजाड स्टेशन के एक इजन की सीटी ने की।

कस्बे भर मे खबर फैल गई कि जर्मन आ रहे है।

कस्बे मे छेडे गये दीमक के भिटे जैसी खलबली थी, क्योंकि गो शहर वाले कुछ दिनो से जानते थे कि जर्मन आने वाले हैं, तब भी उन्हे जैसे इस बात का यकीन न आता था। और अब वे ही भयानक जर्मन रास्ते मे नही, बल्कि यही, इसी कस्बे में थे।

कस्बे वाले अपने बागीचो की बाडियो और छोटे-छोटे लकडी के फाटको की हिफाजत मे लगे हुए थे। उन्हें बाहर सडक पर निकलने मे डर लगता था।

बडी सडक के दोनो तरफ एक-एक की कतार मे मार्च करते हुए जर्मन आए। वे हलके जैतूनी रग की वर्दी पहने हुए थे और अपनी राइफिलें साधे

---

१ एक तरह का बुखार।—अनु

चल रहे थे। उनकी राइफिलो मे चौडे छुरे जैसी सगीनें लगी हुई थी। वे भारी-भारी लोहे के टोप लगाए थे और उनकी पीठ पर बडे-बडे फौजी थैले लटके थे। एक अनन्त प्रवाह के रूप मे वे स्टेशन से कस्बे मे आए। वे सतर्क होकर चल रहे थे और किसी भी हमले का जवाब देने के लिए बिलकुल मुस्तैद थे, गोकि उन पर हमला करने की बात किसी को कल्पना मे भी न थी।

आगे-आगे माउजर[1] हाथ मे लिए दो अफसर चल रहे थे। सडक के बीचो-बीच दुभाषिया चल रहा था। यह दुभाषिया हेटमैन के नीचे काम करने वाला एक सार्जन्ट-मेजर था जो नीले रग का उक्रेनी कोट पहने था और ऊची-सी फर की टोपी लगाए था।

शहर के बीचोबीच चौक में जर्मन कतार बाध कर खडे हो गए। नगाडे बज रहे थे। कस्बे के कुछ अधिक साहसी लोगो की एक छोटी-सी भीड इकट्ठा हो गई थी। उक्रेनी कोट पहने हुए हेटमैन का वह आदमी दवाइयो की दूकान के सायबान पर चढ गया और वहा से उसने कमाडैण्ट मेजर कार्फ का जारी किया हुआ हुक्मनामा जोर-जोर से पढना शुरू किया

(१) मैं हुक्म जारी करता हू कि

शहर के सारे लोग चौबीस घटे के अन्दर-अन्दर सारी बन्दूकें और दूसरे खतरनाक हथियार जो उनके पास हो, जमा कर दें। जो इस हुक्म को नही मानेगा उसे गोली मार दी जायगी।

(२) शहर मे मार्शल-लॉ जारी किया जाता है और लोगो को मनाही की जाती है कि आठ बजे रात के बाद सडकों पर न निकलें।

मेजर कार्फ, शहर कमाडैण्ट।

पहले जिस इमारत मे म्युनिसिपैलिटी और क्रान्ति के बाद सोवियत शासन का केन्द्र था, उसी मे जर्मन कमाडैण्ट ने अपना क्वार्टर कायम किया। इमारत के फाटक पर एक सन्तरी तैनात था जो सिर पर लोहे का टोप लगाए था। इस टोप पर जर्मनी का राज-चिह्न, एक बडा-सा गिद्ध बना हुआ था। उसी इमारत के पीछे वह मालगोदाम था जहा शहर वालों को अपने हथियार जमा करने थे।

गोली मारे जाने के डर के मारे सारे दिन शहर वालो ने अपने हथियार ला-लाकर जमा किये। अधेड उम्र वाले लोग तो आये नही, हथियार लाकर वापिस किये नौजवानों और बच्चो ने। जर्मनो ने किसी को पकडा नही।

जो लोग खुद नही आना चाहते थे, वे रात को अपने हथियार सडक पर

---

१ एक तरह का पिस्तौल।—अनु

फेंक गए। सवेरे जर्मन सिपाहियो ने उन्हे बटोर लिया, अपनी फौजी गाडी मे लादा और कमाडेण्ट के दफ्तर ले गए।

एक बजे दोपहर, जब हथियार जमा करने की मियाद खत्म होती थी, जर्मन सिपाहियो ने बन्दूको की गिनती शुरु की। चौदह हजार राइफिलें। इसका मतलब हुआ कि छ हजार नही जमा की गई। उनके लिए उन्होने बडी जबर्दस्त तलाशिया ली। मगर कुछ खास माल बरामद नही हुआ।

दूसरे रोज सवेरे दो रेलवे मजदूरो को, जिनके घर मे छिपाई हुई राइफिलें पाई गई, शहर के बाहर पुराने यहूदी कब्रिस्तान के पास गोली मार दी गई।

कमाडेण्ट के हुक्म के बारे मे सुनते ही आर्तेम बडी तेजी से घर की ओर चला। बाहर हाते मे ही पावेल मिल गया। उसका कधा पकडते हुए उसने धीरे से, मगर मजबूत आवाज मे, पावेल से पूछा

"तुम भी कोई हथियार घर लाए थे ?"

पावेल का इरादा राइफिल के बारे मे किसी को कुछ बतलाने का नही था। मगर अपने भाई से ही कैसे झूठ बोलता। उसने साफ-साफ सब बात बतला दी।

दोनो साथ-साथ शेड में गए। आर्तेम ने बल्ली पर से, जहा वह छिपा कर रखी गई थी, राइफिल को उतारा, उसके बोल्ट और सगीन को अलग किया और बन्दूक की नली पकड कर अपनी पूरी ताकत से एक खम्भे पर उसको दे मारा। बन्दूक का कुन्दा चूर-चूर हो गया। और फिर उस राइफिल का अवशेष बागीचे के उस पार, दूर, घूरे मे फेंक दिया गया। सगीन और बोल्ट को आर्तेम ने सडास मे डाल दिया।

इस काम को खतम करके आर्तेम अपने भाई की तरफ मुडा।

"अब तुम बच्चे नही रहे पावका, और तुम्हे समझना चाहिए कि बन्दूको के सग खिलवाड नही किया जा सकता। तुम्हे घर के अन्दर ऐसी कोई चीज नही लानी चाहिए। यह बहुत ही खतरनाक बात है। आज-कल ऐसी चीज के लिए तुम्हे अपनी जान तक की कीमत अदा करनी पड सकती है। और देखो, कोई चालबाजी करने की भी कोशिश न करना, क्योकि अगर ऐसी कोई चीज घर लाए और उनको पता चल गया तो सबसे पहले मुझको गोली मारी जायगी। तुम्हारे जैसे छोकरो को वे हाथ नही लगायेंगे। अच्छी तरह समझ लो। यह बहुत ही बुरा जमाना है, बहुत ही बुरा।"

पावेल ने वादा किया।

हाता पार करके जब दोनों भाई घर के अन्दर जा रहे थे, तब एक गाडी

लेशचिन्स्की के फाटक पर रुकी और उसमे से वह वकील और उसकी बीवी और दो बच्चे, नेली और विक्टर, बाहर निकले।

आर्तेम उनको देखकर गुस्से मे बडबडाया, "अच्छा तो यह नाजुक चिडिया अपने घोसले पर वापस आ गई। अब असल तमाशा शुरू होगा। खुदा गारत करे इन हरामजादो को !" कहते हुए वह अन्दर चला गया।

सारे दिन पावेल उस राइफिल के बारे मे सोच-सोचकर दुखी होता रहा। इसी बीच उसका दोस्त सर्गेई, एक पुरानी वीरान शेड मे, दीवाल के पास, जमीन मे गड्ढा खोदने मे जी-जान से लगा हुआ था। आखिर गड्ढा तैयार हो गया। उसके अन्दर सर्गेई ने तीन चमचमाती हुई नई राइफिलो को अच्छी तरह चीथडो मे लपेट कर रख दिया। उसको भी ये राइफिलें उसी वक्त मिली थी जब लाल सेना ने जनता को राइफिलें बाटी थी। उसका इरादा उनको जर्मनो के हवाले करने का कतई नही था। रात भर उसने उनको हिफाजत के साथ छिपाने के लिए कडी मेहनत की थी।

उसने गड्ढे को पाट दिया, पैर से दाब-दाबकर मिट्टी को बराबर कर दिया और फिर उसके ऊपर बहुत से कूडे-कचरे का ढेर लगा दिया। अपनी मेहनत के नतीजे को बहुत बारीकी से एक आलोचक की तरह उसने देखा। उसे सन्तोष हुआ। उसने टोपी उतारी और माथे का पसीना पोछा।

"अब ढूढने दो उनको, देखें कैसे पाते है। मान लो पा भी जायें तो यह नहीं जान सकते कि किसने इनको यहा रखा। यह शेड तो लावारिस है।"

पावेल और उस गभीर चेहरे वाले एलेक्ट्रीशियन मे अनजान मे ही धीरे-धीरे दोस्ती पैदा हो गई। बिजली के स्टेशन पर उस आदमी को काम करते अब एक महीना हो गया था।

जुखराई ने आग वाले के सहायक, पावेल को दिखलाया कि डाइनमो कैसे बनता और कैसे चलता है।

उस मल्लाह को इस तेज लडके से प्यार हो गया। वह अक्सर खाली दिनो मे आर्तेम के घर आता और बहुत धीरज के साथ मा के घरेलू झझटो और परेशानियो की कहानी सुनता—खास करके तब, जब वह अपने छोटे लडके की कारगुजारियो का जिक्र करती। जुखराई चिन्तनशील और गभीर आदमी था और मारिया याकोवलेवना को उससे बात करके बहुत शान्ति और सात्वना मिलती। जुखराई की सगत मे वह अपनी परेशानियो को भूल जाती और बहुत खुश रहा करती।

एक दिन जब पावेल बिजली स्टेशन के हाते मे जलाऊ लकडी के ऊचे-ऊचे ढेरो के बीच से गुजर रहा था तो जुखराई ने उसको रोका।

मुस्कराते हुए जुखराई ने कहा, "तुम्हारी मा ने मुझे बतलाया है कि तुम्हे मार-पीट बहुत पसन्द है। वह कहती हैं, 'इस मामले मे तो वह लडने वाले मुर्गे से भी गया-गुजरा है।'" यह कह कर जुखराई सहमति सूचक ढग से जैसे मन-ही-मन मुस्कराया और बोला, "सच बात यह है कि लडना बुरी बात नही है, यदि तुम्हे इस बात का पता हो कि किससे लडना है और क्यो लडना है।"

पावेल ठीक नही समझ सका कि जुखराई मजाक मे यह बात कह रहा है या सजीदा तौर पर।

"मैं झूठ-मूठ नही लडता," उसने जवाब दिया, "मैं हमेशा ठीक बात के लिए और इन्साफ के लिए लडता हू।"

"क्या तुम चाहोगे कि मैं तुम्हे ठीक से लडना सिखलाऊ ?" जुखराई ने अप्रत्याशित ढग से पूछा।

पावेल ने उसकी ओर कुछ आश्चर्य से देखते हुए पूछा, "ठीक से लडने का क्या मतलब ?"

"तुम्हे आप मालूम हो जायगा।"

और तब उसने पावेल को घूसेबाजी पर एक सक्षिप्त लेक्चर दिया।

इस कला मे पावेल को दक्षता आसानी से नही मिली। कई बार जुखराई के घूसे से उसके पैर उखड गए और उसने अपने को जमीन पर लोटते पाया। मगर जो भी हो, पावेल बहुत मेहनती और धीरज वाला शिष्य सिद्ध हुआ।

एक दिन, जब मौसम गर्म और खुशगवार था और वह क्लिम्का के घर से लौट कर आया था और अपने कमरे मे इधर-उधर लुढकता फिर रहा था, क्योकि उसकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या करे, तब पावेल ने निश्चय किया कि अपनी प्रिय जगह पर चढेगा। घर के पिछवाडे के बागीचे के कोने मे खडे हुए शेड की छत उसकी प्रिय जगह थी। पीछे का सहन पार करके वह बाग मे आया। वह झोपडी के पास पहुचा और छत पर चढ गया। छप्पर के ऊपर लटकती हुई चेरी वृक्षो की घनी शाखो के बीच से अपना रास्ता बनाता हुआ वह छत के बीचोबीच पहुच गया और धूप खाने के लिए वही लेट गया।

छप्पर का एक हिस्सा लेशचिन्स्की के बागीचे मे बढा हुआ था और छत के सिरे से वह सारा बागीचा और मकान का एक हिस्सा दिखाई देता था। वहा, उस किनारे से, अपना सिर बढा कर पावेल ने हाते का एक हिस्सा देखा, एक गाडी वहा खडी हुई थी। लेशचिन्स्की के मकान मे टिके जर्मन लेफ्टिनेण्ट का अर्दली अपने मालिक के कपडो पर ब्रुश कर रहा था।

पावेल ने अक्सर लेफ्टिनेण्ट को फाटक पर खड़े देखा था। वह चौड़ा-चकला, लाल मुंह का आदमी था। उसके चेहरे पर छोटी-छोटी कतरी हुई मूछें थीं। वह नाक पर ठहरने वाला फ्रेमनेवुल चश्मा लगाता था और एक ऐसी टोपी पहनता था जिसकी चोटी पर लाख का चमकदार काम था। पावेल को यह भी मालूम था कि वह उस बगल वाले कमरे में रहता है जिसकी खिड़की बाग में खुलती है और जो छप्पर की छत से दिखाई देता है।

लेफ्टिनेण्ट साहब इस वक्त मेज पर बैठे कुछ लिख रहे थे। फिर, उन्होंने जो कुछ लिखा था उसे उठाया और कमरे के बाहर चले गए। लिखा हुआ कागज उन्होंने अपने अर्दली को पकड़ाया और फाटक को जाने वाले कच्चे रास्ते पर चल दिये। बागीचे के लता-मण्डप में वह किसी से बात करने के लिए रुके। पल भर बाद, नेली लेश्चिन्स्की बाहर आई। लेफ्टिनेण्ट साहब ने उसकी बांह पकड़ी और फिर दोनों फाटक के बाहर निकल गए।

पावेल अपनी जगह से यह सब कार्यवाही देख रहा था। इस वक्त उस पर आलस्य-सा छा रहा था और वह आंखें बन्द करने वाला ही था कि उसने अर्दली को लेफ्टिनेण्ट साहब के कमरे में घुसते देखा। अर्दली ने एक वर्दी खूंटी पर टांगी, बाग में खुलने वाली खिड़की को खोला और कमरे की सफाई की। इसके बाद कमरे को बन्द करता हुआ बाहर निकल गया। दूसरे ही पल पावेल ने उसको अस्तबल के पास खड़े पाया, जहां घोड़े बंधे थे।

खुली हुई खिड़की में से पावेल कमरे की हर चीज को अच्छी तरह देख सकता था। मेज पर एक फौजी कमरबन्द और कोई चमकदार चीज पड़ी थी।

प्रबल कुतूहल के मारे, जिस पर उसका कोई बस न था, पावेल धीरे से वहीं छत पर से चेरी के पेड़ पर चढ़ गया और वहां से फिसल कर लेश्चिन्स्की के बाग में उतर गया। झुके-झुके दौड़ कर उसने बागीचे को पार किया और खिड़की से कमरे के अन्दर झांका। उसके सामने मेज पर एक कमरबन्द होल्डर-स्ट्रैप समेत पड़ा हुआ था और रिवाल्वर रखने का चमड़े का केस, जिसमें एक लाजवाब, बारह गोलियों वाला मानलिकर रिवाल्वर रखा हुआ था।

पावेल की तो जैसे सांस रुक गई। कुछ सेकेंड तक उसके भीतर जबर्दस्त अन्तर्द्वन्द्व मचा रहा। मगर, आखीर में जीत साहसिकता की हुई और वह कमरे के अन्दर घुस गया। उसने रिवाल्वर का केस उठाया, उसमें से नीले-नीले लोहे का वह हथियार निकाला और खिड़की से नीचे कूद गया। अपने चारों तरफ तेजी से निगाहें दौड़ाते हुए उसने बहुत सावधानी से पिस्तौल अपनी जेब में डाली और तेजी से भाग कर बागीचे को पार करता हुआ चेरी के पेड़ के पास जा पहुंचा। बन्दर की-सी फुर्ती से वह छत पर चढ़ गया। वहां क्षण भर रुक

कर उसने पीछे को देखा। अर्दली अब भी आनन्दपूर्वक साईस से बात कर रहा था। बागीचा खामोश और वीरान था। पावेल फिसल कर दूसरी ओर उतरा और घर की तरफ भाग चला।

उसकी मा चौके मे रात का खाना पकाने मे तल्लीन थी। उसने पावेल की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

पावेल ने एक बडे ट्रक के पीछे से झटपट एक चीथडा उठाया और उसे जेब मे डालते हुए फिर से कमरे के बाहर निकल गया, इतने चुपके से कि उसकी मा को भी उसकी आहट न मिली। वहा से उसने दौड कर सहन को पार किया, बाडी को छलाग लगाई और जगल को जाने वाली सडक पर आ निकला। भारी रिवाल्वर को हाथ से पकडे हुए, ताकि वह जाघ से न टकराए, वह पास के ही ईंट के भट्ठे के वीरान खडहर की तरफ अपनी पूरी ताकत से भाग चला।

उसके पैर जैसे जमीन पर पड ही नही रहे थे और कानो मे हवा सनसना रही थी।

पुराने भट्ठे के पास नीरव शान्ति थी। वह दृश्य मन को उदास करने वाला था। लकडी की छत जहा-तहा गिरी हुई थी, एक ईंट गारे का पहाड खडा था और टूटी-फूटी भट्ठिया मुह बाये थी। उस जगह तमाम जगली घास उगी हुई थी, वहा कोई कभी जाता न था, सिवा पावेल और उसके दो दोस्तो के जो कभी-कभी वहा खेलने पहुच जाते थे। पावेल को ऐसी बहुत सी जगहे मालूम थी जहा वह अपने इस चोरी के खजाने को छिपा सकता था।

एक भट्ठी मे दरार थी। उसमे से वह ऊपर चढा और आस-पास अपनी सतर्क आखें दौडाई। कोई दिखाई न दिया। केवल चीड के दरख्त हलकी-हलकी आहें भर रहे थे और धीमी-धीमी हवा सडक पर धूल उडा रही थी। हवा चीड के गोद की गध से भारी थी।

पावेल ने चीथडे मे लिपटा हुआ रिवाल्वर भट्ठी के फर्श के कोने मे रख दिया और उसे पुरानी ईंटो के एक छोटे से ढेर से ढक दिया। बाहर आते समय उसने उस पुरानी भट्ठी के दरवाजे को ईंटो से चुन दिया, उस जगह की ठीक स्थिति दिमाग मे बिठा ली और धीरे-धीरे घर की ओर चल दिया। उस वक्त उसे अपने घुटने कापते मालूम हो रहे थे।

"इस सब का अन्त क्या होगा ?"—उसने सोचा और उसका हृदय आशकाओं से भारी हो गया।

वह घर नही जाना चाहता था, इसलिए रोज से जल्दी ही बिजली घर के लिए चल दिया। उसने चौकीदार से चाभी ली और बिजली घर का विशाल दरवाजा खोला। और जब कि वह राख के गड्ढे की सफाई कर रहा था, पम्प

से ब्वायलर मे पानी पहुचा रहा था और आग सुलगा रहा था, उस तमाम वक्त उसका ध्यान इसी बात पर अटका हुआ था कि इस वक्त लेशचिन्स्की के यहा क्या हो रहा होगा।

उस वक्त करीब ग्यारह बजा था जब जुखराई आया और उसने पावेल को बाहर बुलाया।

"आज तुम्हारे यहा तलाशी क्यो हुई थी ?" उसने धीमी आवाज में पूछा।

पावेल चौंक पडा।

"तलाशी ?"

जुखराई ने जरा देर की चुप्पी के बाद फिर कहा, "मुझे आसार अच्छे नही नजर आते। तुम्हे तो कुछ नही मालूम कि किस चीज की तलाशी लेने वे लोग आए थे ?"

पावेल को अच्छी तरह मालूम था कि उन्हे किस चीज की तलाश थी, मगर वह रिवाल्वर की चोरी के बारे में जुखराई को कुछ नही बतलाना चाहता था। चिन्ता के मारे कापते हुए उसने पूछा

"उन्होने आर्तेम को गिरफ्तार कर लिया क्या ?"

"नही, कोई नही पकडा गया। मगर, उन्होने घर की हर चीज उलट-पुलट कर रख दी।"

इससे पावेल के मन को कुछ ढाढस हुआ, मगर उसकी चिन्ता मिटी नहीं। कुछ देर वह और जुखराई दोनो अपने-अपने विचारो मे डूबे खडे रहे। उनमें से एक को मालूम था कि तलाशी क्यो हुई थी और वह परेशान था कि इसका जाने क्या नतीजा हो, दूसरे को यह बात नही मालूम थी और इसलिए वह चौकन्ना था।

जुखराई ने सोचा "नास हो हरामजादो का! लगता है उनको मेरा सुराग मिल गया। आर्तेम तो मेरे बारे मे कुछ नही जानता, मगर फिर सबो ने उसके घर की तलाशी क्यो ली ? जरा और सावधानी बरतनी होगी।"

दोनो बिना एक शब्द बोले एक-दूसरे से अलग हुए और अपने-अपने काम मे जा लगे।

लेशचिन्स्की के मकान पर आफत बरपा थी।

लेफ्टिनेण्ट साहब ने रिवाल्वर को गायब पाकर अपने अर्दली को बुलाया। अर्दली ने बतलाया कि जरूर उसे कोई चुरा ले गया। इस पर अफसर साहब के स्वाभाविक सयम ने उनका साथ छोड दिया और उन्होंने पूरी ताकत से अर्दली के कान पर एक लप्पड रसीद किया। लप्पड खाकर अर्दली एक बार कापा, मगर फिर अटेन्शन की मुद्रा मे लकडी की तरह सीधा खडा हो गया

और आखें मुलमुलाते हुए, भीगी बिल्ली बना आगे आने वाले नतीजो का इन्त-आर करने लगा।

वकील साहब को बुला कर उनसे जवाब तलब किया गया। उन्होने चोरी के सम्बध मे अपने गुस्से का इजहार किया और लेफ्टिनेण्ट साहब से माफी मागी क्योकि यह चीज उनके घर से गुम हुई थी।

विक्टर लेशचिन्स्की ने अपने बाप को सुझाया कि बहुत मुमकिन है रिवाल्वर उनके पडोसियो ने चुराया हो और खास तौर पर उस बदमाश पावेल कोर्चागिन ने। बाप ने फौरन अपने बेटे की यह सूझ लेफ्टिनेण्ट साहब तक पहुचा दी और उन्होने फौरन तलाशी का हुक्म दे दिया।

तलाशी बेकार रही। रिवाल्वर की चोरी वाली घटना से पावेल को इस बात का विश्वास हो गया कि कभी-कभी ऐसी खतरनाक कोशिशें भी कामयाब हो जाती हैं।

तीन

तोनिया खुली हुई खिडकी के सामने खडी हो गई और अपने विचारो मे डूबे-डूबे उसने अपने परिचित बागीचे को देखा जिसके किनारे-किनारे मजबूत, दैत्यो जैसे ऊचे पोपलर के दरख्त लगे हुए थे जो इस वक्त धीमी-धीमी हवा मे हौले-हौले डोल रहे थे। उसको इस बात का यकीन नही आता था कि यह जगह छोडे, जहा उसका बचपन बीता था, पूरा एक साल हो गया था। उसको लगता था जैसे वह कल गई हो और आज ही सुबह की गाडी से लौट आई हो।

कुछ भी नही बदला था रसभरी की झाडियो की कतारें हमेशा की तरह आज भी बहुत सफाई से छटी हुई थी और बागीचे के रास्ते अब भी वैसे ही ज्यामिति के अनुसार बाकायदा ठीक-ठीक बने हुए थे और उनके किनारे-किनारे पैन्सी की कतारें लगी हुई थी जो कि उसकी मा का बहुत प्यारा फूल था। बागीचे की हर चीज बहुत साफ-सुथरी और बाकायदा थी। हर चीज पर हर जगह वृक्ष-विज्ञान-वेत्ता के शास्त्रीय हाथ की छाप दिखाई थी। इन साफ-सुथरे बाकायदा झाडू-लगे रास्तो को देख कर तोनिया को बडी ऊब मालूम होती थी।

उसने वह उपन्यास उठा लिया जिसे वह पढ रही थी, बरामदे मे जाने

वाला दरवाजा खोला और सीढ़िया उतर कर नीचे बागीचे मे पहुच गई। लकडी के छोटे से रगे हुए गेट को उसने धक्का देकर खोला और स्टेशन के पम्प हाउस से लगे हुए तालाब की ओर धीरे-धीरे चली।

पुल पार करके वह सडक पर आ गई जिसके दोनो ओर पेडों की कतारें थीं। उसके दाहिने हाथ पर था तालाब जिसके किनारे-किनारे विलो और ऐल्डर के दरख्त लगे हुए थे और बायें हाथ पर जगल शुरू हो जाता था।

वह पुरानी पत्थर की खान के पास वाली तलैयो की ओर जा रही थी कि मछली पकडने की बसी को पानी पर डूबते-उतराते देख कर रुक गई।

एक टेढे-मेढे विलो के तने के सहारे बाहर को झुकते हुए उसने सामने की शाखों को हाथ से अलग किया और अपने सामने धूप में तपे हुए रग के नगे पैर एक लडके को देखा जिसने अपने पतलून की टागें घुटनो तक मोड रखी थी। उसके पास ही एक जग लगा टीन का डिब्बा रखा था जिसमे मछली का चारा था। यह लडका अपने काम मे इतना डूबा हुआ था कि इस लडकी की ओर उसका ध्यान नही गया।

"तुम समझते हो कि यहा मछली पकड सकते हो ?"

पावेल ने पीछे मुड कर गुस्से मे देखा।

विलो को पकडे, पानी पर झुकी हुई थी एक लडकी जिसे पावेल ने पहले कभी नही देखा था। वह मल्लाहों जैसा एक सफेद ब्लाउज पहने हुए थी जिसका कॉलर धारीदार नीला था और एक हलका भूरे रग का छोटा सा स्कर्ट पहने थी। छोटे-छोटे मोजे, जो सिरो पर रगीन थे, उसकी खूबसूरत, धूप मे तपे हुए रग की टागों पर चिपके हुए थे। उसके सुनहरे बाल मोटी वेणी मे गुथे हुए थे।

बसी को पकडे हुए हाथ हलके से काप गए। बसी भी काप गई और शान्त पानी की सतह पर गोल-गोल घेरे फैल गए।

"देखो-देखो, मछली ने चारा चुगा!" पावेल के पीछे उस आवाज ने आवेश के साथ कहा।

अब वह अपने मन का सतुलन बिल्कुल खो बैठा और उसने इतने जोर से बसी खींची कि चारा-लगा काटा पानी मे से उछल कर बाहर आ गया।

"जहन्नुम में जाय, कोई उम्मीद नहीं है मछली पाने की। यह लडकी यहा क्या करने आई है," पावेल ने खीझ के साथ सोचा और अपने फूहडपन को ढकने के लिए उसने बसी के काटे को और भी दूर फेंका। मगर वह गिरा ठीक वहा जहा उसे न गिरना चाहिए था, यानी सेवार की दो घनी झाडियों के बीच, जहा बसी का फस जाना लाजिमी था।

उसकी समझ मे आ गया कि क्या बात हो गई है और बिना पीछे मुड़े हुए उसने वहा ऊपर बैठी हुई उस लडकी से गुस्से मे दात पीसते हुए कहा

"तुमसे चुप नही बैठा जाता ? इस तरह तो तुम सब मछलियो को भगा दोगी ।"

ऊपर से उसकी व्यगपूर्ण आवाज आई

'तुम्हारी काली शकल देख कर तो मछलिया कब की भाग गई हैं ! इस तीसरे पहर भला कभी कोई अच्छे घर का आदमी मछली पकडने निकलता है !"

पावेल अब तक तो पूरी नम्रता बरतने की कोशिश कर रहा था, मगर यह चीज उसकी बरदाश्त के बाहर थी। वह उठा और उसने अपनी टोपी आख के ऊपर तक खीच ली, जैसा कि वह हमेशा उत्तेजित होने पर किया करता था।

"बहुत अच्छा हो देवी जी अगर आप यहा से अपना रास्ता नापें," वह दात दबाये-दबाये बोला। स्पष्ट ही उसने अपनी शब्दावली के सभ्यतम शब्दो का इस्तेमाल किया था।

तोनिया की आखें जरा छोटी हो गई और उनमे हसी नाचने लगी।

"मैं क्या सचमुच तुम्हारे काम मे बाधा पहुचा रही हू ?"

चिढाने का स्वर अब मैत्री और समझौते के स्वर मे बदल गया और पावेल जो इन "देवी जी" के सग, जो न जाने कहा से टपक पडी थी, सचमुच रुखाई से पेश आने की सोच रहा था, अब अपने को निरस्त्र होता महसूस कर रहा था।

"तुम चाहो तो रहो और देखो। मेरे लिए सब बराबर है," उसने अनिच्छापूर्वक कहा और फिर अपनी बसी मे दत्तचित्त हो गया। बसी सेवार मे फस गई थी और इसमे शक नही कि उसका काटा सेवार की जडो मे उलझ गया था। पावेल को बसी खीचते डर लगता था। अगर कही और फस गई तो छुडाना नामुमकिन हो जायगा। और फिर यह लडकी तो हसेगी ही। उसकी इच्छा यही थी कि वह चली जाय।

मगर तोनिया तो पानी मे हलके-हलके लहराते हुए विलो के तने पर और भी आराम के साथ बैठ गई थी और अपनी किताब घुटनो पर रख कर इस धूप मे तपे हुए रग के, काली-काली आख वाले उजड्ड-से किशोर को देख रही थी जिसने उसका ऐसा अजीब-सा रूखा स्वागत किया था और अब जान-बूझकर उसकी उपेक्षा कर रहा था।

पावेल तालाब के दरपन जैसे स्वच्छ पानी मे लडकी की छाया साफ-साफ देख रहा था और जब उसे लगा कि वह लडकी अपनी किताब मे काफी

डूबी हुई है, तो उसने बहुत सावधानी से उलझी हुई वंसी को खींचा। वंसी डूब गई और उसकी डोरी और भी तन गई।

"फंस गई, हरामजादी!" बिजली की तरह यह बात उसके मन में आ कौंधी और तभी उसने कनखियों से उस लड़की के हंसते हुए चेहरे को देखा जो पानी के अन्दर से उसकी ओर ताक रही थी।

उसी वक्त दो लड़के, जो स्कूल में सातवीं जमात में पढ़ते थे, पुल पार करके पम्प हाउस आ रहे थे। उनमें से एक था रेलवे यार्ड के बड़े साहब, इंजीनियर मुखार्को, का सत्रह साल का लड़का। उसके बाल सुनहरे थे और उसकी शक्ल आवारों जैसी थी। उसके चेहरे पर तमाम भूरे-भूरे दाग थे जिनके कारण उसके स्कूल के साथियों ने उसे "चेचकरू शुर्का" का नाम दे रखा था। वह एक बड़ी खूबसूरत-सी बंसी लिये था और उसके मुंह के एक कोने में सिगरेट दबी हुई थी। उसके साथ था विक्टर लेशचिन्स्की, जो एक लम्बा सा जनानी-सी शक्ल का लड़का था।

अपने साथी की तरफ झुकते हुए मुखार्को बहुत मानीखेज अन्दाज में उसे आंख मार रहा था, "यह लड़की तो सचमुच पटाखा है। इसका यहां पर जवाब नहीं। मैं तुमसे कहता हूं कि इसके इक्कों की कोई इन्तहा नहीं। मेरी बात का यकीन करो। वह छठी जमात में पढ़ती है और किएफ के स्कूल में जाती है। आजकल वह गर्मियां बिताने अपने बाप के पास आई है—उसका बाप जंगलात का बड़ा हाकिम है। मेरी बहन लिजा इस लड़की को जानती है। एक बार मैंने उसे बहुत भावुक-सा पत्र भी लिखा था। तुम तो जानते ही हो, वही सब बातें, 'मुझे तुमसे बेहद प्यार हो गया है और मैं धड़कते हुए दिल से तुम्हारे जवाब का इन्तजार करूंगा।' इतना ही नहीं मैंने नेडसन की कुछ उपयुक्त कविताएं भी ढूंढ निकालीं।"

"सो तो ठीक, मगर नतीजा क्या निकला?" विक्टर ने कुतूहल से पूछा।

मुखार्को ने झेंप-सी मिटाते हुए धीरे-धीरे बुदबुदाकर कहा, "अरे क्या पूछते हो, बहुत लगाती है अपने आपको! मुझसे कहने लगी, क्यों खामखा चिट्ठी लिख कर कागज बरबाद करते हो, और भी इसी तरह की बातें। मगर वह तो होता ही है हमेशा शुरू-शुरू में। इस मामले में मैं पुराना घाघ हूं। और सच बात तो यह है कि मुझे यह सब आशिकी-माशूकी वाली बकवास पसन्द नहीं है—सदियों तक आहें भर रहे हैं, पागलों की तरह घूम रहे हैं। इससे कहीं आसान यह है कि किसी शाम को उठो और मरम्मत करने वालों के बारकों तक चले जाओ। वहां तीन रूबल में तुम्हें ऐसी हसीना मिल जायगी कि देख कर मुंह में पानी भर आयेगा। और न झंझट, न खिटखिट। मैं वालका

तिखोनोव के सग जाया करता था—तुम जानते हो वालका तिखोनोव को ? रेलवे मे फोरमैन है ।"

नफरत से विक्टर का मुह विगड गया ।

उसने कहा, "सच शुरा, तुम ऐसी गन्दी जगहो मे भी जाते हो ?"

शुरा सिगरेट चबाता रहा, फिर उसने थूका और मजाक उडाने के अन्दाज मे जवाब दिया

"देखो, इतने पाकसाफ न बनो। हमे भी मालूम है कि तुम कहा-कहा जाते हो !"

विक्टर ने उसकी वात काटते हुए कहा

"तुम अपनी इस सुन्दरी से मेरा परिचय नही कराओगे ?"

"वाह, यह भी कोई पूछने की बात है। चलो जल्दी चलें, नही तो वह हमे बुत्ता देकर निकल जायगी। कल सवेरे वह अकेले ही मछली पकडने गई थी।"

दोनो दोस्त तोनिया के पास पहुचे तो सुखार्को ने अपने मुह से सिगरेट निकाल-ली और वडे बाके अन्दाज मे झुक कर उसका अभिवादन किया।

"कहिए कुमारी तुमानोवा, कैसे मिजाज है ? आप भी मछली पकडने आई हैं क्या ?"

तोनिया ने जवाब दिया—"नही, मै तो सिर्फ देख रही हू ।"

सुखार्को ने विक्टर की वाह पकड कर उसे आगे करते हुए जल्दी से कहा, "आपकी इनसे मुलाकात है ? मिलिए, ये है मेरे दोस्त विक्टर लेशचिन्स्की।"

विक्टर ने कुछ अचकचाते हुए तोनिया की तरफ हाथ बढाया।

"क्यो आज आप क्यो नही मछली पकड रही है ?" सुखार्को ने बात-चीत जारी रखने के खयाल से कहा।

तोनिया ने जवाब दिया, "मैं अपनी वसी लाना भूल गई।"

"तो मैं अभी आप के लिए दूसरी लिये आता हू। तब तक के लिए आप यह मेरी वसी ले लीजिए। मैं अभी एक मिनट मे लौट आता हू," सुखार्को ने कहा।

विक्टर से उसने वादा किया था कि उस लडकी से मिला देगा। अपना वादा उसने पूरा कर दिया था और अब दोनों को सग-सग अकेला छोडना चाहता था।

तोनिया ने कहा, "नही, कोई जरूरत नही, मैं नही चाहती। मै खामखा दूसरे का काम बिगाडना नहीं चाहती। देखते नही, कोई यहा पहले से बैठा मछली पकड रहा है !"

सुखार्को ने पूछा, "कौन ? ओह, आपका मतलब उससे है।" पहली बार उसने पावेल को देखा जो एक झाडी तले बैठा था। उसको देखकर सुखार्को ने

कहा, "उह, उसकी चिन्ता आप न करें, उसको तो मैंने जहा दो बार पकड़ कर हिलाया कि वह यहा से चलता बनेगा।"

इसके पहिले कि तोनिया उसको रोक सके या कुछ कह सके, वह तेजी से पावेल के पास पहुचा जहा वह वसी लगाये बैठा था।

सुखार्को ने आदेश के स्वर मे पावेल से कहा, "देखो अपनी वसी-वसी समेटो और यहा से चलते बनो।"

पावेल पर कोई असर न होता देख कर, क्योकि पावेल पूर्ववत् बैठा हुआ मछली पकडता रहा, सुखार्को ने दुबारा कहा, "जल्दी करो "

पावेल ने आख ऊपर उठाई और सुखार्को को गुस्से से देखा।

"चुप रहो! क्या बकवक लगा रखी है!"

यह सुनकर सुखार्को फट पडा, "क्या! तेरी यह मजाल कि जबान लडाता है, बदमाश आवारा कही का! चलो भागो यहा से," यह कहते हुए उसने जोर से उस टीन के डिब्बे मे लात मारी जिसमे मछली का चारा रखा हुआ था। डिब्बा हवा मे चक्कर खाता हुआ जाकर तालाब मे गिरा जिससे पानी उछल कर तोनिया के चेहरे पर आया।

वह चिल्लाई, "तुम्हे शर्म आनी चाहिए, सुखार्को!"

पावेल उछल कर खडा हो गया। उसे मालूम था कि जहा आर्तेम काम करता है, उसी रेलवे यार्ड के बडे साहब का वेटा है सुखार्को और अगर पावेल ने उसके उस मोटे थुलथुल चूहे जैसे मुह पर घूसा मारा तो वह अपने बाप से जाकर शिकायत कर देगा और आर्तेम की मुसीबत होगी। इसी ख्याल ने उसको तुरन्त फुरत वही मामला तय तमाम कर डालने से रोका।

सुखार्को को यह अन्दाज हुआ कि अगले ही क्षण पावेल उस पर वार कर देगा। यह ख्याल करके वह तेजी से आगे बढा और दोनो हाथो से उसने पावेल के सीने में धक्का दिया। पावेल तालाब के किनारे खडा था, करीब था कि वह पानी मे गिर जाता मगर बडी मुश्किल से हाथ हिला कर अपने शरीर को सभालते हुए उसने जैसे-तैसे अपने को पानी में गिरने से रोका।

सुखार्को पावेल से दो साल बडा था और गुडा मशहूर था।

पावेल के सीने मे धक्का लगा तो उसकी आखो मे खून उतर आया।

"अच्छा तो तुम यों नही मानोगे! लो फिर!" कहते हुए उसने हाथ घुमा कर एक जोर का घूसा सुखार्को के मुह पर मारा और इसके पहले कि सुखार्को अपने आपको सभाल सके, पावेल ने मजबूत हाथो से उसका वर्दी का ब्लाउज पकडा और खीचता हुआ उसे पानी मे ले गया।

ताल मे घुटनो तक पानी में वह खडा था और उसके पालिश किये हुए बूते और पतलून भीग कर भारी हो रहे थे। सुखार्को ने पावेल की मजबूत

पकड़ से अपने आपको छुडाने के लिए पूरी कोशिश की। अपने मन की बात कर चुकने पर पावेल कूद कर किनारे पर आ गया। गुस्से से लाल हो रहा सुखार्को उसके पीछे दौडा, ऐसा लगता था कि वह पावेल की बोटी-बोटी अलग कर देगा।

अपने दुश्मन का मुकाबला करने के लिए जब पावेल घूमा तो उसे याद आया

"अपना सारा वजन बायें पैर पर दो और दायां पैर कडा रखो, दायें पैर का घुटना मुडा हो। अपने जिस्म का सारा वजन अपने घूसे मे डालो और ठुड्डी के सिरे पर ऐसा घूसा मारो जो फिसलता हुआ ऊपर को निकल जाय।"

"कटाक !"

दातो के आपस मे टकराने की आवाज हुई। फिर उस भयानक दर्द से चिल्लाते हुए, जो उसकी ठुड्डी और दातो के बीच दब गई जीभ मे फैल गया था, सुखार्को हाथ फैलाये लडखडाता हुआ वापिस उसी पानी मे गिर गया और जोर का छपाका हुआ।

ऊपर वहा किनारे पर तोनिया हसी के मारे दुहरी हुई जा रही थी।

ताली बजाती हुई चिल्लाई, "खूब खूब ! खूब किया, हो बहादुर !"

पावेल ने अपनी फसी हुई बसी को इतने जोर से खीचा कि वह टूट गई और मीटे को चढ कर पार करते हुए वह सडक पर आ गया।

जाते-जाते उसने विक्टर को तोनिया से कहते हुए सुना, "यही पावेल कोर्चागिन है, अव्वल नम्बर का बदमाश।"

स्टेशन पर परिस्थिति गभीर होती जा रही थी। हवा मे खबर गर्म थी कि रेलवे मजदूर हडताल करने जा रहे हैं। अगले बडे स्टेशन के यार्ड के मजदूरो ने कोई बडी चीज शुरू कर दी थी। जर्मनो ने दो इजन ड्राइवरो को पकड लिया था जिन पर उन्हे शक था कि वे कोई इश्तिहार लिये जा रहे हैं। और उन मजदूरो में भी, जिनका गाव से सम्बध था, बडी खलबली थी, क्योकि वसूली की जा रही थी और जागीरदारों को उनकी जागीरें वापिस दी जा रही थी।

हेटमैन के सन्तरियों के कोडो से किसानो की पीठें लहूलुहान हो रही थी। इस इलाके मे छापेमार आन्दोलन बढ रहा था, बोल्शेविको ने अब तक लगभग एक दर्जन छापेमार टुकडिया सगठित कर ली थी।

इन दिनो जुखराई के लिए आराम नही था। इस शहर मे रहते हुए इतने दिनो मे उसने बहुत कुछ कर डाला था। उसने बहुत से रेलवे मजदूरो से परिचय किया था, नौजवानो की गोष्ठियो मे गया था और रेलवे यार्ड के मैकेनिको और लकडी काटने वाले मजदूरो के बीच एक बहुत मजबूत दल बना

लिया था। उसने यह पता लगाने की कोशिश की कि आर्तेम की ठीक स्थिति क्या है और इस सिलसिले मे उसने एक बार आर्तेम से पूछा कि बोल्शेविक पार्टी और उसके लक्ष्य के बारे मे उसका क्या ख्याल है।

उस तगडे भारी-भरकम मैकेनिक ने जवाब दिया, "देखो फियोदोर, मै यह सब पार्टी-वार्टी ज्यादा नहीं समझता। लेकिन हा, अगर तुम्हे मदद की जरूरत हो तो तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो।"

फियोदोर को इससे सन्तोष हो गया, क्योकि वह जानता था कि आर्तेम सही धात का बना हुआ आदमी है और अपने कौल को पूरा करेगा। जहा तक पार्टी का ताल्लुक है, अभी वह इसके लिए तैयार न था। "मगर कोई बात नही," जुखराई ने सोचा, "यह जमाना ही ऐसा तूफानी है कि सारी बातें जल्द ही उसकी समझ मे आ जायेगी।"

फियोदोर बिजली घर छोडकर रेलवे यार्ड मे एक नौकरी पर लग गया। रेलवे यार्ड उसने इसलिए ज्यादा पसन्द किया कि वहा अपना काम करना ज्यादा आसान था। बिजली घर मे वह रेलवे वालो से कट गया था।

रेलवे पर आमदरफ्त बहुत ही ज्यादा थी। जर्मन, लूट की हजारो गाडिया जौ, गेहू, मवेशी वगैरह उक्रेन से जर्मनी भेज रहे थे.

एक दिन हेटमैन के सन्तरियो ने स्टेशन के तारघर के पोनोमारेंको को पकड लिया। यह बहुत अप्रत्याशित आघात था। उसे चौकी पर ले जाकर बहुत बेदर्दी से पीटा गया। जाहिर है कि उसी ने आर्तेम के मित्र और सहयोगी रोमान सिदोरेंको का नाम बतला दिया।

दो जर्मन और एक हेटमैन का सन्तरी, स्टेशन कमाडैण्ट का सहायक, काम के घटो मे रोमान को पकडने के लिए आये। बिना एक शब्द बोले सहायक कमाडैण्ट उस बेंच के पास गया जहा रोमान काम कर रहा था और उसने अपनी चाबुक से उसके चेहरे पर चोट की और चाबुक समूचे चेहरे पर एक लकीर बनाती निकल गई।

उसने कहा, "जरा हमारे साथ चलो, सुअर का बच्चा कही का! हमें तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी है।" चेहरे पर बडा क्रूर दुष्ट-भाव लिये उसने उस मैकेनिक की बाह पकडी और बडे जोर से उसे मरोडा। "चलो हम जरा तुम्हें सिखलायें कि कैसे प्रचार किया जाता है, कैसे घूम-घूमकर लोगो को भडकाया जाता है।"

आर्तेम ने, जो रोमान के पास ही खडा काम कर रहा था, अपने हाथ की रेती वही डाल दी और सहायक कमाडैण्ट के पास आया। उस वक्त

उसका विशाल आकार बहुत भयानक दिखाई दे रहा था, जैसे वह कुछ भी कर डालने पर आमादा हो।

आर्तेम ने अपने चढ़ते हुए गुस्से को भरसक सयत करते हुए अपनी सारी फटी हुई आवाज मे कहा, "अबे ऐ दोगले के बच्चे ! अपनी खैरियत चाहता हो तो अब उस पर हाथ न चलाना।"

सहायक कमाडैण्ट पीछे हटा और हटते हुए वह अपना रिवाल्वर रखने का केस खोलने लगा। एक चौडे-चकले गठीले बदन के जर्मन ने अपने कधे पर से वह चौडी सगीन लगी भारी राइफिल उतार ली और झट से उसका बोल्ट चढाया और चीखा :

"हाल्ट !" जाहिर था कि दूसरे आदमी के हिलते ही वह गोली मार देगा।

उस जरा से सिपाही के आगे वह ऊचा, तगडा मैकेनिक असहाय खडा था और कुछ नही कर सकता था।

रोमान और आर्तेम दोनो को गिरफ्तार कर लिया गया। आर्तेम को घटे भर बाद छोड दिया गया, मगर रोमान को वही एक मालगोदाम मे बन्द कर दिया गया।

गिरफ्तारी के दस मिनट बाद एक भी आदमी काम पर नही रह गया था। डिपो के मजदूर स्टेशन के पार्क मे इकट्ठे हुए और वही पर स्विचमैन और सप्लाई गोदाम मे काम करने वाले लोग उनसे आ मिले। लोगो मे बडा आवेश था और किसी ने रोमान और पोनोमारेंको की रिहाई के लिए एक लिखित माग का मसविदा तैयार किया।

मजदूरो मे गुस्सा और भी बढा जब सहायक कमाडैण्ट सन्तरियो की एक टुकडी लेकर, रिवाल्वर चमकाता हुआ पार्क मे आया और चिल्लाया :-

"सब लोग काम पर वापस जाओ, नही तो हम यही एक-एक को गिरफ्तार कर लेंगे ! और तुम मे से कुछ को गोली मार देंगे।"

गुस्से मे भरे हुए मजदूरो ने एक जबर्दस्त हुकार से उसका जवाब दिया जिसे सुनकर वह स्टेशन की ओर भागा। मगर इसी बीच स्टेशन कमाडैण्ट ने शहर से जर्मन सिपाही बुला लिये थे और उनके ट्रक-के-ट्रक स्टेशन की सडक पर तेजी से चले आ रहे थ।

मजदूर तितर-बितर हो गये और अपने-अपने घरो की ओर तेजी से चल दिये और एक भी आदमी काम पर नही रहा, यहा तक कि स्टेशन मास्टर भी नही। जुखराई का काम अब अपना असर दिखला रहा था। यह पहला मौका था जब स्टेशन के मजदूरो ने कोई सामूहिक कदम उठाया था।

जर्मनो ने प्लेटफार्म पर एक भारी मशीनगन खडी कर दी, वैसे ही जैसे

शिकार का पता लगा कर शिकारी कुत्ता खड़ा हो जाता है। मशीनगन के पास ही एक जर्मन कार्पोरल राइफिल के घोड़े पर हाथ रखे बैठ गया।

स्टेशन वीरान हो गया।

रात को गिरफ्तारियां शुरू हुईं। पकड़े जाने वालों में आर्तेम भी था। जुखराई बच गया क्योंकि रात को वह घर नहीं गया था।

सभी गिरफ्तार आदमियों को भेड़-बकरियों की तरह मालगोदाम के एक विशाल शेड के नीचे इकट्ठा किया गया और उनसे कहा गया कि या तो काम पर वापस जाओ या कोर्ट-मार्शल का सामना करो।

सारी लाइन के लगभग सभी रेलवे मजदूर हड़ताल पर थे। एक दिन और एक रात, एक भी गाड़ी नहीं गुजरी और यह भी पता चला कि वहां से करीब अस्सी मील की दूरी पर एक बड़ी छापेमार टुकड़ी से लड़ाई चल रही थी जिसने रेलवे लाइन काट दी थी और पुलों को उड़ा दिया था।

रात को जर्मन सिपाहियों की एक गाड़ी स्टेशन पर आई मगर और आगे नहीं जा सकी क्योंकि इंजन ड्राइवर, उसके मददगार और फायरमैन तीनों इंजन छोड़ कर गायब हो गये थे। दो और गाड़ियां आगे जाने के इन्तजार में स्टेशन की साइडिंग पर खड़ी थीं।

मालगोदाम के शेड का भारी दरवाजा खुला और स्टेशन कमांडेण्ट, एक जर्मन लैफ्टिनैण्ट, उसका सहायक और कुछ और जर्मनों की एक टोली अन्दर दाखिल हुई।

"कोर्चागिन, पोलेनताव्स्की, ब्रुजाक," कमांडेण्ट के सहायक ने नाम पढ़ कर सुनाते हुए कहा, "तुम्हें आदेश दिया जाता है कि तुम इंजन चलाने वालों का काम करोगे और फौरन एक गाड़ी लेकर चले जाओगे। तुम इनकार नहीं कर सकते, इनकार करने पर तुम्हें यहीं गोली मार दी जायगी। बोलो, तुम्हें क्या कहना है?"

तीनों मजदूरों ने गुस्से से अन्दर ही अन्दर घुटते हुए सिर हिला कर अपनी स्वीकृति दी। उन्हें सन्तरियों के पहरे में इंजन तक ले जाया गया और कमांडेण्ट का सहायक अगली गाड़ी के लिए ड्राइवर, उसके मददगार और फायरमैन का नाम पढ़ने लगा।

इंजन ने गुस्से से फुफकार छोड़ी और चिनगारियों का एक फव्वारा-सा ऊपर उठा। भारी-भारी सांस लेता हुआ इंजन रात की गहराइयों में रेलवे लाइन को रौंदता हुआ अंधेरे में आगे बढ़ चला। आर्तेम ने फायर-बाक्स में अभी-अभी कोयला झोंका था। कोयला डाल कर उसने उसके दरवाजे को बन्द किया, औजारों के बक्स पर रखे हुए चपटी टोंटी के टी-पॉट से एक घूंट पानी पिया और बुड्ढे इंजन ड्राइवर पोलेनताव्स्की की ओर मुड़ा।

"तो क्यो काका, अब हम लोग इसे ले ही जायेंगे क्या ?"

पोलेनताव्स्की ने अपनी घनी पलको के नीचे अपनी आखें कुछ खीझ और चिड़चिड़ेपन से मुलमुलाईं।

"और करोगे क्या जब पीठ मे सगीन चुभी हो !"

ब्रूजाक ने इजन से लगे हुए कोयले के डिब्बे पर बैठे हुए जर्मन सिपाही को कनखियो से देखते हुए सुझाव दिया, "हम क्यो न सब कुछ ऐसे ही छोडकर भाग चले ?"

आर्तेम बुदबुदाया, "मैं भी ऐसा ही सोचता हू, मगर मुझे डर बस उस पीठ मे लगी सगीन का है।"

"वह तो है," ब्रूजाक ने खिडकी मे से सिर निकालते हुए अनिश्चयपूर्ण ढग से कहा।

पोलेनताव्स्की आर्तेम के और पास आ गया और फुसफुसाकर बोला, "गाडी लेकर हम नही जा सकते, समझते हो न ? वहा आगे लडाई हो रही है। हमारे आदमियो ने रेलवे लाइन उडा दी है। और हमको देखो, हम इन सुअर के बच्चो को लेकर जा रहे हैं ताकि वे हमारे आदमियो को गोली से भून दें— नही, यह नही हो सकता। सच कहता हू बेटा, जार के दिनो मे भी मैंने हडताल के वक्त इजन नही चलाया था और अब भी नही चलाऊगा, यह मेरा निश्चय है। अगर हम अपने ही लोगो की तबाही का कारण बनें, तो यह एक ऐसा कलक का टीका होगा जो सारी जिन्दगी नही छूटेगा। इजन चलाने वाले दूसरे लोग भाग गये कि नही ? जान का खतरा उनको भी था, मगर तब भी उन्होने ऐसा किया। हम हरगिज गाडी लेकर आगे नही जायेंगे। क्यो तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

'बात तो तुम ठीक कहते हो काका, मगर उस आदमी का क्या करोगे ?" कहते हुए उसने आख से उस सिपाही की ओर इशारा किया।

इजन ड्राइवर का चेहरा चिन्ता से स्याह और भारी हो गया। उसने मुट्ठी भर रद्दी कपडा लेकर अपने माथे का पसीना पोछा और लाल-लाल आखो से प्रेशर-गेज को घूरा जैसे वही उसको उस सवाल का जवाब मिल जायगा जो उसे तग कर रहा था। फिर गुस्से और मायूसी की हालत मे वह कुछ बकने लगा।

आर्तेम ने दुबारा टी-पॉट से पानी पिया। दोनो आदमी एक ही चीज के बारे मे सोच रहे थे। मगर कोई उस कठिन चुप्पी को तोडने का साहस अपने में नही पा रहा था। आर्तेम को जुखराई की बात का ख्याल आया "क्यो भाई, बोल्शेविक पार्टी और कम्युनिस्ट विचार-धारा के बारे मे तुम्हारा क्या ख्याल है ? और फिर उसे अपने जवाब का ख्याल आया "मैं हमेशा मदद के लिए तैयार हू, तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो .."

उसने सोचा, "क्या खूब मदद   अपने ही लोगो को दबाने के लिए जर्मनो की फौज को ड्राइव करके ले जा रहे हैं   "

पोलेनताव्स्की आर्तेम के करीब रखे हुए औजारो के बक्स के ऊपर इस वक्त झुका हुआ था। उसने भारी आवाज मे कहा ·

"उस आदमी को देखते हो न, उसका तो काम तमाम करना ही होगा, समझे ?"

आर्तेम चौंक गया। पोलेनताव्स्की ने दात पर दात जमाये इतना और कहा

"दूसरा कोई रास्ता नही है। यह तो हमे करना ही होगा। हम उसके सिर पर भरपूर वार करके उसको लिटा देंगे और चोक और लिवर को उठा कर फायर बाक्स मे झोंक देंगे और भाग निकलेंगे।"

आर्तेम को ऐसा लगा कि जैसे उसके कधे से बोझ हट गया हो और वह हल्का हो गया हो। उसने कहा

"ठीक।"

ब्रुजाक की ओर झुकते हुए आर्तेम ने उसे यह निश्चय बतलाया।

ब्रुजाक ने फौरन जवाब नही दिया। ये सभी लोग भारी खतरा उठा रहे है। सबके अपने-अपने परिवार थे जिनकी उन्हे चिन्ता करनी थी। पोलेनताव्स्की का कुनबा तो सबसे बडा था   उसके घर मे नौ प्राणी थे जिनके लिए उसे आहार जुटाना पडता था। मगर इस सबके बाद भी उन तीनो को यह बात अच्छी तरह पता थी कि वे किसी सूरत से गाडी को अपनी मंजिल तक नही ले जा सकते।

ब्रुजाक ने कहा, "मैं भी तुम्हारे साथ हू। मगर उसका हम क्या करेंगे ? उसका कौन.. " उसने अपना वाक्य पूरा नही किया मगर उसका मतलब आर्तेम के लिए बिल्कुल साफ था।

आर्तेम पोलेनताव्स्की की ओर मुडा जो इस समय चोक के साथ कुछ कर रहा था। आर्तेम ने उसको जैसे यह बताने के लिए कि ब्रुजाक भी उनसे सहमत है, अपना सिर हिलाया। मगर एक सवाल अब तक तय नही हो सका था और आर्तेम को बहुत परेशान कर रहा था। उसी के सम्बध मे जानने को वह उस बुड्ढे के और पास पहुचा और पूछा

"मगर कैसे ?"

पोलेनताव्स्की ने आर्तेम की ओर निहारा।

"तुम शुरू करो, तुम्ही सबसे मजबूत हो। हम इस लोहे के डडे से उसे ढेर कर देंगे और बस फिर काम तमाम समझो।" वह बुड्ढा बहुत उद्विग्न हो रहा था।

आर्तेम के माथे पर बल पड़ गये और वह किसी गहरे सोच में डूब गया।

"नही, नही मुझसे यह न होगा। जरा सोचो न, उस आदमी का भी भला क्या दोष है। उसे भी तो संगीन की नोक पर मजबूर किया गया है इस काम के लिए।"

पोलेनताव्स्की की आखे अगारो की तरह चमकने लगी।

"तुम कहते हो कोई दोष नही? तब फिर हम जो यह काम करने जा रहे हैं, हमारा भी इसमे दोष नही। मगर एक चीज मत भूलो कि जिस फौजी टुकडी को हम लोग ले जा रहे हैं, वह सजा देने के लिए भेजी जा रही है। तुम्हारे ये भोले-भाले लोग छापेमारो को गोलियो से भूनेंगे। तब फिर दोष क्या इसमे छापेमारों का है? नही भाई नही, तुम्हारे शरीर मे ताकत भले भाड की हो, लेकिन अकल जरा कम ही है"

आर्तेम ने फटी हुई आवाज मे कहा, "ठीक, ठीक।" उसने लोहे का डडा उठा लिया मगर पोलेनताव्स्की ने उसके कान मे धीरे से कहा

"यह काम मैं करूगा, ज्यादा ठीक रहेगा। तुम फावडा उठा लो और इजन से लगी हुई गाडी मे से कोयला नीचे देने के लिए उस पर चढ जाओ। जरूरी समझना तो उसी फावडे से तुम भी एक हाथ लगा देना। मैं ऐसा दिखलाऊगा कि जैसे कोयले के ढेर को हलका कर रहा हू।"

ब्रुजाक ने इस बातचीत को सुना और सिर हिलाया। "बुढऊ ठीक कहते हैं," उसने कहा और चोक के पास जाकर खडा हो गया।

वह जर्मन सिपाही अपनी टोपी लगाये, जिसके चारों तरफ लाल-लाल फीता लगा था, उस इजन के पास वाले डब्बे के सिरे पर बैठा था। उसकी राइफिल उसके पैरो के बीच पडी हुई थी और वह सिगार पी रहा था। बीच-बीच मे वह इन इजन चलाने वालों पर निगाह डाल लेता था।

जब आर्तेम उस डिब्बे पर चढा तो सन्तरी ने उस पर कोई ध्यान नही दिया। और जब पोलेनताव्स्की ने इस बहाने से कि वह डब्बे के उस सिरे पर रखे हुए कोयले के बडे-बडे ढोंको के पास पहुचना चाहता है, सिपाही को रास्ते से हटने के लिए इशारा किया तो सिपाही फौरन इजन के डब्बे मे जाने वाले दरवाजे की ओर हट गया।

लोहे के डडे से उस जर्मन की खोपडी चूर होने की अचानक आवाज आई तो आर्तेम और ब्रुजाक ऐसे उछल गये जैसे किसी ने उन्हे लाल-लाल लोहे से दाग दिया हो। जर्मन सिपाही का शरीर बेजान होकर इजन के केबिन और कोयले के डब्बे के बीच के रास्ते मे पडा था।

खून तेजी से उसकी भूरे रग की ऊनी टोपी मे से होकर चूने लगा था और उसकी राइफिल डब्बे की दीवार से टकरा कर बज रही थी।

पोलेनताव्स्की ने लोहे का डडा फेंकते हुए धीरे से कहा, "काम तमाम !" और फिर जोडा, "अव हमारे लिए लौटने की राह नही है।" उसके चेहरे की नसें तन गई थी।

उसकी आवाज मर्रा गई। मगर फिर उस भारी निस्तब्धता को, जो उन तीनो आदमियो पर छा गई थी, चीरने के लिए एक बार फिर एक चीख के रूप मे उठी।

वह चिल्लाया, "चोक का पेंच ढीला करो, जल्दी जल्दी !"

दस मिनट मे सारा काम हो गया। इजन के सारे कल-पुर्जे ढीले कर दिये गये थे, और उसकी रफ्तार धीमी होती जा रही थी।

इजन के आस-पास रोशनी का जो घेरा था, उसमे रेलवे लाइन के किनारे खडे हुए पेडो की काली-काली, कुछ सोचती हुई-सी आकृतिया जैसे आगे बढ आती थी मगर फिर पीछे हटकर उस अभेद्य अधकार मे खो जाती थी। इजन की हेडलाइट अपने दस गज आगे भी रात की मोटी चादर चीर नही पाती थी और धीरे-धीरे उसका वह भारी-भारी सास लेना कम होता जा रहा था, जैसे उसने अपनी ताकत का आखिरी अणु भी खर्च कर डाला हो।

"कूदो, बेटा !" आर्तेम ने पीछे से पोलेनताव्स्की की आवाज सुनी और हैंडिल छोड दिया। गाडी की उस तेज रफ्तार मे उसका वह तगडा शरीर किसी पत्थर की तरह नीचे गिरने लगा, मगर उसके पैर तभी एक धक्के के साथ जमीन पर लगे। वह एक-दो कदम दौडा और फिर इतने जोर से गिरा कि गुलाट खा गया।

तभी इजन के डिब्बे के दोनो तरफ से एक-एक छायाकृति कूदी।

कूजाक के घर पर अधेरा छा गया था। पिछले चार दिनो मे सर्गेई की मा ऐन्तोनीना वासीलिएवना का चिन्ता के मारे बुरा हाल हो गया था। अपने पति का उसे कोई समाचार नही मिला था। उसे सिर्फ इतनी ही बात मालूम हो सकी थी कि जर्मनो ने उसे कोर्चागिन और पोलेनताव्स्की के साथ-साथ एक इजन चलाने पर मजबूर किया था। और कल हेटमैन के तीन सन्तरी आये थे और उससे बहुत गाली-गुफ्ता करके उन्होन बेहूदा सवाल किये थे।

उन्होंने जो कुछ कहा था उससे उसने अन्दाज लगाया कि कुछ गडबड हो गई है और जैसे ही सिपाही चले गये उसने बहुत उद्विग्न होकर सिर पर रूमाल डाला और मारिया याकोवलेवना के पास चली गई, इस उम्मीद मे कि शायद उसी से अपने पति के बारे मे उसको कुछ खबर मिल जाय।

उसकी सबसे बड़ी लड़की वालिया ने, जो रसोईघर की सफाई कर रही थी, उसे घर से बाहर जाते देखा।

लड़की ने पूछा, "कहा जा रही हो मा ?"

ऐन्तोनीना वासीलिएवना ने सजल आखो से अपनी बेटी को देखा और जवाब दिया, "कोर्चागिन के यहा। मुमकिन है उन्हें तुम्हारे पिता का कुछ हाल मालूम हो। अगर सर्गेई घर आये तो उससे कहना कि स्टेशन जाकर पोलेन ताव्स्की के घर वालो से मिल लेगा।"

वालिया ने अपनी मा को बाहो मे भर लिया और उसे दरवाजे तक पहुचाती हुई बोली, "घबराओ नही, मेरी प्यारी मा।"

मारिया याकोवलेवना ने हमेशा की तरह जी खोल कर ऐन्तोनीना वासीलि-एवना का स्वागत किया। दोनो स्त्रियो को एक दूसरे से उम्मीद थी कि उन्हे कुछ खबर मिलेगी। मगर बातचीत के दौरान सारी उम्मीदें खत्म हो गई।

कोर्चागिन के घर पर भी रात को तलाशी हुई। सिपाही आर्तेम की तलाश मे थे और उन्होने जाते समय मारिया याकोवलेवना से कहा था कि जैसे ही तुम्हारा लड़का घर आये, उससे कहना कि वह फौरन जाकर कमाडैण्ट के दफ्तर मे खबर करे।

इन सिपाहियो के आने से कोर्चागिना के होश-हवास गुम हो गये। वह घर पर अकेली थी क्योकि पावेल रोज की तरह आज भी बिजली घर मे रात की पाली पर काम कर रहा था।

पावेल जब खूब सवेरे काम पर से घर लौटा और मा से तलाशी की खबर सुनी तो उसे अपने भाई की हिफाजत की गहरी चिन्ता सताने लगी। उसके और आर्तेम के स्वभाव मे अन्तर था। आर्तेम ऊपर से बहुत शुष्क था, मगर इसके बावजूद दोनो भाई एक-दूसरे को बहुत चाहते थे। दोनो के बीच एक अजीब कठोर सा प्यार था जिसमे दिखावे के लिए कोई जगह न थी, मगर पावेल जानता था कि अपने भाई के लिए कोई भी कुरबानी करने मे वह नही हिचकेगा।

आराम के लिए बिना रुके पावेल जुखराई से मिलने के लिए भाग कर स्टेशन गया। जुखराई उसे नही मिला और जिन मजदूरो को वह जानता था, वे उसे फरार लोगो के बारे मे कुछ नही बतला सके। इजन ड्राइवर पोलेन-ताव्स्की के घर वाले भी बिल्कुल अधकार मे थे। पोलेनताव्स्की के सबसे छोटे लड़के बोरिस से, जो उसे बाहर हाते मे मिला, उससे सिर्फ इतना मालूम हुआ कि कल रात उनके घर पर भी तलाशी हुई थी। सिपाही पोलेनताव्स्की को खोज रहे थे।

पावेल घर लौटा तो अपनी मा को देने के लिए उसके पास कोई खबर न थी। थक कर चूर, वह बिस्तर पर पड़ा रहा और फौरन उखड़ी-उखड़ी सी नीद मे डूब गया।

दरवाजे पर दस्तक पड़ी तो वालिया ने आख उठा कर देखा।

जजीर खोलते हुए उसने पूछा, "कौन है ?"

दरवाजा खुला तो क्लिम्का मारचेको का लाल-लाल बालो वाला सर दिखाई दिया जिसके बाल बिखरे हुए थे। स्पष्ट ही वह दौड़ता हुआ आया था, क्योंकि उसकी सास फूली हुई थी और उसका चेहरा सुर्ख हो रहा था।

उसने वालिया से पूछा, "तुम्हारी मा घर पर हैं ?"

"नही, वह बाहर गई हुई हैं।"

"कहा ?"

"मेरा ख्याल है, कोर्चागिन के यहा," यह कहते हुए वालिया ने तेजी से लौटते हुए क्लिम्का की आस्तीन पकड़ ली।

क्लिम्का ने सकोचपूर्वक लड़की को देखा, फिर बड़ी हिम्मत करके कहा .

"मुझे उनसे कुछ काम है।"

वालिया उसे जाने नही देना चाहती थी, बोली, "क्या है ? झट से बोलता क्यो नही, लाल सिर वाले भालू, बोल झट से बोल और अब मुझे और ससपज मे न रख," लड़की ने आदेश के स्वर मे कहा।

क्लिम्का जुखराई की चेतावनी और उसके इस कठोर निर्देश को कि चिट्ठी एन्तोनीना वासीलिएवना के हाथ मे ही देना, भूल गया, और उसने अपनी जेब से एक मैला-कुचैला सा कागज निकाला और उस लड़की को दे दिया। सर्गेई की इस खूबसूरत, सुनहरे बालों वाली बहन को वह किसी चीज के लिए इनकार नही कर सकता था, क्योंकि सच बात यह है कि उसे इस लड़की से प्यार था। यह बात अलग है कि वह इतना झेंपू था कि अपने आप से भी इस बात को नही मान पाता था कि उसे वालिया पसन्द है। उस लड़की ने झटपट उस कागज के टुकड़े को पढ डाला।

> "प्यारी सोनिया ! घबराओ मत। सब ठीक है। वे लोग हिफाजत से हैं। जल्दी ही तुम्हें और खबर मिलेगी। दूसरो को भी बता दो कि सब ठीक है। घबराने की कोई बात नही है। इस चिट्ठी को नष्ट कर डालना।
>
> —जखार।"

वालिया तेजी से विलम्का के पास गई ।

"यह तुम्हे मिला कहा पागल राम ? किसने दिया तुमको ?" यह कहते हुए उसने विलम्का को इतने जोरो से झकझोरा कि उसकी तो जैसे अकल ही गुम हो गई और उसने अनजान मे ही दूसरी बडी भूल कर डाली ।

"जुखराई ने मुझे दिया, स्टेशन पर ।" फिर उसे खयाल आया कि यह बात उसे नही कहनी चाहिए थी । तब उसने जोडा "मगर उन्होने मुझे ताकीद की थी कि मैं यह चिट्ठी तुम्हारी मा के सिवा और किसी को न दू ।"

वालिया ने हसते हुए कहा, "ठीक है । मैं किसी से नही कहूगी । और अब तुम, अच्छे नन्हे भालू की तरह, दौडते हुए पावेल के यहा जाओ और वहीं तुम्हे मा मिलेंगी ।" यह कहते हुए उसने लडके को धीरे से पीठ मे धक्का दिया ।

पल भर बाद विलम्का का लाल सर बागीचे के फाटक मे से होकर गायब हो गया ।

तीनो मे से कोई रेलवे मजदूर घर नही लौटा । शाम को जुखराई कोर्चागिन के घर आया और उसने मारिया याकोवलेवना को ट्रेन वाली घटना बतलाई । उसने खौफजदा मा को शान्त करने की पूरी कोशिश की और उसे विश्वास दिलाया कि तीनो ब्रुजाक के चचा के यहा दूर के एक गाव मे बहुत हिफाजत से हैं । यह ठीक है कि वे लोग अभी लौट कर घर नही आ सकते, मगर जर्मनो की हालत पतली है और परिस्थिति किसी भी दिन बदल सकती है ।

इन तीनो आदमियो के गायब हो जाने से उनके परिवार एक-दूसरे के बहुत पास आ गये, जितना पहले कभी नही थे । उनकी चिट्ठिया जो कभी-कभार मिल जाती थी, बडे आनन्द से पढी जाती थी । मगर उनके बगैर घर सूना और वीरान मालूम होता था ।

एक दिन जुखराई पोलेनतोव्स्की की बीबी से मिलने के लिए आया, कुछ इस तरह से कि जैसे रास्ते मे यह घर पड गया हो, और उसे कुछ रुपया दिया ।

उसने कहा, "तुम्हारे पति ने तुमको यह भेजा है, तब तक इसी से घर का खर्च चलाओ । मगर हा, देखना, किसी से इसका जिक्र न करना ।"

उस बुड्ढी स्त्री ने कृतज्ञतापूर्वक जुखराई का हाथ पकड लिया और बोली, "शुक्रिया ! हमे इसकी सख्त जरूरत थी । बच्चो को खिलाने के लिए भी मेरे पास कुछ नहीं था ।"

सच बात यह है कि यह पैसा उस फड मे से आया था जो बुल्गाकोव छोड गया था ।

वहा से स्टेशन को लौटते हुए जुगराई सोचने लगा, "अब देखो आगे क्या होता है। अगर गोली का डर दिखला कर हडताल तोड भी दी जाती है और मजदूर काम पर भी लौट आते हैं, तब भी यह समझ लो कि आग सुलग गई है और अब उसे कोई बुझा नही सकता। जहा तक उन तीनो का ताल्लुक है, वे मजदर हैं, सच्चे प्रोलितारियन।" मन में यह कहते हुए वह उमग से भर उठा।

बोरोविश्रोवा वाल्का नामक गाव के छोर पर एक पुराने, लोहे के कारखाने में पोलेनताल्स्की सुलगती हुई भट्टी के आगे खडा था। कारखाने का अगवाडा सडक पर पडता था और धुए से काला हो रहा था। भट्टी की चमक से उसकी आखें छोटी हो गई थीं और वह एक बहुत लम्बे हैन्डिल की सडसी से लोहे के एक लाल-लाल टुकडे को घुमा रहा था।

आर्तेम घरन मे लटकती हुई धौकनी चला रहा था।

"इन दिनो इन गावो मे कोई कुशल मजदूर भूखा नही मर सकता—जितना काम चाहे पा सकता है," इजन ड्राइवर ने अपनी दाढी के भीतर से मुस्कराते हुए कहा। "इसी तरह एक-दो हफ्ता और चला तो हम लोग अपने घर बहुत काफी आटा और रसद वगैरह भेज सकेंगे। बेटा, किसान लोहारो की बडी इज्जत करते हैं। तू देखना हम लोग धीरे-धीरे खा-पीकर पूजीपतियो जैसे मोटे हो जायेंगे। जखार हम लोगो से कुछ दूसरी तरह का है—वह किसानो से चिपका हुआ है, अपने उस चाचा के जरिए उसकी जडें जमीन मे हैं। मैं उसे दोष नही देता। तुम्हारे और मेरे पास आर्तेम, सिवा अपनी मजबूत पीठ और हाथो के क्या है, न हल, न गाडी, न और कुछ। हम लोग तो सदा-सदा के प्रोलितारियन हैं, सच्चे सर्वहारा, मगर बुड्ढा जखार जो है न, वह तो जैसे दो टुकडो मे बटा हुआ है। उसका एक पैर तो इजन में है और दूसरा गांव मे।" हसते हुए उसने यह बात कही। फिर अपनी सडसी से धातु के उस-लाल-लाल टुकडे को हिलाया डुलाया और फिर कुछ गभीर स्वर मे बोला "बेटा, जहा तक हमारी बात है, लक्षण बहुत अच्छे नही हैं। अगर जल्दी ही जर्मनो का सफाया नही किया जाता तो फिर जैसे भी हो हमे एकातेरीनोस्लाव या रोस्तोव पहुचना पडेगा, नही तो हम लोग पकडे जायेंगे और इसके पहले कि बात हमारी समझ मे आये, लटका दिये जायेंगे।"

आर्तेम ने मुह-ही-मुह मे कहा, "यह तो तुम ठीक कहते हो।"

"काश कि मुझे पता होता कि वहा पर हमारे लोगो का क्या हाल-चाल है। मैं तो नही समझता कि जर्मनो ने उन्हे वैसे ही छोड रखा होगा।"

"हां काका, हम लोग काफी मुसीबत में हैं और अच्छा हो कि हम लोग घर के बारे में सोचना बन्द कर दें।"

इंजन ड्राइवर ने भट्ठी मे से चमकता हुआ गर्म धातु का नीला टुकड़ा निकाला और सधे हुए हाथो से निहाई पर रख दिया।

"बेटा, अब लगो इस पर !"

आर्तेम ने एक भारी-सा हथौड़ा उठाया, घुमाकर उसे अपने सर के ऊपर ले गया और निहाई पर पटक दिया। चिनगारियों का एक फव्वारा हिस् की आवाज के साथ फैल गया जिससे एक पल के लिए उस लोहारखाने के अंधेरे-से-अंधेरे कोने भी आलोकित हो गये।

पोलेनताव्स्की लोहे के उस गर्म लाल टुकड़े को घुमाता रहा, उस पर हथौड़े की जबदस्त चोटें पड़ती रहीं और वह गर्म मोम की तरह चपटा हो गया।

लोहारखाने के खुले दरवाजों से अंधेरी रात की गर्म सांस आ रही थी।

नीचे झील फैली हुई थी, अंधेरी, विशाल ! उसके चारों ओर चीड के पेड़ खड़े अपने उन्नत शीश हिला रहे थे।

उनकी ओर देखते हुए तोनिया ने सोचा, "जैसे जान हो इनमे।" झील के चट्टानी किनारे पर वह घास से ढकी हुई एक नीची जगह पर लेटी हुई थी। उसके गड्ढे के उस पार ऊपर जगल का छोर था और नीचे थी झील। झील पर अपना वजन-सा डालती हुई पहाड़ियो की छाया से पानी की स्याही और भी स्याह हो गई थी।

स्टेशन के पास की यह पत्थर की खदान तोनिया की खास प्यारी जगह थी। जिन गहरी-गहरी खदानो से पत्थर निकाल कर अब छोड़ दिया गया था, उनमे पानी के सोते फूट गये थे, और अब वहा पर तीन तलैया बनी हुई थी। झील के किनारे छपाक् की आवाज हुई। आवाज सुन कर तोनिया ने सिर ऊपर उठाया। अपने सामने की शाखो को हाथ से अलग करते हु‍ए उसने उस ओर देखा जिधर से आवाज आई थी। एक चुस्त, फुर्तीला, धूप से तपे हुए रग का शरीर जोर-जोर से हाथ मारता हुआ किनारे से दूर तैरता चला जा रहा था। तोनिया ने तैराक की तावे के रग की पीठ और काला सिर देखा, वह ऊद-बिलाव की तरह मुह से हवा फेंक रहा था, और पानी के अन्दर तेजी से पैर चला रहा था। कभी उलट जाता था, कलैया खाता था और गोते लगाता था, फिर वह पीठ के बल होकर पानी पर लेट गया और बहने लगा। तेज सूरज की चमक से उसकी आखें चौंधिया रही थी, बाहें फैली हुई थी और शरीर थोड़ा मुड़ा हुआ था।

तोनिया ने शाख छोड दी और वापस अपनी जगह पर आ गई।

"इस तरह से झाकना ठीक नही," कहते हुए वह अपने-आप मुस्कराई और फिर पढने मे लग गई।

लेशचिन्स्की ने उसे जो किताब दी था, उसमे वह इतनी डूबी हुई थी कि उसने किसी को काले पत्थर की उस चट्टान पर चढते नही देखा जो उसके खाले को चीढ के जगल से अलग करती थी। वह तो जब एक ढेला, जो इस आदमी ने अनजान मे लुढकाया था, आकर तोनिया की किताब पर गिरा तब उसने आख ऊपर उठाई और पावेल कोर्चागिन को अपने सामने खडा पाया। पावेल भी इस मुलाकात से अचकचा गया और अपनी घबराहट मे पलटने के लिए मुडा।

"वही आदमी होगा जिसे मैंने अभी पानी मे देखा था," तोनिया ने उसके गीले बालो को देखते हुए अपने मन मे कहा।

"तुम डर गई क्या? मुझे नही मालूम था कि तुम यहा पर हो," पावेल ने चट्टान के कगार पर हाथ रखते हुए कहा। उसने तोनिया को पहचान लिया था।

"नही, ऐसा क्यो कहते हो, तुम्हारे कारण मुझे कोई अडचन नही है। तुम्हारा मन करे तो थोडी देर रुको, और फिर हम दोनो बातें करें।"

पावेल ने तोनिया को आश्चर्य से देखा।

"काहे के बारे मे बातें करेंगे हम?"

तोनिया मुस्कराई।

एक पत्थर की ओर उगली से इशारा करते हुए उसने कहा, "मिसाल के लिए, सबसे पहले यही कि तुम यहा पर क्यो नही बैठते? तुम्हारा नाम क्या है?"

"पावका कोर्चागिन।"

"मेरा नाम तोनिया है। लो अब हम लोगो ने एक-दूसरे को अपना परिचय दे दिया।"

पावेल अपनी उलझन और परेशानी मे अपनी टोपी उमेठ रहा था।

तोनिया ने खामोशी को तोडते हुए कहा, "अच्छा तो तुम्हारा नाम पावका है। क्यो, पावका क्यो? सुनने मे बहुत अच्छा नहीं लगता। पावेल इससे कहीं अच्छा होगा। और मैं तो तुम्हे इसी नाम से पुकारूगी—पावेल। तुम क्या यहा अक्सर आते हो ." इसके बाद वह कहना चाहती थी "तैरने" मगर चूकि वह यह जाहिर नही होने देना चाहती थी कि उसने पावेल को पानी मे देखा है, उसने बात बदल कर कहा, "घूमने?"

पावेल ने जवाब दिया, "नही, बहुत नही। कभी-कभी जब फुरसत होती है।"

"अच्छा तो तुम कही काम करते हो ?" तोनिया ने उससे और आगे सवाल किया।

"बिजली के कारखाने मे। मैं फायरमैन हू।"

"बताओ, तुमने इतनी अच्छी तरह लडना कहा सीखा ?" तोनिया ने अप्रत्याशित ढग से पूछा।

"मेरे लडने से तुमको क्या ?" न चाहते हुए भी पावेल के मुह से निकल गया।

यह देख कर कि पावेल उसके सवाल से चिढ गया है, तोनिया ने जल्दी से कहा, 'देखो नाराज न हो, कोर्चागिन। मैं सिर्फ जानना चाहती थी और क्या। क्या घूसा था वह भी! तुम्हे इतना बेरहम नही होना चाहिए," यह कहते हुए वह जोर से हस पडी।

पावेल ने पूछा, "उसके लिए बडा दुःख होता है तुम्हें, क्यो ?"

"नही तो, जरा भी नही। उल्टे, मेरा तो यह ख्याल है कि सुखार्को इसी के काबिल था। जो हुआ ठीक हुआ। मुझे तो खूब ही मजा आया। मैं सुनती हू कि तुम अक्सर किसी-न-किसी से लडते-झगडते रहते हो।"

पावेल के कान खडे हुए, "कौन कहता है ?"

"क्यो, विक्टर लेशचिन्स्की का ही यह कहना है कि तुम पेशेवर लडाके हो।"

पावेल के चेहरे पर कालौंछ आ गई।

"विक्टर सुअर है और बिलकुल लौंडिया है। उसे अपनी किस्मत सराहनी चाहिए कि उस दिन उसकी भी कुन्दी नही हुई। मेरे बारे मे उसने जो कुछ कहा था, मैंने सब सुना था। लेकिन मैं अपने हाथ गन्दे नही करना चाहता था।"

तोनिया ने उसको टोकते हुए कहा, "ऐसी जबान का इस्तेमाल मत करो, पावेल। अच्छा नही मालूम होता।"

पावेल को गुस्सा चढने लगा।

उसने अपने मन मे कहा, "मैं क्यो यहा खडा इस छोकरी से बातें कर रहा हू, आखिर क्यो ? मुझे हुक्म दे रही है! पहले आगे तो बात करना भी नही पसन्द आता और अब मेरी जबान मे दोष निकाल रही है!"

तोनिया ने पूछा, "लेशचिन्स्की से तुम इतने चिढे हुए क्यो हो ?"

"पहला तो वह लौंडिया है, अपनी अम्मा का छिछोरा! उसमे जरा भी हिम्मत नही। ऐसो को देखकर मेरी उगली खुजलाने लगती है। ऐसा

दिखलाता है कि जैसे दूसरा कोई कुछ हो ही नही, सब के सिर पर पैर देकर चलने की कोशिश करता है, समझता है कि जो मन मे आवे सो कर सकता है, सिर्फ इसलिए कि वह अमीर है। मगर मुझे खाक परवाह नही उसकी अमीरी की। जरा किसी रोज मुझे छू भर तो दे, फिर देखो मैं उसकी कैसी मरम्मत करता हू। ऐसो की तो बस एक ही दवा है, कस कर एक घूसा जबड़े पर" पावेल आवेश म बोलता गया।

तोनिया को अफसोस हो रहा था कि उसने क्यो खामखा लेशचिन्स्की का जिक्र किया। वह साफ देख रही थी कि इस लड़के की उस रंगे-चुगे, साहबी शान वाले स्कूली छोकरे से पुरानी लडाई है। बातचीत का रुख अधिक शात दिशा की ओर मोडने के ख्याल से उसने पावेल से उसके घर वालो और काम-काज के बारे मे सवाल करना शुरू किया।

पावेल को इस बात का पता भी नही चला और यह भूल कर कि वह चला जाना चाहता था, उस लडकी के सवालो का जवाब बडी तफसील मे देने लगा।

तोनिया ने पूछा, "तुमने पढाई क्यो छोड दी ?"

"स्कूल से निकाल दिया गया।"

"क्यो ?

पावेल को बताते लाज लगी।

"मैंने पादरी साहब के आटे मे थोडी तम्बाकू डाल दी थी, इसीसे सबो ने निकाल दिया। अजी बडा हरामजादा था वह पादरी, सता-सताकर जान मार डालता था।" और पावेल ने उसको पूरी कहानी सुना दी।

तोनिया बहुत दिलचस्पी से सुनती रही। पावेल की आरम्भिक झेंप अब खतम हो गयी थी और अब वह उस लडकी से ऐसे बाते कर रहा था जैसे उसके संग उसकी बहुत पुरानी जान-पहचान हो। और बातो के साथ-साथ उसने उसको अपने भाई के गायब हो जाने की बात भी बतला दी। उस नशेब मे बैठ कर दोस्ताना बातचीत मे वे इस तरह खो गये थे कि उन दो मे से किसी को पता ही न चला कि घटो पर घटे बीतते जा रहे थे। एकाएक पावेल उछल कर खडा हो गया।

"अब मेरे काम का वक्त है। इस वक्त मुझे ब्यायलर मे आग डालनी चाहिए थी, न कि यहा बैठ कर बकबक करना। हालिको आज जरूर झझट करेगा।" कुछ बेचैनी सी महसूस करते हुए उसने एक बार फिर कहा, "अच्छा ता विदा ! अब मुझे भागते हुए शहर जाना पड़ेगा।"

तोनिया भी उछल कर खडी हो गई और अपना जाकेट चढाने लगी।

"मुझे भी अब जाना चाहिए। चलो साथ ही चलेंगे।"

"न भाई, वह नहीं होगा। मुझे तो दौड़ना होगा।"

"वह भी सही। मैं भी तुम्हारे साथ दौड़ लगाऊंगी, देखें कौन वहां पहले पहुंचता है।"

पावेल ने उपेक्षा की दृष्टि से देखा !

"मुझसे पहले ? मुझसे पहले पहुंचना तुम्हारे लिए नामुमकिन है।'

"अभी तय हुआ जाता है। पहले यहां से तो निकलें हम लोग।"

पावेल ने पानी में निकले हुए उस चट्टानी टुकड़े को छलांगा, फिर तोनिया को अपना हाथ पकड़ाया और फिर दोनों धीरे-धीरे जंगल को पार करके उस चौड़ी समतल पगडंडी पर पहुंच गये जो स्टेशन को जाती थी।

तोनिया सड़क के बीचोबीच रुक गई।

"अच्छा तो आओ : एक, दो, तीन ! दौड़ो ! मुझे छूना तो जरा !"

वह आंधी की तरह सड़क पर भागती चली जा रही थी, उसके जूतों के तल्ले चमक रहे थे और उसकी नीली जाकेट का पिछला हिस्सा हवा में उड़ रहा था।

पावेल उसके पीछे भाग रहा था।

"दो छलांग में अभी मैं उसे पकड़े लेता हूं।" पावेल ने उसकी उड़ती हुई जाकेट के पीछे भागते हुए अपने मन में कहा। मगर गली के बिल्कुल आखीर में स्टेशन के काफी पास पहुंच कर ही वह उसे पकड़ पाया। एक आखिरी कोशिश करके वह उसके बराबर हो गया और उसने अपने मजबूत हाथों से उसके कंधों को पकड़ लिया।

"छू लिया ! मगर दौड़ती तुम तेज हो !" वह हांफते हुए खुशी से चिल्लाया।

"हटो ! तुम तो मेरा मलीदा बनाये डाल रहे हो !" तोनिया ने एतराज किया।

वे वहां पर हांफते खड़े थे, उनकी नाड़ी तेज चल रही थी। दम दौड़ से हांफते हुए तोनिया ने एक बार बहुत हल्के से पावेल का सहारा लिया और उस एक भागते हुए पल में पावेल को उसके स्पर्श से घनिष्ठता की ऐसी मीठी सुखद अनुभूति हुई जिसे वह जल्दी भूलने वाला नहीं था।

"तुम्हारे अलावा और कोई मुझे कभी नहीं छू सका," उसने पावेल से अलग होते हुए कहा।

इसके बाद वे अलग हो गये और विदा में अपनी टोपी हिलाते हुए पावेल शहर की ओर दौड़ा।

जब पावेल ने ब्वॉयलर रूम का दरवाजा धक्का देकर खोला, उस वक्त वह दूसरा आग वाला दानिलो ब्वॉयलर में आग डाल रहा था।

उसने गुर्राकर कहा, "इतनी जल्दी कैसे आ गये; कुछ और देर से आते ! चाहते हो कि तुम्हारा काम मैं करूं, क्यों ?"

पावेल ने अपने साथी को मनाने के अन्दाज से उसके कंधे को थपथपाया।

"हम लोग अभी पलक मारते आग लहका देंगे," उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा और ईंधन को ठीक करने लगा।

आधी रात को जब दानिलो लकड़ी के ढेर पर लेटा जोरों से खर्राटे भर रहा था, तब पावेल ने इंजन में तेल दिया, रद्दी कपड़े से अपना हाथ पोंछा और औजार रखने के बक्स में से गिसेपी गैरिबाल्डी नाम की किताब का बासठवां खंड निकाला और नेपल्स के "लाल कुर्ती वालों" के महान नेता की वीरता और साहस के असंख्य कारनामों का मोहक वृतान्त पढ़ने में डूब गया।

"उसने अपनी खूबसूरत नीली आंखों से ड्यूक को निहारा..."

पावेल ने सोचा, "उसकी भी आंखें नीली हैं, मगर वह दूसरे तरह की हैं, वह अमीर लोगों की तरह जरा भी नहीं है। और दौड़ती कैसे है !"

तोनिया के संग अपनी दिन की मुलाकात की स्मृति में डूबा हुआ पावेल इंजन की तरफ से बिल्कुल बेखबर था। बहुत ज्यादा भाप के दबाव के कारण इंजन सूं-सूं कर रहा था; उसका विशाल फ्लाई-व्हील तेजी से घूम रहा था और इंजन की सीमेंट की नींव भी कांपने लगी थी !

भाप का दबाव बतलाने वाले यन्त्र पर नजर जाते ही पावेल ने देखा कि उसकी सुई खतरा बतलाने वाली लाल रेखा से कई बिन्दु ऊपर है।

"गजब हो गया !" पावेल लपक कर सेफ्टी-वाल्व के पास गया, जल्दी-जल्दी उसे दो बार घुमाया और एकझास्ट पाइप से निकलती हुई भाप तेजी से आवाज करती हुई ब्यॉयलर रूम के बाहर निकली। पावेल ने लिवर खींचते हुए ड्राइव-बेल्ट को पम्प की पुली पर फेंका।

उसने दानिलो को एक नजर देखा, मगर वह गहरी नींद में था, उसका मुंह खुला हुआ था और उसकी नाक डरावनी आवाजें निकाल रही थी।

आधा मिनट बाद भाप का दबाव बतलाने वाले यंत्र की सुई औसत पर आ गई थी।

पावेल से अलग होकर तोनिया घर की ओर चली। उसका मन उस काली आंख वाले नौजवान के संग अपनी मुलाकात में डूबा हुआ था; गो उसे खुद इस बात का पता नहीं था कि वह पावेल के संग अपनी मुलाकात के कारण कितनी खुश थी।

"क्या जोश है उसमे, क्या हिम्मत ! और जरा भी वैसा बदमाश नही जैसा मैंने सोचा था। और चाहे जो हो, वह उन गधे स्कूली छोकरो जैसा जरा भी नही है।"

पावेल दूसरे ही साँचे का आदमी था। वह एक ऐसे वातावरण से आया था जो तोनिया के लिए नया और अपरिचित था।

तोनिया ने सोचा, "मगर उसका जगलीपन कम किया जा सकता है, उस बस मे किया जा सकता है, बडा दिलचस्प दोस्त होगा वह।"

घर पहुच कर उसने लिजा सुखार्को, नेली और विक्टर लेशचिन्स्की को बागीचे मे देखा। विक्टर कुछ पढ रहा था। वे स्पष्ट ही तोनिया का इन्तजार कर रहे थे।

उन्होंने एक-दूसरे का अभिवादन किया और फिर तोनिया एक बेंच पर बैठ गई। उस खोखली-खोखली पोच-सी बातचीत के दरम्यान विक्टर आकर उसके पास बैठ गया और उसने पूछा

"तुमने वह उपन्यास पढा जो मैंने तुमको दिया था ?"

"उपन्यास !" तोनिया ने आख उठा कर ऊपर देखा। "ओह, मैं '

उसने उसको लगभग बता ही दिया था कि किताब वह झील के किनारे भूल आई है।

"तुम्हे उसकी प्रेम-कहानी अच्छी लगी ?" विक्टर ने प्रश्न करती आखो से उसको देखा।

तोनिया एक पल के लिए अपने विचार मे डूबी रही। फिर उसने ज़मीन पर अपने जूते की नोक से उलझी-उलझी रेखाए खीचते हुए सिर ऊपर उठाया और विक्टर को देखा।

"नहीं, अब मैंने उससे कही ज्यादा रोचक प्रेम कहानी शुरू कर दी है।"

विक्टर ने चिढते हुए पूछा, "सच ! उसका लेखक कौन है ?"

तोनिया ने उसको अपनी चमकती, मुस्कराती हुई आखो से देखा और कहा, "उसका कोई लेखक नही है "

तभी बार्जे पर से तोनिया की मा ने पुकार कर कहा, "तोनिया, अपने मिलने वालो को अन्दर बुला लो। चाय तैयार है।"

दोनो लडकियो की बाह पकडकर तोनिया उन्हे अपने साथ घर मे ले गई। उसके पीछे जाते-जाते विक्टर उसके शब्दो की पहेली को सुलझाने की कोशिश करता रहा, मगर उनका मतलब उसकी समझ मे नही आता था।

इस नई अपरिचित अनुभूति ने, जिसने अनजाने मे ही पावेल का पा [illegible] था, उसके मन मे खलबली पैदा कर दी—मगर कुछ इस तरह कि उसकी [illegible]

मन में स्पष्ट न थीं; वह उसे समझ नहीं पाता था और उसका विद्रोही मन परेशान था।

तोनिया का बाप जंगलात का बड़ा हाकिम था जिसका मतलब पावेल के लिये यह था कि वह भी लेशचिन्स्की वकील के ही वर्ग का आदमी है।

पावेल गरीबी में पला था और शायद इसीलिए जिस किसी को भी वह अमीर आदमी समझता था, उसके प्रति पावेल के मन में दुश्मनी का भाव पैदा हो जाता था और इसीलिए तोनिया के प्रति उसके हृदय में जो भावना थी, उसमें शंका और सन्देह का भाव मिला हुआ था; तोनिया उन्हीं में से एक नहीं थी, वह वैसी सरल और आसानी से समझ में आ जाने वाली लड़की नहीं थी जैसी कि मिसाल के लिए राजगीर की लड़की गालीना थी। तोनिया के संग वह सदा सतर्क रहता कि उसकी तरफ से व्यंग्य और उपेक्षा का हल्का-सा आभास मिलते ही वह तत्काल उसका जवाब दे सके, क्योंकि उसको अपनी जगह यह डर सदा बना रहता था कि उस जैसी सुन्दर और सुसंस्कृत लड़की मुझ जैसे साधारण आग वाले के प्रति व्यंग्य और उपेक्षा नहीं तो और क्या दिखलायेगी।

पूरे एक हफ्ते से उसकी मुलाकात तोनिया से नहीं हुई थी। आज उसने झील किनारे जाने का निश्चय किया। उसने जान-बूझकर तोनिया के मकान के पास से गुजरने वाला रास्ता पकड़ा, इस उम्मीद से कि मुलाकात हो जायेगी। जब वह बाड़ी के पास से धीरे-धीरे टहलता हुआ चला जा रहा था, उसे बागीचे के उस दूर वाले सिरे पर अपना परिचित वह जहाजियों वाला ब्लाउज दिखलाई दिया। उसने सड़क पर पड़ा हुआ चीड़ का एक फल उठा लिया और उस सफेद ब्लाउज का निशाना लेकर फेंका।

तोनिया घूमी और दौड़ती हुई उसके पास आई और बड़ी मीठी घनिष्ठ मुस्कराहट के साथ अपना हाथ बाड़ी के बाहर निकाला।

"तुम आ गये आखिर," उसने कहा और उसकी आवाज में खुशी थी। "इतने तमाम रोज तुम रहे कहां? वह किताब जो मैं भूल आई थी, उसे लेने मैं झील किनारे गई थी। मैंने सोचा, शायद तुम भी मिल जाओ। क्यों, अन्दर नहीं आओगे?"

पावेल ने सिर हिलाया:

"नहीं।"

"क्यों?" और उसकी भवें कुछ आश्चर्य से खिंच गईं।

"मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि तुम्हारे बाप को यह चीज पसन्द न आयेगी। मुझे ताज्जुब न होगा अगर वह मुझ जैसे आवारे को बागीचे में ले आने के कारण तुम्हें बुरा-भला कहें।"

तोनिया ने गुस्से से कहा, "कैसी बच्चो की-सी बातें करते हो, पावेल। फौरन अन्दर आ जाओ। मेरे पिताजी कभी वैसी कोई बात नही कहेंगे। तुम खुद देख लोगे। अब आ जाओ अन्दर।"

वह उसके लिए गेट खोलने को दौडी और पावेल हिचकते हुए उसके पीछे-पीछे आया।

"तुम्हे किताबे अच्छी लगती है ?" तोनिया ने पावेल से पूछा जब दोनो बागीचे मे पडी हुई गोल मेज के गिर्द बैठ गये।

पावेल ने उत्साह से जवाब दिया, "बहुत।"

"कौन सी किताब तुमको सबसे अच्छी लगती है ?"

पावेल ने थोडी देर तक सवाल पर विचार किया, फिर बोला "जीजेपी गैरिबाल्डी।"

तोनिया ने उसका उच्चारण शुद्ध करते हुए कहा, "गिसेपी गैरिबाल्डी। अच्छा तो वह किताब तुम्हे खास तौर पर अच्छी लगती है ?"

"हा, मैं उसके अडसठो खड पढ चुका हू। हर बार जिस दिन तनखाह मिलती है, मैं जाकर पाच खड ले आता हू। गैरिबाल्डी, वह है एक सच्चा मर्द !" पावेल ने आवेश के स्वर मे कहा, "असल वीर ! मैं तो भाई ऐसी चीज को असल माल कहता हू। वाह, कैसी-कैसी लडाइया उसे लडनी पडी और जीत सदा उसके हाथ रही। और फिर यह भी तो देखो, वह सारी दुनिया घूमा था। वह अगर आज जिन्दा होता तो मैं जरूर उसकी सेना मे भरती हो गया होता, जरूर। वह नौजवान मजदूरो को अपने दल मे लेता था और फिर सब मिल कर गरीबो के लिए लडते थे।"

"तुम हमारी लाइब्रेरी देखना चाहोगे ?" तोनिया ने कहा और उसकी बाह अपनी बाह मे ले ली।

"अरे नही, मैं घर के अन्दर नही जाऊगा," पावेल ने आपत्ति की।

"तुम इतने जिद्दी क्यो हो ? डरने की कौन-सी बात है ?"

पावेल ने अपने नगे पावो को देखा, जिन्हे बहुत साफ नही कहा जा सकता था और सिर खुजलाने लगा।

"तुम्हे यकीन है कि तुम्हारी मा या पिताजी मुझे घर मे निकाल नहीं देंगे ?"

यह सुनकर तोनिया बिफर पडी, "अगर तुम ऐसी बाते करना बन्द नही करोगे तो मैं सचमुच तुम से नाराज हो जाऊगी।"

"नाराज मत हो ! लेशचिन्स्की को ही ले लो, लेशचिन्स्की कभी हम जैसो का अपने घर के अन्दर नही घुसने देता। वह बावर्चीखाने मे ही हमसे बाते करता है। एक बार मुझको किसी चीज के लिए उनके यहा जाना पडा

था और नेली ने मुझे कमरे के अन्दर जाने नहीं दिया—जरूर उसे यही डर होगा कि मैं उसकी कालीनें खराब कर दूंगा या इसी किस्म का और कोई बांगड़ूपन," पावेल ने तीखी हंसी के साथ कहा।

"चलो चलो," तोनिया ने आग्रह किया और उसका कंधा पकड़ते हुए उसे हल्का-सा धक्का देती हुई सायवान की ओर ले चली।

खाने के कमरे में से होकर वह उसे एक कमरे में ले गई जिसमें ओक की लकड़ी की बनी, किताब रखने की एक खुली हुई बड़ी-सी आलमारी रखी थी। और जब उसने दरवाजे खोले तो पावेल ने खूबसूरत पांतों में सजी हुई सैकड़ों किताबें देखीं। उसने अपनी जिन्दगी में ऐसा खजाना नहीं देखा था।

"अच्छा आओ, तुम्हारे लिए एक अच्छी-सी किताब ढूंढ़ी जाय। मगर देखो, तुम्हें वादा करना पड़ेगा कि और किताबों के लिए तुम बराबर आया करोगे। आओगे न?"

पावेल ने खुशी से सिर हिलाया।

उसने कहा, "मुझे किताबों से प्रेम है।"

उस दिन दोनों ने कुछ घंटे साथ-साथ बहुत अच्छे गुजारे। तोनिया ने उसका परिचय अपनी मां से कराया। और वह कोई ऐसी कठिन परीक्षा पावेल को न जान पड़ी। सच तो यह है कि तोनिया की मां उसे अच्छी लगी।

तोनिया पावेल को फिर अपने कमरे में ले गई और उसे अपनी किताबें दिखाने लगी।

सिंगार-मेज पर एक छोटा-सा आइना रखा हुआ था। तोनिया पावेल को उसके पास ले गई और जरा हंसते हुए बोली:

"तुम अपने बालों को ऐसे जंगल की तरह बढ़ने क्यों देते हो? तुम कभी उन्हें कटाते या उनमें कंघी नहीं करते क्या?"

पावेल ने सकुचाते हुए कहा, "बाल जब बहुत बढ़ जाते हैं तो मैं उनमें उस्तरा फिरवा देता हूं। और करूं भी क्या?"

तोनिया हंसी और सिंगार-मेज पर से एक कंघी उठाते हुए उसने कई बार तेजी से उसे पावेल के जंगली बालों में दौड़ाया।

कंघी कर चुकने पर उसने बहुत गौर से अपनी इस कारीगरी को देखा और बोली, "हां, अब कुछ ठीक हुआ। बालों को ठीक से कटाना चाहिए, यह क्या भूतों की तरह शक्ल बनाये घूमते रहते हो!"

उसने गौर से पावेल की रंग-उड़ी भूरी कमीज और भद्दी पतलून को देखा, मगर और कुछ कहा नहीं।

पावेल ने उसकी निगाह को भांपा और उसे अपने कपड़ों पर शर्म आई।

चलते समय तोनिया ने उसे फिर आने की दावत दी। उसने पावेल से वादा करा लिया कि वह दो दिन बाद आयेगा और उसके साथ मछली पकड़ने जायेगा।

पावेल को खिड़की से कूद कर घर के बाहर जाना ज्यादा आसान मालूम हुआ, वह सब कमरो मे होकर नही जाना चाहता था और न तोनिया की मा से ही फिर मिलना चाहता था।

आर्तेम के चले जाने से कोर्चागिन परिवार की हालत काफी खराब हो गई। पावेल की मजदूरी से घर का खर्च पूरा नही पडता था।

मारिया याकोवलेवना ने पावेल से प्रस्ताव किया कि क्यो न मैं भी कोई काम कर लू, और लेशचिन्स्की को एक रसोईदारिन की जरूरत भी है। मगर पावेल ने इस प्रस्ताव का विरोध किया

"नही मा, मैं ही और कुछ काम कर लूगा। उन्हे लकडी चीरने के कारखाने मे शहतीरो को ठीक से जमा कर रखने के लिए आदमी की जरूरत है। आधा दिन मैं वहा काम कर लिया करूगा और फिर उससे हमारा काम चल जायगा। तुम किसी भी हालत मे काम पर मत जाना, नही तो आर्तेम मुझसे गुस्सा होगा कि मैंने क्यो तुम्हे ऐसा करने दिया और इसकी जरूरत ही क्यो पडी?"

पावेल की मा ने आग्रह किया, मगर पावेल नही माना।

दूसरे दिन से वह लकडी चीरने के कारखाने मे काम करने लगा, और यह काम था तत्काल कटे हुए लकडी के पटरो को सूखने के लिए फैलाना। वहा उसे बहुत से अपने जाने-पहचाने लडके मिले—जैसे उसका एक पुराना सहपाठी मिशा लेवचुकोव और वालिया कुलेशोव। मिशा और वह मिल कर काम करने लगे और पीस-रेट के हिसाब से उनको खासे अच्छे पैसे मिल जाते थे। पावेल दिन मे लकडी चीरने के कारखाने मे काम करता था और शाम को बिजली घर मे।

दसवें रोज शाम को पावेल ने अपनी मजदूरी के पैसे अपनी मा को दिये।

मा के हाथ मे पैसे देते हुए उसने थोडी परेशानी मे जरा इधर-उधर किया, थोडा लजाया और आखिरकार बोला

"बात यह है मा कि मुझे साटन की एक कमीज खरीद दो, नीली-नीली, जैसी पिछले साल थी मेरे पास, याद है न? इसमे करीब आधा पैसा लग जायगा, मगर तुम कोई चिन्ता न करो, मैं कुछ और कमा लूगा। मेरी यह

कमीज काफी भद्दी है," उसने ऐसे कहा जैसे अपनी इस इच्छा के लिए माफी माग रहा हो।

मा ने कहा, "जरूर-जरूर, यह भी कोई कहने की बात है बेटा, मैं जरूर खरीद दूगी। मैं आज ही जाकर कपडा ले आऊगी और कल उसे सी दूगी। तुम्हें सचमुच नई कमीज की जरूरत है।" यह कह कर मा ने दुलार भरी आखो से अपने बेटे को देखा।

पावेल हेयर-कटिंग सेलून के दरवाजे पर रुका और जेब मे पडे हुए रूबल को उगली मे टटोलते हुए दरवाजे मे दाखिल हुआ।

हज्जाम बहुत साफ-सुथरा नौजवान आदमी था। उसने पावेल को दूकान मे दाखिल होते देखा और सिर के इशारे से उससे खाली कुर्सी पर बैठने के लिए कहा।

"अब आप आइए साहब।"

उस गहरी नर्म गद्देदार कुर्सी मे बैठते हुए पावेल ने अपने सामने के आइने मे एक घबराया हुआ-सा चेहरा देखा।

हज्जाम ने पूछा, "छोटे कर दू ?"

"हा, यानी नही—बात यह है कि मुझे बाल कटाने है। क्या कहते हो तुम लोग इस चीज को ?" पावेल ने गले का थूक निगलते हुए जैसे-तैसे अपनी बात कही और अपने आशय को स्पष्ट करने के लिए हाथ से इशारा किया।

"मैं समझ गया," हज्जाम ने मुस्करा कर कहा।

पन्द्रह मिनट बाद पावेल हज्जाम के यहा से निकला, पसीने मे नहाया हुआ और इस कठिन परीक्षा से थक कर चूर, मगर बाल साफ-सुथरे कटे हुए और कघी किये हुए। हज्जाम ने उन विद्रोही बालो को वश मे करने के लिए बहुत सघर्ष किया और अन्त मे पानी और कघी की विजय हुई और पहले के खडे हुए बाल अब कायदे से अपनी जगह पर जम गए थे।

सडक पर आकर पावेल ने चैन की सास ली और अपनी टोपी आख तक खीची।

उसने अपने मन मे कहा, "मा मुझे देखेगी तो क्या कहेगी!"

पावेल ने तोनिया के साथ मछली पकडने जाने का वादा किया था और जब उसने यह वादा पूरा नही किया तो तोनिया बहुत नाराज हुई और उसने अपने मन मे कहा, "इस आग वाले छोकरे को किसी का कोई ख्याल नही," मगर जब कुछ और रोज निकल गये और पावेल नही आया तो उसका मन पावेल के साथ के लिए तरसने लगा।

एक रोज जब वह टहलने के लिए निकलने ही वाली थी, उसकी मा ने आकर कमरे मे झाका और कहा

"तुमसे मिलने के लिए कोई आया है, तोनिया। अन्दर भेज दू ?"

पावेल दरवाजे मे दिखाई दिया, मगर वह इतना बदल गया था कि तोनिया एकाएक उसे पहचान नही सकी।

वह एकदम नई नीली साटन की कमीज और काला पतलून पहने हुए था। जूतो मे डटकर पालिश हुई थी इतनी कि वे चमाचम चमकने लगे थे और इसके अलावा तोनिया ने यह भी देखा कि उसके बाल भी छटे हुए है! धूल और धुए से अटा हुआ वह नौजवान आग वाला अब बिलकुल बदल गया था।

तोनिया अपना आश्चर्य व्यक्त करने ही वाली थी, मगर रुक गई क्योंकि वह उस लडके को, जो यो भी काफी परेशान था और भी परेशान करना नही चाहती थी। इसलिए उसने ऐसा बहाना किया कि जैसे उसके चेहरे-मोहरे की इस जबर्दस्त तब्दीली को उसने देखा ही न हो, और उसे डाटने लगी।

"तुम मछली पकडने के लिए मेरे साथ आने वाले थे, क्यो नही आये ? तुम्हे शर्म आनी चाहिए अपने-आप पर! इसी तरह वादा पूरा किया जाता है ?"

"मैं आज-कल कटी नाने के कारखाने मे काम करने लगा हू और सच कहता हू आने का वक्त ही नही मिला।"

उसने उसको यह नही बतलाया कि अपने लिए यह कमीज और पतलून खरीदने के वास्ते वह पिछले कई रोज से बैल की तरह काम करता रहा था।

बहरहाल तोनिया ने खुद ही सच्चाई को भाप लिया और पावेल के प्रति उसकी नाराजगी गायब हो गई।

तोनिया ने प्रस्ताव किया "चलो हम लोग तालाब पर घूमने चले," और फिर दोनो बागीचे से निकल कर सडक पर पहुच गये।

थोडी ही देर मे पावेल तोनिया को बतला रहा था कि उसने कैसे लेफ्टि-नेण्ट के यहा से रिवाल्वर चुराया। उसने अपनी सबसे बडी भेद की बात तोनिया को वैसे ही बता दी जैसे कोई अपने बहुत गहरे दोस्त को बतलाये और उसने यह भी वादा किया कि जल्दी ही किसी रोज वे दोनो घने जगल मे जायेंगे और रिवाल्वर चलायेंगे।

"मगर देखना, तुम मेरी यह बात किसी से कहना मत, पावेल ने एकाएक कहा।

तोनिया ने वचन दिया, "नही मैं कभी तुम्हारी बात किसी से नही कहूगी।"

निर्मम और भयानक वर्ग-संघर्ष ने उक्रेन को जकड़ रखा था। हथियार उठाकर मैदान में उतरने वालों की संख्या रोज-ब-रोज बढती जा रही थी और हर टक्कर में नये लड़ने वाले पैदा हो रहे थे।

भद्र नागरिकों के लिए शान्ति और सुव्यवस्था के दिन हवा हो चुके थे।

तोपों की तूफानी गरज में छोटे-छोटे कच्चे मकान काँप उठते थे और बेचारा भद्र नागरिक अपने तहखाने की दीवार का सहारा लेकर दुबक कर खड़ा हो जाता था या मकान के पिछवाड़े वाली खाई में आश्रय खोजता था।

पेतल्युरा के सब तरह के, सभी रंगों के, गिरोहों की उस कस्बे भर में बाढ सी आई हुई थी। सभी तरह के छोटे-बड़े सरदार इन गिरोहों के नेता थे, जमाने भर के गोलुब और आर्कन्जिल और एन्जिल और गार्डियस और बीसियों दूसरे लुटेरे!

जारशाही फौज के भूतपूर्व अफसर, उक्रेन के दक्षिण-पंथी और वाम-पंथी सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी—कहने का मतलब यह कि कोई भी दुस्साहसी आदमी जो थोड़े से खूनियों को जमा कर सकता था, अपने को ऐटमन घोषित कर देता था और फिर उन्हीं में से कोई-कोई पेतल्युरा का पीला-और-नीला झंडा फह-राने लगते थे और अपनी ताकत और मौके के हिसाब से जितने इलाके में मुमकिन हो, अपनी सत्ता कायम कर लेते थे।

इन्हीं छिट-पुट गिरोहों में से आदमियों को लेकर और उनमें कुलकों और ऐटमन कोनोवालेत्स की फौज में से गैलीशियन रेजिमेण्ट को शामिल करके प्रधान ऐटमन पेतल्युरा ने अपनी रेजिमेण्टें और डिवीजनें बनाई थीं। और जब बोल्शेविक छापेमार टुकड़ियों ने इस सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी और कुलक भम्भड़ पर हमला किया तो सैकड़ों-हजारों टापों और तोपों व मशीनगन खींचने वाली गाड़ियों के पहियों से धरती काँप गई।

उस तूफानी सन् १९१९ के अप्रैल महीने में भद्र नागरिक, डरा और बौख-लाया हुआ, सवेरे अपनी खिड़की खोलता था और नींद से भारी आँखें लिए चिन्ताकुल प्रश्न से अपने बगल वाले पड़ोसी का स्वागत करता था, "क्यों भाई आवतोनम पेत्रोविच, क्या तुमको मालूम है कि आज किसका राज है?"

और आवतोनम पेत्रोविच अपने पतलून की टाँगें ऊपर उठाते हुए डरी निगाहों से इधर-उधर देखने लगता था।

"पता नहीं, अफानस किरीलोविच। रात को कोई शहर में दाखिल तो हुआ था। वह है कौन, यह अब जल्दी ही मालूम हो जायगा। यहूदियों की लूटपाट शुरू होती है तो हम समझ जायेंगे कि पेतल्युरा के आदमी हैं, औ

अगर वे 'कामरेड लोग' हुए तो भी झट पता लग जायगा—उनके बातचीत के तरीके से। मैं आखे खोले हुए हू ताकि ठीक समय पर मुझे पता हो जाय कि अब मुझे किसकी तसवीर टागनी चाहिए। न बाबा, बगल वाले जेरासिम लियोनतियेविच की तरह आफत मे जान फसाना मुझे मजूर नही। तुम्हे मालूम है न, उसने जरा सी असावधानी की और आफत मे फस गया। उसने लेनिन की तसवीर लाकर टागी थी, तभी तीन आदमी दौडे हुए घर के अन्दर आये। जैसा कि जल्दी ही पता चल गया, ये पेतल्युरा के आदमी थे। उन्होने तसवीर पर एक निगाह डाली और जेरासिम पर टूट पडे—कम से कम बीस कोडे लगाये होगे उन्होने। चिल्लाकर बोले, 'अबे कम्युनिस्ट सुअर के बच्चे, हम जिन्दा ही तेरी चमडी उधेड लेंगे।' और फिर बेचारा बहुत चीखा-चिल्लाया, रोया-धोया, सफाई दी, मगर कुछ काम नही आया।

हथियारबन्द लोगो के दलो को सडक पर आता देख कर भद्र नागरिक अपनी खिडकी बन्द कर लेता है और छिप जाता है। बच कर रहना अच्छा होगा।

जहा तक मजदूरो का ताल्लुक था, वे पेतल्युरा के लुटेरो के पीले और नीले झडे को दबी नफरत से देखते थे। उक्रेन के पूजीपतियो की इस साम्राज्यवादी लहर के आगे वे अपने-आपको कमजोर महसूस करते थे, और उनका हौसला तभी बढा जब उधर से गुजरती हुई बोल्शेविक टुकडिया पीले और नीले झडे वालो के खिलाफ भीषण लडाई लडते हुए उनकी पातो को चीर कर शहर मे दाखिल हुई। एक-दो रोज तक मजदूरो का प्यारा लाल झडा टाउन-हॉल पर फहराता रहा। मगर फिर टुकडी आगे बढ गयी और अधेरा लौट आया।

इस वक्त शहर, ट्रान्सनीपर डिवीजन के "आशा और गौरव" कर्नल गोलुब के हाथ मे था।

अभी एक रोज पहले, दो हजार हत्यारो के उसके गिरोह ने जीत के बाद शहर मे कदम रखा था। हुजूर कर्नल साहब सेना के आगे-आगे अपने शानदार काले घोडे पर चल रहे थे। अप्रैल महीने की धूप के बावजूद उनकी साज-सज्जा मे कोई कमी नही थी—काकेशस के लोगो का 'बुर्का', जापोरोजिए के कोसैको वाली भेड की खाल की टोपी, जिसका ऊपरी हिस्सा रसभरी के रग जैसा लाल था, 'चेरकेस्का', वह सभी कुछ पहने थे। और इस टीम-टाम के साथ के सब हथियार भी बाकायदा उनके शरीर पर सुसज्जित थे—कटार और तलवार, जिनकी मूठें चादी की थी। उनके दातो के बीच एक मुडा हुआ तम्बाकू पीने का पाइप दबा था।

हुजूर कर्नल गोलुब खूबसूरत आदमी थे, काली-काली भवे और पीला-सा रग, जिसमे अविराम भोग-विलास के कारण कुछ हरापन भी मिला हुआ था।

क्रान्ति के पहले कर्नल गोलुब एक शहर के कारखाने से सम्बद्ध चुकन्दर के खेतों में कृषि विशेषज्ञ थे। मगर ऐटमन के पद के मुकाबिले में वह एक बिल्कुल ही नीरस जिन्दगी थी। इसीलिए ऐसा हुआ कि जब सारे देश को अपनी लपेट में लेते हुए स्याह लहरें बहीं, तो उन लहरों के शिखर पर सवार होकर कृषि-विशेषज्ञ गोलुब 'हुजूर कर्नल गोलुब" बन गये।

शहर के एकमात्र थिएटर में इन आगन्तुकों के सम्मान में मनोरंजन की तैयारियां खूब ठाठ-बाट से की गई थीं। पेतल्युरा के समर्थक बुद्धिजीवियों की सारी "विभूतियां" अपनी पूरी संख्या में वहां उपस्थित थीं उक्रेनी अध्यापक, पादरी की दोनों लड़कियां, सुन्दरी आनिया और उसकी छोटी बहन दीना, कुछ उनसे नीचे स्तर की स्त्रियां, काउण्ट पोतोकी के घराने के कुछ पुराने लोग, मुट्ठी भर बड़े व्यापारी और उक्रेनी सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी पार्टी के कुछ गुंडे जो अपने आप को "आजाद कोसैक" कहते थे।

थिएटर का हाल खचाखच भरा था। अध्यापकों के इर्द-गिर्द अफसर घूम रहे थे जो देखने-सुनने में ऐसे नजर आते थे जैसे जापोरोजिए के कैसेकों की पुरानी तसवीरों की हूबहू नकल हों। उनके अलावा पादरी की लड़कियां और बड़े व्यापारियों की स्त्रियां भी थीं जो चटख रंगों के काढ़े हुए फूलों और रंग-बिरंगे मनकों और फीतों से अलंकृत उक्रेनी जातीय परिधानों में सजी हुई घूम रही थीं।

रेजिमेण्ट का बैण्ड बज रहा था। स्टेज पर नजर इस्तदोलिया नामक नाटक की तैयारियां जोर-शोर से चल रही थीं। उस शाम यही नाटक खेला जाने वाला था।

मगर हॉल में बिजली नहीं थी, और इस बात की रिपोर्ट कर्नल साहब को उनके सहायक सब-लैफ्टिनेण्ट पोलियान्त्सेव ने हेडक्वार्टर पर दी। पोलियान्त्सेव ने अब अपने नाम को उक्रेनी रूप देकर अपने-आपको खोरूजी पालियानित्स्या कहना शुरू कर दिया था। कर्नल साहब ने, जो शाम के थिएटर को अपनी उपस्थिति से सुशोभित करने की सोच रहे थे, पालियानित्स्या की पूरी बात सुनी और बहुत इतमीनान के साथ, पर आदेश के स्वर में, कहा

"रोशनी जरूर होनी चाहिए। एक एलेक्ट्रीशियन तलाश करो और जैसे भी हो बिजली घर को चालू करो।"

"बहुत अच्छा, हुजूर कर्नल साहब।"

खोरूजी पालियानित्स्या को आसानी से ही एलेक्ट्रीशियन मिल गये। दो घंटे के भीतर ही भीतर पावेल, एक एलेक्ट्रीशियन और एक मैकेनिक को हथियारबन्द सन्तरियों के पहरे में बिजली घर ले जाया गया।

"अगर सात बजे तक लाइट ठीक नही हुई तो तुम तीनो को मैं फासी पर लटका दूगा," पालियानिन्स्या ने ऊपर लोहे की एक बरन की ओर इशारा करते हुए उनको जतला दिया।

स्थिति को जिस लट्ठमार तरीके से खोलकर रखा गया था, उसका असर यह हुआ कि ठीक समय पर रोशनी आ गयी।

शाम का उत्सव पूरे रग पर था जब हुजूर कर्नल साहब अपने साथ एक औरत को लिए हुए पधारे। जिसके घर मे कर्नल साहब ठहरे हुए थे, उसी शराबखाने के मालिक की यह लडकी थी। इसका अच्छा गदराया हुआ जिस्म था और बाल पीले थे। लडकी का बाप पैसेवाला था, इसलिए उसकी पढाई सूबे के सबसे बडे शहर के स्कूल में हुई थी।

जब उन दोनो ने, सम्मानित अतिथि के रूप में, पहली कतार मे आसन ग्रहण कर लिया तो कर्नल साहब ने सकेत किया और पर्दा इतनी जल्दी मे उठा कि दर्शकों ने मच से भागते मच-निर्देशक की पीठ की झलक देखी।

नाटक के दौरान मे अफसरो और उनके साथ की स्त्रियो ने अपना वक्त जलपान-गृह मे गुजारा और घर पर खीची हुई कच्ची शराब से, जिसका इन्तजाम सर्वशक्तिमान पालियानित्स्या ने किया था, और वसूली से प्राप्त सुस्वादु खाद्यो से अपना पेट भरा। खेल का अन्त होते-होते उनके ऊपर नशा अच्छी तरह चढ गया था।

खेल खतम होने पर पर्दा जब आखिरी बार गिरा, तो पालियानित्स्या लपक कर मच पर चढ गया। बडे नाटकीय ढग से बाह घुमाते हुए उसने एलान किया, "देवियो और सज्जनो, अब फौरन नाच शुरू होगा।"

सबने बहुत हर्ष मे इस प्रस्ताव का स्वागत किया। दर्शक लोग बाहर निकल गये ताकि सम्मानित अतिथियो की सुरक्षा के लिए नियुक्त पेतल्यूरा सैनिक कुर्सियो को बाहर करके नाच के फर्श को खाली कर दे।

आध घटे बाद, थियेटर का हॉल मस्तियो का अखाडा बना हुआ था।

पेतल्युरा के अफसर, सयम और मर्यादा को ताक पर रख कर, स्थानीय सुन्दरियो के साथ बडे जोशोखरोश मे होपाक नृत्य कर रहे थे। इस श्रम की गर्मी मे सुन्दरियो के चेहरे लाल हो रहे थे और भारी फौजी बूटो की रौंद मे थियटर की कच्ची दीवारें हिल रही थी।

ठीक इसी दरम्यान हथियारबन्द घुडसवारो का एक दस्ता आटे की चक्की की तरफ से शहर की ओर बढ रहा था। शहर की सीमा पर तैनात पेतल्युरा सैनिको की चौकी वाले घबरा कर अपनी मशीनगनो के पास पहुचे और रात के सन्नाटे मे मशीनगनो मे गोले भरने की खट-खट सुनाई दी। अधेरे मे तीखी आवाज सुनाई पडी

"हाल्ट ! कौन जाता है ? कौन है ?"

अंधेरे मे से दो काली आकृतियां बाहर निकली। उनमे से एक आगे बढी और भारी आवाज मे गरज कर बोली

"हेटमन पावल्युक, अपनी टुकडी के साथ। तुम कौन हो ? गोलुब के आदमी ?"

"जी हां," एक अफसर ने आगे बढते हुए कहा।

पावल्युक ने पूछा, "मैं अपने सिपाहियो को कहा ठहराऊ ?"

"मैं अभी हेडक्वार्टर को फोन करता हू" अफसर ने जवाब दिया और सडक के किनारे की एक छोटी सी झोपडी मे अन्तर्ध्यान हो गया।

एक मिनट बाद वह फिर बाहर निकला और हुक्म देते हुए बोला

"जवानो, मशीनगन को रास्ते से हटा लो ! हुजूर ऐटमन को गुजरने दो !"

पावल्युक ने अपना घोडा जगमगाते हुए थिएटर के सामने, जहा बहुत से लोग खुली हवा म घूम रहे थे, रोका।

"देखता हू, बडी मस्तियां चल रही हैं वहा," उसने अपने बगल के एक घुडसवार की ओर मुडते हुए कहा, "आओ गुक्माक, हम भी उतरें और इस नाच-गाने मे शरीक हो जायें। हम लोग अपने लिए दो लडकियां चुन लेंगे—मैं देखता हू कि यहा लडकियां भरी हुई हैं। अरे एस्तापेन्को," उसने चिल्लाते हुए कहा, "तुम हमारे जवानो को शहरवालो के यहा ठहरा दो। हम लोग यहा रुकेंगे। अर्दली, पीछे-पीछे आओ।" और वह घोडे से उतर पडा।

थिएटर के दरवाजे पर पावल्युक को पेतल्युरा के दो सैनिको ने रोका।

"टिकट ?"

पावल्युक ने उन्हे नफरत से देखा और एक को कंधे से धक्का देता हुआ हॉल मे दाखिल हो गया। उसके साथ के एक दर्जन आदमी भी हाल मे घुस गये। इन सबके घोडे बाहर बाडी से बधे खडे थे।

सब की नजरें नवागन्तुको की ओर उठी, विशेष रूप मे भीमकाय पावल्युक की ओर। वह एक अच्छे कपडे का अफसरो का कोट, गार्ड्स वाली नीली बिर्जिस और खूब बालोंवाली फर की टोपी पहने था। कधे मे लटकते हुए फीते से एक माउजर पिस्तौल लटक रही थी और जेब से एक दस्ती बम झाक रहा था।

'यह कौन है ?"—यह फुसफुसाहट सारी भीड मे फैल गई। गोलुब का नायब होश-हवाश खोकर मस्ती मे नाच रहा था।

पादरी की बडी लडकी उसकी साथिन थी। यह लडकी इतनी मस्त होकर चक्कर खा रही थी कि उसका साया खूब ऊंचे उड रहा था, इतने ऊंचे कि उल्लसित योद्धागण उसके रेशमी अडरवियर को आखें भर-भर देख रहे थे।

भीड को कुहनियो से अलग करते हुए पावल्युक सीधे नाच के फर्श पर आ पहुचा।

उसने पादरी की लडकी की टागो को आखें फाड कर देखा, अपने खुश्क ओठो पर जीभ फेरी, फिर नाच का फर्श पार करके ऑरकेस्ट्रा के प्लेटफाम पर पहुचा, रुका और अपनी चाबुक फटकारी।

"सुनो, होपाक की धुन बजाओ।"

कडक्टर ने आदेश की ओर ध्यान नही दिया।

पावल्युक का हाथ तेजी से घूमा और चाबुक सटाक से कडक्टर की पीठ पर पडी। कडक्टर उछल पडा, मानो बिच्छू ने काट लिया हो। सगीत भग हो गया। हॉल निस्तब्धता मे डूब गया।

"देखते हो इसकी हिम्मत!" शराबखाने के मालिक की लडकी गुस्से से लाल हो रही थी। उसने अपने बगल मे बैठे हुए गोलुब की कुहनी को पकडते हुए जोर से कहा, "तुम उससे कुछ कहते क्यो नही? तुम्हारी आख के सामने जो जी चाहे कर रहा है और तुम कुछ बोलते नही?"

गोलुब अपना भारी शरीर लिए खडा हुआ, ठोकर मार कर एक कुर्सी रास्ते से अलग की, तीन कदम आगे बढा और पावल्युक के सामने जाकर खडा हो गया। उसने फौरन इस नये आगन्तुक को पहचान लिया। उसे अपने इस पुराने प्रतिद्वन्दी से, जो स्थानीय तौर पर उसके हाथ से ताकत छीन लेना चाहता था, पुराने झगडे सुलझाने थे। अभी केवल एक हफ्ता पहले पावल्युक ने हुजूर कर्नल साहब के साथ बडी कमीनी हरकत की थी। उस वक्त जब कि एक लाल टुकडी के साथ, जिसने अनेक बार गोलुब की टुकडी की अच्छी तरह गत बनाई थी, लडाई अपने शिखर पर थी, पावल्युक ने पीछे से बोल्शेविको पर हमला करने के बजाय शहर के अन्दर दाखिल होकर और उन थोडे से सिपाहियो को हरा कर जिन्हे बोल्शेविक छोड गये थे, अपनी हिफाजत के लिए कुछ सिपाहियो को तैनात कर दिया और फिर जी खोल कर उस जगह को लूटा। इसमे क्या शक कि सही माने मे पेतल्युरा का आदमी होने के नाते उसने यहूदी आबादी को ही अपना खास शिकार बनाया। इस बीच बोल्शेविक गोलुब के दाहने पार्श्व को चीर कर घेरे के बाहर निकल गये थे।

और अब वह घमडी, घुडसवारो का कप्तान यहा घुस आया था। और इसकी हिम्मत तो देखो, हुजूर कर्नल के अपने खास बैण्ड-मास्टर को उनकी आखो के सामने मार रहा था। नही यह तो हद से बाहर की बात हो गई थी। गोलुब समझ गया कि अगर वह इस घमडी छुटभैये ऐटमन को ठीक नही करता तो रेजिमेण्ट मे उसकी धाक खतम हो जायगी।

कई सेकेंड तक दोनो आदमी आमने सामने, एक-दूसरे को घूरते हुए, खामोश खडे रहे।

एक हाथ से अपनी तलवार की मूठ पकडते हुए और दूसरे से जेब मे अपने रिवाल्वर को टटोलते हुए गोलुब ने डपट कर कहा :

"तेरी यह हिम्मत कैसे कि हमारे आदमियो पर हाथ छोडे, हरामजादे!"

पावल्युक का हाथ धीरे-धीरे माउजर के हत्थे की तरफ बढ रहा था।

"जरा जबान सभाल कर बातें कीजिए गोलुब साहब, वर्ना मुह के बल गिरिएगा। मुझसे उलझना नही। मैं गुस्से का तेज हू।"

गोलुब भला यह कैसे बर्दाश्त कर सकता था।

उसने चिल्लाकर कहा, "इन सबो को बाहर निकाल दो और एक-एक को पच्चीस-पच्चीस कोडे लगाओ!"

गोलुब के अफसर शिकारी कुत्तो की तरह पावल्युक और उसके आदमियो पर झपट पडे।

एक गोली छूटी और ऐसी आवाज आई कि जैसे किसी ने बिजली का बल्ब फर्श पर पटक दिया हो और दोनो दलो के लोग शिकारी कुत्तो की तरह आपस मे गुथ गये। हॉल मे तबाही मच गई। उस मार-धाड मे सब एक-दूसरे पर तलवारें चला रहे थे, एक-दूसरे के बाल नोच रहे थे और गले दबोच रहे थे। औरतें डर के मारे चीखती हुई लडने वालो से छिटक कर दूर चली गई थी।

कुछ मिनटो के अन्दर पावल्युक और उसके आदमियो के हथियार छीन लिए गए और उन्हे खूब मारा गया, फिर हॉल से घसीट कर वे लोग बाहर ले जाये गए और सडक पर ले जाकर खडे कर दिये गए।

इस लडाई मे खुद पावल्युक अपनी फर की टोपी से हाथ धो बैठा। उसका चेहरा घायल हो गया था और हथियार छीन लिये गए थे। गुस्से के मारे उसका बुरा हाल था। वह और उसके आदमी उछल कर अपने घोडो पर बैठे और तेजी से निकल गये।

वह शाम तो बर्बाद हो गई। जो कुछ हुआ था, उसके बाद किसी का मन खुशिया मनाने का नही हो रहा था। स्त्रियो ने नाचने से इनकार कर दिया, और हठ करने लगी कि उन्हे घर पहुचा दिया जाय। मगर गोलुब यह सब सुनने को तैयार न था।

उसने हुक्म दिया, "सन्तरी खडे कर दो! कोई हॉल के बाहर नही जायगा!"

पालियानित्स्या ने हुक्म पूरा करने मे बहुत तेजी दिखलाई।

"देवियो और सज्जनो, नाच सबेरे तक चलेगा।" गोलुब ने तमाम

आपत्तियो-प्रतिवादो को दूर ठेलते हुए हठपूर्वक कहा, "पहला वॉल्ज मैं खुद नाचूगा।"

ऑरकेस्ट्रा फिर बजने लगा। मगर इसके बावजूद, उस रात फिर खुशिया न मनाई जा सकी।

कर्नल ने पादरी की लडकी के सग नाच के फर्श का अभी एक चक्कर भी पूरा न किया था कि सन्तरी दौडते हुए हॉल के अन्दर आये और चिल्ला कर बोले

"पावल्युक थिएटर को घेर रहा है।"

उसी वक्त सडक के सामने वाली एक खिडकी टूटी और उसके टूटे फ्रेम के अन्दर से एक मशीनगन की नली अन्दर घुसी। वह पागलो की तरह कभी इधर और कभी उधर घूम रही थी, मानो उन भागते हुए लोगो मे से किन्ही खास को चुन रही हो। लोग मशीनगन से घबराकर ऐसे तितर-बितर होकर भाग रहे थे, गोया वह शैतान हो।

पालियानित्स्या ने छत मे लगे एक हजार कैण्डिल पावर के लैम्प पर गोली चलाई। वह बम की तरह फूटा। उडे हुए शीशे के टुकडे हॉल के अन्दर सभी लोगो पर बरस पडे।

हॉल अधेरे मे डूब गया। कोई बाहर से चिल्लाया

"सब लोग बाहर निकलो!" और इसके बाद गोलियो की बौछार।

औरतो का वह पागलो की तरह चिल्लाना, वे तमाम हुक्म जो गोलुब हॉल के अन्दर इधर-उधर भागता हुआ अपने घबराये हुए अफसरो को बटोरने की कोशिश मे जारी कर रहा था, सहन मे गोली चलने और चीखने-चिल्लाने का शोर—इन सबसे एक अजब जहन्नुमी मजर पैदा हो गया था जिसे बयान करना मुश्किल है। इस हगामे मे किसी ने पालियानित्स्या को पीछे के दरवाजे से निकल कर एक वीरान गली मे जाते नही देखा, जहा पहुच कर वह जी-जान से गोलुब के हेडक्वार्टर की तरफ दौडा।

आध घटे बाद शहर मे बाकायदा लडाई का मोर्चा जमा हुआ था। अनवरत राइफलें चलने की आवाजें और उनके बीच-बीच मशीनगनो का भारी शोर रात की निस्तब्धता को चीर रहा था। शहर वाले बिल्कुल हैरान थे कि यह क्या हो रहा है। अपने गर्म-गर्म बिस्तरो से उठ कर वे अपनी खिडकियो के शीशो मे मुह सटाये खडे थे।

आखिरकार गोलियो का चलना कम हुआ। कही दूर, सिर्फ एक मशीनगन बीच-बीच में गोले छोडती रही—उसी तरह जैसे रात की तारीकी मे कोई कुत्ता भौंक रहा हो।

उधर क्षितिज पर पौ फट रही थी और इधर लडाई खतम हुई

शहर मे अफवाह फैल गई कि यहूदियो का सफाया करने की तैयारी हो रही है। आखिरकार यह अफवाह यहूदियो की उन छोटी-छोटी, नीची छतवाली झोपडियो तक भी पहुची जिनकी खिडकिया टेढी-मेढी थी और जो किसी तरह अटकी हुई थी। इन बुरी तरह गुजान बस्तियो मे, कच्ची खोलाबाडियो मे, गरीब यहूदी रहते थे।

जिस प्रेस मे एक साल से ऊपर से सर्गेई वूजाक काम कर रहा था, उसके कम्पोजीटर और दूसरे मजदूर यहूदी थे। उनके और सर्गेई के दरम्यान दोस्ती के मजबूत रिश्ते पैदा हो गये थे। एक सुसम्बद्ध परिवार की तरह वे अपने मालिक, खुशहाल और अपने मे मगन मोटे-ताजे मिस्टर ब्लुमस्टाइन, का मुकाबिला कर रहे थे। मालिक और प्रेस-मजदूरो मे लगातार सघर्ष चल रहा था। ब्लुमस्टाइन सदा इसी कोशिश मे रहता था कि ज्यादा से ज्यादा खुद हडप ले और मजदूरो को कम से कम पैसा दे। प्रेस के मजदूरो ने कई बार हडताल की थी और प्रेस दो-तीन हफ्ते बन्द रहा था। कुल चौदह मजदूर थे। उनमे सबसे छोटा सर्गेई था, जो दिन मे बारह घटे एक हैंड-प्रेस का पहिया घुमाता रहता था।

आज सर्गेई ने मजदूरो मे कुछ ऐसी बेचैनी देखी जिससे उसके मन मे शका हुई। पिछले कई गडबडी के महीनो से प्रेस को "चीफ ऐटमन" की तरफ से जारी किये हुए ऐलानो को छापने के अलावा और कुछ काम नही था।

मेडेल नाम का एक कम्पोजीटर, जो दिक का मरीज था, सर्गेई को बुला कर एक कोने मे ले गया।

अपनी उदास आखो से इस लडके को देखते हुए उसने कहा, "तुमको मालूम है, हमारे कत्लेआम की तैयारी हो रही है ?"

सर्गेई ने आश्चर्य से उसे देखा।

"मुझे तो कुछ भी नही मालूम।"

मेण्डेल ने अपना पीला मुरझाया हुआ हाथ सर्गेई के कधे पर रखा और बडे-बूढो की तरह, राज की बात बतलाने के स्वर मे कहा

"हा, कत्लेआम होने वाला है—यह बात सच है। यहूदियो को पीटा जायगा। मैं जानना यह चाहता हू कि इस मुसीबत मे तुम अपने साथियो का साथ दोगे या नही ?"

"जरूर दूगा, जहा तक मेरे बस मे होगा। मगर मैं कर क्या सकता हू, मेण्डेल ?"

सारे कम्पोजीटर इस बात को सुन रहे थे।

"तुम बडे अच्छे लडके हो, सर्योजा। हमे तुम पर भरोसा है। तुम्हारा बाप भी तो आखिर हमारी ही तरह मजदूर है। हम चाहते हैं कि तुम दौड कर

अपने घर जाओ और अपने बाप से पूछो कि क्या वह कुछ बूढे-बुढियो को अपने घर मे छिपा लेगा। उसका जवाब मिलने पर हम लोग तय करेंगे कि किसको कहा रखा जाय। अपने घर मे तुम यह भी पूछना कि क्या उनकी जानकारी मे ऐसा और कोई मिल सकेगा जो यही काम करे। कम से कम रूसी लोग तो इस वक्त इन डाकुओ के हाथ से बचे ही रहेगे। फौरन दौड जाओ सर्योजा, वक्त बहुत कम है।"

"मेण्डेल मुझ पर यकीन रखो। मैं फौरन जाकर पावका और क्लिम्का से मिलता हू—उनके घरवाले जरूर कुछ लोगो को रख लेगे।"

"जरा रुको," मेण्डेल ने सर्गेई को रोकते हुए चिन्ता के स्वर मे पूछा, "यह पावका और क्लिम्का कौन है ? तुम उन्हे अच्छी तरह जानते हो ?"

सर्गेई ने विश्वास के साथ सिर हिलाया और कहा, "जरूर। वे मेरे लगोटिया यार है। पावका कोर्चागिन का भाई मैकेनिक है।"

"अरे कोर्चागिन," मेण्डेल के मन की शका दूर हो गई। बोला, "मैं उसको जानता हू—हम लोग साथ-साथ एक ही घर मे रहते थे। हा, तुम कोर्चागिन के घर वालो से जाकर बातचीत कर सकते हो। जाओ सर्योजा, और जल्द से जल्द जवाब लेकर लौटो।"

सर्गेई बन्दूक से छूटी गोली की तरह सडक पर जा निकला।

पावल्युक और गोलुब की टुकडियो मे जो जमकर लडाई हुई थी, उसके तीसरे रोज कत्लेआम शुरू हुआ।

शेपेतोवका से खदेडे जाने पर पावल्युक ने उसके पास-पडोस तक की जगह छोड दी थी और करीब के एक कस्बे पर दखल कर लिया था। शेपेतोवका की उस रात की लडाई मे उसके बीस आदमी मारे गये थे। गोलुब के भी इतने ही आदमी मारे गये थे।

मुर्दों को गाडियो पर लाद कर जल्दी से कब्रिस्तान ले जाया गया और बिना किसी समारोह के उसी दिन दफन कर दिया गया। समारोह होता भी तो किस बात का, इस समूचे काड मे गर्व करने जैसी तो कोई चीज न थी। दो ऐटमनो ने सडक के कुत्तो की तरह लडना शुरू कर दिया था और किसी भी तरह का कोई समारोह बेहूदा मालूम होता। पाल्यानित्स्या ने जरूर चाहा था कि इसको एक बडी शक्ल दी जाय और पावल्युक को बोल्शेविक लुटेरा घोषित किया जाय, मगर कमेटी ने, जिसके प्रधान पादरी वासिली थे, इस बात का विरोध किया।

इस झगडे से गोलुब की रेजिमेंट के लोग और खासकर उसके अगरक्षक भुनभुना रहे थे क्योकि उन्ही के सबसे ज्यादा आदमी मारे गये थे। इस असतोष को खतम करने के लिए और उनके अदर फिर से जोश भरने के लिए, पालिया-

नित्स्या ने कत्लेआम का प्रस्ताव किया और गोलुब से कहा, "अच्छा रहेगा, इससे सिपाहियो का दिल बहल जायगा।" उसने तर्क पेश किया कि सैनिको मे जो आक्रोश है, उसको देखते हुए यह चीज जरूरी है। और गो, कर्नल साहब शराबखाने वाले की लडकी से अपनी शादी के ठीक पहले शहर की शांति भग नही करना चाहते थे, तो भी आखिरकार उन्होंने अपनी रजामदी दे दी।

हुजूर कर्नल को इस काम मे हिचक इसलिए भी थी कि कुछ ही दिन पहले वे सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी पार्टी मे दाखिल हुए थे। ऐसा करने से मुमकिन है उनके दुश्मन फिर से उनको बदनाम करते और उन्हें कत्लेआम कराने वाला कहते। इसमे तो शक ही नही कि वे "चीफ ऐटमन" से खूब नमक-मिर्च मिलाकर उसकी बुराई करते। मगर यह भी सही है कि गोलुब अब तक "चीफ" पर कुछ खास निर्भर नही था क्योकि अपना खर्च वह खुद उठाता था। इसके अलावा, "चीफ" को भी यह बात अच्छी तरह पता थी कि उसके नीचे कैसे-कैसे लुच्चे-लफगे काम करते हैं और उसने खुद कई बार तथाकथित वसूली के पैसो मे से डाइरेक्टरी के खर्च के लिए पैसे मागे थे। जहा तक इस बात का सवाल था कि वह कत्लेआम कराने वाला मशहूर हो जायगा, इसमे भी कोई नई बात न थी, इस सम्बध मे गोलुब की पहले से बहुत ख्याति थी और बडे-बडे कारनामे थे। इस काम से उसमे अब नया कुछ जुडने वाला न था।

यहूदियो का कत्लेआम खूब सवेरे शुरू हुआ।

शहर अभी पौ फटने के ठीक पहले के धुधलके मे लिपटा हुआ था। यहूदी बस्ती के बेतरतीब बने हुए उन छोटे-छोटे घरो के इर्द-गिर्द गीले कपडे की चिन्दियो की तरह लटकी हुई सूनी-सूनी सडकें अभी बेजान थी। चुस्त पर्दों मे मे बन्द खिडकिया अपनी अधी आखो से घूर रही थी।

बस्ती को बाहर से देखने से मालूम होता था मानो वह सवेरे की गहरी नींद मे हो। मगर, घरों के अन्दर कही नीद न थी। समूचे परिवार पूरे-पूरे कपडे पहने, आपस मे सटे एक कमरे मे बैठे हुए थे और आने वाली तबाही के लिए अपने आप को तैयार कर रहे थे। सिर्फ बच्चे, जो बहुत छोटे थे और नही समझ सकते थे कि यह सब क्या हो रहा है, अपनी माओं की गोदो मे चैन से सो रहे थे।

गोलुब की अगरक्षक टुकडी का प्रधान, सलोमिगा, जिसका जिप्सियो जैसा स्याह रग था और जिसके गाल पर तलवार के घाव का लाल दाग था, गोलुब के सहचर पालियानित्स्या को जगाने की बडी कोशिश कर रहा था और पालियानित्स्या उस दु स्वप्न की पकड से अपने-आप को छुडा नही पा रहा था जिसने सारी रात उसको सताया था वह अजीब तरह से मुह बनाए, दात

निकाले कूबडवाला राक्षस अब भी उसकी गर्दन को अपने नाखूनी पजो से दबोच रहा था। आखिरकार उसने आखें खोली, अपना दर्द से फटता हुआ सिर उठाया और सलोमिगा को देखा।

सलोमिगा ने कधा पकड कर उसको हिलाते हुए कहा, "उठ भी, अलाल! काम का वक्त है और तुम पडे सो रहे हो। लगता है रात को जरा ज्यादा चढा गए थे।"

पालियानित्स्या अब अच्छी तरह जग गया था। वह उठ बैठा था और सीने मे जलन होने से मुह बना रहा था। अपने मुह मे इकट्ठा कडवे थूक को उसने थूका।

सलोमिगा को खाली-खाली निगाहो से घूरते हुए उसने पूछा, "क्या काम है ?"

"इन यहूदी हरामजादो का सफाया जो करना है! भूल गए क्या ?"

पालियानित्स्या को सारी बात याद हो आई। सचमुच, वह भूल गया था। फार्म पर शराब का दौर चला था, जहा हुजूर कर्नल अपनी प्रेयसी और कुछ लगोटिया यारो को लेकर मौज उडाने चले गए थे, वही वह सचमुच बहुत चढा गया था।

गोलुब को कत्लेआम के वक्त शहर छोड कर चले आना सुविधाजनक मालूम हुआ क्योकि तब अगर बाद मे कोई बात उठती भी, तो वह कह सकता था कि उसकी अनुपस्थिति मे किसी गलतफहमी के कारण यह चीज हो गई है और इस बीच पालियानित्स्या को इस काम मे खुल कर खेलने का पूरा मौका था। इसमें शक नही कि "तबियत बहलाने" का प्रबध करने मे पालियानित्स्या माहिर था!

पालियानित्स्या ने अपने सिर पर एक बाल्टी पानी डाला जिससे उसके होश-हवास लौट आए। तरो-ताजा होकर हुक्म जारी करता हुआ वह हेडक्वार्टर में घूमने लगा।

अगरक्षक टुकडी के सौ लोग अपने घोडो पर सवार हो चुके थे। किसी किस्म की कोई गडबडी न हो, इसका विचार करके दूरदर्शी पालियानित्स्या ने खास शहर और मजदूरो की बस्ती और स्टेशन के बीच सन्तरी तैनात करने का हुक्म दे दिया था। सडक के सामने लेश्चिन्स्की के बागीचे मे एक मशीनगन लगा दी गई थी ताकि अगर मजदूर कुछ गडबडी करें तो उन पर गोली की बौछार की जा सके।

सारी तैयारिया पूरी हो जाने पर पालियानित्स्या और सलोमिगा अपने घोडो पर सवार हुए।

पालियानित्स्या ने चलते-चलते कहा, "रुको, मैं तो भूल ही गया था। गोल्ड्न के लिए विवाह का उपहार लाने को हमें दो गाड़ियां भी तो ले लेनी चाहिएं। हा: हा: हा: ! हमेशा ही की तरह लूट का पहला माल कमांडर साहब के लिए और पहली लड़की...हा: हा: हा:...उनके अनुचर के लिए—यानी मेरे लिए। समझे कि नहीं बुड्ढराम ?"

यह अन्तिम वात सलोमिगा को सम्बोधित करके कही गई थी जो अपनी पीली-पीली आंखों से उसे घूर रहा था।

"घबराओ मत, लड़कियों की कोई कमी न होगी, सबके लिए इन्तजाम हो जायगा।"

उन्होंने अपने घोड़ों को एड़ लगाई और घुड़सवारों के बेतरतीब गिरोह को लेकर आगे बढ़े।

कुहरा साफ हो गया था जब पालियानित्स्या ने एक दुमंजिले मकान के सामने अपना घोड़ा रोका। मकान पर एक जंग-लगा साइन-बोर्ड लटक रहा था: "फुक्स, कपड़े वाला।"

उसकी पतली-पतली टांगों वाली, भूरे रंग की घोड़ी गली में लगे हुए पत्थरों पर पैर पटकने लगी।

पालियानित्स्या ने घोड़ी पर से नीचे कूदते हुए कहा, "अच्छा तो अब यहीं से हम शुरू करेंगे, खुदा हाफिज।"

अपने चारों तरफ घिरते हुए सिपाहियों की भीड़ को मुखातिब करते हुए उसने कहा, "अपने घोड़ों से उतरो, दोस्तो ! अब खेल शुरू हो रहा है। मैं पहले ही तुमको बतला देना चाहता हूं कि मैं नहीं चाहता कि अभी सिर-विर फोड़े जायें, उसका भी वक्त आयेगा। जहां तक लड़कियों की बात है, अगर मुमकिन हो तो शाम तक सब्र करो।"

एक आदमी ने अपने मजबूत दांत दिखलाते हुए आपत्ति की :

"और अगर हुजूर खोरूंजी, यह चीज दोनों की रजामन्दी से हो तब ?"

बड़े जोर का कहकहा पड़ा। पालियानित्स्या ने प्रशंसा और समर्थन की दृष्टि से उस आदमी को देखा जिसने यह बात कही थी।

"वह बात अलग है—रजामन्द हों तब फिर क्या बात है ? तब फिर कैसा रुकना-रुकाना ! इस चीज को कोई मना नहीं कर सकता है !"

पालियानित्स्या ने आगे बढ़कर दूकान के बन्द दरवाजे पर जोर से ठोकर लगाई। मगर दरवाजे के मोटे-मोटे मजबूत ओक के पल्ले हिले तक नहीं।

जाहिर है कि शुरू करने के लिए यह जगह ठीक न थी। पालियानित्स्या घूम कर फुक्स के घर के दरवाजे की ओर बढ़ा। आगे बढ़ते हुए उसने तलवार को अपने हाथ का सहारा दिया। सलोमिगा उसके पीछे-पीछे था।

घर के अन्दर के लोगो ने वाहर पक्की सडक पर घोडो की टाप की आवाज सुनी थी और जब यह आवाज दूकान के सामने आकर रुकी और सिपाहियो की आवाजे दीवार को भेद कर अन्दर पहुची, तो उन्हे ऐसा लगा जैसे उनके दिल की धडकन रुक गई हो और उनका शरीर अकड कर रह गया हो।

अमीर फुक्स एक रोज पहले ही अपनी बीवी और लडकियो को लेकर शहर के बाहर चला गया था। केवल अपनी नौकरानी रीवा को जायदाद की देखभाल के लिए वह पीछे छोड गया था। रीवा बहुत सीधी-सादी, उन्नीस साल की भीरु-सी लडकी थी। यह देख कर कि वह उस सूने मकान मे अकेले रहने से डर रही है, फुक्स ने उससे कहा था कि जब तक वे लोग लौट न आवे, तब तक के लिए वह अपने बूढे बाप और मा को अपने साथ रहने के लिए बुला ले।

रीवा ने जब डरते-डरते इसका प्रतिवाद करने की कोशिश की तो उस चालाक व्यापारी ने उसके आश्वासन के लिए कहा था कि शायद बहुत करके मारकाट होगी ही नही, क्योंकि आखिरकार भिखमगो मे उन्हे मिलेगा क्या ? और उसने रीवा से यह भी वादा किया कि लौटने पर वह उसकी पोशाक के लिए बहुत अच्छा कपडा देगा।

इस वक्त वे तीनो खडे हुए डर के मारे काप रहे थे। कोई आस न थी, मगर तब भी वे आस लगाये थे कि शायद घुडसवार आगे निकल जायें, शायद समझने मे उनसे भूल हुई थी, शायद यह उनका भ्रम था कि घोडे उनके मकान के सामने रुके है। मगर दूकान के दरवाजे पर जो ठोकर लगी थी, उसकी भारी गूज ने उनकी उम्मीदो को चूर कर दिया।

बूढा, चादी जैसे बालो वाला पेईसाख, दरवाजे के पास खडा था। उसकी नीली-नीली आखे सहमे हुए बच्चे की तरह माथे पर जा लगी थी। एक कट्टर आस्तिक की तरह पूरे भावावेश से वह सर्वशक्तिमान जेहोवा की बुदबुदा कर प्रार्थना कर रहा था। वह भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि इस घर को सकट से बचा लो और उसके पास खडी हुई उसकी बूढी स्त्री ने थोडी देर को, पास आते हुए कदमो की आहट को नही सुना क्योकि वह प्रार्थना के स्वर मे खो गई थी।

रीवा भाग कर सबसे दूर वाले कमरे मे चली गई थी और वहा ओक की लकडी के बडे साइड-बोर्ड के पीछे छिप गई थी।

दरवाजे पर एक जबर्दस्त, दरवाजे को जैसे तोड देने वाली चोट पडी, जिससे बूढे-बुढिया काप गये।

"दरवाजा खोलो !" और फिर दूसरी चोट, पहले से भी ज्यादा प्रबल, दरवाजे पर पडी और फिर गालियो की आवाजें सुनाई दी।

मगर वे जो अन्दर थे, डर के मारे सुन्न पड़ गये थे और दरवाजे की कुंडी खोलने के लिए हाथ नहीं उठा सके।

बाहर, दरवाजे पर राइफिल के कुन्दे बरस रहे थे। आखिरकार दरवाजा टूट गया।

मकान हथियारों से लैस आदमियों से भर गया। ये लोग मकान के कोने-कोने को छानने लगे। राइफिल के कुन्दे की एक चोट से दूकान के भीतर खुलने वाला दरवाजा टूट गया और फिर बाहर के दरवाजे की कुंडिया भीतर से खोल दी गईं।

और फिर लूटपाट शुरू हुई।

जब गाड़िया कपड़े की पेटियों, जूतों और लूट के दूसरे सामान से अच्छी तरह भर गईं, तो सलोमिगा इनको लेकर गोलुब के क्वार्टर की तरफ रवाना हो गया। वहां से लौटने पर उसने घर के अन्दर से एक डरी हुई चीख निकलती सुनी।

पालियानित्स्या ने अपने आदमियों को दूकान लूटने के लिए छोड़ दिया था और खुद मालिक-मकान के घर के भीतर घुस गया था। वहां पर उसने उन बूढ़े-बुढ़िया और उनकी लड़की को खड़े पाया। उनको अपनी हरी-हरी, बिल्ली जैसी आंखों से देखते हुए उसने बूढ़े दम्पति को डपट कर आदेश दिया

"तुम लोग यहां से बाहर निकल जाओ!"

मां-बाप दोनों में से कोई भी न हिला।

पालियानित्स्या एक कदम आगे बढ़ा और धीरे-धीरे म्यान से अपनी तलवार निकाली।

"मां!" वह लड़की दिल को हिला देने वाली आवाज में चिल्लाई। सलोमिगा ने इसी चीख को सुना था।

पालियानित्स्या अपने आदमियों की तरफ मुड़ते हुए, जो इस चीख को सुन कर वहां इकट्ठा हो गए थे, उन दोनों बुड्ढों की तरफ इशारा करके भौंक कर बोला

"इन्हें बाहर फेंक दो!" जब यह काम पूरा हो गया तो उसने वहां उपस्थित सलोमिगा से कहा, "तुम यहां दरवाजे पर जरा निगरानी रखो तब तक मैं उस छोकरी से दो बातें कर लूं!"

लड़की दुबारा चिल्लाई। बूढ़ा पेइसाख कमरे के दरवाजे की तरफ लपका। मगर उसकी छाती पर एक जबर्दस्त चोट लगी और वह पीछे की दीवार से जा टकराया। दर्द से उसका दम घुट रहा था। बूढ़ी मां तोइबा, जो सदा इतनी शान्त और नम्र रहती थी, अब अपने बच्चे के लिए लड़ती हुई मादा भेड़िये की तरह सलोमिगा पर झपटी।

"मुझे अन्दर जाने दो ! तुम मेरी लड़की को क्या कर रहे हो ?"

वह दरवाजे के पास पहुंचने के लिए जोर लगा रही थी और सलोमिगा अपनी सारी कोशिश के बावजूद अपने कोट को उसकी बूढ़ी उंगलियो की गिरफ्त से छुड़ा नही पा रहा था।

पेइसाख, जो अपनी चोट और दर्द के बाद अब तक होश मे आ गया था, तोइवा की मदद के लिए आया।

"हमे अन्दर जाने दो ! अन्दर जाने दो ! हाय, मेरी बेटी !"

बूढ़े दम्पति ने अपनी मिली-जुली कोशिश से सलोमिगा को किसी तरह दरवाजे से दूर ढकेल दिया था। सलोमिगा ने गुस्से मे आकर झटके के साथ अपना रिवाल्वर कमरबन्द से निकाला और उसके लोहे के हत्थे से बूढ़े के सफेद सिर पर जोर से चोट की। पेइसाख वही फर्श पर ढेर हो गया।

कमरे के अन्दर रीवा चीख रही थी।

जब तोइवा घसीट कर घर के बाहर की गई, उसका दिमाग काबू से बाहर था और उसकी पागलो जैसी चीखो और मदद की पुकारो से सड़क गूंज रही थी।

घर के अन्दर पूर्ण शान्ति थी।

पालियानित्स्या कमरे के बाहर आया। सलोमिगा को बिना देखे, जिसका हाथ दरवाजे के हैण्डिल पर जा चुका था, पालियानित्स्या ने उसको अन्दर जाने से रोका।

"बेकार है—मैंने तकिये से उसका मुंह बन्द करने की कोशिश की तो उसका दम घुट गया।" पेइसाख के जिस्म पर पैर रखते हुए उसको किसी स्याह चिपचिपी चीज का एहसास हुआ। यह और कुछ नही, पेइसाख का खून था।

बाहर जाते हुए उसने बुदबुदा कर कहा, "बोहनी ठीक नही हुई।"

दूसरे भी बिना एक शब्द बोले उसके पीछे-पीछे बाहर निकले और फर्श और सीढ़ियो पर अपने खून मे डूबे पैरो की छाप छोड़ते गए।

शहर मे लूट-पाट पूरे जोर पर थी। उसी मे कभी-कभी लुटेरे माल के बटवारे को लेकर जंगली जानवरो की तरह आपस मे लड़ पड़ते और यहां-वहां तलवारें चमक उठती। घूंस तो सभी जगह धड़ल्ले से चल रहे थे। बियर के सेलून मे से पच्चीस गैलन वाले पीपे बाहर लुढ़का कर सड़क की पटरी पर इकट्ठे किये जा रहे थे।

फिर लुटेरो ने यहूदियो के घरो मे घुसना शुरू किया।

कोई प्रतिरोध नही हुआ। वे तमाम कमरो मे गये, जल्दी-जल्दी एक-एक कोने को उलटा-पल्टा और लूट का माल लाद कर चलते बने। अपने पीछे वे

कुछ छोड़ गये थे तो कपड़ों के बिखरे हुए ढेर और तलवार की नोक से चिरे हुए गद्दों और तकियों के अन्दर से निकले हुए चिड़ियों के पर। पहले रोज तो सिर्फ दो जानें गईं रीवा की और उसके बाप की, मगर आनेवाली रात अपने साथ मौत का अनिवार्य आतंक लेकर आई।

शाम तक सिख्खिनियों और मगियों की जमात नशे में धुत पड़ी थी। पेतल्युरा के पागल सिपाही रात का इन्तजार कर रहे थे।

अंधेरे ने उनके रहे-सहे बंधन भी खोल दिये। घुप्प अंधेरे में आदमी को भस्म करना आसान होता है, सियार भी अंधेरे के घंटों को ज्यादा पसन्द करते हैं।

शायद ही कोई कभी इन दो भयानक रातों और तीन दिनों को भूल सके। इस बीच न जाने कितनी जिन्दगियां मिटीं और लहू-लुहान हुईं, इन खूनी घड़ियों में न जाने कितने जवान सिरों के बाल सफेद हुए, न जाने तीखे दर्द के कितने आंसू बहे! कहना मुश्किल है कि वे जो बच गये थे ज्यादा सौभाग्यशाली थे—वे जो जिन्दा तो बचे थे मगर जिनकी आत्मा लुट गई थी, वीरान हो गई थी, जिन्हें अपने अपमान और लुटी हुई इज्जत की शर्म की दारुण यंत्रणा खाये जा रही थी, जिन्हें अवर्णनीय दुःख कीड़े की तरह कुतर रहा था, दुःख अपने उन आत्मीयों और प्रियजनों के लिए जो अब कभी नहीं लौटेंगे। इस सबसे उदासीन, नौजवान लड़कियों के घायल, सताये हुए, टूटे हुए शरीर यंत्रणा की अनेकानेक मुद्राओं में बांहें पीछे की तरफ फेंके, सकरी गलियों में पड़े थे।

सिर्फ एक जगह, नदी के सामने वाले मकान में जहां नाउम लोहार रहता था, उन गीदड़ों को, जो उसकी नौजवान बीवी सारा पर झपटे थे, करारा जवाब मिला। वह लुहार चौबीस साल का मजबूत नौजवान था और उसकी लोहे जैसी मांस-पेशियां वैसी ही थीं जैसी कि अपनी जीविका के लिए भारी हथौड़ा चलाने वाले किसी आदमी की होनी चाहिए। उस लोहार ने अपनी बीवी उनके हाथ नहीं पड़ने दी।

उस छोटी-सी झोपड़ी में संघर्ष हुआ तो थोड़ी ही देर मगर बहुत भयानक। दो पेतल्युरा सिपाहियों का सिर सड़े हुए खरबूजों की तरह भुर्ता हो गया था। निराशा के भयानक क्रोध में वह लुहार दो जानों के लिए सिर पर कफन बांध कर लड़ रहा था। बड़ी देर तक नदी किनारे से राइफलें चलने की आवाज आती रही। खतरे का आभास पाकर तमाम लुटेरे वहां आ गये थे। जब उस लोहार के पास सिर्फ एक गोली बच रही, तो उसने अपनी बीवी को गोली मार दी और सचमुच उस पर एहसान किया, फिर खुद संगीन हाथ में लेकर अपनी मौत का सामना करने बाहर निकल पड़ा। गोलियों की एक बौछार

आई और उसका मजबूत जिस्म अपने सामने वाले दरवाजे के बाहर धरती पर ढेर हो गया।

आसपास के गावों के धनी समृद्ध किसान अपनी घोडा-गाडियो मे, जिन्हे अच्छे तगडे घोडे खीच रहे थे, शहर के अन्दर आये। उन्होंने अपनी गाडियो मे जो कुछ अच्छा लगा, लादा और गोलुब की सेना मे काम करने वाले अपने बेटो और सम्बन्धियो के पहरे मे जल्दी-जल्दी घर चले ताकि एक-दो फेरे और कर सकें।

सर्योजा ब्रुजाक जिसने अपने बाप के साथ प्रेस के आधे साथियो को तहखाने मे और ऊपर वाली कोठरी मे छिपाया था, बागीचा पार करके घर आ रहा था जब उसने एक आदमी को लम्बा-सा, पैबन्द लगा कोट पहने, जोरो से बाहे हिलाते सडक पर भागते देखा।

यह एक बूढ़ा यहूदी था और इस नगे-सिर हांफते हुए आदमी के पीछे-पीछे, जिसके चेहरे को डर के मारे लकवा-सा मार गया था, एक पेतल्युरा सिपाही अपने भूरे रग के घोडे पर सवार सरपट चला आ रहा था। उनके बीच का फासला तेजी से कम होता जा रहा था, यहा तक कि घुडसवार अपने शिकार को तलवार से काट देने के लिए अपनी काठी से आगे की ओर झुका। अपने पीछे घोडे की टापें सुन कर बूढे ने जैसे चोट रोकने के लिए हाथ ऊपर को उठाया। उसी वक्त सर्योजा कूद कर सडक पर आ गया और उस बूढे को बचाने के लिए उसने खुद को घोडे के आगे डाल दिया।

"उसे छोड दे! कुत्ता, लुटेरा कही का!"

घुडसवार ने नीचे गिरती हुई तलवार को रोकने की कोई कोशिश न की और तलवार उल्टी तरफ से लडके के सुनहरे बालो वाले सिर पर गिरी।

''पांच

बोल्शेविक फौजें 'चीफ ऐटमन" पेतल्युरा की टुकडियो पर जबर्दस्त दबाव डाल रही थी और इसलिए गोलुब की रेजिमेन्ट को मोर्चे पर बुला लिया गया। शहर मे सिर्फ कुछ रियरगार्ड टुकडिया और कमाडैण्ट के कुछ खास अपने सिपाही रह गये।

लोगो मे हरकत पैदा हुई। इस अस्थायी शान्ति का फायदा उठा कर यहूदी आबादी ने अपने मुर्दा लोगों को दफना दिया और यहूदी बस्ती की छोटी-छोटी झोपडियो मे जिन्दगी एक बार फिर लौट आई।

खामोश शामो को गोली-गोले चलने की अस्पष्ट आवाज दूर से सुनाई पडती थी, कही पास मे ही लडाई चल रही थी।

स्टेशन पर रेलवे मजदूर अपनी नौकरियो को छोड कर काम की तलाश मे गावो की तरफ जा रहे थे।

हाई स्कूल बद कर दिया गया था।

शहर मे मार्शल-लॉ जारी कर दिया गया था।

यह एक काली बीभत्स डरावनी रात थी, ऐसी रात जब चाहे जितना जोर डालो आखें अधेरे को चीर नही पाती, ऐसे मे आदमी अधेरे में राह टटोलता हुआ घूमता है और हर वक्त उसे डर बना रहता है कि वह किसी गड्ढे मे जा गिरेगा और उसका काम तमाम हो जायगा।

भद्र लोग जानते हैं कि ऐसे समय अधेरे मे घर पर बैठने में ही खैरियत है। अगर उसका बस चले तो भद्र नागरिक घर मे लैम्प भी न जलायें क्योंकि रोशनी से अनचाहे अतिथि खिचकर आ सकते हैं। अधेरा ही अच्छा है, हिफाजत तो रहती है। होने को ऐसे भी लोग होते हैं जो हमेशा अस्थिर रहते हैं—उनका जी चाहे तो वे बाहर निकलें, मगर भद्र नागरिक को इससे बहस नही। वह खुद बाहर जाने का खतरा नही उठायेगा—किसी कीमत पर नही।

यह ऐसी ही एक रात थी। मगर फिर भी, एक आदमी सडक पर चला जा रहा था।

कोर्चागिन के मकान पर पहुच कर उसने सावधानी से खिडकी पर दस्तक दी। कोई जवाब नही मिला। उसने दुबारा दस्तक दी—इस बार ज्यादा जोर से और कई बार।

पावेल सपना देख रहा था कि एक अजीब सा प्राणी, जो आदमी तो किसी तरह नही है, उसके ऊपर मशीनगन का निशाना साध रहा है, वह भाग जाना चाहता था, मगर भाग कर जाने के लिए कोई जगह न थी और मशीनगन बहुत भयानक स्वर मे कडकडा रही थी।

वह जागा तो उसने खिडकी को खडखडाते सुना। कोई दस्तक दे रहा था।

पावेल कूद कर बिस्तर से उतरा और यह देखने के लिए कि कौन है, खिडकी के पास पहुचा, मगर उसे वहा एक धुधली, काली आकृति के अलावा और कुछ न दिखाई दिया।

वह घर मे बिल्कुल अकेला था। उसकी मा उसकी सबसे बडी बहन के यहा चली गई थी, जिसका पति शकर के कारखाने में मैकेनिक था। आर्तेम

पास के गाव मे लुहार का काम कर रहा था, अपनी जीविका के लिए हथौडा चला रहा था ।

मगर फिर भी आर्तेम के अलावा दूसरा हो भी कौन सकता है ।

पावेल ने खिडकी खोलने का निश्चय किया ।

उसने अधेरे मे कहा, "कौन है ?"

खिडकी के बाहर कुछ गति हुई और एक रुधी हुई आवाज ने जवाब दिया

"मैं हू जुखराई ।"

खिडकी की देहली पर दो हाथ रखे हुए थे और फिर फियोदोर का सिर ऊपर उठा और पावेल के चेहरे की बराबरी मे आ गया ।

जुखराई ने फुसफुसा कर कहा, "मैं तुम्हारे साथ रात गुजारने आया हू । तुम्हे कोई आपत्ति तो नही, कामरेड ?"

पावेल ने आन्तरिक स्नेह से जवाब दिया, "कैसी बात करते हो । तुम जानते हो कि यहा पर सदा तुम्हारा स्वागत है । कूद कर अन्दर आ जाओ ।"

फियोदोर ने थोडी सी खुली हुई खिडकी मे से झुकड कर अपने विशाल शरीर को अन्दर किया ।

उसने खिडकी तो बन्द कर दी, मगर तत्काल वहा से हटा नही । वह गौर से सुनता खडा रहा और जब चाद बादलो के पीछे से बाहर आया और सडक दिखने लगी तो उसने बहुत ध्यान से सडक को देखा । फिर वह पावेल की तरफ मुडा और बोला

"तुम्हारी मा को हम लोग न जगायेंगे, है न ?"

पावेल ने उसे बतलाया कि घर मे उसको छोड कर और कोई नही है । यह सुन कर मल्लाह को और इतमीनान हुआ और वह पहले से कुछ ऊची आवाज मे बोलने लगा ।

"अब वे हत्यारे सचमुच जी-जान से मेरे पीछे लगे हैं, दोस्त । स्टेशन पर जो कुछ हुआ था, उसी के बाद से सब मेरे पीछे पडे हैं । अगर कही हमारे लोगो ने जरा और हिम्मत दिखलाई होती तो हमने कत्लेआम के दौरान मे उन भूरे कोट वालो को अच्छा मजा चखाया होता । मगर असल बात यह है कि लोग अभी आग मे कूदने के लिए तैयार नही हैं । इसीलिए, इस सबका कोई नतीजा नही निकला । अब सब मेरी तलाश मे हैं और मेरे लिए दो बार जाल डाल चुके हैं—आज तो मैं बाल-बाल बचा । पीछे के रास्ते से मैं घर जा रहा था और पीछे मुड कर देखने के लिए शेड पर रुका ही था कि एक पेड के पीछे से एक सगीन निकली हुई मुझे दिखाई दी । मैं लौट पडा

और सीधे तुम्हारे यहा आया। अगर तुम्हें कोई एतराज न हो तो कुछ दिन के लिए मैं यही लंगर डाल दू। ठीक है न, दोस्त ? बहुत अच्छा।"

अभी भी जुखराई की नाक भारी चल रही थी। उसने अपने कीचड मे सने जूते उतारने शुरू किए।

पावेल खुश था कि जुखराई आ गया है। पिछले कई दिनो मे बिजली घर काम नही कर रहा था और पावेल को अपने वीरान घर मे बहुत सूना-सूना लगता था।

दोनो सोने चले गये। पावेल तो फौरन सो गया, मगर फियोदोर बहुत देर तक बिस्तर मे लेटा-लेटा सिगरेट पीता रहा। फिर वह उठा और नगे पैर, पजो के बल, खिडकी तक गया और बडी देर तक सडक को देखता रहा। आखिरकार थकान से चूर होकर वह लेट गया और सो गया, मगर उसका हाथ अपने भारी "कोल्ट" पिस्तौल के कुन्दे पर ही था जिसे उसने अपने तकिये के नीचे रख लिया था और जिसको उसके शरीर की गरमी मिल रही थी।

जुखराई का उस रात का अप्रत्याशित आगमन और फिर वे आठ दिन जो उसने जुखराई के सग बिताये थे, उन्होने पावेल की सारी जिन्दगी की धारा पर असर डाला। उस मल्लाह ने उसे सबसे पहले उन अनेक चीजो की अन्तर्दृष्टि दी जो नई थी, गतिशील थी, महत्वपूर्ण थी।

जुखराई के लिए दो बार जो घातें लगाई गई थी, उन्होने जुखराई को घर मे छिप कर बैठने के लिए मजबूर किया। उसने इस तरह मजबूर होकर बेकार बैठे रहने की स्थिति का सदुपयोग करते हुए, पीले-और-नीले झडे वाले लुटेरो के खिलाफ, जो सारे इलाके का गला दबोचे हुए थे, अपना सारा गुस्सा और जलती हुई नफरत उत्सुक पावेल के मन मे उडेल दी।

जुखराई जो जबान बोलता था वह सीधी थी, साफ थी और आखो के सामने चित्र खडा कर देती थी। उसके मन मे कोई सशय न थे, उसे अपनी राह अपने सामने साफ-साफ फैली दिखाई पडती थी और पावेल की समझ मे यह बात आ गई कि यह सब जो बडे-बडे नामोवाली ढीमो राजनीतिक पार्टिया हैं —सोशलिस्ट रेवोल्यूशनरी, सोशल डेमोक्रैट, पोलिश सोशलिस्ट—सब असल मे मजदूरो की जानी दुश्मन ही हैं और अमीरो के खिलाफ मजबूती से लडने वाली क्रान्तिकारी पार्टी केवल बोल्शेविक पार्टी है।

पहले पावेल का दिमाग इन सब चीजो के बारे मे बुरी तरह उलझा हुआ था।

और इस तरह उस पक्के, मजबूत दिल वाले बाल्टिक सागर के मल्लाह ने,

जो समुन्दरी हवाओ पर पला था, जो पक्का बोल्शेविक और १९१५ से बोल्शेविक पार्टी का सदस्य था, पावेल को जीवन के कटु सत्य बतलाये और भट्ठी झोकने वाला लडका पावेल स्तब्ध होकर सब बातें सुनता रहा।

जुखराई ने कहा, "मैं जब तुम्हारी उम्र का था, दोस्त, तो मैं भी तुम्हारी ही तरह था। मेरी समझ मे ही नही आता था कि मै अपनी शक्ति का क्या करू, मैं भी एक बेचैन नौजवान था, हर वक्त सरकशी के लिए तैयार। मै गरीबी ही मे पला और बढा। कभी-कभी शहर के रईसो के लाड से बिगडे हुए, मोटे-ताजे लडको को देख कर मेरी आखो में खून उतर आता था। अक्सर मैं उनकी खूब अच्छी तरह मरम्मत करता। मगर इसका नतीजा कुछ और न निकलता सिवा इसके कि घर आने पर पिताजी कस कर मेरी मरम्मत करते। इस तरह से अकेले लडने से दुनिया थोडे ही बदली जा सकती है। तुममे पावलूशा, मजदूर जमात के हक मे लडने वाले सिपाही के तमाम गुण हैं, बस तुम अभी बहुत छोटे हो और वर्ग-संघर्ष के बारे मे ज्यादा नही जानते। मगर दोस्त, मैं तुमको ठीक रास्ते पर लगा दूगा क्योकि मैं जानता हू कि तुम अच्छे लडाके निकलोगे। मेरी उन लोगो से नही बनती जो अपने तुच्छ सुख के पीछे पागल रहते है और बस आराम से दिन गुजार देना चाहते हैं। इस वक्त सारी दुनिया मे आग लगी हुई है। अब तक के गुलामो ने सिर उठाया है और पुरानी जिन्दगी का बेडा गर्क करना ही होगा। मगर इसके लिए मजबूत इरादे के लोगो की जरूरत है, कमजोर लडकियो-जैसो की नही जो लडाई शुरू होने पर झीगुरो की तरह अपने बिलो मे घुस जायेगे। हमे चाहिए मजबूत लोग जो निर्मम होकर लड सकें।"

उसकी बधी हुई मुट्ठी जोर से मेज पर गिरी।

वह उठ खडा हुआ। उसकी त्योरियो मे बल पड गये और वह जेब मे खूब अन्दर तक हाथ डाले कमरे मे चहलकदमी करने लगा।

अपनी बेकारी उसे खल रही थी। उसे इस बात का बडा अफसोस था कि वह शहर मे रुक गया था। उसे यकीन हो गया था कि शहर मे अब और रुकने मे कोई तुक नही है और उसने पक्का इरादा कर लिया था कि लाल टुकडियो से जा मिलने के लिए वह लडाई के मोर्चे को पार करेगा।

तय पाया गया था कि नौ पार्टी मेम्बरो का दल काम को जारी रखने के लिए शहर मे रहेगा।

"मेरे बगैर उनका काम चल जायगा। मैं अब और बेकार नही बैठ सकता। यो ही मैं दस महीने बर्बाद कर चुका हू," जुखराई ने खीझते हुए सोचा।

"सच बतलाओ फियोदोर, तुम क्या हो ?" पावेल ने एक बार उससे पूछा।

जुखराई उठ खडा हुआ और हाथ जेब के अन्दर डाल लिये। इस सवाल का मतलब एकाएक उसकी समझ मे नही आया।

"तुम नही जानते ?"

पावेल ने मद्धिम आवाज मे कहा, "मेरे खयाल से तुम बोल्शेविक या कम्युनिस्ट हो।"

जुखराई ठठाकर हस पडा और चुस्त, धारीदार जर्सी से ढकी अपनी खूब चौडी छाती पर हाथ मारा।

"तुमने ठीक कहा, दोस्त! यह बात उतनी ही ठीक है जितनी यह कि बोल्शेविक और कम्युनिस्ट एक ही होते है।" फिर वह एकाएक गभीर हो गया। "लेकिन तुमने जब यह बात समझ ली है तो इसे अपने ही तक रखना। अगर तुम यह नही चाहते कि मै पकडा जाऊ तो इसे किसी से या किसी जगह .. कहना। समझे ?"

पावेल ने दृढता से जवाब दिया, "हा, मैं समझ गया।"

बाहर सहन मे आवाजें सुनाई दी और किसी ने बिना पहले दस्तक दिये धक्का देकर दरवाजे को खोला। जुखराई का हाथ झट उसकी जेब मे चला गया, मगर फिर बाहर आ गया जब उसने कमजोर और पीले सर्गेई ब्रुजाक को सिर मे पट्टी बाधे कमरे मे दाखिल होते देखा। ब्रुजाक के पीछे-पीछे वालिया और क्लिमका थे।

सर्गेई ने पावेल से हाथ मिलाते हुए मुस्करा कर कहा, "कहो प्यारे, क्या हाल-चाल हैं ? हम तीनो ने तय किया कि चलें, तुमसे मिल आये। वालिया मुझे अकेले बाहर निकलने देन के लिए तैयार न थी और क्लिमका को वालिया के अकेले निकलने मे डर लगता है। क्लिमका का सिर भले लाल हो, मगर वह जानता है कि उसे क्या करना चाहिए।"

वालिया ने खिलण्डरेपन से सर्गेई के मुह पर हाथ रख दिया और हसते हुए बोली, "किस कदर बातूनी है! आज इसने क्लिमका को जरा चैन नही लेने दिया।"

क्लिमका भी खुश होकर मुस्कराया और उसके सफेद दातो की पात दिखाई दी।

"बीमार आदमी के साथ और किया ही क्या जा सकता है ? देखते हो न, दिमाग ने जरा खब्त है।"

सब हसने लगे।

सर्गेई, जो तलवार की चोट के असर से अभी पूरी तरह ठीक नही हुआ था, पावेल के बिस्तर पर बैठ गया और फिर सब नौजवान दिलचस्प बातचीत

मे डूब गये। सर्गेई, जो आम तौर पर बडा खुशदिल और हसोड था, आज चुप और बुझा-बुझा सा बैठा था। उसने पेतल्युरा सिपाही से अपनी मुठभेड की बात जुखराई को बतलाई।

जुखराई इन तीनो नौजवानो को जानता था क्योकि वह कई बार ब्रुजाक के घर जा चुका था। उसे ये लडके बहुत पसन्द थे, सघर्ष के भवर मे अभी उन्हे अपनी जगह नही मालूम थी, मगर अपने वर्ग की आकाक्षाए उनमे अच्छी तरह व्यक्त थी। उसने बहुत दिलचस्पी से उनके बयानो को सुना कि उन्होने किस तरह यहूदी परिवारो को मार-काट मे बचाने के लिए उन्हे शरण देने मे मदद पहुचाई। उस शाम को जुखराई ने उन लडको को बोल्शेविको और लेनिन के बारे मे बहुत कुछ बतलाया और इस तरह होने वाली घटनाओ को समझने मे उन्हे मदद पहुचाई।

पावेल के अतिथि काफी वक्त गये विदा हुए।

जुखराई हर शाम बाहर निकल जाता था और बहुत रात गये लौटता था। शहर छोडने के पहले उसे अपने उन साथियो के साथ बहुत सी बातो का फैसला करना था जो शहर मे रुकने वाले थे, यानी यह कि क्या काम करना होगा और कैसे करना होगा।

इस खास रात को जुखराई वापस नही आया। पावेल जब सवेरे उठा तो उसने एक झलक मे ही देख लिया कि मल्लाह के बिस्तर पर रात मे कोई सोया नही था।

पावेल के मन मे अस्पष्ट-सी आशका जगी। उसने जल्दी-जल्दी कपडे पहने और घर के बाहर निकल गया। दरवाजे मे ताला लगाकर और चाभी को हमेशा की जगह रख कर वह क्लिम्का के घर गया। उसे उम्मीद थी कि क्लिम्का को फियोदोर की कुछ-न-कुछ खबर जरूर होगी। क्लिम्का की मा, जो एक मोटी-सी स्त्री थी और जिसके चौडे चेहरे पर चेचक के गहरे गहरे दाग थे, कपडे धो रही थी। पावेल ने उससे पूछा क्या उसे मालूम है कि फियोदोर कहा है ?

क्लिम्का की मा ने चिडचिडाकर जवाब दिया, "मुझे क्या और कोई काम ही नही है कि बस तुम्हारे फियोदोर पर निगाह रखा करू। यह सब उसी के कारण है—नाश हो उसका—उस जोजलिखा ने घर को उलट-पुलट कर रख दिया। उससे तुम्हे क्या काम है ? अजीब ही आदमी है, अगर मेरी राय पूछो तो क्लिम्का और तुम और बाकी सब, तुम सभी एक से हो" वह गुस्से के साथ फिर कपडे धोने मे लग गई।

क्लिम्का की मा बदमिजाज औरत थी जो काट खाने दौडती थी

विलम्का के घर से पावेल सर्गेई के यहा गया। वहां भी उसने अपने मन के डर को सामने रखा।

वालिया बोली, "तुम इतने परेशान क्यो हो ? हो सकता है वह किसी दोस्त के यहा रुक गये हो।" मगर उसके शब्दो मे स्वय ही विश्वास की कमी थी।

पावेल बहुत उद्विग्न हो रहा था और ब्रूजाक के घर ज्यादा देर तक ठहरना उसके लिए मुमकिन न था। वे लोग उसे रोकते ही रहे कि खाना खाकर जाओ, मगर वह चला गया।

वहा से वह सीधे घर लौटा, इस उम्मीद मे कि यहा जुखराई मिल जायगा।

दरवाजे मे ताला बन्द था। पावेल कुछ देर बाहर खडा रहा। उसका दिल भारी था। उस सूने वीरान घर मे जाने के खयाल से ही उसे तकलीफ होती थी।

कुछ मिनट तक वह गहरे सोच मे डूबा हुआ हाते मे खडा रहा। फिर एकाएक आवेग से प्रेरित होकर शेड के अन्दर चला गया। वह छप्पर पर चढा और उसके नीचे से मकडी के जालो को अलग करते हुए उस गुप्त जगह से चीथडो मे लिपटा हुआ भारी "मानलिकर" रिवाल्वर निकाला।

वह शेड से बाहर आया और स्टेशन की तरफ चला। जेब मे रखे हुए रिवाल्वर के स्पर्श से उसे एक अजीब सा आनन्द मिल रहा था।

मगर स्टेशन पर जुखराई की कोई खबर न मिली। लौटते हुए जगलो के हाकिम के बागीचे के पास पहुच कर, जो कि अब उसका बहुत परिचित था, उसके कदम धीमे हो गये। न जाने किस उम्मीद से उसने आख उठा कर घर की खिडकियो को देखा, मगर यह घर भी बागीचे की ही तरह बेजान था। बागीचा पार कर चुकने पर उसने पीछे मुड कर उसके रास्तो पर निगाह डाली। रास्ते पिछले साल की झडी हुई पत्तियो से ढके हुए थे। वह जगह उजडी हुई और उपेक्षित दिखलाई देती थी—किसी परिश्रमी हाथ की कोई छाप यहा पर न थी। उस बडे से पुराने मकान की मृतवत नीरवता ने पावेल को और भी उदास बना दिया।

तोनिया से उसका आखिरी झगडा सबसे तेज रहा था। करीब एक महीने पहले यो ही अप्रत्याशित रूप मे सब कुछ हो गया था।

शहर की तरफ धीरे-धीरे लौटते हुए उसने अपने हाथ जेब मे डाल लिये। और उस वक्त पावेल को झगडे की तमाम बातें याद आने लगी।

सडक पर अचानक उनकी मुलाकात हो गई थी और तोनिया ने उसे अपने घर आने की दावत दी थी।

"पिताजी और मा वोलशान्स्की के यहा एक सालगिरह की पार्टी मे जा रहे हैं और मैं अकेली रहूगी । तुम क्यो नही आ जाते, पावलूशा ? मेरे पास एक बहुत रोचक किताब है जिसे हम लोग साथ-साथ पढेंगे — लिओनिद आन्द्रीएव की साश्का जिगुलिओव । मैं उसे खतम कर चुकी हू, मगर तुम्हारे सग बैठ कर दुबारा पढना चाहती हू । बडी अच्छी शाम रहेगी । आओगे ?"

सुनहरे बालो पर पहनी हुई सफेद टोपी के नीचे से उसकी बडी-बडी पूरी खुली आखे आतुरता से उसकी ओर देख रही थी ।

"मैं आऊगा ।"

इसके बाद वे अलग हो गये ।

पावेल भाग कर अपनी मशीनो के पास गया और इस खयाल से ही कि उसकी एक पूरी शाम तोनिया के सग गुजरेगी, आतिशदान की लपटें और तेजी से जलने लगी और जलती हुई लकडी के कुन्दे हमेशा से ज्यादा मस्ती से चिटखने लगे ।

उस समय जब पावेल ने तोनिया के मकान के दरवाजे पर दस्तक दी और तोनिया ने दरवाजा खोला, तो पावेल ने उसे कुछ हैरान और परेशान पाया ।

तोनिया ने कहा, "मेरे यहा आज मिलने वाले आये हुए है । मुझे उनकी उम्मीद नही थी, पावलूशा । मगर तुम तो आओ ही ।"

पावेल लौट जाना चाहता था और दरवाजे की तरफ मुडा ।

तोनिया ने उसकी बाह पकडते हुए कहा, "चलो न अन्दर । तुमको जानना उनके लिए अच्छा ही साबित होगा । और पावेल की कमर मे बाह डाल कर तोनिया उसको खाने के कमरे से होकर अपने कमरे मे ले गई ।

कमरे मे दाखिल होते हुए वह वहा पर बैठे लोगो की तरफ मुडी और मुस्कराई ।

"मैं आप लोगो को अपने दोस्त पावेल कोर्चागिन से मिलाना चाहती हू ।"

कमरे के बीचोबीच उस छोटी सी मेज के इर्द-गिर्द तीन लोग बैठे थे लिजा सुखार्को, एक खूबसूरत, मद्धिम रग की हाई-स्कूल की छात्रा जिसका मुह छोटा सा था और ओठ खूबसूरत अन्दाज मे जरा बाहर को निकले हुए थे, बाल खूबसूरती से सवारे हुए, और एक दुबला पतला नौजवान जो अच्छा सिला हुआ काले रग का कोट पहने था, उसके बाल तेल मे चमक रहे थे और उसकी भूरी आखो मे एक अजीब खालीपन का भाव था, और इन दोनो के बीच स्कूली यूनिफार्म की शैली जैसी जाकेट पहने विक्टर लेशचिन्स्की बैठा था । तोनिया ने दरवाजा खोला तो पावेल ने सबसे पहले इसी को देखा था ।

लेशचिन्स्की ने भी कोर्चागिन को फौरन पहचान लिया और उसकी खूबसूरत कमानीदार भवें कुछ अचरज के साथ उठी ।

कुछ देर तक पावेल दरवाजे पर खामोश खडा विक्टर को शत्रुता के भाव से देखता रहा और उसे छिपाने की भी उसने कोई कोशिश नही की। तोनिया ने इस भद्दी खामोशी को तोडने के खयाल से फौरन पावेल को अन्दर आने के लिए कहा और परिचय कराने के लिए लिजा की तरफ मुडी।

लिजा सुखार्को, जो आगन्तुक को बहुत दिलचस्पी से देख रही थी, अपनी कुर्सी से उठी।

मगर पावेल तेजी से घूम पडा और अधेरे-अधेरे से खाने के कमरे मे होता हुआ सामने के दरवाजे की तरफ चल दिया। वह बरसाती तक पहुचा था कि तोनिया ने जाकर उसका कधा पकड लिया।

"तुम भागे क्यो जा रहे हो? मैं खास तौर पर उनको तुमसे मिलाना चाहती थी।"

पावेल ने अपने कधो पर से उसके हाथ अलग कर दिये और तेज स्वर मे बोला

"मैं नही चाहता कि उस काठ के पुतले के आगे मेरी नुमाइश की जाय। मैं उनमे से नही हू—तुम्हे भले ही वे अच्छे लगते हो, मुझे तो उनसे नफरत है। अगर मुझे मालूम होता कि ये लोग तुम्हारे दोस्त है, तो मैं आता ही नही।"

तोनिया ने अपने उठते हुए गुस्से को दबाते हुए उसको टोका

"इस तरह मुझसे बाते करने का तुम्हे क्या हक है? मैं तो तुमसे नही पूछती कि तुम्हारे दोस्त कौन हैं और कौन तुमसे मिलने आता है, और कौन नही आता?"

"मुझे इससे कोई बहस नही कि तुम किससे मिलती हो। मैं तो बस यह कह रहा हू कि मैं अब यहा कभी नही आऊगा," पावेल ने सामने की सीढियों पर उतरते हुए तडाक से जवाब दिया। और दौड कर वह बागीचे के फाटक पर पहुच गया।

तभी से तोनिया से उसकी मुलाकात नही हुई थी। मार-काट के दिनो मे जब एलेक्ट्रीशियन के साथ मिलकर उसने बिजली के कारखाने मे यहूदी परिवारो को शरण दी थी, तो उस बीच वह अपने झगडे की बात भूल गया था और आज उससे मिलना चाहता था।

जुखराई के गायब हो जाने से और इस विचार से कि घर पर कोई नही है, पावेल का मन खिन्न और उदास हो गया था। उसके सामने सडक का पूरा विस्तार फैला हुआ था। बसन्त के दिनो का कीचड अभी सूखा नही था और

सडक पर तमाम गड्ढे-ही-गड्ढे हो गये थे जिनमे बादामी रग का कीचड भरा था। सामने एक घर था जिसकी दीवारो का पलस्तर झड रहा था जिससे वह बहुत खस्ताहाल नजर आता था। वह घर सडक के पक्के फुटपाथ के सिरे तक आगे को निकला हुआ था। वही से सडक की शाख फूटती थी।

विक्टर लेशचिन्स्की एक टूटी-फूटी दूकान के सामने सडक के चौराहे पर लिजा से विदा ले रहा था। दूकान के दरवाजे चूर-चूर हो रहे थे और उस पर लेमनेड सोडा का एक साइन-बोर्ड लटक रहा था।

विक्टर ने लिजा का हाथ अपने हाथ मे पकडे हुए और अपनी याचना-भरी आखो से उसकी आखो मे देखते हुए कहा

"तुम आओगी न ? धोखा तो नही दोगी ?"

लिजा ने नखरे के साथ कहा, "जरूर आऊगी। मेरा इन्तजार करना।"

और उससे विदा होते हुए लिजा अपनी धुधली-धुधली सुर्खी-मायल बादामी आखो मे वादा भर कर मुस्कराई।

सडक पर कुछ गज आगे लिजा ने दो आदमियो को एक मोड के पीछे से सडक पर आते देखा। आगे वाला आदमी खूब तगडा था, उसका चौडा-सा सीना था और वह मजदूरो के कपडे पहने हुए था, उसकी खुली हुई जाकेट के नीचे धारीदार जर्सी दिखलाई दे रही थी, एक काली टोपी उसके माथे तक नीचे को खिची हुई थी और उसके पैरो मे ब्राउन रग के जूते थे। उसकी आख के नीचे एक स्याह दाग था।

वह आदमी मजबूत कदमो से, मगर कुछ लुढकता हुआ सा, चल रहा था।

उससे तीन कदम पीछे भूरे रग का कोट पहने और अपनी पेटी मे कारतूस रखने के दो जेब लगाये एक पेतल्युरा सिपाही चला आ रहा था। उसकी सगीन आगे वाले आदमी की पीठ को लगभग छू रही थी। सिपाही भेड के ऊन की खूब बालो वाली टोपी पहने था और टोपी के नीचे उसकी दो छोटी-छोटी सतर्क आखे अपने कैदी के सिर के पिछले हिस्से को देख रही थी। उसके चेहरे पर पीली-पीली मूछें थी जिन पर तम्बाकू के धब्बे थे।

लिजा ने अपनी चाल कुछ धीमी कर दी और सडक पार करके दूसरी तरफ चली गई। ठीक उसी वक्त उसके पीछे से पावेल निकल कर बडी सडक पर आ गया।

जैसे ही वह उस पुराने घर के पास मे गुजरा और वहा से दाहिने को मुडा, उसने भी उन दोनो आदमियो को अपनी तरफ आते देखा।

पावेल ो .कर रुक गया और ऐसे खडा रहा जैसे किसी ने उसे जमीन में गाड दिया हो। गिरफ्तार आदमी और कोई नही जुखराई था।

'अच्छा, इसीलिए वह घर नही लौटा !"

जुखराई अधिकाधिक निकट आता जा रहा था। पावेल का दिल ऐसे धडकने लगा जैसे अभी फट जायगा। उसका दिमाग-स्थिति को समझने की नाकामयाब कोशिश कर रहा था और इस कोशिश मे उसके विचार पागलो की तरह बेतहाशा भाग रहे थे। सोचन के लिए वक्त नही था। सिर्फ एक बात साफ थी जुखराई गया।

स्तब्ध और चकित होकर पावेल ने उन दोनो आदमियो को अपने करीब आते देखा। अब क्या किया जाय ?

आखिरी लमहे मे उसे अपनी जेब मे पडे पिस्तौल की याद आई। जब वे लोग उसके पास से गुजरेंगे तो वह राइफिल वाले आदमी की पीठ पर गोली मार देगा और फियोदोर आजाद हो जायगा। तत्काल इस निश्चय पर पहुच जाने से उसके दिमाग की धुन्ध साफ हो गई। आखिर कल ही तो फियोदोर ने उससे कहा था, "इसके लिए हमे मजबूत आदमी चाहिए "

पावेल ने जल्दी से पीछे मुड कर देखा। शहर को जाने वाली सडक सुनसान थी, चिडिया का पूत भी वहा नही था। सामने एक औरत हल्का-सा कोट पहने तेजी से सडक पार कर रही थी। वह कोई गडबड नही करेगी। दोराहे की दूसरी सडक को वह नही देख पा रहा था। दूर, स्टेशनवाली सडक पर जरूर कुछ आदमी दिखाई दे रहे थे।

पावेल आगे बढ कर सडक के किनारे पर आ गया। जुखराई ने जब उसे देखा तब दोनो के दरम्यान सिर्फ कुछ कदमो का फासला था।

जुखराई ने उसे अपनी कनखियो से देखा और उसकी घनी भवें कापी। इस अप्रत्याशित मुलाकात के कारण उसकी चाल धीमी हो गई। सगीन उसकी पीठ मे चूभी।

"जरा तेजी से, वर्ना मैं इस कुन्दे से तुम्हे खदेडूगा !" सिपाही ने अपनी फटी हुई तेज आवाज मे कहा।

जुखराई ने कदम तेज कर दिए। वह पावेल से बात करना चाहता था, मगर रुक गया, उसने सिर्फ अपना हाथ हिलाया, जैसे अभिवादन कर रहा हो।

इस डर से कि कही उस पीली मूछ वाले सिपाही का ध्यान उस पर न पड जाय, पावेल जुखराई के पास से गुजरने पर अलग हट गया जैसे उसे इस सब से कोई वहस न हो।

मगर उसके दिमाग मे यही चिन्ता चक्कर लगा रही थी "अगर कही मेरा निशाना चूक गया और गोली जुखराई के लगी "

वह पेतल्युरा सिपाही अब एकदम उसके पास आ गया था और सोचने के लिए समय नहीं था।

जैसे ही वह पीली मूछ वाला सिपाही उसके बराबर आया, पावेल झपटकर उस पर कूद पडा और राइफिल पकड कर उसकी नली झटके से नीचे कर दी।

संगीन एक पत्थर से टकराई और रगड लगने की आवाज पैदा हुई।

यह हमला एकदम अनचिते मे हुआ था जिससे थोडी देर को तो सिपाही सकते मे आ गया। फिर उसने जोर से राइफिल अपनी तरफ खीची। राइफिल पर अपना पूरा वजन डालते हुए पावेल ने उस पर अपनी जकड कायम रखी। धाय से एक गोली छूटी और एक पत्थर से टकराई और छिछलती हुई सू की आवाज के साथ गड्ढे मे जा गिरी।

गोली की आवाज सुन कर जुखराई कूद कर अलग हो गया और घूमा। सिपाही पावेल के हाथ से राइफिल को छुडाने के लिए पूरी ताकत लगा रहा था। पावेल की बाहे बुरी तरह ऐंठ गई थी, मगर राइफिल पर अपनी पकड उसने नही छोडी थी। गुस्से से पागल पेतल्युरा सिपाही पावेल पर तेजी मे झपटा और उसने उसे जमीन पर गिरा दिया, मगर तब भी राइफिल को वह उसके हाथ से नही छुडा सका। पावेल गिर पडा, मगर वह सिपाही भी उसके सग गिरा और इस नाजुक वक्त मे दुनिया की कोई ताकत उसके हाथ से राइफिल नही छुडा सकती थी।

दो डगो मे जुखराई इन एक-दूसरे मे गुथे हुओ के पास पहुच गया। उसकी फौलादी मुट्ठी उठी और सिपाही के सिर पर जाकर गिरी। एक सेकंड मे जुखराई ने उस पेतल्युरा सिपाही को खीच कर पावेल से अलग कर दिया और जब दो सीसे की तरह भारी घूसे उसके चेहरे पर पडे तो उसका बेजान शरीर वही ढेर हो गया और सडक के पास के गड्ढे मे जा गिरा।

जिन मजबूत हाथो ने वे घूसे रसीद किये थे उन्होंने पावेल को जमीन से उठाया और उसे अपने पैरो पर खडा किया।

विक्टर अभी उस दोराहे से करीब सौ कदम गया था। वह एक फ्रासीसी गाने की धुन सीटी मे बजाता चला जा रहा था। लिजा के सग अपनी उस मुलाकात ने और उसके इस वादे से कि वह कल उस वीरान फैक्टरी मे उससे मिलेगी, विक्टर का दिल जोश मे था।

स्कूल के छटे हुए बदमाशो में यह अफवाह गर्म थी कि इश्क के मामलो मे लिजा सुखार्को काफी दिलेर है। ढीठ और घमडी सेमयन जालीवानोव ने तो एक बार यह कहा भी था कि लिजा अपने-आपको उसे समर्पित कर चुकी

है और गोकि विक्टर को सेमियन की बात पर यकीन नही आता था, तो भी इसमे शक नही कि लिजा उसे काफी भेद-भरी मालूम होती थी। कल वह इस बात का पता लगा लेगा कि जालीवानोव की बात सच है या नही।

"अगर वह आती है तो मैं व्यर्थ सकोच न करूगा। और जो हो, इतना तो जरूर है कि वह अपने आपको चूमने तो देती है। और अगर सेमियन सच बोलता है तो " यहा उसके विचार रुक गये जब वह दो पेतल्युरा सिपाहियो को रास्ता देने के लिए एक तरफ को हटा। उनमे से एक दुमकटे घोडे पर सवार था और एक जीन की बाल्टी उसके हाथ मे लटक रही थी—स्पष्ट ही वह घोडे को पानी पिलाने ले जा रहा था। दूसरा सिपाही जो एक छोटा-सा कोट और नीले रग का ढीला-ढाला पतलून पहने था, उसके सग-सग पैदल चल रहा था। उसका हाथ घुडसवार के घुटने पर था और वह कोई मजेदार कहानी सुना रहा था।

विक्टर ने उन्हे गुजर जाने दिया और वह फिर अपने रास्ते पर बढने ही वाला था कि बडी सडक पर राइफिल दगने की एक आवाज हुई और वह वही स्तब्ध हो गया। वह घूमा और उसने घुडसवार को गोली की आवाज की दिशा मे अपने घोडे को एड लगाते देखा। दूसरा सिपाही अपनी तलवार को हाथ का सहारा दिये उसके पीछे-पीछे दौडा।

विक्टर भी उनके पीछे-पीछे भागा। वह बडी सडक पर लगभग पहुच गया था जब दूसरी गोली छूटने की आवाज आई और वह घुडसवार बेतहाशा सरपट घोडा दौडाता हुआ आया। वह घोडे को अपनी एडी से और जीन वाली बाल्टी से एड लगा रहा था और पहले ही फाटक पर पहुच कर घोडे से कूदा और चिल्ला कर हाते के अन्दर के लोगो से बोला

"दौडो उन्होने हमारे एक आदमी को मार डाला है!"

मिनट भर बाद कई आदमी अपनी राइफिलो मे गोली डाल कर बोल्ट चढाते और दौडते हुए हाते से बाहर आये।

विक्टर पकड लिया गया।

अब तक बहुत-से लोग सडक पर जमा हो गये थे जिन्हे शहादत देने के लिए रोक लिया गया था। उनमे विक्टर और लिजा भी थे।

लिजा डर के मारे अपनी जगह पर जम सी गई थी, इसलिए उसने भागते हुए जुखराई और कोर्चागिन को अच्छी तरह देखा था। और उसे इस बात मे बहुत अचम्भा हो रहा था कि जिस लडके ने सिपाही पर हमला किया था, वह वही था जिससे तोनिया उसे मिलाना चाहती थी।

पावेल और जुखराई बाडी फादकर एक बागीचे मे पहुचे ही थे कि वह घुडसवार उधर से सडक पर सरपट आता दिखाई दिया। उसने जुखराई को

हाथ मे राइफिल लिए भागते और उस होश-हवास-गुम सिपाही को खडे होने की कोशिश करते देखा। घुडसवार ने बाडी की तरफ जाने के लिए घोडे को एड लगाई।

जुखराई घूमा। उसने राइफिल उठाई और अपना पीछा करने वाले पर गोली दाग दी। पीछा करने वाला घुडसवार घूमा और भाग खडा हुआ।

वह सिपाही किसी तरह, अपने कटे-फटे लहू-लुहान ओठो के कारण बहुत मुश्किल से बतला रहा था कि क्या हुआ था।

"अबे गधे, तेरी नाक के नीचे से कैदी भाग गया ! क्या मतलब है इसका ? तेरे चूतड पर पच्चीस कोडे पडेंगे।"

उस सिपाही ने गुस्से से जवाब दिया, "बडे होशियार बन रहे हो ! मेरी नाक के नीचे से, हु ! मुझे क्या पता था कि वह दूसरा हरामी का पिल्ला पागल की तरह मुझ पर कूद पडेगा ?"

लिजा से भी पूछ-ताछ की गई। उसने भी वही कहानी बताई जो उस सिपाही ने बताई थी, मगर उसने यह नही बताया कि वह हमला करने वाले को जानती थी। बहरसूरत, उन सबको कमाडैण्ट के दफ्तर ले जाया गया और शाम तक ही कही उनको वहा से छुट्टी मिली।

कमाडैण्ट साहब ने खुद ही लिजा को घर तक पहुचाने का प्रस्ताव किया, मगर उसने इन्कार कर दिया। उनके मुह से वोदका की बू आ रही थी और यह प्रस्ताव खतरे से खाली नही था।

विक्टर ने लिजा को घर पहुचाया।

अभी स्टेशन काफी दूर था और लिजा की बाह मे बाह डाले चलते हुए विक्टर इस घटना का भला मना रहा था जिसने उसे यह सुयोग दिया।

अपने घर के काफी पास पहुचने पर लिजा ने पूछा, "तुम्हे कुछ मालूम है कि उस कैदी को किसने छुडाया ?"

"नही तो। मैं क्या जानू ? जान भी कैसे सकता हू ?"

"तुम्हे याद है उस शाम तोनिया एक लडके का हमसे परिचय कराना चाहती थी ?"

विक्टर रुक गया।

आश्चर्य से उसने पूछा, "पावेल कोर्चागिन ?"

"हा, मेरा खयाल है, उसका नाम कोर्चागिन ही था। याद है, कैसे अजीब तरीके से वह बाहर निकल गया था ? वही लडका था।"

विक्टर ठगा-सा खडा था।

उसने लिजा से पूछा, "पक्की तरह कह सकती हो ?"

"हा, मुझे उसका चेहरा अच्छी तरह याद है।"

"तुमने यह बात कमाईण्ट को क्यो नही बतलाई ?"

यह सुनकर लिजा को क्रोध आ गया।

"तुम सोचते हो कि मैं ऐसी कमीनी हरकत कर सकती हू ?" उसने कहा।

"कमीनी ? सिपाही पर किसने हमला किया, यह बतलाने को तुम कमीनी हरकत कहती हो ?"

"और नही तो क्या, यह कोई अच्छा काम है ? तुम शायद भूल गये हो कि उन्होने क्या-क्या किया है ? तुम्हे कुछ पता है कि स्कूल मे कितने यहूदी लडके हैं जिनके मा-बाप मार डाले गए हैं और तब भी तुम चाहते हो कि मैं कोर्चागिन के बारे मे बतला देती ? मुझे दु ख है, मैं तुमको ऐसा नही समझती थी।"

लेशचिन्स्की को लिजा के जवाब से बडा आश्चर्य हुआ। लेकिन चूकि उसके सग झगडा करना उसकी योजना के अनुकूल नही था, इसलिए उसने बात का विषय बदल दिया।

"नाराज न हो लिजा, मैं तो सिर्फ मजाक कर रहा था। मुझे नही मालूम था कि तुम इस कदर खरी और सच्ची हो।"

"मजाक बहुत भद्दा था," लिजा ने खुश्की से जवाब दिया।

उससे विदा होने समय विक्टर ने पूछा, "तो तुम आओगी न लिजा ?"

लिजा ने अस्पष्ट-सा उत्तर दिया, "कह नही सकती।"

शहर वापिस आते हुए विक्टर इस मामले पर गौर करने लगा।

"कुमारी जी, आप भले ही इसे कमीनी हरकत समझें, मगर मेरा तो खयाल कुछ और ही है। यो जहा तक मेरा ताल्लुक है, किसने किसको छुडाया, मेरे लिए सब बराबर है।"

एक पुराने पोलिश परिवार की सन्तान होने के नाते, बहैसियत एक लेशचिन्स्की के, उसको दोनो पक्षो से एकसी नफरत थी। एकमात्र सरकार जिसे वह मान्यता दे सकता था, पोलिश थैलीशाहो की सरकार थी और वह जल्द ही पोलिश फौजो के साथ आने वाली थी। वह तो खैर जब होगा तब होगा, मगर उस हरामजादे कोर्चागिन से पिंड छुडाने का यह अच्छा मौका था। इसमे क्या शक कि उसकी गर्दन तो मरोड ही दी जायगी।

विक्टर अपने परिवार का अकेला सदस्य था जो शहर मे रुक गया था। वह अपनी एक चची के साथ रह रहा था जो शकर के कारखाने के सहायक मन्नालक की पत्नी थी। उसके परिवार के लोग कुछ दिनो से वारसा मे रह रहे थे जहा उसके पिता—सिगिसमण्ड लेशचिन्स्की, एक ऊचे पद पर थे।

विक्टर कमाडेंट के दफ्तर तक गया और दरवाजे से अन्दर घुस गया।

थोडी देर बाद वह चार पेतल्यूरा सिपाहियो के सग कोर्चागिन के मकान की तरफ चला जा रहा था।

- उसने एक खिड़की की तरफ, जिससे रोशनी आ रही थी, इशारा करते हुए धीरे से कहा, "वही जगह है। अब मैं जाऊ ?" उसने अपने बगल मे खड़े ज़ोरू जी से पूछा।

"हा, अब तुम जा सकते हो, बाकी बातें सब मैं देख लूगा। यह खबर देने के लिए तुम्हारा शुक्रिया।"

विक्टर पैदल पटरी पर होकर तेजी से घर की ओर चला।

पावेल की पीठ पर आखिरी प्रहार हुआ जिसने पावेल को ढकेल कर उस अधेरे कमरे मे डाल दिया जहा पर वे लोग उसे ले गये थे और उसकी फैली हुए बाहे सामने की दीवार से जा टकराई। अपने आस-पास टटोलने हुए उसको ओठे जैसी कोई चीज मिली और वह बैठ गया। उसका शरीर और उसका मन दोनो घायल थे और दर्द कर रहे थे।

उसकी गिरफ्तारी बिल्कुल अप्रत्याशित थी। आखिर उन पेतल्युरा सिपाहियो को उसका पता कैसे चला ? यह बात पक्की है कि किसी ने उसे देखा नही था। अब इसके बाद क्या होगा और जुखराई कहा है ?

उसने जुखराई को विल्म्का के घर पर छोड़ा था और फिर वहा से मर्गेई के यहा चला गया था जबकि जुखराई वहा पर ठहर कर शाम होने का इन्तजार कर रहा था ताकि चुपके से शहर से बाहर निकल जाय।

पावेल ने सोचा, "अच्छा हुआ, मैंने रिवाल्वर कौए के घोंसले मे छिपा दिया था। अगर कहीं वह चीज उन्हे मिल जाती तो मेरा काम तमाम था। मगर, आखिर उन्हे मेरा पता चला कैसे ?" यह सवाल उसे तग कर रहा था और इसका कोई जवाब उसके पास नही था।

पेतल्युरा सिपाहियो ने कोर्चागिन के मकान के कोने-कोने की तलाशी ली थी मगर उन्हे कुछ खास मिला नही। आर्तेम अपना सबसे बढ़िया सूट और अकार्डियन बाजा गाव ले गया था और उसकी मा अपने साथ एक ट्रक ले गयी थी। लिहाजा, घर मे कोई खास चीज बची न थी जिसे सिपाही ले जाते।

बहरहाल, कोतवाली तक का सफर एक ऐसी चीज थी जिसे पावेल कभी नही भूलेगा। रात काजल की तरह काली थी, आसमान पर बादल छाये हुए थे और वह चारो तरफ से बेरहम ठोकरे खाता हुआ अधे और नीम-पागल आदमी की भाति किसी तरह लुढ़कता चल रहा था।

अगले कमरे मे, जिसमे कमाडैण्ट के मन्तरी रहते थे, दरवाजे के पीछे उसे आवाजें सुनाई दी। दरवाजे के नीचे से प्रकाश की पतली रेखा दिखाई दे रही थी। पावेल उठ खड़ा हुआ और दीवार के सहारे-सहारे रास्ता पहचानता हुआ कमरे का चक्कर लगा आया। ओठे के सामने उसे एक खिड़की मिली

जिसमें ठोस लोहे के नुकीले डडे लगे हुए थे। उसने उनको अपने हाथ से परखा—वे अपनी जगह पर बहुत मजबूती से मढ़े हुए थे। जाहिर है, यह जगह पहले माल-असबाब रखने के काम आती होगी।

वह दरवाजे तक पहुचा और वहा खडा होकर पल भर कान लगाये सुनता रहा। फिर उसने हलके से दरवाजे के हैंडिल को दबाया। दरवाजा चू से बोला, जो पावेल को बहुत नागवार मालूम हुआ, और उसने दबी जबान मे उसको हजार गालिया दी।

दरवाजे की उस जरा सी सन्ध मे से उसे दो दल्लडे पैर जिनके अगूठे टेढे थे, चबूतरे से नीचे झूलते हुए दिखाई दिये। उसने एक बार और हलके से हैंडिल को दबाया, पर दरवाजे ने और भी जोरो से प्रतिवाद किया। तभी एक बिखरे बालो वाली आकृति, जिसका चेहरा नींद के कारण सूजा हुआ था, अपने चबूतरे पर से उठी और अपने गदे जू भरे सिर को पाचो उगलियो से खबर-खबर खुजलाती हुई उसको बेतहाशा गालिया सुनाने लगी। गालियो का यह बीभत्स प्रवाह बन्द होने पर उस आदमी ने अपने ओठे के सिरे पर रखी हुई राइफिल की तरफ हाथ बढाया और गुस्से से बोला

"दरवाजा बन्द कर दो और अगर दुबारा फिर मैंने तुम्हे बाहर झाकते देखा तो मैं तुम्हारा "

पावेल ने दरवाजा बन्द कर दिया। बगल के कमरे से हसी का कहकहा सुनाई दिया।

उस रात वह बहुत कुछ सोचता रहा। लडाई मे हिस्सा लेने की उसकी पहली कोशिश का नतीजा उसके लिए बुरा ही हुआ था। पहले कदम मे ही वह पकडा गया था और अब चूहेदानी मे फसे हुए चूहे की तरह यहा पडा था।

तब भी वह उठ कर बैठ गया और धीरे-धीरे बेचैन अर्द्ध-निद्रा की हालत मे पहुच गया और उसकी आखो के आगे उसकी मा का हड्डिया निकला हुआ झुर्रीदार चेहरा और आखें आई जिन्हें वह प्यार करता था। उसने सोचा, "अच्छा ही है कि वह यहा नहीं है—दर्द कम होगा।"

खिडकी में से रोशनी आ रही थी और फर्श पर एक भूरे रग का धुधला चौकोन बना रही थी।

अधेरा धीरे-धीरे हट रहा था। पौ फट रही थी।

छः

उस पुरानी हवेली की सिर्फ एक खिडकी मे रोशनी चमक रही थी, परदे खिंचे हुए थे। बाहर ट्रेसोर, जिसे रात भर के लिए जंजीर लगा दी गई थी, अचानक अपनी भारी गूंजती हुई आवाज मे भूका।

नीद के कुहासे मे तोनिया ने अपनी मा को मद्धिम आवाज मे बोलते हुए सुना।

"नही, अभी वह सोई नही है। अन्दर आओ, लिजा।"

उसकी सहेली के हलके-हलके कदमो ने और फिर उसके आवेगपूर्ण गर्म आलिंगन ने उसकी नीद भगा दी।

तोनिया के चेहरे पर जर्द मुस्कराहट थी।

"मुझे बडी खुशी हुई कि तुम आई, लिजा। पापा का सकट कल टल गया और आज वह पूरे दिन गहरी नीद मे सोते रहे। कई रात जागने के बाद आज मा को और मुझे भी कुछ आराम करने का मौका मिला। मुझे सारी खबरें बतलाओ।" तोनिया ने अपनी सहेली को खीच कर पास ही कौच पर बिठा लिया।

"ओह, तमाम खबरें ही खबरें हैं, मगर उनमे से कुछ ऐसी है जो सिर्फ तुम्हारे कानो के लिए हैं।" लिजा एकातेरीना मिखाइलोवना को चचल मानी-खेज नजरो से देखती हुई मुस्कराई।

तोनिया की मा भी मुस्कराई। वह छत्तीस साल की प्रौढ स्त्री थी, मगर उसकी चाल-ढाल मे जवान लडकी का सा फुर्तीलापन था। उसकी भूरी-भूरी समझदार आखें थी और उसका चेहरा खूबसूरत तो नही, मगर देखने मे भला जरूर मालूम होता था।

"मैं दो-चार मिनट मे ही बहुत खुशी से तुम लोगो को आपस मे बात करने के लिए अकेला छोड दूगी, मगर पहले मै वे खबरे सुनना चाहती हू जो सबके कानो के लिए है," उसने दीवान के पास अपनी कुर्सी खीचते हुए मजाक के स्वर मे कहा।

"अच्छा, तो पहली बात तो यह है कि हमारी स्कूल की पढाई खतम। बोर्ड ने सातवी जमात वालो को ग्रेजुएशन सर्टिफिकेट देने का फैसला किया है। मैं तो सचमुच खुश हू। उस अलजेबरा-ज्योमेट्री के मारे तो नाक मे दम हो गया था! भला बताओ, इससे किसी का क्या फायदा? लडके मुमकिन है, आगे भी अपनी पढाई जारी रखे, गोकि उन्हे खुद पता नही कि चारो तरफ के इस लडाई-झगडे के चलते वे कहा और कैसे आगे बढ सकेंगे। सचमुच बडी भयानक

बात है . जहा तक हमारी बात है, हमारी शादी हो जायगी और बीवियो को अलजेबरा की जरूरत नही पडती," कह कर लिजा हसने लगी ।

थोडी देर लडकियो के सग बैठ कर एकातेरीना मिखाइलोवना अपने कमरे मे चली गई ।

अब लिजा तोनिया के और पास आ गई और उसे अपनी बाहो मे लेकर धीमे-धीमे फुसफुसा कर उसे चौराहे पर की वारदात सुनाई ।

"तोनेच्का, तुम मेरे आश्चर्य की कल्पना कर सकती हो जब मैंने देखा कि वह लडका जो भागा जा रहा था बूझो कौन था ?"

तोनिया ने, जो बडे ध्यान से सुन रही थी, कधे उचका कर अपनी असमर्थता बतलाई ।

"कोर्चागिन !" लिजा ने अधीर होकर उगल दिया ।

तोनिया चौक गई और उसे झुरझुरी-सी मालूम हुई ।

"कोर्चागिन ?"

तोनिया पर उसकी बात का जो असर हुआ था, उसे देख कर लिजा बहुत खुश हुई और विक्टर के सग अपने झगडे की बात बतलाने लगी ।

अपने किस्से की रौ मे लिजा ने यह नही देखा कि तोनिया का चेहरा पीला पड गया था और उसकी उगलिया रह-रह कर बेचैनी से अपने नीले ब्लाउज को पकड लेती थी । लिजा को क्या पता कि कैसे तोनिया का दिल चिन्ता के मारे घुटा जा रहा था और न वह यही समझ सकी कि तोनिया की खूबसूरत आखो की लम्बी बरोनिया क्यो रह-रह कर काप जाती थी ।

लिजा ने नशे मे चूर खोह जी का जो किस्सा सुनाया, उसकी तरफ तोनिया ने कोई ध्यान नही दिया । सिर्फ एक विचार उसके दिमाग मे जैसे कील सी ठोक रहा था, "अच्छा, तो विक्टर लेशचिन्स्की को मालूम है कि उस सिपाही पर किसने हमला किया ! ओह लिजा, तूने विक्टर को क्यो बतलाया ?" और न चाहते हुए भी यह बात उसके मुह से निकल ही पडी ।

"क्या कहा तुमने ?" लिजा एकाएक उसका मतलब नही समझ सकी ।

"तुमने लेशचिन्स्की को पावलूशा . यानी कोर्चागिन के बारे मे क्यो बतलाया ? वह जरूर उसके साथ दगा करेगा .."

"अरे नही !" लिजा ने प्रतिवाद किया, "मैं नही समझती कि वह ऐसा नीच काम करेगा । और क्यो करेगा ? उसका फायदा ?"

तोनिया उठ कर बैठ गई और अपने घुटनो को इतने जोर से दबाया कि उनमे दर्द होने लगा ।

"तुम नही समझती लिजा ! उसमे और कोर्चागिन मे दुश्मनी है, और

इसके अलावा कुछ और भी है तुमने विक्टर को पावलूशा के बारे मे वतला कर वहुत बडी भूल की ।"

अब तोनिया की उद्विग्नता की तरफ लिजा का ध्यान गया और जिस तरह तोनिया अनजाने मे ही कोर्चागिन को पावलूशा कह रही थी, उससे लिजा की आखे एक ऐसी चीज के बारे मे खुली जिसके सम्बध मे वह अब तक सिर्फ अटकल लगाया करती थी ।

उसने अपने आपको मन ही मन अपराधी महसूस किया और चुप्पी मे डूब गई ।

उसने सोचा, "अच्छा तो यह बात सही है । मगर कैसी अजीब बात है कि तोनिया . एक मामूली मजदूर से प्रेम करे ।" लिजा इस चीज के बारे मे वहुत बात करना चाहती थी, मगर-अपनी सहेली का खयाल करके रुक गई । किसी तरह अपने अपराध का मार्जन करने के खयाल से उसने तोनिया के हाथ पकड लिये और बोली

"तुम क्या बहुत चिंतित हो गई तोनिया ?"

तोनिया ने खोये-खोये ढग मे जवाब दिया, "नही, हो सकता है मेरा खयाल गलत हो और विक्टर मेरे अनुमान मे ज्यादा शरीफ निकले ।"

इसके बाद एक भद्दी सी, दम घोटनेवाली खामोशी छा गई जो उनके एक सहपाठी के आने से टूटी । इस सहपाठी का नाम था देमियानोव । यह एक वहुत झेपू, ढीलू-सा लडका था

अपने दोस्तो को विदा करके तोनिया बहुत देर तक फाटक से टिकी शहर को जाने वाली सडक की काली-काली मिट्टी को देखती रही । वह सदा-सदा की घुमक्कड हवा, नम और वसन्त की गीली धरती की सीली हुई वू से लदी हुई, उसके चेहरे मे लग रही थी । शहर के मकानो की खिडकियो से मद्धिम लाल-लाल रोशनी झाक रही थी । वही था शहर जिसकी जिन्दगी उसकी अपनी जिन्दगी मे अलग थी और वही पर, उन्ही मे मे किसी एक छत के नीचे था अपने ऊपर आने वाले खतरे से वेखबर उसका अक्खड और तेजमिजाज दोस्त पावेल । शायद वह उसके बारे मे भूल भी गया हो— उस आखिरी मुलाकात के बाद न जाने कितने दिन गुजर गए थे । इस बार वही गलती पर था, मगर वे सब बातें तो आई-गई हो गई । कल वह उससे जाकर मिलेगी और उनकी दोस्ती फिर से वापस आ जायगी, ऐसी दोस्ती जिसमे प्राण है, गति है, जो दिल को गरमाती है । वह दोस्ती वापस आयेगी, इसमे तोनिया को जरा भी शक न था—बशर्ते यह रात दगा न करे, यह रात जो तमाम बुराइयो का घर है, जो पावेल की ताक मे बैठी हुई जान पडती है ठडक वहुत बढ गई थी और सडक पर आखिरी वार निगाह डालती हुई तोनिया अन्दर चली गई ।

"बशर्ते रात दगा न करे," यही खयाल उसके दिमाग पर उस समय भी छाया हुआ था जब वह कम्बल मे लिपटी-लिपटी नींद में डूब गई।

तोनिया खूब सवेरे उठी और जल्दी-जल्दी कपडे पहने। तब तक और कोई नही उठा था। वह चुपके से घर से निकल गई ताकि घर मे और कोई न जागे, बडे-बडे झबरे बालोवाले ट्रेसोर की जजीर खोली और उसे साथ लेकर शहर की ओर चल पडी। कोर्चागिन के घर पहुच कर वह पल भर को उसके दरवाजे पर ठिठकी, मगर फिर उसने ठेल कर दरवाजा खोल दिया और भीतर सहन मे चली गई। ट्रेसोर दुम हिलाता हुआ तेजी से आगे निकल गया . ।

आर्तेम उसी सुबह गाव से लौटा था। जिस लोहार के यहा वह काम करता था, वही अपनी गाडी पर बिठाल कर उसे शहर तक लाया था। घर पहुच कर उसने अपनी कमाई का आटे का बोरा कधे पर लादा और अन्दर सहन मे चला गया। उसके पीछे-पीछे उसकी बाकी चीजें लिए वह लुहार था। खुले हुए दरवाजे के आगे आर्तेम ने बोरा जमीन पर रख दिया और पुकारा

"पावका !"

कोई जवाब नही मिला।

"क्यो क्या अडचन है ? सीधे अन्दर क्यो नही चले जाते," लुहार ने उसके बराबर आकर कहा।

अपनी चीजें रसोईघर मे रख कर आर्तेम बगलवाले कमरे मे गया। वहा उसने जो दृश्य देखा, उसमे वह बिल्कुल स्तब्ध हो गया, वह सारी जगह उलट-पुलट दी गई थी और पुराने कपडे फर्श पर बिखरे पडे थे।

आर्तेम की समझ मे कुछ नही आया। वह मुह ही मुह मे बोला, "यह मामला क्या है ?"

"कुछ घोटाला जरूर है", लुहार ने उसकी तसदीक करते हुए कहा।

आर्तेम को अब गुस्सा आ रहा था, बोला "मगर यह छोकरा गया कहा ?" लेकिन वह जगह वीरान थी और कोई जवाब देने वाला न था।

लुहार ने सलाम किया और चला गया।

आर्तेम बाहर हाते में गया और इधर-उधर देखने लगा।

"कुछ मेरी समझ मे नही आ रहा है ! सारे दरवाजे खुले हैं और पावका का कही पता नही !"

तभी उसने पीछे मे कदमो की आहट सुनी। घूम कर उसने देखा, एक बडा-सा कुत्ता जिसके कान खडे थे, उसके सामने खडा है। एक लडकी दरवाजे मे से घर की तरफ आ रही थी।

उसने आर्तेम को गौर से देखते हुए धीमे स्वर मे कहा, "पावेल कोर्चागिन से मुझे एक जरूरी काम के लिए मिलना है।"

"मिलना तो मुझे भी है। मगर वह गया कहा, यह किसे मालूम। मैं यहा आया तो घर एकदम खुला हुआ था और पावका का कही पता न था। अच्छा तो तुम भी उसी की तलाश मे हो ?" उसने लडकी से पूछा।

लडकी ने एक और सवाल से जवाब दिया

"आप कोर्चागिन के भाई आर्तेम हैं ?"

"हा। क्यों ?"

जवाब देने के बजाय वह लडकी भयभीत और त्रस्त होकर खुले हुए दरवाजे को देखती रही। उसने सोचा, "मैं कल रात ही क्यों नही आई ? यह नही हो सकता .यह नही हो सकता. " और उसका दिल और भी भारी हो गया।

"आपने दरवाजे को खुला पाया और पावेल नही था ?" अपनी ओर आश्चर्य से देखते हुए आर्तेम से उसने पूछा।

"और क्या ? मैं जान सकता हू कि पावेल से तुम्हे क्या काम है ?"

तोनिया आर्तेम के और पास आ गई और आसपास निगाह दौडाते हुए उसने रुक-रुक कर कहा

"मैं ठीक नही कह सकती। मगर मेरा ख्याल है कि अगर पावेल घर पर नही है तो वह जरूर पकडा गया।"

आर्तेम चौंक पडा। "पकड गया ? किस बात के लिए ?"

"चलिए, हम लोग अन्दर चलें," तोनिया ने कहा।

तोनिया को जो कुछ मालूम था उसने सब बतला दिया और आर्तेम खामोश सुनता रहा। उसकी कहानी खतम होते-होते आर्तेम बहुत खिन्न और परेशान हो गया था।

उसने निराशा के स्वर मे धीमे से बुदबुदा कर कहा, "क्या मुसीबत है ! जैसे यो ही कम परेशानी थी ! अब समझ मे आया कि यह जगह क्यों उलटी-पलटी पडी है। इस छोकरे को क्या पडी थी कि इस सब बखेडे मे जा कूदा वह इस वक्त होगा कहा ? और तुम कौन हो ?"

"मैं जगल के वार्डेन तुमानोव की लडकी हू। मैं पावेल की दोस्त हू।'

"अच्छा," आर्तेम ने बिना कुछ ज्यादा समझे, स्वर को खीच कर कहा। "कहा तो मैं इस लडके को खिलाने के लिए यह आटा लेकर आया और अब यह देखो "

तोनिया और आर्तेम एक-दूसरे को खामोशी से देखते रहे।

"अब मुझे चलना चाहिए," तोनिया ने जाने के लिए प्रस्तुत होते हुए धीमे से कहा। "मुमकिन है, वह आपको मिल जाय। मैं शाम को फिर पता लेने आऊंगी।"

आर्तेम ने बिना कुछ बोले सिर हिला कर हामी भरी।

अपनी जाड़े की नींद से अभी-अभी जागी हुई एक नन्ही सी मक्खी खिड़की के कोने में भुन-भुन कर रही थी। एक पुराने खस्ताहाल कोच के सिरे पर एक नौजवान किसान औरत बैठी हुई थी। उसकी कुहनियां घुटनों पर टिकी थीं और उसकी सूनी आंखें गन्दे फर्श पर जमी थीं।

कमाण्डेण्ट मुंह के एक कोने में अटकी हुई सिगरेट को चबा रहा था। उसने अभी एक कागज पर बड़े बांकपन के साथ कुछ लिखकर खतम किया था। और जाहिर था कि वह अपने आप से बहुत खुश था। उसने "शेपेतोवका नगर-कमाण्डेण्ट, खोरुजी" के नाम से बहुत बना-बना कर दस्तखत किया था। दरवाजे पर अटेंशन की हालत में बूटों के बजने की आवाज आई। कमाण्डेण्ट ने आंखें उठा कर देखा।

उसके सामने बांह में पट्टी बांधे सलोमिगा खड़ा था।

"क्यों जी, कौन सी हवा तुमको उड़ा लाई?" कमाण्डेण्ट ने उसका स्वागत करते हुए कहा।

"अच्छी हवा नहीं है वह। एक बोगुनेस्त[1] ने मेरा हाथ चाक कर दिया।"

उस स्त्री की उपस्थिति का कुछ ख्याल न करते हुए सलोमिगा बुरी-बुरी गाली बकने लगा।

"तो फिर तुम यहां क्या कर रहे हो? सेहत बनाने आये हो?"

"सेहत बनाने का मौका हमें उस दुनिया में मिलेगा! यहां तो उन्होंने मोर्चे पर हमारी नाक में दम कर रखा है।"

कमाण्डेण्ट ने उसकी बात में बाधा दी और उस औरत को देख कर सिर हिलाया।

"उसके बारे में हम लोग बाद में बातें करेंगे।"

सलोमिगा धप्प से स्टूल पर बैठ गया और उसने अपनी टोपी उतारी जिसके माथे पर इनामल का बना एक त्रिशूल टंका हुआ था जो कि उक्रेनी राष्ट्रीय प्रजातन्त्र का निशान था।

उसने अपनी मद्धिम आवाज में कहना शुरू किया, "गोलुब ने मुझे भेजा है। रेगुलर सैनिकों का एक डिवीजन जल्दी ही यहां आने वाला है। यहां नगर में उनके लिए करने को बहुत कुछ रहेगा और उसके सारे इन्तजाम को ठीक-

---

१ लाल फौज की बोगुन रेजीमेन्ट के आदमी। १७वीं शताब्दी में उक्रेनी जनता के स्वाधीनता-संघर्ष के नेता बोगुन के नाम पर इस रेजीमेन्ट का नाम बोगुन रेजीमेंट पड़ा था।

ठाक करने का जिम्मा मुझे दिया गया है। हो सकता है कि 'चीफ' साहब खुद किसी बडे विदेशी आदमी के साथ यहा पर आयें। इसलिए मेरे 'दिल-बहलाव' की बात मुह पर भी नही लानी होगी। क्या लिख रहे हो ?"

कमाडेंण्ट ने सिगरेट मुह के एक कोने से निकाल कर दूसरे कोने मे लगा ली।

"यहा एक बहुत बदमाश लडका है। शैतान की आत ही समझो उसको। तुम्हे उस जुखराई की याद है न ? उसी ने रेलवे मजदूरो को हम लोगो के खिलाफ भडकाया था। हा, तो वह स्टेशन पर पकड लिया गया।"

"पकडा गया ? बडी बात ! हा, तो फिर क्या हुआ ?" सलोमिगा ने बात मे बहुत गहरी दिलचस्पी लेते हुए अपना स्टूल और पास सरका लिया।

"उसके बाद हुआ यह कि उस स्टेशन कमाडेंण्ट उल्लू के पट्ठे ओमेल-चेन्को ने एक कौसेक के पहरे मे उसको रवाना कर दिया और रास्ते मे इस लडके ने, जो हमारे यहा बन्द है, दिन दहाडे उस कैदी को छुडा लिया। उस कौसेक सिपाही के हथियार छीन लिये गए और दात तोड दिये गए, और कैदी नौ दो ग्यारह हो गया। जुखराई तो भाग गया, मगर इस छोकरे को हमने पकड लिया। देखो न, इस कागज मे सब कुछ लिखा हुआ है," कहते हुए उसने कई कागज सलोमिगा की तरफ बढाये।

सलोमिगा बायें हाथ से कागज के पन्नो को पलटता हुआ पूरी रिपोर्ट देख गया।

रिपोर्ट खतम करके उसने कमाडेन्ट की तरफ देखा।

"गरज उस लडके से तुम कुछ मालूम नही कर सके ?"

कमाडेन्ट परेशानी से अपनी टोपी के सिरे को खीचने लगा।

"मैं पाच दिन से उसके पीछे लगा हू, मगर वह इसके सिवा कुछ नही कहता कि 'मैं कुछ नही जानता और मैंने उसे नही छुडाया।' बडा मर्दूद लडका है साहब ! उस सिपाही ने, जिस पर यह सब गुजरी थी, उसको पहचान लिया—और लडके को देखते ही वह तो गुस्से से पागल हो गया और उसका बस चलता तो उसने वही उसका गला घोट दिया होता। वह तो बडी मुश्किल से मैं उस कौसेक को अलग कर पाया। और भई सच पूछो तो गुस्से के लिए उसके पास कारण भी था, क्योकि ओमेलचेंको ने स्टेशन पर, हाथ से कैदी निकल जाने देने के जुर्म मे, अपनी रायफिल साफ करने की छडी से पच्चीस छडिया भी तो उसके लगाई। अब उसको यहा और बन्द रखने मे कोई तुक नही है, इसलिए मैं ये कागजात हेडक्वार्टर भेजकर इजाजत मगा रहा हू ताकि इस हरामजादे को खतम कर दिया जाय।"

सलोमिगा ने नफरत से थूक दिया।

"कही मेरे हाथ मे होता यह लडका तो तुम देखते, मैं उससे कबुलवा कर छोडता। यह सब पूछ-ताछ वगैरह करने के मामले मे तुम कुछ यो ही से हो। और भला कभी किसी ने यह भी सुना है कि धर्मशास्त्र का विद्यार्थी कमाडैन्ट बन जाय! टडे का इस्तेमाल किया तुमने ?"

कमाडैन्ट को गुस्सा आ गया।

"देखो तुम हद से गुजरे जा रहे हो। अपना मजाक अपने ही पास रखो। यहा पर मैं कमाडैन्ट हू और तुम्हारा कोई हस्तक्षेप नही चाहता।"

सलोमिगा ने तैश मे आये हुए कमाडैन्ट को देखा और जोर से ठहाका मार कर हस पडा।

"हा हा हा देखो तुम पादरी के बेटे हो, इतना मत फूलो नही तो पेट फट जायगा। जहन्नुम मे जाओ तुम और तुम्हारे ममले। जरा मुझे यह बतलाओ कि समोगन (शराब) की दो बोतलें कहा से मिल सकती है ?"

कमाडैन्ट खिसियानी सी हसी हसा और बोला

"इन्तजाम हो सकता है।"

"जहा तक इस चीज का ताल्लुक है," सलोमिगा ने कागजात पर अपनी उगली गडाते हुए कहा, "अगर तुम वाकई उसका काम तमाम करना चाहते हो तो सोलह की जगह उसकी उम्र अठारह दिखलाओ। छ को आठ बना दो, नही तो मुमकिन है वे लोग पास न करे।"

उस मालगोदाम वाली कोठरी मे तीन लोग थे। एक दढियल बुड्ढा तार-तार कोट पहने ओठे पर करवट लेटा हुआ था। उसकी लकडी जैसी टागें लिनेन के चौडे-चौडे पतलूनों से ढकी थी जिन्हे उसने ऊपर समेट लिया था। उसे इसलिए गिरफ्तार किया गया था कि उसके यहा जिन पेतल्युरा सिपाहियो को टिकाया गया था, उनका घोडा उसके शेड से गुम हो गया था। एक अधेड औरत जिसकी छोटी-छोटी चपल आखें थी और नुकीली-सी ठुड्डी थी, फर्श पर बैठी हुई थी। वह समोगन बेच कर अपनी जीविका चलाती थी और उसको इस अभियोग मे यहा ला पटका गया था कि उसने एक घडी और कुछ दूसरी बेशकीमत चीजे चुराई हैं। कोर्चागिन बेहोशी की हालत मे खिडकी के नीचे एक कोने मे अपनी कुचली हुई टोपी का तकिया लगाये लेटा था।

एक नौजवान स्त्री उसी मालगोदाम मे लायी गयी। वह सिर मे एक रगीन रुमाल बाधे थी और दहशत के मारे उसकी आखें निकली पड रही थी।

वह एक-दो पल खडी रही और फिर शराब बेचनेवाली औरत के बगल मे बैठ गयी।

शराब बेचनेवाली ने आगन्तुक स्त्री को कुतूहलपूर्ण आखो से देखा और जल्दी-जल्दी कहा, "पकडी गई क्यो ?"

कोई जवाब नही मिला। मगर शराब बेचनेवाली स्त्री इतनी जल्दी छोडने वाली न थी।

"तुमको क्यो पकडा ? समागम के मामले मे तो नही ?"

किसान लडकी उठ खडी हुई और उसने इस हठीली बुढिया को देखा।

उसने धीमे से जवाब दिया, "नही, मुझे तो मेरे भाई के कारण पकडा है।"

"और तुम्हारा भाई कौन है ?" उस बुड्ढी स्त्री ने पूछा। वह तो जैसे उसके पीछे ही पड गयी थी।

अब बुड्ढा बोल उठा।

"तुम क्यो खामखा उसे तग कर रही हो। वह यो ही कुछ कम परेशान नही है। उस पर भी तुम बकबक लगाये हुए हो।"

वह स्त्री तेजी से ओठे की तरफ मुडी।

"तुम कौन होने हो मुझको बताने वाले कि मै क्या करू, क्या न करू ? मैं तुमसे तो बात कर नही रही हू।"

बुड्ढे ने थूका।

"उसे परेशान मत करो, मै तुमसे कहता हू।"

कोठरी मे फिर खामोशी छा गयी। उस किसान लडकी ने एक बडा-सा शाल बिछाया और अपने हाथ का तकिया लगाकर उस पर लेट गयी।

शराब बेचनेवाली ने खाना खाना शुरू किया। बूढा उठकर बैठ गया, फर्श पर पैर रख लिए, धीरे-धीरे अपने लिए एक सिगरेट बनाई और उसे सुलगा लिया। तीखे धुए के बादल फैल गये।

"इस बदबू मे तो कोई शाति से खा भी नही सकता।" औरत बडबडाई, गोकि उसके जबडे बदस्तूर काम कर रहे थे। "तुमने तो इस सारी जगह को धुए से भर दिया है।"

बूढे ने चिढ कर मजाक बनाते हुए जवाब दिया

"क्यो, वजन घटने का डर है क्या ? तुम्हारा यही हाल रहा तो जल्दी ही दरवाजे मे से निकलना मुश्किल हो जायगा। तुम इस लडके को कुछ खाने को क्यो नही देती ? सब का सब अपने ही पेट मे ठूस जा रही हो।"

उस औरत ने क्रोध का भाव दिखलाया।

"मैंने कोशिश की मगर उसे कुछ चाहिए ही नही। मगर तुम्हें इससे क्या

वहम ? तुम अपना मुह क्यो नही बद रखते—मै तुम्हारा खाना तो खा नही रही हू।"

लडकी उस बूढी स्त्री की तरफ मुडी और अपने सिर से कोर्चागिन की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा

"तुम्हे मालूम है कि इसे यहा पर क्यो लाया गया है ?"

बूढी स्त्री इस बात से खुश हो गयी कि उसको सम्बोधित किया गया। उसने झट जवाब दिया

"यही का लडका है—कोर्चागिन का छोटा लडका। उसकी मा रसोई-दारिन है।"

फिर लडकी की तरफ झुकते हुए उसने उसके कान मे कहा

"उसने एक बोल्शेविक को छुडाया था—एक मल्लाह को, जो यही मेरे पडोसी जोजलिना के यहा रहता था।"

उस नौजवान स्त्री को वे शब्द याद आये जो उसने बाहर चोरी से सुन लिए थे, "मै इन कागजात को हेडक्वार्टर भेज रहा हू ताकि इसका काम तमाम करने की इजाजत मुझे मिल जाय।"

एक के बाद दूसरी फौजी गाडी जक्शन पर आ रही थी और उनमे से रेगुलर सैनिको की बटालियन पर बटालियन निकल कर भीड की तरह फैल रही थी। जपोरोजेत्स नाम की बख्तरबद गाडी बगल की एक रेलवे लाइन पर धीरे-धीरे रेंग रही थी। इस गाडी मे चार डब्बे थे और उसकी लोहे की दीवारो मे तमाम रिविट लगे हुए थे। खुले हुए डब्बो मे से तोपें उतारी गई और माल के बद डब्बो मे से घोडे बाहर निकाले गये। घोडो पर वही जीन कसी गयी और घुडसवार, पैदल दस्तो की उस भीड मे से अपना रास्ता बनाते हुए, स्टेशन के यार्ड मे पहुचे जहा घुडसवारो की टुकडी कतार बना रही थी।

अफसरान अपनी टुकडियो के नम्बर पुकारते हुए इधर-उधर दौड रहे थे।

स्टेशन मे बर्र के छत्ते की सी भनभनाहट गूज रही थी। धीरे-धीरे उस शोर मचाती और भवर मे पडी चक्कर सी खाती बेतरतीब भीड को ठोक-पीट कर उसमे से बाकायदा प्लैटून बनाए गये और थोडी ही देर मे हथियारबद सिपाहियो का एक रेला नगर की ओर बढ चला। काफी रात तक गाडियो की चू-चरर-मरर सुनाई देती रही और राइफिल डिवीजन के पीछे-पीछे चलने वाले लोग सडक पर चलते रहे।

फुर्ती से मार्च करती हुई हेडक्वार्टर्स कम्पनी के साथ जुलूस खतम हुआ। कम्पनी मार्च करते हुए अपने एक सौ बीस कठो से गाती जा रही थी

कैसा है यह हो-हल्ला और कैसी सारी चकझक है
पेतल्यूरा और उसके चेले हैं, इसमें क्या शक है

पावेल कोर्चागिन खिडकी से बाहर झाकने के लिए उठा। भोर के धधलके मे उसने सडक पर गाडियो के खडखडाने और बहुत से पैरो के मार्च करने की आवाज सुनी और सुना बहुत से कठो को गाना गाते।

उसके पीछे से किसी की नर्म मद्धिम-सी आवाज आई

"शहर मे फौज आई है।"

कोर्चागिन घूमा।

बोलनेवाली वही लडकी थी जो एक रोज पहले वहा लाई गई थी।

कोर्चागिन उसकी कहानी सुन चुका था—उस शराब बेचनेवाली औरत ने खोद-खोद कर सारी बाते उससे मालूम कर ली थी। वह शहर से करीब पाच मील दूर एक गाव मे रहती थी जहा उनका बडा भाई ग्रित्स्को, जो अब लाल छापेमार था, गरीब किसानो की एक कमिटी का प्रधान रह चुका था।

जब बोल्शेविक वहा से चले तो ग्रित्स्को ने भी मशीनगन की पेटी अपनी कमर मे बाधी और उनके सग चल दिया। अब मौजूदा अधिकारी उसके घरवालो के पीछे हाथ धोकर पडे थे। ग्रित्स्को के घर मे जो एक अकेला घोडा था, वह भी छीन लिया गया था। उसका बाप कुछ दिन जेल मे भी रहा और वहा उसे बहुत-बहुत तकलीफो का सामना करना पडा। गाव का चौधरी—जो उन लोगो मे से था जिन पर ग्रित्स्को ने सख्ती से रोक लगाई थी—अब महज उन्हे सताने के लिए हमेशा उनके घर पर अजनबियो को लादता रहता था। परिवार अब बिल्कुल तबाह हो गया था। और अभी एक रोज पहले जब कमाण्डेण्ट एक तलाशी के सिलसिले मे उस गाव आया था, तो चौधरी उसे लेकर उस लडकी के घर पहुच गया। लडकी कमाडैण्ट साहब की आख पर चढ गई और दूसरे रोज सवेरे वह उसको "पूछताछ के लिए" अपने सग शहर ले आया।

कोर्चागिन सो नही सका। किसी करवट उसे चैन नही आ रहा था। उसके दिमाग मे एक ही सवाल चक्कर काट रहा था जिसको वह दिमाग से हटा नही पा रहा था और वह सवाल था "अब इसके बाद क्या होगा?"

उसका घायल जिस्म बुरी तरह दर्द कर रहा था। उस कौसैक सिपाही ने उसे बडी बेदर्दी से मारा था।

उसके दिमाग मे तमाम बुरे-बुरे विचार भीड लगा रहे थे। उनसे बचने के लिए पावेल दोनो स्त्रियो की फुसफुसाहट सुनने लगा।

बहुत ही धीमी आवाज मे, इतनी कि वह मुश्किल ही से सुनाई देती थी, लडकी बतला रही थी कि कैसे कमाडैण्ट ने उसे डराया-धमकाया, फुसलाया-

बहलाया और जब इतने पर भी उसने कमाडैण्ट को घुडक दिया तो वह गुस्से से लाल-पीला होता हुआ बोला - "मैं तुम्हे एक तहखाने मे बन्द कर दूगा जहा तुम मुझसे नही बच सकोगी।"

कोठरी के कोनो-अतरो मे अधकार छुपा बैठा था। और एक रात सामने थी—बेचैन दम घोटनेवाली रात। कैद मे यह पावेल की सातवी रात थी। मगर उसको लगता था कि जैसे यहा उसे महीनो हो गये है। फर्श बहुत सख्त था और उसके शरीर के जोड-जोड मे दर्द हो रहा था। अब उस पुराने मालगोदाम मे तीन लोग थे। उस शराबवाली औरत को खोरू जी साहब ने छोड दिया था ताकि वह जाकर कही से वोदका ले आये। बूढे दादा अपने ओठे पर पडे इतने इतमीनान से खर्राटे भर रहे थे जैसे वह अपने घर की गर्म अगीठी के ऊपर सो रहे हों, वह अपने दुर्भाग्य को बहुत धीरज और शान्ति के साथ सह रहे थे और रात भर गहरी नीद मे सोते थे। ख्रिस्तिना और पावेल लगभग अगल-बगल फर्श पर लेटे हुए थे। कल पावेल ने खिडकी मे से सर्गेई को देखा था जो बडी देर तक सडक पर खडा उदास आखो से मकानो की खिडकियो को देखता रहा था।

पावेल ने सोचा था, "उसे पता है कि मैं यहा हू।"

लगातार तीन दिन तक कोई उसके लिए खट्टीवाली काली रोटी लाया था—मगर कौन, यह पहरेदार न बतलाते थे। और दो दिन तक कमाडैण्ट ने बार-बार उससे सवाल पूछे थे।

इस सबका क्या मतलब है?

पूछताछ के दौरान मे उसने एक भी बात नही बतलाई, उलटे, हर चीज से उसने इनकार किया था। उसे खुद नही मालूम था कि वह क्यो चुप रहा। वह उन लोगों की तरह साहसी और मजबूत बनना चाहता था जिनके बारे मे उसने किताबो मे पढा था। मगर उस रात जब वह जेल ले जाया जा रहा था और उसको कैद करने वालो मे से एक ने कहा था, "हुजूर खोरू जी, इसकी फिजूल अपने साथ घसीटे ले चलने से क्या हासिल होगा? इसका तो बस एक ही इलाज है पीठ मे एक गोली मारिए और खत्म कीजिए झझट को," तो उसे डर लगा था। सचमुच, सोलह साल की उम्र मे मरने का खयाल बडा भयानक था! मरने का मतलब होगा कि वह फिर जिन्दा नही रहेगा।

ख्रिस्तिना भी सोच रही थी। उसे इस लडके से ज्यादा बाते मालूम थी। बहुत मुमकिन है कि इसे अभी मालूम ही न हो कि आगे इस पर क्या गुजरने वाली है वही बात जो उसने चुपके से सुन ली थी।

वह रात को बिस्तर मे पडा बेचैन करवटे बदलता रहा और सो नही सका। ख्रिस्तिना को उस पर दया आ रही थी। उसका मन पावेल के लिए

करुणा से भरा हुआ था, गो उसकी अपनी स्थिति भी उसकी छाती पर बोझ बनी हुई थी—कमाण्डैण्ट के इन शब्दों के भयावने अर्थ को भूलना नामुमकिन था. "कल मैं तुम्हे ठीक कर दूगा, अगर तुम मेरे सग नही आती तो मै तुम्हे थाने मे बन्द करवा दूगा और फिर वहा के कौसेक पहरेदार तुम्हे छोडने से रहे। लिहाजा तुम्हारे ही ऊपर है यह चीज, जिसे चाहो चुन लो।"

ओह ! कितनी कठिन बात है यह ! किसी तरफ से रहम की कोई उम्मीद नही ! इसमे उसकी क्या गलती थी कि भ्रिस्को बोल्शेविको से जा मिला ? जिन्दगी भी कितनी बेदर्द चीज है !

एक भोथा दर्द उसका गला घोट रहा था और असहाय निराशा और भय की यन्त्रणा मे वह बडे जोर-जोर से, मगर नि शब्द, सिसकिया ले रही थी जिससे उसका सारा शरीर काप-काप जाता था।

दीवार के पास कोने मे एक छाया हिल रही थी।

"तुम क्यो रो रही हो ?"

भरे हुए दिल से ख्रिस्तिना ने दबे स्वर मे अपने खामोश साथी को अपने दु ख की कहानी सुनाई। वह कुछ बोला नही, बस उसने अपना हाथ हल्के से उसके हाथ पर रख दिया।

अपने आसुओ को पीते हुए डरे हुए स्वर मे फुसफुसा कर लडकी ने कहा, "वे लोग मुझे सता-सताकर मार डालेंगे। मुझे कोई चीज नही बचा सकती !"

पावेल इस लडकी से आखिर क्या कहता ? कहने के लिए कुछ भी नही था। जिन्दगी दोनो को अपने फौलादी शिकजे मे लेकर पीसे डाल रही थी।

एक चीज यह हो सकती है कि कल जब वे लोग इसको लेने के लिए आयें, तो वह डट कर उनका मुकाबिला करे। मगर उससे होगा क्या ? वे लोग मार-मारकर उसका भुर्ता बना देंगे या सिर पर तलवार का एक वार होगा जो काम तमाम कर देगा। मगर इस दुखी लडकी को, चाहे जैसे हो, वह आराम पहुचाना चाहता था और शायद इसीलिए बडे प्यार से उसके हाथ को थपथपा रहा था। लडकी का सिसकना बन्द हो गया। बीच-बीच मे फाटक पर के सन्तरी का उधर से गुजरने वाले आदमी से घुडक कर पूछना सुनाई दे जाता, "कौन जा रहा है ?" और फिर खामोशी छा जाती। बूढे दादा गहरी नींद मे सो रहे थे। नातमाम मिनट धीरे-धीरे रेंग रहे थे। फिर पावेल ने उस लडकी की बाहों को अपने इर्द-गिर्द लिपटता महसूस किया और महसूस किया कि वह लडकी उसे अपनी तरफ खीच रही है। पावेल को बडा ताज्जुब हुआ।

"सुनो," उसके गर्म ओठ धीरे-धीरे कह रहे थे, "मेरे लिए कोई बचत नही है। अगर यह अफसर नही तो थाने पर के वे पहरेदार कोई-न-कोई मुझे

जरूर खराब करेगा। मैं तुमसे विनती करती हूं मेरे प्यारे, कि तुम मुझे ले लो ताकि वह कुत्ता मेरे शरीर को लेने वाला पहला व्यक्ति न हो।"

"यह तुम क्या कह रही हो, ख्रिस्तिना!"

मगर उन मजबूत बांहों ने उसे छोड़ा नहीं। उसके भरे-भरे गदराये हुए जलते हुए ओंठ उसके ओंठों में जा लगे—उनसे बचना मुश्किल था। लड़की के शब्द सरल थे, कोमल थे, प्यार में डूबे हुए थे और पावेल को पता था कि वह क्यों ऐसे शब्द बोल रही है।

फिर उसके लिए उसके परिवेश का अस्तित्व मिट गया। दरवाजे पर का ताला, लाल बालों वाला कौसेक, कमांडैण्ट, वह बेरहम मार-पीट, वे सात दम घोंटनेवाली बेचैन निद्रा-विहीन रातें—सब कुछ भूल गईं और क्षण भर के लिए केवल वे जलते हुए ओंठ और वह आंसुओं से भीगा हुआ चेहरा रह गया।

तभी एकाएक उसे तोनिया की याद आई।

"उसको मैं कैसे भूल गया? उसकी वे प्यारी-प्यारी आंखें जिनका कहीं कोई जवाब नहीं।"

उसने अपनी इच्छाशक्ति का सारा जोर लगाया और अपने को ख्रिस्तिना के आलिंगन से छुड़ा लिया। शराब पिये हुए आदमी की तरह वह लड़खड़ाते पैरों पर खड़ा हुआ और जाकर सींखचे को पकड़ लिया। ख्रिस्तिना के हाथों ने वहां भी उसे पा लिया।

"क्यों, क्या बात है?"

उसके मन का सारा आवेग इस सवाल में भरा हुआ था! पावेल उसकी ओर झुका और उसके हाथों को दबाते हुए बोला:

"नहीं ख्रिस्तिना, मैं नहीं... तुम इतनी... अच्छी हो।" उसे खुद नहीं पता कि इसके अलावा उसने और क्या-क्या कहा।

इस असह्य शान्ति को तोड़ने के लिए वह फिर तनकर खड़ा हुआ और अपने ओठे पर चला गया। उसके सिरे पर बैठते हुए उसने बुड्ढे को जगा दिया।

"दादा, एक सिगरेट दो मुझे।"

वह लड़की अपने शॉल में लिपटी हुई कोने में बैठी रोती रही।

दूसरे रोज कमांडैण्ट कुछ कौसेक सिपाहियों के साथ आया और ख्रिस्तिना को पकड़ ले गया। जाते-जाते उसकी आंखों ने पावेल की आंखों को खोजा और पावेल ने पाया कि उन आंखों में शिकायत है। और जब वह चली गई और दरवाजा बन्द हो गया तो उसकी आत्मा पहले से कहीं ज्यादा उदास और सूनी हो गई।

सारे दिन बूढ़े दादा पावेल के मुंह से एक शब्द नहीं निकलवा सके। सन्तरी और कमांडैण्ट के गार्ड दोनों बदल गये थे। शाम होते-होते एक नया

कैदी लाया गया। पावेल ने उसे पहचान लिया। वह दोलिनिक था, शहर के कारखाने का एक बढ़ई। वह बहुत ठोस, मजबूत, चौड़ा-चकला आदमी था। एक पुराने तार-तार हो रहे कोट के नीचे वह उड़े-उड़े से पीले रंग की कमीज पहने हुए था। उसने गौर से कोठरी का मुआइना किया।

पावेल ने १९१७ के फरवरी महीने मे उसे देखा था, जब क्राति की खबरी उनके शहर मे पहुची थी। उन दिनो जो शोर-गुल मे भरे प्रदर्शन हुए थे, उनमे उसने सिर्फ एक बोल्शेविक को बोलते सुना था, और वह बोल्शेविक था यही दोलिनिक। वह सड़क से लगी हुई एक चाटी पर चढ गया था और वहा से उसने सैनिको को सम्बोधित करते हुए भाषण दिया था। पावेल को अब भी उसके अन्तिम शब्द याद थे

"फौजी भाइयो, बोल्शेविको के पीछे-पीछे चलो, वे तुम्हारे साथ दगा नही करेंगे।"

तब से उसने उस बढ़ई को नही देखा था।

बूढे दादा बडे खुश थे कि उन्हे इस कोठरी म नया साथी मिला, क्योकि जाहिर है कि दिन भर चुप-चाप बैठे रहना उन पर बहुत भारी गुजरता था। दोलिनिक ओठे के किनारे पर उनकी बगल मे बैठ गया, उनके सग एक सिगरेट पी और सभी चीजो के बारे मे उनसे पूछ डाला।

इसके बाद आगन्तुक कोर्चागिन के पास आया और उसने पूछा, "कहो मेरे नन्हे दोस्त, तुम यहा कैसे आए?"

पावेल ने एक-एक शब्द मे जवाब दिया और दोल्निनिक ने देखा कि पावेल के मन का सन्देह ही इसका कारण है। दोलिनिक को जब पावेल पर लगाये गये अभियोग की बात मालूम हुई, तो उसकी तीक्ष्ण आखे आश्चर्य से फैल गई और वह उस लडके की बगल मे जाकर बैठ गया।

"तो तुम्हारा कहना है कि तुमने जुखराई को छुडाया? बडी दिलचस्प बात है। मुझे नही मालूम था कि उन्होने तुमको पकड लिया है।"

पावेल को दोलिनिक की बात से अचरज हुआ और वह अपनी कोहनी के सहारे उठ बैठा।

"मै किसी जुखराई को नही जानता। इन लोगो को क्या, ये जिसको चाहे जो नाम लगा दें।"

दोल्निनिक मुस्कराता हुआ उसके और पास आ गया।

"ठीक है, ठीक है, दोस्त। मगर मेरे सग इतना चौकन्ना होने की जरूरत नही। मुझे तुमसे ज्यादा बाते मालूम है।"

बहुत धीरे से ताकि वह बूढा उनकी बात न सुन सके, दोलिनिक ने कहा "मैंने खुद जुखराई को विदा किया है, गालिबन वह अपनी मजिल पर

पहुच भी गया होगा। फियोदोर ने मुझे उस घटना के बारे में सब कुछ बतला दिया है।"

क्षण भर चुप-चाप विचार करने के बाद दोलिनिक ने अपनी बात मे इतना और जोडा

"मैं देखता हू कि तुम ठीक धात के बने हो, दोस्त। गोकि यह बहुत बुरा हुआ कि उन्होने तुमको पकड लिया और तुम्हारे बारे में उन्हें सब कुछ मालूम है। यह बुरा हुआ, बहुत बुरा, मैं तो यही कहूंगा।"

उसने अपना कोट उतारा और उसे जमीन पर बिछा कर उस पर दीवाल के सहारे टिक कर बैठ गया और अपने लिए एक और सिगरेट बनाने लगा।

दोलिनिक की आखिरी बात से पावेल के आगे पूरी स्थिति स्पष्ट हो गई। इसमे कोई शक नही कि दोलिनिक ठीक बात कह रहा है। उसने जुखराई को विदा किया था और इसका मतलब है ..!

उस शाम को उसे पता चला कि दोलिनिक को पेतल्युरा के कौसैको के बीच प्रचार करने के जुर्म मे पकडा गया है। इतना ही नही, उसे सूबाई इंक-लाबी कमिटी की तरफ से जारी की हुई एक अपील बाटते पकडा गया था जिसमें सैनिकों से कहा गया था कि हथियार डाल दें और बोल्शेविकों से मिल जायें।

दोलिनिक ने सावधानी के खयाल से पावेल को ज्यादा बातें नही बतलाईं।

उसने अपने मन मे कहा, "कौन जाने ? सबो ने अगर कही इसे डडे लगाये तो न जाने क्या हो ? आखिर लडका ही तो है अभी।"

बहुत रात गए जब वे लोग सोने की तैयारी कर रहे थे, तो उसने अपने मन की आशका इस प्रकार सक्षेप में व्यक्त की

"तो कोर्चागिन, हम लोग खासे बुरे फसे हैं, देखें कहा जाकर हमारा पानी मरता है।"

दूसरे रोज एक और नया कैदी लाया गया—बडे-बडे कानो और दुबली-पतली मरियल सी गर्दन वाला हज्जाम श्ल्योमा जेल्टसर जिसे शहर मे हर कोई जानता था।

वह दोलिनिक को बहुत आवेश और भाव-भगिमा के साथ बतला रहा था, "फुक्स, ब्लुवस्टाइन और ट्रंक्टेनबर्ग नमक-रोटी से उसका स्वागत करने जा रहे थे। मैंने उनसे कहा कि अगर तुम्हारा जी हो तो करो, मगर बाकी यहूदी लोग तुम्हारा साथ देंगे क्या ? नही देंगे, मैं तुमसे कहता हू। उनको अपना भी तो नफा-नुकसान देखना है। फुक्स के पास अपनी दूकान है और ट्रंक्टेनबर्ग के पास आटे की चक्की है। मगर मेरे पास क्या है ? और बाकी भूखे लोगो के पास क्या है ? कुछ नहीं—भिखमगे हैं हम सब और क्या ? तुम तो जानते ही हो कि मुझे अपनी जबान पर काबू नही, और आज जब मैं एक अफसर की दाढी बना रहा

था—और कौन, वही जो नये आये है उनमे से एक—तो मैंने कहा आपका क्या खयाल है, ऐटमन पेतल्युरा को इस सब मारकाट के बारे मे पता है या नही ? क्या वे डेपुटेशन से मिलेंगे ?' अरे बाप रे बाप, कितनी बार मैं अपनी इस निगोड़ी जबान के कारण मुसीबत मे न फसा होऊगा ! तो जब मै बहुत करीने से उस अफसर की दाढी बना चुका और ढग से चेहरे पर पाउडर-साउडर लगा दिया तो जानते हो उस अफसर ने क्या किया ? वह उठा और मुझे पैसा देना तो दूर रहा, अधिकारियो के खिलाफ प्रचार करने के जुर्म मे मुझे गिरफ्तार कर लिया।" जेल्टसर ने अपनी छाती ठोकी और बोला, "अब तुम्ही बताओ कि यह भी भला कोई प्रचार था ? आखिर मैंने क्या कह दिया ? मैंने उस आदमी से सिर्फ एक बात ही तो पूछी और . इसके लिए उन्होने मुझे यहा लाकर बन्द कर दिया, वाह रे !"

अपने आवेश मे जेल्टसर दोलिनिक की कमीज के एक बटन को मरोड़ने लगा और उसका हाथ पकड़ कर खीचने लगा।

दोलिनिक को बेसाख्ता मुस्कराहट आ गई जब उसने गुस्से मे भरे श्ल्योमा की बात सुनी।

हज्जाम की बात खतम होने पर दोलिनिक ने बडी गभीरता से कहा, "हा श्ल्योमा तुम जैसे होशियार आदमी से ऐसी बेवकूफी की उम्मीद नही थी। तुमने बडे बेमौके अपनी जबान की लगाम ढीली कर दी। मै कभी तुम्हे यहा आने की सलाह न देता !"

जेल्टसर ने बात को समझने के अन्दाज मे सिर हिलाया और हाथ से निराशा की मुद्रा व्यक्त की। तभी दरवाजा खुला और वह शराबवाली अन्दर ढकेली गई। वह लडखडाती और अपने पहरेदार कौसेक सिपाही पर गालियो की बौछार करती हुई कोठरी मे घुसी।

"तुमको और तुम्हारे कमाडैण्ट को तो धीमी आच पर कबाब की तरह भूने ! उम्मीद तो करती हू कि मेरी उस शराब को पीकर वह टे हो जायगा !"

सन्तरी ने जोर से फाटक बन्द किया। अन्दर के लोगो ने उसको बाहर ताला बन्द करते सुना।

वह औरत ओठे के सिरे पर बैठ गई तो उस बूढे ने खुश-खुश उससे कहा

"अच्छा तो तुम फिर हमारे सग आ गई, अपनी बकबक की झडी लगाने को। बैठ जाओ आराम से।"

उस शराबवाली ने बूढे को गुस्से से तरेरा और अपनी पोटली उठा कर दोलिनिक के बगल मे फर्श पर बैठ गई।

मालूम यह हुआ कि उसको सिर्फ इतनी देर के लिए छोडा गया था कि वह अपने कैद करने वालो के लिए समोगन शराब की कुछ बोतलें ले आये।

गृहाएक बगलवाले मन्तरियो के कमरे मे चीख-पुकार और भागते हुए पैरो की आवाज सुनाई दी। कोई कुत्ते की तरह भूक-भूककर हुक्म दे रहा था। बंदियो ने उस आवाज को ठीक से सुनने के लिए अपनी बात बन्द कर दी।

पुराने घटाघर वाले उस बदसूरत गिर्जे के सामने फैले मैदान मे कुछ अजीब कार्रवाइया हो रही थी। चौक के तीन तरफ फौजे आयताकार खडी थी। ये सुन्दर पैदल फौज के डिवीजन की टुकडिया थी, जो अपने लडाई के पूरे साज-सामान के साथ इकट्ठा की गई थी।

गिर्जाघर के फाटक के सामने पैदल फौजो की तीन रेजिमेण्टें शतरंज के मोहरो की तरह वर्गाकार खडी थी। उनके पीछे स्कूल की चहारदीवारी थी।

पेतल्युरा सैनिको का यह भूरा-भूरा, गन्दा-सा समूह आराम की मुद्रा मे राइफले लिए खडा था। ये सैनिक सिर पर लोहे के अजीब बेहूदा-से टोप लगाये हुए थे जो देखने मे ऐसे लगते थे कि मानो कुम्हडे के दो बराबर-बराबर हिस्से हो। सैनिक अपनी कारतूस की पेटियो से बुरी तरह लदे हुए थे। डाइरेक्टरी के पास सबसे अच्छी डिवीजन यही थी।

ये लोग अच्छी वर्दिया पहने थे और पुरानी जारशाही सेना के साज-सामान से लैस थे। इनमे खास तौर पर धनी किसान थे जो हर बात को अच्छी तरह समझ-बूझकर सोवियत सत्ता के खिलाफ लड रहे थे। फौजी दृष्टि से इस अत्यत महत्वपूर्ण लम्बे जंक्शन की रक्षा के लिए यह डिवीजन यहा लाई गई थी। शेपेतोवका से पाच दिशाओ मे रेलवे लाइने फूटती थी जो देखने मे लोहे के चमकदार फीते जैसी जान पडती थी। पेतल्युरा के लिए इस जक्शन के हाथ से निकल जाने का मतलब था, सब कुछ हाथ से निकल जाना। यो भी स्थिति यह थी कि "डाइरेक्टरी" के हाथ मे अब बहुत थोडा सा इलाका बचा था और विनित्सा नाम का कस्बा ही अब पेतल्युरा की राजधानी थी।

"चीफ ऐटमन" साहब ने खुद फौजो का मुआइना करने का फैसला किया था और उस वक्त हर चीज उनके आने के इन्तजार मे तैयार खडी थी।

पीछे दूर पर एक कोने मे, जहा उन पर निगाह पडने की सबसे कम उम्मीद थी, नये रगरुटो की एक रेजिमेण्ट खडी थी। ये नगे पैर नौजवान तरह तरह के बेमेल और भद्दे कपडे पहने हुए थे। ये सब किसानो के लडके थे जिन्हे भरती करने वाले दस्तो ने आधी रात को उनके बिस्तरो से उठा कर भरती कर लिया था या जिन्हे राह चलते पकड लिया था। इनमे से किसी का भी लडने का कोई इरादा नही था।

वे लोग आपस मे कहते, "हमारा सिर नही फिर गया है।"

पेतल्युरा के अफसर ज्यादा से ज्यादा यही कर सकते थे कि इन रंगरूटो को फौजी पहरे मे शहर लायें, उनकी कम्पनिया और बटालियनें बनाएं और उनको हथियार दें। इससे ज्यादा तो वे कुछ नही कर सकते थे। मगर होता यह था कि दूसरे ही रोज इनमे से एक-तिहाई रंगरूट, जो भेड-बकरियो की तरह इकट्ठा किये गए थे, अचानक गायब हो जाते थे और इस तरह उनकी तादाद रोज-ब-रोज कम होती जाती थी।

ऐसी हालत मे उन्हे बूट देना तो नासमझी की बात होती और खास तौर पर ऐसी हालत मे जब कि बूटो का स्टाक कम ही था। तो भी हुक्म जारी किया गया कि भर्ती किये हुए सब लोग बूटो के लिए अपने-आपको रिपोर्ट करें। फलस्वप धागो और तारो से बाधे गये फटे-पुराने जूतो की एक अजीबो-गरीब बारात लग गई।

उन्हे परेड के लिए नगे पाव बाहर निकाला गया।

पैदल सिपाहियो के पीछे गोलुब की घुडसवार रेजिमेन्ट खडी थी।

शहर के तमाम लोग मारे कुतूहल के परेड देखने आये थे। उनकी भीड को घुडसवार रोके हुए थे।

आखिरकार खुद "चीफ ऐटमन" साहब तशरीफ लाने वाले थे, कोई ऐसी-वैसी बात थोडे ही थी। इस तरह की घटनाए शहर मे बहुत कम ही होती थी। इसलिए कोई भी आदमी इस फोकट के मनोरंजन को हाथ से नही जाने देना चाहता था।

गिर्जाघर की सीढियो पर तमाम कर्नल और कप्तान, पादरी की दोनो लडकिया, मुट्ठी भर उक्रेनी स्कूल मास्टर, थोडे से "आजाद कौसेक" और मेयर साहब जिनकी कूबड निकली हुई थी---कहने का मतलब यह कि शहर के सभी धनी-मानी लोग जनता के रूप मे वहा खडे थे और उन्ही मे थे पैदल सेना के इन्स्पेक्टर जनरल, जो काकेशस वालो की पोशाक चेरकेस्का पहने हुए थे। वही परेड के आला अफसर थे।

गिर्जे के अन्दर पादरी वासिली साहब अपने ईस्टर के कपडे पहन रहे थे।

पेतल्युरा का स्वागत करने की बडी धूम-धाम के साथ तैयारिया हो रही थी। नये भरती रंगरूटो को स्वामिभक्ति की शपथ लेनी थी और इसके लिए एक पीला और नीला झण्डा बाहर लाया गया था।

डिवीजन कमाडर एक पुरानी जर्जर फोर्ड मोटर मे बैठ कर पेतल्युरा से मिलने के लिए स्टेशन चले।

उनके चले जाने पर पैदल सेना के इन्स्पेक्टर ने कर्नल चेर्नायक को बुलाया। यह एक लम्बा-तगडा अफसर था और बहुत बाकपन मे उसने मूछे गढ रखी थी।

"किसी को अपने साथ ले लो और जाकर देखो कि कमाडैण्ट का दफ्तर और हज्जाम-अर्दली वगैरह सब ठीक हैं या नही। अगर तुम्हें वहा कुछ कैदी मिलें तो उन्हे देख लेना और उनमे जो एकदम बेकार हो उनसे छुट्टी पा लेना।'

चेर्नायक ने अटेन्शन की मुद्रा मे खडे होते हुए सलाम किया, ठक्क से उसके बूटो की एडिया बोली। सबसे पहले जिस कौसेक कप्तान पर उसकी निगाह पडी, उसी को लेकर चेर्नायक सरपट घोडे पर निकल गया।

इन्स्पेक्टर साहब बडे तकल्लुफ से पादरी की बडी लडकी की ओर मुडे।

"दावत की सब तैयारी ठीक है न ?"

"जरूर, जरूर। कमाडैण्ट साहब जान लडाये दे रहे हैं," लडकी ने खूबसूरत इन्स्पेक्टर को उत्सुकता से एकटक देखते हुए जवाब दिया।

एकाएक भीड मे खलबली मच गई। एक घुडसवार, अपने घोडे की गर्दन पर झुका हुआ, सरपट भागा चला आ रहा था। हाथ हिलाते हुए चिल्लाकर उसने कहा

"वे लोग आ रहे हैं!"

"फॉल इन!" इन्स्पेक्टर चिल्लाया।

सब अफसर अपनी-अपनी जगह के लिए दौड पडे।

फोर्ड मोटर घडर-घडर करके गिर्जाघर तक पहुची ही थी कि बैण्ड ने धुन बजानी शुरू कर दी 'उक्रैन सदा जिन्दा रहेगा।"

डिवीजन कमाडर के बाद "चीफ ऐटमन" बडी मशक्कत से गाडी से बाहर निकले। पेतल्युरा मझोले कद का आदमी था। उसका नुकीला सिर बहुत मजबूती से जमा कर उसकी लाल, साड जैसी गर्दन पर रखा हुआ था। वह बहुत अच्छे ऊनी कपडे की नीली ट्यूनिक पहने था जिस पर एक पीली पेटी लगी हुई थी। एक छोटा सा ब्राउनिंग रिवाल्वर साबर के केस मे रखा इस पेटी में लगा हुआ था। उसके सिर पर खाकी रग की छज्जेदार टोपी थी जिसके ऊपर इनेमल का त्रिशूल बना हुआ था।

साइमन पेतल्युरा की आकृति मे कोई खास फौजी बात न थी। सच बात तो यह है कि वह फौजी आदमी मालूम ही नही होता था।

उसने इन्सपेक्टर की पूरी रिपोर्ट सुनी। उस वक्त उसके चेहरे पर ऐसा भाव था मानो वह चीज उसे बहुत अप्रिय लग रही हो। उसके बाद मेयर ने उसके स्वागत मे भाषण दिया।

पेतल्युरा ने उडे-उडे ढग मे उसको सुना और मेयर के सिर के पीछे से, सामने खडी रेजिमेंटो को देखता रहा।

उसने इन्सपेक्टर को इशारा किया, "अब हमें शुरू करना चाहिए।"

झडे के पास के छोटे-से मच पर खडे होकर अपने सिपाहियो के सामने पेतल्युरा ने दस मिनट की एक तकरीर की।

इस तकरीर से किसी पर कोई असर नही पडा। सफर की थकान के कारण पेतल्युरा के बोलने मे कोई जोश न था। तकरीर खतम होने पर सिपाहियो ने "स्लावा! स्लावा!" के नारे लगाये और पेतल्युरा रूमाल से माथे का पसीना पोछता हुआ मच से उतरा। फिर, इन्सपेक्टर और डिवीजन कमाडर को साथ लेकर उसने फौजी दस्तो का मुआइना किया।

नये-नये भर्ती रंगरूटो की सफो के पास से गुजरने पर उसके माथे पर वल पड गए और उसकी आखो मे उपेक्षा और घृणा का भाव दिखाई दिया। चिढ के मारे वह अपने होठ चबाने लगा।

जब मुआइना खतम होने आ रहा था और नये रगरूटो की एक के बाद दूसरी प्लैटून झडे तक मार्च करके—जहा पादरी वासिली बाइबिल हाथ मे लिये खडे थे—पहले बाइबिल को और बाद मे झडे को चूम रही थी, एक अप्रत्याशित घटना घटी।

किसी को नही मालूम कि ये लोग किस तरह चौक तक पहुचे जहा परेड हो रही थी। मगर सबने देखा कि कुछ लोगो का एक प्रतिनिधि-मडल पेतल्युरा के पास पहुचा। इस दल के आगे-आगे लकडी का धनी व्यापारी ब्लुवस्टाइन था जो रस्मिया तौर पर रोटी और नमक हाथ मे लिये हुए था। उसके पीछे और चार लोग थे जिनमें कपडे का व्यापारी फुक्स भी था।

गुलामो की तरह झुक कर सलाम बजाते हुए ब्लुवस्टाइन ने तश्तरी पेतल्युरा की तरफ बढाई। पेतल्युरा के सग खडे एक अफसर ने तश्तरी ले ली।

"राज्याधीश, यहा की यहूदी आबादी आपके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करती है। कृपया इस अभिनन्दन-पत्र को स्वीकार करें।"

तेजी से उस कागज पर निगाह दौडाते हुए पेतल्युरा ने धीमे से कहा, "अच्छा।"

फुक्स आगे बढा।

'हम आपसे विनती करते हैं कि आप हमे अपना कारबार चालू करने दें। हम आपसे विनती करते हैं कि आप मारकाट से हमारी रक्षा करें।" "मारकाट" शब्द पर फुक्स थोडा लडखडाया।

गुस्से मे पेतल्युरा की त्यौरियो मे बल पड गए।

"मेरी फौज मारकाट नही करती, यह बात तुम्हे याद रखनी चाहिए।'

फुक्स ने यो बाहे फैला दी जैसे कह रहा हो कि आप जो कहते हैं वही ठीक है।

पेतल्युरा के कधे हिले। इस प्रतिनिधि-मडल के असमय आगमन से उसे

चिढ मालूम हो रही थी। वह गोलुव की ओर मुडा जो पीछे खडा अपनी काली मूछें चबा रहा था।

"कर्नल साहब, यह आपके कौसेको के खिलाफ शिकायत है," पेतल्युरा ने कहा। 'इस मामले की छानबीन कीजिए और माकूल कार्रवाई कीजिए।" फिर इन्स्पेक्टर की तरफ मुडते हुए उसने खुश्क ढग से कहा

"अब तुम परेड शुरू कर दो।"

इस अभागे प्रतिनिधि-मडल को सपने मे भी गुमान नही था कि उन्हे गोलुव का सामना करना पडेगा। लिहाजा अब उन्होंने पीछे हटने की जल्दी दिखाई।

दर्शको का सारा ध्यान अब मार्च-पास्ट की तैयारियो पर केन्द्रित था। सैनिको को तेज स्वर मे दिये गए आदेश गूज रहे थे।

गोलुव का चेहरा ऊपर से बहुत शान्त दिख रहा था। वह ब्लुमस्टाइन की ओर बढा और फुसफुसा कर ही, मगर काफी जोर से, कहा

"काफिरो, यहा से भाग जाओ नही तो अभी तुम्हारा कीमा बना दूगा।"

बैंड बजने लगे और पहली टुकडिया स्क्वायर मे मार्च करने लगी। पेतल्युरा के पास पहुचने पर सैनिको ने बेजान मशीनो की तरह "स्लावा" का नारा लगाया और बडी सटक पर आगे बढते हुए गलियो मे गुम हो गए। कम्पनियो के आगे-आगे नई खाकी वर्दी पहने अफसर इस तरह चल रहे थे मानो हवाखोरी के लिए निकले हो। उनके हाथ की छडिया भी इसी तरह हिल रही थी। सैनिको के क्लीनिंग-रॉड की ही तरह अफसरो की इन छडियो का भी चलन अभी हाल मे शुरू हुआ था।

नये रगरूट परेड मे सबसे पीछे-पीछे आ रहे थे। वे एक अनुशासनहीन भीड के समान थे। उनके कदम नही मिल रहे थे और वे एक-दूसरे को धक्का देते हुए चल रहे थे।

इन रगरूटो को अफसर लोग बहुत कोच रहे थे कि कुछ तो अनुशासन उनके अन्दर दिखाई दे, मगर बेसूद। ये रगरूट जब गुजरे तो उनके नगे पैरो की धीमी सरसराहट सुनाई दी। जिस वक्त दूसरी कम्पनी गुजर रही थी, सूती कमीज पहने एक किसान लडका सलामी लेने के चबूतरे के पास ऐसे आश्चर्य मे आंख फाडकर "चीफ" ऐटमन को देखने लगा कि उसका एक पैर सडक के एक गड्ढे मे घुस गया और वह मुह के बल गिर पडा। उसकी राइफिल जोर से आवाज करके सडक के पत्थर पर लुढक गयी। उसने उठने की कोशिश की, मगर पीछे से सिपाहियो के धक्के से वह फिर गिर पडा।

दर्शको मे से कुछ खिलखिला कर हस पडे। कम्पनी की कतारे टूट गयी

और वह बिल्कुल बदमली की हालत मे स्क्वायर मे से गुजरी। उस बदकिस्मत लड़के ने अपनी राइफिल उठाई और दूसरो के पीछे-पीछे दौड़ा।

पेतल्युरा ने इस भद्दे दृश्य से आखें फेर ली और परेड के खातमे का इन्तजार किये बगैर अपनी मोटर की तरफ चल दिया। इन्स्पेक्टर ने, जो ऐटमन के पीछे-पीछे चला आ रहा था, कुछ सहमे हुए स्वर मे पूछा

"क्या हुजूर ऐटमन साहब डिनर तक नहीं रुकेंगे ?"

"नही," पेतल्युरा ने तमाचा-सा मारते हुए जवाब दिया।

सर्गेई ब्रुजाक, वालिया और क्लिम्का, दर्शको की भीड मे, गिर्जे की चहारदीवारी से लगे हुए परेड देख रहे थे। सर्गेई छड पकडे हुए, आखो मे नफरत भरे, नीचे खडे लोगो के चेहरे देख रहा था।

"चलो चलें वालिया, ये लोग अब अपनी दूकान उठा रहे है," उसने जान-बूझकर तेज और उद्दड स्वर मे कहा और चलने के लिए मुडा। लोग हैरत से उसकी तरफ देखने लगे।

किसी की कुछ परवाह न करते हुए वह फाटक की ओर चल दिया। उसके पीछे-पीछे उसकी बहन और क्लिम्का भी चले गये।

कर्नल चेर्नायक और कप्तान साहब घोडे को सरपट दौडाते हुए कमाडेंट के दफ्तर तक आये और अपने घोडो से उतर पडे। अपने घोडो को फौज की डाक ले जाने वाले सवार को पकडा कर वे तेजी मे सतरियो के कमरे मे चले गये।

चेर्नायक ने तेज आवाज मे डाक ले जाने वाले सवार से पूछा "कमाडेंट साहब कहा है।"

उस आदमी ने हकलाते हुए कहा, "पता नही। कहीं चले गये है।"

चेर्नायक ने उस गन्दे कमरे मे इधर-उधर नजर दौडाई और उन बिस्तरो को देखा जो अभी उठाये नहीं गये थे और जिन पर कमाडेंट के अगरक्षक कौसेक सैनिक इतमीनान के साथ लेटे हुए पडे थे। अफसरो के कमरे मे दाखिल होने पर भी उन्होंने उठने की कोई कोशिश न की।

चेर्नायक ने गरजकर कहा, "यह क्या सुअरो का सा बाडा बना रखा है ? और तुमको किसने इस तरह लेटने की इजाजत दी है ?" उसने चित लेटे हुए उन सिपाहियो को कस कर डाट बताई।

एक कौसेक उठ बैठा, डकार ली और गुर्राता हुआ बोला

'क्यो टर्र-टर्र कर रहे हो ? इस काम के लिए हमारा अपना आदमी है जो काफी टर्रा लेता है।"

"क्या कहा !" चेर्नायिक लपक कर उस आदमी की तरफ बढा, "अबे हरामी के बच्चे, जानता है किससे बातें कर रहा है ? मैं कर्नल चेर्नायिक हू। सुना, सुअर कही के। फौरन उठ कर बैठो तुम सब लोग, वर्ना अभी मैं तुम सबों को कोडे लगवाता हू !" तैश खाया हुआ कर्नल मन्तरियो के कमरे मे इधर-उधर तेजी से टहलने लगा। मैं तुमको एक मिनट देता हू, यहा की सारी गलाजत साफ करो, विस्तरो को ठीक करो और अपने इन सुअर जैसे चेहरो को भी जरा ठीक करो। तुम कौसेक सिपाही थोडे ही मालूम होते हो। बिल्कुल लुटेरे मालूम होते हो, लुटेरे !"

गुस्से के मारे कर्नल साहब पागल हो रहे थे और उन्होंने रास्ते मे पडी हुई गन्दे पानी की एक बाल्टी को जोर से एक ठोकर लगाई।

कप्तान साहब भी कुछ कम जोश मे न थे और वह अपने गाली-गुफ्ते को अपना तीन तस्मे वाला चाबुक घुमा-घुमाकर और प्रभावशाली बना रहे थे। इस तरह उन्होने सिपाहियो को अपनी जगहो पर से उठा दिया।

"चीफ ऐटमन साहब परेड का मुलाहिजा कर रहे है। किसी भी मिनट वह यहा आ सकते हैं। जल्दी ! जल्दी करो, जल्दी !"

यह देखकर कि मामला सगीन होता जा रहा है और कही ऐसा न हो कि उनके वाकई कोडे पडने लगें—चेर्नायिक की शोहरत उन्हे अच्छी तरह मालूम थी—कौसेक सिपाही दौड-दौडकर काम करने लगे।

पलक मारते ही काम पूरे जोर-शोर से होने लगा।

कप्तान ने सुझाव दिया, "हमे जरा एक नजर कैदियो पर भी डालनी चाहिए। पता नही किस-किस को यहा बन्द कर रखा हो। कही चीफ एटमन ने आकर देखा तो हमारी आफत आ जायगी।"

"चाभी किसके पास है ?" चेर्नायिक ने सतरी से पूछा। "फौरन दरवाजा खोलो !"

एक सार्जेन्ट कूद कर खडा हुआ और फौरन उसने जाकर ताला खोला।

"कमाडेंट कहा है ? तुम समझते हो कि मैं कयामत के रोज तक उसका इन्तजार करता रहूगा ? फौरन उसका पता लगाओ और यहा भेजो।" चेर्नायिक ने हुक्म दिया, "तमाम सतरियो को बाहर चौक मे जमा करो ! राइफिलो मे सगीनें क्यो नही लगी है ?"

"अभी कल ही तो हम लोग आये है," सार्जेन्ट ने सफाई देने की कोशिश की और तेजी से कमाडेंट की तलाश मे चला गया।

कप्तान ने पैर की ठोकर से मालगोदाम का दरवाजा खोला। अन्दर मे कई लोग फर्श से उठ कर खडे हो गये। पर बाकी लोगो मे कोई हरकत नही हुई।

चेर्नायक ने हुक्म दिया, "दरवाजो को और अच्छी तरह खोल दो। यहा तो काफी रोशनी भी नही है।"

उसने कैदियो के चेहरो को गौर से देखा।

"क्यो जी, तुम यहा पर क्यो बन्द हो ?" उसने ओठे के सिरे पर बैठे बुड्ढे आदमी से तडाक से पूछा।

बुड्ढा आधा उठा और अपने पतलून को ऊपर चढाते हुए इस तेजी से पूछे गये सवाल से डर कर धीरे से बुदबुदाया

"मुझे खुद नही मालूम। उन्होंने मुझे यहा बन्द कर दिया और तब से बन्द हू। हाते मे न जाने कैसे एक घोडा गायब हो गया था। मेरा उसमे कोई कसूर नही।"

"किसका घोडा ?" कप्तान ने उसकी बात को बीच मे काटा।

"फौज का घोडा, और किसका ! मेरे यहा जो सिपाही टिकाये गये थे, उन्होंने उसको बेच कर सारी रकम पी डाली और अब मुझे दोष लगाते है।"

चेर्नायक ने तेजी से उस बुड्ढे पर निगाह दौडाई और अधीरता प्रकट करते हुए कधे को उचका कर जोर से चीखा "उठाओ अपनी चीजें और यहा से नौ दो ग्यारह हो जाओ !" फिर वह शराबवाली औरत की तरफ घूमा।

बुड्ढे को अपने कानो पर यकीन नही आया। अपनी आखें, जो दूर की चीजें नही देख सकती थी, मुलमुलाते हुए वह कप्तान की तरफ मुडा और बोला

"क्या सचमुच चला जाऊ मैं ?"

कौसेक सिपाही ने सिर हिला कर बतलाया कि वह-जितनी जल्दी जा सके, अच्छा है।

जल्दी-जल्दी बुड्ढे ने ओठे के सिरे से झूलती हुई अपनी पोटली उठाई और तेजी से दरवाजे से बाहर हो गया।

"और तुम यहा क्यो बन्द हो ?" चेर्नायक शराबवाली औरत से पूछ रहा था।

मिठाई के गस्से को निगलते हुए, जिसे वह कुछ देर से चभुला रही थी, औरत ने अपना पहले से ही तैयार जवाब झटपट पेश कर दिया

"हुजूर, बडी बेइन्साफी की बात है जो मुझे यहा बन्द कर रखा है। जरा सोचिए तो, एक गरीब बेवा की शराब भी पी गये और उसे खामखा यहा बन्द भी कर दिया।"

चेर्नायक ने पूछा, "तुम्ही तो नही हो वह शराब बेचने वाली ?"

"बेचने वाली ? आप भी कैसी बात करते है," उस औरत ने आहत

अभिमान के स्वर मे कहा, "कमाडेंट साहब आये, चार बोतलें ली और एक धेला भी नही दिया। यह तो हाल है, आपकी शराब पी जायें और पैसा भी न दें। यह भला वेचना कहलाता है ?"

"अच्छा-अच्छा, बहुत हो गया। अब दफा हो यहा से !"

उस औरत ने हुक्म के दोहराये जाने का भी इन्तजार नही किया। अपनी टोकरी उठाई और बडी कृतज्ञता से झुक कर सलाम करती हुई पीछे हटते-हटते दरवाजे से बाहर हो गयी।

"खुदा आपको सलामत रखे, हुजूर !"

दोलिनिक आखें फाडे उस मजाक को देख रहा था। किसी कैदी की समझ मे न आ रहा था कि आखिर यह माजरा क्या है। बस, एक बात साफ थी, यानी यह कि ये लोग जो आये हैं, कोई बडे अफसर हैं और उनकी किस्मत का वारा-न्यारा कर सकते हैं।

"और तुम ?" चेर्नायक ने दोलिनिक से पूछा।

"जब हुजूर कर्नल बात करें तो खडे हो जाया करो !" कप्तान ने कुत्ते की तरह भूक कर कहा।

दोलिनिक धीरे-धीरे फर्श पर से उठ कर खडा हो गया।

"तुम यहा पर क्यो बन्द हो ?" चेर्नायक ने अपना सवाल दोहराया।

कुछ क्षण तक दोलिनिक की आखें कर्नल की बाकी अदा से ऐंठी मूछो पर और उनके अच्छी तरह हजामत किये साफ चेहरे पर, फिर उनकी नई टोपी के छज्जे पर जिसमे इनेमल का बिल्ला लगा हुआ था, ठहरी रही। और तभी यह पागल विचार उसके दिमाग मे कौंध गया कौन जाने यह तरीका कारगर हो जाय।

"मुझे आठ बजे के बाद सडक पर पाये जाने के जुर्म मे पकडा गया था," पहली बात जो उसके मन मे आई उसने कह दी।

जवाब के इन्तजार मे उसका दिल जोर से धडक रहा था।

"रात को तुम बाहर कर क्या रहे थे ?"

"रात कहा थी, बस करीब ग्यारह बजे थे।"

बोलते-बोलते ही उसको जैसे यह विश्वास न रह गया कि अधेरे मे छोडा हुआ उसका यह तीर कारगर होगा।

उसके घुटने काप गए जब उसने यह सक्षिप्त सा आदेश सुना

"बाहर निकल जाओ !"

दोलिनिक जल्दी-जल्दी दरवाजे मे से बाहर निकल गया। हडबडी मे वह अपना कोट लेना भी भूल गया। कप्तान अब दूसरे कैदी से बात कर रहा था।

कोर्चागिन से सबसे बाद मे पूछा गया। वह फर्श पर बैठा इस सारी कार्-

बाई को स्तब्ध होकर देख रहा था। पहले उसे यकीन ही नही हुआ कि दोलिनिक को रिहा कर दिया गया है। वे लोग सबको इस तरह से छोड क्यो रहे हैं ? मगर दोलिनिक दोलिनिक तो कहता था कि उसे करफ्यू तोडने के जुर्म में पकडा गया है । तब यकायक उसे भी कोई बात सूझी।

कर्नल ने दुबले-पतले जेल्टसर से अपना वही हर बार का सवाल दुहराया, "तुम यहा पर क्यो बन्द हो ?"

हज्जाम, जो घबराहट के मारे पीला पड गया था, बोल पडा ·

"वे लोग कहते हैं कि मैं आदोलन कर रहा था, लेकिन मेरी कुछ समझ मे नही आता कि मैं काहे का आदोलन कर रहा था।"

चेर्नायिक के कान खडे हो गये।

"क्या कहा ? आदोलन ? तुम किस चीज का आदोलन कर रहे थे ?"

जेल्टसर ने अपनी हैरानी बतलाने के लिए बाहे फैला दी। बोला, "मैं खुद नही जानता। मैंने सिर्फ यह कहा था कि चीफ ऐटमन साहब के पास भेजने के लिए लोग एक अर्जी पर यहूदियो से दस्तखत ले रहे थे।"

"किस तरह की अर्जी ?" चेर्नायिक और कप्तान दोनो बहुत डरावने तरीके से जेल्टसर की तरफ बढे।

"अर्जी यही थी कि मार-काट पर रोक लग जाय। आपको तो मालूम ही है कि पिछले दिनो हमारे यहा बहुत भयानक मारकाट हुई। सारे लोग डरे हुए हैं।

चेर्नायिक ने उसकी बात को बीच मे काटते हुए कहा, "बस, बस ! इतना काफी है ! अबे गलीज यहूदी, हम लोग अभी तेरी सारी अर्जी निकाले देते हैं !" फिर कप्तान की तरफ घूम कर उसने तेज आवाज मे कहा, "इसको ले जाकर ठीक से बन्द कर दो। इसको हेडक्वार्टर पर ले जाने का बन्दोबस्त करो, वही पर मैं इससे खुद बातें करूगा देखेंगे इस अर्जी वाले मामले के पीछे कौन लोग हैं।"

जेल्टसर ने प्रतिवाद करने की कोशिश की, मगर कप्तान ने अपनी चाबुक से उसकी पीठ पर जोर का वार किया।

"चुप, हरामजादे !"

दर्द से उसका चेहरा ऐंठ गया और वह लडखडाता हुआ एक कोने मे पहुच गया। जेल्टसर के ओठ फडक रहे थे और वह अपने अन्दर मे उठती हुई सिसकियो को बडी मुश्किल से दबा पा रहा था। सिसकियो से उसका गला रुधा हुआ था।

अभी यह सब हो ही रहा था कि पावेल उठ कर खडा हो गया। अब मालगोदाम मे जेल्टसर के अलावा वही अकेला कैदी बचा था।

चेर्नायिक लटके के सामने खटा था और अपनी तेज काली आखो से गौर से उसके चेहरे को देख रहा था।

"और तुम यहा क्या कर रहे हो ?"

कर्नल को सवाल का तुर्त-फुर्त जवाब मिला

''मैंने घोडे की जीन से थोडा-सा चमडा अपने जूते के तल्ले के लिए काट लिया था।"

"किमके घोडे की जीन थी वह ?" कर्नल ने पूछा।

"हमारे यहा दो कौसेक सिपाही ठहराये गए थे। मैने उन्ही की एक पुरानी जीन से कुछ चमडा अपने जूतो के तल्ले के लिए काटा था। इसीलिए कौसेक मुझे यहा पकड लाए।" शायद मैं रिहा हो सकता हू, यह पागल आशा उसमे जागी। उसने इतना और जोड दिया, "मुझे मालूम नही था कि इसकी मनाही है ।"

कर्नल ने पावेल को चिढ कर देखा।

"इस कमाडेंट को क्या-क्या सूझता है, वडा मरदूद है। देखो तो कैसे-कैसे लोगो को उसने कैद कर रखा है।" दरवाजे की ओर मुडते हुए उसने चिल्ला कर कहा, "तुम घर जा सकते हो, मगर अपने वाप से कहना कि वह जरा तुम्हारी कुदी कर दे। निकलो वाहर।"

अव भी पावेल को अपने कानो पर यकीन नही आ रहा था। उसका दिल ऐसे धडक रहा था जैसे अभी फट जायगा। पावेल ने जल्दी से फर्श पर से दोलिनिक का कोट उठाया और दरवाजे की ओर भागा। भाग कर सतरियो के कमरे मे से होता हुआ वह कर्नल की पीठ-पीछे हाते की खुली हवा मे निकल गया। पलक मारते पावेल छोटे फाटक से होकर सडक पर पहुच गया था।

वदनसीव जेल्टसर मालगोदाम मे अकेला रह गया। उसने परेशान आखो से अपने इर्द-गिर्द देखा, अनायास दरवाजे की तरफ कुछ कदम वढाये, मगर तभी एक सतरी आ गया। उसने दरवाजा वन्द कर दिया, ताला लगा दिया और दरवाजे के पास ही एक स्टूल पर वैठ गया।

वाहर वरसाती मे अपने आपसे वहुत मगन चेर्नायक ने कप्तान से कहा

"वडा अच्छा हुआ कि हमने इन लोगो को एक नजर देख लिया। जरा सोचो तो कि इस कमाडेंट ने कैसा-कैसा कूडा-करकट भर रखा था यहा— लगता है इसको दो-एक हफ्तो के लिए हमे वन्द करना पडेगा। अच्छा चलो, अव हम लोगो को यहा से चलना चाहिए।"

सार्जेन्ट ने अपने सिपाहियो को हाते मे जमा कर लिया था। उसने कर्नल को देखा तो दौड कर आया और रिपोर्ट दी

"सव कुछ ठीक है, हुजूर कर्नल साहव।"

चेर्नायक ने रकाब मे एक बूट डाला और बडी सफाई से कूद कर घोडे पर जा बैठा। कप्तान को उसका बददिमाग घोडा कुछ तग कर रहा था। अपने घोडे की रास खीचते हुए कर्नल ने सार्जेन्ट से कहा

"कमांडेंट से बतला देना कि उसने जो तमाम कूडा-करकट यहा भर रखा था, मैंने उस सबको हटा दिया है। और यह भी बतला देना कि यहा का काम जिस बेहूदगी से उसने चलाया है, उसके लिए मैं उसे दो हफ्ते गार्ड हाउस मे बन्द रखूगा। और वह आदमी जो अन्दर हैं, उसे फौरन हेडक्वार्टर भेजो। पहरेदारो मे कहना, होशियार रहे।"

"बहुत अच्छा, हुजूर कर्नल साहब," सार्जन्ट ने सलाम किया।

अपने घोडो को एड लगाते हुए कर्नल और कप्तान सरपट उस स्क्वायर मे पहुचे जहा अब परेड खत्म होने आ रही थी।

पावेल ने कूद कर सातवी बाडी पार की और थक कर खडा हो गया। अब उससे और नही चला जाता था। उस दमघोट्ट मालगोदाम मे बगैर खाये बन्द-बन्द उसकी सारी ताकत खतम हो गई थी।

अब कहा जाऊ? घर जाने का सवाल नही उठता। ब्रुजाक के यहा जाने पर अगर किसी ने वहा मुझे देख लिया, तो सारे घर वालो के सिर पर विपत्ति फट पडेगी।

उसकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या करे। वह फिर अधो की तरह दौडने लगा। शहर के छोर पर के साग-भाजी के खेत और मकानो के पिछवाडे के बागीचे सब पीछे छूट गये। यकायक वह एक बाडी से जोर से जा टकराया, और तब जैसे उसे सहसा होश आया और उसने अपने आस-पास हैरान निगाहो से देखा—उस ऊची बाडी के पीछे जगलात के वार्डन का बागीचा था। अच्छा तो मेरी थकी हुई टागें मुझे यहा ले आई हैं! वह कसम खाकर कह सकता था कि उसका कोई इरादा इधर आने का नही था। तब फिर वह इधर आ कैसे गया? इस सवाल का उसके पास कोई जवाब नही था।

मगर फिर भी कुछ देर उसे आराम तो करना ही है, सारी परिस्थिति पर उसे गौर करना था और अपने अगले कदम के बारे मे तय करना था। उसे याद आया कि बाग के छोर पर एक ग्रीष्म-कुज है। वहा पर उसे कोई नही देख सकेगा।

जोर लगाकर वह बाडी पर चढा और दूसरी तरफ नीचे बाग मे कूद गया। मकान पर उडती-उडती सी निगाह डालते हुए, जो पेडो के बीच से मुश्किल मे दिखाई दे रहा था, वह ग्रीष्म-कुज की तरफ बढ चला। उसे यह

देख कर बडी परेशानी हुई कि वह जगह लगभग सभी तरफ से एकदम खुली हुई थी। जगली अगूर की बेल, जो गरमी के दिनो मे घनी होकर उस पर छा जाती थी, सूख कर झट चुकी थी और अब वह जगह एकदम नगी थी।

वह वापस जाने के लिए मुडा, मगर इसके लिए अब बहुत देर हो गई थी। उसके पीछे से कुत्ते के जोर-जोर से भूकने की आवाज आ रही थी। वह घूमा और उसने घर से इधर को आने वाले पत्तियो से ढके रास्ते मे एक बडे से कुत्ते को देखा जो उसी पर झपटा आ रहा था। उसकी भीषण गुर्राहट बाग की निस्तब्धता को चीर रही थी।

पावेल ने अपने को बचाने की तैयारी की। कुत्ते के पहले हमले को उसने एक जोर की ठोकर से बेकार कर दिया। मगर वह जानवर उस पर दुबारा झपटने की तैयारी कर रहा था। कहा नही जा सकता कि इस लडाई का क्या अन्त होता, अगर उसी वक्त एक परिचित कठ ने पुकार कर यह न कहा होता, "इधर आओ ट्रेसोर! इधर आओ!"

तोनिया भागती चली आ रही थी। उसने ट्रेसोर के गले का पट्टा पकड कर उसे पीछे खीचा और बाडी के पास खडे नौजवान से कुछ कहने के लिए उसकी तरफ मुडी।

"तुम यहा क्या कर रहे हो? इस कुत्ते ने अभी तुम्हे बुरी तरह जख्मी कर दिया होता। वह तो कहो मैं .."

वह बीच ही में रुक गई। अचम्भे से उसकी आखें फटी की फटी रह गई। यह अजनबी, जो उसके बागीचे मे चला आया था, कोर्चागिन से कितना ज्यादा मिलता था!

बाटी के पास खडी हुई वह आकृति हिली।

"तोनिया!" उस नौजवान ने धीमे से कहा, "क्या तुम मुझे पहचानती नही?"

"पावेल, तुम?" तोनिया चीख पडी और आवेग से उसकी तरफ बढी।

ट्रेसोर ने तोनिया के चिल्लाने को अपने लिए हमले का सिगनल समझा और तेजी से आगे लपका।

"ट्रेसोर, ट्रेसोर चुप रहो!" तोनिया ने उसे दो-चार थप्पड लगाये और वह आहत अभिमान की मुद्रा मे, जैसे उसके साथ बडा अन्याय किया गया हो, अपनी दुम टागों के बीच दबाये, सिर नीचा किये, धीरे-धीरे मकान की तरफ लौट गया।

पावेल के हाथो को बहुत प्यार से पकडे हुए तोनिया ने कहा, "अच्छा, तो तुम छूट गये?"

"तो तुम्हे सब पता था?"

"मुझ सब पता है," तोनिया ने सास रोके-रोके कहा, "लिजा ने मुझको बतलाया था। मगर तुम यहा आये कैसे? क्या उन लोगो ने तुम्हे रिहा कर दिया?"

"हा, मगर गलती से," पावेल ने थके हुए अन्दाज मे जवाब दिया, "मैं भाग आया। मेरा खयाल है, अब वे मुझे ढूढ रहे होगे। मुझे खुद नही मालूम कि मैं यहा कैसे आ गया। मैने सोचा कि मैं तुम्हारे ग्रीष्म-कुज मे कुछ देर आराम करूगा। मै बेहद थका हुआ हू," उसने माफी मागने के अन्दाज मे कहा।

तोनिया ने दो-एक पल उसकी ओर एकटक देखा और उसका मन पावेल के प्रति करुणा और प्यार तथा चिन्ता और खुशी से भर उठा, जैसे एक लहर सी आई और उसके ऊपर होकर बह गई।

"पावेल, मेरे प्यारे पावेल," पावेल के हाथो को मजबूती से अपने हाथो मे थामे-थामे तोनिया ने कहा, "मैं तुम्हे प्यार करती हू सुना तुमने? मेरे हठीले दोस्त, तुम उस बार चले क्यो गये थे? अब तुम हमारे हो, मेरे हो। मैं तुम्हे किसी तरह जाने न दूगी। हमारा घर अच्छा है और शान्त है और तुम जितने दिन चाहो हमारे पास रह सकते हो।"

पावेल ने सिर हिलाया।

"अगर उन लोगो ने मुझे यहा ढूढ निकाला तो? नही, मैं तुम्हारे घर नही ठहर सकता।"

तोनिया के हाथ उसकी उगलियो को दबा रहे थे, तोनिया की पलके फडक रही थी और उसकी आखो मे चमक थी।

"अगर तुमने इनकार किया तो मैं तुमसे कभी नही बोलूगी। आर्तेम यहा नही है, पुलिस के पहरे मे उसे इजन चलाने के लिए ले जाया गया है। सारे रेलवे मजदूर बटोरे जा रहे है। तुम जाओगे कहा?"

पावेल को भी यही चिन्ता थी। मगर यह डर कि वह उस लडकी को जिसे वह इतना प्यार करने लगा था, खतरे मे डाल देगा, उसको वहा ठहरने से रोक रहा था। लेकिन आखिर उसने तोनिया की बात मान ली, क्योकि अपने भयानक तजुर्बो के कारण वह बहुत थक गया था और भूखा था।

जिस वक्त वह तोनिया के कमरे मे सोफे पर बैठा हुआ था, उस वक्त मा-बेटी के दरम्यान बावर्चीखाने मे यह बातचीत चल रही थी

"सुनो मा, कोर्चागिन मेरे कमरे मे है। तुम्हे याद है न, मैं उसे पढाती थी। मैं तुमसे कुछ नही छिपाना चाहती। उसने एक बोल्शेविक मल्लाह को भाग निकलने मे मदद दी थी और इसीलिए उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। अब वह कैद से भाग आया है। मगर उसके पास कही जाने को

जगह नही है।' तोनिया की आवाज कांप रही थी। "मेरी प्यारी मा, उसे कुछ समय तक यहां ठहर जाने दो।"

मा ने अपनी बेटी की याचना भरी आंखों को गौर से देखा जैसे उनमें कुछ पढना चाहती हो।

"बहुत अच्छा, मुझे कोई एतराज नहीं है। मगर तुम उसे ठहराओगी कहां ?"

तोनिया लाज के मारे लाल हो गई, "वह मेरे ही कमरे में सोफे पर सो सकता है," उसने बहुत घबराये-से स्वर में कहा, "फिलहाल हम पापा को कुछ भी नहीं बतलाएंगे।"

मा ने उसकी आखों में आखें डाल कर देखा।

"क्या इसी के लिए तुम इधर इतनी परेशान थी ?" उसने पूछा।

"हां।"

"मगर अभी तो वह बिल्कुल छोकरा है।"

"मैं जानती हूं।" तोनिया ने घबराहट में अपने ब्लाउज की आस्तीन पर हाथ फेरते हुए जवाब दिया। 'लेकिन अगर वह भाग न आया होता, तो उसे जरूर गोली मार दी गई होती।"

एकातेरीना मिखाइलोवा को स्पष्ट ही अपने घर में कोर्चागिन के रहने से डर मालूम हो रहा था। उसकी गिरफ्तारी और फिर अपनी बेटी का एक ऐसे लड़के से स्पष्ट ही इतना प्यार जिसे वह ठीक से जानती भी नहीं, दोनों ही बातों से उसका मन अस्थिर हो रहा था।

मगर तोनिया, मसले को तय समझ कर, अब यह सोच रही थी कि मेहमान के आराम के लिए क्या करना चाहिए।

"मा, पहले तो उसे नहाना जरूरी है। मैं अभी इसका इन्तजाम करती हूं। बहुत गंदा हो रहा है वह—जैसे चिमनी साफ करने वाला हो। उसको नहाये जमाना बीत गया होगा।"

यह कह कर वह नहाने के घर में पानी गरम करने और पावेल के पहनने के लिये साफ कपड़े निकालने चली गई। जब सब कुछ ठीक हो गया तो वह तेजी से कमरे में आई, पावेल की बांह पकड़ी और कुछ समझाने-बुझाने में वक्त बरबाद किये बिना तेजी से उसे गुसलखाने में ले गई।

"तुम्हें अपने कपड़े बिल्कुल बदल डालने चाहिए। तुम्हारे पहनने के लिये यह एक सूट रखा है। तुम्हारे कपड़ों को धोना होगा, तब तक तुम इसको पहन सकते हो," कह कर उसने कुर्सी की तरफ इशारा किया जिस पर एक नीले रंग का सफेद धारी वाला जहाजी ब्लाउज और पतलून रखा हुआ था।

पावेल ने अचम्भे से देखा। तोनिया मुस्कराई।

बात को साफ करते हुए उसने कहा, "मैंने उसे एक बार एक फैन्सी-ड्रेस नाच मे पहना था। तुम्हारे लिए बिल्कुल ठीक रहेगी वह चीज, कोई बुराई नही। अच्छा अब जल्दी करो। जब तक तुम नहाते हो, मैं तुम्हारे लिए खाने को कुछ ले आती हू।"

वह बाहर चली गई और दरवाजे को बन्द कर दिया। अब पावेल के लिए इसके सिवा कोई चारा न था कि कपडे उतारे और टब मे जा बैठे।

घटे भर बाद मा, बेटी और पावेल, तीनो रसोई मे खाना खा रहे थे।

पावेल को बुरी तरह भूख लगी थी और इसके पहले कि उसे इस बात का ख्याल भी आये, वह तीन बार रकाबी मे से खाना ले-लेकर खा चुका था। पहले उसे एकातेरीना मिखाइलोवना के सामने कुछ झिझक मालूम हो रही थी, मगर जब उसने उनके बर्ताव मे भी सगापन पाया तो पिघल गया और उसकी झिझक दूर हो गई।

खाना खाने के बाद वे तीनो तोनिया के कमरे मे आये और एकातेरीना मिखाइलोवना के कहने पर पावेल ने अपनी कहानी सुनाई।

"अब तुम्हारा क्या करने का इरादा है?" पावेल की कहानी खत्म होने पर एकातेरीना मिखाइलोवना ने पूछा।

पावेल ने थोडी देर तक सवाल पर विचार किया, फिर बोला, "सबसे पहले मैं आर्तेम से मिलना चाहता हू और फिर मुझे यहा से चले जाना होगा।"

"मगर तुम जाओगे कहा?"

"मेरा ख्याल है, मैं उमान या हो सकता है कीव पहुच सकता हू। मुझे खुद कुछ ठीक नही मालूम। मगर इतना जानता हू कि यहा से मुझे जल्द से जल्द चले जाना चाहिए।"

पावेल को यकीन नही आ रहा था कि इतनी जल्दी सब कुछ बदल सकता है। अभी सुबह वह गन्दी कोठरी मे था और अब यहा साफ-साफ कपडे पहने तोनिया के पास बैठा था। सबसे बडी बात यह कि वह आजाद था।

उसने सोचा, जिन्दगी क्या-क्या अजीब मोड लेती है। क्षण भर पहले आसमान रात की तरह अधेरा नजर आता है और फिर तभी दूसरे ही क्षण सूरज चमकने लग जाता है। अगर उसे फिर पकडे जाने का डर न होता, तो इस वक्त वह दुनिया का सबसे खुश आदमी होता।

मगर वह जानता था कि इस वक्त भी, जब वह इस बडे और शान्त घर मे बैठा हुआ है, उसके फिर पकड लिये जाने का अन्देशा है। उसे यहा नही रहना चाहिए, यहा से चले जाना चाहिए—चाहे जहा। फिर भी, वहा से चले जाने का ख्याल उसे जरा भी अच्छा नही मालूम हो रहा था। बहादुर गैरिबाल्डी के बारे में पढ़ने में कितना रोमाच मालूम होता था। मन ही मन

वह उससे कितनी ईर्षा करता था। मगर जरा गौर करो तो मालूम होता है कि गॅरिबाल्डी की जिन्दगी कितनी कठिन थी, हर समय यहा से वहा भागते रहना। उसे, पावेल को, सिर्फ सात दिन मुसीबत और तकलीफ मे गुजारने पड़े थे। मगर ऐसा मालूम होता था कि साल भर हो गया।

नहीं-नहीं, वीरों की बात कुछ और ही होती है, उस जैसे नही होते वे।

"क्या सोच रहे हो तुम ?" तोनिया ने उसकी तरफ झुकते हुए पूछा। उसकी नीली आखों की गहराई पावेल को असीम मालूम हुई।

"तोनिया, तुम्हें ख्रिस्तिना के बारे मे बतलाऊ ?"

"हा हा, जरूर," तोनिया ने आग्रह करते हुये कहा।

उसने तोनिया को अपने साथ की कैदी की दर्दनाक कहानी सुनाई।

पावेल ने जब अपनी कहानी खतम की, तो निस्तब्धता में दीवाल पर की घड़ी की टिक्-टिक् और जोर से सुनाई देने लगी। पावेल के शब्द बड़ी मुश्किल से निकल रहे थे, " . हमारी उससे वही आखिरी मुलाकात थी। उसके बाद फिर हमने उसे नही देखा।" तोनिया का सिर एक ओर को झूल गया और उसने अपने गले को रूधने वाले आसुओ को रोकने के लिए अपने ओंठ को कस कर दबाया।

पावेल ने उसको देखा और अन्तिम निश्चय के स्वर मे कहा, "मुझे आज रात चले ही जाना होगा।"

"नहीं, नही, आज रात मैं तुम्हें कही नही जाने दूगी।"

वह उसके कसे कड़े बालो को अपनी नाजुक, गरम उगलियो से बड़े प्यार से सहला रही थी ।

"तोनिया, तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। किसी को स्टेशन जाना चाहिए और पता लगाना चाहिए कि आर्तेम का क्या हुआ। और सर्योजा के पास एक चिट्ठी भी ले जानी है। एक कौए के घोंसले में मैंने एक रिवाल्वर छिपाकर रखा है। मैं उसे जाकर लाने की हिम्मत नही कर सकता, मगर सर्योजा उसे लाकर मुझे दे सकता है। मेरा इतना काम कर सकोगी ?"

तोनिया उठ खड़ी हुई।

"मैं अभी, इसी वक्त, लिजा सुखार्को के पास जाऊगी। हम दोनों साथ स्टेशन चले जायेंगे। तुम चिट्ठी लिख डालो, मै उसे सर्योजा के पास ले जाऊगी। कहा रहता है वह ? मान लो वह तुमसे मिलना चाहे, तो क्या मैं उसे बतला दूगी कि तुम कहा हो ?"

पावेल ने जवाब देने के पहले क्षण भर विचार किया। "उससे कहना कि आज शाम को तुम्हारे बगीचे मे ले आये।"

तोनिया को लौटने में बहुत देर हो गई। पावेल गहरी नीद मे सो रहा

था। उसके हाथ के स्पर्श से वह जाग गया और उसने आखें खोली तो तोनिया को खुशी से मुस्कराते हुए अपने पास खडा पाया।

"आर्तेम जल्दी ही यहा आयेगा। वह अभी-अभी लौट कर आया है। लिजा के बाप ने उसका जामिन होना कबूल कर लिया है और वे लोग आर्तेम को घटे भर के लिए छोड रहे है। इजन स्टेशन पर खडा है। मैं उसे यह तो बतला नही सकती थी कि तुम यहा हो। मैंने बस इतना कहा कि उससे मुझे कोई बहुत जरूरी बात कहनी है। लो, वह आ भी गया!"

तोनिया दरवाजा खोलने के लिए लपकी। आर्तेम जैसे अपनी आखो का यकीन न करते हुए, स्तब्ध और मूक, दरवाजे पर खडा था। उसके अन्दर आ जाने पर तोनिया ने दरवाजा बन्द कर दिया ताकि उसके पिता, जो कि अपने पढाई के कमरे मे टाइफस से बीमार पडे थे, उन लोगो की बातचीत न सुन सकें।

एक क्षण और गुजरा कि आर्तेम पावेल को अपनी बाहो मे भर कर कस कर छाती से लगाए हुए था और जोर-जोर से कह रहा था, "पावेल! मेरे नन्हे पावेल! मेरे छोटे भाई!" भारी-भरकम आर्तेम के उस भालू-जैसे आलिंगन पाश मे पावेल की तो हड्डिया चरमरा रही थी।

तो यह बात तय हो गई, पावेल को अगले रोज ही वहा से चले जाना था। आर्तेम ब्रुजाक से कह देगा कि वह कजातिन जाने वाली एक गाडी मे उसको अपने साथ लेता जाय।

आर्तेम, जो अमूमन बडा गम्भीर और खामोश आदमी था, अपने भाई के लिए इतने दिनो तक चिन्तित और परेशान रहने के बाद इस वक्त उसको पाकर खुशी से पागल हो रहा था।

"अच्छा, तो यह बात तय हो गई। कल सवेरे पाच बजे तुम मालगोदाम के पास रहना। जिस वक्त वे लोग ईंधन लाद रहे हो, तुम चुपचाप घुस जाना। मेरी बडी इच्छा थी कि मैं रुकू और तुमसे बातचीत करू। मगर मुझे लौटना है, जरूरी काम है। मैं कल जाते समय तुमसे मिलूगा। वे लोग रेलवे मजदूरो की एक बटालियन बना रहे है। हम लोग सशस्त्र पहरे मे लाये और ले जाये जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे जर्मनो के दिनो मे।"

आर्तेम ने अपने भाई से छुट्टी ली और चला गया।

साझ तेजी से घिरती आ रही थी। सर्गेई थोडी देर मे पिस्तौल लेकर आता होगा। उसका इन्तजार करते हुए पावेल अकेले कमरे मे बेचैनी से टहल रहा था। तोनिया और उसकी मा जगलो के वार्डन के साथ थी।

पावेल बाडी के पास अँधेरे मे सर्गेई से मिला और दोनों दोस्तों ने कस कर एक-दूसरे से हाथ मिलाया। सर्गेई अपने साथ वालिया को भी लाया था। वे लोग धीमे-धीमे बात कर रहे थे।

सर्गेई ने कहा, "मैं अपने साथ रिवाल्वर नही लाया। तुम्हारे पिछवाड़े वाले हाते मे पेतल्युरा के तमाम सिपाही भरे हुए हैं। सब जगह गाड़िया खड़ी हैं और उन्होंने बड़ी-सी आग-वाग भी जला रखी है। इसलिए मैं रिवाल्वर उतारने के लिए पेड पर नही चढ सका। बडी शर्म की बात है।' सर्गेई बहुत उदास था।

पावेल ने उसे ढाढस बधाते हुए कहा, "कोई बात नही, शायद अच्छा ही हुआ कि तुम उसे नही लाये। अगर मैं रिवाल्वर के साथ कही रास्ते मे पकड़ा जाता तो और भी बुरा होता। मगर तुम उसे ले जरूर आना।'

वालिया पावेल के और पास आ गई।

"तुम कब जा रहे हो?"

'कल, भोर होते ही।"

"तुम छूट कैसे आये, यह तो बताओ?"

जल्दी-जल्दी, मगर उसी मद्धिम आवाज मे, पावेल ने उनको अपनी कहानी सुनाई। उसके बाद उसने अपने साथियो से छुट्टी ली। सर्गेई का असाधारण रूप से गम्भीर चेहरा उनके मन की हलचल का पता दे रहा था।

"खुदा हाफिज पावेल, हम लोगो को भूलना मत,' वालिया ने रुंधी हुई आवाज मे कहा।

और इसके बाद वे लोग चले गये। पलक मारते अँधेरा उन्हे निगल गया।

घर के अन्दर पूर्ण शाति थी। उस निस्तब्धता मे सिर्फ घड़ी की नियमित टिक्-टिक् सुनाई दे रही थी।

उस घर के दो रहने वालो के लिए उस रात नींद का कोई जिक्र न था। वे सो भी कैसे सकते थे जब कि छ घटो मे उन्हे एक-दूसरे से अलग हो जाना था—और कौन जाने फिर कभी मुलाकात ही न हो। उस थोड़े से वक्त मे उनके मन के भीतर जो असख्य भावनाएं हलचल मचा रही थीं, उनको वाणी भी कोई कैसे देता?

यौवन, उदात्त यौवन, जब मन की वासना का पता भी ठीक से नही होता और खून की धडकन मे ही उसका धुधला-सा आभास मिलता है, जब तुम्हारा हाथ प्रेयसी की छाती से अकस्मात् छू जाने पर काप जाता है, जैसे सहम गया हो, और जब तुम्हारे यौवन की पवित्र मैत्री ही तुम्हे आखिरी कदम उठाने से रोक लेती है! जब उसकी बाहें तुम्हारे गले मे हों और उसका जलता हुआ चुम्बन तुम्हारे ओठो पर—इससे मीठा भला और क्या हो सकता है!

अपनी तमाम दोस्ती के दौरान मे इन दोनो ने दूसरी बार एक-दूसरे को

चूमा था। इसके पहले पावेल का दिल बहुत बार धडका था, मगर अपनी मा को छोड कर और किसी के आलिंगन का स्पर्श उसे नही मिला था। और जब यह चीज मिली, तो जैसे उसे अन्दर-बाहर से समूचा झकझोर गई। अब तक उसे जीवन ने अपना कठोर निर्मम पहलू ही दिखलाया था और उसे नही मालूम था कि जीवन इतना रगीन, इतना मधुर, इतना प्राणदायी भी हो सकता है। अब इस लडकी ने उसे सिखलाया कि सुख किसे कहते है।

पावेल ने उसके बालो की सुगधि सास के साथ खीची और उसे लगा कि वह उस अधेरे मे भी उसकी आखो को देख रहा है।

"मैं तुमसे बहुत प्यार करता हू, तोनिया! तोनिया मैं तुमसे बतला नही सकता कि मैं तुमसे कितना प्यार करता हू—बतला नही सकता, क्योकि जानता नही कि कैसे बतलाऊ।"

उसका दिमाग चक्कर खा रहा था। उसका वह लचीला शरीर जो बीन के कसे हुए तार की तरह उसके हलके से स्पर्श से बज सकता था। मगर जवानी की दोस्ती बडे पवित्र विश्वास की चीज होती है।

"तोनिया, जब यह तूफान खतम होगा, जब ये उलझनें सुलझ जायेंगी, तो जरूर मुझे मेकैनिक का काम मिलेगा। और अगर तुम्हे सचमुच मेरी जरूरत है, अगर तुम सचमुच मुझे चाहती हो और सिर्फ मेरे सग खेल नही कर रही हो, तो मैं तुम्हारे लिए अच्छा पति बन सकूगा। मैं कसम खाता हू कि मैं कभी तुम्हें नही मारूगा और न कभी कोई ऐसी बात करूगा जिसमे तुम्हारे दिल को चोट लगे।"

कही दोनो एक-दूसरे की बाहो मे पडे-पडे सो न जाये, कही तोनिया की मा उन्हें देख न ले और उनके बारे मे कुछ बुरा खयाल दिल मे लाए, इस डर से दोनो अलग हो गए।

पौ फटने ही वाली थी जब उन्होने एक-दूसरे से वादा किया कि वे कभी एक-दूसरे को न भूलेंगे और फिर वे सो गये।

एकातेरीना मिखाइलोवना ने पावेल को जल्दी ही जगा दिया। वह बिस्तर छोड कर उछल कर खडा हो गया। जब वह गुसलखाने मे अपने कपडे और बूट पहन रहा था और अपने कपडो पर दोलिनिक का कोट चढा रहा था, तभी एकातेरीना मिखाइलोवना ने तोनिया को जगाया।

सबेरे के भूरे-भूरे से कुहासे मे वे लोग जल्दी-जल्दी स्टेशन की ओर चले। जब वे पिछवाडे के रास्ते से उस जगह पहुचे जहा लकडिया रखी हुई थी, उन्होने आर्तेम को लदे हुए टेंडर के पास बेचैनी से अपना इतजार करते पाया।

एक बहुत भारी और मजबूत इजन भाप के बादल मे घिरा हुआ सी-सी करता हुआ धीरे-धीरे पास आया। इजन मे से ब्रुजाक ने सिर निकाल कर देखा।

पावेल ने जल्दी से तोनिया और आर्तेम से विदा ली, लोहे का खंभा पकड़ा और कूद कर इंजन में चढ़ गया। पीछे मुड़ कर उसने क्रासिंग पर दो परिचित आकृतियों को देखा—आर्तेम की लम्बी आकृति और उसके बगल में तोनिया की छोटी-सी सुकुमार आकृति। हवा जैसे गुस्से में उसके ब्लाउज के कॉलर को फाड़े डाल रही थी और उसके सुनहले बाल उड़ रहे थे। तोनिया ने हाथ हिला कर उसको इशारा किया।

आर्तेम ने अपनी आंख की कोर से तोनिया को देखा और यह देख कर कि वह रोने ही वाली है, उसने लम्बी सांस ली।

उसने अपने मन में कहा, "मुझे पचास कोड़े मारो, अगर इन दोनों के बीच कोई मामला न हो। और मैं सोचता था कि पावेल अभी बच्चा ही है!"

आगे मोड़ पर पहुंच कर जब गाड़ी आंखों से ओझल हो गई तो आर्तेम तोनिया की तरफ मुड़ा और बोला: "क्यों, मुझसे दोस्ती करोगी?" और तोनिया का नन्हा-सा हाथ उसके बड़े-बड़े हाथों में खो गया।

दूर, गाड़ी के तेज रफ्तार पकड़ने की आवाज सुनाई दे रही थी।

सात

पूरे एक हफ्ते तक शहर, खाइयों से घिरा और कंटीले तारों में उलझा हुआ, तोपों की गड़गड़ाहट और राइफिलों की तड़तड़ की आवाज में ही रात को सोता था और उन्हीं की आवाज में सवेरे जागता था। सिर्फ बहुत भोर ही, बल्कि यूं कहिए कि जब रात खतम होने को होती थी, तभी यह शोर जरा कम होता था। मगर फिर भी, बीच-बीच में जब चौकियां एक-दूसरे का पता लगाने की गरज से गोले छोड़तीं तो वह निस्तब्धता भंग हो जाती थी। सवेरे-सवेरे लोग रेलवे स्टेशन के पास वाली बैटरी में व्यस्त हो जाते थे। तोप का लम्बा स्याह थूथन भयावने तरीके से आग उगलता था और फिर लोग जल्दी-जल्दी उसमें दुबारा लोहा और बारूद भर देते थे। हर बार जब तोपची तोप के पीछे वाली रस्सी को खींचता, तो पैरों के नीचे की धरती कांप जाती। शहर से दो मील दूर एक गांव पर, जो बोल्शेविकों के कब्जे में था, तोप के गोले डरावनी आवाज करते हुए बरसते रहते थे। उनकी आवाज में दूसरी सारी आवाजें डूब जाती थीं और गोले जहां गिरते, वहां धरती में से मिट्टी के फव्वारे फूट निकलते थे।

बोल्शेविकों की तोप गाव के बीचोबीच एक ऊची पहाडी पर जमी हुई थी जहा पहले एक पोलिश मठ था।

इस तोपची टुकडी के फौजी कमिसार कामरेड जमोस्तिन उचक कर खडे हो गए। वह एक तोप मे अपना सिर टिकाये सो रहे थे। अब उन्होंने अपनी पेटी को कसते हुए, जिससे एक भारी माउजर पिस्तौल झूल रही थी, उडते हुए गोले की साय-साय को सुना और धडाके का इन्तजार करने लगे। और ज्ञाता उनकी भारी आवाज से गूज उठा

"साथियो, हम लोग कल अपनी नीद पूरी कर लेंगे। अब उठने का वक्त हो गया है।"

तोपची, जो अपनी-अपनी तोपो के पास सो रहे थे, कमिसार की तरह ही जल्दी से उछल कर खडे हो गए। सिर्फ सिदोरचुक ने अनमने ढग से सिर उठाया और नीद से भारी आखो से इधर-उधर देखा।

"सुअर कही के—अभी रोशनी भी नही हुई और हरामजादो ने गोलाबारी फिर शुरु कर दी। बदमाश चिढाने के लिए ऐसा करते हैं।"

जमोस्तिन हसा।

"ये सब समाज-विरोधी लोग हैं सिदोरचुक, और नही तो क्या! इनको इतना भी खयाल नही रहता कि कोई सोना चाहता है।"

सिदोरचुक बडबडाता हुआ उठा।

कुछ मिनट बाद मठ के हाते की तोपे भी अपना काम करने लगी। शहर पर गोले बरसने लगे।

शकर के कारखाने की ऊची चिमनी पर लकडी के पटरो का एक चबूतरा बनाया गया था और उस पर पेतल्युरा का एक अफसर और एक टेलीफोन वाला बिठाला गया था। चिमनी के भीतर-भीतर लोहे वाली सीढी से वे लोग ऊपर चढे थे।

इस जगह से, जहा से उनको सारा शहर अच्छी तरह दिखाई देता था, वे तोप चलाने वालों को आदेश दे रहे थे। अपनी दूरबीनो से वे बोल्शेविक सिपाहियो की सारी गति-विधि को देख सकते थे। बोल्शेविक शहर को घेरा डाले हुए थे। आज वे विशेष रूप से सक्रिय थे। एक बख्तरबद गाडी धीरे-धीरे पोडोल्स्क स्टेशन में दाखिल हो रही थी। वह बराबर गोली बरसा रही थी। उसके उस पार पैदल दस्ते दिखाई दे रहे थे। कई बार बोल्शेविक फौजो ने शहर पर कब्जा करने की कोशिश की। मगर पेतल्युरा के सिपाही शहर जाने वाले रास्तों पर मजबूती से जमे हुए थे। तोपे आग उगल रही थी, जिसके कारण हवा मे बेपनाह शोर था और यही शोर हमलो के वक्त अनवरत गर्जन का रूप ले लेता था। गोलियो के इस तूफान के आगे बोल्शेविक घाते न-

ठहर मकी और मैदान मे निर्जीव शरीरो को छोड कर पीछे हटने पर मजबूर हुई। उस तूफान को झेलना इसान की ताकत के बाहर की चीज थी।

आज शहर पर पहले से ज्यादा और लगातार हमले किये जा रहे थे। हवा गोला-बारी की गूज से काप रही थी। चिमनी की उस ऊचाई से बोल्शेविको की पातें बराबर आगे बढती हुई देखी जा सकती थी। लोग जमीन पर लेट जाते थे, फिर उठते थे और फिर पूरी ताकत से आगे बढने लगते थे। अब उन्होंने स्टेशन को करीब-करीब ले ही लिया था। पेतल्युरा डिवीजन के पास जो रिजर्व टुकडिया थी, उन्हें मैदान में भेजा गया। मगर वे भी उस दरार को न भर सकी जो बोल्शेविको ने पैदा कर दी थी। बोल्शेविक सैनिक अब उस सकल्प से काम कर रहे थे जिसमें आगा-पीछा सोचने की गुजाइश नही होती। उनके हमलावर दस्ते स्टेशन के पास वाली सडको पर बाढ के पानी की तरह भर उठे थे। स्टेशन की रक्षा करने वाली पेतल्युरा की डिवीजन की तीसरी रेजिमेन्ट शहर के छोर पर के उद्यानो और फलो के बागीचो की अपनी आखिरी जगह से निकाली जा कर शहर भर में बिखर गई थी। यह आखिरी लडाई, जिसने उनको वहा से निकाल बाहर किया था, बहुत छोटी मगर अत्यत भयानक थी। इसके पहले कि वे लोग दुबारा अपने पैर जमा सके, लाल सेना के सैनिक बडी तादाद मे सडको पर भर उठे और उन्होने अपनी सगीनो की मार से पेतल्युरा के उन सिपाहियो का सफाया कर दिया जिन्हे उनकी पीछे हटती सेना इसलिए छोड गई थी कि वह निर्विघ्न पीछे हट सके।

सर्गेई ब्रुजाक को उस तहखाने मे रोक रखना नामुमकिन था जिसमे उसके घर वालो और करीब के पडोसियो ने पनाह ली थी। सर्गेई की मा उससे चिरौरी-विनती करती ही रही, मगर वह उस सर्द तहखाने मे से कूदकर बाहर आ गया। एक बख्तरबन्द गाडी जिस पर सगयदाचनी लिखा हुआ था, अधाधुध गोलिया बरसाती हुई उसके घर के पास से गुजरी। उसके पीछे-पीछे डरे और घबराये हुए पेतल्युरा सिपाही सिर पर पैर रखकर भाग रहे थे। उनमे किसी तरह की कोई श्रृखला बाकी नही बची थी। उनमे से एक सर्गेई के हाते में घुस आया। उसने जल्दी-जल्दी अपनी कारतूस की पेटी, अपने सिर पर का हेलमेट और राइफिल नीचे फेंकी और बाडी फाद कर गायब हो गया। सर्गेई ने सडक पर निगाह दौडाई। पेतल्युरा के सिपाही दक्खिन-पश्चिमी स्टेशन वाली सडक पर भागे आ रहे थे और एक बख्तरबन्द गाडी पीछे से उनकी हिफाजत कर रही थी। शहर को आने वाली बडी सडक वीरान थी। तभी एक लाल सेना का आदमी दिखाई दिया। वह फुर्ती से जमीन पर लेट गया और सडक पर गोली चलाने लगा। उसके पीछे एक के बाद एक लाल सेना के दो-एक और सिपाही दिखाई दिये . । सर्गेई ने उनको आते लेटते, और फिर

उठ कर भागते हुए गोली छोडते देखा। एक कासे के रग का चीनी, जिसकी आखे लाल-लाल थी और जो सिर्फ एक बनियान पहने हुए था और जिसकी कमर मे मशीनगन की पेटी लगी हुई थी, दोनो हाथो मे एक-एक दस्ती बम लिये सीधा दौड रहा था। और उन सबके आगे एक लाल सेना का आदमी था जिसके हाथ मे एक हल्की मशीनगन थी। आदमी भी उसे कैसे कहे, लडका ही था। शहर मे दाखिल होने वाले इन पहले लाल सैनिको को देख कर सर्गेई का दिल खुशी से भर उठा। वह लपक कर सडक पर पहुचा और अपनी पूरी ताकत से चिल्ला कर बोला

"जिन्दाबाद साथियो!"

इतने अप्रत्याशित रूप से वह भाग कर सडक पर पहुचा था कि उस चीनी से टकरा कर गिरते-गिरते बचा। उस लाल सैनिक की पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि झपट कर उस लडके का काम तमाम कर दे। मगर लडके के चेहरे पर खुशी का जो भाव था, उसे देख कर वह रुक गया।

"पेतल्युरा कहा है?" उस चीनी ने जोर से हाफते हुए चिल्ला कर उससे पूछा।

मगर सर्गेई ने उसकी बात नही सुनी। वह दौड कर फिर अपने हाते मे गया, पेतल्युरा सैनिक द्वारा फेंकी गई कारतूसो की पेटी और राइफिल उठाई और लाल सेना के सैनिको के पीछे-पीछे दौड चला। दक्खिन-पश्चिमी स्टेशन पर कब्जा कर लेने के बाद ही उन्होने इस लडके को देखा। यहा, हथियारो और दूसरे रसद के सामानो की कई गाडियो को रोक कर और दुश्मन को जगल मे ठेल कर लाल सेना के सिपाही थोडा आराम करने और अपनी टुकडियो को ठीक करने के लिए रुके। वह नौजवान तोपची सर्गेई के पास आया और अचरज से पूछा

"कामरेड, तुम कहा के रहने वाले हो?"

"मैं इसी शहर का हू। मैं तुम लोगो के आने का इन्तजार कर रहा था।"

देखते-देखते लाल सेना के तमाम सिपाही सर्गेई को घेर कर खडे हो गये।

"मैं इसे जानता हू," उस चीनी ने टूटी-फूटी रूसी मे कहा, "इसने 'जिन्दाबाद साथियो' का नारा लगाया था। यह बोल्शेविक है, अच्छा आदमी है, हम लोगो के साथ है!" यह कहते हुए वह मुस्कराया और अपना सद्भाव दिखलाते हुए सर्गेई के कधो को थपथपाया।

सर्गेई का दिल खुशी मे बल्लियो उछल रहा था। उसको उन लोगो ने तत्काल अपने मे शरीक कर लिया और वह भी सगीनो के उस हमले मे उनके साथ था जिसके बाद स्टेशन पर कब्जा हुआ।

शहर मे बडी हलचल थी। शहर के लोग, जो अब तक की अपनी

मुसीबतों से थक चुके थे, अपनी कोठरियों और तहखानों से निकले और अपने फाटकों पर खड़े होकर शहर में दाखिल होती हुई लाल फौज की टुकड़ियों को देखने लगे। तभी सर्गेई की मां और बहन वालिया ने सर्गेई को लाल सेना के सिपाहियों के साथ मार्च करते देखा। उसके सिर पर टोप नहीं था, मगर कमर में कारतूसों की पेटी बंधी थी और एक राइफिल कंधे से लटक रही थी।

एन्तोनीना वासीलिएवना को बहुत गुस्सा आ रहा था।

अच्छा! तो उसका सर्योजा जाकर इस सब लड़ाई-दंगे में फंस गया! चुकानी पड़ेगी इसकी कीमत। जरा इसका कलेजा तो देखो, सारे शहर के सामने राइफिल लेकर परेड कर रहा है! जरूर आगे चल कर मुसीबत होगी। एन्तोनीना वासीलिएवना अपने को और काबू में न रख सकी और चिल्लाई:

"सर्योजा! चल, इसी वक्त घर चल। आवारा कहीं का! मैं अभी तुझे बतलाती हूं। अभी तेरी सारी लड़ाई निकाले देती हूं!" और वह इस पक्के इरादे से सड़क पर पहुंची कि लड़के को लौटा लायेगी।

मगर इस बार सर्गेई—उसका सर्योजा जिसे कई बार उसने थप्पड़ लगाये थे—दूसरा ही आदमी था। उसने कठोर आंखों से मां को देखा और अन्दर ही अन्दर शर्म और जिल्लत से जलते हुए पलट कर मां को जवाब दिया:

"चीखो मत! मैं जहां हूं वहीं रहूंगा।" और बिना रुके आगे बढ़ गया।

गुस्से के मारे एन्तोनीना वासीलिएवना का बुरा हाल था।

"इसी तरह तुमको अपनी मां से बोलना चाहिए, क्यों? अच्छा! मगर अब घर आने की हिम्मत मत करना!"

सर्गेई बिना पीछे मुड़े चिल्ला कर बोला, "नहीं आऊंगा।"

एन्तोनीना वासीलिएवना परेशानी की हालत में सड़क पर खड़ी रह गई। उसके पास से मौसम की मार खाये हुए, गर्द से ढंके हुए सैनिकों की कतारें गुजरती रहीं।

"रो मत मां! हम तुम्हारे बेटे को कमिसार बनाएंगे," एक तगड़े, हंसोड़ गले से निकली हुई आवाज सुनाई दी। प्लैटून के तमाम सिपाहियों में हंसी की एक लहर-सी दौड़ गई। कम्पनी के आगे-आगे चलने वाले लोगों ने कोरस गाना शुरू किया।

सुनो साथियो बिगुल बज उठा, अब अपनी बन्दूक सम्हालो
आजादी के देश बढ़ चलो, मिल कर अपनी राह निकालो!

सिपाही बड़ी बुलन्द आवाज से यह समवेत गान गा रहे थे और सर्गेई की गूंजती हुई आवाज भी संगीत की इस लहर में मिली हुई थी। उसे एक नया परिवार मिल गया था। इनमें एक संगीन उसकी भी थी, सर्गेई की।

लेशचिन्स्की के मकान के फाटक पर एक छोटी सी सफेद तख्ती लटक रही थी, जिस पर सिर्फ इतना लिखा था "रेवकोम।" उसके बगल मे एक बड़ा आकर्षक पोस्टर था जिसमे से एक लाल सैनिक तुम्हे अपनी ओर देखता नजर आता था और तुम्हारी ओर उगली से इशारा करता हुआ कह रहा था "बोलो, तुम लाल सेना मे भरती हुए हो या नही ?"

राजनीतिक विभाग के लोग तमाम शहर मे यह पोस्टर लगाने के सिलसिले मे रात भर काम करते रहे थे। वही पास मे शेपेतोवका की मेहनतकश जनता के नाम इन्कलाबी कमिटी का पहला घोषणापत्र भी टगा हुआ था।

> "साथियो! सर्वहारा फौजो ने इस शहर पर कब्जा कर लिया है। सोवियत सत्ता फिर से कायम हो गई है। हम आपसे अनुशासन की माग करते है। जनता को चूसने वाले खूनियो को निकाल बाहर किया गया है। लेकिन, अगर आप चाहते है कि वे फिर कभी न आयें, अगर आप उन्हे हमेशा के लिए खतम करना चाहते है, तो लाल सेना मे भरती होइये। मेहनतकशो की राजसत्ता को अधिक से अधिक ताकत पहुचाइए। इस शहर की फौजी व्यवस्था गैरिसन के प्रधान के हाथ मे है। गैर-फौजी शहरी मामलो का प्रबन्ध इन्कलाबी कमिटी करेगी।
>
> "ह० दोलिनिक
>
> "अध्यक्ष, इन्कलाबी कमिटी।"

लेशचिन्स्की के मकान मे अब एक नई तरह के लोग दिखाई देने लगे। एक शब्द "कामरेड"—जिसके लिए कल तक लोगो को अपनी जान की कीमत अदा करनी पडती थी—आज चारो तरफ सुनाई दे रहा था, अनोखा, मर्मस्पर्शी शब्द, "कामरेड!"

दोलिनिक के लिए इन दिनो न नींद थी, न आराम। वह बढई इन्कलाबी सरकार कायम करने मे लगा हुआ था।

एक छोटे से कमरे मे कामरेड इग्नातियेवा बैठी हुई थी। इस कमरे के दरवाजे पर कागज का एक छोटा सा टुकडा लगा था, जिस पर पेंसिल से लिखा हुआ था "पार्टी कमिटी"। वह हमेशा की तरह शात और अनुद्विग्न थी। राजनीतिक विभाग ने उनको और दोलिनिक को सोवियत सत्ता कायम करने का भार सौपा था।

एक दिन और गुजरा और आफिस मे काम करने वाले अपनी-अपनी मेजो पर बैठ गये और टाइपराइटर जोर-जोर से खटकने लगा। रसद पहुचाने की

रेवोल्यूशनरी कमिटी, अर्थात् इन्कलाबी कमिटी।

एक कमिसारियट, जोशीले, मगर कुछ बौखलाये हुए से, पिजीकी के नेतृत्व मे कायम की गयी। पिजीकी पहले शहर की चीनी मिल मे मेकैनिक का सहायक था। मगर अब उसने चीनी के कारखाने के मालिको के खिलाफ जी-जान से कार्रवाई शुरू कर दी। कारखाने के ये मालिक बोल्शेविको से बेइन्तहा नफरत करते थे और इस वक्त सिर झुकाये आनेवाले समय का इन्तजार कर रहे थे।

कारखाने के मजदूरो की एक सभा मे पिजीकी ने कठोर और निर्मम शब्दो मे स्थिति पर प्रकाश डाला।

पोलिश जबान मे बोलते हुए, अपने शब्दो को अच्छी तरह लोगो के दिमाग मे बिठलाने के लिए मेज पर जोर-जोर से मुट्ठी पटकते हुए, उसने कहा . "पुराना जमाना बीत गया और अब कभी लौट कर नही आयेगा। हमारे बाप-दादो ने और हमने सारी जिन्दगी पोटोकियो की गुलामी की है। मगर अब और नही! हमने उनके लिए महल बनाये और बदले मे राजाधिराज काउंट महोदय ने हमे सिर्फ इतना दिया कि हम भूख से न मरे।

"कितने बरसो तक पोटोकी के काउंटो और मालगुजरो के राजकुमारो ने हमारी पीठ पर सवारी की? न जाने कितने पोलिश मजदूर होंगे जिन्हे पोटोकी ने उसी तरह रौंदा जिस तरह उसने रूसियो और उक्रेनियो को रौंदा। कोई उनकी तादाद बतला सकता है? मगर फिर भी उनकी ढिठाई तो देखो, काउंट के दलाल मजदूरो के बीच यह अफवाह फैला रहे है कि सोवियत शासन उन सबको अपने फौलादी हाथो से दबा कर रखेगा।

"यह एक सफेद झूठ है, साथियो! आज से पहले अलग-अलग जातियो के मेहनतकशो को कभी ऐसी आजादी नही मिली थी। सारे मजदूर, सभी सर्वहारा भाई-भाई हैं। जहा तक इन अमीरो की बात है, आप यकीन रखिये हम उन्हे सिर नही उठाने देंगे।" पिजीकी का हाथ एक बार फिर जोर से घूम कर मेज पर गिरा। "कौन है वह जिसने भाई-भाई को लडा कर उन्हे एक-दूसरे का खून बहाने पर मजबूर किया? सदियो तक राजो और नवाबो ने पोलिश किसानो को तुर्को के खिलाफ लडने के लिए भेजा। उन्होने हमेशा एक जाति को दूसरी जाति के खिलाफ उकसाया है। जरा सोचिए, कितना खून बहा है और कितनी तबाही बरपा हुई है! और इस सबसे फायदा किसका हुआ? मगर अब और नही! अब यह चीज जल्द ही खत्म हो जायगी। उन घिनौने कीडो का अन्त आ गया है। बोल्शेविको ने एक ऐसा नारा दिया है जिससे पूजीशाहों के दिल डर के मारे थर-थर काप रहे हैं। वह नारा है 'दुनिया के मजदूरो, एक हो!' इसी मे हमारी मुक्ति है, इसी मे हमारे सुन्दर भविष्य की आशा है—उस दिन की आशा जब दुनिया के सारे मेहनतकश भाई-भाई होंगे। साथियो कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हो जाओ!

'एक न एक दिन पोलैंड मे भी जनतंत्र कायम होगा। मगर वह जनतंत्र होगा सोवियत जनतंत्र, जिसमे पोटोकी और उस जैसे दूसरे पूजीशाह न होंगे। उनकी जड़े उखाड कर फेंक दी जायेगी और सोवियत पोलैंड के मालिक हम लोग होंगे। ब्रोनिक पताशिन्स्की को आप सभी लोग जानते है। जानते हैं न ? इन्कलाबी कमिटी ने उन्हे हमारे कारखाने का कमिसार बनाया है। 'पहले हम कुछ नही थे, अब हम ही सब कुछ होंगे।' और यह सचमुच खुशी मनाने की बात है। हैं न साथियो ! बस एक बात का ध्यान रखो। उन छिपे हुए सापो की जहरीली फुफकारो पर कान मत दो ! आओ, हम सब मेहनतकशो के अतिम लक्ष्य मे अपना विश्वास रखे और इसमे सदेह नही कि हम दुनिया भर की जनता मे भाईचारा कायम कर लेंगे !"

ये बातें उस सीधे-सादे मजदूर के दिल की गहराइयो से निकल रही थी, इसलिए उनके शब्द-शब्द मे सच्चाई थी, ईमानदारी थी, जोश था। श्रोताओ मे जो ज्यादा नौजवान थे, उनके बुलद नारो के बीच पिजीकी प्लेटफार्म से उतरा। जो जरा अधेड उम्र के मजदूर थे, वे कुछ बोलने मे हिचक रहे थे। कौन जाने कल फिर बोल्शेविको को शहर छोडना पडे और तब तो भाई हम लोग जो पीछे छूट जायेंगे, उन्हे एक-एक लफ्ज की कीमत अदा करनी पडेगी। इसलिए जरा सभल कर बोलना चाहिए। उस वक्त फासी से चाहे बच भी जाओ, मगर नौकरी तो हाथ से गयी ही समझो।

शिक्षा का कमिसार, छरहरे कसे बदन का चेर्नोपिस्की उस इलाके का अकेला स्कूल मास्टर था जिसने अब तक बोल्शेविको का साथ दिया था।

इन्कलाबी कमिटी जिस इमारत मे थी, उसके ठीक सामने स्पेशल ड्यूटी कम्पनी थी, उसके आदमी इन्कलाबी कमिटी मे ड्यूटी दे रहे थे। रात को एक मैक्सिम तोप इन्कलाबी कमिटी के हेडक्वार्टर के फाटक पर, वही बागीचे मे तैयार खडी रहती थी। उसके पिछले हिस्से मे कारतूसो की मजबूत पेटी लटकी रहती थी। उसके पास ही दो सतरी राइफिल लिए खडे ड्यूटी देते रहते थे।

कामरेड इग्नातियेवा ने हेडक्वार्टर की ओर जाते हुए उन दो सतरियो मे से एक से, जो नौजवान लाल सैनिक था, पूछा

"तुम्हारी कितनी उम्र है, कामरेड ?"

"सत्रहवा चल रहा है।"

"तुम यही रहते हो ?"

लाल सैनिक मुस्कराया और बोला, "हा, मै परसो ही लडाई के दौरान फौज मे दाखिल हुआ हू।"

इग्नातियेवा ने गौर से उसके चेहरे का अध्ययन किया और पूछा

"तुम्हारे पिता क्या करते है ?"

"इंजन ड्राइवर के असिस्टेंट हैं।

उसी वक्त दोलिनिक वर्दी पहने एक आदमी के साथ वहां आया।

इग्नातियेवा ने दोलिनिक की तरफ मुड़ते हुए कहा, "अच्छा हुआ तुम आ गये। मुझे कोमसोमोल की जिला कमिटी का चार्ज देने के लिए ठीक वह लड़का मिल गया जिसकी मुझे तलाश थी। यहीं का रहने वाला है।"

दोलिनिक ने तेजी से सर्गेई पर नजर डाली—सर्गेई ही था यह।

"हां, बहुत अच्छा है। तुम जखार के लड़के हो न? बहुत अच्छा! डट कर काम करो और नौजवानों में, अपने बराबर वालों में, आन्दोलन करो।"

सर्गेई ने आश्चर्य से उन लोगों की ओर देखा और पूछा, "मगर कम्पनी का क्या होगा?"

"वह सब ठीक है, उसकी तुम फिक्र न करो," दोलिनिक ने सीढ़ियां चढ़ते हुए मुड़ कर जवाब दिया।

दो दिन बाद शाम होते-होते उक्रेन की नौजवान कम्युनिस्ट लीग की नगर कमिटी बन गयी थी।

सर्गेई इस नई जिन्दगी के भंवर में जी-जान से कूद पड़ा—उस नई जिन्दगी के भंवर में जो शहर में एकाएक और इतनी तेजी से शुरू हो गई थी। इस काम में सर्गेई ऐसा डूबा कि अपने घर वालों को भूल ही गया, गोकि वे लोग इतने पास थे।

हां! वह, सर्गेई ब्रुजाक, अब एक बोल्शेविक था। सौवीं बार उसने अपनी जेब से वह कागज निकाला जो उक्रेन की कम्युनिस्ट पार्टी की कमिटी ने उसे दिया था। यह कागज इस बात का सर्टिफिकेट था कि वह, सर्गेई, कोमसोमोल है और कोमसोमोल कमिटी का मंत्री है। और अगर इसमें किसी को कोई शक-शुबहा हो तो उसके पास उसके प्यारे दोस्त पावेल का उपहार वह शानदार मानलिकर पिस्तौल भी था जो जीन के केस में बन्द उसकी ट्यूनिक की पेटी से लटक रहा था। उससे ज्यादा अच्छा सर्टिफिकेट और क्या हो सकता है! कितने अफसोस की बात है कि पावलुश्का यहां नहीं है।

इन्कलाबी कमिटी जो काम उसे देती थी, उन्हीं में सर्गेई के दिन गुजर रहे थे। आज भी इग्नातियेवा उसका इन्तजार कर रही थी। वे लोग डिवीजन के राजनीतिक विभाग से इन्कलाबी कमिटी के लिए अखबार और किताबें लाने के लिए स्टेशन जाने वाले थे। सर्गेई तेजी से इमारत में से निकल कर सड़क पर आया जहां राजनीतिक विभाग का एक आदमी मोटर लिए उसका इन्तजार कर रहा था।

स्टेशन तक के अपने लम्बे सफर में, जहां पहली सोवियत उक्रेनी डिवीजन

गा राजनीतिक विभाग और उसका हेडक्वार्टर रेल के डब्बो मे कायम किया गया था, इग्नातियेवा ने सर्गेई से बहुत से सवाल पूछे।

"तुम्हारा काम कैसे चल रहा है? तुम्हारा सगठन बना कि नही? तुम्हे अपने दोस्तो से, दूसरे मजदूरो के लडको से कहना चाहिए कि कोमसोमोल मे आये। हमे जल्दी ही कम्युनिस्ट नौजवानो के एक दल की जरूरत होगी। कल हम लोग कोमसोमोलो के लिए एक पर्चा छापेंगे। उसके बाद थियेटर हॉल मे नौजवानो की एक बडी-सी रैली करेंगे। राजनीतिक विभाग मे पहुच कर मैं उस्तिनोविच से तुम्हारा परिचय कराऊगी। अगर मेरा ख्याल गलत नही है, तो वह नौजवानो मे ही काम कर रही है।"

उस्तिनोविच अठारह साल की एक लडकी निकली जिसके बाल काले-काले और बॉब किये हुए थे और जो एक नई-सी खाकी ट्यूनिक पहने थी जिसमे चमडे की एक पतली सी पेटी लगी थी। इस लडकी ने सर्गेई को उसके काम के बारे मे बहुत-सी बातें बतलाई और उसके काम मे मदद देने का वादा किया। वहा से चलने के पहले उसने सर्गेई को किताबो और अखबारो का एक बडा-सा बडल दिया जिसमे एक खास अहमियत की चीज थी—कोमसोमोल के नियमो और उद्देश्यो के बारे मे एक पुस्तिका।

उस रोज बहुत रात गये जब सर्गेई इन्कलाबी कमिटी के हेडक्वार्टर पर लौटा, तो उसने वही बाहर वालिया को अपना इन्तजार करते पाया।

उसको देखते ही वह चिल्ला पडी, "तुम्हे शर्म आनी चाहिए अपने ऊपर! इसका क्या मतलब कि इस तरह घर से अलग-अलग रहते हो? मा का रोते-रोते बुरा हाल है, और पिता जी तुमसे बहुत गुस्सा है। घर चलोगे तो देखोगे कैसा झगडा होता है।"

"नही, कुछ नही होगा," उसने वालिया को समझाते हुए कहा। "सच कहता हू, मुझे घर जाने का वक्त ही नही मिलता। आज रात भी नही आऊगा। लेकिन मुझे बडी खुशी है कि तुम आ गयी। मुझे तुमसे कुछ बात करनी है। चलो, अन्दर चलें।"

वालिया अपने भाई को पहचान ही न पा रही थी। वह बिल्कुल बदल गया था। उसके अन्दर जोश उबला पडता था।

वालिया के बैठते ही सर्गेई ने फौरन काम की बात शुरू कर दी।

"वालिया, स्थिति यह है तुम्हे कोमसोमोल मे दाखिल होना है। तुम नही जानती कि कोमसोमोल क्या है? नौजवान कम्युनिस्ट लीग। यहा पर मैं ही उसका काम चला रहा हू। मेरी बात का यकीन नही आता तुम्हे? अच्छा ना, यह देखो।

वालिया ने उस कागज को पढ़ा और अपने भाई की तरफ हैरत भरी निगाहों से देखा।

"मैं कोमसोमोल मे क्या करूंगी ?"

सर्गेई ने अपने हाथ फैलाते हुए कहा, "अरे पगली लड़की, करने को काम ही काम है! मुझी को देखो। मैं काम मे इतना फंसा रहता हू कि रात को सोने का वक्त भी नही मिलता। हमे प्रचार करना है। इग्नातियेवा कहती है कि जल्दी ही थियेटर हॉल मे एक मीटिंग होगी और उसमें सोवियत सत्ता के बारे मे बतलाया जायेगा। वे कहती हैं, मुझे भाषण देना होगा। मैं सोचता हू, उनकी यह बात गलत है। क्योकि मुझे भाषण देना आता नही और मैं सब घोटाला कर दूगा। अच्छा, अब बताओ, कोमसोमोल मे दाखिल होने के बारे मे तुम्हारा क्या खयाल है ?"

"मेरी समझ मे नही आ रहा, क्या कहू। अगर मैंने ऐसा किया तो मा बहुत नाराज होगी।"

सर्गेई ने जोर देते हुए कहा, "मा की चिन्ता मत करो, वालिया। वह समझती नही हैं। उनको बस एक बात की फिक्र है, उनके बच्चे उनके पास रहे। मगर सोवियत सत्ता के खिलाफ वह नही हैं। उल्टे वह पूरी तरह उसके साथ है। लेकिन वह चाहती हैं कि सारी लड़ाई-भिड़ाई दूसरो के लड़के लड़ें। अब तुम्हीं बताओ, क्या यह बात ठीक है ? याद है, जुखराई ने हमसे क्या कहा था ? और पावेल को देखो। वह अपनी मा के बारे मे सोचने के लिए नही रुका। वक्त आ गया है कि हम सब नौजवान अपने हक के लिए लड़ें ताकि हमारी जिन्दगी बेहतर बने। मुझे पूरा यकीन है कि तुम हमसे इन्कार नही करोगी, क्यो वालिया ? जरा सोचो, यह कितना अच्छा होगा। तुम लड़कियो में काम करना और मैं लड़को में। हा, मुझे एक बात याद आ गयी। आज ही जाकर मैं उस लाल-लाल बालो वाले बदमाश क्लिम्का से बात करूगा। हा तो वालिया, क्या कहती हो ? तुम हमारे साथ हो या नही ? यह देखो मेरे पास यह एक छोटी सी पुस्तिका है जिससे तुम्हें इस चीज के बारे में सारी बातें मालूम हो जायेंगी।"

कोमसोमोल के नियमो की वह पुस्तिका उसने अपनी जेब से निकाली और वालिया को पकड़ा दी।

"लेकिन अगर पेतल्युरा लौट आया ?" वालिया ने अपने भाई के चेहरे पर आखें गड़ाये धीमी आवाज मे पूछा।

इस चीज का खयाल अब तक सर्गेई को नही आया था और वह क्षण भर के लिए सोच मे डूब गया।

"उस हालत मे दूसरों के साथ मुझे भी चले जाना होगा, और क्या,"

उसने कहा, "मगर, तुम्हारा क्या होगा ? हा, इसमे तो शक नही कि इससे मा को बडा दु ख होगा ।" और वह खामोशी मे डूब गया ।

"सर्योजा, क्या तुम मुझे इस तरह मेम्बर नही बना सकते कि मा को या किसी और को कुछ पता न चले ? बस, तुमको और मुझको यह बात मालूम हो ? मदद तो मै तब भी उतनी ही कर सकूगी । वही सबसे अच्छा तरीका होगा ।"

"तुम शायद ठीक कहती हो, वालिया ।"

उसी वक्त इग्नातियेवा कमरे के अन्दर दाखिल हुई ।

"कामरेड इग्नातियेवा, यह मेरी छोटी बहन वालिया है । अभी मैं इससे कोमसोमोल मे दाखिल होने की बात कह रहा था । यह बडी योग्य सदस्य होगी । लेकिन देखिए, बात यह है कि मुमकिन है, हमारी मा अडचन डालें । क्या ऐसा हो सकता है कि हम वालिया को दाखिल तो कर लें, मगर किसी को कुछ पता न चले ? बात यह है कि हो सकता है हमे फिर शहर छोडना पडे । तो उस हालत मे मैं तो फौज के साथ चला ही जाऊगा, मगर वालिया डरती है कि अगर वह भी चली गयी तो मा की जिन्दगी पहाड हो जायगी ।"

इग्नातियेवा एक कुर्सी के सिरे पर बैठी बडे गौर से सर्गेई की बात सुन रही थी ।

उसने अपनी सहमति देते हुए कहा, "हा, वही सबसे अच्छा तरीका होगा ।"

शहर भर मे जो तमाम इश्तहार चिपके हुए थे, उनको देख कर शहर के नौजवान थिएटर हॉल मे भर उठे थे और एक-दूसरे से बडे जोश मे बातें कर रहे थे । हॉल उनकी बातचीत से गूज रहा था । शकर के कारखाने के मजदूरो का एक बैण्ड बज रहा था । श्रोताओ मे ज्यादातर शहर के हाई स्कूल और कालेज के विद्यार्थी थे और उन्हे मीटिंग से ज्यादा दिलचस्पी उस सगीत-नृत्य मे थी जो मीटिंग के बाद होने वाला था ।

आखिरकार, परदा उठा और उएज्द कमिटी के मत्री कामरेड राजिन, जो अभी-अभी शहर मे आये थे, मच पर दिखाई दिये ।

सब की आखें इस नाटे से, दुबले-पतले और छोटी-सी नुकीली नाक वाले आदमी की ओर मुड गयी । सबने उनके भाषण को बडे ध्यान से सुना । उन्होने लोगो को उस सघर्ष के बारे मे बतलाया जो सारे देश मे तूफान की तरह चल रहा था और तमाम नौजवानो को कम्युनिस्ट पार्टी में आने के लिए कहा । वह एक मजे हुए वक्ता की तरह बोल रहे थे, मगर "कट्टर मार्क्सवादी", "अघ राष्ट्रवादी", और इसी तरह के दूसरे कुछ फिकरे इस्तेमाल कर रहे थे जिन्हें श्रोता नही समझ रहे थे । तब भी उनका भाषण जब खतम हुआ, तो

मवने वडे जोर से तालिया वजाई। अपना भाषण खतम करने पर उन्होंने अगले वक्ता यानी सर्गेई का परिचय दिया और हट गये।

वही हुआ जिसका सर्गेई को डर था। अब वह श्रोताओ के सामने खडा था और उसकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या कहे। वह कुछ देर तक शब्दो के लिए अटका। मगर तभी इग्नातियेवा उसकी मदद को आ गयी। उसने सभानेत्री की अपनी कुर्सी से धीमे से फुसफुसा कर सर्गेई से कहा—"इन्हे सेल के वारे मे वतलाओ।"

सर्गेई ने विना किसी भूमिका के फौरन ही काम की वात शुरु कर दी।

"हा तो साथियो, जो सारी वाते कहने की थी, आपने सुन ली हैं। अब करने की वात यह है कि हमे पार्टी का एक ऐसा केन्द्र सगठित करना है जिसके इर्द-गिर्द तमाम लोगो को वटोरा जा सके। कौन लोग इससे सहमत हैं ?"

उपस्थित लोगो मे सन्नाटा छा गया। जो खाई वन गयी थी, उसको उस्तिनोविच ने भरा। वह उठ खडी हुई और उसने लोगो को वतलाया कि किस तरह मास्को मे नौजवानो का सगठन हो रहा है। इस वीच सर्गेई वौखलाया हुआ सा अलग खडा रहा।

अन्दर ही अन्दर वह तैश खा रहा था कि सेल के सगठन के सवाल पर मीटिंग की प्रतिक्रिया कितनी खराव है। उसे श्रोताओ पर मन ही मन वडा गुस्सा आ रहा था। लोग उस्तिनोविच को सुन भी नही रहे थे। सर्गेई ने जालीवानोव को उस्तिनोविच की ओर घृणा से देखते हुए लिजा सुखार्को के कान मे कुछ कहते देखा। सामने की कतार मे कालेज की वडी लडकिया वैठी थी। उनके चेहरे पाउडर से पुते थे और वे वडी अदा से अपने इर्द-गिर्द देख रही थी और आपस मे फुसफुसा रही थी। वहा उस कोने मे दरवाजे के पास नौजवान लाल सैनिको की एक टोली वैठी हुई थी। उनमे सर्गेई ने अपने परिचित नौजवान तोपची को देखा। वह स्टेज के सिरे पर वैठा वेचैनी से अपने शरीर को तोड-मरोड रहा था और खुली नफरत से, भडकीले कपडो मे सजी लिजा सुखार्को और ऐना ऐदमोवस्काया को देख रहा था। मगर उनको किसी वात की कोई शर्म नही थी और वे अपने नौजवान दोस्त लडको से वडी चुहल के साथ वातचीत कर रही थी।

यह देख कर कि कोई उसकी वात नहीं सुन रहा है, उस्तिनोविच ने जल्दी से अपनी तकरीर खतम की और वैठ गई। उसके वाद इग्नातियेवा वोलने के लिए उठी और उनके शात, गभीर अदाज ने अस्थिर श्रोताओ को अपने वश मे कर लिया।

उन्होने कहा, "साथियो, मैं आप से कहना चाहती हू कि आज रात यहा जो कुछ कहा गया है, उस पर आप गौर करें। मुझे इस वात का पक्का

यकीन है कि आप मे से कुछ लोग क्राति मे सक्रिय भाग लेनेवाले बन जायेंगे—केवल दर्शक ही नही बने रहेंगे। आपके लिए दरवाजे खुले हुए हैं, बाकी बातो का निश्चय आपको करना है। मै चाहूगी कि आप लोग अपनी राय दें। जो कोई भी कुछ कहना चाहे, मैं उसको दावत देती हू कि यहा आकर कहे।"

एक बार फिर हॉल मे सन्नाटा छा गया। फिर पीछे से एक आवाज सुनाई दी

"मैं बोलना चाहता हू।"

मिशा लेव्चुकोव, जो भेंगेपन के कारण आख से जरा तिरछा देखता था और भालू की तरह भारी-भरकम था, मच की ओर बढा।

"जो मौजूदा हालत है," उसने कहा, "उसमे हमे बोल्शेविको की मदद करनी ही होगी। मैं इसके हक मे हू। सयोंजका मुझको जानता है। मैं कोम-सोमोल मे दाखिल हो रहा हू।"

सर्गेई का चेहरा खुशी से चमकने लगा। वह लपक कर मच के बीचोबीच पहुचा और चिल्ला कर बोला, "देखा साथियो! मैं हमेशा कहता था कि मिशा हमी मे से एक है। इसका पिता स्विचमैन था और मोटर से कुचल कर मर गया था और इसीलिए मिशा की पढाई नही हो सकी। मगर आज जैसे वक्त मे किस चीज की जरूरत है, यह जानने के लिए उसे किसी कालेज मे जाने की जरूरत नही पडी।"

हॉल मे बडा शोर मचा। एक नौजवान ने, जिसके बाल बडे करीने से कढे हुए थे, बोलने की इजाजत मागी। यह ओकूशेव था। वह कालेज मे पढता था और नगर के दवाफरोश का लडका था। अपनी ट्यूनिक को तानते हुए उसने कहना शुरू किया

"आप लोग मुझे माफ करेंगे, साथियो। मेरी समझ मे नही आता कि हमसे क्या चाहा जा रहा है? क्या हमसे यह उम्मीद की जाती है कि हम राजनीति मे हिस्सा लें? अगर ऐसी बात है, तो मैं पूछता हू, हम लोग पढेंगे कब? हमे कालेज की पढाई खतम करनी ही है। अगर यह कोई खेल-कूद की सोसायटी या ऐसे क्लब के सगठन की बात होती जहा हम लोग इकट्ठा हो सकते और पढ सकते तो बात दूसरी थी। मगर राजनीति मे हिस्सा लेने का तो मतलब है आगे चल कर फासी पर टगने के खतरे को भी उठाना। न भाई, मैं नही समझता कि कोई इस बात से सहमत होगा।"

हॉल मे लोग हस रहे थे। ओकूशेव मच से कूद कर अपनी जगह पर जा बैठा। उसके बाद वह नौजवान तोपची बोलने के लिए खडा हुआ। उसने क्रुद्ध

भंगिमा से अपनी टोपी माथे पर और नीची खींच ली और श्रोताओं को तीखी नजरों से देखता हुआ गरज कर बोला :

"तुम लोग हंस किस चीज पर रहे हो कीड़ो !"

उसकी आंखें दो जलते हुए अंगारे थे और वह गुस्से से कांप रहा था। एक गहरी सांस खींच कर उसने कहना शुरू किया :

"मेरा नाम इवान जार्की है। मैं यतीम हूं। मैंने कभी अपने मां-बाप को नहीं देखा और न उनके बारे में मुझे कुछ मालूम है। न कभी मेरा कोई अपना घर रहा। मैं सड़कों पर पला और बढ़ा हूं। मैं रोटी के एक-एक टुकड़े के लिए भीख मांगता था और अक्सर मुझे भूखे पेट सो जाना पड़ता था। मैं तुम्हें बतला सकता हूं कि मैं एक कुत्ते की जिंदगी बिता रहा था। तुम सब, जो अपनी मांओं के लाड़ले यहां इकट्ठा हुए हो, तुम्हें इसके बारे में कुछ भी पता न होगा। तब सोवियत सत्ता आई और लाल सेना के लोगों ने मुझे सड़क पर से उठाया और मेरी देख-भाल की। उनकी एक पूरी प्लैटून ने मुझे गोद लिया। उन्होंने मुझे कपड़े दिये। उन्होंने मुझे लिखना-पढ़ना सिखलाया। मगर इन सबसे बड़ी चीज यह कि उन्होंने मुझको सिखाया कि इंसान बनना किसे कहते हैं। उन्हीं के कारण मैं बोल्शेविक बना और अपनी आखिरी सांस तक बोल्शेविक रहूंगा। मैं खूब अच्छी तरह जानता हूं कि हम लोग किस चीज के लिए लड़ रहे हैं। हम लोग लड़ रहे हैं अपने ही जैसे गरीबों के लिए। हम लोग मजदूरों की हुकूमत के लिए लड़ रहे हैं। तुम लोग यहां पर बैठे चबर-चबर बातें कर रहे हो। मगर, तुम्हें नहीं मालूम कि इसी शहर के लिए लड़ते हुए हमारे दो सौ साथी मारे गये हैं। उन्होंने अपने जीवन को बलिदान कर दिया..." जार्की की आवाज खिंचे हुए तार की तरह गूंज रही थी। "उन्होंने हमारे लिए, हमारे सुख के लिए, हमारी खुशी के लिए हंसते-हंसते अपनी जान दे दी...। देश भर में, तमाम मोर्चों पर, लोग मर रहे हैं और तुम लोग यहां बैठे गाल बजा रहे हो!" "साथियो," सभापति मंडली की ओर तेजी से मुड़ते हुए उसने कहा, "आप लोग खामखा इन लोगों से बात करने में अपना वक्त जाया कर रहे हैं," और फिर हॉल की तरफ उंगली से इशारा करते हुए बोला, "आप समझते हैं कि ये लोग आप की बात समझेंगे ? नहीं ! भरा पेट कभी खाली पेट का साथी नहीं होता। इनमें से सिर्फ एक आदमी आगे आया और वह इसलिए आगे आया कि वह भी गरीब है, यतीम है। मगर कोई बात नहीं," उसने उपस्थित लोगों पर गुस्से से गरजते हुए कहा, "हम लोग तुम्हारे बिना भी अपना काम काम चला लेंगे। हम लोग तुमसे भीख नहीं मांगेंगे कि आइये और हममें शरीक होइए। जहन्नुम में जाओ तुम लोग ! तुम लोगों से बात करने का अकेला

तरीका मशीनगन है !" और इसके बाद वह मच पर से उतरा और बिना दायें-बायें देखे सीधे दरवाजे की तरफ बढा ।

मीटिंग की सदारत जिन लोगो ने की थी उनमे से कोई भी सगीत-नृत्य के लिए नही रुका ।

इकलाबी कमिटी के हेडक्वार्टर को लौटते हुए रास्ते मे सर्गेई ने आक्रोश से कहा, "कैसी मुसीबत है ! कैसे अजीब लोग हैं ! जार्की बिल्कुल ठीक कहता है । यह कालेज की भीड किसी काम की नही । उनके बारे मे सोच कर दिमाग गरम हो जाता है ।"

इग्नातियेवा ने उसको बीच मे टोकते हुए कहा, "इसमे अचरज की कोई बात नहीं है । ये तमाम लोग जो इकट्ठा हुए थे, शायद ही इनमे मजदूर जमात का कोई नौजवान रहा हो। इनमे ज्यादातर या तो निचले मध्यम वर्ग के लडके थे या नगर के बुद्धिजीवियो के । गरज सब लोग ऐसे थे जो अपने स्वार्थ से आगे नही देख पाते । तुम्हे लकडी और चीनी के कारखाने के मजदूरो के बीच काम करना होगा । मगर तुम यह न समझना कि मीटिंग एकदम बेकार थी । आगे चल कर तुम देखोगे कि इन्ही विद्यार्थियो मे से कुछ बडे अच्छे साथी निकलेंगे ।"

उस्तिनोविच ने इग्नातियेवा की बात का समर्थन किया ।

वह बोली, "सर्योजा, हमारा काम अपने विचारो को, अपने नारो को, सब लोगो तक पहुचाना है । पार्टी हर नई घटना पर सभी मेहनतकशो का ध्यान केन्द्रित करेगी । हम लोग बहुत-सी सभाए, सम्मेलन, और काग्रेसें करेंगे । राजनीतिक विभाग गर्मियो के दिनो के लिए स्टेशन पर एक नाटक-शाला खोल रहा है । कुछ ही दिनो मे एक प्रचार-वैन आने वाली है और तब हमारा काम जोर-शोर से चलेगा । याद है, लेनिन ने क्या कहा था—जब तक हम लोग जनता को, करोडो मेहनतकशो को अपनी लडाई मे नही ले आते, तब तक हम कभी नही जीत सकते ।"

उसी शाम, काफी देर हो जाने पर, सर्गेई उस्तिनोविच को पहुचाने स्टेशन तक गया । उससे अलग होते समय उसने उस्तिनोविच के हाथो को मजबूती से अपने हाथो मे लिया और जितनी देर एकदम जरूरी था, उससे ज्यादा देर तक उसके हाथो को अपने हाथो मे लिये रहा । उस्तिनोविच के चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कराहट आई ।

लौटते समय सर्गेई रास्ते मे अपने घर वालो से मिलने के लिए चला गया । उसने खामोशी से अपनी मा की फटकार को सुन लिया । मगर, जब पिता ने शुरुआत की, तो सर्गेई ने जवाबी हमला किया और जखार वासीलिएविच की हालत खराब कर दी ।

"बापू, आपने जर्मनो के कब्जे के दिनो मे जब हड़ताल की थी और इजन पर के उस सतरी को मार डाला था उस वक्त आपको अपने घर वालो का खयाल आया था न ? जरूर आया था। मगर तब भी आपने उस काम को किया, क्योकि यही आपके मजदूर के अन्त करण का आदेश था। मैंने भी अपने घर वालो के बारे मे सोचा है। मैं अच्छी तरह जानता हू कि अगर हमे पीछे हटना पडा तो मेरे कारण आप लोगो को सताया जायेगा। और फिर, मैं घर पर बैठ भी तो नही सकता था। आप तो खुद सब बातो को जानते हैं, बापू। तो फिर, यह फिजूल का हो-हल्ला क्यो ? मैं एक अच्छे लक्ष्य के लिए काम कर रहा हू। आपको मुझे सहारा देना चाहिए, न कि इस तरह मेरी टाग घसीटना। आइये, हम लोग समझौता कर लें बापू, और तब मा भी मुझे डाटना बद कर देंगी।" उसने अपने पिता को अपनी साफ, नीली-नीली आखो से देखा और प्यार मे मुस्कराया। उसे इस बात का विश्वास था कि वह ठीक बात कह रहा है।

जखार वासीलिएविच अपनी बेंच पर जरा बेचैनी मे हिला और उसकी घनी कडी मूछो और छोटी-सी उलझी-गुलझी दाढी के बीच से उसके पीले से दात मुस्कराने पर दिखलाई दिये।

"वर्ग चेतना की बात कर रहे हो क्यो ? बदमाश कही का ! तुम सोचते हो कि यह जो रिवाल्वर लिए घूम रहे हो, वह मुझको तुम्हारी मरम्मत करने से रोक लेगा ?"

मगर अब उसकी आवाज मे गुस्सा नही था, उसका हल्का-सा आभास भी नही। और उसने अपने मन के आवेग को वश मे करते हुए अपना सख्त, गठीला हाथ अपने बेटे की तरफ बढाया। "ठीक है सर्योजा, करने चलो। एक बार जब तुमने शुरू कर दिया है तो मैं ब्रेक नही लगाऊगा। मगर हा, हम लोगो को एकदम भूल मत जाना, बीच-बीच मे आया जरूर करना।"

रात का वक्त था। जरा से खुले हुए दरवाजे मे से रोशनी की किरण अन्दर आकर सीढियो पर लेट गई थी। उस बडे-से कमरे मे, जिसमे ठाठदार फर्नीचर सजा हुआ था, वकील साहब की बडी-सी मेज के पीछे पाच आदमी बैठे हुए थे—दोलिनिक, इग्नातियेवा, खुफिया विभाग के अध्यक्ष तिमोशेंको, जो कौमेको जैसी फर की टोपी के कारण किरगिज नजर आते थे, वह दैत्याकार रेलवे मजदूर शूदिक और रेलवे के हाते का चपटी नाक वाला ओस्तापचुक। इकलाबी कमिटी की मीटिंग जारी थी।

दोलिनिक ने मेज पर झुकते हुए और इग्नातियेवा को कठोर आखो से देखते हुए भर्राई हुई आवाज मे कहा

"मोर्चे पर रसद पहुचाना जरूरी है। मजदूरो के लिए खाना जरूरी है। जैसे ही हम लोग आये, दूकानदारो और बाजार के मुनाफाखोरो ने दाम चढा दिये। वे सोवियत मुद्रा लेने से इनकार करते हैं। यहा सिर्फ पुरानी जारशाही मुद्रा या करेंस्की के नोट चलते हैं। आज हम लोगो को बैठ कर चीजो के दाम तय कर देने चाहिए। हम अच्छी तरह जानते हैं कि कोई भी मुनाफाखोर तय किए हुए दामो पर अपना माल नही बेचेगा। उनके पास जो कुछ है, उसे वे छिपा लेंगे। उस सूरत मे हम लोग तलाशिया लेंगे और इन खून चूसने वालो के माल को जब्त कर लेंगे। यह शराफत बरतने का वक्त नही है। हम मजदूरो को अब और भूखो नही मरने दे सकते। कामरेड इग्नातियेवा कहती हैं कि हमे सम्भल कर चलना चाहिए। अगर आप मुझसे पूछिए तो यह एक कातर बुद्धिजीवी की प्रतिक्रिया है। देखो जोया, बुरा न मानो, मैं जानता हू क्या कह रहा हू। और जो भी हो, यह छोटे-मोटे दूकानदारो का मामला नही है। आज मुझे खबर मिली है कि सराय के मालिक बोरिस जोन के घर मे एक गुप्त तहखाना है। पेतल्युरा की फौजो के आने से पहले ही बडे-बडे दूकानदारो ने वहा अपने माल के बडे बडे स्टॉक छिपा दिये हैं।" वह रुका और मखौल उडाती हुई शरीर आखो से तिमोशेंको को देखा।

तिमोशेंको ने सकपकाकर पूछा, "तुम्हे इस चीज का पता कैसे चला?" उसे यह बात बुरी लगी कि एक ऐसी खबर जिसे हासिल करने का काम खुद उसका था, दोलिनिक को पहले ही मालूम हो गई।

दोलिनिक ने मगन होते हुए कहा, "मुझे सब बात मालूम रहती है, भाई। तहखाने के बारे मे जानने के अलावा मुझे यह भी मालूम है कि कल तुमने और डिवीजन कमाडर के मोटर ड्राइवर ने मिल कर आधी बोतल समोगन उडाई थी।"

तिमोशेंको अपनी कुर्सी मे अस्थिर हुआ और उसका पीला चेहरा शर्म से लाल हो गया।

"खूब!" उसने बेमन से प्रशसा करते हुए कहा। मगर यह देख कर कि इग्नातियेवा की त्योरिया चढती जा रही हैं, उसने और कुछ न कहा। इन्कलाबी कमिटी के अध्यक्ष दोलिनिक को देखते हुए उसने अपने मन मे कहा, "देखते हो, इस बढई के पास अपना निजी खुफिया विभाग है।"

दोलिनिक कह रहा था, "सर्गेई ब्रुजाक ने मुझे यह सब बतलाया। वह किसी को जानता है जो वही रेस्तोरा मे काम करता था। वही रसोइयो से इस लडके को मालूम हुआ कि जिस चीज की भी जरूरत होती थी और जितनी भी

जरूरत होती थी, जोन उसे सप्लाई किया करता था। कल सर्गेई ने तहखाने के बारे में पक्की तरह पता लगा लिया। बस अब मालूम यह करना है कि यह तहखाना ठीक है किस जगह पर। तिमोशेंको, फौरन अपने आदमियों को इस काम पर लगा दो! सर्गेई को अपने साथ लेते जाओ। अगर हमारा मामला बैठ गया और हमने काम ठीक से किया, तो हम मजदूरों को और डिवीजन की चीजें दे सकेंगे।"

आधे घंटे बाद आठ सशस्त्र आदमी सराय के मालिक के घर में घुसे। दो बाहर फाटक पर पहरा देने के लिए रुक गये।

मालिक नाटा-सा, शराब के पीपे की तरह गोल-मटोल आदमी था। उसकी एक टांग लकड़ी की थी और चेहरे पर लाल-लाल बाल थे। उसने अतिरिक्त नम्रता से आगन्तुकों का स्वागत किया। अपनी मोटी भारी आवाज में उसने पूछा :

"क्या बात है, साथियो ! इतनी रात गये कैसे आये ?"

जोन के पीछे उसकी लड़कियां जल्दी में अपने ड्रेसिंग गाउन पहने, तिमोशेंको की टार्च की रोशनी में आंखें मुलमुलाती हुई खड़ी थीं। दूसरे कमरे से जोन की भरे बदन की सुन्दर पत्नी की आहों और कराहों की आवाज सुनाई दे रही थी। वह भी जल्दी-जल्दी कपड़े पहन रही थी।

"हम लोग मकान की तलाशी लेने आये हैं," तिमोशेंको ने संक्षेप में अपनी बात कह दी।

फर्श की एक-एक इंच जमीन का अच्छी तरह मुआइना किया गया। गल्ला भरने के बड़े से कोठे को, जिसमें कटी हुई लकड़ी का अम्बार लगा हुआ था, बहुत से भंडारघरों को, रसोई को और एक खूब बड़े से तहखाने को—सब को बहुत सावधानी से देखा गया, तलाशी ली गयी। मगर गुप्त तहखाने का कहीं पता न चला।

रसोई से हट कर एक छोटी सी कोठरी थी जिसमें नौकरानी सोई हुई थी। वह इतनी गहरी नींद में सो रही थी कि उसको इन लोगों के आने की आहट भी नहीं मिली। सर्गेई ने उसको बहुत हल्के से जगाया।

"तुम यहां काम करती हो ?" उसने पूछा। उस भौंचक लड़की ने, जिसकी आंखें नींद से भारी हो रही थीं, कम्बल को अपने कंधे तक खींच लिया और अपनी आंखों को रोशनी से बचाने के लिए आड़ की।

"हां," लड़की ने जवाब दिया। "तुम कौन हो ?"

सर्गेई ने उसको बतलाया कि वह कौन है और यह कह कर कि जल्दी से कपड़े पहन लो, वह कमरे से बाहर आ गया।

खाना खाने के बडे से कमरे मे तिमोशेंको सराय के मालिक से सवाल कर रहा था और मालिक बहुत परेशान होकर बडबडा रहा था

"आप मुझसे चाहते क्या हैं ? मेरे पास और कोई तहखाने नही हैं। मेरी बात का यकीन कीजिये, आप फिजूल अपना वक्त बरबाद कर रहे है। हा, यह सही है कि कभी मैं सराय का मालिक था। लेकिन, अब मैं एक गरीब आदमी हू। पेतल्युरा के लोगो ने मेरे पास से सब कुछ झाड लिया और वह तो कहिए बच गया, नही तो उन्होने मुझे मार ही डाला था। मुझे बडी खुशी है कि सोवियत राज कायम हो गया है। लेकिन मेरे पास जो कुछ है, वह तो आपके सामने है, आप देख सकते हैं," कहते हुए उसने अपने छोटे-छोटे मोटे-ताजे हाथ फैला दिये। पूरे वक्त उसकी लाल-लाल आखें तिमोशेंको के चेहरे से सर्गेई के चेहरे पर और सर्गेई के चेहरे से कोने मे और छत पर दौडती रही।

तिमोशेंको ने अपने ओठो को चबाते हुए कहा

"तो तुम बतलाओगे नही ? आखिरी बार मैं तुम्हे हुक्म देता हू कि तुम हमे अपना गुप्त तहखाना दिखलाओ।"

सराय के मालिक की बीवी ने रोते हुए कहा, "मगर कामरेड अफसर, हमारे पास खुद अपने खाने के लिए नही है। हमारे पास जो कुछ था, सब उन लोगो ने छीन लिया।" उसने रोने की कोशिश की, मगर बेसूद।

सर्गेई ने कहा, "तुम कहती हो कि तुम भूखो मर रही हो। फिर यह नौकरानी तुमने कैसे रखी है ?"

"वह नौकरानी नही है। एक गरीब लडकी है जो हमारे साथ रहती है, क्योकि उसका और कही कोई ठिकाना नही है। खुद खिस्तिना से पूछ कर देख सकते हो।"

अब तिमोशेंको के धीरज का अन्त हो गया और उसने चिल्ला कर कहा, 'अगर यही तुम्हारी मर्जी है, तो हम भी अच्छी तरह अपना काम करेंगे।"

सुबह हुई, मगर तलाशी अब भी जारी थी। तेरह घटे की बेकार कोशिश से तग आकर तिमोशेंको ने अब तलाशी को खतम करने का फैसला कर लिया था जब कि सर्गेई ने, जो कि नौकरानी की कोठरी की जाच के बाद बाहर निकलने ही वाला था, अपने पीछे से उस लडकी की धीमी फुसफुसाहट सुनी "रसोई घर मे अगीठी के पीछे देखो।"

दस मिनट बाद, उस अगीठी के तोडे जाने पर लोहे का एक चोर दरवाजा दिखाई दिया। और घटे भर के अदर दो टन माल ढोने वाली एक भारी ट्रक पीपे और बोरे लाद कर सराय से चली जहा बहुत से लोगो की भीड आश्चर्य से आखें फाडे, मुह बाये खडी थी।

एक रोज जब बहुत गरमी पड रही थी, मारिया याकोवलेवना कोर्चागिना अपने सामान की एक छोटी सी पोटली लिए घर आई। जब आर्तेम ने उसे पावेल के बारे मे बतलाया, तो वह जार-जार रोने लगी। अब उसे अपनी जिंदगी खोखली और नीरस मालूम पडती थी। उसे अपने लिए काम की तलाश थी और कुछ दिन बाद उसने लाल सेना के लोगो के कपडे धोना शुरू कर दिया जिसके बदले मे, मजदूरी के तौर पर, उसे सैनिको का राशन मिल जाता था।

एक शाम उसने खिडकी के बाहर आर्तेम के पैरो की आहट सुनी। आज आर्तेम और रोज से ज्यादा जल्दी-जल्दी आ रहा था। उसने धक्का देकर दरवाजा खोला और देहलीज पर से ही ऐलान किया, "मैं पावका की एक चिट्ठी लाया हू।"

पावेल ने लिखा था

"प्यारे भाई आर्तेम, यह मैं तुम्हे यह बतलाने के लिए लिख रहा हू कि मैं जिंदा हू, हालाकि मेरा हाल बहुत अच्छा नही है। मेरे कूल्हे मे गोली लगी थी, लेकिन अब मैं अच्छा हो रहा हू। डाक्टर का कहना है कि हड्डी मे चोट नही लगी है। इसलिए मेरे बारे म परेशान मत होना, मैं ठीक हो जाऊगा। अस्पताल से रिहा होने पर शायद मुझे छुट्टी मिल जायेगी, और मैं कुछ रोज के लिए घर आऊगा। मैं मा के पास तक नही पहुच सका। हुआ यह कि मैं कामरेड कोतोव्स्की की घुडसवार ब्रिगेड मे भरती हो गया। मैं समझता हू, कामरेड कोतोव्स्की के बारे मे तुमने जरूर सुना होगा क्योकि वह अपनी बहादुरी के लिए बहुत मशहूर है। मैंने उनके जैसा आदमी पहले कभी नही देखा। अपने कमाडर के लिए मेरे मन मे बहुत श्रद्धा है। क्या मा घर लौट आई? अगर लौट आई हो तो उन्हे मेरा प्यार देना। मैंने तुम्हे जो भी तकलीफ दी हो, उसके लिए मुझे माफ करना। तुम्हारा भाई पावेल।

"आर्तेम, जरा जगल के वार्डन के यहा चले जाना और वहा लोगो को उस मत के बारे मे बतला देना।"

पावेल की चिट्ठी सुन कर मारिया याकोवलेवना बहुत रोई। कैसा पागल लडका है, उसने अपने अस्पताल का पता भी नही दिया।

सर्गेई अब स्टेशन की उस हरी रेलवे कोच मे अक्सर आया-जाया करता था जिस पर लिखा था "राजनीतिक विभाग का प्रचार दफ्तर।" इसी आदोलन और प्रचार वाली गाडी के एक डब्बे मे उस्तिनोविच और इग्नातियेवा का

दफ्तर था। नर्गेई को देख कर इग्नातियेवा, जिसके मुह मे सदा सिगरेट लगी रहती थी, इस अंदाज से मुस्कराती थी कि मुझे सब कुछ मालूम है।

कोमसोमोल जिला कमिटी का मंत्री सर्गेई इधर रिता उस्तिनोविच का बडा दोस्त हो गया था और जब वह वहा से लौटता, तो किताबो और अखबारो के बडल के अलावा एक अव्यक्त सुख की अनुभूति भी सदा अपने साथ ले आता था।

हर रोज राजनीतिक विभाग के ओपन एयर थिएटर को देखने बहुत से मजदूर और लाल सैनिक आया करते थे। बारहवी सेना की प्रचार-वैन रग-बिरगे पोस्टरो से ढकी साइडिंग मे खडी रहती थी और उसमे चौबीसो घटे जोर-शोर से काम होता रहता था। उसके अन्दर एक छोटा-सा प्रेस भी लगा दिया गया था और अखबार, पर्चे, घोषणाए बराबर छप कर वहा से निकलती रहती थी। मोर्चा करीब ही था।

एक शाम सयोग से सर्गेई भी थियेटर मे पहुच गया और वहा उसने रिता को लाल सैनिको की एक टोली के साथ पाया। उसी रात जब वह उसे पहुचाने के लिए स्टेशन जा रहा था—वही राजनीतिक विभाग के कर्मचारियो को रहने के लिए जगह दी गई थी—तो उसने कह डाला "कामरेड रिता, ऐसा क्यो है कि मुझे हमेशा तुमसे मिलने की चाह रहती है?" फिर बोला, "कितना अच्छा लगता है, तुम्हारे साथ रहना! तुमसे मिलने के बाद मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि मैं बिना थके काम करता रह सकता हू।"

रिता रुक गयी। "देखो कामरेड ब्रुजाक," उसने कहा, "अभी इसी वक्त हमे यह बात तय कर लेनी चाहिए कि फिर कभी तुम ऐसी शायरी की बातें मुझसे न करोगे। मुझे यह पसद नही है।

सर्गेई शर्म के मारे उसी तरह लाल हो आया जैसे स्कूल का लडका डाट खाने पर।

"मेरा कोई बुरा मतलब नही था," उसने कहा, "मैंने सोचा था कि हम लोग दोस्त तो हैं ही.. मैंने कोई क्रांति-विरोधी बात तो नही कही थी! या कही थी? अच्छा कामरेड उस्तिनोविच, अब मैं एक भी शब्द और न कहूगा!"

उसने जल्दी-जल्दी उससे हाथ मिलाया और लगभग दौडता हुआ शहर की ओर लौट गया।

सर्गेई कई दिन तक स्टेशन के पास भी नही फटका। इग्नातियेवा ने उससे वहा आने के लिए कहा, तो वह यह कह कर टाल गया कि काम बहुत है, फुरसत नही मिलती और सच बात तो यह थी कि उसे था भी बहुत काम।

एक रात जब सूदिक एक ऐसी सड़क से घर आ रहा था जिसमे ज्यादातर चीनी के कारखाने में मैनेजरी करने वाले पोल रहा करते थे, तो उस पर गोली चलाई गई। उसके बाद जो तलाशियां हुईं उनमें बहुत सी बन्दूकें और 'ब्येलेस्त' नामक एक पिल्सुद्स्की संगठन के कागजात मिले।

इन्कलाबी कमिटी में एक सम्मेलन बुलाया गया। उस्तिनोविच, जो वहां मौजूद थी, सर्गेई को एक तरफ ले गई और शान्त गम्भीर स्वर में बोली, "लगता है तुम्हारे अहम् को ठेस लगी है, है न? तुम्हारी इन व्यक्तिगत चीजों से काम को तो नुकसान नहीं पहुंच रहा है? नहीं कामरेड, इस तरह से तो काम नहीं चलेगा।"

इसके बाद सर्गेई ने फिर से स्टेशन जाना शुरू कर दिया।

वह गुब जिला सम्मेलन में शरीक हुआ और दो दिन तक जारी गरमा-गरम बहसों में उसने हिस्सा लिया। तीसरे रोज सम्मेलन के अन्य प्रतिनिधियों के साथ-साथ वह भी नदी पार के जंगल में गया और जारुदनी के डाकुओं से लड़ते एक दिन और एक रात बिताई। यह लुटेरों का सरदार जारुदनी पहले पेतल्युरा का एक अफसर था।

लौटने पर वह इग्नातियेवा से मिलने के लिए गया और उस्तिनोविच को भी वहां बैठे पाया। बाद में वह उसे घर पहुंचाने के लिए स्टेशन तक गया और विदा होते समय उसके हाथों को जोर से अपने हाथों में ले लिया। उस्तिनोविच ने गुस्से से अपना हाथ छुड़ा लिया। इसके बाद फिर कई रोज तक सर्गेई प्रचार की गाड़ी में नहीं गया और काम होने पर भी रिता से मुलाकात टालता रहा। और जब रिता उससे पूछती कि ऐसा क्यों है, तो वह बेरुखी से जवाब देता: "आपसे बात करने से फायदा? आपसे कोई क्या कहे? आप मुझ पर यही अभियोग लगायेंगी कि मैं व्यक्तिवादी हूं या मजदूर वर्ग के साथ विश्वासघात कर रहा हूं या इसी तरह की कोई और बात।"

काखेशम की लाल झण्डा डिवीजन को लेकर आई रेलगाड़ी स्टेशन पर रुकी। तीन स्याहफाम कमाण्डर इन्कलाबी कमिटी में आये। उनमें से एक लम्बा छरहरा आदमी था जो नक्काशी की हुई चांदी की पेटी लगाये हुए था। वह सीधे दोलिनिक के पास गया और ऐसे स्वर में अपनी मांग रखी कि जैसे वह इनकार की बात भी सुनने के लिए तैयार न हो। बोला, "बहस की जरूरत नहीं। मुझे फौरन सौ गाड़ी सूखी घास चाहिए। मेरे घोड़े मर रहे हैं।"

लिहाजा सर्गेई को दो स्काउट सैनिकों के साथ सूखी घास बरामद करने के लिए जाना पड़ा। एक गांव में कुलकों के एक गिरोह ने उन पर हमला किया।

लाल सेना के लोगो के हथियार छीन लिये गये और उन्हे बहुत बेरहमी से पीटा गया। छोटा होने के कारण सर्गेई पर मार कम पडी। गरीब किसानो की कमिटी ने उनको गाडी पर लाद कर शहर पहुचाया।

फिर एक सशस्त्र टुकडी उसी गाव मे भेजी गई और अगले रोज सूखी घास आ गई।

उसके घर वालो को कोई घबराहट या परेशानी न हो, इस ख्याल से सर्गेई अपनी चोट ठीक होने तक इग्नातियेवा के यहा ठहरा रहा। रिता उस्तिनोविच वहा उससे मिलने के लिए आई और पहली बार उसने ऐसे प्यार मे सर्गेई का हाथ दबाया जिसकी वह हिम्मत भी नही कर सकता था।

एक दिन तीसरे पहर जब खासी गरमी पड रही थी, सर्गेई रिता से मिलने के लिए प्रचार की गाडी मे गया। उसने रिता को पावेल का खत सुनाया और उसे अपने दोस्त के बारे मे कुछ बातें बतलाईं। डब्बे मे से बाहर आते हुए उसने गर्दन मोड कर कहा, "मैं जगल मे जाकर झील मे नहाने की सोच रहा हू।"

रिता ने अपने काम पर से आख उठाते हुए कहा, "मेरे लिए रुको। मै भी तुम्हारे साथ चलूगी।"

झील दर्पण की तरह चिकनी और शान्त थी। उसके साफ नीले पानी मे एक ऐसी ताजगी थी जो दावत सी देती जान पडती थी।

रिता ने उससे आदेश के स्वर मे कहा, "वहा सडक पर मेरा इन्तजार करो। अब मैं नहाऊगी।"

सर्गेई पुल के पास एक बडे पत्थर पर बैठ गया और सूरज की तरफ देखने लगा। उसको पीछे से पानी मे छप-छप की आवाज सुनाई दे रही थी।

तभी उसने दरख्तो के बीच से तोनिया, तुमानोवा और चुजानिन को हाथ मे हाथ डाले सडक पर आते देखा। चुजानिन प्रचार की गाडी का फौजी कमिसार था। अपनी अच्छी सिली हुई अफसर की वर्दी मे, जिसमे बडी खूबसूरत चमडे की पेटी और न जाने कितने फीते लगे हुए थे, और चरमर करते हुए अपने क्रोम के जूतो मे चुजानिन बडा बाका जवान मालूम हो रहा था। वह तोनिया के साथ बातचीत मे डूबा हुआ था।

सर्गेई ने तोनिया को पहचान लिया। वही पावेल का खत उसके पास ले गयी थी। पास आने पर तोनिया ने भी सर्गेई को गौर से देखा। वह भी उसे पहचानने की कोशिश कर रही थी। वे दोनो बराबर पर आ गये तो सर्गेई

ने अपनी जेब में से पावेल का आखिरी खत निकाला और तोनिया की तरफ आगे बढा।

"एक मिनट, कामरेड ! यह मेरे पास एक खत है जिसका कुछ सम्बध आपसे भी है।"

अपना हाथ छुडाते हुए तोनिया ने वह खत लिया। उसे पढते वक्त कागज का वह टुकडा उसके हाथ मे थोडा सा कापा।

सर्गेइ को खत वापिस देते हुए तोनिया ने पूछा, "तुम्हारे पास पावेल की और भी कोई खबर है ?"

सर्गेई ने कहा, "नही।"

उसी वक्त रिता के पैरो तले ठूठो के दबने की आवाज सुनाई दी और चुजानिन ने, जिसे रिता की उपस्थिति का कोई भान नही था, झुक कर धीरे से तोनिया के कान मे कहा, "हम लोगो को यहा से चले जाना चाहिए।"

मगर रिता की मखौल उडाती हुई थोडी नफरत मिली आवाज ने उनको रोका

"कामरेड चुजानिन ! आज सारे दिन लोग आपको गाडी मे तलाश करते रह गये।"

चुजानिन ने चिढ कर उसे देखा और बदमिजाजी से जवाब दिया, "कोई बात नही, मेरे बिना भी वे लोग अपना काम चला लेंगे।"

रिता ने तोनिया और फौजी कमिसार को जाते हुए देखा।

खुश्की से उसने कहा, "जितनी जल्दी इस बेमसरफ आदमी को यहा से भगाया जाय उतना ही अच्छा !"

हवा ओक की डालो को हिला रही थी और जगल मे मरमर की आवाज गूज रही थी। झील से हवा के परो पर चढ कर बडी प्यारी ताजगी आ रही थी। सर्गेई ने पानी मे घुसने की सोची।

जब वह तैर कर लौटा तो उसने सडक के पास एक पेड के तने पर रिता को बैठे पाया। वे दोनो बात करते हुए घने जगल मे घूमने चले गये। जगल के बीच एक खुले मैदान मे, जहा ऊची-ऊची घनी घास उगी थी, वे आराम करने के लिए रुके। जगल मे बडी शान्ति थी। ओक के दरख्त आपस मे सरगोशिया कर रहे थे। रिता नर्म घास पर लेट गई और अपने हाथ बाध कर सिर के नीचे रख लिये। पुराने टाके-लगे जूतो मे उसकी खूबसूरत टागें ऊची-ऊची घास मे छिपी हुई थीं।

सर्गेई की आखें इत्तफाक से उसके पैरो पर पडी। उसने उसके सफाई से मरम्मत किये हुए जूते को देखा और फिर अपने जूते को देखा जिसके सूराख मे से उसका अगूठा झाक रहा था। वह हस पडा।

"क्यो, किस बात पर हस रहे हो ?" रिता ने पूछा।

सर्गेई ने अपने जूते की तरफ इशारा किया और कहा, "ऐसे जूतो मे भला हम कैसे लडेंगे ?"

रिता ने कोई जवाब नही दिया। वह दूब का एक छोटा सा टुकडा मुंह मे डाले चबा रही थी और स्पष्ट ही उसके विचार कही और दौड रहे थे।

आखिरकार उसने कहा, "चुजानिन बहुत जलील पार्टी मेम्बर है, दो कौडी का। हमारे दूसरे राजनीतिक कार्यकर्ता तो चीथडे पहने घूमते है, मगर इसको बस अपनी फिक्र रहती है। सही बात यह है कि पार्टी मे उसके लिए जगह नही है . । जहा तक मोर्चे की बात है, वहा हालत सचमुच बहुत संगीन है। हमारे देश को अभी बहुत लम्बी और कठिन लडाई लडनी है।" वह रुकी और फिर बोली, "हमे शब्दो से लडना होगा और राइफिलो से भी, सर्गेई। तुमने केंद्रीय समिति के फैसले के बारे मे सुना है कि कोमसोमोल के एक-चौथाई सदस्यो को फौज मे भरती कर लिया जाय ? सर्गेई, अगर तुम मुझसे पूछो तो मेरा खयाल है कि अब हमे और ज्यादा दिन यहा नही रहना है।"

उसकी बात सुनते हुए सर्गेई ने कुछ आश्चर्य के साथ यह लक्ष्य किया कि रिता की आवाज मे आज कोई नया ही सुर है। रिता की काली-काली, पानी की तरह साफ आखें उसको देख रही थी और उसके मन मे आया कि वह बेखटके उससे कह दे कि उसकी आखें दर्पण की तरह हैं। मगर उसने अपने आपको रोक लिया।

रिता ने कोहनी के बल टिकते हुए कहा, "तुम्हारा पिस्तौल कहा है ?"

सर्गेई ने बडे दु ख से अपनी पेटी पर उगली दौडाई और कहा, "उन कुलकों ने छीन लिया।"

रिता ने अपनी ट्यूनिक की जेब मे हाथ डाला और एक चमचमाता हुआ ऑटोमैटिक पिस्तौल निकाला।

"उस ओक को देख रहे हो, सर्गेई ?" कहते हुए उसने पिस्तौल की नली से एक बहुत पुराने पेड के तने की ओर इशारा किया जो कि वहा से लगभग पच्चीस कदम पर था। फिर आख की सीध मे पिस्तौल को ले आकर उसने बगैर निशाना साधे गोली दाग दी। गोली तने मे लगी और छिलके जमीन पर बरस गये।

"देखा ?" अपने-आप पर बहुत मगन होते हुए उसने कहा। उसने दुबारा गोली दागी और फिर यही हुआ—पेड के छिलके घास पर बरस गये।

"यह लो," उसने व्यगपूर्ण ढग से मुस्कराते हुए पिस्तौल सर्गेई को पकडाया और कहा, "अब तुम्हारा निशाना देखें।"

तीन निशानो मे से सर्गेई का एक निशाना चूका। रिता शाबाशी देने के

अन्दाज में मुस्कराई और बोली, "मैं तो सोचती थी कि तुमसे इतना भी नहीं बनेगा।"

उसने पिस्तौल को नीचे रख दिया और फिर घास पर लेट गई। उसकी ट्यूनिक तनने से उसकी कसी हुई छाती का उभार दिखलाई दे रहा था।

"सर्गेई," उसने धीरे से कहा, "यहा आओ।"

सर्गेई और पास खिसक गया।

"आसमान को देखो। देखो कैसा नीला है। तुम्हारी आखें भी इसी रग की हैं। और यह ठीक नहीं। उन्हें भूरा होना चाहिए, फौलाद की तरह। नीला रग बहुत कोमल होता है।"

एकाएक उसने सर्गेई के सुनहले बालो वाले सिर को अपनी बाहो मे भर लिया और उसके ओठो पर अपने ओठ रख दिये।

दो महीने गुजर गये। पतझड के दिन आ गये।

पेडो को अपनी काली चादर मे छिपाती हुई रात दबे पैरो से आई। डिवीजन हेडक्वार्टर्स का तार बाबू अपने टिक्-टिक् टिय्-टिक् करते हुए यत्र पर झुका हुआ था और कागज के लम्बे पतले फीते साप की तरह उसकी उगलियो के इर्द-गिर्द लिपटते जा रहे थे और वह जल्दी-जल्दी उनके डाटो और डैशो को रूपातरित करके शब्दो और वाक्याशो मे बदलता जा रहा था

> "चीफ आफ स्टाफ, पहली डिवीजन। नकल शेपेतोवका इकलावी कमिटी के चेयरमैन को। इस तार को पाने के दस घटे के अन्दर-अन्दर सारे सरकारी दफ्तर शहर से हटा दो। शहर मे एक बटालियन न रेजिमेट के कमाडर के चार्ज मे छोड दो। वही इस मोर्चे के कमाडर हैं। डिवीजन हेडक्वार्टर्स, राजनीतिक विभाग, सारी फौजी संस्थाए बराचेव स्टेशन मे ले जाओ। डिवीजन कमाडर को रिपोर्ट करो कि हुक्म पूरा किया गया। (दस्तखत)"

दस मिनट बाद एक मोटर साइकिल शहर की सोती हुई सडको पर दौडती जा रही थी। उसकी हेडलाइट अधेरे को चीर रही थी। मोटर साइकिल इकलावी कमिटी के फाटक के सामने रुकी। उसका सवार जल्दी से अदर गया और उसने यह तार चेयरमैन दोलिनिक के हाथ मे दिया। फौरन उस जगह हलचल शुरु हो गई। स्पेशल ड्यूटी कम्पनी को कतार मे खडा किया गया। एक घटे बाद इकलावी कमिटी के माल असबाब से लदी हुई गाडिया शहर के बीच होकर पोडोल्स्क स्टेशन की ओर चल पडी। वहा इस सारे माल असबाब को रेल के डब्बो मे लादा गया।

तार मे लिखी बातो का सर्गेई को पता चला तो वह मोटर साइकिल वाले के पीछे भागा।

"कामरेड तुम मुझे स्टेशन तक पहुचा दोगे ?" उसने सवार से पूछा।

"कूद कर पीछे चढ जाओ, मगर जरा जोर से पकडे रहना।"

प्रचार का डब्बा गाडी मे लगाया जा चुका था। उससे दस-बारह कदम पर ही सर्गेई ने रिता को देखा। उसने रिता के कधो को पकड लिया और इस बात को समझते हुए कि अभी जरा ही देर मे वह चीज, जो उसके लिए इतनी अनमोल थी और जिसे वह इतना प्यार करने लगा था, बिछुड जायगी, उसने धीरे से कहा, "अलविदा रिता, मेरी प्यारी कामरेड! हम लोग फिर कभी मिलेंगे। मुझे भूलना मत।"

उसे इस बात से बडी घबराहट हुई कि आसुओ से उसका गला रुधा जा रहा है। उसे फौरन यहा से चले जाना चाहिए। उसे अपने पर भरोसा न था कि अगर बोला, तो न जाने क्या बक दे, इसलिए उसने रिता के हाथ को इतने जोर से दबाया कि रिता का हाथ दर्द करने लगा।

सवेरा हुआ तो शहर और स्टेशन वीरान और उजडे हुए थे। आखिरी गाडी जैसे अपनी सीटी से अलविदा कहती हुई स्टेशन के बाहर जा चुकी थी और अब सिर्फ पीछे छोड दी गई बटालियन रेलवे लाइन के दोनो तरफ मुस्तैद खडी थी।

पेडो से पीली-पीली पत्तिया झड कर नीचे आ रही थी और शाखें नगी हो रही थी। हवा गिरती हुई पत्तियो को पकड लेती थी और अपने साथ उडा ले जाती थी।

सर्गेई लाल सेना का बरानकोट पहने, कारतूसो की किरमिच की बनी पेटी कधे पर लटकाये, लाल सेना के बारह सिपाहियो के साथ चीनी के कारखाने के सामने वाले चौराहे पर तैनात था। पोल लोग करीब थे।

आवतोनम पैत्रोविच ने अपने पडोसी जेरासिम लियोनतियेविच के दरवाजे पर दस्तक दी। जेरासिम ने अभी कपडे नही पहने थे, लिहाजा उसने दरवाजे में से सिर निकाल कर पूछा

"क्या बात है ?"

आवतानम पैत्रोविच ने सडक पर जाते हुए लाल सेना के लोगो की ओर इशारा किया और आख मार कर कहा, "ये लोग भाग रहे हैं।"

जेरासिम लियोनतियेविच ने चिंतित मुद्रा से उसकी ओर देखा और बोला, "तुम्हे मालूम है पोलो का कैसा चिह्न है ?"

"मेरा खयाल है, उनका चिह्न वही एक सिर वाला ईगल है।"

"कहा मिलेगा ?"

आवतोनम पैन्नोविच ने परेशानी से अपना सिर खुजलाया और दो-एक पल विचार करने के बाद कहा, "उनके लिए तो यह सब ठीक है, बस उठे और चल दिये। मगर मुसीबत तो हम लोगो की होती है जिन्हे नये मालिकान के के साथ मेल बैठाना पडता है।"

एक मशीनगन की आवाज ने खामोशी को भग कर दिया। अचानक स्टेशन से एक इजन की सीटी सुनाई दी और उसके ठीक बाद वही से तोप दगने की आवाज आई। एक भारी बमगोला जोर से सू करता हुआ हवा मे उडा और कारखाने के उस पार सडक पर गिरा जिससे सडक के आस-पास की झाडिया नीले धुए के बादल मे ढक गई। पीछे हटते हुए लाल सैनिक एक-दम चुपचाप और गम्भीर, किसी कठोर सकल्प की मूर्ति बने, सडक पर मार्च करते चले जा रहे थे और रह-रह कर पीछे मुड कर देखते जाते थे।

सर्गेई की आख से गिरा आसू बर्फ जैसी सर्द राह बनाता उसके गाल पर से लुढक कर नीचे आ रहा था। उसने जल्दी से उसे पोछ डाला और चोरी-चोरी अपने साथियो की ओर देखा, कही किसी ने देख तो नही लिया। सर्गेई के बगल मे लकडी के कारखाने का एक दुबला-पतला मजदूर आन्तेक क्लोपो-तोव्स्की चल रहा था। उसकी उगली अपनी राइफिल के घोडे पर ठहरी हुई थी। आन्तेक उदास और अपने-आप मे खोया हुआ था। उसकी आखें सर्गेई की आखो से मिली तो उसने उन विचारो को, जो उसे सता रहे थे, सर्गेई के साथ बाटा।

"वे लोग हमारे घर वालो को बडी मुसीबत करेंगे, खास कर मेरे क्योकि हम लोग पोल हैं। वे कहेगे, तुम पोल होकर पोलिश लीजन का विरोध कर रहे हो! मुझे तो इसमे जरा भी शक नही कि मेरे बुड्ढे बाप को ठोकर मार कर वे लोग कारखाने से निकाल देंगे और कोडे भी लगायेंगे। मैंने उनसे कहा कि चलिए, हमारे साथ चले चलिए, मगर घर वालो को छोडने को उनका जी न हुआ। जहन्नुम मे जायें हरामजादे, मैं तो बेताब हो रहा हू कि कितनी जल्दी उनको पाऊ!" कहते हुए आन्तेक ने अपने टोप को जो उसकी आखो पर झुक आया था, गुस्से से पीछे सरकाया।

अलविदा मेरे प्यारे शहर, तुम जो अपनी सारी बदसूरती और गदगी के बावजूद, अपने बदसूरत छोटे-छोटे घरो और टेढी मेढी सडको के बाद भी हमे इतने प्यारे लगते हो। विदा, मेरे प्यारो विदा। विदा बालिया और मेरे

साथियो, जो गुप्त रूप से काम करने के लिए रुक रहे हो। बेरहम, क्रूर, विदेशी पोलिश ह्वाइट गार्ड दस्ते पास आ रहे है।

रेलवे मजदूरों ने, जो अपनी तेल के धब्बे लगी कमीजे पहने हुए थे, उदास आखो से लाल फौज के सैनिको को जाते हुए देखा।

सर्गेई ने दुखते हुए दिल से चिल्ला कर कहा, "हम लोग लौट कर आयेंगे, साथियो!"

आठ

भोर के धुधलके मे ढकी हुई नदी की शान्ति दब गयी है और वह बहती चली जा रही है। किनारो के चिकने ककडो से उसका पानी टकरा रहा है और मद्धिम सी, कोमल सी आवाज पैदा हो रही है। किनारो पर उथला पानी शान्त है, उसकी रुपहली सतह पर कही कोई लहर नही है, मगर बहा मझधार मे नदी का रग स्याह है और पानी बेचैन। अपनी इसी बेचैनी मे वह तेजी से बहता जा रहा है। किसी साम्राज्ञी का सा सौंदर्य है इस नदी का—जिसे गोगोल ने अमर बना दिया है! नदी की दाहिनी तरफ एकदम सीधी कगार है जो आकर सीधे पानी मे गिरती है, मानो किसी आगे बढ़ते हुए पहाड को पानी की भीम धारा ने आकर रोक दिया हो। नीचे बाईं तरफ का किनारा सपाट है और वह जगह रेत के धुस्सो से घिरी हुई है। बसन्त के दिनो मे बाढ आयी थी, उसका पानी जब लौटा तो रेत के ये छोटे-छोटे टीले छोडता गया।

चपटी सी थूथन वाली मैक्सिम तोप नदी के किनारे एक छोटी सी खाई मे रखी हुई थी और पाच आदमी उसके पास लेटे हुए थे। यह सातवी राइफल डिवीजन की एक अगली चौकी थी। तोप के सबसे पास, नदी के ठीक सामने, सर्गेई ब्रूजाक लेटा हुआ था।

परसो लडाई से थक कर और पोलिश तोपो की तूफानी मार मे पीछे ढकेले जाकर उन्होने कीव छोड दिया था, वे पीछे हट कर नदी के बाये किनारे पर आ गये थे और वही उन्होने अपने पैर जमा लिये थे।

पीछे हटना, जान का इतना नुकसान और फिर कीव का दुश्मन के हाथ मे चले जाना, इन सारी चीजो से सैनिको को बडा गहरा धक्का लगा था। सातवी डिवीजन दुश्मन के घेरे मे पड जाने पर भी बडी वीरता से लडती हुई

दुश्मन की पातो को चीर कर बाहर निकल आयी थी और मालिन स्टेशन की रेलवे लाइन पर पहुच गयी थी। उसने बडा तेज हमला करके पोलिश फौजो को पीछे ढकेल दिया था और कीव का रास्ता साफ कर दिया था।

मगर उनको वह प्यारा शहर छोडना पडा था और इसका लाल सेना के सैनिको को बडा दुख था।

लाल टुकडियो को दारनित्सा से बाहर खदेड कर पोल फौजें अब रेल के पुल के बगल मे नदी के बायें किनारे पर एक छोटी-सी पुलिया पर मोर्चा जमा कर बैठ गयी थी। मगर इधर के तेज जवाबी हमलो ने उस जगह से आगे बढने की उनकी सारी कोशिशो को नाकाम कर दिया था।

नदी को बहते हुए देख कर कैसे मुमकिन था कि सर्गेई को अभी पिछले रोज की बात याद न आती।

कल दोपहर उसकी टुकडी ने सख्त जवाबी हमले से पोलो का सामना किया था, कल दुश्मन से पहली बार उसका गुत्थमगुत्था हुआ था। बिना दाढी का एक पोलिश सिपाही अपनी राइफिल और उसमे लगी हुई लम्बी नुकीली तलवार जैसी फ्रेंच सगीन लगा कर सर्गेई के ऊपर झपटा था। वह जाने क्या चिल्लाता हुआ खरगोश की तरह सर्गेई पर लपका। क्षण भर को सर्गेई ने अपनी आखो को बेपनाह गुस्से से फैलते देखा। दूसरे क्षण सर्गेई की सगीन उस पोल की सगीन से बजी और वह चमकती हुई फ्रेंच सगीन एक ओर को हट गयी। पोल गिर पडा ।

सर्गेई का हाथ नही कापा। वह जानता था कि उसे मारते जाना होगा— उसे, सर्गेई को, जिसमे इतने गहरे प्यार का माद्दा था, इतनी पक्की दोस्ती का माद्दा था। वह स्वभाव से दुष्ट या क्रूर नही था। मगर वह जानता था कि उसे इन भटके हुए सिपाहियो से लडना ही होगा जिन्हे दुनिया भर की जोकों ने उनके अन्दर हैवानी नफरत का जोश भर कर उसकी मातृभूमि पर हमला करने के लिए भेजा था। और वह, सर्गेई, कत्ल करेगा ताकि वह दिन करीब आये जब आदमी आदमी का कत्ल नही करेगा।

पारामनोव ने उसके कधे को थपकी दी और कहा, "सर्गेई, तुमको अब यहा से चलना चाहिए, नही तो वे लोग देख लेंगे।"

पावेल कोर्चागिन को अपने देश भर में चक्कर लगाते अब एक साल हो गया था। कभी वह मशीनगन की गाडियो पर या तोप की गोला-बारूद की गाडियो पर सवार होता, तो कभी एक छोटी-सी घोडी पर जिसके कान पर एक निशान था। अब वह एक जवान आदमी था, जिसे तकलीफो और

परेशानियो ने अपनी आग मे तपा कर सख्त और पक्का बना दिया था। कारतूस की भारी पेटी की वजह से उसकी मुलायम खाल कभी छिल गयी थी, पर उसका घाव कब का भर चुका था और राइफिल के पट्टे के नीचे उसके कंधे पर का चमडा सख्त हो गया था।

पावेल ने उस साल बहुत सी भयानक चीजें देखी थी। अपने ही जैसे दूसरे हजारो सैनिको के साथ, जो सब उसी की तरह रद्दी-सद्दी कपडे पहने हुए थे, मगर जिन सबमें अपने वर्ग की सत्ता कायम करने के लिए लडने का अजेय संकल्प था, वह अपनी मातृभूमि पर उत्तर-दक्खिन-पूरब-पश्चिम सभी ओर गया था और इस दौरान वह सिर्फ दो बार तूफान के साथ नही रहा था —एक तो तब, जब उसके कूल्हे मे चोट लगी थी और दूसरी बार तब जब सन १९२० की कडकडाती सर्दी मे फरवरी के महीने मे वह टाइफस बुखार की चुभती गरमी से परेशान पडा था।

बारहवी फौज की रेजिमेटो और डिवीजनो का सहार पोलिश मशीनगनो से कही ज्यादा टाइफस ने किया। तब तक बारहवी फौज बहुत बडे इलाके मे, लगभग पूरे उत्तरी उक्रेन मे, काम करने लगी थी और पोलो को आगे बढने से रोके हुए थी।

पावेल अपनी बीमारी से बिल्कुल ठीक भी नही हुआ था कि वह अपनी टुकडी मे लौट आया। उसकी टुकडी उस वक्त कजातिन-उमान ब्राच लाइन के फ्रोन्तोवका स्टेशन मे अपने पैर जमाये हुए थी। फ्रोन्तोवका जगल मे था। वहा सिर्फ एक छोटी-सी स्टेशन की इमारत थी और उसके आस-पास कुछ टूटी-फूटी और उजडी हुई झोपडिया थी। तीन साल के अनवरत सग्राम के कारण इस इलाके मे नागरिक जिन्दगी असम्भव हो गयी थी। कई बार फ्रोन्तोवका एक से दूसरे हाथ मे आया और गया।

फिर से कुछ बडी घटनाओ की तैयारी हो रही थी। बारहवी फौज के बहुत से आदमी मारे गये थे और वह कमोवेश असगठित हो गयी थी। जिस वक्त वह पोलिश फौजो के दबाव के कारण पीछे हट कर कीव पहुच रही थी, तभी मेहनतकशो की सरकार विजय के मद से चूर पोलिश फौजो पर करारा हमला करने के लिए अपनी सारी ताकत सचित कर रही थी।

पहली घुडसवार फौज की लडाई की आग मे तपी हुई डिवीजने उत्तरी काकेशस से उक्रेन भेजी जा रही थी और वह एक ऐसी लडाई थी जिसकी मिसाल फौजी इतिहास नही मिलती। एक के बाद एक चौथी, छठी, ग्यारहवी, और चौदहवी घुडसवार डिवीजनें उमान के इलाके मे पहुच रही थी। वे मोर्चे की पिछली पातो पर अपना सारा जोर लगा रही थी और निर्णायक लडाइयो के घटनास्थल के रास्ते मे माखनो के लुटेरो का सफाया करती जा रही थी।

साढे सोलह हजार तलवारें, साढे सोलह हजार सैनिक जिन्हें स्तेपी के जलते सूरज ने तपाया और पकाया था।

इस वक्त दक्खिन-पच्छिमी मोर्चे की कमान और लाल फौज की सर्वोच्च कमान को सबसे ज्यादा फिक्र इस बात की थी कि दुश्मन लाल फौज के इस निर्णायक हमले को रोकने के लिए कुछ न कर सके। ये सारी घुडसवार फौजें कामयाबी के साथ एक जगह जमा हो जायें, इसीके लिए सब कुछ किया जा रहा था। उमान के इलाके में सक्रिय कार्रवाई रोक दी गयी थी। मास्को से खारकोव के मोर्चे के हेडक्वार्टर और वहा से चौदहवी और बारहवीं फौजों के हेडक्वार्टर के बीच की सीधी तार की लाइनें अनवरत काम कर रही थीं। तार के आपरेटर फौजी कोड मे दिये गये हुक्मनामे बराबर टपटपाते जा रहे थे . ' पोलो का ध्यान घुडसवार फौज इकट्ठा करने की हमारी कार्रवाई की तरफ से हटाओ।" दुश्मन से लडाई सिर्फ उमी वक्त की जाती जब यह खतरा होता कि पोलिश फौजो के आगे बढने से बुद्योनी की घुडसवार डिवीजनो के के लिए खतरा पैदा हो जायगा।

कैम्प फायर की आग की लाल-लाल लपटें निकल रही थी। आग से धुए के घुघराले बादल उठते और भन-भन करते हुए बेचैन कीडो की भीडें छट जाती। सैनिक आग के इद-गिर्द अर्द्ध-गोलाकार लेटे हुए थे और आग की तावे जैसी छाया उनके चेहरो पर पड रही थी। हल्की नीली-भूरी राख पर रखे हुए मेमटिनो मे पानी बुदबुदा रहा था।

एकाएक एक जलते हुए कुन्दे के नीचे से लपट की एक अकेली जीभ निकली और उसने किमी के बिखरे हुए बालो वाले सिर को छुआ। उस आदमी ने झट से अपना सिर हटा लिया और गुर्राया "धत्तेरे की! क्या मुसीबत है!" और आग के इर्द-गिर्द बैठे हुए लोगो की टोली ने कहकहा लगाया।

एक अधेड़ आदमी, जिसकी मूछें छटी हुई थी और जो सर्ज का ट्यूनिक पहने हुए था, आग की रोशनी मे अपनी राइफिल की नली का मुआइना कर रहा था। वह बोला

"इस लडके के दिमाग म किताबी ज्ञान इतना भरा हुआ है कि इसे आग की गरमी नही मालूम होती।"

"कुछ हमे भी तो बतलाओ कि क्या पढ रहे हो, कोर्चागिन!" किसी ने कहा।

नौजवान लाल सैनिक ने अपने जले हुए बालो पर उगली फेरी और मुस्कराया।

"सचमुच बहुत अच्छी किताब है, कामरेड अन्द्रोश्चुक। कोशिश करके भी इसे छोड नही पाता।"

"काहे के बारे मे है ?" कोर्चागिन के बगल मे बैठे हुए एक चपटी नाक वाले लडके ने पूछा जो जी-जान से अपने थैले के फीते की मरम्मत में लगा हुआ था। उसने दात से वह मोटा तागा कुतरा, बाकी को सुई के इर्द-गिर्द लपेट दिया और फिर उसे अपने हेलमेट मे खोस लिया। "भाई अगर इश्क के बारे मे हो, तो मुझे जरूर बताना।"

लडके की इस बात पर जोर का कहकहा पडा। मातवेइचुक ने अपना छोटे-छोटे बालो वाला सिर उठाया और उस चपटी नाक वाले लडके को शरारत से आख मारी, "इश्क बडी अच्छी चीज होती है, सेरेदा," उसने कहा, "और तुम इतने खूबसूरत हो कि तुमको देखना गोया किसी तसवीर को देखना है। जहा कही हम लोग जाते हैं, तुम्हारे पीछे भागते-भागते लडकियो के जूते घिस जाते हैं। कितनी बुरी बात है कि तुम्हारे जैसे खूबसूरत आदमी में सिर्फ एक नुक्स है कि नाक की जगह पाच कोपेक का सिक्का लटका हुआ है। मगर इसका इलाज आसान है। रात को नाक से एक दस पाउड का नोविस्की हथगोला लटका दो। सवेरे सब ठीक हो जायगा।"

इस मजाक पर जो जोर का कहकहा पडा, तो मशीनगन की गाडियो में जुते हुए घोडे डर कर हिनहिनाने लगे।

सेरेदा ने बोलने वाले की ओर लापरवाही से देखा और कहा, "अजी, चेहरे से कुछ नही आता जाता, असल चीज तो दिमाग का गूदा है," कहते हुए उसने इशारतन अपने माथे को ठकठकाया और कहा, "जहा तक तुम्हारी बात है, तुम्हारी जबान तो बडी तीखी है, मगर किसी भी तरह तुम गधे से अच्छे नही हो और तुम्हारे कान ठण्डे हैं।"

इन दोनो को, जो एक दूसरे से गुथने ही वाले थे, डाटते हुए सेक्शन कमाडर तातारिनोव ने कहा, "अरे क्यो झगड रहे हो तुम लोग ? इससे अच्छा यह है कि कोर्चागिन से कहो कि अगर सचमुच कुछ सुनने लायक चीज हो तो सुनाये।"

"बिलकुल ठीक है। शुरू करो, पावलुश्का।" सभी तरफ से लोगों ने आग्रह किया।

पावेल आग के कुछ और पास सरक आया और अपने घुटनों पर पडी हुई छोटी-सी मोटी किताब उसने खोल ली।

"इस किताब का नाम द गैड-फ्लाई है, साथियो। बटालियन कमिसार ने मुझे दी है। मुझे तो इस किताब ने बाध लिया है, साथियो। तुम लोग खामोशी से बैठो तो सुनाऊ।"

"शुरू भी करो ! और फिक्र न करो, हम किसी प्रकार की गड़बड़ न होने देंगे।"

कुछ देर बाद रेजिमेंट के कमांडर कामरेड पुजीरेव्स्की चुपके से अपने घोड़े पर सवार कैम्प फायर के पास आये। उनके आने का किसी को कुछ पता ही न चला। उन्होंने देखा कि ग्यारह जोड़ा आंखें किताब पढ़ने वाले के चेहरे पर टिकी हुई हैं। उनके साथ कमिसार भी था। कमिसार की ओर मुड़ते हुए उन्होंने कहा .

'ये देखो रेजिमेंट के आधे स्काउट हैं," और आग के गिर्द बैठे हुए उन लोगों की तरफ इशारा किया। "इनमें से चार नये-नये कोमसोमोल हैं, मगर सब के सब बहुत अच्छे सिपाही हैं। वह जो पढ़ रहा है उसका नाम कोर्चागिन है। और वह जो दूसरा है, जिसकी आंखें भेड़िये के बच्चे जैसी हैं, उसका नाम जार्की है। वे दोनों दोस्त हैं, मगर चुपके-चुपके उनमें आपस में होड़ लगी रहती है। पहले कोर्चागिन मेरा सबसे अच्छा स्काउट था। लेकिन अब उसका एक तगड़ा प्रतिद्वन्द्वी पैदा हो गया है। इस वक्त ये लोग जो काम कर रहे हैं, यह भी राजनीतिक काम है और बड़ा उपयोगी काम है। मैंने सुना है कि इन नौजवानों को 'यंग गार्ड' कहते हैं। मेरा ख्याल है कि यह बहुत मुनासिब नाम है।"

कमिसार ने पूछा, "जो किताब पढ़ रहा है, क्या वही राजनीतिक शिक्षक है?"

"नहीं, राजनीतिक शिक्षक तो क्रेमर है।" पुजीरेव्स्की ने अपने घोड़े को एड़ लगाई।

बाहर ही से बोला, "मुबारकबाद साथियो!"

सब लोगों के सिर कमांडर की ओर मुड़े जब वह घोड़े से उतर रहा था। उतर कर वह सीधे टोली के पास गया।

"आग ताप रहे हो दोस्तो, क्यों?" खूब मुस्कराते हुए उसने कहा। उस वक्त उसकी छोटी-छोटी, कुछ-कुछ मंगोलों जैसी आंखों वाले मजबूत चेहरे पर कठोरता नहीं थी। सिपाहियों ने दिल खोलकर अपने कमांडर का स्वागत किया, वैसे ही जैसे वे अपने किसी अच्छे दोस्त या साथी का करते। कमिसार अपने घोड़े से नहीं उतरा, क्योंकि वह और आगे जाना चाहता था।

अपने पिस्तौल को पीछे सरकाते हुए पुजीरेव्स्की कोर्चागिन के बगल में बैठ गया।

"सिगरेट पी जाय तो कैसा रहे?" उसने कहा, "मेरे पास बहुत अच्छी तम्बाकू है।"

उसने एक सिगरेट बनाई जलाई और कमिसार की ओर मुड़ कर बोला,

"तुम जाओ दोरोनिन, मैं यहा कुछ देर रुकूगा। हेडक्वार्टर मे अगर मेरी जरूरत हो तो मुझे खबर कर देना।"

दोरोनिन के चले जाने पर पुजीरेव्स्की ने कोर्चागिन से कहा, "पढो पढो, मैं भी सुनूगा।"

पावेल ने अन्त तक पढा, फिर किताब अपने घुटनो पर रख ली और आग की ओर देखते हुए किसी सोच मे डूब गया। कुछ क्षणो तक कोई कुछ नही बोला। सभी लोग गैड-फ्लाई के दर्दनाक नसीब के बारे मे मन ही मन सोच रहे थे। पुजीरेव्स्की बहस शुरू होने का इन्तजार करते हुए सिगरेट के कश खीचता रहा।

खामोशी को तोडते हुए सेरेदा ने कहा, "बडी भयानक और दिल हिला देने वाली कहानी है। इसका मतलब यह है कि दुनिया मे इस तरह के लोग भी हैं। जो कुछ उसने बर्दाश्त किया उसे कम ही लोग बर्दाश्त कर सकते थे। लेकिन जब आदमी के पास कोई ऐसा विचार होता है जिसके लिए वह लडे, तो उसमे सब कुछ सहने की ताकत आ जाती है।" स्पष्ट ही सेरेदा पर किताब का बहुत असर पडा था। उसके चेहरे से यह बात जाहिर थी।

"अगर मैं कही उस हरामजादे पादरी को पा जाऊ जिसने उसके गले के नीचे फ़ास उतारने की कोशिश की थी," बेलाया सेरकोव के एक जूता बनाने वाले के अपरेंटिस आन्द्रीयूशा फोमीचेव ने बुलन्द आवाज मे गुस्से से कहा, "तो वही उस सुअर को खतम कर दू।"

अन्द्रोश्चुक ने एक छडी से एक मेसटिन को आग के और पास ठेलते हुए दृढ विश्वास के स्वर मे कहा, "आदमी को मरना बुरा नही मालूम होता, अगर उसके पास ऐसी कोई चीज है जिसके लिए वह मरे। उसी से आदमी को बल मिलता है। तुम बिना किसी दुख के मर सकते हो अगर तुम्हे मालूम हो कि तुम न्याय पर हो। वीर इसी तरह पैदा होते हैं। बहुत दिन हुए एक लडका था जिसे मैं जानता था, उसका नाम पोराइका था। ओदेसा मे जब ह्वाइटो ने उसे घेर लिया तो उसने अकेले एक पूरी प्लैटून का मुकाबला किया और इसके पहले कि वे लोग सगीनो से उसका काम तमाम कर देते, उसने एक दस्ती बम से अपना और उन सबका काम तमाम कर दिया। और देखने-सुनने मे वह वैसा कुछ खास न था। वैसा कुछ नही जैसे लोगो के बारे मे तुम किताबो मे पढते हो, गो इसमे शक नही कि उसके बारे मे लिखा जरूर जाना चाहिए। वह इस काबिल है। हमारे बीच इस तरह के बहुत से लडके मिलते हैं।"

उसने एक चम्मच से मेसटिन की चीज को हिलाया, चखा और फिर बोला

"कुछ लोग कुत्ते की मौत मरते हैं, जिल्लत की मौत। इजियास्लाव की लड़ाई की एक घटना मैं तुमको बतलाता हूं। इजियास्लाव, गोरिन नदी पर बसा एक पुराना शहर है जो राजों-राजकुमारों के वक्त बना था। वहां पर एक पुराना पोलिश गिरिजाघर था, बिल्कुल किले की तरह बना हुआ। हां, तो हम लोग उस शहर में दाखिल हुए और उसकी टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में एक-एक की कतार बनाये हुए आगे बढ़ने लगे। लेटों की एक कम्पनी हमारे दायें बाजू को बचा रही थी। हम लोग जब बड़ी सड़क पर पहुंचे, तो हमने तीन जीन कसे घोड़ों को एक मकान की बाड़ी से बंधे देखा। आहा, हमने सोचा यहां पर कुछ पोल हाथ लगेंगे। हममें से करीब दस हाते के अन्दर दौड़े। सबसे आगे उस लेट कम्पनी का कमांडर अपना माउजर लिये दौड़ा जा रहा था।

"सामने का दरवाजा खुला हुआ था। हम लोग दौड़ कर अन्दर पहुंचे। मगर, वहां पोलों के बदले हमे अपने ही आदमी मिले। वे घुड़सवार सैनिक थे। वे हमसे पहले ही वहां पहुंच गये थे। हम लोगों ने वहां जो कुछ देखा, वह बहुत अच्छा दृश्य न था। वे लोग एक औरत के साथ बुरा काम कर रहे थे। यह औरत उस पोलिश अफसर की बीवी थी जो उस मकान में रहता था। लेट ने वहां जो दृश्य देखा, तो अपनी ही भाषा में कुछ चिल्लाया। उसके आदमियों ने उन तीनों को जा पकड़ा और घसीटते हुए बाहर ले आये। उनमें सिर्फ हम दो ही रूसी थे, बाकी सब लेट थे। उनके कमांडर का नाम ब्रेडिश था। मैं उनकी जबान नहीं जानता, लेकिन इतना समझ गया कि उसने उन तीनों को खतम करने का हुक्म दे दिया। बड़े तगड़े लोग होते हैं ये लेट, तरस खाना नहीं जानते। वे उन तीनों को घसीट कर अस्तबल में ले आये। मेरे सामने उनका काम तमाम कर दिया गया। उनमें से एक, जो बड़ा ऊंचा, पूरा आदमी था और जिसका चेहरा देख कर उस पर ईंट मारने की इच्छा होती थी, बहुत हाथ-पैर फटकार रहा था। वह चिल्ला रहा था—'सिर्फ एक औरत के पीछे तुम मुझे गोली मार दोगे!' दूसरे भी रहम की भीख मांग रहे थे।

"मेरे शरीर से ठंडा पसीना छूटने लगा। मैं दौड़ कर ब्रेडिस के पास गया और बोला, 'कामरेड कम्पनी कमांडर, इन्हें फौजी अदालत के सुपुर्द कर दीजिए। आप क्यों खामखा इनके खून से अपने हाथ रंगते हैं? अभी शहर में लड़ाई चल ही रही है और हम इन कुत्तों के साथ अपना वक्त बर्बाद कर रहे हैं।' ब्रेडिस ने शेर की तरह चमकती हुई आंखों से मेरी तरफ घूरा। सच कहता हूं, उस वक्त मुझे लगा कि मैंने क्यों खामखा ऐसी बात कही। उसने अपनी बन्दूक मुझ पर तानी। मुझे लड़ते हुए सात साल हो गए, मगर यह मानने में शर्म नहीं कि उस वक्त मैं सचमुच बहुत डर गया था। मैंने देखा कि वह तो पहले गोली मारेगा और सवाल बाद में करेगा। उसने अपनी टूटी-

फूटी रूसी मे चिल्ला कर कुछ कहा, जो अच्छी तरह मेरी समझ मे नही आया। मगर शायद वह यही कहना चाहता था 'हमारा झडा हमारे ही खून से रगा हुआ है। ये लोग सारी फौज को जलील करते है। लुटेरेपन की सजा मौत है।'

"मैं अब और इस चीज को बर्दाश्त न कर सका और जितनी तेजी से हो सकता था, हाते मे से सडक की ओर भागा और मैंने अपने पीछे गोली चलने की आवाज सुनी। मै समझ गया कि उन तीनो का काम तमाम हो गया। जब तक हम लोग लौट कर बाकी लोगो से मिले, शहर हमारे कब्जे मे आ चुका था।

'कुत्ते की मौत मे मेरा मतलब उसी मौत से है जो उन तीनो को मिली। वे लोग उन्ही मे से थे जो मलितोपोल मे आकर हमसे मिले थे। एक जमाने में वे माख्नो के साथ रह चुके थे। लुच्चे-लफगे थे वे।"

अन्द्रोश्चुक ने अपना मेसटिन उठा कर अपनी बगल मे रख लिया और रोटी की पोटली खोलने लगा।

"कभी-कभी ऐसे लोग हम लोगो को अपने बीच भी मिल जाते हैं। सबके बारे मे तो पक्की तरह कोई बात कही नही जा सकती। देखने मे सभी क्रान्ति के समर्थक मालूम होते हैं। और ऐसे ही लोगो से हमारी बदनामी होती है, मगर खैर जो भी हो, मैं कहता हू कि वह बडी भयानक, बडी गन्दी चीज थी जो मैंने देखी। मै उसे जल्दी भूल नही सकूगा।" उसने चाय की चुस्की लेते हुए अपनी बात खतम की।

कैम्प के लोगो के सोते-सोते बहुत रात जा चुकी थी। खामोशी मे सेरेदा की नाक बजने की आवाज सुनाई दे रही थी। पुजोरेव्स्की अपने घोडे की जीन का तकिया लगाये सो रहा था। राजनीतिक शिक्षक क्रेमर बैठा हुआ अपनी नोटबुक मे तेजी से कुछ लिख रहा था।

अगले रोज स्काउटिंग की एक गश्त से लौट कर पावेल ने अपना घोडा एक पेड से बाधा और क्रेमर के पास गया जिसने अभी-अभी अपनी चाय खतम की थी।

'सुनो क्रेमर, कैसा रहे अगर मैं पहली घुडसवार फौज मे चला जाऊ? क्यो? देखने मे लगता है कि वहा कुछ बडी बडी चीजे होने वाली हैं। इतनी फौजो को जो इकट्ठा किया जा रहा है, बडी सख्या मे, तो क्या यो ही मजाक के लिए? और यहा तो लगता है कि कुछ खास लडाई-वडाई देखने को मिलेगी नहीं।"

क्रेमर ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा।

"चला जाऊ से क्या मतलब? क्या तुम्हारा ख्याल है कि सिनेमा की सीट की ही तरह अपनी फौज की टुकडी भी जब चाहे बदल सकते हो?"

"मगर इससे फर्क क्या पड़ता है, लड़ना यहा भी है वहा भी," पावेल ने कहा, "मैं भाग कर पीछे तो जा नही रहा हू, मोर्चे को छोड़ कर ?"

मगर क्रेमर इस बात के बिल्कुल खिलाफ था। बोला

"अनुशासन भी तो कोई चीज है ? कुल मिला कर तुम बुरे लड़के नही हो पावेल, मगर कुछ बातो मे तुम थोड़े से अराजकतावादी हो। तुम्हारा खयाल है कि तुम मनमानी कर सकते हो, जब जो तुम्हारे जी मे आये ? तुम भूल जाते हो मेरे दोस्त कि पार्टी और कोमसोमोल की आधार शिला लौह अनुशासन है। पार्टी का हित सबसे पहले देखना होगा। और हममे से हर एक को वहा होना चाहिए जहा उसकी जरूरत है, वहा नही जहा वह रहना चाहता है। पुजीरेव्स्की ने तुम्हारी बदली की अर्जी रद्द कर दी कि नहीं ? बस, तो यही तुम्हारी बात का जवाब है।"

क्रेमर इतने आवेश मे बोल रहा था कि उसे खासी का दौरा पड़ गया। यह लम्बा दुबला-पतला आदमी प्रेस मे काम करता था और सीसे की चूर उसके फेफड़ो पर जम गई थी और अक्सर उसके मोम जैसे फीके जर्द गालो पर बुखार की सी ललाई दिखाई देती थी।

क्रेमर के शान्त होने पर पावेल ने धीमी, मगर दृढ आवाज मे कहा

"तुम जो कहते हो वह ठीक है, मगर फिर भी मैं बुद्योनी की फौज मे जा रहा हू।"

उसके अगले रोज शाम को पावेल कैम्प फायर मे नही था।

पास के एक गाव मे बुद्योनी की घुड़सवार टुकड़ी के लोग स्कूल की इमारत के उस पार एक पहाड़ी पर बड़ा-सा घेरा बनाये बैठे थे। एक भीमकाय सिपाही, मशीनगन को खीचने वाली गाड़ी के पीछे बैठा हुआ था। उसने अपनी टोपी पीछे की ओर सरका दी थी और अकार्डियन बाजा बजा रहा था। वह बाजा उसकी अनाड़ी उगलियों के निर्देश से बिना किसी ताल सुर के शोर मचा रहा था जैसे उसे गहरी यातना मिल रही हो और वह रो रहा हो। उसके इस गलत-सलत बाजा बजाने मे वह बाका घुड़सवार, जो खूब ही चौड़ी ब्रिजिस पहने हुए घेरे के बीचोबीच बड़ी मस्ती मे होपाक नाच रहा था, परेशानी मे पड़ जाता था।

गाव के लड़के-लड़किया अपनी उत्सुक आखें लिए इन सिपाहियो की उछल-कूद को, जिनकी ब्रिगेड अभी-अभी गाव मे दाखिल हुई थी, देखने के लिए तोप खीचने वाली गाड़ी और आसपास की बाड़ियो पर चढ गए थे।

"हा, तोप्चालो ! यह रही ! जमीन खोद कर रख दो ! हा भाई, यह

चीज है। अजी ओ, तुम जो अकार्डियन लिये खडे हो, जरा जोर से वजाओ, क्या पी पीं कर रहे हो!"

मगर वजाने वाले की मोटी-मोटी उंगलिया जो निहायत आसानी से घोडे की नाल को पकड कर मोड दे सकती थी, परदे पर भद्दे तरीके से घप्प-घप्प कर रही थी।

"कितना बुरा हुआ कि भाखनो आफानासी कुल्यावका को ले बीता," कासे के रग के एक घुडसवार ने दुख के साथ कहा, "वह लडका बहुत अच्छा अकार्डियन वजाता था। अपने घोडे पर सवार होकर वह हमारे दस्ते के दायें चला करता था। बहुत बुरा हुआ कि वह मारा गया। वह सिपाही भी बहुत अच्छा था और हमारा सबसे अच्छा अकार्डियन वजाने वाला भी था!"

पावेल ने, जो उसी घेरे मे खडा था, इस आखिरी वात को पीछे से सुन लिया था। वह लोगो को हटाता हुआ मशीनगन खीचने वाली गाडी के पास पहुच गया और उसने अपना हाथ अकार्डियन की धौंकनी पर रख दिया। सगीत थम गया।

"क्यो क्या बात है?" अकार्डियन वजाने वाले ने त्यौरी चढाते हुए पूछा।

तोप्तालो रुक गया और भीड मे से गुस्से की एक भुनभुनाहट उठी· "किस वात का झगडा है?"

पावेल ने वाजे के लिए हाथ वढाते हुए कहा, "जरा मुझे वजाने दो!"

बुद्योनी के घुडसवार ने इस वोल्शेविक पैदल सिपाही की ओर अविश्वास से देखा और फिर वेमन से अकार्डियन का पट्टा अपने कधे पर से उतार दिया।

पावेल ने जानकार अदाज से वाजे को अपने घुटने पर रख लिया, धौंकनी को पखे की तरह फैला दिया और अकार्डियन अपने पूरे जोशोखरोश से सगीत की खूब ही मस्त धुन निकालने लगा

ओरी नन्हीं छबीली
किधर चली? ओ री.....
बांके सिपहिया से नैना लड़े तोरे
तू उसके ही प्रेम रली! ओ री ..

तोप्तालो ने इस परिचित धुन को उठा लिया और किसी वडी चिडिया की तरह अपनी वाहों को झुलाता हुआ, झूमता हुआ घेरे के अन्दर जा पहुचा और अपने जिस्म को अजीव-अजीव तरह से तोड-मरोड कर और अपनी जाघो, घुटने, सिर, माथे, जूते के तल्लो और यहा तक कि अपने मुह पर कस-कस के हाथ मारता हुआ सगीत की ताल देने लगा।

अकार्डियन की गति तेज से तेज होती जा रही थी और उससे एक वेहद

नशीली, पागल कर देने वाली, स्वर-लहरी निकल रही थी। तोप्चालो जोर-जोर से अपनी टागो को फटकार कर पूरे घेरे मे लट्टू की तरह नाच रहा था —यहा तक कि उसकी सास फूल गयी।

५ जून, १९२० को बुद्योनी की पहली घुडसवार फौज दो-चार छोटी, मगर भयानक, लडाइयो के बाद तीसरी और चौथी पोलिश फौजो के बीच के पोलिश मोर्चे को चीरने मे कामयाब हुई। उसने जेनरल माविकी की घुडसवार ब्रिगेड को, जो उसके रास्ते मे पडी, चकनाचूर कर दिया और सैलाब की तरह रुजीनी की तरफ बढी।

पोलिश फौज की कमान ने जल्दी-जल्दी अपनी कुछ फौज जमा की और उससे अपने मोर्चे की दरार को भरने की कोशिश की। पोगरेबिश्चे स्टेशन से पाच टैक झटपट लडाई के मुकाम पर भेजे गये। पोलिश फौज का इरादा जारुदनित्सी से हमला करने का था, मगर यह घुडसवार फौज उसको बचाकर बगल से निकल गयी और पोलिश फौजो के पिछाये मे जा पहुची।

पहली घुडसवार फौज का पीछा करने के लिए जेनरल कौर्निकी की घुडसवार डिवीजन भेजी गयी। पोलिश कमान को यकीन था कि बुद्योनी की घुडसवार फौज कजातिन की तरफ बढ रही है। पोलिश फौजो के पिछाये में कजातिन एक सबसे अहम जगी मुकाम था। लिहाजा जेनरल कौर्निकी की घुडसवार डिवीजन को बुद्योनी की फौज पर पीछे से हमला करने का आदेश दिया गया। मगर इस चाल से पोलो की हालत सुधरी नही। यह सही है कि उन्होने उस दरार को पूर दिया और बुद्योनी की घुडसवार फौज को पीछे से काट दिया, मगर यह चीज अपने आप मे काफी परेशान करने वाली थी कि एक मजबूत घुडसवार फौज उनकी पातो के पीछे है और उससे उनके पिछाये के अड्डो को खतरा है। इतना ही नही, इस बात का भी खतरा था कि वह फौज पोलो की कीव स्थित फौजी टुकडी पर टूट पडेगी। आगे बढते हुए लाल घुडसवार डिवीजनो ने पोलो के लौटने का रास्ता बद करने के लिए छोटे-छोटे रेल के पुलो को उडा दिया और रेलवे लाइनो को उखाड फेंका।

कैदियो से यह बात मालूम होने पर कि पोलो का एक फौजी हेडक्वार्टर जिटोमीर मे है (और सच बात तो यह थी कि पूरे मोर्चे का उनका हेडक्वार्टर वही था), पहली घुडसवार फौज के कमाडर ने जिटोमीर और बर्डीचेव पर कब्जा करने का फैसला किया। ये दोनो महत्वपूर्ण रेलवे जक्शन और शासन केन्द्र थे। ७ जून को सवेरे, भोर मे, चौथी घुडसवार डिवीजन पूरे वेग से जिटोमीर की तरफ बढी जा रही थी।

अब कोर्चागिन एक दस्ते के बायें बाजू मे अपने घोडे पर सवार चल रहा था, उसी जगह जहा कुल्यावको चलता था—वह अकार्डियन बजानेवाला जिसके मारे जाने का सबको गम था। सभी सिपाहियो के सम्मिलित अनुरोध पर पावेल को उस दस्ते मे रखा गया था। वे लोग इतने अच्छे अकार्डियन बजाने वाले से हाथ नही धोना चाहते थे।

उनके घोडो के मुह से फेंचकुर छूट रहा था, मगर रुकने की ताब उनमे नही थी। जिटोमीर के पास पहुच कर वे पखे की तरह फैल गये और अपनी नगी, धूप मे चमकती तलवारे लिये उन्होने शहर पर हमला बोल दिया।

घोडे हाफ रहे थे, उनकी टापो से धरती कराह रही थी और घुड़सवार अपनी रकाबो मे पैर दिये खडे थे।

उनके पैरो के नीचे जमीन तेजी से उल्टी तरफ भागती चली जा रही थी और उनके सामने वह बागीचों और पार्कों वाला बडा शहर था जो तेजी से पास आता आ रहा था। घुडसवारो का यह तूफान बागीचो के बगल से होता हुआ शहर के बीचोबीच जा पहुचा। लडाई के खौफनाक नारे और आवाजें हवा को चीरने लगी और एक ऐसा समा बध गया जो मौत की तरह ही भयावना था।

पोल ऐसे किंकर्त्तव्यविमूढ हो गये थे कि वे कुछ भी मुकाबला न कर सके। उस शहर की उनकी फौज को कुचल दिया गया।

अपने घोडे की गर्दन पर झुका हुआ कोर्चागिन तेजी से तोप्तालो के बगल में चला जा रहा था। तोप्तालो अपने काले घोडे पर सवार था जिसकी टागें पतली थी। पावेल ने देखा कि कैसे अचूक निशाने से उस बाके घुडसवार ने एक पोलिश सिपाही को, इसके पहले कि वह अपनी राइफिल उठा कर कधे से लगा सके, चीर कर रख दिया।

घोडो की नालें सडक के पत्थरो पर बज रही थी। तभी एक दुराहे पर उन्होने अपने ठीक सामने सडक के बीचोबीच एक मशीनगन को देखा। तीन पोलिश सिपाही अपनी नीली वर्दिया और आयताकार टोपिया लगाये मशीनगन पर झुके हुए थे। एक चौथा आदमी भी था जिसके कॉलर पर सुनहले गोटे का काम था और जो इन घुडसवारो पर अपना माउजर ताने हुए था।

न तोप्तालो, न पावेल, दोनो मे से कोई भी अपने घोडे को नही रोक सका और वे सरपट मशीनगन की तरफ, सीधे मौत के जबडो मे, भागते चले गए। उस अफसर ने कोर्चागिन पर गोली चलाई, मगर निशाना चूक गया। गोली पावेल के गाल के पास से सन्न से निकल गई और दूसरे ही क्षण उस लेफ्टिनेंट का सिर सडक के पत्थर से जा टकराया। घोडे की टाप ने उसके पैर उखाड दिए और उसका निर्जीव शरीर चित्त होकर सडक पर बिछ गया।

उसी वक्त मशीनगन पाशविक डरावनी तेजी से कड़कड़ाई और गोले के एक दर्जन छर्रे आकर तोप्तालो और उसके काले घोड़े को लगे और दोनों वहीं जमीन पर ढेर हो गये।

पावेल का घोड़ा डर कर हिनहिनाता हुआ अपनी पिछली टागो पर खड़ा हो गया और अपने सवार को लिये हुए, जमीन पर पड़ी लाशो को फादता हुआ मशीनगन चलाने वालो पर जा कूदा। पावेल की तलवार हवा मे एक अर्धवृत्त बनाती हुई चमकी और एक सिपाही की नीची टोपी को चीरती हुई अन्दर घुस गई।

दूसरे के सिर पर टूटने के लिए तलवार दुबारा चमकी, मगर बौखलाया हुआ घोड़ा दूसरी ओर बहक गया।

एक पहाड़ी तूफानी नदी की तरह हरहराता हुआ घुड़सवार दस्ता अब सड़क के दोराहे पर आ गया था और हवा मे बीसो तलवारें चमक रही थी।

जेल के तग लम्बे गलियारो मे आवाजें गूज रही थी।

जेलखाने की कोठरियो मे एक अजीब परेशानी का आलम था। उनमे बद मर्दों और औरतो के दुबले, सूखे, मुरझाये हुए, परेशान चेहरे कुछ समझ नहीं पा रहे थे कि आगे क्या होने वाला है। उनको यह मालूम था कि शहर के अन्दर लड़ाई जारी है, लेकिन इस बात का यकीन उन्हे मुश्किल से आ रहा था कि इस चीज का मतलब उनकी आजादी होगी, कि ये हमला करने वाले, जो अचानक ही शहर पर टूट पड़े थे, उनके अपने आदमी हैं।

जेल के हाते मे गोली चल रही थी। लोग गलियारो मे भाग रहे थे। और फिर वे सदा-सदा के पहचाने, प्यारे, मर्मस्पर्शी शब्द "अब तुम आजाद हो, साथियो!"

पावेल एक बद कोठरी की तरफ दौड़ा जिसमे ताला लगा हुआ था। इस कोठरी की नन्ही सी खिड़की मे से दर्जनो आखें बेतावी से झाक रही थीं, मानो किसी ने उन्हें वहा चिपका दिया हो। पावेल अपनी राइफिल के कुदे से बार-बार ताले पर चोट मार रहा था।

मिरोनोव ने पावेल को एक तरफ हटाते हुए अपनी जेब मे एक दस्ती बम निकाला और बोला, "रुको, मैं अभी इसे एक बम से तोड़े देता हू।"

प्लैटून कमाडर जिगारचेंको ने लपक कर उसके हाथ से बम छीन लिया। "रुको भी, कैसे गधे हो, पागल हो गये हो क्या! अभी पलक मारते ताली आई जाती है। जो कुछ हम तोड़ नहीं सकेंगे, उसे ताली से खोलेंगे।"

जेल के सतरी पीछे से रिवाल्वर से ठेल ठेल कर ले जाये जा रहे थे। उसके बाद रास्ते भर मे तमाम मर्द और औरतें भर उठे जो चीथड़े लगाये थे,

जिन्होंने न जाने कब से मुह-हाथ भी नही धोया था, मगर जो खुशी से पागल हो रहे थे।

कोठ ी के दरवाजे को धक्का देकर खोलते हुए पावेल अन्दर पहुचा।

"साथियो, तुम लोग आजाद हो ! हम लोग बुद्योनी के आदमी हैं—हमारे डिवीजन ने शहर पर कब्जा कर लिया है !"

एक औरत, जिसकी आखो मे आसू छलक रहे थे, दौड कर पावेल के पास पहुची और उसे अपनी बाहो मे भर कर सिसकने लगी जैसे उसे कोई अपना सगा मिल गया हो।

इन पाच हजार एकहत्तर बोलशेविको और लाल सेना के दो हजार राजनीतिक कर्मियो को—जिन्हे पोलिश क्रांति-विरोधियो ने इन पत्थर के तहखानो मे गोली मारने या फासी पर चढाने के लिए बद कर रखा था—आजादी ही इस डिवीजन के सैनिको के लिये सबसे बडा पुरस्कार था, जीत से भी बडा पुरस्कार। उन सात हजार क्रांतिकारियो के लिए रात्रि का अभेद्य अधकार दिन के सुनहले प्रकाश मे बदल गया।

एक कैदी, जिसकी खाल नीबू की तरह पीली थी, खुशी से पागल होकर पावेल की ओर दौडा। यह था सैमुअल लेखर—शेपेतोवका के प्रेस का एक कम्पोजीटर।

सैमुअल के मुह से अपने शहर की खून मे डूबी हुई कहानी सुन कर पावेल का चेहरा मुरझा गया और सैमुअल के शब्द पिघले हुए सीसे की बूदो की तरह उसके दिल को जला रहे थे।

"उन्होने हम सबको एक साथ रात के वक्त पकड लिया। किसी हरामजादे ने हमारे साथ गद्दारी की और फौजी पुलिस को हमारे बारे मे बतला दिया। एक बार हमे अपने पजो मे पाकर उन्होने हमारे साथ फिर किसी तरह का रहम नही किया। हमे उन्होने बहुत बुरी तरह मारा, पावेल। मुझे औरो से कम यातना सहनी पडी क्योकि दो ही चार वारो के बाद मैं बेहोश होकर गिर पडा। लेकिन, दूसरे मुझ से ज्यादा मजबूत थे।

"हमारे पास छिपाने को कुछ भी नही बचा था। उन सिपाहियो को हमसे ज्यादा अच्छी तरह हमारी बातें मालूम थी। उनको पता था कि हमने कब-कब कौन से कदम उठाये। और यह कोई ताज्जुब की बात नही थी क्योकि हमारे बीच एक गद्दार था ! उन दिनो के बारे मे मैं तुमको नही बतला सकता, पावेल। जो पकडे गये, उनमें से तुम बहुतो को जानते हो। वालिया सुजाक और रोजा ग्रित्समान, कैसी प्यारी लडकिया थी। अभी मुश्किल से सत्रह की हुई थी और कैसा विश्वास झलकता था उनकी आखो मे, पावेल ! साशा बुनशापट भी तो पकडा गया। उसे तो तुम जानते होगे, कम्पोजीटर था।

कैसा मस्त लडका था ! हमेशा मालिक के कारटून बनाया करता था। उसे और कालेज के दो लडको, नोवोसेल्स्की और तुजिल्स को वे पकड ले गये। इन लडको की भी तुम्हे याद होगी ही। वाकी लोग भी शहर के या जिले के ही थे। कुल मिलाकर उन्तीस लोग पकडे गये थे, जिनमे छ औरते थी। उन सभी को एक से एक अमानुषिक यातनाए दी गयी। वालिया और रोजा के साथ पहले ही रोज बलात्कार किया गया। उन सुअरो ने क्या नही किया उन लडकियो के साथ और फिर उन्हे लाकर कोठरी मे डाल गये, जिन्दा से ज्यादा मुर्दा। उसके बाद रोजा पागलो की तरह बाते करने लगी और कुछ दिन बाद बिल्कुल ही पागल हो गयी।

"उनको यकीन न आता था कि वह पागल है। उनका कहना था कि वह बन रही है और हर बार जब वे उससे सवाल-जवाब करते, तो बडी बेरहमी से उसे मारते। कैसी हौलनाक हालत हो गयी थी उसकी जब उसे गोली से मारा गया! उसका चेहरा जख्मो से स्याह हो रहा था, उसकी आखो मे दहशत थी और वह बिलकुल बूढी नजर आती थी।

"वाल्यिा ग्रूजाक ने अन्त तक बडी वीरता से काम लिया। वे सब सच्चे सैनिको की तरह मरे। मै नही जानता कि यह सब सहने की ताकत उनमे कहा से आ गयी थी। आह पावेल, उनकी मौत की कहानी मै तुम्हे कैसे सुनाऊ ? बडी भयानक मौत थी वह।

"वालिया सबसे खतरनाक काम कर रही थी। वही पोलिश हेडक्वार्टर के वायरलेस आपरेटरो के साथ सम्पर्क बनाये थी और हमारे जिला केन्द्र के लोगो के सम्पर्क मे भी थी। इसके अलावा उन्होने जब उसके घर की तलाशी ली तो उन्हे दो बम और एक पिस्तौल भी मिला। वे बम उसे उसी खुफिया के आदमी ने दिये थे। सारी योजना इस तरह बनाई गयी थी जिससे कि उन लोगो पर यह इल्जाम लगाया जा सके कि वे हेडक्वार्टर को बम से उडाने का इरादा रखते थे।

"पावेल, उन आखिरी दिनो के बारे मे बात करने मे बडा दर्द होता है। मगर तुम कहते हो तो मै तुम्हे सब बतलाऊगा। फौजी अदालत ने वालिया और दो लोगो को फासी की और बाकी को गोली से उडाने की सजा दी। उन पोलिश सिपाहियो पर, जो हमारे सग काम कर रहे थे, दो दिन पहले ही मुकदमा चलाया जा चुका था। कारपोरल स्नेगुर्को पर, जो एक नौजवान वायरलेस आपरेटर था और लडाई के पहले लोड्ज मे बिजली का काम करता था, राजद्रोह का जुर्म लगाया गया और कहा गया कि वह सिपाहियो के बीच कम्युनिस्ट प्रचार करता है। इस इलजाम मे उसे गोली से उडाने की

सजा सुनाई गई। उसने अपील नही की और सजा सुनाये जाने के चौबीस घटे बाद उसे गोली से उडा दिया गया।

"उसके मुकदमे मे शहादत देने के लिए बालिया को बुलाया गया। उसने बाद में हमें बतलाया कि स्नेगुर्को ने इस बात का इकबाल कर लिया था कि उसने कम्युनिस्ट प्रचार किया है, मगर इस बात को मानने मे इनकार कर दिया था कि उसने देशद्रोह किया है। उसने कहा, 'मेरी पितृभूमि पोलिश सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र है। हा, मैं पोलैंड की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य हू। मुझे मेरी इच्छा के खिलाफ फौज में भरती किया गया और जब मैं फौज मे पहुच ही गया तो मैंने अपनी ही तरह के उन दूसरे सिपाहियो की आखें खोलने के लिए, जिन्हे जबरन मोर्चे पर भेजा गया था, भरसक प्रयत्न किया। आप इस जुर्म मे चाहे तो मुझे फासी पर लटका सकते है, मगर यह जुर्म आप मुझ पर नही लगा सकते कि मैंने अपनी पितृभूमि के साथ गद्दारी की है। क्योकि अपनी पितृभूमि के साथ न तो मैंने कभी गद्दारी की है और न कभी करूगा। आपकी पितृभूमि मेरी पितृभूमि नही है। आपकी पितृभूमि रईसों और नवाबो की पितृभूमि है, मेरी पितृभूमि मजदूरो और किसानो की पितृभूमि है। मेरी पितृभूमि मे, जो कि अस्तित्व मे आयेगी—जरूर आयेगी, इसका मुझे पक्का विश्वास है—कोई मुझे इसके लिए कभी देशद्रोही नही कहेगा।'

"मुकदमे के बाद हम सब लोगो को साथ रखा गया। मौत की सजा देने के ठीक पहले हमे जेल भेजा गया। जेल के ठीक सामने, अस्पताल के बगल में उन्होने रात को फासी की टिकटिया खडी की। गोली मारने के लिए उन्होंने सडक से थोडी ही दूर पर जगल मे एक बडे से गढे के पास जगह चुनी। हम सब लोगो के लिए एक बडी सी कब्र खोदी गयी।

"हमारी सजा की बात शहर भर में इश्तहार की शक्ल में दीवारो पर चिपका दी गई ताकि सबको उसका पता हो जाय। पोलो ने हमको खुलेआम, पब्लिक के सामने, मौत की सजा देने का फैसला किया था ताकि शहरवाले डर जायें। बहुत सवेरे से उन्होने शहरवालो को ठेल-ठेल कर उस जगह भेजना शुरू किया जहा हम मौत के घाट उतारे जाने वाले थे। बडी भयानक बात है, मगर यह सही है कि कुछ लोग कुतूहल के मारे भी आ गये थे। जरा ही देर मे जेल की दीवार के बाहर बहुत बडी भीड जमा हो गई थी। अपनी कोठरिया से हम आवाजो की भनभन सुन सकते थे। उन लोगो ने सडक पर भीड के पीछे मशीनगनें खडी कर दी थी और आस-पास के सारे इलाके मे घुडसवार और पैदल सिपाही बटोर लाये थे। उनकी एक पूरी की पूरी बटालियन सडको और उनके पार साग-भाजी के खेतो को घेरे हुए थी। जिन्हे फासी दी जाने वाली थी उनके लिए टिकटी के पास ही एक गढा खोद रखा था।

"हम लोग खामोशी के साथ अपनी मौत का इन्तजार कर रहे थे। बीच-बीच में दो-एक शब्द आपस में बोल लेते थे। पिछली रात ही हमने तमाम बातें कर ली थी और एक-दूसरे से विदा भी कह ली थी। सिर्फ कोठरी के एक कोने मे रोजा अपने-आप कुछ बुदबुदा रही थी। तमाम मारपीट और जुल्मो को सहने के बाद, वालिया अब इतनी कमजोर हो गई थी कि हिल सकना भी उसके लिए मुमकिन नही था और वह ज्यादा वक्त बिना हिले-डुले निश्चेष्ट पडी रहती थी। शहर की ही दो कम्युनिस्ट लडकिया, जो बहनें थी, जब अन्तिम बार एक-दूसरे से गले मिली तो अपने आसुओ को नही रोक सकी। उन्हें रोता देख कर गाव के एक नौजवान स्तेपानोव ने, जो अच्छा गबरू जवान था और जिसने दो सिपाहियो को, जो उसको पकडने आये थे, ढेर कर दिया था, उन लडकियो को मना करते हुए कहा, 'आसू नहीं गिरना चाहिए, साथियो! यहा चाहे रो लो, लेकिन बाहर नही। हम उन हरामजादो को गाल बजाने का मौका नही देना चाहते। और रहम तो हम पर किसी भी हालत में किया जायगा नही। मरना हमें है ही तो क्यो न शान से मरें। हम अपने घुटनो के बल घिसटेंगे नही। याद रखो साथियो, हमें अच्छी तरह मरना है।'

"उसके बाद वे हम लोगो को लेने आये। आगे-आगे था ज्वारकोव्स्की, उनके खुफिया विभाग का सबसे बडा अफसर। दूसरे को तकलीफ मे देख कर उसे खुशी होती थी और इस मामले मे तो शायद कोई उससे आगे नही जा सकता था। जब वह खुद लडकियो से बलात्कार नही करता, तो अपने सिपाहियों से करवाता था और देख-देख कर खुश होता। सडक के दोनों ओर सिपाहियों की कतारें खडी थी और उनके बीच से हम लोग फासी के तख्ते की तरफ ले जाये गये। उन सिपाहियो की वर्दी के कधे पर पीले रग का झब्बा था, जिसके कारण हम लोगों ने उन्हें 'केनरी'[1] नाम दे रखा था। वे लोग अपनी नगी तलवारें लिये खडे थे।

"उन्होंने हमारी चार-चार की टोलिया बना दी थी—दो आदमी आगे, दो आदमी पीछे। अपनी राइफिलो के कुन्दो से ठेल-ठेल कर वे हमें तेजी से जेल के हाते के बीच से ले चले। फिर, उन्होंने फाटक खोल दिये और सडक पर लाकर फासी के तख्ते के सामने हमे खडा कर दिया ताकि हम अपने साथियों को मरते देखें और खुद अपनी बारी का इन्तजार करें। मोटे-मोटे शहतीरों की खूब ऊची-सी टिकटिया खडी थी। मोटी रस्सी के तीन फदे उनमें लटक रहे थे और हर फन्दे के नीचे सीढियो समेत एक तख्ता था जिसे ठोकर मारकर अलग किया जा सकता था। आदमियों का वह समुन्दर, जो मचलता और लहरें लेता

---

१ पीले रग के परोंवाली एक चिडिया।

खड़ा था, उसमे से हल्की मरमर ध्वनि की एक तरग उठी। सब लोगो की आखें हमारे ऊपर जमी हुई थी। हमने उस भीड मे से अपने कुछ लोगों को देखा और उन्हे पहचान गये।

"थोडी दूर पर कुछ पोलिश रईस और अफसर अपनी दूरबीन लिये खडे थे। वे बोल्शेविको को फासी लगते देखने आये थे।

"हमारे पैरो के नीचे मुलायम बरफ थी। बरफ के ही कारण जगल सफेद हो रहा था, पेडो पर रुई के गालो की तरह बरफ की मोटी-मोटी परतें जमी हुई थी। बरफ धीरे-धीरे गिर रही थी और हमारे जलते हुए चेहरों पर आकर पिघल जाती थी। फासी के तख्ते की सीढियो पर भी बरफ की कालीन बिछी हुई थी। हम लोग बहुत थोडे कपडे पहने हुए थे, मगर किसी को सर्दी नहीं मालूम हो रही थी। स्तेपानोव को इस बात का भी ध्यान नही आया कि वह अपने मोजे पहने-पहने चल रहा था।

"टिक्टियो के पास फौज का सरकारी वकील और बडे-बडे अफसर खडे थे। आखिरकार वालिया तथा दो और साथी जिन्हे फासी दी जाने वाली थी, जेल से बाहर लाये गए। वे तीनों बाह मे बाह डाले चल रहे थे, बीच मे वालिया थी जिसे बाकी दोनो सहारा दिये हुए थे, क्योकि खुद चलने की ताकत उसमे नहीं रह गई थी। मगर वह अच्छी तरह तनकर चलने की पूरी कोशिश कर रही थी। उसे स्तेपानोव के ये शब्द याद थे . 'हमे अच्छी तरह मरना है, साथियो !' वह एक ऊनी जाकट पहने थी, मगर उस पर कोट नही था।

"ज्वारकोव्स्की को स्पष्ट ही यह बात अच्छी नही लग रही थी कि वे लोग एक दूसरे की बाह मे बाह डालकर चलें और वह उन्हे पीछे से धक्का दे रहा था। वालिया ने कुछ कहा और उसके मुह से बात निकलते ही एक घुडसवार सिपाही ने जोर से उसके मुह पर अपनी चाबुक मारी। भीड की एक औरत के मुह से भयानक चीख निकली और वह घेरे को तोडकर कैदियो के पास पहुचने के लिए पागलो की तरह जोर लगाने लगी। मगर उसे पकड लिया गया और घसीट कर पीछे कर दिया गया। जरूर वह वालिया की मा रही होगी। फासी के तख्ते के पास पहुच कर वालिया ने गाना शुरू किया। मैंने कभी ऐसी आवाज नहीं सुनी थी—जो आदमी मौत से गले मिलने आ रहा हो, वही इतनी मार्मिक अनुभूति से गा सकता है। वह वार्जावियान्का का गाना गा रही थी और बाकी दो ने भी उसके साथ गाना शुरू कर दिया। घुडसवार सन्तरियो ने गुस्से से अधे होकर उन पर चाबुक चलानी शुरू की, मगर उन तीनो को चोट का कोई एहसास नही होता था। मारते-मारते उन्हे वही ढेर कर दिया गया और फिर बोरो की तरह घसीट कर टिकटी तक पहुचाया गया। जल्दी-जल्दी उन्हे

सजा सुनाई गई और फांसी का फन्दा उनके गले मे डाल दिया गया। उसी वक्त हम लोगो ने गाना शुरू किया :

उठो—जागो भूखे बन्दी ...!

"सब ओर से मन्तरी हमारे ऊपर लपके और मुझे सिर्फ इतना मौका मिला कि मैं राइफिल के कुन्दो से फासी के तख्ते को हटाये जाते और उन तीनो को फासी के फन्दे मे झटका खाते देखू

"हम मे से बाकी लोग दीवाल के सहारे खडे कर दिये गये थे, गोली खाने के लिए, जब कि यह मालूम हुआ कि हममे से दस लोगो की मौत की सजा घटा कर बीस साल की कैद की सजा कर दी गयी थी। बाकी सोलह को गोली मार दी गयी।"

सैमुअल अपनी कमीज के कॉलर को बार-बार खीच रहा था जैसे उसका गला घुटा जा रहा हो।

"तीन दिन तक लाशें अपने फन्दो मे फसी झूलती रहीं। दिन-रात टिकटी पर पहरा रहता था। उसके बाद कैदियो का एक नया जत्था जेल लाया गया और उन्होंने हमे बतलाया कि जिस फन्दे मे कामरेड तोवोल्दिन को, जो उन तीनों मे सबसे भारी थे, लटकाया गया था, उसकी रस्सी टूट गयी। तब उन्होने बाकी दो को भी उतारा और तीनो को दफन कर दिया।

"मगर टिकटिया ज्यो-की-त्यो खडी रहने दी गई। हम लोग जब इस जगह लाये गए तब भी वे खडी थी। वे खडी हैं और उनके फन्दे अपने ताजे शिकारो का इन्तजार कर रहे हैं।"

सैमुअल चुप हो गया और आगे की ओर घूरता बैठा रहा, गो उसकी आखे कुछ देख नहीं रही थी। पावेल को इस बात का पता न चला कि कहानी खत्म हो गई है। उसकी आखो के सामने वे ही तीनों शरीर झूल रहे थे जिनका सिर एक ओर को लटक गया था।

जब सिपाहियो को बाहर जमा करने के लिए बिगुल बजा, तभी यकायक पावेल होश मे आया।

उसने बहुत धीमे से कहा, "आओ चलें सैमुअल।"

सड़क पर दोनो ओर घुडसवार खडे थे और उनके बीच से पोलिश कैदी ले जाये जा रहे थे। जेल के फाटक पर खडा रेजीमेंटल कमिसार अपने पैड पर कोई आदेश लिख रहा था।

कागज के उस टुकडे को एक लम्बे-तगडे, दस्ते के कमाडर को पकडाते हुए उसने कहा, "कामरेड एन्तिपोव, यह लो और इन तमाम कैदियों को घुडसवारो के पहरे मे नोवगोरोद-वोलिन्स्की ले जाओ। जो घायल हैं, उनकी

मरहमपट्टी और डाक्टरी जांच करवाने का ख़याल रखना। फिर उनको गाड़ियों में डाल कर शहर से पन्द्रह मील ले जाकर छोड़ देना। उनके साथ माथापच्ची करने का हमारे पास वक्त नहीं है। मगर हां, एक बात का ख़याल रखना कि कैदियों के साथ कोई बदसलूकी न हो।"

अपने घोड़े पर सवार होते हुए पावेल सैमुअल की ओर मुड़ा और बोला, "सुनते हो? वे तो हमारे आदमियों को फांसी पर लटकाएं और हम उन्हें हिफाजत के साथ ले जाकर खुद उनके आदमियों के बीच पहुंचा दें। और इतना ही नहीं—उनके संग सलूक भी अच्छा करें: कैसे हो सकता है हमसे यह?"

रेजीमेंटल कमांडर मुड़ा और बोलने वाले की तरफ कठोर आंखों से देखते हुए बोला, "निहत्थे कैदियों के साथ क्रूरता का बर्ताव करने वाले को मौत की सजा दी जायगी। हम लोग क्रान्ति-विरोधी ह्वाइट लोग नहीं हैं!" पावेल ने यह बात सुनी तो उसे लगा जैसे उसी को सुनाकर यह बात कही गयी हो।

वहां से जब पावेल चला तो उसे क्रान्तिकारी फौजी काउंसिल के हुक्मनामे के आखिरी शब्द याद आये जिन्हें रेजीमेंट को पढ़कर सुनाया गया था:

"मजदूरों और किसानों का देश अपनी लाल सेना को प्यार करता है। उसके ऊपर देश को गर्व है। और उस सेना के झण्डे पर एक भी धब्बा न रहे, यह हमारा व्रत है।"

पावेल के होंठों ने दुहराया, "एक भी धब्बा नहीं।"

जिस वक्त चौथी घुड़सवार डिवीजन ने जितोमीर पर कब्जा किया, सातवीं राइफिल डिवीजन की बीसवीं ब्रिगेड, जो कामरेड गोलिकोव की सेना का ही अंग थी, ओकूनिनोवो गांव के इलाके में नीपर नदी पार कर रही थी।

कामरेड गोलिकोव की फौज में २५वीं राइफिल डिवीजन और एक बाश्कीर घुड़सवार ब्रिगेड थी। उसको आदेश था कि नीपर नदी पार करे और इरशा स्टेशन पर कीव-कोरोस्तेन रेलवे को अपनी जद में ले ले। इस कार्रवाई से कीव से पीछे हटने का पोलों का आखिरी रास्ता भी कट जायगा।

इस नदी को पार करने के समय शेपेतोवका के कोमसोमोल संगठन का सदस्य मिशा लेव्चुकोव मारा गया। वे लोग उस हिलने-डुलने पीपे के पुल पर भागे जा रहे थे कि उधर से ऊंचे कगार से एक गोला छूटा और आकर इन लोगों के पास पानी में गिरा और पानी के चिथड़े-चिथड़े कर दिये। उसी वक्त मिशा कहीं किसी पीपे के नीचे चला गया और गायब हो गया। नदी उसको

निगल गई और फिर उसने उसको लौटाया नही। याकिमेको ने, जिसके बाल सुनहले और टोपी टूटी हुई थी, चिल्लाकर कहा "मिश्का! अरे यह तो मिश्का था! बेचारा ऐसे डूबा जैसे पत्थर डूब जाय!" क्षण भर वह सिपाही डरी और घबराई हुई आखो से उस स्याह पानी को देखता रहा, मगर उसके पीछे आते हुए आदमियो ने उसे आगे को धक्का देते हुए कहा, "क्या मुह बाये खडे हो, तुम्हारी मत मारी गयी है क्या! भागो-भागो, दौडो!" किसी के लिए शोक मनाने या चिन्ता करने का वक्त नही था। यह ब्रिगेड उन दूसरी ब्रिगेडो से पीछे रह गयी थी जिन्होने अब तक नदी के दाहिने किनारे पर कब्जा कर लिया था।

चार रोज बाद ही कही सर्गेई को मिशा की मृत्यु का पता चला। तब तक ब्रिगेड ने बुचा स्टेशन पर कब्जा कर लिया था और घूम कर कीव का सामना करती हुई खडी हो गयी थी ताकि वह पोलों के जबर्दस्त हमले का मुकाबला कर सके। पोल फौजें घेरे को तोड कर कोरोस्तेन पहुचने की कोशिश कर रही थीं।

गोली चलाने वालो की कतार मे याकिमेको सर्गेई के बगल में आकर पड गया। वह काफी देर से गोली चला रहा था जिससे उसकी राइफिल बहुत गरम हो गयी थी और उसे बोल्ट चढाने मे कठिनाई महसूस हो रही थी। दुश्मन की मार से बचने के लिए अपने सिर को सावधानी से झुकाये-झुकाये वह सर्गेई की तरफ मुडा और बोला, "इसको थोडा सुस्ताने का मौका देना होगा। एक दम अंगारा हो रही है।"

गोली-गोले छूटने के उस शोर मे सर्गेई ने शायद ही उसकी बात सुनी।

जब शोर कुछ थमा तो याकिमेको ने बात-बात मे कहा, "तुम्हारा साथी नीपर में डूब गया। इसके पहले कि मैं कुछ कर सकू—वह आख से ओझल हो चुका था।" बस इतनी ही बात उसने कही। फिर उसने अपनी राइफिल का बोल्ट चढाने की कोशिश की, और देखा कि हा, अब वैसा करना मुमकिन है, कारतूसो की नयी पेटी निकाली और अपनी राइफिल मे उसे डालने लगा।

वर्डीचिव लेने के लिए जो ग्यारहवी डिवीजन भेजी गयी थी, उसे पोलो के जबर्दस्त मुकाबले का सामना करना पडा। शहर की सडको पर बहुत खूनी लडाई लडी गयी। मशीनगन के गोलो की बौछार मे बोल्शेविको की घुडसवार फौज आगे बढी। शहर पर कब्जा कर लिया गया और हारी हुई पोलिश फौजो के बाकी लोग भाग गए। रेलवे यार्ड में खडी हुई गाडिया बिलकुल ठीक हालत मे कब्जे मे आ गईं। मगर पोलिश फौजो के लिए सबसे

आफत की बात यह हुई कि उनके गोले-बारूद के एक बडे से गोदाम मे, जिससे सारे मोर्चे को सामान पहुचता था, विस्फोट हो गया। लाखो गोले धडाके के साथ हवा मे उडे। उस धडाके से खिडकियो के शीशे चूर-चूर हो गये और मकान ऐसे हिलने लगे जैसे वे दफ्ती के बने हो।

जिटोमीर और बर्डीचेव पर कब्जा हो जाने से लाल फौजें पोलिश फौजो की पातों के पीछे जा पहुची और पोलिश फौजों को मजबूर होकर उस लोहे के घेरे मे से बाहर निकलने के लिए कीव से दो धाराओ मे निकल कर अपनी जान की बाजी लगाकर लडना पडा।

लडाई के तूफानी भवर में बहते हुए पावेल को इस बात का एहसास ही न रहा कि दिन कैसे आता है और कैसे बीत जाता है। उसका व्यक्तित्व समूह मे खो गया और दूसरे सिपाहियो की ही तरह उसके लिए भी "मैं" शब्द बाकी नही बचा। उनके लिए बस एक शब्द था, "हम," हमारी रेजीमेंट, हमारा दस्ता, हमारी ब्रिगेड।

घटनाए तूफानी वेग से घटित हो रही थी। हर रोज कोई न कोई नई बात हुआ करती थी।

बुद्योनी की घुडसवार फौज बरफ की चट्टान की तरह आगे बढ रही थी और हमलो पर हमले करती जा रही थी, यहा तक कि पोलिश फौजो की पिछली पातें तहस-नहस हो गयी थी। अपनी विजयो के उल्लास मे चूर ये घुडसवार डिवीजनें बेइन्तहा जोश और गुस्से से नोवोग्राद-वोलिन्स्की पर टूटी। पोलिश फौजों के पिछाये मे यही सबसे अहम जगह थी। जिस तरह समुन्दर की लहरें चट्टानी साहिल से आकर टकराती हैं, पीछे हटती हैं और फिर आकर टकराती हैं, उसी तरह यह फौजें आगे बढती थी, पोलिश फौजो से टकराती थी और लौटकर फिर दूने वेग से आगे बढती थी। उनके लबो पर बस यही एक आवाज थी "आगे बढो, आगे बढो!"

पोलो को कोई भी शक्ति बचा न सकी—न तो उनके कटीले तारो के घेर और न शहर मे तैनात उनकी फौज का जान पर खेल कर मुकाबला करना। २७ जून को सवेरे बुद्योनी की घुडसवार फौज ने बिना घोडो से उतरे स्लुच नदी को पार किया और नोवोग्राद-वोलिन्स्की मे दाखिल हुई और पोलो को मार कर शहर के बाहर कोरेत्स की तरफ भगा दिया। उसी वक्त पैंतालीसवी डिवीजन ने नोवी मिरोपोल मे स्लुच को पार किया और कोताव्स्की की घुडसवार ब्रिगेड ल्युबार की बस्ती पर टूटी।

पहली घुडसवार फौज के रेडियो स्टेशन को मोर्चे के प्रधान सेनापति का आदेश मिला कि अपनी सारी घुडसवार शक्ति को रोवनो पर कब्जा करने के

लिए जमा करो। लाल डिवीजनों के जबर्दस्त हमलों के आगे पोलिश फौजें टिक न सकीं और हिम्मत हार कर, आतंकित होकर छोटी-छोटी टोलियों में इधर-उधर बिखर गयीं।

इन्हीं तूफानी दिनों में पावेल कोर्चागिन की एक ऐसी मुलाकात हुई जिसकी उसे कोई आशा न थी। ब्रिगेड के कमांडर ने उसे स्टेशन भेजा था जहां एक बख्तरबन्द गाड़ी खड़ी हुई थी। दुलकी चाल से घोड़े को दौड़ाते हुए पावेल ने रेल के ढलुआ बांध को पार किया और इस्पात के रंग की भूरी गाड़ी के पास जाकर घोड़े की लगाम खींची और खड़ा हो गया। बख्तरबन्द गाड़ी के दोनों ओर तोपों के काले-काले थूथन निकले हुए थे जिनके कारण गाड़ी बड़ी भयानक दीख रही थी। तेल के धब्बे लगे कपड़े पहने कई लोग उसके बगल में खड़े उसके पहियों पर भारी लोहे का बख्तर खड़ा करने का काम कर रहे थे।

पावेल ने चमड़े की जाकट पहने हुए एक लाल सैनिक से, जो पानी की बाल्टी लेकर जा रहा था, पूछा, "इस गाड़ी के कमांडर कहां हैं?"

उस आदमी ने इंजन की तरफ इशारा करते हुए कहा, "वहां।"

पावेल अपने घोड़े पर सवार इंजन तक गया और वहां पहुंच कर बोला, "मैं कमांडर से मिलना चाहता हूं।" एक चेचकमुहा आदमी, जो सिर से पैर तक चमड़े के कपड़े पहने हुए था, उसकी तरफ मुड़ा और बोला, "मैं ही कमांडर हूं।"

पावेल ने अपनी जेब से एक लिफाफा निकाला।

"यह लीजिए, यह ब्रिगेड कमांडर का हुक्मनामा है। लिफाफे पर दस्तखत कर दीजिए।"

कमांडर ने लिफाफे को अपने घुटने पर रखा और अपने दस्तखत घसीट दिये। उधर रेलवे लाइन पर एक आदमी तेल की कुप्पी लिए इंजन के बिचले पहिये पर काम कर रहा था। पावेल को सिर्फ उसकी चौड़ी पीठ और उसकी चमड़े की पतलून की जेब से बाहर को निकला हुआ पिस्तौल का हत्था दिखाई दे रहा था।

गाड़ी के कमांडर ने लिफाफा पावेल को वापस दे दिया और पावेल अपने घोड़े की रास हाथ में लेकर चलने ही वाला था कि तेल की कुप्पी वाला आदमी उठकर सीधा खड़ा हुआ और पावेल की ओर मुड़ा। दूसरे ही क्षण पावेल घोड़े से कूद पड़ा, जैसे हवा के तेज झोंके ने उसे नीचे पटक दिया हो!

"आर्तेम!"

उस आदमी के हाथ से तेल की कुप्पी छूट पड़ी और उसने इस नौ-उम्र लाल सिपाही को अपनी बांहों में इस तरह भर लिया जैसे कोई बड़ा सा भालू किसी को अपनी बाहों में भर ले।

"पावका ! बदमाश ! तू है !" आर्तेम चिल्लाया, जैसे उसे अपनी आंखों पर यकीन ही न आ रहा हो।

बख्तरबन्द गाड़ी के कमांडर और कई तोपची वहीं पास ही खड़े उनको देख रहे थे और खूब प्रसन्न होकर मुस्करा रहे थे।

"जरा सोचो ! दो भाइयों की ऐसी अचानक मुलाकात ! क्या खूब !" वे कह रहे थे।

यह घटना ल्वोव के इलाके में हुई एक लड़ाई के दौरान में १९ अगस्त को घटी। लड़ाई के वक्त पावेल की टोपी गायब हो गई और उसने अपने घोड़े की रास खींची। अगले दस्ते पोलिश फौजों को काटते हुए उनकी पांतों में धंस चुके थे। उसी वक्त नदी की ओर जाने के अपने रास्ते में झाड़ियों के बीच से घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ देमीदोव आया। पावेल के बगल से हवा की तेजी से गुजरते हुए उसने चिल्लाकर कहा :

"डिवीजन कमांडर मारे गये !"

पावेल चौंक पड़ा। लेतुनोव, उसका बहादुर कमांडर, वह अनोखा वीर मारा गया ! पावेल गुस्से से पागल हो उठा।

अपनी तलवार की उल्टी तरफ से उसने अपने थके हुए घोड़े गनेदको को कोंचा। घोड़े के मुंह की लगाम से खून मिली झाग गिर रही थी। पावेल ने उसको एड़ लगायी और सबको चीरता हुआ उस जगह जा पहुंचा जहां लड़ाई सबसे गर्म थी।

"मार डालो इन घिनौने कीड़ों को, मार डालो ! इन पोलिश नवाबों को काटकर रख दो ! इन्होंने लेतुनोव को मार डाला है।" चिल्लाते हुए उसने हरी वर्दी पहने एक आदमी पर जोर से तलवार का वार किया। अपने डिवीजन कमांडर की मौत से गुस्से में आकर उन घुड़सवारों ने पोलिश सिपाहियों की एक पूरी प्लेटून का सफाया कर दिया।

दुश्मन का पीछा करते हुए वे लड़ाई के मैदान पर लगातार आगे भागे जा रहे थे, तभी एक पोलिश तोप आग उगलने लगी। उसके गोलों ने हवा को चीर दिया और चारों तरफ मौत की बरसात होने लगी।

एकाएक पावेल की आंखों के आगे कोई हरी सी चीज इतने जोर से चमकी कि उसने पावेल को अंधा कर दिया; उसके कानों में बिजली की कड़क का सा शोर हुआ और लाल-लाल लोहा उसकी खोपड़ी को चीरता हुआ अन्दर चला गया। धरती एक अजीब और भयानक तरीके से घूमने लगी और फिर उसे ऐसा लगा जैसे वह धीरे-धीरे नीचे से ऊपर उठ आ रही हो।

फूस के एक तिनके की तरह पावेल घोड़े की पीठ पर से नीचे आ गिरा गोले की मार से वह घोड़े के सिर के ऊपर से धरती पर बोरे की तरह भद्द से गिर पड़ा।

तभी काली रात घिर आयी।

नौ

केंकड़े की आगे को निकली हुई झिल्ली के सिर के बराबर एक आख है। यह चिकनी, लाल-लाल सी आख बीच में हरी है और उसमे एक मद्धिम प्रकाश दम-दम कर रहा है। केंकड़ा छोटी-छोटी टागों का एक घिनौना ढेर है। उसकी टागें एक-दूसरे में उलझी हुई सापों की तरह ऐंठती और बल खाती हैं और उस वक्त उनकी रूखी खाल में बड़ी डरावनी सरसराहट होती है। केंकड़ा हिलता है। वह उसे अपनी आखों के ठीक बगल मे पाता है। और अब वह उसकी टागों को अपने शरीर पर रेंगता हुआ महसूस करता है। ये टागें ठंडी हैं और काटों की तरह उसके शरीर मे चुभती हैं। केंकड़ा डक मारता है और जोंक की तरह उसके सिर के भीतर धसता है। ऐंठन और मरोड के साथ आगे बढ़ते हुए वह उसके खून को चूसने लगता है। उसे लगता है कि उसके शरीर का खून निकल-निकल कर केंकड़े के फूलते हुए शरीर मे पहुंचता जा रहा है। केंकड़ा उसका खून पीता रहता है। उसकी पीड़ा असह्य है।

कहीं दूर, बहुत दूर से उसे आदमियों की आवाजें सुनाई देती हैं

"अब इसकी नाड़ी कैसी है?"

और एक दूसरी आवाज, किसी औरत की आवाज, धीमे से जवाब देती है·

"इसकी नाड़ी की गति इस समय १३८ है। टेम्परेचर १०३ १ है। पूरे वक्त इसकी सरसाम की हालत है।"

केंकड़ा गायब हो गया, मगर दर्द जारी है। पावेल ने महसूस किया कि किसी ने उसकी कलाई छुई। उसने आंखें खोलने की कोशिश की। मगर पलकें इतनी भारी थीं कि उनको उठाने की ताकत उसमें नहीं थी। इतनी गरमी क्यों लग रही है? जरूर मा ने अंगीठी जलाई है। और फिर उसे वे आवाजें सुनाई देती हैं:-

"अब इसकी नाडी की गति १२२ है।"

वह पलकें खोलने की कोशिश करता है। मगर उसके अन्दर एक आग सी जल रही है। उसका दम घुट रहा है।

उसे सख्त प्यास लगी है। उसे फौरन उठकर पानी पीना होगा। मगर वह उठता क्यो नही ? वह उठने की कोशिश करता है, मगर उसके हाथ-पैर हिलने से इनकार कर देते हैं। उसका अपना शरीर उसके लिए अजनबी हो गया है। मा इसी वक्त उसके लिए पानी लायेगी। वह उससे कहेगा, "मैं पानी पीना चाहता हू।" कोई चीज उसके बगल मे हिलती है। कही यह वही केंकडा तो नही जो फिर से उस पर रेंगने की तैयारी कर रहा हो ? वह देखो वह आ रहा है ! उसे उसकी लाल-लाल आखें दिखायी देती हैं .

दूर से नर्म मद्धिम आवाज आती है

"फ़ोसिया, थोडा पानी लाओ !"

"यह किसका नाम है ?" मगर यह याद करने की शक्ति उसके अन्दर नही रह गई है और अधेरा एक बार फिर उसे अपनी चादर में ढाक लेता है। फिर तत्काल अधेरे से बाहर निकलने पर उसे याद आता है, "मैं प्यासा हू ?"

और आवाजें कहती सुनायी देती हैं

"लगता है इसे होश आ रहा है।"

वह कोमल प्यारी आवाज उसे अब अपने पास और स्पष्ट सुनाई देती है

"तुम पानी पीना चाहते हो, कामरेड ?"

"क्या मुझसे यह बात कह रही है ? क्या मैं बीमार हू ? अरे हा, मुझे टाइफस है। वही तो बात है।" और वह तीसरी बार अपनी पलको को उठाने की कोशिश करता है। आखिरकार उसे सफलता मिलती है। अपनी जरा सी खुली हुई आखो के सकीर्ण दृष्टिपथ से जो पहली चीज उसकी चेतना मे पहुचती है, वह उसके सिर पर टगी हुई एक लाल-लाल गेंद है। मगर उस लाल गेंद को एक काली चीज पोछ कर अलग कर देती है—वह काली चीज जो उसके ऊपर झुकी हुई है। और उसके ओठ गिलास के कठोर स्पर्श को और पानी की तरी को, उस प्राणदायिनी तरी को, महसूस करते हैं। उसके अन्दर की आग ठडी हो जाती है। सन्तुष्ट होकर वह धीरे से बुदबुदाता है, "अब कुछ अच्छा है।"

"तुम मुझे देख सकते हो, कामरेड ?"

यह उसके पास खडी हुई आकृति है जो बोली है और बेहोशी की धुध मे डूबने के पहले वह किसी तरह इतना कह पाता है, "मैं देख नही सकता, सुन सकता हू "

"भला बताओ, कौन सोच सकता था कि यह बच जायगा? मगर देखो कैसे उसकी जिन्दगी लौटी आ रही है! बड़ी मजबूत काठी का आदमी है! नीना ब्लादीमिरोवना, यह तुम्हारे लिए गर्व की बात है। सचमुच तुमने इसकी जान बचा ली है।"

और उस औरत की आवाज, कुछ-कुछ कांपती हुई जवाब देती है:

"कितनी खुश हूं मैं आज!"

तेरह दिन की बेहोशी के बाद पावेल कोर्चागिन को होश आया। उसका नौजवान शरीर मरना नहीं चाहता था और धीरे-धीरे उसकी ताकत लौट आई। यह पुनर्जन्म से कम न था, जैसे वह दुबारा पैदा हुआ हो। हर चीज नई और विलक्षण जान पड़ती थी। सिर्फ उसका सिर निश्चेष्ट और प्लास्टर में बंधे होने के कारण, असह्य रूप से भारी हो रहा था। उसको हिलाने की ताकत उसके अन्दर नहीं थी। मगर बाकी शरीर में चेतना लौट आई और जल्दी ही वह अपनी उंगलियों को मोड़ने के योग्य हो गया।

फौजी अस्पताल की छोटी डॉक्टर नीना ब्लादीमिरोवना अपने कमरे में एक छोटी मेज के सामने बैठी हुई थी और अपनी मोटी, हल्के गुलाबी और पीले रंग की नोटबुक के पन्ने उलट रही थी। उसमें साफ-सुथरी तिरछी लिखावट में यह लिखा हुआ था:

२६ अगस्त, १९२०

आज ऐम्बुलेंस की गाड़ी कुछ सगीन केस लाई। उनमें से एक के सिर में बहुत बुरी चोट है। हमने उसे खिड़की के पास कोने में लिटा दिया। अभी वह केवल सत्रह साल का है। उन्होंने मुझे एक लिफाफा दिया जिसमें उसकी जेब में पाये गए कागजात और उसकी केस-हिस्ट्री है। उसका नाम पावेल आन्द्रिएविच कोर्चागिन है। उसके कागजात में उक्रेन की नौजवान कम्युनिस्ट लीग की सदस्यता का एक पुराना घिसा हुआ कार्ड (नम्बर ९६७), लाल फौज की एक फटी हुई सिनाख्त किताब और एक रेजीमेंटल आर्डर की नकल है जिसमें लिखा है कि लाल फौज के सैनिक कोर्चागिन को जांच-पड़ताल का काम बहुत अच्छी तरह पूरा करने के उपलक्ष्य में पदक देने की मांग की गई है। उसमें एक पुर्जा भी है, जो जाहिर है खुद उसी का लिखा हुआ है "अगर मैं मर जाऊं तो कृपया मेरे सम्बन्धियों को सूचना दे दीजिएगा: शेपेतोवका, रेलवे डिपो, मेकेनिक आर्तेम कोर्चागिन।"

१९ अगस्त को उसको गोले के छर्रे लगे थे। तब से वह बराबर बेहोश है। कल अनास्तासिया स्तेपानोविना उसको देखेंगी।

२७ अगस्त

आज हमने कोर्चागिन के जख्म की जाच की। जख्म बहुत गहरा है, सिर की हड्डी टूट गई है और सिर के पूरे दाहिने हिस्से को लकवा मार गया है। दाहिनी आख की एक रग फट गई है जिसके कारण आख बुरी तरह सूजी हुई है।

अनातोली स्तेपानोविच आख निकाल देना चाहते थे ताकि सूजन और न बढे। मगर मैंने उन्हे ऐसा करने से रोका, क्योकि अब भी उम्मीद है कि सूजन कम हो जायगी। ऐसा करने मे मुझे बस लडके के चेहरे के बिगडने का खयाल था। लडका ठीक हो सकता है, मगर बडे दुख की बात होगी अगर उसका चेहरा बिगड गया।

पूरे वक्त उसकी सरसाम की हालत रहती है और वह बेहद बेचैन रहता है। हममे से कोई न कोई हर समय उसके बिस्तर के पास मौजूद रहता है। मैं अपना ज्यादा वक्त उसी के पास गुजारती हू। अभी वह बहुत नौजवान है। यह उसकी मरने की उम्र नही है। मैंने सकल्प किया है कि उसकी नौजवान जिन्दगी को मौत के पजो से छुडा लाऊगी। मुझे सफल होना ही है।

कल अपनी ड्यूटी खतम होने के बाद मैं कई घटे तक उसके वार्ड मे रही। वहा जितने घायल आये है, उनमे सबसे खराब हालत उसी की है। मैं बैठी हुई उसके पागलो जैसे बकने-झकने को सुनती रही। कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे कोई कहानी सुन रही हू। और सचमुच, मुझे उसकी जिन्दगी की बहुत सी बातें मालूम हुई। मगर बीच-बीच मे वह बहुत बुरी-बुरी गाली बकता है, बडी गदी जबान इस्तेमाल करता है। उसको इस तरह गाली बकते देखकर मुझे बडी चोट लगती है। अनातोली स्तेपानोविच को यकीन नही कि वह ठीक हो जायगा। वह बूढा आदमी अपनी भारी आवाज मे गुर्रा कर कहता है, "मेरी समझ मे नही आता कि ये फौज वाले ऐसे-ऐसे बच्चो को अपने साथ क्यो ले लेते हैं। बडे शर्म की बात है।"

३० अगस्त

कोर्चागिन अब भी बेहोश है। अब उसे उस वार्ड मे भेज दिया गया है जहा ऐसे लोग रखे जाते हैं जिनके बचने की उम्मीद नही होती। नर्स फ्रोसिया प्राय पूरे वक्त उसके पास रहती है। लगता है कि वह उसे जानती है। कभी दोनो ने साथ साथ काम किया था। उसके साथ वह कितनी नरमी से पेश आती है। अब मुझे भी ऐसा लगने लगा है कि उसके बचने की उम्मीद नही है।

२ सितम्बर, ११ बजे रात

आज मेरे लिए यह बेहद खुशी का दिन था। मेरे मरीज कोर्चागिन को होश आ गया। खतरा टल गया है। पिछले दो रोज से मैं घर गई ही नहीं, अस्पताल मे ही रही।

यह देख कर कि एक और जिन्दगी बच गई, मुझे कितनी खुशी हुई है। यह मैं बयान नही कर सकती। हमारे वार्ड में एक मौत कम। मेरे इस थका डालने वाले काम मे सबसे राहतबख्श चीज है किसी मरीज का बच जाना। वे बिल्कुल बच्चो की तरह हो जाते हैं। उनका प्यार सच्चा और सीधा-सादा होता है और मुझे भी उनसे प्यार हो जाता है। इसीलिए जब वे यहा से जाते हैं तो मुझे अक्सर रोना आ जाता है। मैं जानती हू कि रोना पागलपन है, मगर मैं क्या करू, मुझे अपने ऊपर बस ही नही रहता।

१० सितम्बर

आज मैंने कोर्चागिन का पहला खत उसके घरवालो के लिए लिखा। उसने लिखवाया है कि उसका जख्म सगीन नही है और वह जल्द ही ठीक हो जायेगा और घर आयेगा। उसके शरीर का बहुत सा खून निकल गया है और वह प्रेत की तरह पीला हो गया है और अब भी बहुत कमजोर है।

१४ सितम्बर

आज पहली बार कोर्चागिन मुस्कराया। उसकी मुस्कराहट बडी प्यारी है। अक्सर वह अपनी उम्र से कही ज्यादा गभीर बना रहता है। उसके स्वास्थ्य मे आश्चर्यजनक तेजी से सुधार हो रहा है। उसमे और फ्रोसिया मे बडी दोस्ती है। मैं अक्सर फ्रोसिया को उसके सिरहाने देखती हू। वह जरूर मेरे बारे मे उससे बाते करती होगी और स्पष्ट ही मेरा गुणगान करती होगी, क्योकि अब यह लडका एक हल्की सी मुस्कराहट से मेरा स्वागत करता है। कल उसने पूछा :

"डाक्टर, तुम्हारी बाहो पर ये काले-काले निशान किस चीज के हैं?"

मैंने उसे यह नही बतलाया कि सरसाम की हालत मे जब वह कसकर मेरी बाहो को पकडे हुए था, तो उसकी उगलियो से ही वह जगह छिल गई थी, और ये निशान बन गए थे।

१७ सितम्बर

कोर्चागिन के माथे का घाव बहुत अच्छी तरह भर रहा है। जिस अनोखी हिम्मत से यह लडका घाव की मरहम-पट्टी, धोने-धाने वगैरह की तकलीफ को बर्दाश्त करता है, उसको देखकर हम सभी डाक्टर हैरान हैं।

अक्सर ऐसे वक्त मरीज बहुत कराहता है और परेशान करता है। मगर यह लडका चुपचाप लेटा रहता है और जब उसके जख्म को खोल कर उसमे आइडिन लगाई जाती है, तो वह अपने को इस कदर जब्त रखता है जैसे वायलिन के तार को खूब कस दिया गया हो। अक्सर वह बेहोश हो जाता है, मगर एक बार भी उसके मुह से कराह निकलती नहीं सुनाई दी।

अब हम इस बात को जान गये हैं कि जब कोर्चागिन कराहता है तो इसका मतलब यह है कि वह होश में नही है। ताज्जुब है, उसमे इतनी ताकत, इतनी सहन-शक्ति, आती कहा से है ?

२१ सितम्बर

आज पहली बार हम लोग कोर्चागिन को उस बडे बाले बारजे पर ले गये थे। उसका चेहरा कैसा चमक उठा जब उसने बागीचे को देखा! कैसे भूखे की तरह वह ताजी हवा को जल्दी-जल्दी अपने फेफडो मे भरने की कोशिश कर रहा था! उसका तमाम सिर पट्टियो से ढका हुआ है। सिर्फ एक आख खुली है। और वह जानदार चमकती हुई आख दुनिया को ऐसे देख रही थी जैसे पहली बार उसे देख रही हो।

२६ सितम्बर

आज दो युवतिया कोर्चागिन को पूछती हुईं अस्पताल आईं। मैं उनसे बातें करने के लिए नीचे वेटिंग रूम मे गई। उनमे से एक बहुत खूबसूरत थी। उन्होंने तोनिया तुमानोवा और तातियाना बुरानोव्स्काया के नाम से अपना परिचय दिया। मैंने तोनिया का नाम सुना था। सरसाम की हालत मे कोर्चागिन ने तोनिया का नाम लिया था। मैंने उनको कोर्चागिन से मिलने की इजाजत दे दी।

८ अक्तूबर

कोर्चागिन अब अकेले बागीचे मे टहलता है। वह अक्सर मुझसे पूछता रहता है कि अस्पताल से उसे कब छुट्टी मिलेगी। मैं उसको बतलाती हू—जल्दी ही। वे दोनो लडकिया हर मुलाकात के दिन उसको देखने आती हैं। अब मुझे मालूम हो गया कि वह क्यों कभी नही कराहता। मैंने उससे पूछा तो उसने जवाब दिया . "द गैड-फ्लाई पढो, सारी बात मालूम हो जायगी।"

१४ अक्तूबर

आज कोर्चागिन को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। उसने बडे स्नेही और आत्मीय व्यक्ति की तरह मुझसे विदा ली। उसकी आख पर से पट्टी अलग कर

दी गई है और अब सिर्फ उसका सिर बंधा हुआ है। उस आंख में रोशनी नहीं है, मगर देखने में उसमें कोई गड़बड़ी नजर नहीं आती। ऐसे प्यारे नौजवान साथी से विदा होते समय बहुत दुख हुआ। मगर यही तो हमेशा होता है— ठीक होते ही वे लोग हमें छोड़ कर चल देते हैं और फिर शायद ही कभी मुलाकात होती है।

जाते जाते वह बोला : "कितने दुख की बात है कि चोट बांयीं आंख में नहीं लगी। अब मैं गोली कैसे चलाऊंगा ?"

वह अब भी मोर्चे के बारे में सोचता रहता है।

अस्पताल से निकलने पर पावेल कुछ रोज बुरानोव्स्की के यहां रहा जहां तोनिया ठहरी हुई थी।

पावेल ने फौरन तोनिया को कोमसोमोल के काम-काज में खींचने की कोशिश की। इसकी शुरुआत उसने तोनिया को शहर के कोमसोमोल की एक मीटिंग में आने के लिए दावत देकर की। तोनिया राजी हो गई। मगर जब वह उस कमरे से निकली जहां वह मीटिंग के लिए कपड़े पहन रही थी और शृंगार कर रही थी, तो पावेल ने उसे देख कर मारे क्षोभ के अपने ओंठ काट लिये। वह बहुत ही ठाट के कपड़े पहने हुए थी और उन कपड़ों की अपनी एक खास शान थी जो पावेल को कोमसोमोल की मीटिंग के लिए, वहां पर इकट्ठा हुए लोगों के खयाल से, बिलकुल नामुनासिब मालूम हुई।

यही उनके पहले झगड़े का कारण था। जब उसने तोनिया से पूछा कि उसने इस तरह के कपड़े क्यों पहने, तो तोनिया को बुरा लगा।

"मेरी समझ में नहीं आता कि मैं भी दूसरों ही की तरह क्यों लगूं। लेकिन अगर मेरे कपड़े तुम्हें नहीं भाते तो मैं नहीं जाऊंगी।"

क्लब में उन फटे-पुराने ट्यूनिकों और मैले-कुचैले ब्लाउजों के बीच तोनिया के अच्छे-अच्छे कपड़े इतने भिन्न दिखाई दे रहे थे कि पावेल को बड़ी उलझन मालूम हुई। वे नौजवान अपने बीच तोनिया को गैर समझ रहे थे। और तोनिया ने उन लोगों की असहमति देख कर ऐसा रुख अख्तियार कर लिया जैसे उसे किसी की परवाह ही न हो और ये सारे लोग उससे हीन हों।

जहाज पर माल लादने के घाटों का जो कोमसोमोल संगठन था, उसके मंत्री पांक्रातोव ने, जो मोटे मारकीन की कमीज पहने हुए चौड़े कंधों का एक जहाजी था, पावेल को अलग ले जाकर, आंख से तोनिया की ओर इशारा करके, नाराजगी के स्वर में कहा :

"इस गुड़िया को तुम्हीं यहां लाये हो ?"

"हा," पावेल ने छोटा-सा रूखा जवाब दिया।

पाक्रातोव ने कहा, "हू . उसे देखकर तो ऐसा नही लगता कि वह कभी भी यहा खप सकती है। उसके रग-ढग तो बहुत पैसेवालो जैसे है। वह यहा आई कैसे ?"

पावेल की कनपटिया फडकने लगी।

"वह मेरी दोस्त है। मै उसे यहा लाया हू। समझे ? वह हमारे खिलाफ नही है, जरा भी नही, भले उसने बहुत अच्छे कपडे पहन रखे हो। किसी के कपडे देख कर ही उसके बारे मे फैसला नही दिया जा सकता। कामरेड, आप ही को नही, मुझको भी यह बात मालूम है कि किसे यहा लाना चाहिए और किसे नही। इसलिए आप इतने अफसरी अन्दाज मे बात मत कीजिये।"

वह और भी तीखी और लगने वाली बात कहना चाहता था। मगर यह देख कर कि पाक्रातोव जो बात कह रहा है, उसमे बाकी सब लोगो की राय मिली हुई है, वह रुक गया और उसने अपना सारा गुस्सा तोनिया पर उतारा।

"मैने कहा था न उससे कि यही बात होगी ! खुदा जाने ये रुखोनिवर उसे क्यो भाते है, यह तडक-भडक उसे क्यो अच्छी लगती है ?"

वह शाम उनकी दोस्ती के खातमे की शुरुआत की शाम थी। पावेल ने बहुत पीडा और मन की कडुवाहट से तोनिया के साथ अपने उस सम्बध को टूटते देखा जो उसे इतना चिरस्थायी मालूम हो रहा था।

कुछ दिन और गुजरे। और फिर, हर मुलाकात, हर बातचीत के साथ वे दोनो एक-दूसरे से दूर होते चले गये। तोनिया की यह घटिया ढग की खुदपरस्ती पावेल के लिए असह्य हो गई।

दोनो ने समझ लिया कि सम्बध-विच्छेद अब अनिवार्य है।

आज वे कुपेचेस्की बाग मे आखिरी बार एक-दूसरे से मिले थे। रास्ते मुरझाई हुई पत्तियो मे ढके थे। वे पहाड की चोटी पर जगले मे टिके खडे थे और नीचे नीपर के मटमैले नीले पानी को देख रहे थे। उस ऊचे बेडौल पुल के पीछे से दो बडे-बडे बजरे खीच कर लाये जाते दिखाई दिये। डूबते हुए सूरज ने त्रुखानोव टापू पर जैसे सुनहरी कूची फेर दी थी और मकानो की खिडकियो मे आग लगा दी थी।

तोनिया ने सूरज की सुनहरी किरणो को देखा और गहरी व्यथा के स्वर मे कहा

"हमारी दोस्ती क्या इसी डूबते हुए सूरज की तरह डूब जायेगी ?"

पावेल जो तोनिया के चेहरे पर आख गडाये उसकी रूप-सुधा का पान कर रहा था, कठोरता से भवे चढा कर जवाब देते हुए धीमी आवाज मे बोला

"तोनिया, हम लोग पहले भी इस बारे मे बात कर चुके हैं। तुम्हे मालूम है कि मैं तुमको प्यार करता था और अब भी मेरा प्यार लौट कर आ सकता है। मगर उसके लिए तुमको हमारे साथ आना होगा। मैं अब पहले का पावलुशा नही रहा हू। और मैं तुम्हारे लिए अच्छा पति भी नही हो सकूगा अगर तुम मुझसे यह उम्मीद करती हो कि मैं तुमको पार्टी के ऊपर तरजीह दूगा। वजह यह है कि मैं सबसे पहले पार्टी को देखूगा और तुमको और उन दूसरे लोगो को, जिनसे मैं प्यार करता हू, बाद मे।"

तोनिया उदासी से नदी के गहरे नीले पानी को एकटक देख रही थी। उसकी आखें डबडबाई हुई थी।

पावेल ने तोनिया की उस पार्श्व छवि को देखा जिसे वह इतनी अच्छी तरह पहचानता था, उसने उसके घने सुनहले बालो को देखा और उसका मन उस लडकी के लिए दुख से कातर हो उठा जो कभी उसके इतने पास थी और उसे इतनी प्यारी थी।

उसने बडी कोमलता से उसके कधे पर अपना हाथ रखा।

"तोनिया, तुम अपने पुराने वातावरण से नाता तोड कर हम लोगो के साथ आ जाओ। आओ, हम लोग साथ मिल कर इन पूजीशाहो के खातमे के लिए काम करें। हमारे साथ बहुत सी अच्छी-अच्छी लडकिया हैं जो इस कठिन लडाई का बोझ उठा रही हैं, जो सारी तकलीफो और मुसीबतो को सह रही हैं। हो सकता है, वे तुम्हारी तरह सुशिक्षित न हों। लेकिन बताओ, तुम क्यो हमारे साथ शरीक नही होना चाहती, आखिर क्यो? तुम कहती हो कि चुजानिन ने तुमको फुसलाने और खराब करने की कोशिश की। मगर वह तो पतित है ही। वह सैनिक थोडे ही है। तुम कहती हो कि मेरे साथियो का बर्ताव तुम्हारे साथ दोस्ताना नही था। मगर तुम्हीं बताओ कि तुम वहा पर ऐसे कपडे पहन कर क्यो गईं जैसे तुम अमीर लोगो के किसी नाच मे जा रही हो? दोष तुम्हारे इस अहकार का है. मैं वैसा ही गन्दा फटा-पुराना फौजी ट्यूनिक क्यो पहनू जैसा सब लोग पहनते हैं, सिर्फ इसीलिए कि दूसरे लोग पहने हुए हैं? तुममे एक मजदूर से प्रेम करने का साहस था, मगर तुम एक विचारधारा से प्रेम नही कर सकतीं। मुझे तुमसे अलग होने का दुख है, और मैं तुम्हारी स्मृति को सजो कर रखना चाहूगा।"

पावेल ने और कुछ नही कहा।

दूसरे रोज उसने एक हुक्मनामा सडक पर चिपका हुआ देखा जिस पर प्रादेशिक चेका के चेयरमैन जुखराई का दस्तखत था। उसको देख कर पावेल का दिल बल्लियो उछल पडा। बडी मुश्किल से वह जुखराई के दफ्तर मे घुसने की इजाजत पा सका। सन्तरी उसे अन्दर जाने नही देते थे। और उसने इतना

हगामा खडा किया कि यह नौबत आ गयी कि उसे पकड लिया जाता। मगर अन्त मे उसे कामयावी मिली।

फ़ियोदोर दिल खोल कर उससे मिला। उसकी एक बाह कटी हुई थी, तोप के एक गोले से वह उड गई थी।

बातचीत फौरन काम के ऊपर आ गई। जुखराई ने कहा, "जब तक तुम मोर्चे पर जाने के लिए फिर से ठीक नही हो जाते, तब तक तुम यहा पर क्रान्ति के दुश्मनो को कुचलने मे मेरी मदद कर सकते हो। कल से ही काम शुरू कर दो।"

पोलिश क्रान्ति-विरोधियो के साथ लडाई खतम हो गई। लाल फौजें दुश्मन को वारसा की दीवारो तक खदेड ले गई। मगर चूकि उनकी शारीरिक और फौजी साज-सामान की ताकत बहुत खर्च हो चुकी थी और उनके रसद और कुमक के अड्डे बहुत पीछे छूट गये थे, इसलिए वे उस आखिरी किले को फतह नही कर सकी और लौट आई। इस तरह वह बात हुई जिसे पोल "विश्चुला का चमत्कार" कहते है, यानी यह कि लाल फौजें वारसा से लौट आई और पोलैंड के पूजीपतियो और जागीरदारो को नई जिन्दगी मिली। पोलैंड मे सोवियत समाजवादी जनतत्र की स्थापना का स्वप्न अभी नही पूरा होना था।

खून मे भीगी हुई धरती कुछ विश्राम चाहती थी।

पावेल अपने घरवालो से नही मिल सका क्योकि शेपेतोवका फिर पोलिश फौजो के हाथ मे आ गया था और फिलहाल अस्थायी रूप से उनकी सरहदी चौकी बना हुआ था। सुलह की बातचीत चल रही थी।

पावेल काम के सिलसिले मे दिन-रात चेका मे रहता था। उसे यह जान कर बडी परेशानी हुई कि उसके शहर पर पोलो का कब्जा हो गया है।

"क्या इसका मतलब यह है कि अगर सधि-पत्र पर दस्तखत हो जाते है, तो मेरी मा सरहद के उस पार रहेगी?" उसने जुखराई से पूछा।

मगर फ़ियोदोर ने उसे दिलासा दी।

"बहुत करके सीमा-रेखा नदी के साथ-साथ चल कर गोरिन के बीच मे गुजरेगी जिसका मतलब यह है कि तुम्हारा शहर हमारी तरफ होगा। बहरहाल जो भी हो, जल्द ही हमे इस बात का पता चल जायगा," जुखराई ने कहा।

पोलिश मोर्चे से दक्खिन को डिवीजनें भेजी जा रही थी। क्योकि जिस वक्त जनतत्र पोलिश मोर्चे पर अपनी सारी ताकत लगा रहा था, उसी वक्त रैंगेल परिस्थिति का फायदा उठा कर क्रीमिया की अपनी खोह मे निकल

आया और नीपर नदी के किनारे-किनारे उत्तर की ओर बढने लगा। उस वक्त उसकी निगाह येकातेरीनोस्लाव प्रदेश पर थी।

अब चूंकि पोलो के सग लडाई खतम हो गई थी, अत जनतन ने अपनी फौजो को क्रान्ति-विरोधियो के इस अन्तिम अड्डे को खतम करने के लिए क्रीमिया भेज दिया।

रेलगाडिया भर-भर कर सैनिक, गाडिया, मैदानी बावर्चीखाने और तोपें दखिखन के रास्ते मे कीव मे होकर गुजर रही थी। इस इलाके के ट्रान्सपोर्ट विभाग का चेका इन दिनो भूत की तरह काम कर रहा था क्योकि उसे आमद-रफ्त की बाढ से पैदा होने वाली तमाम कठिनाइयो का हर वक्त सामना करना पडता था। स्टेशनो पर रेलगाडिया अटी पडी थी और अक्सर आमद-रफ्त रोकनी पडती थी क्योकि रेलवे लाइन खाली न मिलती थी। तार के आपरेटर अनगिनत परवाने टपटपा कर खबर देते कि किस डिवीजन के लिए लाइन खाली हो गई है। उनको डिवीजनो मे आये हुए सन्देशो का भी भाष्य करना पडता, जो सब इस बात की माग करते कि सबसे पहले उनकी जरूरत को पूरा किया जाय "सबसे पहले हमे लाइन दीजिए यह फौजी हुक्म है फौरन लाइन खाली कीजिए।" और हर सन्देश के साथ यह चेतावनी रहती कि अगर हुक्म पूरा नही किया गया तो क्रान्तिकारी फौजी अदालत के सामने मामला पेश किया जायगा।

आमद-रफ्त को बगैर किसी रोक-टोक के चालू रखने की जिम्मेदारी शहर के यातायात के चेका की थी।

फौजी टुकडियो के कमाडर अपनी पिस्तौल चमकाते हुए चेका के हेडक्वार्टर मे आते और माग करते कि तार नम्बर फला-फला के अनुसार, जिस पर फौज के कमाडर के दस्तखत हैं, फौरन उनकी गाडी रवाना की जाय। कोई भी यह बात मानने के लिए तैयार न होता कि ऐसा करना मुमकिन नही है। "तुम्हारी जान पर बनेगी तो गाडी को रवाना करोगे।" और उसके बाद गाली-गुफ्ता शुरू हो जाता। खास तौर पर सगीन मामलो मे जुखराई को फौरन बुलाया जाता और तब फिर वे आवेश मे पागल आदमी, जो एक-दूसरे को गोली से उडा देने के लिए तैयार खडे रहते, शान्त हो जाते। इस लोहे के आदमी को देख कर, जिसकी आवाज धीमी और ठडी थी और जो किसी तरह के बहस-मुबाहिसे को पसन्द नही करता था, पिस्तौलें वापिस अपनी जगह पहुच जाती।

कभी-कभी पावेल जब अपने दफ्तर मे लडखडाता हुआ निकल कर बाहर आता तो उसे अपने सिर मे ऐसा दर्द मालूम होता जैसे उसे कोई छुरिया मार रहा हो। इन दिनो चेका मे वह जो काम कर रहा था, उसका उसकी नसो पर बहुत बुरा प्रभाव पड रहा था।

एक दिन उसने गोले-बारूद से लदे मालगाड़ी के खुले डब्बे पर सर्गेई ब्रुजाक को देखा। सर्गेई डब्बे से कूद कर पावेल की ओर आया, इतनी तेजी से कि पावेल के पैर उखडते-उखडते बचे, और अपने दोस्त को बाहो मे भर लिया।

"पावका, बदमाश! देखते ही मैं पहचान गया कि तुम्ही होगे।"

इन दोनो लडको के पास एक-दूसरे को बतलाने के लिए इतनी खबरे थी कि उनकी समझ मे नही आ रहा था कि शुरू कहा से करे। उनकी आखिरी मुलाकात के वक्त से अब तक दोनो के सग बहुत सारी बाते गुजरी थी। वे एक-दूसरे से सवाल पर सवाल किये जा रहे थे और जवाब का इन्तजार किये बिना बोलते चले जा रहे थे। अपनी बातचीत मे वे इतने डूबे हुए थे कि उन्होने इजन की सीटी भी नहीं सुनी। जब गाडी स्टेशन से बाहर जाने लगी तब कही जाकर दोनो एक-दूसरे से अलग हुए।

अब भी उन्हे एक-दूसरे से बहुत सी बाते करनी थी। मगर रेल की रफ्तार तेज होती जा रही थी और सर्गेई चिल्ला कर अपने दोस्त से कुछ कहता हुआ प्लेटफार्म पर दौडा और माल के एक डब्बे के खुले दरवाजे को पकड कर गाडी पर चढ गया। डब्बे के अन्दर के बहुत से हाथो ने उसे पकड कर अन्दर खीच लिया। पावेल ने उसको जाते देखा तो यकायक उसे ख्याल आया कि सर्गेई को वालिया की मृत्यु के बारे मे कुछ भी मालूम नही क्योकि शेपेतोवका छोडने के बाद फिर वह वहा नही गया था और यह मुलाकात ऐसी अचानक थी कि पावेल यह बात बताना भी भूल गया।

"अच्छा ही है कि उसे नही मालूम, दिमाग पर कोई बोझ न रहेगा," पावेल ने सोचा। उसे नही मालूम था कि अब वह फिर कभी अपने दोस्त को नही देख सकेगा। न ही सर्गेई को यह मालूम था कि वह अपनी मौत के पास जा रहा है। उस वक्त वह डब्बे की छत पर खडा हुआ था और पतझड की हवा आकर उसके खुले हुए सीने से टकरा रही थी।

"वहा से उतर आओ सर्योजा," दोरोशेको ने कहा। दोरोशेको लाल सेना का आदमी था और उसके कोट के पीछे एक सूराख था जो जलने से बन गया था।

"ठीक है, घबराने की कोई बात नही," सर्गेई ने हसते हुए कहा, "हवा की और मेरी बडी दोस्ती है।"

एक हफ्ते बाद अपनी पहली ही लडाई मे उसको गोली लगी। वह लड-खडाता हुआ आगे बढा, उसके सीने मे भयकर दर्द हो रहा था जैसे अन्दर से उसे कोई चीरे डाल रहा हो। उसने हवा को पकडने की कोशिश की और अपने सीने को बाहो से कस कर दबाये, लडखडाया और वही जमीन पर ढह

हो गया। उसकी बुझी हुई नीली आखें उक्रेन के स्तेपी के अनन्त विस्तार को एकटक देखती रह गई।

चेका का काम पावेल को बहुत ही कमजोर करता जा रहा था। उसकी तन्दुरुस्ती पर इसका बहुत बुरा असर पड रहा था। उसके सिर मे तेज दर्द अब ज्यादा बार होने लगा। मगर उसने जुखराई से इस चीज के बारे मे तब तक कुछ नही कहा जब तक कि एक रोज दो विनिद्र रातो के बाद वह बेहोश नही हो गया।

"फियोदोर, तुम्हारे ख्याल से क्या यह अच्छा न होगा कि मैं कुछ और काम करू ? सबसे ज्यादा पसन्द तो मुझे कारखाने मे अपने पुराने धधे पर काम करना है। मुझे लगता है कि मेरे सिर मे कुछ गडबडी है। मेडिकल कमीशन के लोगो ने मुझे बतलाया था कि अब मैं फौजी सर्विस के अयोग्य हू। मगर इस तरह का काम तो मोर्चे पर के काम से भी बुरा है। दो दिन जो हम लोग सुतिर के गिरोह के लोगो को पकडते रहे, उसने मेरा बिलकुल पटरा कर दिया है। मुझे इन लडाइयो मे विश्राम लेना ही होगा। देखो न फियोदोर, अगर मैं ठीक से अपने पैरो पर खडा भी न हो सका, तो तुम्हारे किस काम का।"

जुखराई ने चिन्तित होकर पावेल के चेहरे को गौर से देखा।

"हा, तुम्हारा हाल अच्छा नही नजर आता। यह सब मेरी ही गलती है। मुझे बहुत पहले ही तुम्हे छुट्टी दे देनी चाहिए थी। मगर मैं काम मे इस तरह डूबा रहा कि मुझे इस बात का ख्याल ही नही आया।"

इस बातचीत के बाद पावेल ने कोमसोमोल की प्रादेशिक कमिटी के सामने अपने-आपको इस सर्टिफिकेट के साथ पेश किया कि उसे कमिटी के काम के लिए भेजा जा रहा है। एक अफसरी ढग के लडके ने, जिसने बडी बाकी अदा से अपनी टोपी नीचे नाक तक खीच रखी थी, जल्दी-जल्दी उस कागज को देखा और पावेल को आख मारते हुए बोला

"चेका मे आ रहे हो, क्यो ? बडा मजेदार सगठन है वह भी। हम लोग अभी पलक मारते तुम्हारे लिए कोई काम ढूढ निकालेंगे। हमे जितने लोग भी मिल सकें सबकी जरूरत है। कहा जाना चाहोगे तुम ? कमिसारी विभाग मे ? नही ? अच्छा। नीचे घाट पर का प्रचार विभाग कैसा रहेगा ? नही। तब तो बहुत बुरा हुआ। काम तो अच्छा है, ज्यादा काम भी नही है और खास राशन भी मिलता है।"

पावेल ने उसको बीच मे ही टोका।

उसने कहा, "मैं तो कारखाने मे काम करना पसन्द करूगा, लोको मे।" लडके ने आश्चर्य से उसकी तरफ देखा और कहा, "लोको मे ? हू... वहा तो शायद हमे किसी की जरूरत नही है। मगर तुम उस्तिनोविच के पास जाओ। वह किसी जगह तुम्हे काम पर लगा देगी।"

गन्दुमी रग की उस्तिनोविच के साथ थोडी देर की मुलाकात के बाद यह फैसला किया गया कि पावेल को रेल के कारखाने मे, जहा पर वह काम करने वाला था, कोमसोमोल के सगठन का मत्री बनाया जाय।

इस बीच क्रान्ति-विरोधी फौजें क्रीमिया के प्रवेश-मार्ग की किलेबन्दी कर रही थी और अब जमीन के इस छोटे से टुकडे पर, जहा पहले कभी क्रीमिया के तातारो और जापोरोजिये के कौसेको की बस्तियो की सरहदें मिलती थी, पेरेकोप की आधुनिक किलेबन्दी की कतारे खडी थी।

और यहा क्रीमिया में, पेरेकोप के पीछे, पुरानी दुनिया देश के कोने-कोने से खदेडी जाकर शराब के दौरो और नाच-रग मे मस्त थी। उसे आने वाले विनाश का कोई पता न था और नाच-रग मे वह अपने को बहुत महफूज समझ रही थी।

पतझड की एक बेहद सर्द, नम रात को हजारो मेहनतकशों के बेटे रात के अधेरे मे पार उतर कर किले मे बन्द दुश्मन पर पीछे से हमला करने के लिए, सिवाश के बर्फानी पानी मे खाडी पार करने के लिए उतरे। उन हजारो लोगो मे इवान जार्की भी था जो अपनी मशीनगन को सिर पर चढाये हुए था ताकि वह भीगे नही।

और जब सवेरे किलेबन्दियो पर सामने से हमला हुआ और पेरेकोप मे खलबली मची तो उसी वक्त उन पहले दस्तो ने, जो सिवाश नदी मे उतरे थे, लितोव्स्की प्रायद्वीप पर नदी के पार उतर कर पीछे से दुश्मन पर हमला किया। और उस चट्टानी साहिल पर चढने वाले पहले आदमियो मे इवान जार्की भी था।

बडी खूखार लडाई हुई। नदी से बाहर निकलते हुए लाल सैनिको पर दुश्मन की घुडसवार फौज ने जोरो से हमला किया। जार्की की मशीनगन मौत उगलने लगी, उसकी मौत की बरसात करने वाली कडकडाहट पल भर को भी न थमती थी। उसकी गोलियो की बौछार से दुश्मन के सिपाही और घोडे ढेर होते जा रहे थे। जार्की बला की तेजी से अपनी मशीनगन मे कार-तूसो की नयी-नयी पेटिया लगाता जा रहा था।

पेरेकोप ने सैकड़ो तोपो की गरज से जवाब दिया। उस वक्त लगता था जैसे धरती रसातल को चली जा रही है और हजारो तोप के गोले कान को फाड़ने वाली चीखो से आसमान को चीर रहे थे। गोलो के कान के पर्दे फाड़ देने वाले धड़ाके हो रहे थे, उनके अनगिनत छर्रे दूर-दूर तक फैल रहे थे और लाशें गिर रही थी। घायल और विदीर्ण धरती की छाती से काले-काले बादलो के फव्वारे छूट रहे थे जिन्होने सूरज को भी ढक लिया था।

दैत्य का सिर कुचल दिया गया था और पहली घुड़सवार फौज की लाल बाढ़ दुश्मन पर आखिरी हमला करने के लिए क्रीमिया मे दाखिल हो गई। दहशत के मारे दुश्मन के सिपाही बन्दरगाहो से छूटते हुए जहाजो पर चढ़ने के लिए आपस मे धक्कम-धक्का कर रहे थे।

जनतन्त्र ने उन मैली-कुचैली ट्यूनिको पर, जिनके नीचे भी कभी मर्दो के मजबूत दिल धड़कते थे, "आर्डर आफ द रेड बैनर" का सुनहला पदक लगा दिया और इन ट्यूनिको मे से एक कोमसोमोल के तोपची इवान जार्की की थी।

पोलो से सधि हुई, और जैसा कि जुखराई ने कहा था, शेपेतोवका सोवियत उक्रेन मे रहा। शहर से लगभग तीस मील दूर की एक नदी विभाजन रेखा बनी।

दिसम्बर १९२० की एक कभी न भूलने वाली सुबह को पावेल अपने शहर मे आया। वह बरफ मे ढके हुए प्लेटफार्म पर उतरा, स्टेशन का नाम पत्थर की पटिया पर पढ़ा, बायी ओर मुड़ा और सीधे डिपो मे जाकर आर्तेम का पता लगाया। लेकिन उसका भाई वहा नही था। अपने फौजी कोट को और भी कस कर बदन मे लपेटता हुआ पावेल लम्बे-लम्बे कदमो से जगल के बीच से होकर शहर को चला।

दरवाजे पर दस्तक पड़ी तो मारिया याकोवलेवना मुड़ी और बोली, "चले आओ।" बरफ से ढकी एक आकृति घर के अन्दर दाखिल हुई और मा ने अपने प्यारे बेटे के चेहरे को देखा। उसका हाथ अपने सीने पर गया और उसके अन्दर जो खुशी का जोश उमड़ रहा था, उसने उसकी वाणी छीन ली।

वह अपने बेटे के सीने पर गिर पड़ी और उसके चेहरे को अपने चुम्बनो से नहला दिया। खुशी के आसू उसके गालो पर बह रहे थे। पावेल ने उस दुबले-पतले छोटे से शरीर को कस कर अपने सीने मे लगा लिया और खामोशी से अपनी मा के परेशान चेहरे को देखा जिस पर पीड़ा और चिन्ता की गहरी लकीरें थी, और मा के शान्त होने का इन्तजार करने लगा।

एक बार फिर मा की आखो मे, जिसने इतनी मुसीबतें देखी थी, खुशी की रोशनी चमकने लगी। मालूम होता था कि अपने बेटे को देखते रहने

से, जिसको दुवारा फिर कभी देखने की उसे उम्मीद नही थी, उसका जी ही नही भरेगा। उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा जब तीन दिन वाद वहुत रात गये आर्तेम भी अपना थैला कधे पर डाले उस छोटी सी कोठरी मे आ पहुचा।

कोर्चागिन परिवार के लोग फिर मिल गये। दोनो भाई मौत के मुह से बच कर निकल आये थे और एक से एक भयानक अग्नि-परीक्षाओ के वाद वे फिर मिल रहे थे।

"अव तुम लोग क्या करने जा रहे हो ?" मा ने अपने वेटो से पूछा।

आर्तेम ने खुश-खुश जवाव दिया, "मेरे लिए तो फिर वही रेल का कारखाना है, मा !"

जहा तक पावेल की वात थी, दो हफ्ते घर पर गुजार कर वह वापिस कीव लौट गया। उसका काम वहा उसकी राह देख रहा था।
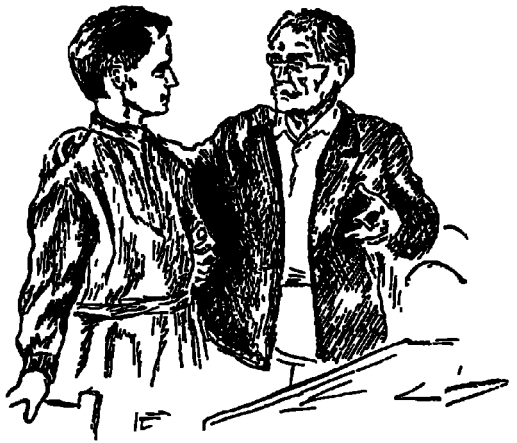
दूसरा भाग

११ दस

आधी रात। आखिरी ट्राम गाडी अपना थकान से चूर शरीर लिए डिपो मे लौट आई है। चाद की ठडी रोशनी खिडकी की चौखट पर पड रही है और चमकती हुई दूधिया चादर की तरह बिस्तर पर बिछी हुई है। बाकी कमरे मे अधेरा-सा है। कोने मे मेज पर रिता एक मोटी कापी पर झुकी हुई है, जो कि उसकी डायरी है, और मेज पर की बत्ती की रोशनी कापी पर पड रही है। पेन्सिल की तेज नोक थे शब्द लिखती जा रही है

"२४ मई

"मै अपने इम्प्रेशन लिखने की एक बार फिर कोशिश करूगी। बहुत दिनो से मैने नही लिखा। पिछली बार जब मने डायरी मे लिखा था, तब से अब तक छ हफ्ते गजर गये है। मगर क्या किया जाय, मजबूरी है।

"डायरी लिखने के लिए मुझे वक्त कहा से मिले? आधी रात गुजर चुकी है और यह देखो मै बैठी लिख रही हू। नीद मुझे नही आती। कामरेड सेगल-हम लोगो को छोड कर जा रहे है उन्हे केन्द्रीय समिति मे काम करना है। इस खबर से हम सबको बडा धक्का लगा। बडे ही लाजवाब आदमी हैं हमारे ग्जार अलेक्जान्द्रोविच। अब तक मैने इस बात को नही समझा था कि हमारे लिए उनकी दोस्ती की इतनी अहमियत है। उनके चले जाने पर द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का क्लास नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा। कल बडी रात गये तक बैठे-बैठे

'शिष्यों' की प्रगति का लेखा-जोखा होता रहा। कोमसोमोल की सूबा कमिटी का मन्त्री अकिम आया था, और बदशकल तुफ्ता भी। इन सर्वज्ञ महाशय से मुझे बडी चिढ है। सेगल बडे खुश हुए जब उनके शिष्य कोर्चागिन ने पार्टी इतिहास पर होने वाली बहस मे तुफ्ता को परास्त कर दिया। हा, ये दो महीने बर्बाद नही हुए। मेहनत करना बुरा नही लगता जब उसका इतना अच्छा नतीजा दिखाई देता हो। उडती खबर सुनी है कि जुखराई का तबादला फौजी इलाके के स्पेशल डिपार्टमेट मे किया जा रहा है। पता नही क्यो।

"लजार अलेक्जान्द्रोविच ने अपने शिष्य को मुझे सौप दिया है। उन्होने कहा, 'मैने जो काम शुरू किया है उसको तुम्हे पूरा करना होगा। आधे रास्ते पर न रुक जाना। रिता, तुम और वह दोनो एक-दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते हैं। उस लडके मे सगठित ढग से काम करने की अभी जरा कमी है। सरकश मिजाज का लडका है और अक्सर भावनाओ के बहाव मे वह जा सकता है। मेरा खयाल है कि तुम उसके लिए बहुत अच्छी मार्गदर्शिका बन सकोगी, रिता। मैं तुम्हारी सफलता की कामना करता हू। मेरे मास्को पहुचने पर मुझे चिट्ठी लिखना मत भूल जाना।'

"आज सोलोमेस्की जिला कमिटी के लिए केन्द्रीय समिति ने एक नया मन्त्री भेज दिया है। उसका नाम है जार्की। मैं उसे फौज मे जानती थी।

"कल दिमित्री दुबावा कोर्चागिन को लायेगा। मैं दुबावा की हुलिया बताने की कोशिश करती हू। मझोला कद, हट्टा-कट्टा और गठीला बदन। १९१८ मे कोमसोमोल मे आया और १९२० से पार्टी मेम्बर है। वह उन तीन लोगो मे से एक है जिन्हे 'मजदूरो के विरोधी दल' मे शरीक होने के कारण कोमसोमोल की सूबा कमिटी से निकाला गया था। उसको सही रास्ते पर लाना आसान काम नही रहा है। हर रोज वह सवालो की झडी लगाकर हमे मुख्य विषय से दूर खीच ले जाता था और हमारे कार्यक्रम को उलट-पुलट देता था। उसमे और मेरी शिष्या ओल्गा यूरेनेवा मे बिलकुल नही बनी। अपनी पहली ही मुलाकात मे दुबावा ने उसको ऊपर से नीचे तक देखा और बोला, 'भाई तुम्हारी सज-धज जरा भी ठीक नहीं है। तुम्हे चमडे की गद्दी वाले पैंट पहनना चाहिए, जूतो मे कील लगानी चाहिए, बुद्योनी के घुडसवारो वाला हैट लगाना चाहिए और हाथ मे तलवार लेनी चाहिए। इस तरह से कुछ बात ही न बनी, तुम चोचो का मुरब्बा होकर रह गई।'

"जाहिर है, ओल्गा को यह बात बहुत बुरी लगी और मुझे बीच-बचाव करना पडा। मेरा खयाल है दुबावा कोर्चागिन का दोस्त है। अच्छा आज रात, अब बस। सोने का वक्त हो गया।"

जलते हुए सूरज की तपन से धरती कुम्हलाई जा रही थी। रेलवे प्लेटफार्म के पुल की रेलिंग इतनी गर्म हो रही थी कि उसको छूते हाथ जलता था। गरमी से थके हुए लोग-बाग धीरे-धीरे पुल पर चढ रहे थे। उनमे से ज्यादातर मुसाफिर नही थे, बल्कि वही आस-पास के रहने वाले लोग थे जो शहर पहुचने के लिए पुल पार करके जाया करते थे।

पुल से नीचे उतरने पर पावेल ने रिता को देखा। वह उससे पहले ही स्टेशन पहुच गई थी और पुल पर से उतरते हुए लोगो को देख रही थी।

पावेल उससे लगभग तीन गज की दूरी पर रुक गया। रिता ने उसको नही देखा और पावेल एक नई ही दिलचस्पी से उसको देखता रहा। वह धारीदार ब्लाउज और किसी सस्ते कपडे का छोटा सा नीला स्कर्ट पहने हुए थी। उसके कधे पर एक मुलायम चमडे का जाकट पडा हुआ था। उसका धूप से तपा हुआ चेहरा था और उस चेहरे को जैसे फ्रेम मे जकडे हुए उसके रूखे बाल उड रहे थे। वह अपने सिर को जरा पीछे फेंक कर खडी हुई थी और सूरज की चमक के कारण उसकी आखे चौंधिया रही थी। उसको वैसे खडा देख कर कोर्चागिन को पहली बार महसूस हुआ कि उसकी शिक्षक और मित्र रिता कोमसोमोल प्रादेशिक कमिटी के ब्यूरो की मेम्बर ही नही, बल्कि । अपने मन मे आये हुए उन 'पापपूर्ण' विचारो के कारण खीझ अनुभव करते हुए उसने रिता को आवाज दी।

"मैं पूरे एक घटे से तुम्हे अपलक देख रहा हू मगर तुमने मुझे देखा ही नही," वह हसा, "चलो हमारी गाडी आ गई है।"

वे प्लेटफार्म के दरवाजे पर पहुचे।

उसके एक रोज पहले प्रादेशिक कमिटी ने कोमसोमोल के एक जिला सम्मेलन के लिए रिता को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था और कोर्चागिन को उसके सहायक के रूप मे जाना था। उनकी तात्कालिक समस्या थी गाडी पर चढना, जिसे हल करना कोई आसान काम नही था। गाडिया कभी ही कभी छूटती थी और जिन दिनो वे छूटती थी, उन दिनो रेलवे स्टेशन पर पाच जनो की एक सर्वशक्तिमान कमिटी का कब्जा हो जाता था जिसके परमिट के बिना कोई प्लेटफार्म पर दाखिल नही हो सकता था। प्लेटफार्म के सारे दरवाजो और रास्तों पर कमिटी के आदमी पहरा दिया करते थे। पहले से ही बुरी तरह भरी हुई गाडिया उत्सुक मुसाफिरो की भीड के बहुत थोडे से लोगो को ही अपने साथ ले जा पाती थी। मगर कोई भी पीछे छूटना नही चाहता था, क्योकि इसका मतलब होता था अगली गाडी के लिए कई-कई दिन तक इन्तजार करना, जो पता नही कब आये। इसलिए हजारो आदमी रेल के डब्बो तक पहुचने के लिए प्लेटफार्म के दरवाजो पर आपस मे लडा-भिडा करते थे। उन

दिनों स्टेशन की हालत बिलकुल घिरे हुए किले की सी रहती थी और कभी-कभी जमकर लड़ाई भी हो जाती थी।

प्लेटफार्म के दरवाजे पर जो जबर्दस्त भीड़ जमा थी, उसके बीच से निकलने की रिता और पावेल ने कोशिश की। लेकिन जब इसमे वे सफल नही हुए तो पावेल, जो स्टेशन के अन्दर जाने और स्टेशन से बाहर आने के सारे रास्ते जानता था, रिता को मालघर के अन्दर मे ले गया। बड़ी मुश्किल मे वे लोग चौथे नम्बर के डब्बे तक पहुचे। डब्बे के दरवाजे पर गरमी के मारे पसीने मे सराबोर चेका का एक आदमी खड़ा था जो भीड को रोकने की कोशिश कर रहा था और बार-बार एक ही बात दुहरा रहा था

"डब्बा भरा हुआ है और बफर या गाड़ी की छत पर चढ़ना कायदे के खिलाफ है।"

तंग आये हुए मुसाफिर उस सिपाही पर टूटे पडते थे और कमिटी मे मिले हुए अपने टिकटों को उसकी नाक के नीचे घुमेड-घुमेड कर दिखलाते थे। हर डब्बे के आगे गाली-गुफ्ते, शोर-शराबे, धक्कम-धक्के का बाजार गर्म था। पावेल ने समझ लिया कि कायदे से गाडी मे चढ़ना नामुमकिन है। मगर चढ़ना उन्हे है ही, नही तो सम्मेलन स्थगित करना पडेगा।

रिता को अलग ले जाकर उसने तय किया कि हमे क्या करना चाहिए पावेल धक्का देकर डब्बे के अन्दर घुस जायगा और खिडकी खोलकर उसमे से रिता को अन्दर खींच लेगा। दूसरा कोई रास्ता नही था।

"मुझे जरा अपना वह जाकेट दे दो। किसी भी परिचय-पत्र से ज्यादा अच्छा रहेगा वह।"

उसने जाकेट पहन लिया और अपना पिस्तौल इस तरह जेब मे रखा कि उसका हत्था और उससे लगी हुई रस्सी दिखाई दे रही थी। सामान रिता के पास छोड़ कर वह डब्बे के पास पहुचा और शोर मचाते हुए मुसाफिरों की भीड को कोहनियो से चीरता हुआ दरवाजे पर पहुच कर उसने उसके डडे को पकड़ लिया।

"हे कामरेड, कहा चढे जा रहे हो ?"

पावेल ने पीछे मुड़कर बहुत लापरवाही से उस भारी-भरकम सिपाही को देखा।

"मैं एरिया स्पेशल डिपार्टमेंट का आदमी हू। मैं देखना चाहता हू कि इस डब्बे के तमाम मुसाफिरो के पास कमिटी के दिये हुए टिकट है या नही," उसने ऐसे स्वर मे कहा कि किसी को उसके पद के बारे मे सदेह नही हो सकता था।

चेका के सिपाही ने पावेल की जेब पर नजर डाली और आस्तीन से अपने माथे का पसीना पोछते हुए थके स्वर मे कहा

"घुस सको तो घुस जाओ।"

अपने हाथो, कधो और यहा-वहा अपने घूसो का अच्छी तरह इस्तेमाल करते हुए, ऊपर वाली बर्थ को पकड कर और नीचे की फर्श पर अपना सामान फैलाकर उस पर बैठे हुए मुसाफिरो को लाघता हुआ, पावेल डब्बे के बीचोबीच जा पहुचा। चारो तरफ से उस पर गालियो की बौछार हो रही थी, मगर इसकी उसे कोई परवाह नही थी।

नीचे फर्श पर उतरते समय कही गलती से उसका पैर एक मोटी-ताजी औरत के घुटने से छू गया। उसके घुटने का छूना था कि वह औरत जोर से चीखी, "अधे हो, दिखाई नही देता, कहा जा रहे हो! मेरा पैर कुचल दिया!" किसी तरह अपना साढे तीन मन का शरीर लिये वह औरत एक सीट के सिरे पर सकस कर बैठी थी और अपने घुटनो के बीच मे वनस्पति तेल का एक बडा सा पीपा रखे हुए थी। सामान रखने की सारी जगहे इसी तरह के डब्बो, पीपो, डलियो, पिटारो, बोरो से भरी हुई थी। डब्बे मे दम घुटता था।

गाली की कोई परवाह न कर पावेल ने पूछा "आपका टिकट?"

"क्या मेरा!" उस औरत ने इस अनचाहे इन्स्पेक्टर को डपट कर जवाब दिया।

सबसे ऊपर वाली बर्थ से एक सिर निकला और एक भारी सी भद्दी आवाज सुनाई दी "यास्का, यह हरामजादा यहा क्या करने आया है। उसे जरा बढकर जहन्नुम का टिकट तो दे दो!"

पावेल ने अपने सिर के ठीक ऊपर एक विशाल आकृति और घने बालो से ढका हुआ सीना देखा और समझ गया कि यही यास्का है। एक जोडा लाल-लाल आखें उसे घूर रही थी।

"छोड दो, इस महिला को छोड दो। टिकट तुम्हें किस बात का चाहिए?"

बगल की एक ऊपर वाली बर्थ से चार जोडा टागें झल रही थी और उनके मालिक एक दूसरे के कधो मे बाहे डाले कट्ट-कट्ट सूरजमुखी के बीज चबा रहे थे। उनके चेहरो पर नजर डालते ही पावेल जान गया कि वे कौन हैं। यह गल्ले की चोर-बाजारी करने वालो का एक गिरोह था। ये नम्बरी बदमाश थे जो घूम-घूम कर देश भर मे गल्ला खरीदते थे और मनमाने दामो पर बेचते थे। पावेल के पास बर्बाद करने के लिए वक्त नही था। उसे किसी तरह रिता को अन्दर लाना था।

"यह किसका बक्स है?" उसने रेलवे की वर्दी पहने एक अधेड आदमी से खिडकी के नीचे रखे हुए लकडी के बडे बक्स की ओर इशारा करते हुए पूछा।

उस आदमी ने जवाब दिया, "उनका," और भूरे रंग के मोजे पहने हुए दो मोटी-मोटी टांगों की तरफ इशारा किया।

खिडकी खोलना जरूरी था और वह बक्स रास्ते में अड़ा था। चूंकि उसे और कहीं रखने की जगह नहीं थी, इसलिए पावेल ने उसको उठाकर ऊपर की बर्थ पर बैठे हुए उसके मालिक को पकड़ाते हुए कहा

"जरा इसको पकड़े रहिये, मुझे खिडकी खोलनी है।"

उसने बक्स उस चपटी नाक वाली औरत के घुटनों पर रखा तो वह चिल्लाई, "दूसरों के सामान को हाथ मत लगाओ!"

अपने बगल में बैठे हुए आदमी से वह बोली, "मोटका, यह छोकरा करना क्या चाहता है?" मोटका ने जूता पहने-पहने पावेल की पीठ में एक ठोकर लगाई और डपट कर बोला

"अबे सुनता है, यहां से नौ-दो-ग्यारह हो जा, वरना अभी तेरी अच्छी तरह कुन्दी हो जायगी!"

पावेल ने चुपचाप ठोकर बर्दाश्त कर ली। वह खिडकी खोलने में लगा हुआ था।

"जरा सरक तो जाइए," उसने रेलवे के आदमी से कहा।

एक और पीपे को रास्ते से हटाते हुए पावेल ने खिडकी के सामने की जगह साफ की। रिता वहां बाहर प्लेटफार्म पर खड़ी थी। जल्दी से उसने अपना बैग पावेल को पकड़ाया। बैग को वनस्पति तेल के पीपे वाली उस मोटीताजी औरत के घुटनों पर पटकते हुए पावेल ने बाहर को झुक कर रिता का हाथ पकड़ा और उसे अन्दर खींच लिया। इसके पहले कि सन्तरी नियम के उल्लंघन को देख पाता, रिता डब्बे के अन्दर आ गई थी और सन्तरी बाहर खड़ा गाली बक रहा था, लेकिन अब तो बहुत देर हो गई थी। अन्दर बैठे हुए मुनाफाखोरों के गिरोह ने रिता के आगमन का स्वागत इतने हल्ले में किया कि बेचारी ठिठक गई। चूंकि फर्श पर खड़े होने की भी जगह नहीं थी, इसलिए उसने किसी तरह अपने पांव नीचे की बर्थ के सिरे पर टिकाये और सहारे के लिए ऊपर की बर्थ को पकड़ कर सटी हो गई। चारों ओर गालियों का बाजार गर्म हो गया। ऊपर से वह मोटी भारी भद्दी आवाज फिर टर्राई:

"देखते हो इस सुअर को, पहले तो खुद घुस आया और फिर अपनी लौंडिया को भी अन्दर घसीट लिया।"

ऊपर से एक और आवाज सुनाई दी "मोटका, जरा दे तो इसकी नाक पर एक घूंसा!"

वह औरत अपने लकडी के वक्स को पावेल के सिर पर टिकाने की कोशिश जी-जान से कर रही थी। इन दो आगन्तुको के चारो ओर दुष्ट, घिनौने जानवरो जैसे चेहरे थे। पावेल को इस बात का बडा दुख था कि रिता को इन चीजो का सामना करना पड रहा था, मगर इनको बर्दाश्त करने के अलावा और चारा भी न था।

"महाशय, अपने बोरे सीटो के बीच के फर्श से हटा लीजिये ताकि इस कामरेड को खडे होने के लिए जगह हो जाय," उसने मोटका के नाम से पुकारे जाने वाले आदमी से कहा। मगर उसके जवाब मे उसको एक इतनी गन्दी गाली सुनने को मिली कि गुस्से से उसके दिमाग का पारा चढ गया। उसकी दाहिनी भौ के ऊपर की नाडी दर्द के साथ फडकने लगी। "जरा रुक, बदमाश कही का, अभी मैं तुझे बताता हू," उसने उस गुण्डे से, कहा। मगर जवाब मे उसे अपने सिर पर एक ठोकर मिली।

"बहुत अच्छा किया वास्का, एक और!" चारो ओर से समर्थन की आवाजें आने लगी।

आखिरकार पावेल के धीरज का बाध टूट गया और जैसा कि हमेशा ऐसे मौको पर होता था, उसने तेजी से और बिना किसी दुविधा के हिम्मत से अमल किया।

"मुनाफाखोर हरामजादो, तुम्हारा खयाल है कि तुम ऐसा करके निकल जाओगे?" वह जोर से चिल्लाया और फुर्ती से ऊपर वाले बर्थ पर चढ कर उसने कस कर एक घूसा मोटका के उस घिनौने हसते हुए चेहरे पर मारा। घूसा उसने इतने जोर से मारा था कि वह हरामजादा सट्टेबाज लुढक कर दूसरे मुसाफिरो के सिर पर आ गिरा।

"सुअर के बच्चो, तुम सब यहा से निकलो वरना अभी मैं तुम सबको गोली मार दूगा!" पावेल पागल की तरह चीखा और अपनी पिस्तौल उन चारो की नाक मे अडा दी।

अब पासा पलट गया था। रिता चौकन्नी होकर इस सारी कार्रवाई को देख रही थी और खुद भी गोली चलाने के लिए तैयार थी, अगर कोई कोर्चागिन पर हमला करे तो। ऊपर की बर्थ फौरन खाली हो गई। वे बदमाश जल्दी-जल्दी पास के कम्पार्टमेंट मे चले गए।

ऊपर की खाली बर्थ पर चढने मे रिता की मदद करते हुए पावेल ने धीरे से कहा

"तुम यही रहो, मैं उन बदमाशो को देखने जाता हू।"

रिता ने उसको रोकने की कोशिश की, "तुम उनसे लडने तो नही जा रहे हो?"

"नही," पावेल ने रिता को आश्वस्त करते हुए कहा, "मैं जरा सी देर मे लौट कर आता हू।"

उसने फिर से खिडकी खोली और बाहर प्लेटफार्म पर कूद गया। चन्द मिनट बाद वह ट्रान्सपोर्ट चेका के बर्माइस्टर से, जो पहले उनका चीफ था, बाते कर रहा था। उस लेट ने पावेल की पूरी बात सुनी और फिर आदेश दिया कि सारे डिब्बे को खाली कराया जाय और मुसाफिरो के कागजात की जाच की जाय।

बर्माइस्टर ने अपनी भारी आवाज मे गुर्राते हुए कहा, "मैंने यही बात कही थी। गाडियो के यहा आने के पहले से ही उसमे तमाम मुनाफाखोर और सट्टेबाज भरे रहते हैं।"

चेका के दस सिपाहियो की टोली ने गाडी को खाली करवाया। अपने पुराने काम को सभालते हुए पावेल ने मुसाफिरो के कागजात की जाच मे मदद पहुचाई। चेका के अपने पुराने साथियो से उसने अपने सम्बध नही तोडे थे और कोमसोमोल के मत्री की हैसियत से उसने कोमसोमोल के अपने कुछ बेहतरीन सदस्यो को वहा काम करने के लिए भेजा था। छानबीन खत्म हो जाने पर पावेल रिता के पास लौटा। अब डब्बे मे बिलकुल दूसरी तरह के मुसाफिर थे लाल सेना के सैनिक और कारखानो और दफ्तरो मे काम करने वाले लोग जो सब किसी न किसी जरूरी काम से सफर कर रहे थे।

डब्बे के एक कोने मे सबसे ऊपर की बर्थ पर रिता और पावेल बैठे हुए थे। मगर वहा पर अखबारो के बडलो ने इतनी जगह घेर रखी थी कि सिर्फ रिता के लेटने भर के लिए जगह थी।

रिता ने कहा, "कोई बात नही, हम लोग किसी तरह काम चला लेंगे।"

आखिरकार गाडी चली। जब वह धीरे-धीरे स्टेशन से बाहर होने लगी तो रिता और पावेल ने प्लेटफार्म पर बोरो के बडल पर बैठी हुई उस मोटी औरत की जरा सी झलक पाई और उसे चिल्लाते सुना "ए साका, मेरा तेल वाला पीपा कहा है ?"

अपनी जगह मे सकसकर बैठे हुए, जहा अखबारो के बडल उनके और दूसरे मुसाफिरो के बीच पर्दे का काम कर रहे थे, पावेल और रिता रोटी और सेब खा रहे थे और हसते हुए उस घटना को, जो ऐसी हसने की चीज नही थी, याद कर रहे थे जिससे उनकी यात्रा शुरू हुई थी।

रेलगाडी रेंगती हुई आगे बढती जा रही थी। रेलवे लाइन मे हर जोड पर रेलगाडी के पुराने, टूटे-फूटे और जरूरत से ज्यादा लदे हुए डब्बे चरमरा रहे थे, कराह रहे थे और बडे जोर से हिल रहे थे। गहरी नीली गोधूलि

खिडकी में से अन्दर झाक रही थी। फिर रात आई और गाडी को उसने अंधेरे की चादर से ढक दिया।

रिता थकी हुई थी और अपने बैग का तकिया लगाये ऊंघ रही थी। पावेल बर्थ के सिरे पर बैठा सिगरेट पी रहा था। वह भी थका हुआ था, मगर लेटने की जगह नहीं थी। रात की ताजी हवा खुली हुई खिडकी से अन्दर आ रही थी। अचानक हिचकोले से जागकर रिता ने अंधेरे मे पावेल के सिगरेट की चमक देखी। यह हमेशा से उसकी आदत रही है कि बैठा-बैठा रात गुजार देता है, मगर रिता को किसी तरह की तकलीफ नहीं होने देता।

रिता ने धीमे स्वर से कहा, "कामरेड कोर्चागिन! उन बुर्जुआ तौर-तरीको को छोडो और लेट जाओ।"

पावेल उसकी बात मान कर उसके बगल मे लेट गया और उसने अपनी अकडी हुई टागो को आराम के साथ फैला लिया।

"कल हमें बहुत सा काम करना है, इसलिए पागलराम जरा नीद ले लेने की कोशिश करो।" उसने बडे विश्वास से पावेल के गले मे अपनी बाहे डाल दी और पावेल ने अपने गालो पर उसके बालो का स्पर्श अनुभव किया।

पावेल के लिए रिता एक पवित्र चीज थी। वह उसकी दोस्त थी, कामरेड थी, राजनीतिक पथ-प्रदर्शिका थी। मगर इसके साथ ही साथ वह औरत भी थी। इसकी चेतना उसे सबसे पहले वहा पुल पर हुई थी और इसलिए अब उसके आलिंगन ने पावेल को इतना चचल कर दिया। उसने रिता की गहरी सम-चाल से चलती हुई सास को महसूस किया, उसके पास ही कही रिता के ओठ थे। इन सामीप्य से उसके अन्दर उन ओठो को पाने की लालसा जगी और मन का बहुत जोर लगाकर ही वह इस लालसा को दबा पाया।

जैसे पावेल के मन के भावो को ताडते हुए रिता अंधेरे मे मुस्कराई। वह इस लालसा के सुख और वियोग की पीडा दोनो को जान चुकी थी। उसने दो बोल्शेविको को अपना प्यार दिया था। ह्वाइट गार्ड की गोलियो ने दोनो को उससे छीन लिया था। उसमे से एक बडा शानदार डील-डौल का आदमी था, जो ब्रिगेड कमाडर था, दूसरा साफ नीली आखो वाला एक छोकरा था।

थोडी ही देर मे पहियो की ताल ने थपकी दे-देकर पावेल को सुला दिया। सुबह मे जब इजन ने जोर से सीटी दी तभी जाकर उसकी आख खुली।

रिता हर रोज बहुत रात गये तक काम मे व्यस्त रहती थी और अपनी डायरी के लिखने के लिए उसके पास वक्त न बचता था। कुछ दिनो के बाद उसने फिर डायरी में थोड़ा कुछ लिखा.

"११ अगस्त

"प्रादेशिक सम्मेलन समाप्त हो गया। अकिम, मिखाइलो तथा कई दूसरे लोग अखिल उक्रेनी सम्मेलन के लिए खारकोव गये है और अपना सारा कागजी काम मेरे जिम्मे छोड गये हैं। दुबावा और पावेल को प्रादेशिक कमिटी मे काम करने के लिए भेजा गया है। दिमित्री को जबसे पेचोर्स्क जिला कमिटी का मंत्री बनाया गया है, उसने क्लास मे आना बन्द कर दिया है। गले तक वह काम मे डूबा हुआ है। पावेल कुछ पढने की कोशिश करता है, मगर कुछ खास नतीजा नही निकलता क्योंकि या तो मै बहुत व्यस्त रहती हू या उसे किसी काम के सिलसिले मे बाहर भेज दिया जाता है। रेलवे मे इस वक्त जो तनाव की हालत चल रही है, उसके कारण कोमसोमोलो को बराबर इस काम मे खीचा जा रहा है। कल जार्की मुझसे मिलने आया था। वह शिकायत कर रहा था कि उसके लडके उससे छीन लिये जाते है, जब कि खुद उसे उनकी सख्त जरूरत है।"

"२३ अगस्त

"आज मैं गलियारे मे से गुजर रही थी तो मैने मैनेजर के दफ्तर के सामने कोर्चागिन को पाक्रातोव और एक दूसरे आदमी के साथ खडे देखा। मैं जब पास पहुची तो मैंने पावेल को कहते सुना

"वहा वे लोग जो बैठे हैं, उन्हे गोली मार देनी चाहिए। वह कहता है, 'तुम्हे हमारे हुक्म को काटने का कोई हक नही। रेल की ईधन-कमिटी यहा पर मालिक है और तुम कोमसोमोलो को चुपचाप उसकी बात माननी चाहिए, खामखा अपनी टाग नही अडानी चाहिए। तुमने उसका चेहरा देखा होता और यह जगह इसी तरह के जोको से भरी हुई है!' इसके बाद उसने बडी गदी जबान का इस्तेमाल किया। पाक्रातोव ने मुझे देख लिया और उसकी बगल मे उगली गडाई। पावेल घूमा और मुझे देखकर पीला पड गया और बिना मुझ से आख मिलाये दूसरी तरफ को चला गया। लगता है अब वह काफी दिन मेरे पास नही आयेगा। वह जानता है कि मैं गदी जबान पसन्द नही करती।"

"२७ अगस्त

"हमारी ब्यूरो की एक बन्द मीटिंग हुई थी। स्थिति काफी गभीर होती जा रही है। मैं अभी इसके बारे मे विस्तार के साथ नही लिख सकती। अकिम प्रादेशिक सम्मेलन से लौटा तो बहुत परेशान नजर आ रहा था। कल एक

और रसद की गाड़ीं उलट दी गई। सोचती हू कि अब मैं यह डायरी रखने की और कोशिश नही करूगी। यो भी बहुत बेसिलसिला है यह। मैं कोर्चागिन का इन्तजार कर रही हू। अभी उस रोज मेरी उससे मुलाकात हुई थी और उसने मुझे बतलाया कि वह और जार्की मिलकर पाच लोगो का एक कम्यून बना रहे है।"

एक रोज जब पावेल रेल के कारखाने मे काम कर रहा था, तो उसे टेलीफोन पर बुलाया गया। यह रिता थी। उस शाम वह खाली थी और उसने प्रस्ताव किया कि पैरिस कम्यून की पराजय के कारणवाले अध्याय को खतम कर डाला जाय, जिसे वे दोनो मिलकर पढ रहे थे।

उस शाम को जब पावेल यूनिवर्सिटी स्ट्रीट पर रिता के मकान के पास पहुचा तो उसने ऊपर नजर उठाई और खिड़की मे रोशनी देखी। वह दौडकर सीढियों पर चढा, हमेशा की तरह दरवाजे पर दस्तक दी और अन्दर चला गया।

वहा पलग पर, जहा किसी नये साथी को क्षण भर बैठने की भी इजाजत नही थी, वर्दी पहने एक आदमी लेटा हुआ था। मेज पर एक रिवाल्वर, किटबैग और लाल तारे वाली टोपी रखी हुई थी। रिता उस अजनबी की बगल मे उसे कसकर अपनी बाहो मे भरे बैठी हुई थी। दोनो अपनी बातचीत मे डूबे हुए थे और पावेल के अन्दर दाखिल होने पर रिता ने मुस्कराते हुए चेहरे से उसको देखा।

उस आदमी ने रिता के बाहुपाश से अपने को मुक्त किया और पलग पर से उठा।

रिता ने पावेल से हाथ मिलाते हुए कहा, "पावेल, यह है "

उस आदमी ने कसकर कोर्चागिन से हाथ मिलाते हुए रिता के वाक्य को पूरा किया, "डेविड उस्तिनोविच।"

"अचानक ही आ गया," रिता ने खुशी से हसते हुए बतलाया।

पावेल ने बहुत सर्द तरीके से इस आगन्तुक से हाथ मिलाया और उसकी आखो मे क्षोभ की चमक दिखलाई दी। उसने उस आदमी की वर्दी की आस्तीन पर चार क्रास देखे जो कि एक कम्पनी के कमाडर की पहचान थी।

रिता कुछ कहने ही वाली थी कि पावेल बीच मे बोल पडा, "मैं आपसे सिर्फ यह कहने आया था कि आज शाम को मैं घाट पर जहाज मे लकडी लादने के काम मे फमा रहूगा। और फिर आपके यह अतिथि भी आये हुए है। अच्छा तो अब मैं चलूगा, लडके नीचे खडे मेरा इन्तजार कर रहे हैं।"

और वह वैसे ही एकाएक दरवाजे मे से बाहर निकल गया जैसे अन्दर आया था। उन्होने उसको तेजी से सीढी पर से नीचे उतरते सुना। फिर बाहर का दरवाजा फटाक से बन्द हुआ और खामोशी छा गई।

"आज उसका हाल कुछ ठीक नही था। जरूर कोई बात है," रिता ने डेविड की सवाल करती हुई आखो के जवाब मे अटकते हुए कहा।

पुल के नीचे एक इजन ने गहरी सास ली और अपने जबर्दस्त फेफडो से सुनहली चिनगारियो की फुहार छोडी। चिनगारिया अजीब तरीके से नाचती हुई ऊपर को उठी और धुए मे खो गई।

पावेल रेलिंग से टिका खडा था और सिगनल की रगीन रोशनियो का जलना और बुझना एकटक होकर देख रहा था। उसने अपनी आखें सिकोडी।

"कामरेड कोर्चागिन, यह बात मेरी समझ मे नही आती कि तुम्हें इस बात से इतनी चोट क्यो लगती है कि रिता का कोई पति है ? क्या उसने तुमको कभी बतलाया कि उसका कोई पति नही है ? और अगर उसने कभी ऐसा कहा भी हो तो क्या ? तुमको यह चीज इतनी बुरी क्यो लगती है ? तुमने सोचा था कामरेड कि यह सब खालिस रूहानी दोस्ती है और कुछ नही । तुमने यह चीज कैसे होने दी ?" उसने तीखे व्यग्य के स्वर मे अपने-आपसे सवाल किया, "और अगर वह उसका पति नही हो तो ? डेविड उस्तिनोविच उसका भाई भी हो सकता है, चाचा भी हो सकता है लेकिन अगर ऐसी बात हो तो तुमने अपने गदहेपन मे उस बेचारे के साथ बडा अन्याय किया है। तुम किसी से कुछ अच्छे थोडे ही हो। यह पता लगाना तो काफी आसान है कि वह उसका भाई है या नही। मान लो कि वह उसका भाई या चाचा निकला तो अपने आज के बेहूदा बर्ताव के बाद तुम फिर कैसे रिता से आख मिला सकोगे ? नही, अब तो तुम्हें उससे मिलना बन्द करना पडेगा!"

एक इजन की सीटी ने उसके विचारो की धारा भग की।

"बहुत देर हो रही है। घर चलने का वक्त हुआ। काफी फिजूलियात हो ली।"

जिस इलाके मे रेलवे मजदूर रहते थे, उसका नाम सोलोमेका था। वही पाच नौजवानो ने एक छोटा सा कम्यून कायम किया। ये पाच थे—जार्की, पावेल, सुनहले बालो वाला खुश चेक नौजवान जिसका नाम क्लावीचेक था, रेलवे यार्ड के कोमसोमोल का मत्री निकोलाई ओकुनेव और स्तेपान आर्त्युखिन जो ब्यॉयलर सुधारने का काम करता था और आजकल रेलवे चेका के लिए काम कर रहा था।

उन्होने एक कमरा ढूढा और तीन दिन तक अपना सारा खाली वक्त उसको साफ करने, उसमे रग-रोगन करने और उसकी दीवारो की सफेदी करने मे लगाया। वे बाल्टिया लिये हुए तेजी से इतनी बार इधर-उधर आये और गये कि पडोसी लोग सोचने लगे कि घर मे आग लग गई है। उन्होने अपने लिए ओढे तैयार किये और पार्क से बटोरी हुई शहतूत की पत्तिया भर कर गद्दे तैयार किये। इस सब के बाद चौथे रोज वह कमरा, जिसकी दीवार पर पेत्रोव्स्की की एक तस्वीर और एक बडा सा नक्शा टगा था, सफाई मे चमक रहा था।

खिडकियो के बीच मे एक आलमारी थी जिसमे ऊपर तक किताबो का ढेर लगा हुआ था। दो बक्सो को दफ्ती से ढक कर उनसे कुर्सी का काम लिया जा रहा था और एक ओर बडा बक्स बर्तनो की आलमारी का काम दे रहा था। कमरे के बीचोबीच एक बडी सी बिलियर्ड की मेज थी जिसमे बस यह कमी थी कि उसमे कपडा नही लगा था। इसको कमरे के निवासी मालगोदाम मे अपने कधो पर उठा कर लाये थे। दिन को उससे मेज का काम लिया जाता था और रात को उस पर क्लावीचेक सोता था। पाचो लडके अपनी तमाम चीजें उठा लाए और व्यवहार कुशल क्लावीचेक ने कम्यून की जायदाद की फेहरिस्त बनाई। वह उस फेहरिस्त को दीवार पर टागना चाहता था, मगर दूसरो ने आपत्ति की। कमरे की हर चीज सबकी मिली-जुली सम्पत्ति घोषित कर दी गई। कमाई, राशन और बीच-बीच में घर मे आनेवाले पार्सल, सबका बराबर-बराबर बटवारा हो जाता था, निजी सम्पत्ति की बस एक चीज थी—उनके अपने-अपने हथियार। सर्वसम्मति से यह निश्चय किया गया कि कम्यून का जो सदस्य साझे की सम्पत्ति के नियम का उल्लघन करेगा या अपने साथियो के साथ विश्वासघात करेगा, उसे कम्यून से निकाल बाहर किया जायगा। ओकुनेव और क्लावीचेक ने आग्रह किया कि कम्यून से निकाले जाने के बाद अगली कार्रवाई यह होनी चाहिए कि उसे कमरे से निकाल बाहर किया जाय और यह प्रस्ताव पास हो गया।

जिले की कोमसोमोल के सभी सक्रिय सदस्य कम्यून के गृह प्रवेश की पार्टी मे आये। बगल के पडोसी से एक विशाल समोवार उधार लिया गया। चाय पार्टी मे कम्यून की सारी शकर खर्च हो गई। चाय के बाद उन्होंने कोरस गाना शुरू किया और उनकी जवानी की बुलन्द आवाजो से दीवार के पटरे हिल उठे .

सारी दुनिया भीज गई आखों के जल से,
दुख से कडवे कैसे ये दिन बीत रहे हैं
पर उगता है नव प्रभात नभ के अचल से

तम्बाकू के कारखाने की लड़की तालिया लगुतिना गाने का नेतृत्व कर रही थी। उसके सिर पर का लाल रूमाल एक ओर को खिसक गया था और उसकी आंखें, जिनकी गहराई अब तक किसी ने नहीं पाई थी, शरारत से नाच रही थीं। तालिया की हंसी बहुत ही संक्रामक थी और वह अपने अठारह सालों की रौशन ऊंचाई से दुनिया को देखती थी। अब उसकी बाह लहर की तरह ऊपर को उठी और नक्कारों की आवाज की तरह गाने की धारा बह चली

उमड़ो मेरे गीत विश्व पर छा जाओ;
विजय गर्व से उन्नत निज केतन लहराओ!
हृदय रक्त की अग्नि-शिखा में जलकर तपकर;
रहो प्रज्वलित जगती के उन्मुक्त गगन पर!

बहुत रात गये पार्टी खत्म हुई और उनकी बुलन्द जवान आवाजों की गूंज मे खामोश सड़कें जाग पड़ीं।

टेलीफोन की घंटी बजी और जार्की ने रिसीवर की तरफ हाथ बढाया।

"चुप रहो, मैं कुछ सुन नहीं पाता!" उसने शोर मचाते हुए कोमसोमोलों से, जो मंत्री के दफ्तर में भीड़ लगाये हुए थे, चिल्ला कर कहा।

हंगामा कुछ कम हो गया।

"हलो! अच्छा तुम हो। हां, अभी अभी। एजेंडे पर क्या-क्या है? ओ वही पुरानी चीज, घाट से ईंधन की लकड़ी घसीट कर लाना। क्या कहा, नहीं, उसे कहीं नहीं भेजा गया है। वह यहीं है। उससे बात करना चाहती हो? एक मिनट रुको।"

जार्की ने पावेल को बुलाया।

"कामरेड उस्तिनोविच तुमसे बात करना चाहती हैं," उसने कहा और रिसीवर पावेल के हाथ में पकड़ा दिया।

पावेल ने रिता की आवाज को कहते सुना, "मैं सोचती थी तुम शहर मे नहीं होगे। आज शाम मैं खाली हूं। तुम आ क्यों नहीं जाते? मेरा भाई चला गया है। वह इस शहर से गुजर रहा था और मुझसे मिलने चला आया। हमने एक-दूसरे को दो साल से नहीं देखा था।"

उसका भाई!

पावेल ने और कुछ नहीं सुना। उसको उस बदनसीब शाम की याद आ रही थी और अपने उस निश्चय की याद आ रही थी जो उसने उसी रात को पुल के नीचे किया था। हां, उसे आज ही शाम को रिता के पास जाना

चाहिए और इस मामले को खत्म कर देना चाहिए। प्रेम के सग पीडाए और दुश्चिन्ताए भी बहुत सी लगी रहती है। यह क्या ऐसी चीजो का वक्त है ?

उस आवाज ने पावेल के कान मे कहा, 'तुम मुझे सुन नही पा रहे हो क्या ?"

"हा, हा मैं सुन रहा हू। बहुत अच्छा। मैं ब्यूरो की मीटिंग के बाद आऊगा," कहते हुए पावेल ने रिसीवर रख दिया।

उसने रिता की आखो मे आखें डाल कर देखा और ओक की लकडी की बनी मजबूत मेज के सिरे को पकडते हुए बोला, "मैं अब शायद तुमसे मिलने न आ सकूगा।"

पावेल ने रिता की घनी बरौनियो को उसकी बात सुन कर ऊपर खिचते देखा। कागज पर उसकी पेन्सिल, जो दौड रही थी, रुक गई और खुले हुए पैड पर निश्चेष्ट खडी रही।

"क्यो ?"

"वक्त नही निकल पाता। तुम्हे तो खुद मालूम है कि हम काफी मुश्किलो से गुजर रहे हैं। मुझे अफसोस है, मगर शायद यह चीज हमे बन्द करनी ही पडेगी ।"

पावेल को लग रहा था कि उसके आखिरी शब्द कुछ बहुत दृढ न लगे होंगे।

"यह द्रविड प्राणायाम तुम क्यो कर रहे हो ?" वह भीतर ही भीतर तैश खा रहा था। "सीधे-सीधे हमला करने की हिम्मत तुममे नही है।"

प्रकट उसने कहा : "इसके अलावा मैं कई दिन से तुमसे यह कहना चाह रहा था कि तुम बात को जिस तरह से समझाती हो, उसे समझने मे मुझे कठिनाई होती है। जब हम लोग सेगल के सग पढते थे, उस वक्त हमने जो कुछ सीखा था, वह न जाने कैसे मेरे सिर मे टिक गया। मगर तुमसे जो कुछ सीखा, उसके बारे मे मैं यह बात नही कह सकता। मुझे हर बार सबक के बाद तोकारेव के पास जाना पडा है, चीज को दुबारा ठीक से समझने के लिए। मैं जानता हू कि यह मेरी ही गलती है—मेरे सिर मे बात घुसती ही नही। तुम्हे दूसरा कोई शिष्य ढूढना पडेगा, जिसमे कुछ ज्यादा बुद्धि हो।"

उसने रिता की तेज निगाहो से अपनी निगाहे फेर ली और फिर समझ-बूझ कर, साहस बटोर कर उसने कह ही डाला "इसलिए मैं तो समझता हू कि हमारा इस चीज को जारी रखना वक्त की बरबादी ही है।"

फिर वह उठा, सभाल कर पैर से कुर्सी सरकाई और रिता के झुके हुए सिर और चेहरे को देखा जो लैम्प की रोशनी मे पीला नजर आ रहा था। उसने अपनी टोपी सिर पर लगा ली।

"अच्छा, चलू कामरेड रिता। मुझे दुख है कि मैंने तुम्हारा इतना वक्त बर्बाद किया। मुझे बहुत पहले ही तुमको यह बात बतला देनी चाहिए थी। मुझसे यही गलती हुई।"

रिता ने यत्रवत अपना हाथ उसकी तरफ बढा दिया, मगर उसके इस अचानक रूखेपन से वह इतनी स्तब्ध हो गई थी कि दो-एक शब्द से ज्यादा नही बोल सकी।

"मैं तुम्हे दोष नही देती, पावेल। अगर मैं चीजो को तुम्हे ठीक से समझाने का कोई ढग नही निकाल सकी, तो दरअसल मुझे यही पुरस्कार मिलना चाहिए था।"

पावेल भारी कदमो से दरवाजे की तरफ चला। बाहर निकल कर उसने धीरे से दरवाजा बन्द किया। सीढी से नीचे उतर कर वह पल भर को रुका और सोचने लगा—अभी भी देर नहीं हुई है, जाकर बात की सफाई की जा सकती है। मगर फायदा ? ऐसा करने से क्या हासिल ? उसका उपेक्षापूर्ण जवाब पाकर फिर बाहर चले आने के लिए ? नही।

साइडिगो पर बेकार इजनो और रेल के टूटे-फूटे डिब्बो का कब्रिस्तान बढ चला। लकडी के वीरान कारखाने मे हवा लकडी के सूखे बुरादे को इधर-उधर बिखेर रही थी।

और शहर के चारो ओर जगल की झाडिया और गहरे-गहरे नालो मे ओर्लिक के गिरोह के लोग छिपे हुए थे। दिन को वे लोग आस-पास के गावों और जगली इलाको मे चुपचाप पडे रहते थे, मगर रात को धीरे से रेल की लाइनो पर निकल आते थे, बेदर्दी से उन्हे उखाडकर फेंक देते थे और अपना यह दुष्ट काम करके वापस अपनी माद मे पहुच जाते थे।

रेल की लाइनें उखड जाने से न जाने कितने इजन, लोहे के घोडे, रेलवे के बाध पर से लुढकते हुए नीचे पहुच जाते थे। और नतीजा यह होता था कि डिब्बे टूटकर चकनाचूर हो जाते, जिन्दा से लोग मलबे के नीचे पिस जाते और बेशकीमती अनाज खून और मलबे मे लिथड जाता।

यह गिरोह अचानक किसी छोटे से कस्बे पर टूट पडता और डरी हुई मुर्गिया कुडकुड करती हुई सब तरफ भागने लगती। यो ही कुछ गोलिया इधर-उधर चला दी जाती। वोलोस्त सोवियत की इमारत के सामने राइफलें थोडी देर कडकडाती और ऐसी आवाज होती जैसे सूखी झाडी के पैर के नीचे दबने से होती है और ये डाकू अपने मोटे-ताजे घोडों पर सवार गाव मे यहा से वहा दौड लगाते और जो भी रास्ते मे पड जाता उसे काट कर रख देते। वे अपने

शिकारी को इतने इतमीनान से तलवार चलाकर काटते जैसे लकडी को चीर रहे हो। गोलिया वे लोग कम ही चलाते थे क्योकि गोलियो की कमी थी।

जिस तूफानी तेजी से ये डाकू आते उसी तेजी से लौट भी जाते। डाकुओ के इस गिरोह की आखें और कान सब जगह थे। वे आखे उस छोटे से सफेद मकान की दीवारो को भेदकर, जिसमे वोलोस्त सोवियत था, अन्दर देख लेती थी क्योकि पादरी के मकान और कुलको के घरो से जगल की झाडियो तक अदृश्य सूत्र मौजूद थे। गोले-बारूद के डिब्बे, सुअरो के ताजे गोश्त के ढेर, नीले रग की कच्ची शराब की बोतलें—सब उसी रास्ते जगल पहुच जाती थी। उसी सूत्र से खबरें भी पहुच जाती थी, जो पहले छोटे ऐटमनो के कान मे फुसफुसाकर कही जाती और फिर नाना मार्गो से होकर खुद ओर्लिक के पास पहुच जाती।

इस गिरोह मे दो-तीन सौ खूनियो से ज्यादा न रहे होगे, मगर अब तक उन्हे पकडा न जा सका था। वे छोटी-छोटी कई टुकडियो मे बट जाते और फिर एक साथ दो-तीन इलाको मे अपनी कार्रवाई करते। उन सबको पकडना असभव था। पिछली रात का डाकू अगले दिन बहुत शान्तिप्रिय किसान की शकल मे दिखाई देता। वह अपने बागीचे मे काम करता होता या अपने घोडे को रातिब देता होता या अपने दरवाजे पर खडा इतमीनान से पाइप पी रहा होता और एकदम शून्य आखो से घुडसवार दस्तो को अपने पास से गुजरते हुए देखता। उस वक्त उसे देखकर कौन कह सकता था कि कल रात यही आदमी डाकू का काम कर रहा था।

अपनी रेजीमेंट लेकर अलेक्जेंडर पुजीरेव्स्की जान लगाकर इन डाकुओ के पीछे लगा हुआ था और तीनो जिलो मे उन्हे यहा से वहा खदेडता फिर रहा था। कभी-कभी उसे डाकुओ का सुराग भी मिल जाता। एक महीने बाद ओर्लिक को मजबूर होकर अपने बदमाशो को दो जिलो से हटाना पडा और अब वह बहुत छोटे से इलाके मे घिर गया था।

कस्बे की जिन्दगी बदस्तूर गति से धीमे-धीमे चली जा रही थी। शोर करती हुई भीडे वहा के पाच बाजारो मे भरी रहती थी। उनके मन मे बस दो भाव थे—कैसे ज्यादा से ज्यादा लूटें और कम से कम दें। यह वातावरण ऐसा था जिसमे तमाम तरह के ठगो और लुटेरो को अपनी योग्यता दिखलाने का अनन्त अवसर मिलता था। भीड मे सैकडो ऐसे लोग घूमते रहते थे जिनकी आखो मे ईमानदारी छोडकर बाकी सब कुछ था। जैसे मक्खिया गन्दगी के ढेर पर जमा हो जाती है, उसी तरह शहर के बुरे से बुरे आदमी यहा इकट्ठा हो गये थे और उनका एक ही उद्देश्य था नादान लोगो को ठगना। एक-दो रेल-

गाड़ियां जो उधर आतीं, उनमें से तमाम लोग बोरे लादे हुए उतरते और सीधे बाजार की ओर चल देते।

रात को बाजार उजाड़ हो जाता और जहां बैठकर दूकानदार अपनी चीजें बेचते थे, उन दूकानों की कतारें अंधेरे में डरावनी नजर आतीं।

बहुत हिम्मती आदमी ही अंधेरा हो जाने पर इस उजड़े हुए बाजार से गुजर सकता था क्योंकि एक-एक दूकान के पीछे से खतरा झांकता रहता था। अक्सर रात को गोली छूटने की आवाज सुनाई देती जैसे लोहे पर किसी ने हथौड़ा दे मारा हो, और फिर कोई आदमी अपने ही खून में लथपथ वहीं ढेर हो जाता। और जब तक कि सबसे करीब की चौकी से मुट्ठी भर सिपाही उस जगह पहुंचें-पहुंचें (उनको अकेले जाने का साहस न होता), तब तक वहां कुछ बाकी न रह जाता। उन्हें सिर्फ ऐंठी हुई लाश मिलती। खूनी भाग गये होते और उस हंगामे में बाजार के चौक के कुछ निशाचर यों गायब हो जाते, जैसे हवा का झोंका उन्हें उड़ा ले गया हो।

बाजार के ठीक सामने "ओरियन" सिनेमा था। उसके सामने की सड़क और फुटपाथ बिजली की रोशनी से जगमग करता रहता था और फाटक पर लोगों की भीड़ लगी रहती थी। हॉल में प्रेम के अति-नाटकीय दृश्य पर्दे पर दिखलाये जा रहे होते; बीच-बीच में जब फिल्म कट जाती और ऑपरेटर प्रोजेक्टर को रोक देता, तो जनता में असन्तोष-सूचक शोर मच जाता।

शहर के अन्दर और आसपास जिन्दगी हस्बेमामूल चलती नजर आती थी। पार्टी की प्रादेशिक कमिटी में भी, जो कि क्रान्तिकारी सत्ता का केन्द्र थी, पूर्ण शान्ति थी। मगर यह शान्ति सिर्फ ऊपरी थी।

शहर के अन्दर एक तूफान पक रहा था। उनमें से बहुतेरे, जो तमाम दिशाओं से आये थे और जिनके लम्बे लबादों के नीचे से उनकी फौजी राइफलें झांकती होतीं, समझ रहे थे कि यह तूफान आ रहा है। वे लोग भी इस बात को समझ रहे थे जो गल्ले के मुनाफाखोरों के भेष में रेलगाड़ियों की छतों पर बैठकर आते थे, मगर अपने बोरे सीधे बाजार में न ले जाकर अच्छी तरह से याद किये हुए पतों पर ले जाते थे।

इनको पता था। मगर मजदूरों की बस्तियों को और यहां तक कि बोल्शेविकों को भी इस आनेवाले तूफान का कुछ पता न था।

शहर के सिर्फ पांच बोल्शेविक साजिश का हाल जानते थे।

पेतल्युरा के गिरोहों को लाल फौज ने श्वेत पोलैंड में खदेड़ दिया था। उन्हीं के अवशेष वारसा के विदेशी मिशनों के साथ मिलकर इस विद्रोह में हिस्सा लेने की तैयारी कर रहे थे। पेतल्युरा की रेजीमेंटों के बचे-खुचे लोगों को इकट्ठा कर एक हमलावर दस्ता तैयार किया जा रहा था।

विद्रोहियो की केन्द्रीय कमिटी का एक सगठन शेपेतोवका मे भी था। उसमें सैंतालीस सदस्य थे जिनमे से ज्यादातर पुराने सक्रिय क्रान्ति-विरोधी लोग थे। उन्हे नगर की चेका ने उनका विश्वास करके छोड दिया था।

फादर वासिली, एन्साइन विनिक और पेतल्युरा अफसर क्रुजमेको इस सगठन के नेता थे। पादरी की लडकिया, विनिक के बाप और भाई तथा समोतिन्या नाम का एक आदमी, जो तिकडम से कार्यकारिणी के दफ्तर मे घुस गया था, जासूसी किया करते थे।

योजना यह थी कि रात को दस्ती बमो से सरहद पर के स्पेशल डिपार्टमेट पर हमला किया जाय, कैदियो को छुडा लिया जाय और अगर मुमकिन हो तो रेलवे स्टेशन पर कब्जा कर लिया जाय।

इसी बीच अफसर गुप्त रूप से शहर मे जमा किये जा रहे थे क्योकि वही विद्रोह का केन्द्र था और लुटेरो के गिरोहो को आसपास के जगलो मे भेजा जा रहा था। यहा से विश्वसनीय दलालो के जरिए रूमानिया और खुद पेतल्युरा से सम्पर्क रखा जाता था।

फियोदोर जुखराई स्पेशल डिपार्टमेट के अपने दफ्तर मे छ रात से सोया नही था। वह उन पाच बोल्शेविको मे से था जिन्हे दुश्मनो की इस साजिश के बारे मे मालूम था। उस पुराने मल्लाह जुखराई को उस शिकारी की सी अनुभूति हो रही थी जिसने अपने शिकार को घेर लिया हो और अब उस जानवर के उछलकर हमला करने का इन्तजार कर रहा हो।

शोर मचाने और दूसरे लोगो को इस खतरे की बात बताने की भी उसे हिम्मत न होती थी। खून के प्यासे इस राक्षस को मारना ही होगा। तभी, केवल तभी, शान्ति के साथ काम करना मुमकिन हो सकेगा और हर वक्त डर-डरकर हर झाडी के पीछे नही देखना होगा। मगर ऐसा नही करना चाहिए कि जानवर चौकन्ना होकर भाग जाय। जीवन-मरण के ऐसे सघर्षों मे अन्त मे सहन-शक्ति और दृढता की ही जीत होती है।

कदम उठाने की अब घडी आ गयी। शहर मे षडयन्त्रकारियो के तमाम गुप्त अड्डो मे ही कही पर बगावत की घडी भी तय हो गयी थी कल की रात।

मगर जिन पाच बोल्शेविको को इस चीज का पता था उन्होने पहले ही हमला करने का फैसला किया। उन्होने कहा नही, हमे तो आज ही रात कदम उठाना है।

उसी शाम एक वख्तरबन्द गाडी चुपके से रेलवे यार्ड मे बाहर निकली। उसके बाहर निकलते ही वडा सा फाटक उतने ही चुपके से बन्द हो गया।

कोड की भाषा मे दिये गये तार उड चले और उनकी माग के जवाब मे उन मुस्तैद और चौकन्ने आदमियो ने, जिनके हाथो मे जनतत्र की सुरक्षा सौंपी गयी थी, षडयन्त्रकारियो के अड्डो का सफाया करने के लिए फौरन कदम उठाये।

अकिम ने जार्की को टेलीफोन किया।

"सेल मीटिंग ठीक चल रही है ? बहुत अच्छा। यहा पर एक कान्फ्रेंस हो रही है, उसके लिए फौरन यहा चले आओ और पार्टी की जिला कमिटी के मंत्री को भी अपने साथ लेते आओ। ईंधन की समस्या, हमने जितनी सोची थी, उससे भी ज्यादा गभीर है। तुम्हारे यहा आ जाने पर हम लोग विस्तार से बातें करेंगे।" अकिम दृढ आवाज मे जल्दी-जल्दी बोल रहा था।

जार्की ने गुर्रा कर रिसीवर क अन्दर कहा "यह ईंधन की समस्या तो हम सबको पागल कर देगी।"

लिल्के बेतहाशा तेजी से दोनो मन्त्रियो को हेडक्वार्टर मे ड्राइव कर ले गया। दूसरी मजिल की सीढियो पर चढते हुए उन्होंने फौरन इस बात को भाप लिया कि उन्हे ईंधन की समस्या के बारे मे बात करने के लिए नही बुलाया गया है।

दफ्तर के मैनेजर की मेज पर एक हल्की मशीनगन रखी हुई थी और उसके बगल मे स्पेशल टास्क फोर्स के तोपची काम कर रहे थे। नगर की पार्टी और कोमसोमोल सगठनो से आये खामोश सन्तरियो से गलियारे भरे हुए थे। मत्री के दफ्तर मे पार्टी की प्रादेशिक कमिटी के ब्यूरो की खास जरूरी मीटिंग खतम होने वाली थी।

दरवाजे के ऊपर खिडकी मे से दो तार निकले हुए थे जो मैदानी टेलीफोनो से जुडे हुए थे। कमरे मे बातचीत की धीमी भुनभुनाहट थी। वहा अकिम, रिता और मिखाइलो मौजूद थे। रिता लाल सेना के लोगों की हेलमेट लगाये हुए थी, खाकी स्कर्ट और चमडे की जाकेट पहने थी जिसकी पेटी से एक भारी माउजर पिस्तौल झूल रहा था—यह वही वर्दी थी जो वह मोर्चे पर पहना करती थी जब वह कम्पनी की राजनीतिक शिक्षक थी।

"यह सब क्या हो रहा है ?" जार्की ने आश्चर्य से पूछा।

"अलर्ट ड्रिल, वानिया। हम लोग अभी तुम्हारे इलाके मे जा रहे हैं। पाचवें इन्फेंट्री स्कूल मे प्रैक्टिस रैली है। कोमसोमोल अपनी सेल मीटिंगो स सीधे वहा पहुचेगे। खास बात यह है कि हम लोग वहा पहुच तो जायें, मगर किसी का ध्यान हमारी ओर आकर्षित न हो।"

पुराने फौजी स्कूल का मैदान जिसमे ओक के पुराने विशाल पेड खडे थे और जिसके ठहरे हुए पानी की तलैया मे सेवार ही सेवार उगी हुई थी और जिसके चौडे-चौडे रास्तो की सफाई नही हुई थी—सब खामोशी मे डूबे थे।

मैदान के बीचोबीच एक ऊची सी सफेद दीवार के पीछे स्कूल की इमारत थी जिसमे अब लाल फौज के कमाडरो के लिए पाचवा इन्फैंट्री स्कूल था। बहुत रात बीत चुकी थी। इमारत की ऊपरी मजिल पर अधेरा था। बाहर से सब कुछ खामोश था और उधर से गुजरने वाला आदमी यही सोचता कि स्कूल के सारे लोग सो रहे हैं। मगर लोहे के फाटक खुले क्यो थे और वे दो अधेरी आकृतिया बडे-बडे मेढको की तरह वहा फाटक पर खडी क्या कर रही थी ? रेलवे इलाके के तमाम हिस्सो के लोग, जो यहा इकट्ठे हुए थे, अच्छी तरह जानते थे कि रात का अलर्ट हो जाने पर स्कूल के लोग सो नही सकते। उन्होने अपनी कोमसोमोल और पार्टी सेल की मीटिंगें उस छोटे से ऐलान के बाद फौरन छोड दी थी। वे खामोशी से चले आ रहे थे, कभी अकेले, कभी दो, मगर कभी तीन से ज्यादा नहीं और उनमे से हर एक के पास कम्युनिस्ट पार्टी या कोमसोमोल की सदस्यता का कार्ड था। उसके बिना कोई भी लोहे के फाटक मे नही घुस सकता था।

सभा भवन, जिसमे काफी बडी भीड इकट्ठी हो चुकी थी, रोशनी से जगमग कर रहा था। खिडकियो पर तम्बू बनाने मे इस्तेमाल होने वाले किरमिच के मोटे-मोटे पर्दे टाग दिये गये थे। बोल्शेविक, जो यहा बुलाये गये थे, घर की बनी सिगरेटें खामोशी से पी रहे थे और आपस मे दिल्लगी कर रहे थे कि देखो ड्रिल के लिए भी कितनी एहतियात बरती जा रही है। कोई भी यह नही महसूस कर रहा था कि यह सचमुच का अलर्ट है। लोग समझते थे कि स्पेशल ड्यूटी की टुकडियो मे अनुशासन कायम रखने के लिए यह चीज की जा रही है। मगर तपा हुआ सिपाही स्कूल के कम्पाउड मे दाखिल होते ही सच्चे अलर्ट के लक्षणो को पहचान लेता था। बहुत ही ज्यादा सावधानी बरती जा रही थी। विद्यार्थियो के कानो मे आदेश कहे जा रहे थे और उनकी प्लैटूनें बाहर कतार बनाती जा रही थी। मशीनगनें कम्पाउड के भीतर खामोशी से लाई जा रही थी और इमारत की किसी भी खिडकी से रोशनी की एक हलकी सी किरण भी बाहर झाकती नही दिखाई देती थी।

"मितियाई मामला कुछ सगीन मालूम होता है ?" पावेल कोर्चागिन ने दुबावा से पूछा जो एक खिडकी की चौखट पर एक लडकी के बगल मे बैठा था और जिसे दो दिन पहले पावेल ने जार्की के घर पर देखा था।

दुबावा ने खुशदिली से पावेल के कधे पर हाथ मारा।

"डर रहे हो, क्यो ? मगर कोई बात नही, हम तुम लोगो को लडना सिखा देंगे। तुम दोनो एक-दूसरे को नही जानते। या जानते हो ?" कहते हुए उसने उस लडकी की ओर इशारा किया। "इसका नाम 'आना' है, नाम का दूसरा हिस्सा मुझे नही मालूम, मगर इसका पद मैं जानता हू, यह आन्दोलन और प्रचार केन्द्र की इन्चार्ज है।"

वह लडकी, जिसका दुबावा ने ऐसे मजाक के ढग मे परिचय दिया था, कोर्चागिन को दिलचस्पी से देख रही थी और अपने बालो के एक गुच्छे को पीछे फेर रही थी जो उसके चमकीले गुलाबी रग के रूमाल के नीचे से खिसककर बाहर आ गया था। कोर्चागिन की आखे उसकी आखो से मिली और दो-एक क्षण के लिए दोनो मे एक मूक प्रतियोगिता सी जारी रही। बडी-बडी पलको के नीचे से उसकी चमकती हुई काली-काली आखें पावेल की आखो को चुनौती दे रही थी। पावेल ने उधर से दृष्टि हटाई और दुबावा को देखने लगा। यह महसूस करके कि शर्म के मारे उसका मुह लाल हुआ जा रहा है, उसे कुछ चिढ सी आई और मुह कुछ बन गया।

जबरिया मुस्कराते हुए उसने पूछा, "तुम मे मे कौन प्रचार-आन्दोलन का काम करता है ?"

उसी क्षण हॉल मे हलचल हुई। एक कम्पनी कमाडर कुर्सी पर चढ गया और चिल्लाया "पहली कम्पनी के लोगो, इधर आकर खडे हो जाओ ! जल्दी करो साथियो, जल्दी।

प्रादेशिक कार्यसमिति के अध्यक्ष और अकिम के साथ जुखराई अन्दर दाखिल हुआ। वे लोग अभी-अभी आये थे। हॉल के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लोगो की कतारें खडी थी।

प्रादेशिक कार्यसमिति के अध्यक्ष एक ट्रेनिंग मशीनगन पर चढ गये और उन्होने अपना हाथ उठाया।

उन्होने कहा "साथियो, आपको एक बहुत ही जरूरी और सगीन मसले के लिए यहा बुलाया गया है। इस वक्त मैं आपको जो कुछ बतलाने जा रहा हू, वह कल तक सुरक्षा के खयाल मे नही बतलाया जा सकता था। कल रात को यहा पर और उक्रेन के दूसरे शहरो मे एक क्रान्ति-विरोधी विद्रोह शुरू होने वाला है। शहर मे ह्वाइट-गार्ड अफसर भरे हुए है। लुटेरो की टुकडिया शहर के चारो तरफ जमा कर दी गयी है। इन षड्यन्त्रकारियो मे से कुछ लोग बख्तरबन्द गाडियो की टुकडी मे घुस गये हैं और वहा पर ड्राइवरो का काम कर रहे हैं। मगर चेका ने समय रहते इस साजिश का पता पा लिया है। हम सभी पार्टी और कोमसोमोल सगठनो को हथियार दे रहे है। पहली और दूसरी कम्युनिस्ट बटालियने फौजी स्कूल की टुकडियो और चेका के साथ मिलकर

काम करेंगी। फौजी स्कूल की यूनिटो ने मोर्चा लेना शुरू भी कर दिया है। अब तुम्हारी बारी है, साथियो! अपने हथियार लेकर, पन्द्रह मिनट के अन्दर-अन्दर मोर्चे पर जाने के लिए तैयार हो जाओ! कामरेड जुखराई इस फौजी कार्रवाई का नेतृत्व करेंगे। यूनिट कमाडर उनसे आदेश लेंगे। परिस्थिति कितनी गभीर है, इसके बारे मे ज्यादा जोर देना मेरे लिए जरूरी नही है। कल की बगावत को आज ही कुचल देना होगा।"

पन्द्रह मिनट बाद हथियारो से लैस बटालियन स्कूल के अहाते मे कतार बाधे खडी थी।

जुखराई ने निश्चल खडे सैनिको की कतारो पर निगाह दौडाई। उनके सामने तीन कदम पर दो आदमी चमडे की पेटी कमर मे बाधे खडे थे। एक था बटालियन कमाडर मिनिआइलो जो लोहे के कारखाने का एक मजदूर था। वह यूराल का रहनेवाला और बहुत हट्टा-कट्टा आदमी था। और उसके बगल मे खडा था कमिसार अकिम। उसके बायी तरफ पहली कम्पनी की प्लैटूने थी और उनके आगे दो कदम पर कम्पनी के कमाडर और राजनीतिक शिक्षक खडे थे। उनके पीछे कम्युनिस्ट बटालियन की खामोश कतारें खडी थी। इस बटालियन मे तीन सौ आदमी थे।

फियोदोर ने सिगनल दिया, "कार्रवाई शुरू करने का वक्त हो गया।"

वे तीन सौ आदमी उजडे हुए वीरान सडको पर मार्च करने लगे।

शहर सो रहा था।

दिकाया के सामने, लवोव्स्काया सडक पर बटालियन ने कतार तोडी। यही पर उसे अपनी कार्रवाई शुरू करनी थी।

खामोशी से, बिना कोई भी आवाज किये उन्होंने इमारतो को घेर लिया। एक दूकान की सीढी पर हेडक्वार्टर कायम किया गया।

शहर के चौक की तरफ से एक मोटर लवोव्स्काया सडक पर तेजी से इधर आ रही थी और उसकी हेडलाइटो से सामने का रास्ता चमक रहा था। बटालियन की कमाड चौकी के सामने पहुच कर वह झटके से रुक गई।

इस बार ह्यूगो लित्के अपने पिता को साथ लाया था। कमाडेंट कूद कर गाडी से बाहर आया और उसने गर्दन मोडकर अपनी लेटिश भाषा मे कुछ छोटे-छोटे जुमले अपने लडके से कहे। मोटर तेजी से आगे बढी और पलक मारते-मारते सडक के मोड पर जाकर आख से ओझल हो गई। लित्के भूत की तरह गाडी चला रहा था। उसकी आखें सडक पर चिपकी हुई थी और उसके हाथ इस तरह कस कर इस्टियरिंग ह्वील को पकडे थे जैसे वह उसका ही एक अग हो।

हाँ, आज रात लित्के के तूफानी रफ्तार से गाडी चलाने की जरूरत थी। इस वक्त तेज भगाने के लिए उसको हरगिज गार्ड हाउस में दो रात बन्द रहने की सजा न मिलेगी!

और ह्यूगो उल्का की तरह सडक पर तेजी से भागा जा रहा था।

जुलराई को, जिसे नौजवान लित्के पलक मारते शहर के एक छोर से दूसरे छोर पर पहुचा रहा था, लित्के की प्रशसा करनी ही पडी, "आज रात अगर तुमने किसी को कुचला नहीं, तो कल तुम्हे सोने की एक घडी इनाम मे मिलेगी।"

ह्यूगो बडा खुश था और बोला, "मैं तो सोचता था कि उस मोड पर इतनी तेजी से गाडी मोडने के लिए मुझे दस दिन जेल में रहना पडेगा।"

पहले वार षडयन्त्रकारियों के हेडक्वार्टर पर किये गये। थोडी ही देर मे कैदियों की बडी-बडी टोलिया और कागजात के गट्ठर स्पेशल डिपार्टमेंट के हवाले किये जा रहे थे।

दिकाया सडक पर मकान नम्बर ११ में जुबंट नाम का एक आदमी रहता था जिसने चेका को मिली हुई सूचना के अनुसार, इस व्हाइट गार्ड विद्रोह में बहुत आगे बढकर हिस्सा लिया था। उन अफसर यूनिटो की, जो पोडोल के इलाके में काम करने वाली थीं, फिहरिस्तें जुबंट के पास थी।

लित्के का पिता खुद गिरफ्तारी करने के लिए दिकाया सडक पर पहुचा। जुबंट के मकान की खिडकिया एक बागीचे में खुलती थीं, और इस बागीचे और पड़ोस के एक स्त्रियों के मठ के बीच सिर्फ एक ऊँची दीवार थी। जुबंट मकान पर नहीं था। उसके पडोसियो ने बतलाया कि सारे दिन किसी ने उसे नहीं देखा था। तलाशी ली गई और नाम तथा पतो की फिहरिस्तें और उनके साथ-साथ दस्ती बमों का एक बक्सा भी मिला। लित्के ने जुबंट को पकडने के लिए अपने आदमियों को गुप्त जगहों पर बिठलाने का हुक्म दे दिया और उसके बाद उन कागजात का मुआइना करने के लिए कमरे में थोडी देर ठहरा रहा।

फौजी स्कूल का वह नौजवान विद्यार्थी जिसे नीचे बागीचे में पहरे पर खडा किया गया था, बागीचे के उस कोने से जहा वह था, खिडकी की रोशनी को देख सकता था। वहा उसे अधेरे मे अकेले रहना अच्छा नहीं लग रहा था। कुछ डर भी लग रहा था। उसे दीवार पर निगाह रखने के लिए कहा गया था। मन को ढाढस देनेवाली वह रोशनी उसकी जगह से बहुत दूर मालूम होती थी। और उससे भी बुरी बात यह हुई कि कमबख्त चाद बादलों के पीछे छिप जाता था। रात के अधेरे में उन झाडियों में जैसे अपनी एक अलग डरावनी जिन्दगी आ जाती हो। वह नौजवान सिपाही अपनी संगीन अपने चारों ओर के अधेरे को भोंक रहा था। कुछ नही, कहीं कुछ नहीं।

"इन लोगो ने यहा मुझे क्यो खडा किया ? दीवार बहुत ऊची है, उस पर कोई चढ तो सकता नही। मैं सोचता हू कि खिडकी के पास जाकर अन्दर झाकू।" दीवार पर दुबारा निगाह दौडाते हुए वह अपने उस नम और अधेरे और सडी-गली घास और काई की बदबू से भरे हुए कोने से बाहर आया। खिडकी के पास पहुच कर उसने देखा कि उसी वक्त लित्के ने मेज पर से कागजात उठाये। उसी क्षण दीवार के ऊपर एक छायाकृति आयी। उस दीवार पर से खिडकी के पास का सन्तरी और कमरे मे अन्दर का आदमी दोनो साफ दिखाई देते थे। बिल्ली जैसी फुर्ती से वह छायाकृति पेड की एक शाख पकडकर झूली और नीचे जमीन पर कूद पडी। वह चुपके-चुपके पैर दबाकर अपने शिकार तक आई। एक वार हुआ और सन्तरी जमीन पर ढेर हो गया। जहाजियो वाली छुरी सन्तरी की गर्दन मे पूरी मूठ तक भुंकी हुई थी।

बागीचे में एक गोली की आवाज हुई जिससे इमारत के चारो ओर खडे हुए लोगो में हरकत आ गयी। उनमे से छ लोग मकान की तरफ दौडे। रात की निस्तब्धता मे उनके पैरो की आवाज जोर से सुनाई दे रही थी। लित्के मुह के बल मेज पर गिरा पडा था और उसके सिर के घाव से खून बह रहा था। वह मर चुका था। खिडकी के शीशे चकनाचूर हो गये थे। मगर कातिल को कागजात हथियाने का वक्त नही मिला था।

मठ की दीवार की तरफ और कई गोलियो की आवाजें सुनाई दी। खूनी सडक की ओर की दीवार पर चढ गया था और अब लुकियानोव मैदान के रास्ते से भाग जाने की कोशिश कर रहा था। वह भागते-भागते गोली चलाता जा रहा था। मगर एक गोली ने आकर उसका काम तमाम कर दिया।

रात भर तलाशिया चलती रही। सैकडों लोग जिनके नाम मकान कमिटियो की किताबों मे दर्ज नही थे और जिनके पास सदिग्ध कागजात और हथियार पाये गये थे, उन्हें चेका मे भेज दिया गया। वहा एक कमीशन सदिग्ध लोगो की छानबीन कर रहा था।

यहा-वहा षडयत्रकारियो ने मुकाबला करने की कोशिश की। जिलियान्स्काया स्ट्रीट के एक मकान की तलाशी लेते वक्त एन्टन लेवेदेव दो कदम नजदीक से छोडी गयी एक गोली से मारा गया।

उस रात सोलोमेका बटालियन के पाच आदमी मारे गये और चेका ने उस पक्के बोल्शेविक और जनतत्र के वफादार पहरुए जान लित्के से हाथ धोया।

मगर क्रान्ति-विरोधी ह्वाइट गार्ड विद्रोह को उभरने के पहले ही कुचल दिया गया।

उसी रात फादर वासिली, उसकी लडकियो और उनके गिरोह के दूसरे लोगो को शेपेतोमका मे गिरफ्तार कर लिया गया।

तनाव कम हो गया। मगर जल्द ही एक नया दुश्मन शहर के लिए खतरा बन गया। वह खतरा था रेलवे का बेकार हो जाना—मानो उसे लकवा मार गया हो। इसका मतलब यह था कि लोग भूख से और आनेवाले जाड़े मे सर्दी से मरते।

अब सब कुछ गल्ले और ईंधन पर निर्भर था।

११ ग्यारह

फियोदोर ने मुह से अपना छोटी डंडीवाला पाइप निकाला और कुछ सोचते हुए सतर्कता पूर्वक उगली से उसकी राख को दबाया। पाइप बुझ चुका था।

एक दर्जन सिगरेटो से निकले हुए भूरे धुए का एक घना बादल छत के नीचे और उस कुर्सी के ऊपर मडरा रहा था, जिस पर प्रादेशिक कार्यसमिति के अध्यक्ष बैठे हुए थे। कमरे के कोनो मे मेज के इर्द-गिर्द बैठे हुए लोगो के चेहरे, धुए के उस कुहासे मे धुधले नजर आ रहे थे।

अध्यक्ष के बगल मे तोफारेव आगे को झुका हुआ बैठा था। वह खीझा हुआ-सा अपनी छोटी दाढी को बार-बार नोच रहा था और जब-तब आख के कोने से उस नाटे गजे आदमी को देख लेता था जो अपनी बुलन्द आवाज मे बराबर बोलता चला जा रहा था जैसे उसकी बात का कोई अन्त ही न हो। मगर उसकी बात खाली अडे की तरह बेमतलब और खोखली थी।

अकिम ने उस बूढे मजदूर की आख के भाव को भापा और उसे गाव मे अपने बचपन के दिनो मे देखे हुए उस मुरगे की याद हो आयी जिसकी आखो मे भी अपने दुश्मन पर हमला करने के पहले यही भाव होता था।

पार्टी की प्रादेशिक कमिटी की बैठक को एक घटे से ज्यादा हो गया था। वह गजा आदमी रेलवे की ईंधन कमिटी का अध्यक्ष था।

अपने सामने पडे हुए कागजात के ढेर मे अपनी सुडुक उगलिया दौडाता हुआ गजा आदमी बोलता चला जा रहा था

" ऐसी हालतो मे प्रादेशिक कमिटी और रेलवे की प्रबध समिति के फैसले को पूरा करना, साफ ही बिलकुल नामुमकिन है। मैं फिर अपनी बात को दुहराता हू कि अब मे एक महीने बाद भी हम चार सौ क्यूबिक मीटर से ज्यादा ईंधन नही दे सकेंगे। जहा तक दस लाख अस्सी हजार क्यूबिक मीटर

की माग की बात है, वह तो सरासर " वक्ता ठीक शब्द के लिए अटका, "सरासर.. खयाली पुलाव है।" उसने अपनी बात खत्म की और उसका छोटा-सा मुह कुछ इस भाव से लटक गया मानो उसे चोट लगी हो।

बडी देर तक खामोशी रही।

फियोदोर ने नाखून से अपने पाइप को खोदा और उसकी राख को गिरा दिया। आखिरकार तोकारेव ने खामोशी तोडी।

"फिजूल बकवास करने से कोई फायदा नही," उसने अपनी गूजती हुई भारी आवाज मे शुरू किया, "रेलवे की ईंधन कमिटी के पास ईंधन नही है, कभी नही था और आगे भी होने की उसे उम्मीद नही. ठीक ?"

गजे आदमी ने अपना कधा उचकाया।

"माफ कीजिए कामरेड, हमने काफी ईंधन इकट्ठा किया था लेकिन यातायात के साधनो की कमी के कारण .." उसने अपना थूक निगला और अपनी चमकती हुई खोपडी को एक चारखाने रूमाल से पोछा। उसने अपने रूमाल को जेब मे डालने की कई बार बेकार कोशिश की और आखिरकार परेशान होकर और घबराकर उसे अपने पोर्टफोलियो के नीचे घुसा दिया।

"आखिर आपने ईंधन की सप्लाई के सिलसिले मे क्या किया ? उन बडे-बडे विशेषज्ञो को जिनका षडयन्त्र मे कुछ हाथ था, गिरफ्तार हुए भी तो कई रोज हो गये," देनेको ने कोने की अपनी जगह से कहा।

वह गजा आदमी उसकी ओर मुडा और बोला, "मैंने रेलवे के प्रबध-कर्ताओ को तीन बार लिखा कि जब तक हमे यातायात की उचित सुविधाए नही मिलती, कुछ भी करना असभव ।"

तोकारेव ने उसको बीच मे ही टोका, "हम इस बात को कई बार सुन चुके हैं," उसने खुश्क आवाज मे कहा और उस गजे आदमी को शत्रुता की आखो से देखा। "आप क्या हम लोगो को बिल्कुल बेवकूफ समझते है ?"

इन शब्दो को सुनकर तो जैसे गजे आदमी की रीढ की हड्डी मे एक सुरसुरी दौड गयी।

उसने धीमी आवाज मे जवाब दिया, "क्रान्ति के दुश्मनो की हरकतो के लिए मैं जवाबदेही नही ले सकता।"

"मगर आपको पता था या नही कि लकडी रेलवे लाइन से बहुत दूर काटकर गिरायी जा रही है ?"

"मैंने इस चीज के बारे मे सुना था, मगर मैं अपने बडे अफसरो का ध्यान ऐसी गडबडियो की तरफ नही दिला सकता था, क्योकि वे मेरे क्षेत्र से बाहर हो रही थी।"

"इस काम के लिए तुम्हारे पास कितने आदमी हैं ?" ट्रेड यूनियन काउंसिल के अध्यक्ष ने पूछा।

"करीब दो सौ," गंजे आदमी ने जवाब दिया।

"इसका मतलब है, हर हरामखोर के पीछे एक साल में एक क्यूबिक मीटर !" तोकारेव ने साप की तरह फुफकारते हुए कहा।

"रेलवे की ईंधन कमिटी को खास राशन दिया जाता है। उन्हे वह खाना दिया जाता है जो मजदूरो को मिलना चाहिए और जरा देखिए कि आप काम क्या कर रहे है ? वह दो गाडी आटा जो आपको मजदूरो के लिए मिला था, क्या हुआ उसका ?" ट्रेड यूनियन के अध्यक्ष ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा।

इसी तरह के तेज-तीखे सवाल हर तरफ से उस गंजे आदमी पर बरस रहे थे और वह उनका जवाब उसी घबराये हुए अन्दाज मे दे रहा था, जिस अन्दाज मे कि कर्ज में डूबा हुआ कोई आदमी तंग करने वाले लेनदारों से अपना पीछा छुडाने की कोशिश करता है। सीधा-सीधा जवाब देने से बचने के लिए वह अपने आपको बहुत तोड-मरोड रहा था, मगर उसकी घबराई हुई आखें इधर-उधर दौड रही थी। उसे खतरा दिखाई दे रहा था और उसकी कायर आत्मा मे सिर्फ एक चीज की चाह थी कैसे जल्द से जल्द यहा से भाग जाय और जाकर अपने आरामदेह घोसले मे मुह छुपा ले और इतमीनान से खाना खाये और अपनी बीबी से, जो अब भी जवान थी और जो शायद इस वक्त पोल दी काक का उपन्यास लिए उसमे रम रही होगी, अपना जी बहलाये।

उस गंजे आदमी के जवाबो को ध्यान से सुनते हुए फियोदोर ने अपनी नोटबुक मे जल्दी-जल्दी लिखा 'मैं समझता हू कि इस आदमी की ठीक से जाच होनी चाहिए। यह सिर्फ अयोग्यता की बात नही है, बल्कि उससे कुछ ज्यादा गहरा मामला है। मुझे इसके बारे मे एक दो बातें मालूम हैं बहस को बन्द करो और इस आदमी को जाने दो ताकि हम लोग काम की बातें कर सकें।"

अध्यक्ष ने नोट पढा और फियोदोर को देखकर सिर हिलाया।

जुखराई उठा और किसी से टेलीफोन पर बात करने के लिए गलियारे मे निकल गया। वह लौटकर आया तो अध्यक्ष प्रस्ताव पढ रहे थे

" हम प्रस्ताव करते हैं कि रेलवे ईंधन कमिटी की प्रबंध समिति को, काम को जान-बूझ कर बिगाडने के जुर्म मे, तोड दिया जाय और ईंधन के इस सारे मामले को छानबीन के लिए अधिकारियो के हाथ मे दे दिया जाय।"

उस गजे आदमी को इससे भी बडी सजा पाने का डर था। यह सही है कि तोड-फोड के जुर्म मे पद से अलग किये जाने का मतलब होगा कि समग्र रूप से उसकी विश्वसनीयता के बारे मे भी सवाल उठेगा। मगर वह छोटी बात है। जहा तक उस बोयार्का वाले मामले की बात है, उसकी उसे कोई परेशानी नही थी क्योकि वह उसका कोई इलाका नही था। उसने अपने मन मे कहा, "मगर बहुत बाल-बाल बचे ! मैंने तो समझा था कि उन्होने सचमुच मेरे बारे मे कोई बात खोद निकाली ।"

अब प्राय आश्वस्त होकर उसने अपने कागजात को पोर्टफोलियो मे रखते हुए कहा, "स्पष्ट ही मैं एक गैर-पार्टी विशेषज्ञ हू और आप जितना चाहे मेरा अविश्वास कर सकते हैं। मगर मेरा अन्त करण साफ है। अगर मैं वह सब काम नही कर सका जो मुझे करना चाहिए था, तो इसकी वजह यही थी कि ऐसा करना नामुमकिन था।"

किसी ने कोई टिप्पणी नही की। वह गजा आदमी कमरे से बाहर निकल गया, जल्दी-जल्दी सीढियो से नीचे उतरा और चैन की सास लेते हुए उसने बाहर सडक पर खुलनेवाला दरवाजा खोला।

"आपका शुभनाम, महाशय जी ?" फौजी कोट पहने एक आदमी ने उससे पूछा।

डूबते हुए दिल से उस गजे आदमी ने हकलाते हुए जवाब दिया, "चेर विन्स्की . ।"

इस बाहरी आदमी के हटते ही ऊपर तेरह लोग बडी सी कान्फ्रेंस टेबिल पर एक-दूसरे के और करीब सरक आये।

जुखराई ने खुले हुए नक्शे पर उगली गडाते हुए कहा, "देखो, यह बोयार्का स्टेशन है। यहा से पाच मील पर पेड गिराये जा रहे है। इस जगह पर बीस लाख दस हजार क्यूबिक मीटर लकडी का ढेर लगा है। एक पूरी फौज ने इस लकडी को जमा करने के लिए आठ महीने तक दिन-रात काम किया। और इस सबका नतीजा ? गद्दारी। रेलवे के लिए और शहर के लिए ईंधन नही है। इस तमाम लकडी को पाच मील दूर स्टेशन तक ढोने के लिए पाच हजार गाडिया लगेंगी और एक महीना लगेगा—वह भी तब जब वे दिन मे दो बार खेपा लगायें। वहा से सबसे पास जो गाव है वह दस मील दूर है। और इतना ही नही, ओर्लिक और उसके गिरोह के लोग इसी इलाके मे घूम रहे हैं। तुम समझते हो इसका क्या मतलब है ? देखो, योजना के अनुसार पेड गिराने की शुरुआत ठीक उस जगह से होनी चाहिए थी और वहा से फिर स्टेशन की तरफ बढना चाहिए था और उन बदमाशो ने किया यह कि उलटी तरफ बढते हुए वे लोग घने जगल मे उसे ले गये। ऐसा करने में उनका उद्देश्य

यही था कि हम लोग किसी तरह इस ईंधन को रेलवे लाइन तक ढोकर न ला सकें। और उनका खयाल कुछ गलत नही था। हमे इस काम के लिए एक सौ गाड़िया भी न मिल सकी। यह बड़ा कमीना वार उन्होंने हमारे ऊपर किया है। उनकी बगावत भी इससे ज्यादा खतरनाक नही थी।"

जुखराई की बन्द मुट्ठी जोर से नक्शे के ट्रेसिंग पेपर पर गिरी। उन तेरहो लोगो ने परिस्थिति के उन और भी भयानक पहलुओ को समझ लिया जिनका उल्लेख जुखराई ने नही किया था। जाड़ा आ रहा था। उन्होंने अपनी मन की आखो से अस्पतालो, स्कूलो, दफ्तरो और लाखो लोगो को जाड़े-पाले की सर्द गिरफ्त मे पड़ते हुए देखा। उनकी आखो के आगे नाच गया कि कैसे रेलवे स्टेशनो पर भीड़ लगी है और इस तमाम भीड़ को ले आने के लिए हफ्ते मे सिर्फ एक गाड़ी है।

हर आदमी इस गभीर परिस्थिति पर विचार कर रहा था और कमरे मे गहरी खामोशी थी।

आखिरकार फियोदोर ने अपनी मुट्ठी ढीली की और कहा

"साथियो, बचत की अब सिर्फ एक राह है। हमे तीन महीने के अन्दर-अन्दर स्टेशन से जगल तक, जहा लकड़ी कटी पड़ी है, पाच मील लम्बी छोटी रेलवे लाइन बनानी है। जहा वह इलाका शुरू होता है, वहा तक पहुचने के लिए रेलवे लाइन का पहला हिस्सा छ हफ्ते के अन्दर तैयार हो जाना चाहिए। मैं पिछले एक हफ्ते से इस चीज के बारे मे सोच रहा हू और ताल-मेल बैठा रहा हू।" जुखराई का गला सूख रहा था और उसकी आवाज भर्रा रही थी, "इसके लिए हमे तीन सौ पचास मजदूरो और दो इजीनियरो की जरूरत होगी। पुश्चावोदित्सा मे काफी पटरिया और सात इजन है। कोमसोमोलो ने मालगोदामो मे से उन्हे ढूढ निकाला है। लड़ाई से पहले पुश्चावोदित्सा से शहर तक छोटी रेलवे लाइन बिछाने की योजना थी। मुश्किल यह है कि बोयार्का मे मजदूरो के रहने के लिए जगह नही है, वह जगह बिलकुल खडहर हो रही है। हमे हर बार पन्द्रह-पन्द्रह दिन के लिए छोटी-छोटी टोलियो मे लोगो को भेजना होगा। उससे ज्यादा वे लोग वहा नही टिक सकेंगे। कोमसो-मोलो को वहा भेजना ठीक होगा क्या, अकिम ?" और जवाब का इतजार किये बगैर उसने अपनी बात जारी रखी, "कोमसोमोल सगठन अपने ज्यादा से ज्यादा सदस्यो को उस जगह पहुचायेगा। शुरुआत सोलोमेका के सगठन से होगी। और कुछ लोग शहर के भी रहेंगे। काम मुश्किल है, बहुत मुश्किल, लेकिन मैं समझता हू कि अगर इन लड़को को यह बतला दिया जाय कि दाव पर क्या चीज लगी हुई है और हालत कितनी सगीन है, तो यकीनी वे लोग इस काम को पूरा करेंगे।"

रेलवे के चीफ ने सन्देह से अपना सिर हिलाया ।

"मैं समझता हू यह कोशिश बेकार है । ऐसी हालत मे जब कि पतझड की बारिश शुरू होनेवाली है और पाले के दिन आ रहे है, जगल मे पाच मील लम्बी रेलवे लाइन बिछाना " उसने थके हुए स्वर मे कहना शुरू किया । मगर जुखराई ने उसकी बात बीच मे ही काट दी ।

"आन्द्रेई वासीलिएविच, आपको ईंधन के मसले पर और ज्यादा ध्यान देना चाहिए था । यह लाइन तो बनानी ही है, और हम लोग उसे बना कर रहेंगे । यह तो होगा नही कि हम लोग हाथ समेटे बैठे रहे और ठिठुर कर मर जाये । आप क्या यह चाहते है ?"

रेलगाडी पर औजारो के आखिरी बक्से लाद दिये गये । रेलगाडी चलाने वाले अपनी-अपनी जगहो पर पहुच गये । हल्की-सी बूदाबादी हो रही थी । पानी की छोटी-छोटी पारदर्शक बूदे रिता के चमकते हुए चमडे के जाकट पर फिसल रही थी ।

रिता ने बडी आजिजी से तोकारेव मे हाथ मिलाया और धीमे से कहा, "हमारी शुभकामनाए आपके साथ हैं ।"

उस बुड्ढे ने अपनी घनी-घनी सफेद बरौनियो के नीचे से रिता को प्यार से देखा ।

"हा, अच्छी-खासी मुसीबत मे डाल दिया उन्होने हमे, खुदा गारत करे उन लोगो को," उसने अपने ही विचारो का जवाब देते हुए भारी आवाज मे कहा, "तुम लोग जो यहा पर हो, जरा खयाल रखना ताकि वहा पर अगर कोई अडचन हो तो तुम लोग जहा जरूरत हो, दबाव डाल सको । यहा पर ये सब जो नकारे इकट्ठा है, बगैर नौकरशाही के कुछ कर-धर नही सकते । अच्छा बेटी, अब मैं चलू ।"

उस बुड्ढे आदमी ने अपनी जाकट के बटन लगाये । ठीक चलते वक्त उससे रिता ने यो ही पूछा, "कोर्चागिन नही जा रहा है क्या ? मैने इन लडको मे उसको देखा नही ।"

"नही, वह और जॉब-सुपरिटेंडेंट कल ही ट्राली से वहा चले गये, हम लोगो के आने की तैयारी करने के लिए ।"

उसी वक्त जार्की, दुबावा और अपने कधो पर लापरवाही से अपनी जाकट डाले और अपनी पतली-पतली उगलियो मे एक सिगरेट दबाये आना बोर्हार्ट प्लेटफार्म पर जल्दी-जल्दी उनकी तरफ आये ।

औरो के आने मे पहले रिता को तोकारेव से बस एक और सवाल करने का वक्त मिला।

"कोर्चागिन के साथ आपकी पढाई कैसी चल रही है।"

बूढे ने आश्चर्य से रिता की ओर देखा।

"कैसी पढाई ? वह लडका तो तुम्हारी निगरानी मे है न ? उसने मुझे तुम्हारे बारे मे बहुत-सी बातें बतलाई हैं। तुमको तो वह न जाने क्या समझता है, तुम्हारी तारीफ के पुल बाधा करता है।"

रिता के चेहरे से सन्देह झलक रहा था, "कामरेड तोकारेव, क्या आप ठीक कह रहे हैं ? क्या वह मेरे साथ सबक लेने के बाद चीज को और सफाई से समझने के लिए आपके पास हमेशा नही जाया करता था ?"

बुड्ढा जोर से हस पडा और बोला, "मेरे पास ? मुझसे समझने के लिए तो कभी उसकी परछाई भी नही आई।"

इजन ने सीटी दी। क्लावीचेक एक डब्बे में से चिल्लाया

"ओ कामरेड उस्तिनोविच, हमारे बुढऊ को हमे वापस दे दो। उनके बिना हम लोग क्या करेंगे ?"

वह चेक नौजवान और भी कुछ कहनेवाला था। मगर बाद मे आनेवाले उन तीन लोगों को देख कर रुक गया। क्षण भर को उसने आना की आखों के चिन्तित भाव को देखा, फिर दिल मसोसकर दुबावा से अलग होते समय आना के चेहरे पर छायी मुस्कान को देखा और तेजी से खिडकी पर से हट गया।

पतझड की बारिश मुह पर तमाचा-सा मार रही थी। सीसे के रग के और नमी से भारी, झुके हुए बादल धीरे-धीरे उडते चले जा रहे थे। यह पतझड का अन्त था और चादी के रग की पत्तिया तमाम झड गई थी। और पुराने पेड ठठरियो की तरह और सिर झुकाये खडे थे और उनके झुर्रीदार तने बादामी रग की काई से ढके हुए थे। निर्मम पतझड ने उनके भव्य परिधान लूट लिये थे और वे नगे और दयनीय खडे थे।

जगल के बीचोबीच स्टेशन की छोटी-सी इमारत अकेली खडी थी। ताजी खोदी हुई मिट्टी की एक पट्टी माल लादने के प्लेटफार्म से जगल तक चली गई थी। इस पट्टी के चारो तरफ चीटियो की तरह आदमियो के झुड खडे थे।

पैर के नीचे दबने पर मिट्टी का वह कीचड बहुत बुरा मालूम होता था। बाध के पास, जहा आदमी बेतहाशा मिट्टी खोदे जा रहे थे, फावडो और कुदालों की आवाज सुनाई दे रही थी।

बारिश जैसे किसी बडी बारीक चलनी मे से होकर गिर रही थी और पानी की ठडी बर्फीली बूदें लोगो के कपडो मे घुस रही थी। इस बात का डर था कि बारिश उनकी मेहनत के सारे फलो को, उनके काम को बहा ले आयेगी, क्योकि बाघ पर की मिट्टी पानी मे भीग कर धसकती जा रही थी।

काम करनेवाले ऊपर से नीचे तक पानी मे भीगे हुए थे। उनके कपडे इतने ठडे थे कि सर्दी मालूम होती थी और इसी तरह वे लोग अधेरा हो जाने के भी बहुत बाद तक काम करते रहते थे।

और इस तरह हर रोज खुदी हुई जमीन की यह पट्टी जगल की तरफ बराबर बढती जा रही थी।

स्टेशन के पास ही एक डरावना-सा ककाल खडा था जो कभी ईंट की एक इमारत थी। हर चीज जो हटाई जा सकती थी, उखाडी जा सकती थी या गोले से उडाई जा सकती थी, उसे लुटेरे कभी के ले जा चुके थे। खिडकियो और दरवाजो की जगह बडे-बडे सूराख थे और जहा कभी अगीठी के दरवाजे थे, वहा अब काले दाग थे। टूटे-फूटे छप्पर के सूराखो के बीच से छप्पर मे लगी हुई शहतीरें ककाल की पसलिया जैसी नजर आती थी।

सिर्फ चार बडे कमरो का सीमेंट का फर्श अभी तक साबूत था। रात को चार सौ आदमी अपने गीले और कीचड मे लिथडे हुए कपडे पहने इसी फर्श पर सोते थे। अपने कपडो को जब वे दरवाजे पर गारते तो उसमे से कीचड मिला पानी निकलता। और वे लोग बारिश और दलदली मिट्टी पर हजार लानतें भेजते। वे लोग सीमेंट की फर्श पर, जिस पर पुआल की एक पतली सी चादर भर बिछी हुई थी, एक-दूसरे से सटे हुए कई कतारो मे सोते थे, सटे हुए ताकि उन्हे उतनी ठड न मालूम हो। उनके कपडो से भाप उठती थी मगर कपडे सूखते न थे। खिडकी के नगे चौखटो पर बोरे कील से जड दिये गये थे। उन बोरो में से होकर बारिश का पानी अन्दर आता था और फर्श पर टपकता था। छप्पर मे लोहे के जो बचे-खुचे टुकडे थे, उन पर बारिश का पानी गिरता था तो जोरो से तडतड की आवाज होती थी और दरवाजे की बडी-बडी दरारो मे से अन्दर आती हुई हवा साय-साय करती थी।

सवेरे उन्होंने उस खडहर बारक मे, जो रसोईघर का काम देती थी, चाय पी और काम पर चले गये। रात के खाने मे रोज-रोज वही उबली हुई मसूर खाते-खाते उनकी तबीयत उकता गई थी। उसके अलावा उन्हे कोयले की तरह काली तीन पाव रोटिया भी मिलती थी।

इससे ज्यादा देने की सामर्थ्य शहर मे न थी।

जॉब-सुपरिटेंडेंट वालेरियन निकोदिमोविच पतोश्किन, जो एक लम्बा, दुबला-पतला बूढा आदमी था और जिसके मुह पर दो गहरी रेखाए थीं, और

टेकनीशियन वाकुलेंको, जो एक दोहरे बदन का, गवार से चेहरे का और भद्दी मोटी नाक का आदमी था— ये दोनो स्टेशन मास्टर के घर पर रहते थे।

तोकारेव स्टेशन के चेका मे काम करनेवाले खोलिआवा की कोठरी मे रहता था। खोलिआवा नाटा सा तेज-मिजाज आदमी था।

ये लोग बडी हिम्मत, सब्र और धीरज से तमाम कठिनाइया झेल रहे थे और रेल का बाध हर रोज जगल की तरफ बढता जा रहा था।

यह सच है कि कुछ लोग भाग भी गये थे पहले नौ लोग और उसके कुछ रोज बाद और पाच लोग।

पहली बडी दुर्घटना काम शुरू होने के एक हफ्ते बाद हुई जब कि रात की गाडी मे रोटी की सप्लाई नही आई।

दुबावा ने तोकारेव को जगाया और उसे यह खबर दी। पार्टी ग्रुप के मत्री ने बिस्तर पर बैठे-बैठे अपनी घने बालो वाली टागे झुलाई और बगल को जोर-जोर मे खुजलाने लगा।

"तमाशा अब शुरु हो रहा है!" उसने भारी आवाज मे कहा और जल्दी-जल्दी कपडे पहनने लगा।

खोलिआवा अपनी छोटी-छोटी टागे लिए लुढकता हुआ अन्दर आया।

"जरा टेलीफोन पर जाकर स्पेशल डिपार्टमेंट को तो बुला लो," तोकारेव ने उसको आदेश दिया और दुबावा की तरफ मुडते हुए उसमे कहा, "और देखो किसी मे इस चीज के बारे मे एक लफ्ज मत कहना।"

रेलवे के टेलीफोन ऑपरेटरो के साथ पूरा एक घटा झगडा करने के बाद कही जाकर अदम्य खोलिआवा को स्पेशल डिपार्टमेंट का उप-प्रधान जुखराई फोन पर मिला और इस बीच पूरे वक्त तोकारेव पास ही खडा बेचैनी से छटपटाता रहा।

"क्या कहा! रोटी नही पहुची? मैं अभी पता लगाता हू कि उसके लिए कौन जिम्मेदार है!" जुखराई की आवाज टेलीफोन पर सुनाई दी और उस आवाज मे एक गभीर गूज थी।

"हम अपने आदमियो को कल खाने को क्या देंगे?" तोकारेव ने गुस्से से चिल्लाकर कहा।

इसके बाद बडी देर तक खामोशी रही। स्पष्ट ही जुखराई कोई तदबीर सोच रहा था।

आखिरकार उसने कहा, "तुम्हें आज रात को ही रोटी मिलेगी। मैं लिटके को गाडी के साथ भेजूगा। उसे रास्ता मालूम है। सवेरे तक तुम्हे रोटी जरूर मिल जायगी।"

बड़े सवेरे कीचड मे सनी हुई एक मोटर रोटी के बोरो से लदी हुई स्टेशन पर आई। लित्के थका हुआ मोटर मे से बाहर निकला। रात भर मोटर चलाने के कारण नींद और थकान से लित्के का चेहरा खड़िये जैसा हो रहा था।

रेलवे लाइन पर काम करना, बराबर बढती जा रही कठिनाइयो के खिलाफ एक अविराम सघर्ष था। रेलवे के प्रबधको ने कहा कि उनके पास रेल के स्लीपर नही हैं। शहर के अधिकारियो के पास कोई जरिया नही था कि वे रेल की पटरियो और इजनो को वहा पर ले जा सकते, जहा पर काम लगा हुआ था। और बाद को मालूम हुआ कि खुद इजनो को भी काफी मरम्मत की जरूरत है। पहली टोली की जगह लेने के लिए नये मजदूर नही आ रहे थे और पहली टोली ने अपने हिस्से का काम कर लिया था और अब वे इतनी बुरी तरह थक चुके थे कि उनको और रोक रखने का सवाल ही पैदा नही होता था।

इस परिस्थिति पर विचार करने के लिए पार्टी के पुराने और आगे बढे हुए मेम्बर उस खडहर शेड मे मिले, जिसमे बस तेल की ढिबरी का मद्धिम प्रकाश था।

उसके अगले दिन सवेरे तोकारेव, दुबावा और क्लावीचेक शहर गये। इजनो की मरम्मत और रेल की पटरिया लाने के काम को तेज करने की गरज से वे छ आदमियो को अपने साथ लेते गये। क्लावीचेक को, यो जिसका पेशा केक-बिस्कुट बनाना था, इस्पेक्टर बनाकर सप्लाई विभाग मे भेजा गया और बाकी लोग पुश्चावोदित्सा चले गये।

उधर उस जगह, जहा काम लगा हुआ था, बारिश थमने का नाम ही न लेती थी।

पावेल कोर्चागिन ने जोर लगाकर चिपचिपे कीचड मे से अपना पैर खीच कर निकाला। उसे अपने पैरो मे जोर से सर्दी मालूम हुई जिससे उसने समझा कि उसके जूते का घिसा हुआ तल्ला आखिरकार अलग हो ही गया। जबसे पावेल यहा काम पर आया था, उसे अपने फटे जूतो के कारण सख्त तकलीफ होती थी। वे कभी सूखे न रहते और उनमे कीचड भर जाती और वह चलता तो कीचड पिच्च-पिच्च करती। अब एक तला बिल्कुल चला गया था और बर्फ की तरह ठडा कीचड उसके नगे पैरो को जैसे छुरी से काटता जान पडता। पावेल ने तल्ले को कीचड मे से निकाला और बहुत मायूसी से उसको देखा और अपनी कसम को भूलकर उसने मुह से उसके लिए गाली भी निकाली। अब उसका एक पैर बिलकुल नगा था और इस तरह वह कैसे काम कर सकता

था। लिहाजा वह मचकता हुआ बारक मे आया, रसोईघर के पास बैठ गया, पैर मे लिपटा हुआ कीचड से सना कपडा अलग किया और सर्दी से सुन्न अपने पैरो को सेंकने के लिए आग की तरफ बढाया।

लाइनमैन की बीवी, जो रसोइये के सहायक के रूप मे काम करती थी और जिसका नाम ओदार्का था, रसोईघर की मेज पर चुकन्दर काटने मे मशगूल थी। यह अच्छे डीलडौल की औरत थी। अभी जवानी उससे रुखसत नही हुई थी। उसके कधे बहुत चौडे, करीब-करीब मर्दों जैसे थे, वक्ष भरा-पूरा था, और नितम्ब चौडे और भारी थे। वह बडे जोश से छुरी चला रही थी और उसकी फुर्तीली उगलियो तले कटी हुई सब्जियो का एक पहाड तेजी मे ऊचा होता जा रहा था।

ओदार्का ने लापरवाही से पावेल को देखा और डपट कर बोली

"अगर खाने की तलाश मे तुम यहा मडरा रहे हो, तो मैं तुम्हे बता दू कि अभी देर है। समझे ? काम छोडकर इस तरह भागे चले आ रहे हो, तुम्हे अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए ! अगीठी से अपने पैर हटा लो। यह रसोईघर है, कोई नहानघर तो है नही !"

उसी वक्त रसोइया अन्दर आया।

"मेरा यह जूता चिथडे-चिथडे हो गया है," पावेल ने रसोईघर मे अपनी उस असमय उपस्थिति की सफाई देते हुए कहा।

अधेड रसोइये ने पावेल के टूटे हुए जूते को देखा और ओदार्का की तरफ सिर हिलाकर इशारा करते हुए बोला, "इसका आदमी, मुमकिन है, तुम्हारे जूतो की मरम्मत कर सके, उसे मोची का काम थोडा-बहुत आता है। इनका इन्तजाम करो वरना परेशानी मे पडोगे—जूतो के बगैर तुम्हारा काम चलने से रहा।"

ओदार्का ने यह सुना तो दुबारा पावेल को देखा और तब उसने महसूस किया कि पावेल के बारे मे फैसला करने मे उसने जल्दबाजी की थी।

उसने अपनी गलती मानते हुए कहा, "मैंने तुम्हे कोई आवारा समझा था।"

पावेल मुस्कराया, जैसे यह कह रहा हो कि कोई बात नही, मुझे बुरा नही लगा। ओदार्का ने विशेषज्ञ की आखो से जूते का मुआइना किया और फिर बोली, "इसमे थेगडे लगाने की कोशिश बेकार है। मगर मैं एक बात कर सकती हू। हमारे यहा घर पर एक पुराना बरसाती बूट पडा हुआ है, मैं उसे लाकर तुम्हे दे सकती हू और तुम उसे अपने जूतो के ऊपर से पहन लेना। तुम्हारे पैर तो कम से कम बचे रहेंगे। इस तरह तुम थोडे ही घूम सकते

हो, मर जाओगे ! अब पाला पडना शुरू होने ही वाला है, जिस दिन भी शुरू हो जाय !"

और ओदार्का ने, जिसके मन मे पावेल के लिए अब सहानुभूति ही सहानुभूति थी, अपनी छुरी रख दी और तेजी से बाहर निकल गई और थोडी ही देर बाद एक बडा सा बरसाती बूट और मजबूत कपडे की एक पट्टी लेकर लौट आई ।

पावेल के पैर अब सूखे हुए और गर्म थे। उसने उस मोटे कपडे को अपने पावो मे लपेटते और पावो को बरसाती बूट मे डालते हुए ओदार्का को कृतज्ञ भाव से देखा ।

तोकारेव गुस्से से उबलता हुआ शहर से लौटा। उसने आगे बढे हुए कम्युनिस्टो की एक मीटिंग खोलिआवा की कोठरी मे बुलाई और उन्हे यह बुरी खबर सुनाई। वह बोला

"यहा से वहा तक अडचनें ही अडचनें है। जहा भी जाओ, पहिये घमते तो नजर आते है मगर पहुचते कही नही। तमाम क्रान्ति के दुश्मन ह्वाइट लोग ही यहा से वहा तक भरे हुए हैं और लगता है कि हमारी जिन्दगी मे तो उनका खातमा होगा नही। मैं तुमको बतलाता हू लडको कि लक्षण अच्छे नही हैं। अभी तक हमारी जगह लेने वाले लोग कही नजर नही आते और यह भी पता नही कि आयेंगे भी तो कितने आयेंगे। पाला गिरना शुरू होने ही वाला है और उसके पहले चाहे जैसे हो, हमे दलदल के पार हो जाना है क्योंकि जमीन जब बर्फ मे जम जायगी तो फिर कुछ करते-धरते न बनेगा। लिहाजा जब तक कि वे लोग वहा गडबड पैदा करने वालो की अक्ल ठीक कर रहे है, तब तक हमको यहा अपने काम की रफ्तार दुगनी कर देनी चाहिए। वह लाइन हमे बनानी ही है और उसे हम बनाकर रहेंगे चाहे हम मर ही क्यो न जायें। अगर हम ऐसा नही कर सकते तो हम बोल्शेविक नही, मिट्टी के लोदे होगे।" तोकारेव की फटी हुई भारी आवाज मे इस्पात की सी गूज थी और उसकी घनी बरौनियो के नीचे उसकी आखे पक्के निश्चय से चमक रही थी।

"आज हम लोग एक बन्द मीटिंग करेंगे और यह खबर अपने पार्टी मेम्बरो को दे देंगे और कल से हम सब काम पर जुट जायेंगे। सवेरे हम लोग गैर-पार्टी लोगो को छुट्टी दे देंगे। वे लोग चले जायेंगे और हम लोग रह जायेंगे। यह देखो प्रादेशिक कमिटी का फैसला है," कहते हुए तोकारेव ने चार परत किया हुआ एक कागज पाक्रातोव के हाथ मे दिया। कधे के ऊपर मे उस कागज को देखते हुए पावेल कोर्चागिन ने पढा

"परिस्थिति की गभीरता को देखते हुए कोमसोमोल के सारे सदस्य अपने काम पर जमे रहेंगे और उन्हें तब तक छुट्टी नही मिलेगी जब तक कि ईंधन का पहला चलान आ नही जाता। दस्तख्त रिता उस्तिनोविच, प्रादेशिक कमिटी के मत्री की ओर से।"

रसोई की बारक मे भीड लगी हुई थी। उस छोटी सी तग जगह मे एक सौ बीस आदमी सकसे हुए खडे थे। उनमे से कुछ दीवार का सहारा लिए हुए खडे थे, कुछ मेजो पर चढ कर बैठ गये थे और कुछ तो रसोई के ऊपर तक जाकर बैठ गये थे।

पाकातोव ने मीटिंग की कार्रवाई शुरू की। तब तोकारेव ने एक छोटी सी तकरीर की और इस ऐलान के साथ अपनी बात खतम की, जिसका असर सुनने वालो पर बम के गिरने जैसा हुआ

"कम्युनिस्ट और कोमसोमोल कल काम नही छोडेंगे।"

बूढे ने अपनी बात के साथ-साथ मुख की एक ऐसी भगिमा भी बनाई जिसका मतलब था कि यह फैसला अन्तिम है और इसमे कोई रद्दोबदल मुमकिन नही है। इस चीज ने शहर लौटने की उनकी सारी उम्मीदो पर पानी फेर दिय—शहर लौटने की, अपने घर जाने की, इस मनहूस जगह से भाग जाने की।

क्रुद्ध आवाजो का एक शोर उठा जिसमे थोडी देर के लिए सभी कुछ डूब गया। लोगो के हिलते हुए शरीर से टिबरी की बत्ती काप-काप जाती थी। उस अर्द्ध-अधकार मे शोर-गुल बढता जा रहा था। वे लोग अपने घर लौटना चाहते थे। वे बहुत क्षोभ के साथ कह रहे थे कि अब हमको यहा पर रोकने की बात क्यो की जा रही है, हम जितना कर सकते थे, हमने किया। कुछ ने खामोशी से इस खबर को सुन लिया। और सिर्फ एक आदमी ने काम छोड कर भाग जाने की बात कही।

मुह से गालिया निकालते हुए एक आदमी अपने कोने मे से जोर से चिल्लाया, "जहन्नुम मे जाय यह काम! मैं तो अब यहा एक दिन भी नही ठहर सकता। हा कोई जुर्म किया हो तो आप कडी मशक्कत की सजा दीजिए। मगर हमने कौन सा जुर्म किया है? अब और ठहरना बेवकूफी होगी। हमने दो हफ्ते तक काम किया और वह काफी है। अब उन लोगो से कहिए जिन्होने यह फैसला किया है कि वे अपने कमरो से निकल कर खुद यहा आयें और काम करें। हो सकता है कि कुछ लोगो को इस गन्दगी और इस कीचड मे ही मजा आता हो। मगर भाई मेरे पास तो जीने के लिए सिर्फ एक जिन्दगी है, मैं कल जा रहा हूं।"

ओकुनेव के पीछे से आवाज आ रही थी और उसने यह देखने के लिए कि वह कौन है, दियासलाई जलाई। दियासलाई की रोशनी ने एक क्षण के लिए बोलने वाले के गुस्से से विकृत चेहरे और खुले हुए मुह को चमका दिया। मगर उस एक क्षण मे ही ओकुनेव ने प्रादेशिक खाद्य कमिसारियट के एक क्लर्क के उस बेटे को पहचान लिया।

वह बनैले सुअर की तरह बिफरते हुए बोला, "पता लगा रहे हो कि कौन है, क्यो ? उह, मुझे कोई डर नही, मैने क्या कोई चोरी की है।"

दियासलाई बुझ गई। पाक्रातोव उठा और अच्छी तरह तनते हुए बोला

"यह किस किस्म की बात है ? कौन है जो पार्टी के काम की तुलना जेल की कडी मशक्कत से कर रहा है ?" उसने गरजते हुए और सामने की कतार मे बैठे लोगो पर अपनी कठोर दृष्टि डालते हुए कहा, "नही साथियो, हम शहर नही जा सकते, हमारी जगह यही है। अगर हम लोग दुम दबा कर यहा से चले जाते हैं, तो हमारे भाई ठिठुर कर मर जायेंगे। जितनी ही जल्दी हम अपना काम खतम कर लें उतनी ही जल्दी हम अपने घर पहुच सकते हैं। वहा वह पीछे बैठा हुआ झीखने वाला जिस तरह भाग जाने की बात कर रहा है, वह चीज हमारे विचारो या हमारे अनुशासन से कतई मेल नही खाती।"

पाक्रातोव जहाज पर काम करने वाला आदमी था। उसे लम्बी-लम्बी तकरीर करना अच्छा नही लगता था। मगर उसकी इस छोटी सी तकरीर को भी उसी तैश खाई हुई आवाज ने बीच मे टोका।

"गैर-पार्टी लोग तो जा रहे हैं न ?"

"हा।"

छोटा सा ओवरकोट पहने एक लडका कुहनियो से रास्ता बनाता हुआ सामने आया। कोमसोमोल की सदस्यता का एक कार्ड चमगादड की तरह उडता हुआ जाकर पाक्रातोव के सीने मे टकराया, मेज पर गिरा और सीधा खडा हो गया।

"यह रहा, अपना कार्ड रख लीजिए। मैं दफ्ती के इस टुकडे के लिए अपनी तन्दुरुस्ती खतरे मे नही डाल सकता।"

उसके आखरी शब्द क्रुद्ध स्वरो के गर्जन मे डूब गये

"कुछ खबर है क्या चीज तुम फेंक रहे हो।"

"गद्दार, दोगला।"

"कोमसोमोल मे यह समझ कर आया था कि यहा पेडे बटते हैं।"

"उठा के फेंक दो बाहर साले को।"

"जरा मुझे तो पहुचने दो इस गीदड के पास।"

वह भगोडा, सिर झुकाये, दरवाजे की तरफ बढा। उन्होंने उसे निकल जाने दिया और जैसे उससे अपना दामन बचा रहे हो, गोया वह कोढी हो। उसके बाहर निकलने पर दरवाजा चू करके बन्द हो गया।

पाक्रातोव ने फेंके हुए मेम्बरी के कार्ड को उठाया और ढिबरी की बत्ती से लगा दिया।

दफ्तरी ने आग पकड ली और ऐंठ-ऐंठ कर जलने लगी।

जगल मे एक गोली की गूज सुनाई दी। एक घुडसवार उस खडहर बारक से मुडा और जगल के अधेरे मे घुस गया। क्षण भर बाद लोग बारक और स्कूल की इमारत मे से दौडते हुए बाहर आये। किसी ने दरवाजे की कीवाड पर टगा हुआ प्लाइवुड का एक टुकडा देखा। एक दियासलाई जली और उसकी कापती हुई लौ को हवा से बचाते हुए उन्होंने घसीट कर लिखी हुई उस इबारत को पढा "यहा से चले जाओ और जहा से आये हो वही लौट जाओ। अगर तुम ऐसा नही करोगे तो हम तुम्हारे एक-एक आदमी को गोली से उडा देंगे। भागने के लिए मैं तुम्हे कल रात तक का वक्त देता हू। एटमन चेम्नोक।"

चेम्नोक ओर्लिक के गिरोह का आदमी था।

रिता के कमरे मे मेज पर एक खुली हुई डायरी पडी थी।

"२ दिसम्बर

"आज सवेरे यहा पर पहली बार बर्फ गिरी। पाला बहुत तेजी से गिर रहा है। मीटी पर मेरी मुलाकात व्याचेस्लाव ओलगिन्स्की से हुई और फिर हम लोग साथ-साथ सडक पर घूमे।

"ओलगिन्स्की ने कहा, 'पहली बार जब बर्फ गिरती है तो मुझे हमेशा बहुत अच्छा मालूम होता है, खास कर जब ऐसा पाला भी पड रहा हो।'

"मगर मैं बोयार्का की बात सोच रही थी और मैंने उससे कहा कि बर्फ और पाले से मुझे रत्ती भर खुशी नही होती, बल्कि उल्टे मेरी तो तबियत और भी बुझ जाती है। और मैंने इसका कारण भी उसे बतलाया।

"उसने कहा कि 'यह तो एक निरी वैयक्तिक प्रतिक्रिया है। अगर इसको तर्क का आधार बनाकर चला जायगा, तब तो लडाई के जमाने मे हर तरह के आमोद-प्रमोद या खुशी की किसी भी अभिव्यक्ति को रोक देना पडेगा। मगर जिन्दगी का तो यह नियम नही है। विषाद तो मोर्चे की उस पट्टी तक सीमित है जहा पर लडाई लडी जा रही है। वहा जिन्दगी पर मौत की

निकटता की छाया रहती है। मगर वहा के लोग भी हसते हैं। और मोर्चे से अलग तो जिन्दगी हस्बे-मामूल चलती रहती है लोग हसते हैं, रोते हैं, तकलीफ उठाते हैं, खुशी मनाते हैं, प्यार करते हैं और मनोरजन और हलचल की खोज मे रहते हैं।'

"ओलशिन्स्का के शब्दो मे व्यग्य की कोई छाया न थी। ओलशिन्स्की जन-कमिसारियट के वैदेशिक विभाग का प्रतिनिधि है। वह १९१७ से पार्टी मे है। वह अच्छे कपडे पहनता है। उसकी दाढी हमेशा साफ-चिकनी बनी रहती है और एक हलकी सी खुशबू भी उसके इर्द-गिर्द लिपटी रहती है। वह सेगल वाले हिस्से मे हमारे ही घर मे रहता है। कभी-कभी वह मुझसे मिलने के लिए शाम को चला आता है। उससे बात करना बडा अच्छा मालूम होता है। उसे योरप के बारे मे बहुत बातें मालूम हैं, वह कई साल पैरिस मे रहा है। मगर मुझे सन्देह है कि कभी उसकी और मेरी बहुत अच्छी दोस्ती हो सकती है। और वह इसलिए कि उसके लिए सबसे पहले मैं एक नारी हू। मैं उसकी पार्टी कामरेड हू, यह चीज उसके लिए गौण है। यह सही है कि इस मामले मे वह अपने विचारो और भावनाओ को छिपाने की कोई कोशिश नही करता। उसमे खुल कर अपनी बात कहने का साहस है और मेरे साथ उसके वर्ताव मे कोई भद्दी बात नही है। यह ठीक है कि वह मेरे प्रति प्रेम दिखाता है, मगर उस चीज को भी वह एक खूबसूरती से भर देता है। मगर तब भी मैं उसको पसन्द नही करती।

"जुखराई की सादगी और रूखापन मुझे ओलशिन्स्की के तमाम मजे और निखरे योरोपियन तौर-तरीको से ज्यादा भाता है।

"बोयार्का से खबर छोटी-छोटी रिपोर्टो की शक्ल मे मिलती है, इस शक्ल मे कि आज हमने कितनी पटरिया बिछाई। वे जमी हुई धरती पर, स्लीपरो के लिए क्यारिया खोद-खोद कर उन्ही में स्लीपरो को बिछाते जा रहे हैं। इस काम पर सिर्फ ढाई सौ आदमी हैं। पहले के काम करने वालो की जगह लेने के लिए जितने लोग गये, उनमे से आधे लोग भाग गये। वहा की हालत सचमुच बहुत ही भयानक है। मैं समझ नही पाती कि कैसे इस पाले मे वे लोग अपना काम जारी रखते हैं। दुबावा को गये एक हफ्ता हो गया। वे पुश्चावोदित्सा के आठ इजनो मे से कुल पाच को ही मरम्मत कर पाये। बाकी के लिए उनके पास पार्ट नही थे।

"ट्रामकार के अधिकारियो ने दिमित्री के खिलाफ बहुत से अभियोग लगाये हैं। उसने और उसकी ब्रिगेड के लोगो ने ट्राम के खुले हुए मालगाडी के डब्बो को, जो पुश्चावोदित्सा से शहर आते हैं, बीच मे रोक लिया, मुसाफिरो को उतार दिया और उन डब्बो मे बोयार्का के लिए रेल की पटरिया

लाद दी। ट्राम गाडियो पर वे उन्नीस गाडी रेल की पटरिया लाद कर शहर के स्टेशन मे ले आये। ट्राम चलाने वालो ने बडी खुशी से उनकी मदद की।

"सोलोमेका के कोमसोमोलो ने, जो अब भी शहर मे है, रात भर रेल की पटरियो को डब्बो मे लादने का काम किया और दमित्री तथा उसकी ब्रिगेड के लोग उनको लेकर बोयार्का चले गये।

"अकिम ने दुवावा के काम को कोमसोमोल ब्यूरो के सामने आने देने से इनकार किया। दिमित्री ने हमको बतलाया कि ट्रामकार की व्यवस्था मे नौकरशाहियत और फिजूल का लाल फीता बहुत बुरी तरह घुसा हुआ है। उन्होने इस काम के लिए दो डब्बे से ज्यादा देने से साफ इनकार कर दिया है।

"मगर तो भी तुफ्ता ने दुवावा को अलग ले जाकर उसे डाटा। उसने कहा, 'इन पुराने छापेमारो के हथकडो को अब छोड दो नही तो देखते-देखते जेल पहुच जाओगे। हथियारो का सहारा लिए बिना भी तो तुम किसी समझौते पर पहुच सकते थे ?'

"मैंने इसके पहले कभी दुवावा को ऐसे क्रोध मे नही देखा था।

"उसने बिफर कर चिल्लाते हुए कहा, 'तुम खुद उससे बात करने की कोशिश क्यो नही करते, या बस रिपोर्ट लिखने के लिए हो ? यहा बैठे-बैठे कुर्सी तोडते रहते हो और केवल जबान हिलाना जानते हो। मैं भला कैसे बिना उन पटरियो को लिए बोयार्का जा सकता था ? तुम यही पर बने रहते हो और सबको हैरान करते रहते हो। चाहिए तो यह कि तुमको भी वहा भेज दिया जाय ताकि तुम भी कुछ उपयोगी काम करो। तोकारेव तुम्हारी अक्ल ठीक कर देंगे।' दिमित्री इतने जोर-जोर से बोल रहा था कि घर भर मे उसकी आवाज गूज रही थी।

"तुफ्ता ने दुवावा के खिलाफ एक शिकायत लिखी। मगर अकिम ने मुझसे कहा कि मैं कमरे के बाहर चली जाऊ और उसने करीब दस मिनट अकेले मे उससे बात की। मगर उसके बाद तुफ्ता गुस्से से लाल होता हुआ कमरे से बाहर आ गया।"

"३ दिसम्बर

"गूबा कमिटी को एक और शिकायत मिली है, इस बार ट्रासपोर्ट चेका की ओर से। उससे मालूम हुआ कि पाक्रातोव, ओकुनेव और दूसरे कई साथी मोतोविलोव्का स्टेशन गये और वहा की खाली इमारतो के सारे दरवाजे और खिडकिया निकाल ली। जब वे इन सब चीजो को मालगाडी पर लाद रहे थे, तो स्टेशन पर के चेका के आदमी ने उन्हे पकडने की कोशिश की। उन्होने उस आदमी का हथियार छीन लिया, उसकी रिवाल्वर खाली कर दी और

गाडी जब चलने लगी तभी उसका रिवाल्वर उसे वापस किया। खिडकियो और दरवाजे लेकर वे चले ही गये।

"तोकारेव पर रेलवे के सप्लाई विभाग ने अभियोग लगाया है कि उसने बोयार्का के रेलवे स्टाक से नौ मन कीलें ले ली हैं। यह कीलें उसने किसानो को स्लीपर की शहतीरें ढोकर लाने की मेहनत के एवज मे दे दी है।

"इन सब शिकायतो के बारे मे मैंने कामरेड जुखराई से बात की। मगर वे तो बस हस दिये। उन्होने कहा, 'करेंगे', हम इसकी भी फिक्र करेंगे।"

"रेलवे के इस काम की हालत वाकई बहुत सगीन है और अब तो हर दिन अनमोल है। हमे छोटी-से-छोटी चीजो के लिए यहा पर जोर लगाना पडता है। जब देखो तब हमे काम मे बाधा डालनेवालो को सूबा कमिटी के सामने खडा करना पडता है और वहा जो लडके काम कर रहे है, वे बराबर नियम-कानूनो को ज्यादा से ज्यादा तोडते चले जा रहे है।

"ओलशिन्स्की ने मुझे बिजली की एक अगीठी ला कर दी है। ओल्गा यूरेनेवा और मैं उस पर हाथ सेंकती हू, मगर कमरा उससे कुछ खास गरम नही होता। मैं हैरान होकर सोचती हू कि जगल मे इस भयानक ठडी रात का सामना वे लोग कैसे करते होगे ? ओल्गा मुझको बतलाती है कि अस्पताल मे इतनी ठडक रहती है कि मरीज अपने कम्बलो मे लिपटे-लिपटे कापते रहते हैं, उस जगह को दो दिन मे सिर्फ एक बार गर्माया जाता है।

"नही कामरेड ओलशिन्स्की, मोर्चे पर के लोगो का दर्द मोर्चे से दूर बैठे हुए लोगो का दर्द भी होता है।"

"४ दिसम्बर

"रात भर बर्फ गिरती रही। बोयार्का से वे लिखते हैं कि हर चीज बर्फ से एकदम ढक गई है और रेल की पटरियो पर से बर्फ हटाने के लिए उन्होने फिलहाल अपना काम रोक दिया है। आज सूबा कमिटी ने यह फैसला किया है कि रेलवे का पहला हिस्सा, यानी उस जगह तक जहा लडाई का काम शुरू हुआ है, जैसे भी हो पहली जनवरी १९२२ के पहले तक तैयार हो ही जाना है। जब यह फैसला बोयार्का पहुचा तो शायद तोकारेव ने कहा 'हम लोग इस काम को पूरा करेंगे, बस शर्त यह है कि तब तक कही हमारा दम न निकल जाय।'

"कोर्चागिन के बारे मे मुझे कोई खबर नही मिलती। मुझे थोडा आश्चर्य ही है कि पाक्रातोव जैसे 'किसी मामले' मे वह भी कैसे नही फसा ! मैं अब भी नही समझ पाती कि वह मुझसे क्यो कतराता है।"

"५ दिसम्बर

"जहा पर काम चल रहा है और पटरी बिछाई जा रही है, वहा कल डाकुओ ने हमला किया था।"

घोडे थके हुए, धीरे-धीरे, नर्म बर्फ पर चले जा रहे थे और उनकी टापें बर्फ के अन्दर घुस-घुस जाती थी। जब-तब बर्फ के नीचे पड़ी हुई कोई टहनी किसी घोडे की टाप से टूट जाती और घोडा हिनहिनाता और अड जाता। मगर तभी उसके कानो पर तेजी से एक चाबुक पडता और चाबुक खाकर वह भी दूसरे घोडो के पीछे सरपट भाग चलता।

करीब एक दर्जन घुडसवारो ने उस पहाडी टीले को पार किया जिसके उस पार काली मिट्टी का मैदान था और जिस पर अभी बर्फ की चादर नही पडी थी। यहा पहुच कर घुडसवारो ने अपने घोडे रोके। रकाब से रकाब मिली तो धीमी-सी आवाज हुई। सरदार के घोडे ने जोर से हिनहिना कर अपने जिस्म को हिलाया। इस लम्बी दौड के बाद पसीने मे उसका जिस्म चमक रहा था।

आगे-आगे चलने वाले घुडसवार ने उक्रेनी जबान मे कहा, "बहुत बडी जमात मे हैं ये बदमाश यहा। मगर कोई बात नही, अभी हम ऐसा कर देंगे कि डर के मारे उनकी बोटी-बोटी कापने लगेगी। एटमन का आदेश है कि कल तक इन हरामजादो को यहा से खदेड ही देना है। ईंधन के बहुत करीब पहुचे जा रहे हैं ये लोग। ऐसे नही चलेगा।"

वे स्टेशन तक छोटी लाइन की पटरी पकडे-पकडे घोडे पर सवार एक के पीछे एक चले जा रहे थे। पुरानी स्कूल की इमारत के पास के मैदान को देख कर उन्होंने अपनी रफ्तार बहुत धीमी कर दी और पेडो के पीछे पहुच कर रुक गये। आगे खुले मैदान मे जाने की उनकी हिम्मत नहीं पडी।

गोली की एक बौछार ने रात की निस्तब्धता को चीर दिया। चादनी मे चादी की तरह चमकते हुए बर्च के एक पेड की शाख से बर्फ के गाले गिलहरी की तरह गिर रहे थे। पेडो के बीच गोलिया चलने की रोशनी हो रही थी और गोलिया टूटते पलस्तर को चीरकर अन्दर चली जाती थी। पाक्रातोव की खिडकियो के शीशे चूर-चूर होकर जमीन पर गिरते थे, तो झन्न-झन्न की आवाज होती थी।

ककरीट की फर्श पर सोये हुए लोग गोली की आवाज सुनकर हडबडा उठे। लेकिन जब गोलिया कमरे भर मे उडने लगीं तो वे झट एक-दूसरे पर गिर पडे।

दुबावा ने पावेल के कोट के पिछले दामन को पकड़ते हुए कहा, "कहा जा रहे हो ?"

"बाहर।"

दिमित्री ने दात पीसते हुए साप की तरह फुफकार कर कहा, "लेट जाओ गधे कही के ! तुम्हारा सिर बाहर निकला नही कि काम तमाम समझो।"

वे दोनो दरवाजे के अगल-बगल लेटे हुए थे। दुबावा फर्श पर चिपका हुआ लेटा था और उसके रिवाल्वर का मुह दरवाजे की तरफ था। पावेल उकडू बैठा बेचैनी से अपने रिवाल्वर की नली पर उगलिया दौडा रहा था। उसमे पाच गोलिया थी, एक घर खाली था। उसने सिलिंडर को एक बार और घुमाया।

गोली चलना एकाएक बन्द हो गया। उसके बाद जो निस्तब्धता आई, तो उसमे तनाव का बोझ था।

दुबावा ने फटी हुई आवाज मे धीमे से कहा, "वे सब जिनके पास हथियार हो, इधर आयें।"

पावेल ने बहुत सावधानी से दरवाजा खोला। मैदान खाली था। बर्फ के गाले धीरे-धीरे गिर रहे थे।

जगल मे दस घुडसवार अपने घोडो को सरपट भगाने के लिए उनको चाबुक लगा रहे थे।

दूसरे रोज एक रेलगाडी शहर से आई। उसमे से जुखराई और अकिम उतरे और तोकारेव और खोलियावा ने उनका स्वागत किया। एक मैक्सिम तोप, दो दर्जन राइफिलें और मशीनगन की पेटियो के कई डब्बे गाडी मे से उतार कर प्लेटफार्म पर रखे गये।

जल्दी-जल्दी वे लोग काम की जगह पर पहुचे। फियोदोर के लम्बे बरानकोट का पिछला दामन जमीन पर लसरता चल रहा था जिससे बर्फ पर आडी-तिरछी रेखाए बनती जा रही थी। वह अब भी जहाज पर काम करने वाले आदमी की तरह अपने खास लुढकते-पुढकते से भद्दे अन्दाज मे चल रहा था मानो किसी डेस्ट्रॉयर की डेक पर चहलकदमी कर रहा हो। लम्बी टागो वाला अकिम फियोदोर के कदम-ब-कदम चल रहा था मगर तोकारेव को उनके साथ चलने के लिए बीच-बीच मे दौडना पड जाता था।

"डाकुओ का यह हमला हमारी सबसे बडी मुसीबत नही है। हमारी लाइन के ठीक रास्ते मे एक जगह पर जमीन बहुत बेहूदा ढग से उठी हुई है, जिसका मतलब है कि हमे और भी खुदाई करनी पडेगी, बहुत खुदाई। किस्मत ही खराब है और क्या कहे।"

वह बूढा आदमी रुका, हवा की ओर पीठ करके खडा हुआ और सिगरेट जलाई। सिगरेट के दो-चार कश लेकर वह अपने साथियो को पकडने के लिए तेजी से चला। अकिम उसके लिए रुक गया था, मगर जुखराई आगे बढता चला गया।

अकिम ने तोकारेव से पूछा, "तुम्हारा क्या खयाल है, तुम वक्त से काम खतम कर लोगे ?"

तोकारेव ने जरा थम कर जवाब दिया।

"देखो बेटा, बात यह है कि यो तो यह काम नही किया जा सकता। मगर करना ही है, जैसे भी हो। बस इतनी सी बात है।"

उन दोनो ने फियोदोर को जा पकडा और सग-सग चलने लगे।

तोकारेव ने गभीर स्वर मे कहना शुरू किया, "परिस्थिति यह है कि यहा पर सिर्फ पतोश्किन और मै, सिर्फ हम दो ही यह जानते हैं कि इन हालतो मे, इतने कम सामान और कम काम करने वालो को लेकर, वक्त पर इस काम को पूरा नही किया जा सकता। मगर बाकी सारे लोगो को एक-एक आदमी को, बस इतना मालूम है कि चाहे जैसे भी हो, लाइन तैयार करनी ही है। इसीलिए मैंने कहा था कि अगर हम लोग बर्फ मे जम कर मर नही जाते तो यह काम पूरा होगा। तुम लोग खुद ही सोचो, हम यहा पर एक महीने से ज्यादा दिन से खुदाई कर रहे हैं, काम करने वालो की चौथी टुकडी को अब आराम के लिए छुट्टी देने का वक्त आ गया। मगर जो खास काम करने वाले है, वे तो पूरे वक्त काम करते रहेगे। उनकी जवानी ही है जो उन्हे चला रही है। मगर उनमे से आधे लोग सर्दी से बुरी तरह जकडे हुए हैं। उनको देख कर दिल खून के आसू रोता है। ये बहुत अच्छे लडके हैं, इनसे अच्छा कोई नही। मगर यह जगह दोजख से कम नही और यह जरूर कुछ-न-कुछ लोगो की जान लेगी।"

तैयार रेलवे लाइन स्टेशन से करीब एक मील की दूरी पर आकर खतम हो गई। उसके उस पार करीब डेढ मील तक समतल रास्ते पर लकडी की एक बाड सी लगी हुई थी, ये स्लीपर थे जो अपनी जगह पर मजबूती से जमा कर रखे हुए थे। और उसके भी पार उठान तक रास्ता बिलकुल समतल था।

पाक्रातोव की पहली टोली इस हिस्से मे काम कर रही थी। चालीस लोग स्लीपरें बिछा रहे थे और गाजर की सी दाढी वाला एक किसान, जो मूज के बने नये जूते पहने था, धीरे-धीरे लकडी के कुन्दे क्यारियो मे गिराता जा रहा था। दूर पर इसी तरह और भी कई गाडिया अपना माल उतार रही

थी। लोहे के दो लम्बे-लम्बे डण्डे जमीन पर पड़े हुए थे—स्लीपरो को बराबर करने के लिए इनसे काम लिया जाता। कुल्हाडिया, फावडे, कुदाल—सबका इस्तेमाल ककरीट को दवाने के लिए किया जाता था।

रेल की पटरी विछाना एक बहुत धीमा और मशक्कत का काम है। स्लीपरो को जमीन मे अच्छी तरह् जम जाना चाहिए ताकि पटरिया बराबरी से उसके ऊपर बैठ सके।

इस टोली मे सिर्फ एक आदमी था जिसे स्लीपरे विछाने का काम आता था। वह तालिया का बाप लाइन फोरमैन लगुतिन था। चौवन साल का आदमी, दाढी कोयले की तरह काली और बीच से अलग की हुई और सिर मे एक भी पका बाल नही। उसने शुरू से वोर्याका मे काम किया था और वे सभी मुसीबते उठाई थी जो नौजवानो ने उठायी थी। और इसीलिए टुकडी के सब लोग उसे बहुत आदर की दृष्टि से देखते थे। गोकि वह पार्टी मेम्बर नही था, तब भी सभी पार्टी मीटिंगो मे लगुतिन को बडी इज्जत की जगह दी जाती थी। उसे इस चीज का बडा फख था और उसने कौल किया था कि जब तक काम खतम न हो जायगा, वह वहा से नही हटेगा।

"मै कैसे तुम लोगो को यहा अकेला छोड कर चला जाऊ ? जब तक कोई तजुर्बेकार आदमी देखभाल करने के लिए न हो, तब तक जरूर कुछ-न-कुछ गडबड हो जायगा। जहा तक तजुर्वे की बात है, मैंने जिन्दगी मे इतने स्लीपर विछाये है, यहा-वहा देश भर मे, कि मुझे उनकी याद नही," जब भी जगह लेने वाले दूसरे मजदूरो का सवाल पैदा होता तो वह बडी खुशदिली से यह बात कहता। और इस तरह वह रहता आया।

पतोपिकन ने देखा कि लगुतिन अपना काम जानता है और अपने हिस्से की देख-भाल के लिए कम ही जाता है। जिस वक्त तोकारेव अकिम और जुखराई के साथ वहा आया, जहा वे लोग काम कर रहे थे, उस वक्त पाक्रातोव थकान के पसीने से सराबोर और चेहरा लाल किये स्लीपर के लिए गढा खोद रहा था। अकिम बडी मुश्किल से उस नौजवान जहाजी मजदूर को पहचान पाया। पाक्रातोव का वजन बहुत घट गया था और उसके गाल की चौडी-चौडी हड्डिया उसके धूल से भरे हुए चेहरे पर नुकीली होकर निकली हुई थी और उसका चेहरा भी पीला और गढे मे धसा हुआ नजर आता था।

उसने अकिम के हाथ मे अपना गर्म और पसीजा हुआ हाथ देते हुए कहा, "अच्छा-अच्छा, बडे चीफ लोग आये है।"

फावडो की आवाज थम गई। अकिम ने अपने चारो तरफ के लोगो के पीले और फटे हुए चेहरे देखे। उनके कोट और उनकी जाकटें लापरवाही से वर्फ पर पडी हुई थी।

लगुतिन से थोडी देर वात करने के वाद तोकारेव शहर से आये हुए इन लोगो को लेकर खुदाई की जगह गया और पाक्रातोव को भी उसने अपने सग आने की दावत दी। वह जहाजी मजदूर जुखराई के वगल मे चल रहा था।

जुखराई ने उस चुप्पे जहाजी मजदूर से सख्ती से पूछा, "पाक्रातोव, मुझे वतलाओ कि मोतोविल्नोव्का मे हुआ क्या ? क्या तुम ऐसा नही सोचते कि उस चेका के आदमी का हथियार छीन कर तुमने वहुत ज्यादती की ?"

पाक्रातोव मिमियाई हुई नी हमी हसा।

अपनी मफाई देते हुए उसने कहा, "यह सव आपस की रजामदी से हुआ। उसी ने हम लोगो से कहा कि मेरा हथियार छीन लो। वह अच्छा लडका है। जव हम लोगो ने उसको पूरी वात ममझाई तो उसने कहा 'मैं तुम्हारी मुश्किल ममझता हू दोस्तो, मगर मुझे इस वात का हक नहीं है कि मैं तुम्हे खिडकिया और दरवाजे ले जाने दू। कामरेड जेरजिन्स्की से हमको आदेश मिला है कि हम रेलवे के माल-जायदाद की लूटपाट पर रोक लगायें। यहा का स्टेशन मास्टर अलग मेरी मुश्किल किये रहता है। वह हरामजादा चोरी करने का आदो है और मैं उसके रास्ते मे रुकावट वनता हू। अगर मैं तुम लोगो को यह सव ले जाने दू और कुछ न वोलू, तो वह जरूर रिपोर्ट कर देगा और फिर मेरा मामला इन्कलावी अदालत के सामने पेश हो जायगा। लेकिन हा, अगर तुम मेरा हथियार छीन लो तो जरूर सव कुछ लेकर चम्पत हो मकते हो और अगर स्टेशन मास्टर इस मामले की रिपोर्ट नही करता तो मामला यही पर खतम हो जायगा।' इसलिए हम लोगो ने वैसा किया। आखिर हम लोग दरवाजे और खिडकिया अपने मतलव के लिए तो ले नहीं गये, या मैं झूठ कहता हू ?"

जुखराई की आख मे जो चमक आई, उसे देख कर उसने अपना कहना जारी रखा, "कामरेड जुखराई, अगर आप चाहें तो हमको इस चीज की सजा दे सकते हैं, मगर उस लडके के साथ कोई सख्ती न कीजिएगा।"

"वह वात तो अव आई-गई हो गई। मगर देखो फिर कभी ऐसी वात न हो। अनुशासन के खयाल से यह चीज वहुत वुरी है। हम लोग अगर मगठित रूप से काम करें तो नौकरशाही की कमर तोडने के लिए हम काफी ताकतवर हैं। अच्छा आओ, अव कुछ और जरूरी चीजों के वारे मे वात करें।" और फियोदोर डाकुओ के हमले का पूरा खुलासा उससे पूछने लगा।

वोयार्का स्टेशन से करीब चार मील पर कुछ लोगो की एक टोली रेलवे लाइन के रास्ते मे पडने वाले एक टीले को जी-जान से खोदे जा रही थी। सात आदमी अपनी टुकडी के तमाम हथियारो से लैस होकर पहरा दे रहे थे। हथियारो मे उनके पास खोलियावा की राइफिल और कोर्चागिन, पाक्रातोव, दुबावा और खोमुतोव की रिवाल्वरें थी।

पतोश्किन उस टीले पर चढा हुआ अपनी नोट-बुक मे कुछ लिख रहा था। इस काम पर वह अकेला इजीनियर था। टेकनीशियन वाकुलेको उसी सुबह भाग गया था। उसे भगोडेपन के जुर्म मे अपने ऊपर मुकदमा चलाया जाना मजूर था, पर डाकुओ के हाथो मरना नही।

"इस टीले को रास्ते से हटाने मे दो हफ्ता लगेगा। जमीन जम कर एकदम पत्थर हो गई है," पतोश्किन ने अपने बगल मे खडे उदास खोमुतोव से धीमी आवाज मे कहा।

"हमे लाइन पर का पूरा काम करने के लिए पच्चीस रोज मिला है और उसमे से पन्द्रह रोज तुम इसी के लिए लगा रहे हो," खोमुतोव ने अपनी मूछ चबाते हुए गुर्राकर कहा।

"मैं तो समझता हू कि हो नही सकता। हा, यह जरूर है कि इसके पहले ऐसी हालतो मे और ऐसे काम करने वालो के साथ मैने कभी कोई चीज नही बनाई है। इसलिए हो सकता है कि मैं गलती कर रहा होऊ। और सच बात तो यह है कि इसके पहले दो बार मैं गलती कर चुका हू।'

उसी वक्त जुखराई, अकिम और पाक्रातोव ढलवान के करीब आते दिखलाई दिये।

"वह देखो कौन है नीचे ?" रेलवे वर्कशाप के नौजवान मेकेनिक ने, जो पुरानी और कुहनियो पर फटी हुई स्वेटर पहने था, चिल्लाकर कहा। उसने कोर्चागिन को उगली गडाई और आने वालो की तरफ इशारा किया। दूसरे ही क्षण कोर्चागिन हाथ मे फावडा लिए पहाडी के नीचे बेतहाशा दौडा जा रहा था। उसके सिर पर हेलमेट था और हेलमेट के नीचे उसकी आखें मुस्करा कर प्यार से फियोदोर का स्वागत कर रही थी और फियोदोर ने भी उससे हाथ मिलाया तो बडी देर तक उसके हाथो को पकडे ही रहा।

"अरे तुम हो पावेल! इस पोशाक मे तो तुम्हे पहचान ही न सका।"

पाक्रातोव सूखी सी हसी हसा और बोला, "इसको पोशाक कहना ठीक न होगा। बहरसूरत हवा की आमद के लिए इसमे तमाम छेद ही छेद हैं। भगोडो ने उसका ओवरकोट चुरा लिया, यह जाकेट जो यह पहने हुए है, ओकुनेव ने उसको दी है—इन लोगो का अपना एक कम्यून है। मगर पावेल बिलकुल ठीक है, उसकी रगो मे गर्म खून है। ककरीट के फर्श पर—उस पर बिछी हुई

पुआल से कुछ खास फर्क नही पडता—वह एक-दो हफ्ते और अपने को गरमा लेगा और उसके बाद चीड की लडकी के एक अच्छे से ताबूत मे लिटाये जाने के लिए तैयार हो जायगा," उस जहाजी मजदूर ने अपने रूखे और गभीर मजाक के साथ अपनी बात खत्म की।

काली-काली भवो और चपटी सी नाक वाले ओकुनेव ने अपनी शरारत भरी आखें और छोटी कर ली और आपत्ति करते हुए कहा "कोई बात नही, पावलुश्का का इन्तजाम हम लोग कर देंगे। हम सब मिल कर उसे रसोईघर मे ओदार्का की मदद करने का काम दिला देंगे। और अगर वह एकदम गधा नही बने, तो खाने के लिए भी कुछ ज्यादा पा जाया करेगा। जहा तक शरीर को गरमाने की बात है, तो अगीठी मे या खुद ओदार्का मे सटकर बैठ जाया करेगा।"

इस बात पर एक जोर का कहकहा पडा। उस दिन यह पहली मरतबा वे लोग हसे थे।

फियोदोर ने उस पहाडी का मुआइना किया और फिर तोकारेव और पतोश्किन के सग स्लेज मे बैठ कर वहा चला गया जहा लकडी चीरने का काम चल रहा था। वह लौट कर आया, तब भी वे लोग जी-जान से पहाडी को काटने के काम मे लगे हुए थे। फियोदोर ने उनके फावडो का तेजी से चलना देखा और उस मशक्कत के बोझ से काम करने वालो की झुकी हुई पीठो को देखा। अकिम की ओर मुडते हुए उसने मद्धिम स्वर मे कहा

"मीटिंग की कोई जरूरत नही। यहा किसी आन्दोलन की दरकार नही है। तुम ठीक कहते हो तोकारेव कि ये लडके सोने से तोले जाने के काबिल है। ऐसी ही हालतो मे लोहा आग मे तप कर फौलाद बनता है।

जुखराई ने पहाडी खोदने वालो को प्रशसा और कठोर-कोमल गर्व की आखो से देखा। अभी कुछ ही समय पहले उनमे से कुछ लोग उसके सामने अपनी चमकती हुई सगीनो को लिए खडे थे। यह षडयन्त्रकारियो के विद्रोह के एक रोज पहले वाली रात की बात थी। और अब एक ही आवेग से सचालित वे लोग इस परिश्रम मे लगे हुए थे ताकि रेलवे की फौलादी रगें गरमी और जिन्दगी के अनमोल स्रोत तक पहुच सकें।

पतोश्किन ने नम्रता मगर दृढता से फियोदोर को यह बात बतला दी कि दो हफ्ते से कम मे इस पहाडी को नही काटा जा सकता। फियोदोर अपने किसी खयाल मे डूबा हुआ उसकी दलीलो को सुनता रहा। उसका दिमाग स्पष्ट ही अपनी किसी दूसरी समस्या मे उलझा हुआ था।

"पहाडी काटने का काम बन्द कर दो और पहाडी के उस पार पटरिया बिछाने का काम शुरू कर दो। इस पहाडी का हम दूसरा ही कुछ इलाज करेंगे।" उसने आखिरकार अपनी बात कही।

स्टेशन पर उसका बहुत सा वक्त टेलीफोन पर बीतता था। खोलियावा जो बाहर दरवाजे पर खडा पहरा देता था, अन्दर से आती फियोदोर की फटी हुई भारी आवाज को सुनता था।

"मिलिटरी एरिया के चीफ आफ स्टाफ को फोन करो और मेरा नाम लेकर उनसे कहो कि पुजीरेव्स्की की रेजिमेट को फौरन यहा के लिए बदली करें। इस इलाके से जल्द-से-जल्द लुटेरो का सफाया करना है। उनसे यह भी कहो कि एक बख्तरबद गाडी यहा भेजें और उसके साथ पहाडी को डाइनामाइट से उडाने के लिए आदमी भी भेजें। बाकी सारा इन्तजाम मैं कर लूगा। मुझे लौटने मे देर होगी। लित्के से कहो कि आधी रात के आस-पास मोटर लेकर स्टेशन पर रहे।"

बारक मे, अकिम की छोटी सी तकरीर के बाद जुखराई ने बोलना शुरू किया और एक घटा, साथियो की आपस की बहस मे, पलक मारते उड गया। फियोदोर ने उन लोगो को बतलाया कि काम को खतम करने के लिए पहली जनवरी जो आखिरी तारीख मुकर्रर की गई है, उसको और आगे बढाने का सवाल नही पैदा होता।

जुखराई ने कहा, "अब से हम इस काम को फौजी बुनियाद पर खडा कर रहे हैं। पार्टी मेम्बरो की एक स्पेशल टास्क कम्पनी होगी जिसके कमाडर कामरेड दुबावा होगे। छ टीमो को खास-खास काम दिया जायगा। जो काम बाकी बच जायगा, उसे छ बराबर हिस्सो मे बाट कर एक-एक टीम को दे दिया जायगा। पहली जनवरी तक काम खतम होना ही है। जो टीम अपना काम पहले खतम कर लेगी उसे शहर वापिस जाने की इजाजत मिल जायगी। इसके अलावा सूबे की कार्यकारिणी का सभापति-मडल सरकार से दरख्वास्त कर रहा है कि सबसे पहले काम खतम करने वाली टीम के सबसे अच्छे मजदूर को 'ऑर्डर आफ द रेड बैनर' दिया जाय।"

अलग-अलग टीमो के ये लीडर मुकर्रर किये गए न १. कामरेड पान्क्रातोव, न २ कामरेड दुबावा, न ३ कामरेड खोमुतोव, न ४ कामरेड लगुतिन, न ५ कामरेड कोर्चागिन, न ६ कामरेड ओकुनेव।

"इस तामीरी काम के प्रधान, इसके राजनीतिक और व्यवस्था-सम्बधी नेता पूर्ववत एटन निकिफोरोविच तोकारेव रहेंगे," जुखराई ने अपनी बात खतम करते हुए कहा।

चिड़ियों के गोल के अचानक उड़ने की तरह तालियां बजने लगी और कठोर चेहरों पर मुस्कराहट और शांति फैल गई। जिस झक्की मगर आत्मीय ढंग से भाषण समाप्त हुआ था, उससे मीटिंग का तनाव खुशी के कहकहे में डूब गया।

अकिम और फियोदोर को विदा करने के लिए करीब बीस लोग स्टेशन पर आये।

कोर्चागिन से हाथ मिलाते हुए फियोदोर ने पावेल के बर्फ से भरे हुए बरसाती बूटों को देखा।

उसने धीमे से कहा, "मैं तुम्हें एक जोड़ा जूते भेज दूंगा। उम्मीद करता हूं कि कम से कम अभी तो तुम्हारे पैर सलामत होंगे, जम तो नहीं गये?"

"कुछ कुछ सूजने लगे हैं," पावेल ने जवाब दिया। फिर एक चीज की याद करके जो उसने बहुत पहले मांगी थी, पावेल ने फियोदोर की बांह पकड़ ली और कहा, "मेरे रिवाल्वर के लिए आप कुछ कारतूस दे सकेंगे? मेरा खयाल है कि मेरे पास अब सिर्फ तीन अच्छी कारतूसें बची हैं।"

जुखराई ने निषेध सूचक सिर हिलाया, मगर पावेल की निराश मुद्रा को देख कर अपनी माउजर का फीता जल्दी से खोल दिया।

"यह लो, तुम्हारे लिए यह एक तोहफा है।"

पावेल को एकाएक यकीन नहीं आया कि उसे सचमुच वह चीज मिल रही है जिसके लिए वह इतने दिनों से लालायित था, मगर जुखराई ने अपनी माउजर का फीता उसके कंधे पर डालते हुए कहा

"ले लो, ले लो! मैं जानता हूं कि बहुत दिनों से तुम्हारी निगाह इस पर है। मगर देखना, कहीं अपने ही किसी आदमी पर इसका इस्तेमाल न कर बैठना। इसके साथ ये तीन सेट कारतूस हैं।"

पावेल ने अपने ऊपर गड़ी हुई दूसरों की ललचाई आंखों को महसूस किया।

कोर्ट चिल्लाया, "ए पावका, अदला-बदली करते हो? इसके बदले में मुझ से एक जोड़ा जूते ले लो और एक कोट भी। है सौदा मंजूर?"

पांक्रातोव ने पीछे से पावेल की पीठ को कोंचा और कहा, "चलो, मैं इसके बदले में तुम्हें एक जोड़ा फेल्ट के जूते दूं। मुझसे सौदा कर लो। क्योंकि अगर यही हाल रहा तो क्रिसमस के पहले तो तुम अपने इन बरसाती बूटों में यों भी मर चुके रहोगे।"

रेलगाड़ी के फुटबोर्ड पर एक पैर रख कर उसके सहारे जुखराई ने रिवाल्वर के लिए एक परमिट लिख दिया।

दूसरे दिन बडे तडके एक बख्तरबन्द गाडी आकर स्टेशन पर रुकी। इजन बगुले के पर जैसी सफेद भाप छोड रहा था जो उस साफ-शफ्फाफ बर्फीली हवा में खो जाती थी। चमडे के कपडे पहने हुए लोग लोहे के डब्बे मे से निकले। कुछ घटे बाद तीन लोग, जो पुल-पहाडी वगैरह उडाने का काम करते थे और गाडी मे आये थे, उन्होने पहाडी की जड मे दो बडी-बडी, काली-काली, कुम्हडे जैसी चीजें गाड दी थी। उन चीजो मे से लम्बे-लम्बे पलीते निकले हुए थे। लोगो को सावधान करने के लिए उन्होने कुछ गोलिया हवा मे छोडी और लोग अब इस घातक पहाडी से दूर-दूर चारो तरफ बिखर गये। पलीते के सिरे मे आग लगा दी गई। पलीता नीली-नीली लौ देने लगा।

कुछ देर तक लोग सास रोके खडे रहे। उद्विग्न प्रतीक्षा के दो-एक क्षण, और फिर धरती काप उठी और एक भयकर ताकत ने उस पहाडी को उडा दिया और मिट्टी के बडे-बडे ढोके आसमान की तरफ उडे। दूसरा धडाका पहले से भी ज्यादा जबर्दस्त था। उसकी गरज चारो ओर के जगल मे गूज गई और आवाजो का एक हगामा सा छा गया।

जब धुआ और धूल साफ हुई तो दिखाई दिया कि जहा अभी वह पहाडी खडी थी, वहा पर अब एक गहरा सा गढा था और आस-पास की शकर जैसी सफेद बर्फ में मिट्टी मिल गई थी।

धडाके से पैदा होने वाले इस गढे की तरफ लोग अपने फावडे और कुदाल लेकर दौडे।

जुखराई के चले जाने के बाद काम करने वालो मे इस बात की जबर्दस्त होड लगी कि कौन सबसे पहले अपना काम खत्म करता है।

भोर के बहुत पहले कोर्चागिन चुपके से उठा ताकि दूसरे लोग न जगें और अपने ठिठुरे हुए पैरो को दबा-दबा कर उस बर्फ जैसे ठडे फर्श पर चलता हुआ रसोईघर तक पहुचा। वहा उसने चाय का पानी गरम किया और फिर अपनी टीम के लोगो को जगाने के लिए गया।

दूसरे लोगो के जागते-जागते दिन अच्छी तरह निकल आया था।

उसी सुबह पाकातोव गुजान वारक मे कुहनियो से अपना रास्ता बनाता हुआ वहा पहुचा जहा दुबावा और उसके दल के लोग नाश्ता कर रहे थे।

उसने आवेश मे कहा, "सुनते हो मितियाई! पावका ने अपने लडको को दिन निकलने के पहले ही जगा दिया और काम पर निकल गया। मैं दावे के साथ कह सकता हू कि अब तक उन्होने बीस गज पटरिया बिछा ली होगी। सब कहते हैं कि उसने अपने रेलवे वर्कशाप के लडको को जोश दिला-दिला

कर अपने हिस्से का काम पच्चीस तारीख तक खतम करने के लिए तैयार कर लिया है। इस तरह तो हम कही के न रहेगे, वह हमको पटरा कर देगा। मगर मैं कहता हू यह नही होने का!"

दुबावा उदास ढग से मुस्कराया। वह समझ सकता था कि नदी के किनारे वाले शहर के कोमसोमोल-मत्री को रेलवे वर्कशाप के लोगो का ऐसे आगे बढकर काम करना क्यो इतना बुरा लग रहा है। सच बात तो यह थी कि उसके दोस्त पावेल ने दुबावा को भी पीछे छोड दिया था। बिना किसी से एक शब्द कहे उसने सारी कम्पनी को चुनौती दे दी थी।

पाक्रातोव ने कहा, "दोस्त होने न होने से कुछ फर्क नही पडता। जीतेगा वही जो सबसे अच्छा काम करेगा।"

दोपहर को जब कोर्चागिन की टीम जोर-शोर से काम कर रही थी, तब एक अप्रत्याशित बाधा उपस्थित हुई। वह सन्तरी जो राइफलो पर पहरा दे रहा था, उसने दरख्तो के बीच से कुछ घुडसवारो के एक दल को करीब आते देखा और चेतावनी देने के लिए एक गोली छोडी।

"दोस्तो, हथियार उठा लो! लुटेरे!" पावेल चिल्लाया। उसने अपना फावडा फेंक दिया और पेड की तरफ दौडा जहा उसकी माउजर लटक रही थी।

झटपट अपनी राइफिले उठाकर दूसरे भी लाइन के किनारे के पास ही बर्फ पर लेट गये। आगे-आगे चलने वाले घुडसवारो ने अपनी टोपिया हिलाई।

उनमे से एक चिल्लाया, "साथियो, रुको रुको, गोली मत चलाओ!"

बुद्योनी की फौज की टोपिया लगाये करीब पचास घुडसवार रास्ते पर चले आ रहे थे। उनकी टोपियो पर लाल तारे चमक रहे थे।

पुजीरेव्स्की की रेजीमेट की एक टुकडी देख-भाल के लिए आई थी। पावेल ने देखा कि कमाडर जिस पर सवार था, वह एक खूबसूरत भूरे रग की घोडी थी। उसके माथे पर एक सफेद दाग था और उसके एक कान का थोडा-सा हिस्सा गायब था। वह बेचैनी से जस्त कर रही थी और जब पावेल ने तेजी से आगे बढ कर उसकी रास को पकडा तो वह उछल पडी।

"अरे क्यो, लिस्का, मेरी प्यारी लिस्का, मैंने कब सोचा था कि फिर कभी हमारी मुलाकात होगी! अच्छा गोलिया तो तुझे छू नही पाई!"

पावेल ने उसकी पतली गर्दन को प्यार से गले लगाया और उसके फड-कते हुए नथने को थपथपाया।

कमाडर क्षण भर के लिए एकटक पावेल को देखता रहा, फिर आश्चय से चीख पडा "अरे, कही यह कोर्चागिन तो नही! मगर तुम भी कैसे हो,

तुमने अपनी घोडी को तो पहचान लिया मगर अपने पुराने दोस्त सेरेदा को नही देख रहे हो। सलाम दोस्त !"

इस बीच शहर मे सभी तरफ इस बात के लिए जोर लगाया जा रहा था कि रेलवे लाइन बिछाने के काम को और तेज किया जाय और जहा काम चल रहा था, वहा इस चीज का असर फौरन दिखाई देता था। जार्की ने कोमसोमोल की जिला कमिटी के एक-एक आदमी को बीन-बीन कर बोयार्का भेज दिया था। सोलोमेका मे अब सिर्फ लडकिया बची थी। उसने जोर लगा कर रेलवे स्कूल को विद्यार्थियो की एक और टोली भेजने के लिए तैयार किया।

अपने काम के नतीजो की रिपोर्ट अकिम को देते हुए उसने मजाक मे कहा, "मेरे पास अब सिर्फ प्रोलितारियत औरतें बच गई हैं। मैं सोचता हू कि अपनी जगह पर तालिया लगुतिना को रख कर दरवाजे पर 'महिला विभाग' का साइनबोर्ड लगा दू और खुद भी बोयार्का चला जाऊ। मुझे बडा अटपटा लगता है यहा, इतनी तमाम औरतो के बीच मैं अकेला आदमी हू। तुम जरा देखते कि किस नफरत से ये लडकिया मुझको देखती है। जरूर वह कहती होगी 'देखो, यह कैसा चट आदमी है, इसने औरो को तो रवाना कर दिया, मगर खुद यही जमा हुआ है।' या मुमकिन है इससे भी कोई बुरी बात कहती हो। तुम्हे मुझको यहा से जाने देना ही होगा।"

मगर अकिम केवल हसा।

बोयार्का मे नये काम करने वाले बराबर आते रहे। उनमे रेलवे स्कूल के साठ विद्यार्थी भी थे।

जुखराई ने रेलवे अधिकारियो को इस बात के लिए भी राजी किया कि नये पहुचने वालो के रहने के लिए वे चार डब्बे बोयार्का भेज दें।

दुबावा की टीम को काम से छुट्टी देकर उन्हे पुश्चावोदित्सा से इजन और छोटी लाइन के मालगाडी के खुले हुए पैसठ डब्बे लाने के लिए भेजा गया। इस काम को उनके दूसरे काम का एक हिस्सा माना गया।

जाने के पहले दुबावा ने तोकारेव को सलाह दी कि क्लावीचेक को शहर से बुला कर उसे बोयार्का मे उन नई सगठित टीमो मे से एक का चार्ज दे दिया जाय। तोकारेव ने ऐसा नही किया। उसे यह नही मालूम था कि दुबावा के इस अनुरोध के पीछे असली कारण क्या है। इसका असली कारण था आना की एक चिट्ठी जो सोलोमेका से आने वाले लोग अपने साथ लाये थे।

आना ने लिखा था

"दिमित्री ! क्लावीचेक और मैंने मिल कर तुम्हारे लिए किताबों का एक गट्ठर तैयार किया है। हम तुमको और बोयार्का के दूसरे काम करने वालो को अपना हार्दिक अभिवादन भेजते हैं। तुम सब बहुत गजब के हो ! हम तुम्हारे लिए शक्ति और उत्साह की कामना करते हैं। कल लकड़ी का शेष स्टाक बाट दिया गया, अब कुछ नही बचा। क्लावीचेक तुमको अपना नमस्कार भेज रहा है। वह बहुत अच्छा काम करने वाला है। बोयार्का के लिए सारी रोटिया वह खुद ही सेंकता है, आटा भी खुद ही सानता है और उसे गूधता भी खुद ही है। बेकरी के दूसरे किसी आदमी पर उसे भरोसा नही है। उसने कही से बहुत अच्छा आटा पा लिया है। और उसकी रोटी अच्छी होती है, कम-से-कम उस रोटी से कही अच्छी होती है, जो मुझे मिलती है। शाम को हमारे सब दोस्त मेरे घर पर इकट्ठा होते हैं—लगुतिना, आर्त्युखिन, क्लावीचेक और कभी-कभी जार्की। हम लोग कभी-कभी साथ-साथ कुछ-कुछ पढते भी हैं। मगर अक्सर हम लोग बातें ही करते है, दुनिया के हर आदमी और हर चीज के बारे मे और खास कर बोयार्का में काम करते हुए तुम लोगो के बारे मे। यहा की लडकिया तोकारेव से बेहद नाराज हैं क्योंकि उन्होंने लडकियो को इस काम पर लगाने से इनकार कर दिया। वे कहती हैं कि कठिनाइया झेलने मे वे किसी से कम थोडे ही हैं। तालिया ने ऐलान किया है कि वह अपने बाप के कपडे पहन कर अकेले बोयार्का चली जायगी। 'देखू वह कैसे मुझे वहा से बाहर करते हैं,' वह कहती है।

"मुझे कोई ताज्जुब न होगा अगर वह सचमुच अपनी बात पूरी कर डाले। मेरा नमस्कार काली-काली आखो वाले अपने दोस्त से कह देना।—आना"

वर्फ का तूफान अचानक ही उन पर टूट पडा। झुके हुए भूरे बादल आसमान भर मे फैल गये और ढेर-ढेर सी वर्फ गिरने लगी। रात आई तो हवा चिमनियो मे हरहरा रही थी और पेडो मे सिसक रही थी। उडते हुए वर्फ के गालो को उसने खदेड कर भगा दिया और जगल की गूजो को अपनी तेज-तीखी आवाज से जगा दिया।

सारी रात तूफान तेजी से चलता रहा और गोकि रात भर अगीठिया सुलगी रहीं, तब भी लोग कापते रहे। स्टेशन की वह टूटी हुई इमारत अन्दर की गरमी को सजो कर नही रख पाती थी।

सवेरे उन्हे गहरी बर्फ के बीच जैसे हल चला कर अपने-अपने हिस्सो पर पहुचना पडा। मगर दरख्तो के बहुत ऊपर सूरज नीले आसमान मे चमक रहा था और कही पर एक भी बादल का टुकडा नही था।

कोर्चागिन और उसके साथी अपने हिस्से मे गिरी हुई बर्फ की सफाई करने के लिए गये। तभी पावेल को इस बात का एहसास हुआ कि सर्दी कितनी तकलीफदेह चीज हो सकती है। ओकुनेव की जाकट एकदम तार-तार हो गई थी और उससे किसी किस्म का बचाव नही होता था। उसके रबड के बडे जूतो मे बराबर बर्फ भरी रहती थी। जब देखो तब वह बरफ मे फस कर निकल जाते थे। और अब उसके दूसरे जूते के तल्ले निकलने की भी बारी आ गई थी। उसकी गर्दन मे दो बडे-बडे फोडे निकल आये थे। ठडे फर्श पर सोने के कारण ऐसा हुआ था। गुलेबन्द की जगह लगाने के लिए तोकारेव ने उसको अपना तौलिया दे दिया था।

पावेल का चेहरा मस्त और उसकी आखे लाल हो रही थी और वह भूत की तरह बर्फ मे अपना बेलचा चला रहा था। तभी एक मुसाफिर गाडी भक-भक करती हुई धीरे-धीरे स्टेशन मे दाखिल हुई। उसके इजन की जान अब-तब हो रही थी और वह बडी मुश्किल से गाडी को इस जगह तक खींच कर ला सका था। लकडी का एक भी कुन्दा इजन के पास वाले कोयले के डब्बे मे नही बचा था। और फायर बाक्स में आखिरी अगारे बुझने की तैयारी मे थे।

इजन ड्राइवर ने चिल्लाकर स्टेशन मास्टर से कहा, "हमे ईंधन दो तो हम और आगे जाय, वरना अभी जब तक इजन मे दम है, हमे गाडी को शण्ट करके सार्डिंग मे ले जाकर डाल देने दो, नही तो और मुसीबत होगी।"

रेलगाडी को साईडिंग मे ले जाकर डाल दिया गया। गाडी को रोक देने की वजह नाराज मुसाफिरो को समझाई गई और डब्बो से शिकायतो और गालियो का एक तूफान सा उठा।

"जाओ, उस बुड्ढे आदमी से बात करो," स्टेशन मास्टर ने तोकारेव की तरफ इशारा करते हुए, जो प्लेटफार्म पर चला आ रहा था, रेलगाडी के गार्डों से कहा। "यहा पर जो तामीरी काम चल रहा है, उसके प्रधान वही हैं। हो सकता है वह स्लेज मे रख कर कुछ लकडी इजन के लिए पहुचा सके। वे लोग स्लीपरो के लिए लकडी के कुन्दे इस्तेमाल कर रहे हैं।"

जब कडक्टरो ने तोकारेव के सामने अपनी माग रक्खी तो उसने कहा, "मैं तुम्हे लकडी दूगा, मगर इसके लिए तुम्हे दाम देना पडेगा। आखिर यह हमारे तामीरी काम का मसाला है। इस वक्त बर्फ के कारण हमारा काम रुका हुआ है। तुम्हारी गाडी मे करीब छ-सात सौ मुसाफिर जरूर होगे।

औरतें और बच्चे गाडी मे रह जाय। और मर्द बाहर आकर शाम तक बर्फ की सफाई मे हमारी मदद करें, यही हमारा कहना है। यह दाम चुकाने के लिए अगर तैयार हो तो मैं तुम्हें जलाने के लिए लकडी दे सकता हू। अगर यह बात उन लोगो को मजूर न हो तो ठीक है, नये साल के पहले दिन तक वे आराम से उसी जगह पर पडे रह सकते हैं।"

"जरा इस भीड को तो देखो जो इधर आ रही है। अरे, इनमे तो औरतें भी है!" कोर्चागिन ने अपनी पीठ पीछे किसी की आश्चर्य से कही गई यह बात सुनी। वह पीछे मुडा। तोकारेव वहा पहुचा।

उसने कहा, "ये लो मैं तुम्हारे लिए एक सौ मददगार लाया हू। इन सबको काम दो और देखना कोई कामचोरी न करने पाये।"

कोर्चागिन ने इन नये आने वालो को काम पर लगा दिया। रेलवे की ठाटदार साफ सुथरी वर्दी पहने एक लम्बे आदमी ने, जिसकी वर्दी मे फर का कालर लगा हुआ था और जिसके सर पर ऊनी कराकुल टोपी लगी हुई थी, नाराजगी से फावडे को घुमाया और एक नौजवान औरत की तरफ मुडा जो उसकी साथिन थी। यह औरत सील मछली के चमडे का हैट लगाये थी जिसके सिरे पर एक भारी सा फुदना लगा हुआ था।

'मैं इस तरह फावडा भर-भर कर बर्फ नही फेंकूगा और किसी की मजाल नही कि मुझे इस काम के लिए मजबूर करे। रेलवे इजीनियर की हैसियत से मैं इस काम का चार्ज ले सकता था अगर मुझे कहा जाता। लेकिन इसकी कोई जरूरत नही कि तुम या मैं, यहा इस तरह हाथ मे फावडा लेकर बर्फ की सफाई करें। यह कायदे के खिलाफ बात है। यह बुड्ढा आदमी कानून तोड रहा है। मैं चाहू तो उसका चालान करवा सकता हू। तुम्हारा फोरमैन कहा है?" उसने अपने पास खडे हुए एक मजदूर से आदेश के स्वर मे पूछा।

कोर्चागिन वहा आ गया।

"आप काम क्यो नही कर रहे हैं, महाशय?"

उस आदमी ने उपेक्षा के साथ पावेल को ऊपर से नीचे तक देखा।

"मगर आप कौन हैं?"

"मैं एक मजदूर हू।"

"तब मुझे आपसे कुछ नही कहना है। मेरे पास अपने फोरमैन को या जिस भी नाम से आप उसे पुकारते हो भेज दीजिए।"

कोर्चागिन के माथे मे बल पड गये।

"अगर आप काम नही करना चाहते, तो मत करिए। मगर आप वापिस अपनी गाडी मे नही पहुच सकते जब तक कि आपके टिकट पर हमारे दस्तखत न हो। यह हमारे प्रधान का आदेश है।"

"और आप ?" पावेल ने उस औरत की तरफ मुडते हुए कहा। और उस ओर नजर पडते ही उसे तो जैसे काठ-सा मार गया। उसके सामने तोनिया तुमानोवा खडी थी।

तोनिया को यकीन नहीं आ रहा था कि यह आवारा सा आदमी, जो फटे-पुराने कपडे और सडे-गले जूते पहने खडा था, जिसके गले मे एक गदी-सी तौलिया बधी थी और जिसने शायद कई दिन से मुह भी नही धोया था, वही कोर्चागिन था जिसे वह कभी जानती थी। सिर्फ उसकी आखें अब भी अगारो की तरह चमक रही थी, जैसी कि तब चमकती थी। उसे पावेल की आखो की याद थी। उसे देख कर वह शर्म से गड गई कि अभी कुछ ही साल पहले उसने इस आवारा शक्ल आदमी को अपनी मुहब्बत दी थी। हर चीज कैसी बदल गई थी।

उसने हाल मे शादी की थी और वह अपने पति के साथ शहर जा रही थी, जहा वह रेलवे विभाग मे ऊचे पद पर था। भला किसने सोचा था कि अपने कैशोर्य का प्रेमपात्र उसे यहा इस रूप मे मिल जायगा! उससे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढाने मे भी उसे झिझक हुई। वासिली क्या सोचेगा ? कितनी बुरी बात है कि कोर्चागिन का ऐसा पतन हो गया है। जाहिर है कि इस फायरमैन को मजदूर की हैसियत से ऊपर उठने का मौका नही मिला।

वह हिचकिचाती हुई खडी रही। उसके गाल जल रहे थे। इसी बीच रेलवे इजीनियर ने, जो इस आवारे की ढिठाई पर तैश खाता खडा था क्योकि वह उसकी बीवी को घूर रहा था, अपने हाथ का बेलचा फेंक दिया और अपनी बीवी के बगल मे जाकर खडा हो गया।

"चलो तोनिया चलें, मैं इस लाात्सरोनी[१] की सूरत अब और नही बर्दाश्त कर सकता।"

कोर्चागिन ने जिसेपी गैरवाल्डी पढा था और उसे इस शब्द का मतलब मालूम था।

"मैं भले लात्सरोनी होऊ, मगर तुम तो एक गलीज बुर्जुआ हो," उसने फटी हुई आवाज मे कहा और तोनिया की तरफ मुडते हुए रूखे अन्दाज मे

---

१ नेपुल्स शहर का रहने वाला आवारागर्द लडका जो छोटे-मोटे काम करके और भीख माग कर जीवन निर्वाह करता है।

कहा, "कामरेड तुमानोवा, वेलचा ले लो और काम शुरू कर दो। इस बैल के उदाहरण पर मत चलो.. माफ करना अगर तुम्हारा इससे किसी तरह का सम्बध हो।"

पावेल ने तोनिया के फर के जूतो पर निगाह डाली और मुस्कराते हुए कहा

"मैं तुम्हे यहा रुकने की सलाह न दूगा। कल रात लुटेरो ने हम पर हमला किया था।"

यह कह कर वह घूमा और चल पडा, उसके रवड के वडे जूते फटाफट वज रहे थे।

उसके आखिरी शब्दो का रेलवे इजीनियर पर असर हुआ और तोनिया ने उसे रुकने और काम करने के लिए राजी कर लिया।

उसी शाम को, दिन का काम खतम हो जाने पर काम करने वालो की भीड स्टेशन वापस आई। तोनिया का पति वडी जल्दी कर रहा था ताकि सबसे आगे पहुच जाय और रेलगाडी मे उसे अच्छी सीट मिल जाय। तोनिया ने, जो मजदूरो की एक टोली को रास्ता देने के लिए रुक गई थी, पावेल को दूसरे सव काम करने वालो के पीछे-पीछे थके हुए कदमो से, अपने वेलचे का सहारा लेकर धीरे-धीरे चलते देखा।

"हलो पावलुशा," उसने कहा और उसके साथ हो ली और उसके वगल-बगल चलने लगी। "मैंने कभी नही सोचा था कि मैं तुमको यहा ऐसी हालत मे पाऊगी। अधिकारियो को इतना तो मालूम होगा ही कि तुम्हारी योग्यता इससे ज्यादा है कि तुम बस एक मजदूर बना कर छोड दिये जाओ? मैंने तो सोचा था कि तुम कवके कमिसार या ऐसे ही किसी दूसरे पद पर पहुच गये होगे। वडे अफसोस की वात है कि जिन्दगी ने तुम्हारे साथ ऐसी वेरहमी की।"

पावेल रुका और उसने कुछ आश्चर्य से तोनिया को देखा।

"और न मैंने कभी समझा था कि तुम्हारा नजरिया इतना तग होगा," उसने अपनी भावनाओ को व्यक्त करने के लिए सभ्य से सभ्य शब्द तलाश करते हुए कहा।

तोनिया के कान की लवे जल रही थी।

"तुम अव भी हमेशा ही की तरह वदजवान हो!"

कोर्चागिन ने अपना वेलचा उठा कर कधे पर रख लिया और आगे बढता रहा। कुछ कदम जाकर वह रुका।

"कामरेड तुमानोवा" उसने कहा, "मेरी वदजवानी तुम्हारी सभ्यता से कहीं अच्छी है। और जहा तक मेरी जिन्दगी का ताल्लुक है, उसकी फिक्र न करो। उसमे कोई गडबडी नही है। गडवडी तुम्हारी जिन्दगी मे है, जैसा मैंने

सोचा था उससे कही ज्यादा। दो साल पहले तुम बेहतर थी, तब तुम्हे एक मजदूर से हाथ मिलाने मे कम से कम शर्म तो नही मालूम होती थी। मगर अब तुमसे कपूर की गोलियो की बदबू आती है। सच बात यह है कि तुम्हारे और मेरे बीच अब कोई मिलने की जगह बाकी नही रही और हमारा एक-दूसरे से कुछ भी कहना बेसूद है।"

पावेल को आर्तेम की एक चिट्ठी मिली थी जिसमे लिखा था कि वह शादी करने जा रहा है और पावेल से जोर देकर उसने कहा था कि हर हालत मे वह शादी मे शरीक हो।

हवा का एक झोका पावेल के हाथ से कागज के उस टुकडे को उडा ले गया। यह सब शादी-बारात उसके लिए नही है। इस वक्त भला वह कैसे जा सकता है? अभी कल ही वह भालू पाक्रातोव उसकी टीम से आगे बढ गया था और इतनी तेजी से काम कर रहा था कि सबको देख कर हैरत होती थी। वह जहाजी मजदूर प्रतियोगिता मे पहला स्थान पाने के लिए जान लगा कर कोशिश कर रहा था। यो वह लापरवाह सा आदमी था और इन बातो की उसे फिक्र नही रहती थी। मगर अब उस लापरवाही की उसके यहा कोई जगह न थी और वह जैसे चाबुक मार-मार कर अपने साथी जहाजियो को बेहद तेज रफ्तार से आगे लिये चला जा रहा था।

पतोश्किन उस खामोश तेजी को देख रहा था जिससे कि सब लोग काम कर रहे थे और वह परेशान होकर सिर खुजलाते हुए मन ही मन आश्चर्य मे सोचता था, "ये आदमी है या देवता? ऐसी असभव शक्ति इनके अन्दर कहा से आती है? अगर सिर्फ आठ दिन तक मौसम साफ रहा तो हम कटी हुई लकडियो तक पहुच जायगे। ठीक है, देखो, अभी तुम्हे जिन्दगी मे बहुत कुछ देखना और सीखना है। ये लोग सारे रेकार्ड और सारे अन्दाजे तोड कर रख दे रहे है।"

क्लावीचेक अपनी तैयार की हुई आखिरी रोटिया लेकर शहर से आया। उसने तोकारेव से बात की और फिर कोर्चागिन की तलाश मे निकल गया। दोनो आदमियो ने बडी मुहब्बत से एक-दूसरे से हाथ मिलाया। क्लावीचेक ने खुल कर मुस्कराते हुए थैले मे हाथ डाला और स्वीटन की बनी हुई चमडे की एक बडी खूबसूरत जाकट निकाली जिसमे फर का स्तर लगा हुआ था।

"यह तुम्हारे लिये है।" उस नर्म चमडे को थपथपाते हुए उसने कहा। "बूझो तो किसने भेजा है? क्या, तुम्हे नही मालूम? हो यार तुम सचमुच बडे बुद्धू! कामरेड उस्तिनोविच ने भेजा है इसे, ताकि तुम्हे सर्दी न लग

जाय। उसको यह चीज ओलशिन्स्की से मिली थी। उससे लेकर उस्तिनोविच ने मीधे मेरे हाथ मे पकडा दिया ताकि मैं तुम्हे लाकर दे दू। अकिम ने उसको बताया था कि तुम्हारे पास बस एक पतली सी जाकट है जिसे पहन कर तुम जाडे-पाले मे घूमते रहते हो। ओलशिन्स्की बडा खफीफ हुआ। उसने कहा, 'मैं इस साथी को एक फौजी कोट भेज दूगा।' मगर रिता इसको सुन कर हस पडी और बोली, 'फिक्र न करो, इस जाकट मे वह ज्यादा अच्छा काम करेगा।'

आश्चर्यान्वित पावेल ने उस शानदार जाकट को लिया और फिर कुछ हिचकिचाते हुए उसे अपने सर्दी मे जकडे हुए बदन पर चढा लिया। पहनने के साथ ही उनको उन नर्म-नर्म बालो से, जो उसके सीने और कधो पर फैले हुए थे, अपने जिस्म के अन्दर गर्मी मालूम हुई।

रिता ने अपनी डायरी मे लिखा

"२० दिसम्बर

"आधी और तूफान का रेला चल रहा है। बर्फ और तेज हवा। वहा बोयार्का मे वे लोग अपनी मजिल पर पहुच ही गये थे कि पाले और तूफान ने आकर उनको रोक दिया। वहा उनके गर्दन तक बर्फ जमी हुई है और जमी हुई धरती को खोदना आसान काम नही है। अब मुश्किल से उनका आधा मील का काम बाकी है, मगर यही सबसे कठिन मजिल है।

"तोकारेव ने रिपोर्ट भेजी है कि वहा टाइफाइड जोर से फैला है। तीन आदमियो ने बिस्तर पकड लिया है।"

"२२ दिसम्बर

"कोमसोमोल की सूबा कमिटी का एक पूरा इजलास हुआ था। मगर बोयार्का से उसमें कोई नही शरीक हुआ। बोयार्का से चौदह मील पर लुटेरो ने अनाज की एक गाडी उलट दी है और गल्ले की कमिसारियट के प्रतिनिधि ने आदेश दिया है कि सारे काम करने वालो को उस जगह पर भेज दिया जाय।"

"२३ दिसम्बर

"बोयार्का मे टाइफाइड के और सात मरीज शहर लाये गए हैं। उनमे ओकुनोव भी है। मैं स्टेशन गई थी और मैंने उन लोगो की ठडी, सर्दी से अकडी हुई लाशो को उतारे जाते देखा जो खारकोव की एक गाडी के बफर पर चढ कर आ रहे थे। अस्पताल ठडे पडे हैं, उनको गरम करने का इतजाम नही है। यह मनहूस बर्फ का तूफान पता नही कब खतम होगा ?"

"२४ दिसम्बर

"अभी जुखराई से मिल कर आ रही हू। उन्होने उस उडती हुई खबर की तसदीक की कि ओर्लिक और उसके पूरे गिरोह ने कल रात बोयार्का पर हमला किया था। दो घटे तक लडाई चली। तार-वार सब काट डाले गये थे और कही आज सबेरे जाकर जुखराई को ठीक-ठीक रिपोर्ट मिली। गिरोह को मार कर भगा दिया गया मगर तोकारेव भी घायल हो गया है, एक गोली उसके सीने से पार हो गई है। वह आज शहर लाया जायगा। फ्रॅज क्लावीचेक, जो उस रात सन्तरियो के चार्ज मे था, मारा गया। लुटेरो पर सबसे पहले उसी की निगाह गई थी और उसी ने शोर मचा कर अपने साथियो को होशियार किया था। उसने हमलावरो पर गोली चलानी शुरू की। मगर इसके पहले कि वह स्कूल की इमारत तक पहुच सके, लुटेरे उसके ऊपर चढ आये थे। तलवार के एक वार ने उसको काट कर रख दिया। ग्यारह मजदूर घायल हुए। अब वहा पर दो घुडसवार दस्ते और बख्तरबन्द गाडी पहुच गई हैं।

"तामीरी काम का चार्ज अब पाक्रातोव ने ले लिया है। आज पुजीरेव्स्की ने गिरोह के बचे-खुचे लोगो को ग्लुबोकी गाव मे जा पकडा और उनका सफाया कर दिया। कुछ गैर-पार्टी मजदूर रेलगाडी का इतजार किये बिना पैदल ही शहर के लिए चल पडे, वे पटरी के किनारे-किनारे चले आ रहे हैं।"

"२५ दिसम्बर

"तोकारेव और दूसरे घायल लोग आये और उन्हे अस्पताल मे रख दिया गया। डाक्टरो ने वचन दिया है कि वे बूढे तोकारेव को बचा लेंगे। वह अब भी बेहोश है। दूसरो की जान खतरे मे नही है।

"हम लोगों और सूबे की पार्टी कमिटी के नाम बोयार्का से एक तार आया है जिसमे लिखा है 'लुटेरो के हमले के जवाब मे रेलवे लाइन के हम तामीरी मजदूर, जो 'सोवियत शक्ति के लिए' नामक बख्तरबन्द गाडी के चालको और लाल सेना की घुडसवार रेजिमेट के साथ इस मीटिंग मे जमा हुए हैं, आपके सम्मुख शपथ लेते हैं कि चाहे जो भी अडचनें हमारे रास्ते में आयें, पहली जनवरी को हम जलाने की लकडी शहर को जरूर ही देंगे। अपनी सारी ताकत लगा कर हम लोग काम कर रहे हैं। जिसने हमको यहा भेजा, वह कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद। मीटिंग का सभापति, कोर्चागिन। मत्री, बेर्जिन।'

"क्लावीचेक को सोलोमेका मे फौजी कायदे से दफना दिया गया।"

मंजिल अब दिखाई दे रही थी, मगर उसकी तरफ बढने की रफ्तार इतनी धीमी थी कि तकलीफ होती थी। हर रोज टाइफाइड दर्जनों काम करनेवालो को छीन लेता था।

एक रोज कोर्चागिन, काम पर से स्टेशन लौटते हुए, शराबी की तरह लडखडाता चला आ रहा था। उसकी टांगें टूटी जा रही थी। कई रोज से उसे हरारत रहती थी, मगर आज बुखार की तेजी बहुत बढ गई थी।

टाइफाइड बुखार काम करने वालो की संख्या बराबर घटाता जा रहा था और अब उसे यह एक नया शिकार मिला। मगर पावेल के तगडे जिस्म ने रोग का बहुत मुकाबला किया और लगातार पाच रोज तक उसके अन्दर इतनी ताकत रही कि वह ककरीट के फर्श पर बिछे हुए अपने पुआल के बिस्तरे से उठा और दूसरे काम करने वालो के संग-संग काम मे शरीक हुआ। मगर अब बुखार ने उसके ऊपर काबू पा लिया था। और जब न तो गरम जाकट, न फियोदोर के उपहार के फेल्ट जूते, जिन्हे वह पाले के मारे हुए पैरो मे पहने था, कुछ भी काम आये।

हर कदम के साथ उसके सीने मे बडा तेज दर्द होता था। उसके दात बज रहे थे। और उसकी आखो के आगे धुधलका सा छाया हुआ था जिससे तमाम पेड उसे घूमते नजर आते थे।

बडी मुश्किल से वह किसी-किसी तरह अपने पैरो को घसीटता हुआ स्टेशन पहुचा। वहा पर उसे असाधारण हलचल दिखाई दी जिससे कि वह रुक गया और अपनी बुखार से भारी आखो पर जोर देते हुए उसने देखा कि माल के खुले हुए डब्बो की एक लम्बी गाडी यहा से वहा तक प्लेटफार्म पर खडी है। गाडी मे जो लोग आये थे, वे उन डब्बो मे छोटी लाइन के इजन, रेल की पटरिया और स्लीपर उतार रहे थे। पावेल लडखडाते कदमो से आगे बढा और भहरा कर गिर पडा। उसका सिर जमीन से जा टकराया और उसे भयानक दर्द महसूस हुआ और उसके जलते हुए गालो को बर्फ की ठडक मिली जो उसे अच्छी मालूम हुई।

कई घटे बाद लोगो ने उसे वहा पडे देखा और उठा कर बारक मे ले आये। उसकी सास भारी चल रही थी और उसे अपने आसपास की चीजों का कोई होश न था। बख्तरबन्द गाडी में से एक कम्पाउडर को बुलाया गया और उसने बतलाया कि पावेल को निमोनिया और टाइफाइड है। उसे एक सौ छ डिग्री बुखार था। कम्पाउडर ने उसके जोडो की सूजन और गर्दन पर के उसके जख्मो को भी देखा, मगर उसने कहा कि निमोनिया और टाइफाइड के मुकाबले मे वे कुछ भी नहीं हैं। मरीज की जान लेने के लिए यह निमोनिया और टाइफाइड काफी हैं।

पाक्रातोव और दुबावा ने, जो शहर से आ गये थे, पावेल को बचाने के लिए कोई भी कोशिश उठा न रखी।

अल्योशा कोखान्स्की को, जो पावेल के ही शहर का आदमी था, यह भार सौंपा गया कि वह पावेल को उसके घर वालो के पास ले जाय।

कोर्चागिन की टीम के तमाम काम करने वालो की मदद से और खास तौर से खोलियावा की मदद से पाक्रातोव और दुबावा ने किसी तरह अल्योशा और बेहोश कोर्चागिन को भरे हुए रेलगाडी के डब्बे मे घुसाया। मुसाफिरों को शक हो गया कि टाइफस का मामला है और उन्होने इस बात के लिए बहुत जोर लगाया कि उन लोगो को अन्दर न आने दें। और यह भी धमकी दी कि वे रास्ते मे ही मरीज को उठा कर रेलगाडी से बाहर फेंक देंगे।

खोलियावा ने अपनी बन्दूक उनकी नाक से अडा दी और गरज कर बोला "इसको बीमारी छुतही नही है! और यह इस गाडी पर जायगा ही, चाहे इसके लिए तुम लोगो को इसमे से उठा कर बाहर फेंक देना पडे! और याद रखना जानवरो, अगर तुममे से किसी ने इसको हाथ भी लगाया तो मैं लाइन को खबर भेज दूगा और तुम सबको गाडी से उतार कर जेल मे डाल दिया जायगा। लो, अल्योशा, पावका की यह माउजर लो और जो भी आदमी कुछ गडबड करे, उसे गोली से उडा दो," खोलियावा ने जोर देते हुए अपनी बात खतम की।

रेलगाडी भक-भक भाप छोडती हुई स्टेशन से रवाना हुई। पाक्रातोव दुबावा के पास गया जो वीरान प्लेटफार्म पर खडा था।

"तुम्हारा क्या खयाल है, वह बच जायगा?"

सवाल का कोई जवाब नही मिला।

"चलो मितियाई, इसका कोई इलाज नही है। अब हमी को हर चीज की जवाबदेही करनी पडेगी। हमे रात भर मे इन इजनो को उतार लेना है और सवेरे हम उनको गरमाने की कोशिश करेंगे।"

खोलियावा ने लाइन पर के अपने तमाम चेका के दोस्तो को टेलीफोन किया और उनसे जोर देकर यह कहा कि वे इस बात का खयाल रखें कि बीमार कोर्चागिन को कही पर कोई गाडी से उतार न सके। उसे जब इस बात का पूरा आश्वासन मिल गया तभी वह सोने के लिए गया।

लाइन पर और आगे चल कर एक रेलवे जंक्शन पर सुनहले बालों वाले एक अपरिचित नौजवान का शरीर स्टेशन से गुजरती हुई एक मुसाफिर गाडी के डब्बे से उतार कर प्लेटफार्म पर रख दिया गया। वह कौन था और काहे से मरा, यह किसी को मालूम न था। स्टेशन के चेका के लोग खोलियावा

के अनुरोध को याद कर भागे हुए डब्बे के पास गये, मगर जब उन्होंने देखा कि वह नौजवान मर चुका है, तो उन्होंने कहा कि लाश को मुर्दाघर पहुंचाया जाय और फौरन खोलियावा को बोयार्का टेलीफोन किया कि उसके उस दोस्त की मौत हो गई, जिसकी जान बचाने के लिए वह इतना चिन्तित था।

बोयार्का से कोमसोमोल की सूबा कमिटी के पास एक छोटा-सा तार कोर्चागिन की मौत की खबर देते हुए लिखा गया।

मगर इसी बीच अल्योशा कोखान्स्की ने बीमार कोर्चागिन को उसके घर वालों के हवाले किया और खुद बुखार का शिकार हो गया।

"९ जनवरी

"मेरे दिल में इतना दर्द क्यों होता है? लिखने के लिए बैठने के पहले मैं जार-जार रोई। कौन इस बात का यकीन करेगा कि रिता रो भी सकती है और इतनी असह्य व्यथा से? मगर क्या आंसू सदा कमजोरी की निशानी होते हैं। आज मेरे आंसू दिल को झुलसा देने वाले दर्द के हैं। आज इस विजय के दिन यह शोक क्यों आया—जब कि जाडे-पाले की भयानक मुसीबतों पर जीत हासिल कर ली गई है, जब कि रेलवे स्टेशन उस अनमोल चीज, जलाने की लकड़ी, से अटे हुए हैं, जब कि मैं अभी-अभी इस विजय के उत्सव से लौटी हूं, शहर की सोवियत की बड़ी मीटिंग से जिसमें इस तामीरी काम के वीरों का सम्मान किया गया। यह विजय तो है, मगर इसके लिए दो आदमियों ने अपनी जानें दी हैं—क्लावीचेक और कोर्चागिन ने।

"पावेल की मौत ने मेरी आंखें खोल दी हैं और मैं इस सचाई को देख रही हूं कि वह मेरा इतना प्रिय था जितना कि मैंने कभी नहीं सोचा था।

"और अब मैं इस डायरी को बन्द करती हूं। मुझे शक है कि मैं फिर शायद कभी शुरू न कर सकूंगी। आज ग्यारकोव एक चिट्ठी भेज रही हूं, जिसमें मैं उक्रेन के कोमसोमोल की केन्द्रीय कमिटी वाले काम के लिए अपनी स्वीकृति लिख दूंगी।"

११ बारह

मगर जवानी की जीत हुई। टाइफाइड पावेल का काम तमाम नहीं कर सका। चौथी बार उसने मौत की सरहद पार की और जिन्दगी को लौट आया। मगर अपने बिस्तर से उठने में उसे पूरा एक महीना लग गया। वह बिल्कुल पीला और कंकाल की तरह हड्डी-हड्डी हो गया था और कांपती

हुई टागो से, बेहद कमजोरी से लडखडाता कमरे को पार करता था और सहारे के लिए दीवार पकड लेता था। अपनी मा की मदद से वह खिडकी के पास पहुचा और बडी देर तक वहा पर खडा-खडा सडक को देखता रहा जहा पिघली हुई बर्फ के गाले शुरुआती वसन्त की धूप मे चमक रहे थे। बर्फ का पिघलना अभी शुरू हो ही रहा था।

खिडकी के ठीक सामने पूरे पेट की एक गोरैया चेरी के पेड की एक शाख पर बैठी हुई अपने पख फुला रही थी और पावेल को घबराई हुई आखो से जल्दी-जल्दी और चुपके-चुपके देख लेती थी।

"अच्छा तो तुम और मैं आखिर जाडे को पार कर ही आये ?" पावेल ने कहा और खिडकी के शीशे पर धीरे से उगली मारी।

उसकी मा ने चौंक कर निगाह उठाई।

"वहा बाहर कौन है जिससे तुम बातें कर रहे हो ?"

"एक गोरैया...और लो अब वह उड भी गयी, शैतान कही की।" और थकी सी मुस्कराहट पावेल के चेहरे पर खेल गयी।

वसन्त के उभार पर आते-आते पावेल शहर वापिस जाने की बात सोचने लगा। अब उसमे चलने-फिरने लायक ताकत आ गयी थी, मगर कोई अज्ञात बीमारी उसको घुन की तरह खाये जा रही थी। एक रोज जब वह बागीचे मे घूम रहा था, तो उसकी रीढ की हड्डी मे ऐसा भयानक दर्द उठा कि उसके लिए खडा रहना मुश्किल हो गया। बडी मुश्किल से वह किसी तरह अपने पाव घसीट कर कमरे मे वापिस पहुचा। दूसरे रोज उसकी पूरी डाक्टरी जाच हुई। पावेल की पीठ की जाच करने पर डाक्टर को उसकी रीढ मे एक गहरा गड्ढा मिला जिसे देख कर आश्चर्य से उसने कहा

"यह घाव तुम्हे कहा लगा ?"

"रोवनी की लडाई मे। हमारे पीछे की बडी सडक को एक तीन इची तोप ने फोड कर रख दिया था और तभी एक पत्थर आकर मेरी पीठ पर लगा था।"

"मगर तुम चलते-फिरते कैसे थे ? क्या इससे कभी तुम्हे कोई परेशानी नही हुई ?"

"नही। चोट लगने के एक-दो घटे तक तो मैं नही उठ सका, मगर फिर सब ठीक हो गया और मैं अपने घोडे पर सवार हो गया और मजे मे मेरा काम चलता रहा। तब से यह पहली मर्तबा मुझे तकलीफ हुई है।"

उस गड्ढे की जाच करते वक्त डाक्टर का चेहरा बहुत गभीर हो गया था।

"न भाई, यह बहुत बुरी चीज है। रीढ को इस तरह झकझोरा जाना उसे पसन्द नही। अच्छा हो कि यह कोई गडबडी न करे और मामला खैरियत से गुजर जाय।"

डाक्टर ने अपने मरीज को कपडा पहनते समय हमदर्दी से और पीडा से देखा, पीडा जिसे छिपाना उसके वस मे न था।

आर्तेम अपनी बीवी के घरवालो के यहा रहता था। उसकी बीवी स्त्योशा मामूली रूप-रग की एक गरीब परिवार की किसान औरत थी। एक रोज पावेल अपने भाई से मिलने के लिए गया। एक धूल मे लिथडा हुआ तिरपट आख का लडका उस छोटे-से गन्दे हाते मे खेल रहा था। उसने पावेल को बडी देर तक घूरा और फिर नाक पोछते हुए जवाब-तलब करने के स्वर मे बोला

"क्या चाहिए ? कौन जाने तुम चोर होओ ! फौरन यहा से चलते बनो नही तो मा तुम्हारी अच्छी तरह खबर लेगी !"

उस गन्दी सी पुरानी झोपडी की एक छोटी खिडकी खुली और आर्तेम ने बाहर झाका।

उसने पुकार कर कहा, "अन्दर चले आओ पावेल !"

एक बुड्ढी स्त्री जिसका चेहरा बहुत पुराने कागज की तरह पीला-पीला था, अगीठी के पास काम कर रही थी। पावेल उसके पास से गुजरा तो उसने पावेल को ऐसी निगाहो से देखा जिसमे दोस्ती नहीं थी और वह अपने बर्तनो की खटर-पटर मे फिर लग गयी।

दो लडकिया, जिनकी रस्सी-जैसी चोटिया थी, अगीठी पर चढ गयीं और वहा से हब्शियों की तरह कुतूहल से मुह फाड कर इस आगन्तुक को देखने लगीं।

आर्तेम मेज से लगी कुर्सी पर बैठा था और उसके चेहरे से जाहिर था कि उसे कुछ-कुछ परेशानी महसूस हो रही है। उसे यह बात मालूम थी कि न तो उसकी मा को यह शादी पसन्द थी और न उसके भाई को। उन लोगो की समझ मे नही आता था कि क्यों आर्तेम, जिसका परिवार कई पीढियो से मजदूरो का परिवार था, राजगीर की उस खूबसूरत लडकी गालिया से, जो दर्जीगीरी करती थी और जिससे तीन साल तक उसका इश्क चला था, सम्बध तोड कर स्त्योशा जैसी एक कुन्दजहन, नासमझ औरत के साथ रहने लगा और क्यों उसने पाच जनों के कुनबे का रोटी कमाने वाला बनना मजूर किया। अब उसकी हालत यह थी कि दिन भर रेलवे के कारखाने मे खटने

के बाद उसे उजडे हुए खेत मे फिर से जान डालने के लिए हल लेकर जुटना पडता था।

आर्तेम को पता था कि पावेल, इस तरह मजदूरो की जमात छोड कर उसके शब्दो में 'मध्यवर्गी' लोगो के साथ आर्तेम के जा मिलने से असहमत था और इस वक्त वह गौर से देख रहा था कैसे उसका भाई उसके वातावरण और परिवेश का जायजा ले रहा है।

कुछ देर तक वे बैठे वैसी ही बेमानी-सी बातें करते रहे, जो अचानक मिल जाने वाले दो लोगो मे यों ही हुआ करती है। थोडी ही देर बाद पावेल जाने के लिए उठा। मगर आर्तेम ने उसे रोक लिया।

"थोडी देर रुको, हमारे साथ खाना खाना। स्त्योशा जरा देर मे दूध लेकर आयेगी। अच्छा तो तुम कल फिर चले जा रहे हो ? अच्छा पावका, यह तो बताओ, क्या तुम्हे इस बात का पूरा यकीन है कि तुम्हारे अन्दर काफी ताकत आ गयी है ?"

स्त्योशा अन्दर आई। उसने पावेल का अभिवादन किया। और आर्तेम से कहा कि उनके साथ खलिहान तक चले और वहा से कोई चीज उठा कर लाने मे उसकी मदद करे। अब पावेल उस कमरे मे उस चिडचिडी बुढिया के साथ अकेला रह गया। खिडकी मे से गिर्जाघर की घटियो की आवाज आ रही थी। बुढिया ने अपने हाथ की तकली रख दी और चिडचिडे स्वर मे बडबडाने लगी

"हे भगवान, आग लगे इस घर के खटराग को, भगवान के स्मरण के लिए भी दो छन नही मिले!" उसने अपना शाल उतार लिया और इस आगन्तुक को उडती निगाहो से देखती हुई उस कोने मे गई जहा देवी-देवताओ के चित्र वगैरह टगे हुए थे, जिन पर वक्त ने कालिख पोत दी थी और जिन पर एक अजीब मुर्दनी सी छायी हुई थी। अपनी लकडी जैसी तीन उगलियो से उसने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया।

अपने मुर्झाये हुए होठो से बुदबुदा कर कहा, "ऐ हमारे बाप, तू जो आसमान पर है, तेरा नाम पाक माना जाय!"

वह आवारा छोकरा बाहर हाते मे एक काले, लटके हुए कान वाले सुअर पर सवार उचक रहा था। अपनी छोटी-छोटी नगी एडिया उसने चुस्ती से सुअर के बगल मे गडा रखी थी और उसके खडे हुए बालो से चिपटा हुआ चीख-चीख कर उस दौडते और हाफते हुए जानवर से कह रहा था "हा पट्ठे, बढा चल, बढा चल!"

वह सुअर पागल की तरह हाते मे दौड रहा था और जी-तोड कोशिश कर रहा था कि किसी तरह उस लडके को गिरा दे। मगर वह तिरपट छोकरा मजबूती से उस पर सवार था।

बुढिया ने अपनी प्रार्थना वन्द की और खिडकी मे से सिर निकाला।

"अरे चाडाल, उतर उस सुअर पर से, नही तो मैं मारते-मारते तेरी चमडी उधेड लूगी ! तेरी ठठरी बधे नासपीटे !"

आखिरकार सुअर को कामयावी मिली और उसने लडके को, जिसने उसकी नाक मे दम कर दिया था, अपनी पीठ पर से गिरा दिया और तब बुढिया सन्तुष्ट होकर अपनी मूर्तियो के पास लौटी और अपने चेहरे पर पवित्र धार्मिक भाव लाते हुए कहने लगी

"तेरी बादशाहत जमीन पर हो. ।"

उसी वक्त लडका दरवाजे की देहलीज पर दिखाई दिया। आसुओं से उसका चेहरा गदा हो रहा था। आस्तीन से अपनी बरावर बहती हुई नाक को पोछते हुए और दर्द के मारे सिसकते हुए उसने रोने के स्वर में कहा

"नानी, मिठा-आ-आ-ई !"

बुढिया गुस्से से लाल होकर उसकी तरफ मुडी।

"अरे हरामजादे, तिरछी आख के भूत, देखता नही कि मैं प्रार्थना कर रही हू ? अभी देती हू मैं तुझे मिठाई, शैतान की औलाद . !" कहते हुए उसने बेंच पर से कोडा उठाया। मगर देखते-देखते लडका नौ-दो-ग्यारह हो गया। अगीठी पर बैठी हुई दोनो नन्ही-नन्ही लडकिया गुपचुप हसने लगी।

और बुढिया ने तीसरी वार प्रार्थना मे अपना मन लगाया।

पावेल उठ खडा हुआ और बिना अपने भाई का इन्तजार किये वाहर निकल गया। बाहर का फाटक वन्द करते हुए उसने देखा कि बुढिया मकान की आखिरी खिडकी में से बडी शक की निगाहों से उसे देख रही है।

"पता नहीं आर्तेम के सिर पर कौन भूत सवार था जो उसे यहा घसीट लाया ? अब जिन्दगी भर के लिए वह यही बध गया। स्त्योशा के हर साल एक वच्चा होगा और आर्तेम यहा पर वैसे ही चिपका रहेगा जैसे घूर पर गोबरैला चिपका रहता है। यह भी मुमकिन है कि वह रेल के कारखाने का काम छोड दे।" उस छोटे से कस्बे की उजटी हुई सडकों पर चलते हुए पावेल के मन मे यही उदास विचार आ रहे थे। "और मुझे देखो कि मैं अपनी जगह पर यह उम्मीद लिए बैठा था कि सियासी काम मे उसकी दिलचस्पी पैदा करू गा।"

पावेल को इस खयाल मे बडी खुशी हो रही थी कि कल वह इस जगह को छोड कर बडे शहर मे चला आयगा जहा उसके तमाम वे दोस्त और साथी

मिलेंगे जिन्हें वह इतना प्यार करता है। बडे शहर की जिन्दगी की हलचल, आदमियो का अन्तहीन ताता, उसकी ट्रामो और मोटर गाडियो की आवाजे, अपनी इन सब चीजो समेत शहर उसे चुम्बक की तरह अपनी तरफ खीचता था। मगर सबसे ज्यादा चाह उसके दिल मे कारखाने की उन बडी-बडी ईंट की इमारतो की थी—कालिख से भरी हुई वर्कशाप मशीनें, ट्रासमिशन बेल्टो की धीमी गूज। उसके मन मे दैत्याकार ढलाई ह्वीलो को बेतहाशा घूमते देखने की, मशीन के तेल की गध सूघने की, तीव्र लालसा थी। ये सारी चीजें उसके व्यक्तित्व का अश बन चुकी थी। इसलिए स्वभावत उसे उन चीजो की तलाश होती थी। यह छोटा सा, खामोश सा कस्बा, जिसकी सडकों पर वह इस वक्त घूम रहा था, उसके मन को एक अजीब तरीके से उदास कर देता था। उसे अब इस बात पर हैरत नहीं होती थी कि अब वह इस जगह पर अजनबी सा महसूस करता है। यहा तक कि दिन के वक्त भी इस कस्बे मे घूमना उसे एक मुसीबत सी मालूम होती थी। अपने मकान के सामने के चबूतरो पर बैठ कर गपशप करती हुई गृहिणियो के पास से गुजरने पर यह मुमकिन नही था कि उनकी बेमतलब बातचीत के कुछ टुकडे उसके कान मे भी न पडते।

"यह कौन है, ठठरी-ठठरी निकल आई है ?"

"लगता है कि इसे तपेदिक हो गई थी। तपेदिक समझती हो, फेफडे की बीमारी होती है।"

"जाकट इसने बडी बाकी पहन रखी है। कही से चुरा कर लाया है, चाहे शर्त बद लो।"

इसी तरह की और भी बहुत सी बातें वह सुनता। इन तमाम चीजो से पावेल का मन बुरी तरह घबरा गया था। ऐसी बातो को सुन कर उसे बडी नफरत मालूम होती थी।

बहुत जमाना हुआ जब से उसने इन चीजो से अपना सम्बध एकदम जड से तोड लिया था। अब उसे कस्बे के मुकाबले में बडे शहर से कही ज्यादा अपनापन महसूस होता था क्योंकि कुछ बडे मजबूत और एक-दूसरे को ताकत देने वाले सम्बध उसे बडे शहर से जोडे हुए थे—ये सम्बध मेहनत और साथियो की दोस्ती और मिल कर लडने-मरने के थे।

अपने विचारो मे डूबा-डूबा बेखबर-सा वह चीड के जगलो में पहुच गया और दोराहे पर थोडी देर के लिए खडा हो गया। उसके दाहिने हाथ पर वह पुराना जेलखाना था जिसे एक ऊची सी, लोहे के नुकीले टण्डे निकली हुई चहारदीवारी जगल से अलग करती थी। जेलखाने के और आगे अस्पताल की सफेद इमारतें थीं।

यही वह जगह थी जहा जल्लाद के फदे ने वालिया और उसके साथियो की जिन्दगी का गला घोट दिया था। पावेल उस जगह पर खामोश खडा रहा, जहा पर फासी की टिकटी रह चुकी थी। फिर धीरे-धीरे चढाई तक गया और चढाई पार कर नीचे उतरा और उस छोटे से कब्रिस्तान पर पहुच गया जहा क्राति के दुश्मनो के आतक राज के शिकार अपनी सामूहिक समाधियो मे पडे हुए थे।

प्यार भरे हाथो ने कब्रों पर सनोवर की शाखें बिछा रखी थी और कब्रिस्तान के चारो तरफ एक साफ-सुथरी हरी सी बाडी बना दी थी। चढाई की चोटी पर खडे हुए चीड के दरख्त सीधे और छरहरे थे और नये-नये घास ने ढलवान पर एक हरी सी रेशमी कालीन बिछा रखी थी।

शहर के सिरे पर की बस्तियो मे जैसे एक उदास और डरी हुई सी शान्ति थी। पेड एक-दूसरे से मानो कानाफूसियो में बातें करते थे और नई जिन्दगी पाई हुई धरती मे से बसन्त की ताजी महक उठ रही थी..। इसी जगह पर पावेल के साथियो ने बहादुरी के साथ मौत का सामना किया था ताकि गरीबी में पैदा हुए लोगो की जिन्दगी खूबसूरत हो सके, उन लोगो की जिन्दगी जिनकी गुलामी पैदाइश के रोज से ही शुरू होती थी।

पावेल ने धीरे-धीरे अपना हाथ उठाया और टोपी उतार ली और एक गहरी उदासी उसके भीतर-बाहर व्याप गयी।

आदमी की सबसे बडी दौलत उसकी जिन्दगी होती है, और जीने के लिए आदमी को बस एक ही जिन्दगी मिलती है। उसे इस तरह अपनी जिन्दगी जीनी चाहिए ताकि उसे मन-ही-मन इस दुख की यत्रणा को न सहना पडे कि उसने अपनी जिन्दगी के साल यो ही गुजार दिये हैं, ताकि उसे इस जिल्लत की आग मे न जलना पडे कि उसका बीता हुआ जमाना नीचे गिरा और ओछा था। उसे इस तरह जीना चाहिए ताकि मरते वक्त वह यह कह सके कि मैंने अपनी सारी जिन्दगी, अपनी सारी शक्ति ससार के पवित्रतम कार्य मे लगाई है—मानव जाति की आजादी की लडाई मे लगाई है। और आदमी को अपनी जिन्दगी के एक-एक क्षण का इस्तेमाल करना चाहिए क्योकि कौन जाने कब कोई अचानक बीमारी या करुण दुर्घटना बीच ही मे उसकी जिन्दगी के सूत को काट दे।

यही बाते सोचता-सोचता कोर्चागिन मुड कर कब्रिस्तान से चल दिया।

घर पर उसकी मा दुखी मन से अपने बेटे के जाने की तैयारी कर रही थी। पावेल ने देखा कि वह उससे अपने आसू छिपाने की कोशिश कर रही है।

आखिरकार उसने बडी हिम्मत करके कहा, "पावलुशा, फिर सोच देखो, शायद तुम यहा रुक सको ? मैं बुड्ढी हुई, इस तरह से अकेले रहना मुझसे बर्दाश्त नही होता। देखो न, चाहे कितने बच्चे किसी के हो, वे सब बडे होकर छोड कर चले जाते है। भला बताओ तुम्हे शहर भागने की क्या जरूरत है ? यहा पर भी तो तुम रह सकते हो या कही ऐसा तो नही है कि शहर की किसी छोकरी से तुम्हारा मन लग गया हो ? तुम सब कभी अपनी बुड्ढी मा को कुछ नही बताते। तमाम लडकों का यही हाल होता है। आर्तेम ने कभी मुझ से एक शब्द नही कहा और जाकर शादी करके बैठ रहा। तुम तो उससे भी गये गुजरे हो। मैं तो तुम्हे तभी देखती हू जब तुम बीमार या घायल होते हो," उसकी मा ने एक साफ-सुथरे झोले मे उसका थोडा-सा सामान रखते हुए धीमे से शिकायत के लहजे मे कहा।

पावेल ने मा के कधे पकड कर उसे अपनी तरफ खीचा और कहा

"मा, मेरे लिए किसी छोकरी से मन लगाने का सवाल नही पैदा होता! क्या तुम नही जानती कि चिडिया अपनी जाति का ही साथी ढूढती है ? और क्या तुम कहोगी कि मैं उस तरह का लडका रहा हू जो तितलियो के पीछे भागता है ?"

उसकी मा बरबस मुस्करा पडी।

"नही मा, मैंने वचन दिया है कि जब तक दुनिया के तमाम थैलीशाहो का नाश नही हो जाता, मैं लडकियो से दूर ही रहूगा। शायद तुम कहोगी कि यह तो जरा लम्बी प्रतीक्षा है। मगर नही मा, अब इन थैलीशाहो के दिन गिने हुए हैं। जल्दी ही जनता का राज कायम हो जायगा और तब तुम्हारे जैसे बुड्ढे लोग, जिन्होने जिन्दगी भर मेहनत-मजदूरी की हैं, इटली जा सकेंगे। तुम जानती हो इटली कहा है ? इटली समुद्र किनारे एक खूबसूरत गरम देश है। वहा पर जाडा नही पडता, मा। हम तुमको अमीरो के महलो मे रखेंगे और तुम लोग आराम से धूप खाना और अपनी बूढी हड्डियो को विश्राम देना और हम लोग इस बीच जाकर अमरीका के थैलीशाहो का सफाया करेंगे।"

"बेटा, यह एक अच्छी परियो की कहानी है, मगर मैं शायद वह दिन देखने के लिए जिन्दा नही रहूगी। तुम बिलकुल अपने दादा की तरह हो। वह जहाज पर काम करते थे और उनके भी दिमाग मे हमेशा तरह-तरह के खयालात भरे रहते थे। बिलकुल आवारा आदमी थे वह, खुदा उनकी रूह को सलामत रखे! उनकी कहानी सेवास्तोपोल की लडाई से खतम हुई और वह एक हाथ और एक टाग गवा कर घर लौटे। उन्होने उनके सीने पर दो क्रॉस लटका दिये, और दो चादी के तमगे। उन्होने बहुत अच्छी उम्र पाई और खूब

बूढे होकर मरे, मगर मरे भयानक गरीबी मे। मिजाज के भी बहुत तेज थे, अपनी बैसाखी से उन्होंने किसी अफसर के सिर पर वार कर दिया और फिर इस जुर्म मे एक साल तक जेल की हवा खाई। तब उनके फोजी क्रॉस भी किसी काम न आये। सच कहती हू कि तू बिलकुल अपने दादा पर पडा है, हू-ब-हू।"

"वह सब तो ठीक है मा, मगर क्या हम लोग ऐसे उदास ढग से विदा होगे एक-दूसरे से ? मुझे मेरा अकार्डियन तो दे। मैंने बहुत दिनो से उसे नही छुआ।"

पावेल ने बाजे के सीप के बने पर्दे पर सिर झुका लिया और बजाने लगा। उसकी मा सुनती रही और हैरान होकर उसके सगीत के अन्दर पैदा होने वाले उस नये गुण के बारे मे सोचती रही, वह गुण जो पहले नही था और अब पता नही उसमे कहा से आ गया था। पहले वह इस तरह कभी नही बजाता था। पहले उसकी धुनो मे बेहद मस्ती रहती थी, एक तरह का मतवालापन, एक नशा सा जिसके लिए पावेल कस्बे भर मे मशहूर था। वह चीज अब चली गयी थी। उसकी उगलियो मे अब भी वही ताकत और वही सफाई थी, मगर वह जो सगीत निकालती थी, वह कही ज्यादा गहरा और भावों के ऐश्वर्य से भरपूर होता था।

पावेल अकेला ही स्टेशन गया।

उसने अपनी मा को घर पर ही रुकने के लिए राजी कर लिया क्योंकि वह जानता था कि स्टेशन पर की विदाई उसके लिए असह्य हो जायगी।

गाडी का इन्तजार करती हुई भीड बेतहाशा गाडी के अन्दर घुसी और एक रेलपेल सी मच गयी। पावेल चढ कर एक सबसे ऊची बर्थ पर बैठ गया और वहा से नीचे के मुसाफिरो का चीखना-चिल्लाना और बेहद आवेश मे बहस-मुबाहसा करना और हाथो से इशारा करना देखता रहा।

हस्बेमामूल आज भी गठरी-मोटरी के अम्बार लगे हुए थे, मगर जल्दी-जल्दी उन्हे सीटो के नीचे सरका कर नजर की ओट कर दिया गया।

रेलगाडी ने जब कुछ रफ्तार पकडी तो शोरगुल थोडा थमा और मुसाफिरो ने दत्तचित होकर पेट-पूजा शुरू की।

पावेल थोडी देर मे सो गया।

कीव पहुच कर पावेल फौरन शहर के बीचोबीच क्रेश्चातिक स्ट्रीट की तरफ चल दिया। धीरे-धीरे उसने पुल को पार किया। सब कुछ पहले ही जैसा था, कुछ भी नही बदला था। चिकनी-चिकनी रेलिगो को हाथ लगाते

हुए उसने पुल को पार किया। पुल से नीचे उतरने के पहले वह जरा देर तक थमा। पुल पर चिड़िया का पूत भी नहीं था। रात का असीम विस्तार उसकी मुग्ध आखो के सामने बडा शानदार दृश्य उपस्थित कर रहा था। क्षितिज अधेरे के मखमली पर्दों मे लिपटा हुआ था और तारे जलते-बुझते जलते-बुझते चमक रहे थे। और नीचे, जहा धरती किसी अदृश्य बिन्दु पर आकाश से मिलती थी, शहर की लाखो रोशनिया अधेरे में चमक रही थी।

बहस के दौरान मे लोगो की आवाजें चढ जाती थी जिससे रात की निस्तब्धता भग होती थी और पावेल का ध्यान टूट जाता था। कोई इधर आ रहा था। पावेल ने बलात अपनी आखें शहर की रोशनियो से हटाई और सीढिया उतरने लगा।

एरिया स्पेशल डिपार्टमेंट मे ड्यूटी पर तैनात आदमी ने पावेल को बताया कि जुखराई को शहर छोडे बहुत दिन हो गये।

उस आदमी ने इस बात का निश्चय करने के लिए कि यह नौजवान वाकई जुखराई का दोस्त है, पावेल से बहुत खोद-खोद कर सवाल किये और अन्त मे उसे बतलाया कि फियोदोर को तुर्किस्तान के मोर्चे पर काम करने के लिए ताशकन्द भेजा गया है। इस खबर से पावेल को इतनी उलझन हुई कि वह और भी तफसील की बातें पूछे बगैर फौरन मुडा और चल दिया। उसके ऊपर थकान का एक दौरा सा पडा जिसने उसे ड्योढी पर बैठ कर सुस्ताने के लिए मजबूर कर दिया।

एक ट्राम घडघडाती हुई गुजर गई और सडक उसकी आवाज से गूज उठी। न जाने कितने लोग उसके पास से गुजरे। पावेल ने औरतों की मस्त हसी के कहकहे सुने, तरह-तरह की आवाजें सुनी—गूजती हुई भारी आवाज, किसी नौजवान की तेज पतली आवाज और किसी बुड्ढे की घरघराती हुई आवाज। तेजी से भागती हुई भीड का यह ज्वार थमने मे नही आता था। तेज रोशनी से चमकती हुई ट्रामे, आख को चौंधिया देने वाली मोटरो की हेडलाइट की तेज रोशनिया, पास के किसी सिनेमा के फाटक पर तेजी से चमकती हुई बिजली की रोशनिया...और सब जगह लोग ही लोग जिनकी बातचीत की अनवरत गूज से सडक भरी हुई थी। यह था एक बडा शहर रात के वक्त!

फियोदोर के चले जाने की खबर से उसने अपने दिल मे जो दर्द महसूस किया था, वह सडक के इस शोरशराबे मे हलका पड गया। अब वह कहा जाय? सोलोमेका मे उसके दोस्त रहते थे, मगर सोलोमेका बहुत दूर था। यहा से पास ही यूनिवर्सिटी स्ट्रीट पर के उस मकान की एक झलक उसे मिली थी। वह क्यो न वही चला जाय? जरूर, यही ठीक होगा। आखिरकार

फियोदार के बाद जिस कामरेड को देखने की उसके दिल मे सबसे ज्यादा चाह थी, वह रिता थी। और शायद अकिम के यहा रात गुजारने का भी कोई बन्दोबस्त हो जाय।

उसने दूर से ही मकान के सिरे वाली खिडकी मे रोशनी देखी। अपने आवेग को दबाते हुए उसने मकान का भारी ओक की लकडी का बना दरवाजा खोला। कुछ पल वह वही ड्योढी पर खडा रहा। रिता के कमरे से आवाजें आ रही थी और कोई गिटार बजा रहा था।

"ओ हो, तो अब वह गिटार की इजाजत देती है, इसका मतलब है कि अब उतनी सख्ती नही है," उसने अपने मन मे कहा। फिर धीमे से दरवाजे पर दस्तक दी और अपने मन के आवेग को दबाने के लिए होठ काटने लगा।

घुघराली लटो वाली एक नौजवान औरत ने दरवाजा खोला। उसने सवाल करती हुई आखो मे कोर्चागिन को देखा।

"आप किसको चाहते हैं ?"

वह दरवाजा खोले खडी रही और कमरे के अन्दर की एक झलक पावेल को मिली जिससे उसको लगा कि आना बेकार हुआ।

"क्या मैं उस्तिनोविच से मिल सकता हू ?"

"वह यहा नही हैं। पिछली जनवरी मे वह खारकोव चली गई और सुनती हू कि अब वह मास्को मे हैं।"

"कामरेड अकिम यहा रहते हैं या वह भी चले गये ?"

"कामरेड अकिम भी अब यहा नही हैं। अब वह ओडेसा के कोमसोमोल के मत्री है।"

अब पावेल के पास इसके सिवा कोई चारा न था कि लौट पडे। शहर लौटने का उसका सारा उत्साह और खुशी अब ठडी पड गई थी।

अब फौरी सवाल यह था कि रात कहा गुजारी जाय।

"चाहो तो ऐसे दोस्तो की तलाश मे, जो अब यहा नही हैं, तुम अपनी टागो को थका-थका कर चूर कर डालो," उसने अपनी निराशा की घूट पीते हुए बडबडा कर अपने मन मे कहा। फिर भी उसने एक बार और अपनी किस्मत अजमाने का फैसला किया। देखू, पाक्रातोव अब यहा रहता है या नही। वह जहाजी मजदूर घाट के पास रहता था जो कम से कम सोलोमेका से तो ज्यादा पास पडता था।

पाक्रातोव के घर पहुचते-पहुचते वह थक कर चूर हो गया था। पावेल ने उस दरवाजे पर, जिस पर कभी पीला रोगन पोता गया था, दस्तक देते हुए अपने मन मे इस बात का पक्का निश्चय किया, "अगर वह भी यहा नही

हो, तो फिर मैं और किसी की तलाश नही करूगा। मैं किसी किश्ती के नीचे घुस कर वही रात गुजार दूगा।"

दरवाजा एक बूढी औरत ने खोला जिसने ठुड्डी के नीचे अपने सिर की रूमाल की गाठ लगा रखी थी। यह पाक्रातोव की मा थी।

"इग्नात घर पर है मा ?"

"अभी-अभी आया है।"

उसने पावेल को नही पहचाना और पीछे मुड कर आवाज दी, "इग्नात, तुमसे कोई मिलने आया है।"

पावेल उसके पीछे-पीछे कमरे मे गया और अपने सामान का थैला फर्श पर रख दिया। पाक्रातोव ने जो मेज पर बैठा खाना खा रहा था, जल्दी से गर्दन मोड कर आने वाले को देखा।

उसने कहा, "अगर तुम्हे मुझसे काम है, तो कुछ देर बैठो। तब तक मैं कुछ पेट-पूजा कर लू। सवेरे से मैंने कुछ नही खाया है," कहते हुए उसने लकडी का एक बडा चमचा उठाया।

पावेल एक तरफ एक टूटी कुर्सी पर बैठ गया। उसने अपनी टोपी उतार ली और अपनी पुरानी आदत के अनुसार उसी टोपी से माथा पोछा।

"क्या सचमुच मैं इतना बदल गया हू कि इग्नात भी मुझे नही पहचान पाता ?" उसने अपने आपसे सवाल किया।

पाक्रातोव ने एक-दो चमचा खाना मुह मे डाला मगर चूकि आगन्तुक कुछ बोला नही, उसने गर्दन मोड कर उसको देखा।

"कहो-कहो किस परेशानी मे हो ?"

उसके हाथ मे रोटी का टुकडा था और उसको पकडे-पकडे उसका हाथ हवा मे टगा रह गया। उसने अपने मिलने वाले को अचरज से आखें मुल-मुलाते हुए घूरा।

"अरे यह क्या ? जरा सोचो तो आज यह कौन !"

पाक्रातोव के सुर्ख चेहरे पर उस घबराहट और हैरत को देख कर पावेल से न रहा गया और वह जोर से हस पडा।

पाक्रातोव जोर से चीखा, "पावका ! मगर हम तो सोचते थे कि तुम्हारा टिकट कट गया। एक मिनट रुको तो, जरा फिर से अपना नाम बतलाना ?"

पाक्रातोव की चीखो को सुन कर उसकी बडी बहन और मा बगल के कमरे से दौडी हुई आई। उन तीनो ने पावेल के ऊपर सवालो की तब तक झडी लगा दी, जब तक कि उन्हें पूरी तरह इस बात का सन्तोष नही हो गया कि यह और कोई नही, पावेल कोर्चागिन ही है।

घर के सब लोगो के सो जाने के बहुत बाद तक पाक्रातोव पिछले चार महीने की घटनाओं खुलासा पावेल को देता रहा।

"जार्को और मितियाई पिछले जाडे मे न्नारकोव चले गये। और जानते हो कहा गये दोनो ? कम्युनिस्ट यूनिर्वासिटी मे। हा-हा कम्युनिस्ट यूनिर्वासिटी मे ! उसके तैयारी कोर्स मे उनको जगह मिली। पहले हम लोग पन्द्रह जन थे। तुम्हारे इस खादिम ने भी दाखिले के लिए एक अर्जी दे दी थी। मैंने सोचा कि अच्छा रहेगा, दिमाग मे पडा हुआ कुछ भूसा खारिज होगा। और क्या तुम इस बात का यकीन करोगे कि परीक्षा बोर्ड ने मुझे फेल कर दिया !"

इस चीज की याद करके पाक्रातोव ने गुस्से से उह किया और अपनी बात जारी रखी

"पहले तो सब कुछ बडे मजे मे चलता रहा। मेरी सभी बातें ठीक थी मेरे पास पार्टी कार्ड था, काफी दिन मैं कोमसोमोल मे रह चुका था, मेरे पिछले जमाने के रेकार्ड मे कोई बुरी बात न थी। मगर जब सियासी जानकारी की बात आई तो मैं मुसीबत मे पड गया।

"मेरे और परीक्षा बोर्ड के एक दूसरे कामरेड के बीच बहस छिड गई। जरा सोचो तो उसने यह कैसा छोटा-सा बेहूदा सवाल मुझ से कर दिया 'बतलाओ कामरेड पाक्रातोव, दर्शन-शास्त्र के बारे मे तुम क्या जानते हो ?' भाई सच बात तो यही थी कि मुझे दर्शन के बारे मे खाक-बला कुछ भी नही मालूम था। लेकिन हमारे साथ घाट पर एक लडका काम किया करता था। वह व्याकरण के स्कूल का विद्यार्थी था और आगे चल कर आवारा हो गया था और यो ही मजे के लिए उसने घाट पर मजदूरी करनी शुरू कर दी थी। हा, तो उसने मुझे ग्रीस के कुछ अक्लमन्द लोगो की जो बात बतलाई थी मुझे याद थी। उसने मुझे बतलाया था कि वे लोग हर चीज का जवाब जानते थे और उन्हे दार्शनिक कहा जाता था। कोई एक आदमी था जिसका नाम ठीक से याद नही, डियोजिनीज या ऐसा ही कुछ नाम था, सारी जिन्दगी वह एक पीपे मे रहता आया उनमे सबसे तेज आदमी था वह जो चालीस बार बात को साबित कर सकता था कि काला सफेद होता है और सफेद काला। जमाने के ठग थे सब, घाघ, समझे न ? हा तो मुझे उस विद्यार्थी की बात याद थी और मैंने अपने मन मे कहा 'अच्छा तो यह मुझे लगी लगाने की कोशिश कर रहा है।' मैंने परीक्षक को चमकती हुई आखो से अपनी तरफ देखता पाया और मैंने उसको अच्छी डाट पिलाई। मैंने कहा, 'दर्शनशास्त्र बिलकुल धोखाधडी है और मैं उसके साथ बिलकुल समझौता करने के लिए तैयार नही हू। हा पार्टी का इतिहास हो तो उसकी बात और है, उसमे जरूर मुझे बहुत दिलचस्पी होगी।' मेरा कहना था कि उन्होंने मुझको

बो-बो लगाई कि मैं क्या बताऊ। उन्होने मुझसे पूछा कि दर्शनशास्त्र के बारे मे सब बेसिरपैर की बातें किसने मेरे दिमाग मे घुसेड दी। तब मैंने उनको उस विद्यार्थी की बात बतलाई और कुछ बातें जो उसने मुझसे कही थी, मैंने उगल दी। फिर तो भाई कमीशन के सारे लोगो के पेट मे हसते-हसते बल पड गये। वे लोग मुझ पर ही तो हस रहे थे। लिहाजा मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ। मैंने कहा, 'तुम मुझे बेवकूफ समझते हो क्या ?' और कमरे के बाहर निकल गया।

"बाद मे उस परीक्षक ने यूवा कमिटी मे जाकर मुझे पकडा और पूरे तीन घटे तक मुझे लेक्चर पिलाया। गरज मालूम यह हुआ कि उस विद्यार्थी के दिमाग मे तमाम बातें उल्टी-पुल्टी भरी थी। अब मुझे ऐसा लगता है कि दर्शनशास्त्र बिलकुल ठीक चीज है और बहुत जरूरी है।

"दुबावा और जार्की इम्तहान मे पास हो गये। मितियाई पढाई मे हमेशा बहुत अच्छा था मगर जार्की मुझसे कुछ ज्यादा अच्छा नही है। जरूर उसके वीरता के पदक ने उसका बेडा पार कर दिया होगा। बहरहाल, मैं तो यही का यही रह गया। उन लोगो के चले जाने के बाद मुझे यही घाट पर प्रबध का काम दे दिया गया—मुझे माल के घाटो का सहायक प्रधान बना दिया गया। मैं हमेशा मजदूर जवानो की तरफ से मैनेजरों से झगडा किया करता था और अब मैं खुद मैनेजर हू।

"अब अगर मुझे कोई आलसी या सनकी आदमी मिलता है, तो मैं मैनेजर और कोमसोमोल के मत्री दोनो की हैसियत से उसकी मुसीबत कर देता हू। मेरी आख मे वह धूल नही झोक सकता। अच्छा अपने बारे मे तो अब मैं बस करता हू। तुम्हे बतलाने को और अब रहा ही क्या ? अकिम के बारे मे तुम्हें मालूम ही है, पुराने लोगो मे अब सिर्फ तुफ्ता ही सूवा कमिटी में बाकी बचा है। अब भी वह अपना वही पुराना काम कर रहा है। तोकारेव सोलोमेका की पार्टी की जिला कमिटी का मत्री है। तुम्हारा कम्यून का साथी ओकुनेव कोमसोमोल की जिला कमिटी मे है। तालिया राजनीतिक शिक्षा विभाग मे काम करती है। स्वेतायेव कारखाने मे तुम्हारा वाला काम करता है। मैं उसे बहुत अच्छी तरह नही जानता। बस सूवा कमिटी मे जब-तब हमारी मुलाकात हो जाती है। वह काफी दिमाग वाला आदमी मालूम होता है। मगर सबसे जरा अलग-थलग रहता है। आना बोहार्ट की याद तुम्हें है ? वह भी सोलोमेका मे है। वह पार्टी की जिला कमिटी की महिला विभाग की प्रधान है। बाकी लोगो के बारे मे मैंने तुम्हे बतला दिया है। हा पावलुशा, पार्टी ने बहुत से लोगो को पढने के लिए भेजा है। सारे पुराने काम

करने वाले मूबे के सोवियत और पार्टी स्कूल में, पढने जाते हैं। मुझको उन्होंने अगले माल भेजने का वादा किया है।"

आधी रात कब की बीत चुकी थी जब वे सोने गये। दूसरे रोज पावेल के उठने के पहले पाक्रातोव घाट पर चला गया था। उसकी बहिन दुमिया ने, जो बडी खूबमूरत लडकी थी और अपने भाई से बहुत मिलती-जुलती थी, पावेल को चाय दी और उमका जी बहलाने के लिए पूरे वक्त बात करती रही। पाक्रातोव का बाप, जो जहाज का इजीनियर था, घर पर नही था।

पावेल ने बाहर निकलने का इरादा किया तो दुसिया ने उसे याद दिलाया "भूलना मत, रात के खाने पर हम लोग तुम्हारा इन्तजार करेंगे।"

पार्टी की मूबा कमिटी मे हमेशा की तरह खूब हलचल थी। मामने का दरवाजा पूरे वक्त खुलता और बन्द होता रहता। गलियारो और दफ्तरो मे भीड लगी हुई थी और प्रबध विभाग के दरवाजे के भीतर से टाइपराइटरों के खटखटाने की मद्धिम आवाज आ रही थी।

पावेल किमी पहचानी हुई शक्ल की तलाश मे गलियारे मे कुछ देर यो ही घूमता रहा। मगर जब उसे कोई भी अपना परिचित न मिला, तो वह सीधे मत्री से मिलने के लिए चला गया। मत्री नीली सी रूसी कमीज पहने एक बडी मी मेज के पीछे बैठा हुआ था। पावेल के अन्दर दाखिल होने पर उसने एक बार नजर उठाकर देखा और फिर से लिखने लगा।

पावेल उमके मामने एक कुर्सी पर बैठ गया और अकिम के उत्तराधिकारी की रूप-रेखा को परखने लगा।

"मुझमे क्या काम है ?" मत्री ने, जो ऊचे गले की कमीज पहने हुए था, अपना लिखना खतम करके उसमे पूछा।

पावेल ने उमको अपनी कहानी सुनाई।

"कामरेड, करना अब यह है कि मदस्यता की सूची मे मुझे एक बार फिर मे जिन्दा करना है। और फिर मुझे रेलवे के कारखाने मे भेज दिया जाय," उमने अपनी बात खतम करते हुए कहा, "उचित आदेश आप दे दीजिए।"

मत्री अपनी कुर्मी पर पीछे की ओर झुका।

उमने कुछ हिचकिचाते हुए जवाब दिया, "हम तुमको सदस्यों की सूची मे फिर मे रख तो लेंगे, इममें तो कोई कहने की बात ही नही। मगर तुम्हे कार-खाने मे भेजने मे जरा दिक्कत होगी। वहा पर स्वेतायेव है। वह मूबा कमिटी का मेम्बर है। तुम्हारे लिए हमको कुछ और काम ढूढना होगा।"

कोर्चागिन ने अपनी आखें छोटी करते हुए कहा

"मैं स्वेतायेव के काम मे कोई दखलन्दाजी नही करना चाहता। मैं अपने पेशे का काम करना चाहता हू, कोई पार्टी मत्री का काम तो चाहता नही। और चूकि मेरी सेहत अब भी जरा खराव है, इसलिए मैं आप से दरखास्त करूगा कि मुझे और कोई काम न दें।"

मत्री ने उसकी बात मान ली। कागज के एक टुकडे पर उसने कुछ शब्द घसीट कर लिखे।

"इसे कामरेड तुफ्ता को दे देना, वह सारा बन्दोबस्त कर देंगे।"

कार्यकर्ता विभाग मे पावेल ने तुफ्ता को अपने सहायक को डाटते पाया। पावेल एक-दो मिनट तक उन दोनो की गरमा-गरम बातचीत सुनता खडा रहा। मगर जब उसने देखा कि उसके जल्दी खत्म होने के कोई आसार नही है, तो उसने बीच ही मे उसकी वक्तृता को काट दिया।

"अपनी बहस फिर खतम कर लेना तुफ्ता। मेरे कागजात ठीक करने के लिए यह देखो तुम्हारे लिए एक पत्र है।"

तुफ्ता बात को न समझते हुए कभी उस कागज को देखता और कभी कोर्चागिन को। आखिरकार बात उसकी समझ मे आई।

"ओह जरा रुकना तो! तो तुम मरे नही? वाह रे, मगर बताओ किया क्या जाय? सदस्यो की सूची मे से तुम्हारा नाम काट दिया गया। मैंने खुद तुम्हारा कार्ड केन्द्रीय कमिटी को लौटा दिया। इतना ही नही, पार्टी की मर्दुमशुमारी मे से भी तुम बाहर रहे हो और कोमसोमोल की केन्द्रीय कमिटी के सरकुलर के अनुसार वे लोग जो मर्दुमशुमारी में नही आये, उन्हे कोमसोमोल के बाहर समझ लिया गया। इसलिए अब अकेली सूरत यह है कि तुम फिर नये सिरे से बाकायदा सदस्यता के लिए अर्जी दो।" तुफ्ता ने ऐसे लहजे मे बात कही जैसे वह किसी की बात सुनने के लिए तैयार न हो।

पावेल की त्योरी चढ गई।

"अब भी तुम्हारे वही पुराने ढग है? तुम हो तो नौजवान आदमी, मगर बूढे से बूढे, खूसट से खूसट कानूनी चूहे से भी गये-गुजरे हो। बोलोदका, कब तुम्हे समझ आयेगी।"

तुफ्ता ऐसे उछल पडा जैसे किसी पिस्सू ने उसे काट लिया हो।

"बराय मेहरबानी मुझे लेक्चर न दीजिए। यहा का चार्ज मेरे जिम्मे है। सरकुलर मे जो आदेश दिये जाते हैं, वह उनका पालन करने के लिए हैं, उल्लघन करने के लिए नही। और तुम चूहा कह कर मेरा अपमान कर रहे हो, इसका मजा मैं तुम्हे चखाऊगा।"

तुफ्ता ने बहुत धमकी के लहजे मे अपनी बात कही थी, जैसे वह अभी कुछ कर गुजरेगा। अपनी बात कह कर उसने ऐसा इशारा किया कि जैसे

मुलाकात अब खतम हो गई और फिर सामने की बन्द डाक के ढेर को अपनी तरफ खीचा।

पावेल धीरे-धीरे दरवाजे की तरफ बढा, मगर फिर कुछ याद करके वापिस लौटा और तुफ्ता के सामने पडे हुए मत्री के पत्र को उठा लिया। तुफ्ता ने उसे गौर से देखा। कार्यकर्ता विभाग के इस क्लर्क मे अजीब कोई बात थी जो उतनी ही नाखुशगवार थी जितनी कि बेवकूफी से भरी हुई। वह बूढे आदमी की तरह बदमिजाज और छोटी-छोटी बातो को लेकर अडने वाला था। उसके बडे-बडे कान जैसे हरदम खडे रहते थे कि कब कोई बात हो और वह उलझ पडे।

पावेल ने शान्त मगर मजाक उडाती हुई आवाज मे कहा, "अच्छा तुम मुझको इसके लिए दोष दे सकते हो कि मैंने मेम्बरी के तुम्हारे तमाम आकडे उलट-पुलट दिये हैं। मगर जरा मुझको बतलाओ कि तुम ऐसे लोगो को कैसे डाट सकते हो जो पहले से बिना बाकायदा नोटिस दिये मर गये हो? आखिर को कोई आदमी चाहे तो बीमार पड सकता है, या मर सकता है, अगर उसके जी मे आये। और मैं तो शर्त बद सकता हू कि तुम्हारे सरकुलर मे इसके बारे मे कुछ भी नही लिखा होगा।"

तुफ्ता का सहायक अपनी तटस्थता को अब और कायम नही रख सका और हो-हो-हो करके जोर से हस पडा।

तुफ्ता की पेन्सिल की नोक टूट गई और उसने उसे उठाकर फर्श पर फेंक दिया। मगर इसके पहले कि वह अपने प्रतिपक्षी को कोई जवाब दे सके, बहुत से लोग बातें करते और हसते हुए कमरे मे घुस आये। उनमे ओकुनेव भी था। लोगो ने जब पावेल को पहचाना, तो सब मे बडी खलबली मची और फिर पावेल से सवाल पर सवाल होने लगे। चन्द मिनट बाद नौजवानो की एक दूसरी टोली आई। उनमे ओल्गा यूरेनेवा भी थी। पावेल को फिर से देखने का उसे ऐसा झटका लगा और इतनी खुशी हुई कि वह जैसे बेसुध होकर बडी देर तक उसके हाथ को पकडे खडी रही।

और पावेल को दुबारा अपनी कहानी नये सिरे से सुनानी पडी। अपने साथियो की सच्ची खुशी, उनकी खुली हुई दोस्ती और सहानुभूति, आजिजी से उनका हाथ मिलाना और दोस्ताना अन्दाज मे उसकी पीठ को थपथपाना— इन सबसे पवेल थोडी देर के लिए तुफ्ता को भूल गया।

मगर जब उसने अपनी कहानी खतम की और तुफ्ता के साथ हुई बातचीत का हाल साथियो को बतलाया तो सब बहुत बिगड उठे। ओल्गा प्रलयकर आखो से तुफ्ता को देखती हुई मत्री के दफ्तर मे चली गई।

"चलो हम लोग नेज्दानोव के यहा चलें," ओकुनेव ने जोर से कहा,

"वह इसकी अकल ठिकाने लगा देगा।" और यह कहते हुए उसने पावेल का कन्धा पकडा और इन नौजवान दोस्तो की पूरी टोली ओल्गा के पीछे-पीछे मत्री के दफ्तर मे जा पहुची।

"इस तुफ्ता को यहा के काम पर से हटा कर वहा घाट पर पाक्रातोव के नीचे कुली का काम देना चाहिए, साल भर के लिए। बडा जलील नौकरशाह है!" ओल्गा ने बिफरते हुए कहा।

सूबा कमिटी का मत्री मुस्कराता हुआ ओकुनेव, ओल्गा और दूसरो की इस बात को सुनता रहा कि तुफ्ता को कार्यकर्ता विभाग से अलग कर देना चाहिए।

उसने ओल्गा को आश्वासन दिया, "इसमे तो कोई बहस ही नही कि कोर्चागिन को फिर से सूची मे शामिल कर लिया जायगा। अभी इस वक्त उसे एक नया कार्ड दे दिया जायगा। मैं तुम से सहमत हू कि तुफ्ता कानून की लकीर का फकीर है। यही उसकी खास कमजोरी है। मगर यह मानना होगा कि उसने अपना काम बुरा नहीं किया है। जहा-जहा मैंने काम किया है, मैंने देखा है कि कोमसोमोल के कार्यकर्ताओ के काम के आकडे भयकर गडबडी मे रहे हैं, वे कतई ऐसे नही रहे हैं कि उनकी किसी भी एक सख्या पर भरोसा किया जा सके। हमारे कार्यकर्ता विभाग मे आकडे काफी अच्छी तरह रखे गये हैं। तुम लोग खुद जानते हो कि तुफ्ता अक्सर बैठा रात की रात काम करता रहता है। मैं इस सवाल को ऐसे देखता हू तुफ्ता को अलग करना आसान है लेकिन अगर उसकी जगह कोई मस्त लापरवाह आदमी ले लेता है, जिसे आकडे-वाकडे रखने का हाल कुछ भी नही मालूम, तो नौकरशाहियत से तो हमे छुटकारा मिल जायगा, मगर फिर कोई नियम या व्यवस्था भी नही रहेगी। उसे अपनी जगह पर रहने दो। मैं उसे अच्छी तरह डाट दूगा। फिलहाल इससे काम चल जायगा और आगे चल कर देखा जायगा।"

ओकुनेव ने बात मानते हुए कहा, "अच्छा, ठीक कहते हो, उसको रहने ही दो। चलो पावलुशा, हम लोग सोलोमेका चले। वहा पर आज रात क्लब मे पार्टी की मीटिंग है। किसी को अभी यह नही मालूम कि तुम लौट आए हो। सोचो, सबको कितनी हैरानी होगी जब हम ऐलान करेंगे—अब कोर्चागिन तकरीर करेगा। सचमुच पावलुशा, तुम बडे गजब के आदमी हो जो नही मरे। भला बताओ, तुम मर गये होते तो मजदूर वर्ग के किस काम के होते।" कहते हुए ओकुनेव ने अपने दोस्त को अपनी बाह मे भर लिया और गलियारे मे उसे ले चला।

"तुम चलोगी ओल्गा?"

"जरूर, जरूर।"

कोर्चागिन पाक्रातोव के यहा रात के खाने पर नही लौटा। सच बात तो यह है कि सारे दिन वह वहा नही गया। ओकुनेव सोवियत की इमारत मे *अपने कमरे में उसे ले गया। अच्छा से अच्छा खाना जो वह* इकट्ठा कर सकता था, उसने पावेल को दिया और फिर अखबारो का एक ढेर और जिला कोमसोमोल ब्यूरो की मीटिंगो की कार्यवाही की रिपोर्ट की दो मोटी-मोटी फाइलें उसके सामने रखते हुए बोला

"ये सब देख जाओ। तुम जब टाइफस लिए पडे थे और अपना वक्त खराब कर रहे थे, उस बीच बहुत-सी बातें हो गई हैं। मैं शाम को लौटूगा और तब हम लोग साथ-साथ क्लब चलेंगे। अगर थक जाओ तो लेट जाना और थोडा सो लेना।"

अपनी जेबो में तमाम कागजात और जरूरी दस्तावेज भरते हुए (ओकुनेव को सिद्धान्तत पोर्टफोलियो के इस्तेमाल से नफरत थी और वह उसके बिस्तर के नीचे उपेक्षित पडा था) जिला कमिटी के मत्री ने उससे विदा ली और बाहर निकल गया।

जब वह शाम को लौटा तो कमरे के फर्श पर तमाम अखबार बिखरे हुए थे और ढेर भर किताबें बिस्तर के नीचे से बाहर निकाल कर रखी हुई थी। पावेल बिस्तर पर बैठा हुआ केन्द्रीय कमिटी की आखिरी चिट्ठियो को पढ रहा था। ये चिट्ठिया उसे अपने दोस्त की तकिया के नीचे मिली थी।

ओकुनेव ने बनावटी गुस्से से चिल्लाते हुए कहा, "क्या हालत कर रखी है तुमने मेरे कमरे की! ऐ कामरेड! जरा रुको तो! यह तुम क्या कर रहे हो! ये गुप्त कागजात हैं जो तुम पढ रहे हो! यही होता है, मैंने खामखाह तुम जैसे लम्बी नाक वाले आदमी को अपने कमरे मे घुसने दिया।"

पावेल ने मुस्कराते हुए खत उठा कर अलग रख दिया और बोला, "यह खत गुप्त नही था मगर वह वाला जिसे तुम लैम्प के ऊपर लगाये हुए हो, उस पर जरूर 'गोपनीय' लिखा हुआ है। यह देखो, सिरे के आस-पास वह तमाम जल गया है।"

ओकुनेव ने कागज के जले हुए टुकडे को लैम्प पर से निकाला, उसके शीर्षक को देखा और माथा ठोक लिया।

"तीन दिन से मैं इस कम्बख्त के पीछे हैरान हो रहा हू। समझ ही मे नही आता था कि कहा चला गया। अब मुझे याद आया। बोलिन्तसेव ने इसी कागज से अभी उस रोज लैम्प का शेड बनाया था और फिर खुद ही तमाम जगह उसको तलाश करता फिरा था।" ओकुनेव ने बहुत सावधानी से उस कागज को मोडा और गद्दे के नीचे ठूस दिया और पावेल को जैसे विश्वास दिलाते हुए कहा, "थोडी देर बाद हम सब ठीक-ठाक कर लेंगे, अभी चलो

जल्दी-जल्दी कुछ खा लें और भाग कर क्लब चलें। अपनी कुरसी मेज के और पास खींच ली पावेल।"

एक जेब में से उसने अखबार में से लिपटी हुई एक लम्बी-सी सूखी मछली निकाली और दूसरी जेब से डबलरोटी के दो टुकड़े। अखबार उसने मेज पर बिछा दिया, मछली का सिर पकड़ा और मेज के सिरे पर उसे अच्छी तरह ठोका।

मेज पर बैठ कर, अपने जबड़ों का इस्तेमाल बहुत जोश के साथ करते हुए, खुशमिजाज ओकुनेव ने पावेल को तमाम खबरें सुनाईं। वह बीच-बीच में मजाक भी करता जाता था।

क्लब में ओकुनेव कोर्चागिन को पिछले दरवाजे से स्टेज पर ले गया। उस बड़े हॉल के एक कोने में, स्टेज के दाहिनी तरफ पियानो के पास, तालिया लगुतिना और आना बोर्हार्ट रेलवे बस्ती के कुछ कोमसोमोलों के साथ बैठी हुई थीं। रेलवे कारखाने का कोमसोमोल मन्त्री वोलिन्तसेव आना के सामने बैठा हुआ था। उसका चेहरा अगस्त महीने के सेब की तरह सुर्ख था और उसके बाल और भवें पके हुए धान के रंग की थीं। उसकी बहुत ही फटी-पुरानी चमड़े की जाकट किसी जमाने में काली थी।

उसकी बगल में पियानो के ढक्कन पर लापरवाही से कुहनी टिकाए हुए स्वेतायेव बैठा था। वह एक खूबसूरत नौजवान था जिसके बादामी रंग के बाल और बहुत ही खूबसूरत तराशे हुए ओंठ थे। उसकी कमीज गले पर खुली हुई थी।

उस टोली के पास पहुंचते हुए ओकुनेव ने आना को कहते सुना

"कुछ लोग हैं जो इस बात के लिए अपना एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं कि नये मेम्बरों का दाखिला मुश्किल से मुश्किल होता जाय। उन्हीं लोगों में स्वेतायेव भी है।"

"कोमसोमोल कोई सैर-सपाटे का मैदान नहीं है, वह कोई पिकनिक की जगह नहीं है," स्वेतायेव ने किसी की कुछ परवाह न करते हुए कहा।

"वह देखो निकोलाई!" ओकुनेव को देख कर तालिया चिल्लाई, "आज रात वह कैसा चमक रहा है जैसे पालिश किया हुआ समोवार!"

ओकुनेव को सबों ने खींच कर अपने घेरे में ले लिया और उन पर सवालों के गोले दागने लगे।

"तुम कहां रहे?"

"अब मीटिंग की कार्रवाई शुरू करनी चाहिए।"

ओकुनेव ने सबको खामोश करने के लिए हाथ उठाया।

"और कुछ देर इन्तजार करो दोस्तो। तोकारेव के आते ही हम लोग मीटिंग शुरू कर देंगे।"

"वह लो, वे भी आ गये," आना ने कहा।

पार्टी की जिला कमिटी के मन्त्री तोकारेव चले आ रहे थे। उनसे मिलने के लिए ओकुनेव दौड़कर उनकी तरफ बढ़ा "आओ काका, चल कर स्टेज के पीछे मेरे एक दोस्त से मिलो। मगर एक झटके के लिए अपने को तैयार कर लो!"

"क्या मामला है?" बुड्ढे ने अपने सिगरेट का कश लेते हुए अपनी भारी आवाज मे गुर्रा कर कहा, मगर ओकुनेव तो आस्तीन पकड कर उन्हें खींचे लिये जा ही रहा था।

ओकुनेव ने चेयरमैन की घंटी इतने जोर से बजाई कि मीटिंग में आये हुए सबसे बातूनी लोग भी चुप हो गये।

तोकारेव के पीछे, सदाबहार लताओ के फ्रेम मे से कम्युनिस्ट घोषणापत्र की रचना करने वाली महान प्रतिभा मार्क्स का शेर बबर जैसा सिर सभा को देख रहा था। ओकुनेव मीटिंग की कार्यवाही शुरू कर रहा था। और इस बीच तोकारेव की आखें बराबर कोर्चागिन पर लगी हुई थी जो बगल मे खडा हुआ अपने बुलाये जाने का इन्तजार कर रहा था।

"साथियो! इसके पहले कि हम एजेंडे पर के सगठनात्मक सवालों पर बहस करें, यहा पर एक साथी ने बोलने की इजाजत मागी है। मेरा और तोकारेव का प्रस्ताव है कि उस साथी को बोलने का मौका दिया जाय।"

हॉल मे से श्रोताओ की सहमति का स्वर उठा और तब ओकुनेव ने कहा

"मैं पावका कोर्चागिन को तकरीर करने के लिए बुलाता हू!"

हॉल के सौ लोगो मे से कम से कम अस्सी लोग कोर्चागिन को जानते थे और जब उसकी वह परिचित आकृति फुटलाइट के सामने आकर खडी हुई और उस लम्बे पीले नौजवान ने बोलना शुरू किया, तो श्रोताओ ने बेइन्तहा खुशी से आवाजें करनी और जोर-जोर से तालिया बजानी शुरू की।

"प्यारे साथियो!"

कोर्चागिन की आवाज सधी हुई थी, मगर वह अपने भावावेश को छिपा नहीं पा रहा था।

"अच्छा तो दोस्तो, मैं तुम लोगो की कतार में अपनी जगह लेने के लिए फिर लौट आया हू। मुझे बडी खुशी है कि मैं एक बार फिर तुम्हारे बीच आ सका। मैं यहा अपने बहुत से दोस्तो को देख रहा हू। मेरा खयाल है कि सोलोमेंका की कोमसोमोल मे अब पहले से तीस फीसदी ज्यादा लोग हैं। अब

वर्कशापो और यार्डों मे सिगरेट लाइटर बनना बन्द हो गया है और रेलवे की कब्रिस्तान मे से मशीनो की बडी-बडी लाशें मरम्मत के लिए आने लगी है। इसका मतलब है कि हमारे देश की नई जिन्दगी शुरू हो रही है और वह अपनी सारी ताकत को इकट्ठा कर रहा है। यह सचमुच एक ऐसी चीज है जिसके लिए जीने मे भी मजा है! ऐसे वक्त भला मैं कैसे मर सकता था!" खुशी की मुस्कराहट से कोर्चागिन की आखें चमकने लगी।

लोगो की तालियो और प्यार के बोलो के तूफान के बीच पावेल मच से उतरा और आना व तालिया के पास चला गया। अपनी तरफ बढे हुए हाथो से उसने हाथ मिलाया और फिर तमाम दोस्तो ने सरक कर अपने बीच उसके लिए जगह बना ली। तालिया ने अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया और कस कर दबाया। आना की आखें अब भी हैरत से फैली हुई थी, उसकी बरौनिया धीमे-धीमे फडक रही थी और जिन आखो से वह पावेल को देख रही थी, उनमे हार्दिक स्वागत का भाव था।

तेजी से दिन बीतते जा रहे थे। मगर उनके बीतने मे कोई एकरसता न थी क्योंकि हर दिन अपने साथ कोई नई चीज लाता था और सबेरे अपने दिन के काम की योजना बनाते वक्त पावेल कुछ क्षोभ से इस बात को लक्ष्य करता था कि सचमुच दिन बहुत छोटा होता है और बहुत कुछ जो करने का उसने इरादा किया था, उसे वह नही कर सका।

पावेल ओकुनेव के साथ रहने चला गया था। वह रेलवे के कारखाने में असिस्टेंट इलेक्ट्रिक फिटर का काम कर रहा था।

पावेल कोमसोमोल के नेतृत्व से कुछ दिन के लिए हटना चाहता था और इस सवाल को लेकर ओकुनेव से उसकी बडी बहस हुई और उस लम्बी बहस के बाद ही ओकुनेव इस चीज के लिए राजी हुआ।

ओकुनेव ने आपत्ति की थी, "हमारे पास यो भी बहुत कम आदमी हैं और तुम वर्कशाप मे जाकर पडे रहने की बात करते हो। मुझे यह न बतलाओ कि तुम बीमार हो। टाइफस के बाद मैं खुद एक महीने तक छडी लेकर लगडाता घूमा था। पावका, तुम मुझे बेवकूफ नही बना सकते, मैं तुम्हे अच्छी तरह जानता हू, जरूर इसमे कोई बात है। बताओ क्या बात है, झट बोल दो," ओकुनेव ने आग्रह करते हुए कहा।

"तुम ठीक कहते हो कोलिया, है, और भी कोई बात। मैं पढना चाहता हू।"

ओकुनेव आवेश मे आकर चिल्लाया, "मैने कहा था न! मैं समझ गया

था कि जरूर कोई बात है ! तुम क्या यह सोचते हो कि मेरे दिल में पढ़ने की ख्वाहिश नहीं है। मगर यह सरासर तुम्हारा स्वार्थीपन होगा। तुम चाहते हो कि हम लोग तो पहिए को अपना कंधा लगाएं और तुम बैठ कर पढ़ो ! न भाई यह नहीं होगा, कल से तुम्हें संगठन-कर्ता का काम शुरू करना होगा।"

मगर खैर एक लम्बी बहस के बाद ओकुनेव मान गया।

"ठीक है, मैं दो महीने तुमसे कुछ नहीं बोलूंगा। मगर मेरी भलमन-साहत, मेरी फराग़दिली की दाद तुम्हें देनी होगी। मगर मेरा खयाल है कि स्वेतायेव से तुम्हारी नहीं बनेगी, वह जरा ज्यादा घमंडी है।"

पावेल के वर्कशाप में आ जाने से स्वेतायेव चौकन्ना हो गया था। उसे इस बात का पूरा यकीन था कि कोर्चागिन के आते ही नेतृत्व के लिए संघर्ष शुरू हो जायगा। उसके अहंकार को चोट लगी और उसने डट कर पावेल का मुकाबला करने का फैसला किया। मगर जल्दी ही उसने यह बात देख ली कि पावेल के बारे में ऐसा सोचना उसकी गलती थी। जब कोर्चागिन को मालूम हुआ कि उसको कोमसोमोल ब्यूरो का सदस्य बनाने की योजना है, तो वह सीधे कोमसोमोल के मंत्री के दफ्तर में गया और उसको इस बात के लिए राजी कर लिया कि इस सवाल को एजेंडे पर से हटा दें। ओकुनेव से उसकी जो बात हुई थी, उसी को उसने कारण के रूप में पेश किया। वर्कशाप के कोमसोमोल की सेल में पावेल राजनीतिक अध्ययन का एक क्लास लेता था। मगर ब्यूरो में काम करने की उसने कोई ख्वाहिश नहीं दिखलाई। सरकारी काम के बाकायदा नेतृत्व में चाहे उसका हिस्सा रहा हो या न रहा हो, लेकिन पावेल का असर सभी कामों में दिखाई दे रहा था। कई मौकों पर उसने अपने दोस्ताना, साथियों जैसे, सीधे-सरल ढंग से स्वेतायेव को मुसीबतों में से निकाला भी था।

एक रोज कारखाने में आकर स्वेतायेव को यह देख कर बहुत हैरत हुई कि कोमसोमोल सेल के तमाम मेम्बर और कोई तीन दर्जन गैर-पार्टी लड़के खिड़कियों को धोने में लगे हैं और मशीनों पर बरसों से जमी गन्दगी को साफ कर रहे हैं और गाड़ी भर-भर के कूड़ा-करकट बाहर यार्ड में फेंक रहे हैं। पावेल के हाथ में एक बड़ा-सा कूंचा था और उससे वह बेतहाशा सीमेंट के फर्श की सफाई किये जा रहा था जिस पर तमाम मशीन के तेल और ग्रीस के धब्बे थे।

स्वेतायेव ने पावेल से पूछा, "कहो, यह कैसी सफाई हो रही है? यह कौन सा मौका है ?"

कोर्चागिन ने संक्षेप में जवाब दिया, "हम इस तमाम गन्दगी से हैरान आ गये हैं। बीस बरस से इस जगह की सफाई नहीं हुई, अब हम लोग हफ्ते भर में इसे चमका कर एकदम नया कर देंगे।"

स्वेतायेव ने अपने कंधे उचकाये और चला गया।

अपने वर्कशाप की सफाई से एलेक्ट्रीशियनो का जी नही भरा, तो उन्होने कारखाने के हाते की भी सफाई मे हाथ लगाया। बरसो से उस लम्बे-चौडे हाते का इस्तेमाल कूडे के ढेर की शक्ल में हो रहा था जहा पर तमाम इस्तेमाल से खारिज सामान फेंक दिया जाया करता था। गाडी के सैंकडो पहिये और ऐक्सेल, जग लगे लोहे के पहाड, रेल की पटरिया, ऐक्सेल बॉक्स— हजारों टन लोहा वहा खुले आसमान के नीचे पडा जग खा रहा था। मगर कारखाने के व्यवस्थापको ने इन नौजवानो के काम को रोक दिया।

उन्होने कहा, "हमारे सामने ज्यादा अहम मसले हैं। हाते की सफाई अभी कुछ दिन तक रुक सकती है।"

लिहाजा एलेक्ट्रीशियनो ने वर्कशाप के दरवाजे के सामने की थोडी सी जगह को पक्का कर दिया, दरवाजे के बाहर तार का एक पाव-पोश रख दिया और फिलहाल बात इतने पर ही छोड दी। मगर वर्कशाप के अन्दर काम के घटो के बाद सफाई का काम बदस्तूर चलता रहा। जब एक हफ्ते बाद चीफ इजीनियर स्मिज आया तो उसने वर्कशाप को खूब रोशन पाया। लोहे के डण्डे लगी बडी-बडी खिडकियो से अब खूब रोशनी आ रही थी क्योंकि उन पर से धूल और तेल की मोटी-मोटी परतें अलग कर दी गई थी। खिडकी से आती हुई रोशनी डीजेल इजनो के पालिश किये हुए तावे के हिस्सो पर चमक रही थी। मशीनो के भारी-भारी पुरजो पर हरे रोगन की पुताई चमक रही थी और किसी ने पहियो की तीलियो पर रोगन से पीले पीले तीर भी बना दिये थे।

"अच्छा अच्छा ." स्मिज ने आश्चर्य से बुदबुदा कर कहा।

वर्कशाप के दूर के एक कोने मे कुछ लोग अपना काम पूरा कर रहे थे। स्मिज उनके पास गया। रास्ते में उसे रग का टिन ले जाते कोर्चागिन मिला।

इजीनियर ने उसको रोक कर कहा, "जरा एक मिनट रुकना दोस्त। तुमने यहा जो कुछ किया है, मैं उससे पूरी तरह सहमत हू। मगर तुम्हे यह रग कहा से मिला? मैंने तो इस बात का कडा हुक्म दे रखा है कि मेरी इजाजत के बिना रग इस्तेमाल न किया जाय? ऐसे कामो के लिए हम रग बरबाद नही कर सकते। हमारे पास जितना कुछ है, उसकी जरूरत हमे अपने इजनो के लिए है।"

"यह रग हमने फेंके हुए डब्बो मे से खुरच-खुरच कर निकाला है। इसमे हमारे दो दिन लगे, मगर हमने करीब पच्चीस पौंड रग निकाल लिया। कामरेड इजीनियर, हम लोग किसी भी नियम को तोड नही रहे है।"

इजीनियर ने अब भी गुस्से का इजहार किया, मगर बात बदल गई थी। उसके चेहरे से जाहिर था कि कहने को उसके पास कुछ खास है नही।

"अच्छा, तो करो जो कर रहे हो। ठीक है। मगर यह वाकई बडी दिलचस्प बात है। इसका तुम्हारे पास क्या जवाब है...क्या नाम. इस बात का कि वर्कशाप मे सब लोग अपनी मरजी से सफाई में दिलोजान से लगे हुए हैं ? मैं समझता हू यह सब काम के घटो के बाद ही हुआ होगा ?"

कोर्चागिन ने इजीनियर की आवाज मे सच्ची हैरानी को लक्ष्य किया।

उसने कहा, "इसमे शक क्या है, काम के घटो के बाद ही सब काम हुआ है। आपने क्या समझा था ?"

"हा मगर . "

"कामरेड स्त्रिज, इसमें अचम्भे की ऐसी कोई बात नही है। आपसे यह किसने कहा कि बोल्शेविक गन्दगी को हाथ नही लगायेंगे और जैसा का तैसा पडा रहने देंगे ? जरा रुकिए कुछ दिन और, जब तक कि हमारा यह मामला ठीक से चल नही निकलता, फिर आपको और भी बहुत-सी अचम्भे की चीजें देखने को मिलेंगी।"

और फिर इजीनियर से अपने आपको बचाते हुए, ताकि रग उछल कर उसके ऊपर न जा पडे, कोर्चागिन आगे बढ गया।

पावेल हर शाम को पब्लिक लाइब्रेरी जाता था और बडी रात तक वही रहता था। तीनो लाइब्रेरियनो से उसकी दोस्ती हो गई थी और समझाने-बुझाने की अपनी तमाम काबलियत का इस्तेमाल करके उसने आजादी के साथ किताबो को लेने और पढने का हक पा लिया था। वह ऊचे-ऊचे टाडो मे सीढी लगाकर वहा पर घटो अपने पढने की सामग्री की तलाश मे एक के बाद दूसरी किताब के पन्ने पलटता रहता था। ज्यादातर किताबें पुरानी थी। आधुनिक साहित्य सिर्फ एक छोटी सी अलमारी मे था। कुछ थोडे से गृह-युद्ध के पैम्फलेट, मार्क्स का 'कैपिटल', जेक लडन का 'आयरन हील' और ऐसी ही कुछ और। पुरानी किताबो को टटोलते हुए उसे 'स्पार्टाकस' नाम की किताब मिली। उसने दो रात मे उसको पढ डाला और पढ कर मैक्सिम गोर्की की किताबो की बगल मे रख दिया। कुछ दिनो तक यही सिलसिला चलता रहा—धीरे-धीरे ऐसी अच्छी किताबो के चुनाव करने का सिलसिला जिनमे कोई आधुनिक क्रान्तिकारी सन्देश हो।

लाइब्रेरियनो ने कोई आपत्ति नही की उनके लिए सब कुछ बराबर था।

रेलवे वर्कशाप मे कोमसोमोल की जिन्दगी शात ढग से चली जा रही थी कि अचानक एक ऐसी घटना हुई जिसे पहले लोगो ने महत्वहीन समझा। मरम्मत का काम करने वाले काहिल, बेवक-रू, चपटी नाक के कोस्त्या फिदिन ने,

जो सेल की ब्यूरो का मेम्बर था, एक बहुत कीमती विदेशी ड्रिल तोड दी थी, लोहे के टुकडे पर चला कर। यह दुर्घटना सरासर लापरवाही का नतीजा थी। इतना ही नहीं, कभी-कभी तो यह भी लगता था कि उसने फिदिन ने जान-बूझ कर बदमाशी की हो।

सवेरे के वक्त यह घटना हुई थी। वर्कशाप के बड़े फोरमैन खोदोरोव ने लोहे की एक पट्टी में कई सूराख करने के लिए कोस्त्या से कहा था। कोस्त्या ने पहले तो इनकार किया, मगर जब फोरमैन ने बहुत इसरार किया तो उसने लोहा उठा लिया और उसमें सूराख करने लगा। फोरमैन सबसे बड़ी कड़ी मेहनत लेता था, इसलिए मजदूर उसे पसन्द नहीं करते थे। पहले वह मेन्शे-विक रह चुका था। कारखाने की सामाजिक जिन्दगी में वह कोई हिस्सा नहीं लेता था और कम्युनिस्ट युवक उसे पसन्द नहीं थे। मगर अपने काम का वह माहिर था और दिल लगा कर अपने फर्ज को पूरा करता था। खोदोरोव ने देखा कि कोस्त्या अपनी ड्रिल में तेल डाले बगैर उसको सूखा ही चला रहा है। उसने जल्दी से मशीन के पास जाकर कोस्त्या को रोका।

"तुम अंधे हो क्या? इसी तरह ड्रिल इस्तेमाल करनी चाहिए!" उसने कोस्त्या को डाटते हुए कहा, क्योंकि उसे मालूम था कि इस तरह ड्रिल ज्यादा दिन नहीं चलेगी।

कोस्त्या ने पलट कर उसको जवाब दिया और फिर से मेंथ को चालू कर दिया। डिपार्टमेंट के प्रधान से शिकायत करने के लिए खोदोरोव उसके पास गया। इसी बीच कोस्त्या, मशीन को चलता हुआ छोड कर, जल्दी से तेल की कुप्पी लाने के लिए भागा ताकि प्रधान के आते-आते सब कुछ एकदम ठीक हो जाय। तेल लेकर लौटते-लौटते तब से ड्रिल टूट चुकी थी। प्रधान ने फिदिन की रिपोर्ट की और मांग की कि उसको बर्खास्त कर दिया जाय। मगर कोम-सोमोल की सेल ब्यूरो ने यह कह कर फिदिन का साथ दिया कि खोदोरोव सभी सक्रिय कोमसोमोल सदस्यों से चिढ़ता है। मैनेजमेंट ने फिदिन के बर्खास्त किये जाने पर जोर दिया और मामला वर्कशापों की कोमसोमोल ब्यूरो के सामने रखा गया। लडाई शुरू हो गई।

ब्यूरो के पांच में से तीन सदस्य इस राय के थे कि कोस्त्या को सरकारी तौर पर चेतावनी देकर दूसरे किसी काम पर लगा दिया जाय। स्वेतायेव उन तीन में से एक था। बाकी दो का खयाल था कि फिदिन को कोई भी सजा न मिलनी चाहिए।

इस मामले की बहस के लिए ब्यूरो मीटिंग स्वेतायेव के दफ्तर में बुलाई गई थी। एक बडी-सी मेज के इर्द-गिर्द, जिस पर लाल कपड़ा बिछा हुआ था, कई बेंच और स्टूल रखे थे, जिन्हें बढ़ई का काम करने वाले नौजवान कम्यु-

निस्टों ने बनाया था। दीवार पर लीडरों की तसवीरें थीं और रेलवे वर्कशाप का अपना झंडा मेज के पीछे एक पूरी दीवार पर फैला हुआ था।

स्वेतायेव अब पूरे वक्त कोमसोमोल का काम करता था। पेशे से वह खरादघर का आदमी था मगर अपनी संगठनात्मक योग्यता के कारण वह कोमसोमोल के एक ऊंचे पद पर पहुंच गया था। अब वह कोमसोमोल की जिला कमिटी की ब्यूरो का मेम्बर था और साथ ही सूबा कमिटी का भी मेम्बर था। एक मशीन के कारखाने के खरादघर में उसने काम किया था और रेलवे के कारखाने के लिए नया था। शुरू से ही उसने प्रबंध की बागडोर मजबूती से अपने हाथों में ले ली थी। स्वभाव से वह जरा ज्यादा आत्म-विश्वासी था और फैसले बहुत जल्दी दे देता था। इस कारण, उसने शुरू से ही कोमसोमोल के दूसरे सदस्यों की स्वतंत्र काम करने की योग्यता को मार दिया था। वह सब काम अपने ही हाथों से करने पर जोर देता था और जब नहीं कर पाता था तो अपने सहायकों को सुस्त और कामचोर कह कर उनकी लानत-मलामत करता था।

यहां तक कि दफ्तर की सजावट भी उसकी निजी निगरानी में हुई थी।

मीटिंग की कार्यवाही वह कमरे में रखी हुई अकेली गद्देदार आरामकुर्सी पर बैठा हुआ चला रहा था। यह कुर्सी क्लब से उठा कर लाई गई थी। यह एक बन्द मीटिंग थी। पार्टी संगठनकर्ता खोमुतोव ने अभी-अभी बोलने की इजाजत मांगी थी जब कि भीतर से दरवाजे पर दस्तक पड़ी। इस आवाज से स्वेतायेव के माथे पर बल पड़ गये। दुबारा दस्तक पड़ी। कात्या जेलेनोवा उठी और उसने दरवाजा खोला। देहलीज पर कोर्चागिन खड़ा था। कात्या ने उसे अन्दर आने दिया।

पावेल एक खाली सीट की तरफ बढ़ता जा रहा था कि स्वेतायेव ने उससे कहा :

"कोर्चागिन, यह ब्यूरो की बन्द मीटिंग है जिसमें सबको आने की इजाजत नहीं है।"

पावेल के चेहरे पर खून उतर आया और वह धीरे-धीरे घूम कर मेज के सामने खड़ा हो गया।

"मुझे मालूम है। फिदिन के मामले में आपकी क्या राय है, मुझे यह सुनने में दिलचस्पी है। मैं इस सिलसिले में कुछ कहना चाहता हूं। क्यों क्या मामला है, क्या आपको मेरे यहां रहने में आपत्ति है?"

"मुझे आपत्ति नहीं है, मगर तुमको जानना चाहिए कि बन्द मीटिंगें सिर्फ ब्यूरो मेम्बरों के लिए ही होती हैं। जितने ही ज्यादा लोग हो जाते हैं, मसले पर ठीक से बहस करके किसी नतीजे पर पहुंचना उतना ही मुश्किल हो जाता है। मगर जब तुम आ ही गये हो, तो यहां बैठ सकते हो।"

कोर्चागिन को कभी ऐसी उपेक्षा नही मिली थी। उसके माथे पर एक और धारी पड गई।

"यह सब शिष्टाचार किसलिए ?" खोमुतोव ने अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा। मगर कोर्चागिन ने हाथ के इशारे से उसे चुप कर दिया और बैठ गया। खोमुतोव ने फिर अपना कहना शुरु किया, "हा तो जो बात मैं कहना चाह रहा था, वह यह है। यह सच है कि खोदोरोव पुराने विचारो का आदमी है, मगर अनुशासन के लिए हमे कुछ न कुछ करना ही होगा। अगर तमाम कोमसोमोल वाले इसी तरह ड्रिले तोडते रहे तो हमारे पास काम करने के लिए ड्रिले रहेगी ही नही। और इससे भी बडी बात यह है कि इस तरह हम पार्टी के बाहर के मजदूरो के सामने बुरा उदाहरण रखेंगे। मेरी राय मे उस लडके को सख्त चेतावनी देनी चाहिए।"

श्वेतायेव ने उसको बात खतम करने का मौका नही दिया और अपनी दलीले देनी शुरू कर दी। दस मिनट गुजर गये। इस बीच कोर्चागिन ने भाप लिया कि हवा का रुख किस तरफ है। आखिरकार जब मामला वोट के लिए पेश किया गया, तो कोर्चागिन ने उठ कर बोलने की इजाजत मागी। श्वेतायेव ने बहुत अनिच्छा से उसको बोलने की इजाजत दी।

'साथियो, फिकिन के मामले मे मैं आपको अपनी राय देना चाहता हू" पावेल ने बोलना शुरु किया। न चाहते हुए भी उसकी आवाज रूखी और कठोर सुनाई पड रही थी।

'फिकिन का मामला एक सिगनल है और हमको यह देखना है कि सबसे अहम चीज कोस्त्या की अकेले उसकी, हरकत नही है। मैंने कल कुछ तथ्य इकट्ठा किये हैं।" पावेल ने अपनी जेब मे एक नोटबुक निकाली। "ये आकडे मुझे हाजिरी का रजिस्टर रखने वाले से मिले। अब जरा गौर से सुनिए हमारे कोमसोमोलो मे तेईस फीसदी लोग पाच से लेकर पन्द्रह मिनट तक की देरी करके काम पर आते है। यह रोज का सिलसिला है। नियम सा बन गया है। सत्रह फीसदी लोग हर महीने एक या दो रोज बिलकुल काम पर आते ही नही। गैर-पार्टी मजदूरो मे काम पर न आने वाले चौदह फीसदी हैं। साथियो, ये आकडे चाबुक की तरह हमारी पीठ पर पडते है। मैंने और भी कुछ आकडे जमा किये है। हमारे पार्टी मेम्बरो मे चार फीसदी लोग महीने मे एक रोज काम पर नही आते और चार फीसदी देर से आते है। गैर-पार्टी मजदूरो मे ग्यारह फीसदी लोग महीने मे एक रोज नही आते है और तेरह फीसदी लोग हर रोज देर से पहुचते है। नब्बे फीसदी टूट-फूट के लिए नौजवान मजदूर जिम्मेदार होते है जिनमे सात फीसदी बिलकुल नये लोग हैं। इन आकडो से यह निष्कर्ष निकलता है कि हम कोमसोमोल के लोग पार्टी मेम्बरो

और वयस्क मजदूरो के मुकाबले मे बहुत बुरा काम कर रहे हैं। मगर सब जगह यही हालत नही है। खरादघर के काम का रेकार्ड बहुत अच्छा है, बिजली वाले भी कुछ खास बुरे नही हैं, मगर बाकी लोग ज्यादातर एक ही सतह पर है। मेरी राय मे कामरेड खोमुतोव ने अनुशासन के बारे मे जितना कहना चाहिए, उसका शताश ही कहा है। तात्कालिक समस्या यह है कि इन टेढे-मेढे मामलो को कैसे सीधा किया जाय। मैं आप लोगो को जोश दिलाने के लिए यहा पर कोई तकरीर नही करना चाहता, मगर इतना जरूर कहूगा कि इस लापरवाही और ढीलढाल को हमे बन्द करना ही होगा। पुराने मजदूर ईमानदारी से इस बात को मान रहे है कि वे अपने पूजीपति मालिको के लिए ज्यादा अच्छा काम किया करते थे। मगर अब तो हम खुद अपने मालिक हैं और बुरा काम करने के लिए कोई कारण नही है। बात सिर्फ एक कोस्त्या और दूसरे किसी मजदूर की नही है जिसे दोष देकर हम छुट्टी पा लें। हम सभी लोगो की गलती है कि हम ठीक से इस बुराई से लडने के बदले किसी न किसी बहाने से कोस्त्या जैसे मजदूरो की वकालत करते हैं।

"समोखिन और बुतिलियाक ने अभी-अभी यहा पर कहा है कि फिदिन अच्छा लडका है, हमारे बेहतरीन लोगों मे से है, आगे बढकर कोमसोमोल का काम करता है, वगैरह-वगैरह। क्या हुआ अगर उसके हाथ से एक ड्रिल टूट गई, किसी के भी हाथ से टूट सकती थी। खास बात यह है कि कोस्त्या हममे से एक है और फोरमैन नही है मगर क्या कभी किसी ने खोदोरोव से बात करने की कोशिश की। इस बात को न भूलिए कि वह चाहे जितना बडबडाये, उसके पीछे काम का तीस साल का तजुर्बा है। हम उसकी राजनीति की चर्चा नही करना चाहते। पर इस खास मामले मे उसी का पक्ष मजबूत है, क्योकि वह पार्टी के बाहर का होते हुए भी सरकारी जायदाद की फिक्र करता है और हम हैं कि कीमती-कीमती औजारो को तोडे डाल रहे है। ऐसे सूरते हाल को आप क्या कहोगे ? मैं समझता हू कि हमे अभी पहला वार करना चाहिए और इस मोर्चे पर हमला बोल देना चाहिए।

"मैं प्रस्ताव करता हू कि फिदिन को काम से जी चुराने और उत्पादन मे अव्यवस्था फैलाने के अभियोग मे कोमसोमोल से निकाल दिया जाय। दीवार के अखबार मे इस मामले पर बहस होनी चाहिए और बिना इस बात से डरे कि इसका क्या नतीजा होगा, सारे तथ्य सम्पादकीय मे दे देने चाहिए। हम मजबूत हैं, हमारे पास ऐसी शक्तिया हैं जिन पर हम भरोसा कर सकते हैं। कोमसोमोल के अधिकाश सदस्य अच्छे काम करने वाले है। उनमे से साठ वोयार्का मे रह चुके है और वह बडी कठिन परीक्षा थी। उनकी मदद और उनके सहयोग से हम तमाम कठिनाइयो को सुलझा लेंगे। जरूरत

सिर्फ इस इस बात की है कि हम इस मसले पर अपने रवैये को बिलकुल बदल दें।"

कोर्चागिन आमतौर पर बहुत खामोश और चुप रहने वाला आदमी था, मगर इस वक्त वह इतने जोश से बोल रहा था कि स्वेतायेव को अचम्भा हुआ। असली पावेल को वह आज पहली बार देख रहा था। उसने इस बात को समझा कि पावेल ठीक बात कह रहा है, मगर सावधानी बरतने के खयाल से वह खुलेआम अपनी सहमति नही दिखलाना चाहता था। उसने कोर्चागिन के भाषण को इस रूप मे लिया कि जैसे वह पूरे संगठन की सामान्य दशा की बडी कठोर आलोचना हो, मानो वह स्वेतायेव की शक्ति को कम करने की कोशिश हो और इसलिए उसने अपने प्रतिद्वन्दी को कुचल देने का फैसला किया। उसने अपना भाषण कोर्चागिन पर यह अभियोग लगाते हुए शुरू किया कि कोर्चागिन मेन्शेविक ग्रोदोशेव का पक्ष ले रहा है।

यह तूफानी बहस-मुबाहसा तीन घंटे तक चला। बहुत रात गये आखिरी बात पर लोग पहुचे। तथ्यो के निर्मम तर्क से हार कर और यह देख कर कि बहुमत कोर्चागिन के साथ हो गया है, स्वेतायेव ने एक गलत कदम उठाया। उसने जनवाद के नियमो का उल्लंघन करते हुए, वोट लेने के ठीक पहले, कोर्चागिन को कमरे से निकल जाने का आदेश दिया।

"बहुत अच्छा, मैं चला जाऊगा मगर स्वेतायेव, तुम्हारा यह आचरण ठीक नही। मैं तुम्हे चेतावनी देता हू कि अगर तुम अपनी बात पर अडे रहे तो कल मैं इस मामले को जनरल मीटिंग के सामने रखूगा और मुझे इस बात का पक्का यकीन है कि वहा पर तुम बहुमत को अपने साथ न ले जा सकोगे। स्वेतायेव, तुम्हारी बात ठीक नही है। कामरेड खोमुतोव, मेरा खयाल है कि यह आपका कर्तव्य है कि आप इस मामले को जनरल मीटिंग मे पार्टी-ग्रुप के सामने उठाए।"

स्वेतायेव ने उद्दण्डता से चीखते हुए कहा, "मुझे डराने की कोशिश मत करो। मैं खुद पार्टी-ग्रुप के सामने जा सकता हू और मैं तुम्हे बतला दू कि उनको तुम्हारे बारे मे बतलाने के लिए भी मेरे पास कुछ बातें हैं। अगर तुम खुद काम नही करना चाहते, तो कम-से-कम दूसरो के काम मे अडगा तो न लगाओ।"

पावेल बाहर निकल गया। बाहर निकल कर उसने कमरे का दरवाजा बन्द किया और अपने जलते हुए माथे पर हाथ फेरा और खाली दफ्तर मे से होता हुआ बाहर के दरवाजे की तरफ बढा। सडक पर पहुच कर उसने एक गहरी सास ली, एक सिगरेट जलाई और बातियेवा पहाडी के उस छोटे से घर की तरफ चल दिया जहा तोकारेव रहता था।

उस बुड्ढे मैकेनिक को उसने खाना खाते पाया।

तोकारेव ने पावेल को खाने के लिए बुलाते हुए कहा, "आओ, कहो क्या खबर है। दार्या, इस लडके के लिए एक रकाबी मे खिचडी ले आओ।"

तोकारेव की बीवी दार्या फोमीनिचना अच्छी लम्बी-तगडी औरत थी जब कि उसका पति नाटा और दुबला सा आदमी था। उसने एक रकाबी मे ज्वार की खिचडी लाकर पावेल के सामने रख दी और अपने गीले होठो को अपने सफेद एप्रन के छोर से पोछती हुई बडी दयालुता से बोली, "शुरू करो बेटा!"

उन दिनो जब बूढा तोकारेव रेलवे के कारखाने मे काम करता था, पावेल अक्सर उनके यहा जाया करता था और इस बूढे दम्पत्ति के साथ उसने बहुत सी अपनी अच्छी शामे गुजारी थी। मगर इस बार शहर मे लौटने पर वह पहली मर्तबा तोकारेव के यहा गया था।

बुड्ढे मेकेनिक ने बडे ध्यान से पावेल की कहानी सुनी। कहानी सुनते समय वह बराबर चम्मच मे खाना खाता जा रहा था और बीच-बीच मे बस थोडा सा हा-हू कर लेता था। इससे ज्यादा कोई टीका-टिप्पणी उसने नही की। अपनी खिचडी खतम करके उसने अपनी मूछ रुमाल से पोछी और खखार कर गला साफ किया।

उसने कहा, "तुम्हारी बात बिल्कुल ठीक है, इसमे जरा भी सन्देह नही। इस सवाल को ठीक से उठाने का यही मौका है, अब और देर करना अच्छा न होगा। कारखाने मे हमारे इलाके भर मे दूसरी किसी भी जगह से ज्यादा कम्यूनिस्ट हैं और हमे अपनी बात की शुरुआत इसी जगह से करनी चाहिए। अच्छा तो तुम मे और स्वेतायेव मे ठन गई? बहुत बुरी बात है। इसमे तो खैर शक नही कि उसमे जरा ज्यादे से फरजी बनने वाले का घमड है। मगर उससे क्या, तुम तो पहले सबके साथ निभा लिया करते थे? अच्छा यह तो बताओ कि कारखाने मे तुम क्या काम करते हो?

"मैं एक डिपार्टमेट मे काम कर रहा हू और आम तौर पर जहा भी कोई काम होना रहता है मैं उसमे जरूर रहता हू। अपने सेल मे मैं एक राजनीतिक स्टडी सर्किल चलाता हू।"

"तुम ब्यूरो मे नही हो?"

कोर्चागिन ने कुछ हिचकते हुए जवाब दिया

"मैंने सोचा कि जब तक मेरी टागो में ठीक से ताकत नही आ जाती, और इस ख्याल से भी कि मैं कुछ पढना-लिखना चाहता था, मैं अभी कुछ दिन बाकायदा नेतृत्व में कोई हिस्सा न लूगा।"

"अच्छा तो यह बात है !" तोकारेव ने बात बुरी लगने के अन्दाज में कहा। "भाईजान, अगर आपकी तन्दुरुस्ती की बात न होती, तो मैंने आज आपकी खबर ली होती। मगर यह तो कहो कि अब कैसे हो ? पहले से कुछ ज्यादा ताकत महसूस करते हो ?"

"हां।"

"अच्छा, अब तुम जरा जी लगा कर काम में जुट जाओ। इधर-उधर की बात करने से कोई फायदा नही। और न इस तरह अलग-थलग बैठे रहना ही ठीक होगा। तुम अपनी जिम्मेदारी से मुह चुराते हो और खुद भी इस बात को जानते हो। बात और कुछ नही है। अब कल से ही तुम्हे चीजो को ठीक करने में लग जाना होगा। ओकुनेव को मैं इसकी खबर दे दूगा।" तोकारेव के स्वर से उसकी खीझ साफ व्यक्त हो रही थी।

"न बाबा, आप उससे कुछ न कहियेगा," पावेल ने जल्दी से आपत्ति करते हुए कहा, "मैंने खुद ही उससे कहा था कि मुझे कोई काम न दे।"

तोकारेव ने कुछ नाराजगी से सीटी बजाई।

"अच्छा तो तुमने कहा और उसने तुम्हे छोड भी दिया ? खैर जो है ठीक है, तुम कोमसोमोलो के साथ हम कर ही क्या सकते है...अच्छा बेटा तुम जरा मुझे अखबार पढ कर सुनाओगे, जैसे पहले सुनाया करते थे ? मेरी आखें अब उतनी ठीक नही।"

कारखानो की पार्टी ब्यूरो ने कोमसोमोल की ब्यूरो के बहुमत के फैसले की तसदीक की और पार्टी और कोमसोमोल के ग्रुप मजदूरो के अनुशासन का उदाहरण रखने के महत्वपूर्ण और मुश्किल काम में लग गये। स्वेतायेव पर ब्यूरो में बहुत कस कर डाट पडी। उसने पहले तो बहुत बढ-बढ कर बात की, मगर मत्री लोपाखिन ने उसे बिलकुल पस्त कर दिया। लोपाखिन अधेड आदमी था और उसके चेहरे पर एक अजीब मोम जैसा पीलापन था जिससे उसकी तपेदिक का पता चलता था जो उसे घुन की तरह खाये जा रही थी। आखिरकार मजबूर होकर स्वेतायेव ने अपनी गलती कबूल की।

अगले रोज दीवार के अखबारो में कई लेख थे जिनसे रेलवे कारखानो मे अच्छी-खासी सनसनी फैल गई। वे लेख जोर-जोर से पढे गये और उन पर गरमागरम बहसें हुई और उसी शाम को नौजवानो की जो मीटिंग हुई उसमे हमेशा से कही ज्यादा उपस्थिति रही और सारी बातचीत लेखो मे उठाई गई समस्याओ के सम्बध मे ही हुई।

फिदिन को कोमसोमोल से निकाल दिया गया और ब्यूरो मे एक नये

मेम्बर को लिया गया और उसे राजनीतिक शिक्षा का भार दे दिया गया। यह नया मेम्बर था कोर्चागिन।

जिस वक्त मीटिंग मे नेज्दानोव, इस नई परिस्थिति मे रेलवे के कारखानो के सामने आये हुए नये कामो की रूपरेखा बतला रहा था, उस समय हॉल मे असाधारण शान्ति थी।

मीटिंग के बाद स्वेतायेव ने कोर्चागिन को बाहर अपना इन्तजार करते हुए पाया।

पावेल ने कहा, "चलो हम लोग साथ-साथ चलें। मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

"किस चीज के बारे मे ?" स्वेतायेव ने अप्रिय ढग से पूछा।

पावेल ने उसकी बाह अपनी बाह मे ले ली और चार-छ गज आगे जाकर एक बेन्च के पास रुक गया।

"आओ बैठें थोडी देर," कहते हुए वह बैठ गया।

स्वेतायेव की सिगरेट का जलता हुआ सिरा कभी जोर से जल उठता था और कभी बुझने सा लगता था।

"स्वेतायेव, मुझसे तुम्हे क्या शिकायत है ?"

कुछ मिनट तक खामोशी रही।

"ओह, तो यह बात है ? मैंने सोचा था कि तुम मुझसे कुछ काम की बात करना चाहते होगे," स्वेतायेव ने आश्चर्य दिखाते हुए कहा, मगर उसकी आवाज काप रही थी।

पावेल ने मजबूती से अपना हाथ स्वेतायेव के घुटने पर रख दिया।

"दिमका, जरा अपना यह नखरा छोड कर सीधे से बात करो। तुम जिस तरह बातें कर रहे हो न, वैसे बडे-बडे कूटनीतिज्ञ किया करते हैं। तुम मुझको यह बतलाओ कि तुम्हें मुझसे इस कदर चिढ क्यो है ?"

स्वेतायेव को बेचैनी महसूस हो रही थी और वह बार-बार उसके पहलू बदलने से प्रकट हो रही थी।

"तुम काहे के बारे मे बात कर रहे हो ? मुझे तुमसे चिढ क्यो होने लगी। मैंने खुद तुम्हें काम दिया था कि नही ? तुमने वह काम करने से इनकार किया और अब तुम मुझ पर यह दोष लगाते हो कि मैं तुम्हे काम से बाहर रखने की कोशिश करता हू।"

मगर उसके शब्दो मे वह आत्मविश्वास नही था जो दूसरो के अन्दर विश्वास जगाता है। पावेल का हाथ अब भी स्वेतायेव के घुटने पर टिका हुआ था और उसने मार्मिक स्वर मे कहा

"अगर तुम वह बात नही कहोगे, तो मैं कहूगा। तुम सोचते हो कि मैं

तुम्हारे काम करने के ढग पर शिकजा चढाना चाहता हू । तुम्हारा ख़याल है कि मैं तुमसे तुम्हारा काम छीन लेना चाहता हू । अगर तुम ऐसा न सोचते, तो उस कोस्त्या वाले मामले मे हमारे बीच ऐसा झगडा न हुआ होता । इस तरह के आपसी सम्बध हमारे काम को तबाह करके रख देंगे । अगर यह सिर्फ हम दोनो के बीच की बात होती तो कोई बात न थी, मुझे इसकी खाक परवाह न होती कि तुम मेरे बारे मे क्या सोचते हो । लेकिन कल से हम लोगो को साथ-साथ काम करना है । इस तरह भला कैसे काम चलेगा ? अच्छा अब मेरी बात सुनो । हमारे बीच कोई दरार न होनी चाहिए । हम दोनो मेहनतकश है । अगर अपना लक्ष्य तुमको दुनिया मे सबसे प्यारा हो तो लाओ अपना हाथ दो और चलो हम लोग कल से दोस्त की तरह काम करे । लेकिन इसके लिए जरूरी है कि तुम अपने दिमाग से सारा कूडा-करकट निकाल दो और किसी तरह की साज-बाज मे न पडो, वरना अगर काम मे कोई जरा सी भी गडबडी हुई तो हर बार हमारे बीच महाभारत होगा । लो ये लो, यह रहा मेरा हाथ, यह दोस्ती का हाथ है ।"

स्वेतायेव की खुरदरी उगलिया उसकी हथेली पर आकर जमी तो कोर्चागिन को गहरे सन्तोष की अनुभूति हुई ।

एक हफ्ता गुजर गया । पार्टी की जिला-कमिटी मे काम का समय ख़तम होने आ रहा था । दफ्तरो मे शान्ति छा गई थी । मगर तोकारेव अब भी अपनी मेज पर बैठा काम कर रहा था । वह अपनी कुरसी पर बैठा एकदम ताजी रिपोर्टों को देख रहा था जब कि दरवाजे पर एक दस्तक पडी ।

"चले आओ !"

कोर्चागिन अन्दर आ गया और उसने सेक्रेटरी की मेज पर प्रश्नावलियो के दो भरे हुए फार्म रख दिए ।

"यह क्या है ?"

"यह गैर-जिम्मेदारी का ख़ातमा है । और अगर आप मुझसे पूछें तो अब इस चीज को और टाला भी नही जा सकता । यो ही बहुत देर हो गई । अगर आप भी मेरी राय के हो और इस काम में मेरी सहायता कर सकें तो मैं आपका बडा कृतज्ञ होऊगा ।"

तोकारेव ने उडती हुई दृष्टि शीर्षक पर डाली, इस नौजवान को देखा और अपना कलम उठा लिया । "रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की उम्मीदवार मेम्बरी के लिए पावेल आन्द्रिएविच कोर्चागिन की सिफारिश करने वाले साथी की पार्टी जिन्दगी कब से शुरू हुई ?" इस शीर्षक के नीचे उसने मजबूत हाथ से "१९०३" लिखा और अपना हस्ताक्षर कर दिया ।

"यह लो बेटा। मैं जानता हू कि तुम कभी मेरे सफेद बालो को लज्जित नही होने दोगे।"

कमरा इतना गरम था कि दम घुट रहा था। सबके दिमाग मे बस एक यही खयाल सबसे ऊपर था कि कैसे जल्दी से जल्दी सोलोमेंका के शाहबलूत के दरख्तो की शीतल छाह मे पहुच जायें।

"खतम करो पावका, अब मुझसे एक मिनट भी और यह चीज बर्दास्त न होगी," स्वेतायेव ने, जिसके शरीर से पसीने का परनाला जारी था, अनुनय के स्वर मे कहा। कात्युशा और दूसरो ने उसका समर्थन किया।

पावेल्र कोर्चागिन ने किताब बन्द कर दी और स्टडी सर्किल खतम हुआ।

जब वे लोग उठे तो दीवार पर टगे हुए पुरानी चाल के एरिक्सन टेली-फोन की घटी घनघनाई। स्वेतायेव ने टेलीफोन लिया, मगर कमरे मे इतना शोर मच रहा था कि अपनी बात सुनाने के लिए उसे जोर से टेलीफोन मे बोलना पड रहा था।

उसने रिसीवर रख दिया और कोर्चागिन की तरफ मुडा।

"पोलिश दूतावास के दो रेल के डब्बे स्टेशन पर हैं। उनकी बत्ती गुल गई है, तार मे कोई गडबडी है। एक घटे मे गाडी छूटेगी। थोडे से औजार ले लो पावेल और लपक कर उसे ठीक कर दो। यह बहुत जरूरी काम है।"

पहले प्लेटफार्म पर सोने वाले मुसाफिरो के दो डब्बे खडे थे। उनके शीशे और पालिश किये हुए पीतल के उनके हिस्से चमक रहे थे। सब लोगो के बैठने के डब्बे मे, जिसमे बडी-बडी खिडकिया थी, खूब रोशनी थी। मगर उससे लगे हुए डब्बे मे अधेरा था।

पावेल उस खूबसूरत शानदार पुलमैन के पायदान तक गया और डब्बे मे दाखिल होने के इरादे से उसमे लगे हुए लोहे के डण्डे को पकड लिया।

स्टेशन की दीवार से जल्दी से अलग होती हुई एक आकृति ने पावेल के कधे पकड लिये।

"कहा जा रहे हो?"

यह आवाज पहचानी हुई थी। पावेल मुडा और उसने उस आदमी की जाकट, चौडे माथे की टोपी, उसकी पतली सी टेढी नाक और उसकी सतर्क, शकालु आखो को देखा।

यह आर्त्युखिन था। उसने पहले पावेल को नही पहचाना। मगर अब उसका हाथ पावेल के कधे से गिर पडा और उसके चेहरे का तनाव हलका हो गया, मगर वह बदस्तूर अपनी प्रश्न करती हुई आखो से औजारो की पेटी को देखता रहा।

"तुम कहा जा रहे थे ?" उसने कुछ कम खिचे-तने स्वर मे पूछा ।

पावेल ने सक्षेप मे बतलाया । फिर डब्बे के पीछे से एक और आकृति सामने आई ।

"एक मिनट रुकिए, मैं उनके कटक्टर को बुलाता हू ।"

कोर्चागिन जब कडक्टर के पीछे-पीछे उस सैलून गाडी मे दाखिल हुआ तो उसने कई लोगो को बाकायदा सफरी कपडे पहने हुए बैठे देखा । किसी के कपडे मे कोई नुक्स नही निकाला जा सकता था । एक औरत दमश्क के कपडे के मेजपोश से ढकी हुई एक मेज से लगी दरवाजे की तरफ पीठ किये बैठी थी । जिस वक्त पावेल अन्दर दाखिल हुआ, वह अपने सामने खडे हुए एक लम्बे अफसर से बात कर ही थी । इलेक्ट्रीशियन के आते ही उन्होंने अपनी बातचीत बन्द कर दी ।

कोर्चागिन ने फुर्ती से उन तारो की जाच की जो आखिरी बत्ती मे गलि-यारे तक दौड रहे थे । मगर उसे बिलकुल ठीक पाकर वह गडबडी की तलाश मे उस डब्बे से निकल कर दूसरे डब्बे मे चला गया । वह मोटा-तगडा साड की सी गर्दन वाला कडक्टर पावेल के पीछे-पीछे चल रहा था । उसकी वर्दी पीतल के बडे-बडे बटनो से चमक रही थी, जिन पर पोलैंड का राज्य-चिह्न ईगिल बना हुआ था ।

"चलिए हम लोग अगला डब्बा देखें यहा तो सब ठीक है । बैटरी काम कर रही है । गडबड वहा पर होगी ।"

कडक्टर ने दरवाजे के अन्दर चाभी घुमाई और वे दोनों अवेरे गलियारे मे पहुच गये । तारो के ऊपर अपनी टार्च की रोशनी फेंकते हुए पावेल को जल्दी ही वह जगह मिल गई जहा शार्ट-सर्किट हो रहा था । कुछ ही मिनट बाद गलियारे मे बत्ती जल गई और गलियारा रोशनी से भर उठा ।

कोर्चागिन ने अपने गाइड से कहा, "कम्पार्टमेंट के बल्ब बदलने होंगे । वे जल गये हैं ।"

"उस हालत मे हमे उस महिला को बुलाना होगा, उसी के पास चाभी है ।" कडक्टर इलेक्ट्रीशियन को डब्बे में अकेला नही छोडना चाहता था, इसलिए उसने पावेल को अपने पीछे-पीछे आने के लिए कहा ।

पहले वह महिला कम्पार्टमेंट मे दाखिल हुई और फिर उसके पीछे-पीछे कोर्चागिन आया । कडक्टर रास्ता रोके हुए दरवाजे मे खडा रहा । पावेल ने चमडे के दो बहुत ठाठदार सफरी झोले, सीट पर लापरवाही से फेंका हुआ एक रेशमी चोगा, इत्र की एक बोतल और खिडकी के पास मेज पर एक छोटा सा फैशनेबुल स्त्रियो वाला वैनिटी केश देखा । वह स्त्री कोच के एक सिरे पर बैठी

हुई थी और अपने सुनहरे बालों मे हाथ फेरती हुई बिजली वाले को काम करते हुए गौर से देख रही थी।

कडक्टर ने कुछ मुश्किल से अपनी साड जैसी गर्दन को झुकाते हुए बडे स्वामिभक्त नौकर के ढग से कहा, "श्रीमती जी, मुझे जरा देर के लिए जाने की इजाजत देंगी ? मेजर साहब ने थोडी सी ठडी बियर मगाई है।"

"तुम जा सकते हो," उस औरत ने बनावटी रोबदाब से जवाब दिया।

यह बात पोलिश जबान मे हुई थी।

गलियारे से आती हुई रोशनी उस औरत के कधे पर पड रही थी। लियो के बेहतरीन रेशम का बना हुआ लाजवाब गाउन, जिसे पैरिस के बेहतरीन दर्जियों ने सिया था, उसके कधे से गिर पडा था और उसकी बाहे नगी थी। कानो मे हीरे के बुन्दे दप-दप चमक रहे थे। कोर्चागिन सिर्फ एक कधे और बाह को देख पा रहा था और वे हाथी दात के बने हुए से जान पडते थे। चेहरा छाया मे था। तेजी से पेंचकश को चलाते हुए पावेल ने छत मे के तार बदल दिये और पल भर बाद कम्पार्टमेट मे बत्तिया जल उठी। अब उसे सिर्फ उस सोफे के ऊपर का बल्ब देखना था जिस पर वह औरत बैठी हुई थी।

"मुझे उस बल्ब को देखना है," कोर्चागिन ने उस औरत के सामने जाकर रुकते हुए कहा।

औरत ने रूसी जबान मे कहा, "अरे हा, मैं तुम्हारे रास्ते मे आ रही हू।" वह हलके कदमो से उठी और जाकर पावेल के बगल मे खडी हो गई। अब पावेल उसको पूरी तरह देख सका। उसकी वह कमानीदार भवें और सम्पुटित, उपेक्षापूर्ण ओठ उसके पहचाने हुए थे। इसमे कोई सन्देह ही न हो सकता था यह वही वकील की लडकी नेली लेशचिन्स्की थी। पावेल के चेहरे पर अचम्भे का जो भाव था, उस स्त्री ने भी उसको लक्ष्य किया। मगर गोकि पावेल उसको पहचान रहा था, तो भी वह खुद इन पिछले चार बरसो मे इतना बदल गया था कि नेली लेशचिन्स्की यह नही समझ सकी कि यह बिजली वाला उसी का फसादी पडोसी है।

पावेल आश्चर्य से उसको घूर रहा था। यह चीज लेशचिन्स्की को बुरी मालूम हुई और उसके माथे पर बल पड गये। वह कम्पार्टमेंट के दरवाजे के पास चली गयी और वहा खडी बेचैनी से अपने पेटेन्ट जूते की एडी जमीन पर धीमे-धीमे पटकने लगी। पावेल ने दूसरे बल्व की जाच शुरू की उसने पेंच को खोला, बल्व को रोशनी के सामने उठा कर देखा और न जाने कैसे अचानक उससे पोलिश मे पूछ बैठा ·

"क्या विक्टर भी यही है ?"

बोलते समय पावेल पीछे नहीं मुडा था। उसने नेली के चेहरे को नही देखा। मगर उसके सवाल के बाद जो लम्बी खामोशी आई, उससे यह बात जाहिर थी कि वह स्त्री घबराहट मे पड गई थी।

"क्यो, तुम उसे जानते हो क्या ?"

"हा, और बहुत अच्छी तरह। लगता है आप भूल गई। हम लोग पड़ोसी थे।" पावेल उसको देखने के लिए पीछे मुडा।

"तुम.. तुम पावेल हो, मेरी .." नेली बात कहते-कहते मारे घबराहट के रुक गयी।

"...रसोईदारिन का बेटा," कोर्चागिन ने उसकी बात पूरी की।

"मगर देखने मे तो तुम कैसे बडे से हो गये! उस वक्त तो तुम बस छोकरे थे, हा, लड़ने-भिडने मे तुम जरूर तेज थे।"

नेली ने उसे सिर से पैर तक बहुत ध्यान से देखा।

"तुम विक्टर के बारे मे क्यो पूछते हो ? जहा तक मुझे याद है, तुम और वह आपस मे कुछ बडे दोस्त तो थे नही," उसने अपनी सुरीली आवाज मे कहा। वह बड़ी उकताहट महसूस कर रही थी और इस अचानक मुलाकात से उसे कुछ राहत सी मिली।

पेंद तेजी से दीवार के अन्दर घुस गया।

"मेरा एक कर्ज है जिसे विक्टर ने अभी तक नही चुकाया। उससे मिलो तो कह देना कि उसे चुकता कराने की उम्मीद मैंने अभी नही छोडी है।"

"मुझे बता दो कि उसको तुम्हारा कितना देना है और मैं उसकी तरफ से दे दूगी।"

उसको अच्छी तरह मालूम था कि कोर्चागिन किस कर्ज की बात कर रहा है। उसे मालूम था कि विक्टर ने ही पावेल को पेतलूरा के सिपाहियो के हाथ मे दिया था। मगर इस 'आवारे' का मजाक बनाने के खयाल से उसने जान-बूझकर यह अपमानजनक रवैया अख्तियार किया था।

कोर्चागिन ने कुछ नही कहा।

"बताओ, क्या यह बात सच है कि हमारा मकान लूटा गया है और अब टूट-फूट रहा है ? निश्चय ही वह ग्रीष्म-कुज और वे तमाम झाडिया उखाड डाली गई होंगी," नेली ने उत्सुकता के साथ पूछा।

"वह मकान अब तुम्हारा नहीं हमारा है और अपनी ही जायदाद को अब हम तबाह और बर्बाद नही करेंगे।"

नेली मजाक उडाने के ढग पर धीरे से हसी।

"ओह, देखती हू कि तुम अब अच्छी तरह दीक्षित हो गये हो! मगर इस बात को न भूलना कि यह गाडी पोलिश मिशन की है और यहां पर मैं स्वामी

हू और तुम नौकर, जैसे कि तुम हमेशा थे। तुम इसलिए काम कर रहे हो कि यहा रोशनी आ जाय ताकि मैं इस सोफे पर आराम से लेट कर पढ सकू, समझे ! तुम्हारी मा हमारे कपडे धोती थी और तुम उसे पानी ला कर दिया करते थे। हम फिर बहुत-कुछ उन्ही परिस्थितियो मे एक-दूसरे से मिल रहे हैं।"

उसकी आवाज मे विजय की द्वेषपूर्ण गूज थी। अपने चाकू से तार को छीलते हुए पावेल ने उस पोलिश औरत को ऐसी निगाहो से देखा जिनमें घृणा साफ-साफ झलक रही थी।

"अगर तुम्हारे लिए काम करने की बात होती, तो मैं यहा एक जग लगी कील भी न ठोकता। लेकिन चूकि पूजीपतियो ने कूटनीतिज्ञो का आविष्कार किया है, इसलिए हमको भी वही खेल खेलना पडता है। हम उनकी गर्दन नही उडाते, इतना ही नही उनके साथ शिष्टचार का व्यवहार करते हैं, मगर तुममे तो इसका भी शऊर नही।"

नेली के गाल लाल हो गये।

"मान लो तुम वारसा फतह कर लो तो मेरे साथ क्या सलूक करोगे ? मैं समझती हू कि तुम मेरा कीमा बना दोगे, या शायद मुझको रख लो ?"

वह दरवाजे मे बडी अदा के साथ खडी थी, उसके नथुने, जो कोकीन से अब अपरिचित नही थे, फडक रहे थे। सोफे के ऊपर की बत्ती जल गई थी। पावेल उठ कर सीधा खडा हो गया।

"तुमको ? तुम्हे मार कर कौन अपना हाथ खामखाह खराब करेगा ! तुम तो यो ही, हमारे हाथ लगाये बिना ही कोकीन की ज्यादती से टें हो जाओगी। और जहा तक तुमको रखने की बात है, मैं सडक पर की किसी वेश्या को ज्याद पसन्द करूगा।"

उसने अपना औजारो का डब्बा उठाया और दरवाजे की तरफ बढा। नेली उसको रास्ता देने के लिए एक ओर हट गई। वह गलियारे मे आधे रास्ते गया होगा कि उसने अपने पीछे नेली के मुह से निकली हुई यह गाली सुनी

"बदमाश बोल्शेविक !"

उसके अगले रोज शाम को जब पावेल लाइब्रेरी की ओर जा रहा था तो रास्ते मे उसे कात्युशा जेलेनोवा मिली। उसने अपने छोटे-छोटे हाथो से उसकी आस्तीन पकड ली और हसते हुए उसका रास्ता रोक कर खडी हो गई।

"इतनी तेजी से भागे जा रहे हो, राजनीति और ज्ञान के पडित ?"

पावेल ने उसी दिल्लगी के स्वर मे जवाब दिया, "लाइब्रेरी जा रहा हू चाची, मुझे जाने दो !" उसने हल्के से कात्युशा के कधो को पकडा और उसे

एक ओर को हटा दिया। कात्युशा ने उसके हाथो से अपने को छुडा लिया और उनके साथ-साथ चलने लगी।

"मेरी बात सुनो पावलुशा! यह भी कैसी बात है कि तुम हर वक्त पढते ही रहते हो, जरा सोचो तो यह भी कही होता है। सुनो मै एक बात कहती हू—चलो हम लोग आज रात एक पार्टी मे चले। जीना ग्लेदिश के यहा सब लोग मिल रहे हैं। लडकिया मुझसे बराबर कहा करती है कि मैं तुम्हे ले आऊ, मगर आजकल तुम्हे पढने के अलावा कोई बात नही सूझती। क्या तुम्हे किसी मनोरजन की जरूरत कभी नही पडती? ऐसे मौको पर एकाध बार पढाई को छोड देना भी तुम्हारे लिए अच्छा ही पडेगा," कात्युशा ने इसरार करते हुए कहा।

"कैसी पार्टी है यह? हम लोग क्या करेंगे वहा?"

"हम लोग क्या करेंगे!" कात्युशा ने मुस्करा कर उसका मजाक बनाने की कोशिश करते हुए कहा, "अरे करेंगे क्या, भगवान की प्रार्थना तो करेंगे नही, नाचेंगे, गायेंगे, मौज-मजा लेंगे और क्या। तुम अकार्डियन बजाते हो न? मैंने कभी तुमको बजाते नही सुना, एक बार भी नही! आज जरूर चलो और चल कर बजाओ, चलोगे न? मेरी खातिर? जीना के चचा के पास अकार्डियन तो है, मगर बजाना-वजाना उसे खाक नही आता। लडकियो को तुममे बडी दिलचस्पी है, मगर तुम्हे अपनी किताबो से ही फुरसत नही, अजब किताबी कीडे हो। यह किसने कहा कि कोमसोमोलो को दिल-बहलाव के लिए कुछ न करना चाहिए? चलो-चलो, तुम्हे तो मनाते-मनाते मेरी जान पर बन आई। नही चलोगे तो हमारा झगडा हो जायगा और फिर मै तुमसे महीने भर तक नही बोलूगी।"

कात्या मकानो के रग-रोगन का काम करती थी। वह बडी अच्छी काम-रेड थी और कोमसोमोल की सबसे कर्मठ सदस्यो मे से एक। पावेल इस लडकी का दिल नही दुखाना चाहता था। लिहाजा उसने कात्या की बात मान ली, गोकि इसमे शक नही कि ऐसी पार्टियो मे उसे बडा अटपटा सा लगता था, खासी परेशानी होती थी।

इजन ड्राइवर ग्लेदिश के घर पर तमाम नौजवानो की शोर मचाती हुई भीड इकट्ठा थी। बडे लोग दूसरे कमरे मे चले गए थे और वह बडा कमरा और सायवान, जो सामने वाले छोटे से बागीचे मे खुलता था, उन्होने इन पन्द्रह लडके-लडकियो के लिए छोड दिया था। "कबूतर चुगाने" का खेल चल रहा था जब कात्युशा पावेल को लेकर बागीचे मे से होकर सायवान मे आई। सायवान के बीचोबीच दो कुरसिया पीठ से पीठ जुटा कर रखी हुई थी। गृहस्वामिनी खेल का नेतृत्व कर रही थी। उसके आवाज देने पर एक लडका और एक लडकी

आकर कुरसियों पर पीठ से पीठ लगा कर बैठ गए और जब उसने आवाज दी, "अब कबूतरों को चुगाओ !" तो लड़का और लड़की दोनों पीछे को झुके और उनके ओठ मिल गए। दर्शकों को इसमें बड़ा आनन्द मिल रहा था। इसके बाद उन्होंने "अंगूठी" और "डाकिये के दस्तक" नाम के दो खेल खेले। यह दोनों चुम्बन के खेल थे गोकि "डाकिये के दस्तक" में खेलने वाले खुलेआम रोशनी से चमकते सायवान में एक-दूसरे को न चूम कर कमरे में रोशनी बुझा कर चूमते थे। उन लोगों के लिए, जिन्हें इन दोनों खेलों में दिलचस्पी न थी, एक कोने में छोटी सी गोल मेज पर "फ्लावर फ्लर्ट" तासों की गड्डी रखी थी। पावेल के बगल में करीब सोलह साल की एक लड़की थी जिसकी आंखें हल्की नीली थीं और जिसने मुरा कह कर अपना परिचय दिया। उस लड़की ने नजाकत से उसको देखते हुए उसे एक तास दिया और धीमे से कहा

"वायलेट।"

कुछ बरस पहले पावेल ऐसी पार्टियों में शरीक हुआ था और गोकि वह खुद इन सारी मस्तियों में शरीक नहीं हुआ था, तो भी उसने इसमें कोई बुराई नहीं देखी थी और यही समझता था कि यह एक आम कायदा है। मगर अब कस्बे की निम्न मध्य-वर्गीय जिन्दगी से हमेशा के लिए नाता तोड़ लेने पर उसको यही पार्टी बड़ी घृणित लगी और उसे कुछ-कुछ हंसी भी आई।

मगर वह तो खैर जो था सो था, अभी उसके हाथ में वह "फूल वाला" तास था।

"वायलेट" के सामने लिखा था "मैं तुम्हें बहुत पसन्द करती हूं।"

पावेल ने आंख उठा कर उस लड़की को देखा। उस लड़की ने बिना झिझक पावेल की निगाह का जवाब दिया।

"क्यों ?"

अपना यह सवाल पावेल को बड़ा बेहूदा सा मालूम हुआ। मगर मुरा के पास जवाब तैयार था।

उसने धीरे से कहा, "गुलाब" और पावेल को दूसरा पत्ता पकड़ा दिया।

गुलाब वाले पत्ते पर लिखा था "तुम मेरे आदर्श हो।"

कोर्चागिन उस लड़की की तरफ मुड़ा और अपनी आवाज को नर्म बनाने की कोशिश करते हुए उसने पूछा

"यह सब बेहूदगियां तुम क्यों करती हो ?"

पावेल की बात सुन कर मुरा तो स्तब्ध सी रह गई और उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे।

"मेरी बात तुमको बुरी लगी क्या ?" उसने मान करती हुई छोकरी की तरह ओठ निकालते हुए कहा।

पावेल ने इस सवाल पर कोई ध्यान नही दिया, मगर वह इस लडकी के बारे मे और जानने के लिए उत्सुक था। उसने उससे बहुत से सवाल पूछे जिनका उस लडकी ने खुशी-खुशी जवाब दिया। कुछ ही मिनटो मे वह जान गया कि वह लडकी माध्यमिक स्कूल मे पढने जाती है, उसका बाप कारखाने मे काम करता है और यह कि वह पावेल को बहुत दिनो से जानती है और उससे परिचित होना चाहती थी।

पावेल ने पूछा, "तुम्हारा दूसरा नाम क्या है ?"

"वोलिन्तसेवा।"

"तुम्हारा भाई रेलवे यार्ड की कोमसोमोल सेल का मन्त्री है न ?"

"हा।"

अब कोर्चागिन परिचित भूमि पर था। यह बात उनके नजदीक अब साफ थी कि उस इलाके के सबसे सक्रिय कोमसोमोलो मे से एक वोलिन्तसेव अपनी ही बहन को किसी तरह की राजनीतिक शिक्षा या सस्कार नही दे रहा था। वह कस्बे की दूसरी मध्य-वर्गी लडकियो की तरह, उन्ही जैसे सस्कार लेकर बडी हो रही थी। पिछले साल वह और उसकी सहेलिया ऐसी न जाने कितनी ही चुम्बन-गोष्ठियों मे शरीक हुई थी। मुरा ने पावेल को बतलाया कि उसने कई बार उसे अपने भाई के यहा देखा था।

मुरा ने महसूस किया कि उसके पडोसी को उसका आचरण पसन्द नही आया। कोर्चागिन के चेहरे की उपेक्षापूर्ण मुस्कराहट को देख उसने आवाज दिये जाने पर भी "कबूतर चुगाने" के खेल मे हिस्सा लेने से साफ इनकार कर दिया। वे दोनो और भी चन्द मिनट तक बैठे एक-दूसरे से बातें करते रहे और मुरा पावेल को अपने बारे मे बतलाती रही जब कि जेलेनोवा उन लोगो के पास आई।

"मैं तुम्हारे लिए अकार्डियन ले आऊ ?" उसने पूछा और शरारत-भरी निगाहो से मुरा को देखते हुए इतना और जोडा, "लगता है तुम लोगो मे बडी दोस्ती हो गई ?"

पावेल ने कात्युशा को अपने पास बिठाल लिया और अपने आसपास के शोर-शराबे और हसी की आवाजो का फायदा उठाते हुए बोला :

"मैं नही बजाऊगा। हम दोनो जा रहे हैं।"

जेलेनोवा ने ताने के स्वर मे कहा, "ओहो! अच्छा तो गरज तीर लग चुका है, क्यो ?"

"ठीक कहती हो। अच्छा बताओ कात्युशा, हमारे अलावा यहा कोमसोमोल के और भी कोई लोग हैं ? या सिर्फ हम लोग ही 'कबूतर प्रेमी' हैं ?"

कात्युशा ने जैसे पावेल को मनाते हुए कहा, "अब यह सब बचपना खतम करके हम लोग नाचना शुरू करेंगे।"

कोर्चागिन उठा।

'बहुत अच्छा, तुम नाचो मगर मुरा और मैं, दोनो चलते है।"

एक रोज शाम को आना बोर्हार्ट आकुनेव के घर आई और वहा उसने कोर्चागिन को अकेले पाया।

"क्या तुम बडे व्यस्त हो पावेल ? मेरे साथ शहर की सोवियत के खुले इजलास मे चलोगे ? मै अकेले नही जाना चाहती। खास कर इसलिए कि लौटने मे काफी देर हो जायगी।"

कोर्चागिन जाने के लिए फौरन तैयार हो गया। वह अपने बिस्तरे के ऊपर लटकती हुई माउजर को उठाने ही वाला था, मगर यह सोच कर इरादा बदल दिया कि वह ज्यादा भारी पडेगा। लिहाजा उसने दराज मे मे ओकुनेव का रिवाल्वर निकाला और उसे अपनी जेब मे डाल लिया। आकुनेव के लिए उसने एक पुर्जा लिख कर रख दिया और चाभी ऐसी जगह रख दी जहा उसके कमरे के साथी को वह मिल जाय।

शहर सोवियत का इजलास थियेटर हॉल मे हो रहा था। वहा पर उनकी मुलाकात पाक्रातोव और ओल्गा यूरेनेवा से हुई। वे सब साथ-साथ हॉल मे बैठे और इण्टरवलो मे सग-सग टोली बना कर स्क्वायर मे टहलते रहे। आना का जैसा खयाल था, मीटिंग बडी देर मे खतम हुई।

ओल्गा ने प्रस्ताव किया, "कैसा हो अगर तुम मेरे घर पर चल कर रात गुजारो ? देर हो गई है और तुम्हे बहुत दूर जाना है।

मगर आना ने इनकार कर दिया और बोली, "पावेल ने मुझे घर पहुचाने का वादा किया है।"

पाक्रातोव और ओल्गा सग-सग बडी सडक पर चल दिये और आना और पावेल ने सोलोमेंका का चढाई वाला रास्ता पकडा।

रात बहुत अधेरी थी, हवा बन्द थी और दम घुट रहा था। जिस वक्त शहर सोवियत की इजलास मे हिस्सा लेने वाले ये लोग अपने-अपने घरो की तरफ जा रहे थे, शहर सो रहा था। धीरे-धीरे उनके कदमो की आहट और उनकी आवाजें डूब गई। पावेल और आना शहर के बिचले हिस्से मे दूर तेजी से चले जा रहे थे। बाजार मे, जो रात के वक्त उजाड सा था, गश्त करने वाले सिपाहियो की एक टोली ने उनको रोका और उनके कागजात का मुआइना किया और फिर उन्हे आगे बढ जाने दिया। उन्होने बडी सडक को पार किया और फिर एक अधेरी खामोश गली मे पहुचे जो एक सूने और उजडे खित्ते को काटती थी। बाए तरफ मुडते हुए वे रेलवे के खास गोदामो के समानान्तर बडी सडक पर आगे बढते रहे। रेलवे गोदाम की इमारते सीमेंट की थी और इस

अधेरे मे उनकी लम्बी कतार और भी डरावनी लग रही थी। आन्ना के मन मे न जाने क्यो एक धुधली सी आशका थी, वह घबराई हुई अधेरे मे आख गडा कर देख रही थी जैसे अपनी निगाहो से अधेरे को चीर रही हो और अपने साथी के सवालो का जवाब अटक-अटक और रुक-रुक कर दे रही थी। जब वह भयानक छाया जिससे आन्ना को डर लग रहा था, केवल टेलीफोन का एक खभा निकली तो वह जोर से हस पडी और अपनी घबराहट की बात उसने पावेल से कही। उसने पावेल की बाह पकड ली और पावेल के कधे के भार को अपने कधे पर महसूस करते हुए उसके दिल को बहुत ढाढस मालूम हुआ।

"मैं अभी सिर्फ तेईस बरस की हू, मगर घबराहट के मामले मे किसी बुढिया से कम नही। अगर तुम मुझे बुजदिल समझो तो यह तुम्हारी गलती होगी। मगर पता नही क्यो आज रात में एक अजीब परेशानी और बेचैनी सी महसूस कर रही हू, गो इसमे शक नही कि तुम्हारे साथ रहने से अपने आपको मैं काफी महफूज समझती हू और सच बात तो यह है कि मुझे इस तरह अपने डरने पर शर्म आ रही है।"

और सचमुच पावेल की गभीर शान्ति, उसकी जलती हुई सिगरेट जो बीच-बीच मे पल भर के लिए उसके चेहरे के एक भाग को अलोकित कर देती थी और उस आलोक मे उसकी साहसी लोगो जैसी भवे दिख जाती थी—इन सब चीजो ने उन डरो और आशकाओ को दूर भगा दिया जिन्हे अधेरी रात, उस जगह के सूनेपन और उस कहानी ने पैदा किया था जिसे अभी उन्होने मीटिंग मे सुना था। मीटिंग की अगली रात को शहर के छोर पर एक बडा भयानक कत्ल हो गया था, उसी की कहानी उन्हे सुनने को मिली थी।

मालगोदाम पीछे छूट गया। एक छोटी सी खाडी थी जिस पर पुल बना हुआ था। उन्होने उस पुल को पार किया और रेलवे लाइन के नीचे-नीचे चलने वाली टनेल को जाने वाली सडक पर बढते रहे। यही टनेल शहर के इस हिस्से को रेलवे के इलाके से जोडती थी।

स्टेशन की इमारत दाहिनी तरफ को अब उनके बहुत पीछे छूट गई थी। यह सडक डिपो के उस पार एक अधी गली में खतम होती थी। वे अब समतल जमीन पर पहुच गये थे। ऊपर रेलवे लाइन के आसपास स्विचो और रेलगाडी की आमद बतलाने वाले आर्के की रगीन रोशनिया अधेरे मे चमक रही थी और डिपो के पास एक यार्ड इजन रात को घर लौटता हुआ मारे थकान के लम्बी सास छोड रहा था।

टनेल के मुहाने पर एक सडक का लैम्प जगदार काटे से लटक रहा था। हवा मे वह हलके-हलके हिल रहा था जिससे उसकी धुधली पीली रोशनी कभी टनेल की एक दीवार पर और कभी दूसरी दीवार पर पड रही थी।

टनेल के मुहाने से करीब दस गज पर, बडी सडक के पास, एक छोटी सी बगलिया अकेली खडी थी। दो साल पहले तोप के एक गोले ने उसके भीतरी हिस्से को तबाह कर दिया था और उसके अगवाडे को खडहर बना दिया था। लिहाजा इस वक्त वहा एक बडा सा गढा बना हुआ था और वह बगलिया अपनी दरिद्रता का प्रदर्शन करते हुए सडक के किनारे किसी भिखारी की तरह खडी थी। ऊपर से एक रेलगाडी के गरजने की आवाज आ रही थी।

"हम लोग अब करीब-करीब घर पहुच गये," आना ने चैन की सास लेते हुए कहा।

पावेल ने आना की नजर बचा कर अपनी बाह को छुडाने की कोशिश की। मगर आना ने उसकी बाह नही छोडी। वे लोग उस उजडे हुए घर के पास से गुजर गये।

तभी अचानक उन्हें अपने पीछे कुछ आवाजें सुनाई दी। ये दौडते हुए पैरो और जोर-जोर से सास लेने की आवाजें थी। पीछे के लोगो ने उन्हे आकर पकड लिया।

कोर्चागिन ने अपनी बाह को झटका दिया मगर डरी हुई आना उसे पूरे जोर से पकडे हुए थी। और इसके पहले कि वह अपनी बाह को छुडा सके, मौका हाथ से निकल चुका था, उसकी गर्दन को किसी ने अपने मजबूत पजे मे ले लिया था। एक लहमा और गुजरा और उसे ऐसा झटका लगा कि वह घूम कर अपने हमला करने वाले के सामने आ गया। वह हाथ उसके गले की तरफ बढा और उसके ट्यूनिक के कालर को इतना मरोडते हुए कि पावेल का गला घुटने लगा, उसने रिवाल्वर की नली उसके मुह से अडा दी।

पावेल की डरी और ठहरी हुई आखें अपने भीतर का सारा जोर लगा कर अतिमानवी तनाव से रिवाल्वर का घूमना देख रही थी। रिवाल्वर की नली मे से मौत उसे घूर रही थी और उसके अदर न तो इतनी शक्ति थी, न इतनी इच्छा-शक्ति कि एक पल के लिए भी अपनी आख को रिवाल्वर की नली से हटा सकता। वह अपनी मौत का इन्तजार करता रहा। मगर आक्रमणकारी ने गोली नही चलाई और पावेल की फैली हुई आखो ने उस लुटेरे के चेहरे को देखा, उसके बडे से खोपडे को, उसके भारी जबडे को, और उसकी कई दिन की दाढी और मूछ की काली छाया को। मगर टोपी की चौडी बारी के नीचे उसकी आखें नही दिखाई दे रही थीं।

कोर्चागिन ने अपनी आख की कोर मे आना के खडिये की तरह सफेद चेहरे की एक हलकी सी झलक पाई। आना को उसी वक्त उन तीन लुटेरो मे से एक दीवार के उस बडे से मोखे के अदर घसीट ले गया। बेदर्दी से उसकी बाह को मरोडते हुए उसने आना को जमीन पर गिरा दिया। एक और छाया

पावेल की तरफ लपकी, पावेल ने केवल उसकी छाया टनेल की दीवार पर देखी। उसे पीछे के उस खडहर मकान के भीतर हाथापाई की आवाज सुन पडी। आना जी-जान से लड रही थी, उसकी घुटती हुई आवाज एकाएक बन्द हो गई, जब उसके मुह मे एक टोपी ठूस दी गई। वह बडी खोपडी वाला बदमाश जिसके हाथ मे कोर्चागिन की जिन्दगी थी, बलात्कार के उस स्थल की ओर वसे ही खिचा जैसे कोई जगली जानवर अपने शिकार की ओर। स्पष्ट ही वह इस गिरोह का सरदार था और उसको यह शोभा नही देता था कि ऐसे मामले मे निष्क्रिय दर्शक बना खडा रहे। यह छोकरा तो अभी कल का लौंडा था, उससे डरने की कोई बात नही।

"इसके सिर पर कसकर दो घूसे लगाओ और कह दो कि मैदान मे होकर भाग जाय और तुम देखना वह बिना एक बार मुडे और पीछे को ताके सरपट शहर तक भागता चला जायगा।" उसने अपनी पकड ढीली कर दी।

"भाग जाओ जिधर से आये थे उधर ही को लौट जाओ और देखो चिल्लाना-विल्लाना मत, नही तो अभी एक गोली तुम्हारी गर्दन के पार हो जायगी," उसने अपनी बन्दूक की नली कोर्चागिन के माथे से अडाते हुए कहा। "अच्छा भागो," उसने अपनी फटी आवाज में धीरे से कहा और अपनी बन्दूक नीचे कर दी ताकि उसके शिकार को गोली का डर न रहे।

कोर्चागिन लडखडाता हुआ पीछे हटा और आक्रमणकारी पर निगाह रखते हुए तिरछा होकर दौडने लगा। वह बदमाश यह देखकर कि उस छोकरे को अब भी गोली का डर लग रहा है, मुडा और उस खडहर मकान की तरफ बढा।

कोर्चागिन का हाथ तेजी से अपनी जेब पर गया। काश कि वह काफी फुर्ती से काम कर सकता! उसने घूम कर अपना बाया हाथ आगे बढाया, जल्दी से निशाना लिया और गोली चला दी।

लुटेरे को अपनी गलती समझने मे बहुत देर हो गई थी। उसे हाथ उठाने का भी वक्त नही मिला और गोली उसके पहलू को चीरती हुई निकल गई।

गोली लगने से वह धीमे से कराहता और लडखडाता हुआ जाकर टनेल की दीवार से टकराया और दीवार को अपने पजो से पकडने की कोशिश करता हुआ धीरे-धीरे वही जमीन पर ढेर हो गया। मकान के भीतर से एक छाया चुपके से बाहर आई और नीचे गली की तरफ भागी। कोर्चागिन ने उस पर भी गोली छोडी। एक दूसरी छाया झुक कर कमर दुहरी किये तीर की तरह टनेल की स्याह गहराई की तरफ भागी। एक गोली चलने की आवाज हुई। गोली ने ककरीट को फोड दिया और धूल उडी। उस काली आकृति पर भी वह धूल पडी। वह आकृति उछल कर एक ओर हटी और अधेरे मे

खो गई। एक बार फिर ग्राउनिंग की गोली ने रात की निस्तब्धता को चीर दिया। दीवार के पास वह बड़े से खोपड़े वाला लुटेरा अपनी मृत्यु की यन्त्रणा में ऐंठ रहा था।

कोर्चागिन ने आना को उसके पैरों पर खड़ा किया। अभी जो कुछ उस पर गुजरी थी, उसके आतंक में स्तब्ध वह लुटेरे का दर्द में ऐंठना देख रही थी। मगर अब भी उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सुरक्षित है।

कोर्चागिन उसे रोशनी के घेरे से हटा कर वापस शहर की ओर बढ़ते हुए अंधेरे में घसीट ले गया। जब वे दौड़ कर रेलवे स्टेशन की तरफ जा रहे थे, तो रोशनियां टोल के पास ऊपर टीले पर चमक रही थीं और रेलवे लाइन पर एक राइफिल छूटने की आवाज हुई।

बातियेवा पहाड़ी पर आना के घर पहुंचते-पहुंचते मुर्गे बाग देने लगे थे। आना बिस्तर पर लेट गई। कोर्चागिन मेज के पास बैठा सिगरेट पीता और अपनी सिगरेट के धुएं का ऊपर उठना देखता रहा। उसने अपनी जिन्दगी में यह चौथी बार किसी की जान ली थी।

उसने अपने मन में सोचा, क्या सचमुच हिम्मत नाम की कोई चीज होती है? कोई ऐसी चीज जो सदा अपने निर्विकार रूप में दिखलाई देती हो? अपनी अनुभूतियों को दुहराते हुए उसने इस बात को अपने तईं स्वीकार किया कि उन कुछ क्षणों में जब बन्दूक की नली की भयानक काली आंख उसको घूर रही थी, उस वक्त वह दहशत से कांप गया था, मानो दहशत ने उसके दिल को अपनी बर्फानी गिरफ्त में ले लिया हो। और वे जो दो काली छायाएं बच कर निकल गईं, इसका कारण क्या सिर्फ यह था कि उसकी आंखें कमजोर थीं या यह कि उसे बाएं हाथ से गोली चलानी पड़ रही थी? नहीं। कुछ कदमों की दूरी पर उसका निशाना कभी नहीं चूक सकता था और वे जो दो लोग बच गये, उसका कारण सिर्फ यह था कि वह घबरा गया था और इसीलिए जल्दी में उसका हाथ कांप गया था।

टेबुल लैम्प की रोशनी उसके सिर पर ही सबसे ज्यादा पड़ रही थी। आना गौर से उसको देख रही थी और उसके चेहरे पर आते-जाते हर भाव को और उसके सिर के हिलने वगैरह को समझ रही थी। पावेल की आंखें शान्त थीं, उसकी पेशानी की झुर्रियों में ही उसके गहरे सोच का पता चल रहा था।

"तुम क्या सोच रहे हो पावेल?"

अचानक पूछे गये इस सवाल से उसके विचार उसी तरह उड़ गये जिस तरह धुआं उठता हुआ रोशनी के घेरे से बाहर निकल जाता है। और उसने पहली बात जो दिमाग में आई, कह दी

"मुझे कमाडेंट के दफ्तर जाना ही चाहिए। इस मामले की फौरन रिपोर्ट होनी चाहिए।"

बुरी तरह थकान महसूस करता हुआ वह बेमन से उठा।

आना ने उसका हाथ पकड लिया क्योंकि अकेले छूट जाने के ख्याल से उसे डर मालूम हो रहा था। फिर उसने पावेल को दरवाजे तक पहुचाया और ड्योढी पर खडी-खडी उस नौजवान को, जिसकी अब वह इतनी ऋणी थी, तब-तक देखती रही जब तक कि वह अधेरे मे खो नही गया।

कोर्चागिन की रिपोर्ट ने उस हत्या के रहस्य का पता चला दिया जिससे रेलवे के सतरी बहुत परेशान थे। फौरन उस लाश की शिनाख्त हुई और यह मालूम हुआ कि वह फिम्का नाम के एक नम्बरी मुजरिम की लाश थी। यह फिम्का नम्बरी हत्यारा और लुटेरा था और बहुत बार जेल काट आया था।

अगले रोज हर आदमी टनेल के पास की इस घटना के बारे मे बात कर रहा था। इतना ही नही, यह घटना पावेल और स्वेतायेव के बीच एक अप्रत्याशित झगडे का भी कारण बनी।

काम अभी चल ही रहा था जब स्वेतायेव वर्कशाप मे आया और उसने कोर्चागिन को बात करने के लिए बुलाया। स्वेतायेव आगे-आगे खामोश चला जा रहा था और गलियारे के एक दूर कोने मे पहुच गया था। वह बहुत उद्विग्न हो रहा था और उसकी समझ मे नही आ रहा था कि बात कैसे शुरू करे। आखिरकार उसने कहा

"मुझे बतलाओ कल क्या हुआ।"

"मैं समझता था कि तुम्हे मालूम होगा।'

स्वेतायेव ने बेकली से अपने कधे उचकाये। पावेल को इस बात का पता नही था कि उस टनेल वाले काड का असर दूसरो से कही ज्यादा स्वेतायेव पर हुआ था। पावेल को यह बात नही मालूम थी कि चाहे वह लुहार स्वेतायेव ऊपर से कितनी ही उदासीनता क्यो न दिखलाता हो, सच बात यह थी कि उसे आना बोर्हार्ट से प्रेम था। उस लडकी की ओर आकृष्ट होने वाला वह अकेला आदमी नही था, मगर प्रेम के तीर ने उसी को सबसे ज्यादा बेधा था। लगुतिना ने अभी-अभी रात की टनेल वाली घटना के बारे मे उसको बतलाया था और अब एक ही सवाल उसे तग कर रहा था जिसका जवाब उसे नही मिला था। वह लट्ठमार तरीके से अपना सवाल पावेल से न कर सकता था, मगर तब भी जवाब तो उसे मिलना ही था। उसकी अच्छी भावनाओ ने उससे पूछा कि उसके मन को जो डर कुतर रहा है, वह बहुत क्षुद्र और स्वार्थी है। लेकिन उसके अदर जो अतर्द्वन्द चल रहा था, उसमे उसके भीतर के आदिम वन्य-पशु की ही जीत हुई।

"सुनो कोर्चागिन," उसने फटी हुई भारी आवाज मे कहा, "यह बात केवल तुम्हारे और मेरे बीच रहनी चाहिए। मैं जानता हू कि तुम आना की खातिर उस चीज के बारे मे कुछ बोलना नही चाहते, मगर तुम मेरे ऊपर तो विश्वास कर सकते हो। तुम मुझे यह बतलाओ कि जब वह लुटेरा तुम्हे अपनी गिरफ्त मे लिये हुए था, तो क्या उस वक्त उसके दूसरे साथियो ने आना के साथ बलात्कार किया ?"

घबरा कर उसने अपनी बात खतम करने के पहले ही अपनी आखें नीची कर लीं।

कोर्चागिन की समझ मे यह बात धुधले तरीके से आने लगी कि वह कौन सी चीज है जो स्वेतायेव को तग कर रही है। "अगर उसे आना की परवाह न होती और उससे कुछ लेना-देना न होता, तो वह हर्गिज इतना परेशान न होता। लेकिन अगर आना उसे प्रिय है तो " और पावेल आना के प्रति उस अपमान से जल उठा जो स्वेतायेव के सवाल मे निहित था।

"तुम क्यो पूछ रहे हो ?"

स्वेतायेव ने मुह ही मुह मे कुछ उखडी-उखडी सी बात कही जो समझ मे नही आती थी। उसको लगा कि पावेल समझ रहा है कि क्या मामला है और इसीलिए उसे गुस्सा आ गया

"उलटे मुझसे सवाल करके तुम अब बचने की कोशिश न करो। मैं सीधा-सादा जवाब चाहता हू।"

"तुम आना से प्यार करते हो ?"

बडी देर तक खामोशी रही। आखिरकार स्वेतायेव ने अपने ऊपर बहुत जब्र करके जवाब दिया, "हा।"

कोर्चागिन कोशिश करके अपने गुस्से को दबाता हुआ मुडा और एक बार भी पीछे की ओर देखे बिना सीधे गलियारे मे आगे बढता गया।

एक रात ओकुनेव, जो अनिश्चय की हालत मे कुछ देर से अपने दोस्त के बिस्तर के पास मडरा रहा था, आखिरकार बिस्तर के छोर पर बैठ गया और उसने उस किताब पर अपना हाथ रख दिया जिसे पावेल पढ रहा था।

'सुनो पावलुश्का, एक बात है जिसका बोझ मैं अपने सीने मे उतारना चाहता हू। एक दृष्टि से तो वह बिल्कुल महत्वहीन सी बात मालूम पडेगी, मगर दूसरी दृष्टि से वह उतनी ही महत्वपूर्ण है। मेरे और तालिया लगुतिना के बीच गलतफहमी हो गई है। बात यह है कि पहले मैं उसे काफी चाहता था।" ओकुनेव ने बडे कातर ढग से अपना सिर खुजलाया। मगर जब उसने अपने

दोस्त के चेहरे पर हसी का कोई निशान नही देखा, तो उसे हिम्मत हुई। "मगर तालिया . तुम जानते ही हो। ठीक तो है मैं तुम्हे तमाम तफसील की बाते न बतलाऊगा, जरूरत भी नही है, उनके बिना भी बात काफी साफ है। कल हम दोनो ने शादी करने का फैसला किया। अब देखो मामला कैसा चलता है। मैं बाईस साल का हुआ, हम दोनो को वोट देने का अधिकार है। हम दोनो बराबरी के आधार पर रहना चाहते है। तुम्हारा क्या खयाल है?"

कोर्चागिन ने सवाल पर गौर किया।

"मैं क्या कहू कोलिया? तुम दोनो मेरे दोस्त हो, हम सब एक ही बिरादरी के लोग हैं और हमारे सबके तौर-तरीके एक-दूसरे से बिल्कुल मिलते है। तालिया बहुत अच्छी लडकी है। मजे मे चलेगी जिन्दगी, उसमे कहना क्या है।"

दूसरे रोज कोर्चागिन डिपो मजदूरो के होस्टल मे चला गया और कुछ दिन बाद आना ने तालिया और निकोलाई के सम्मान मे एक पार्टी दी, एक सादी सी कम्युनिस्ट पार्टी जिसमे खाना-पीना नही था। यह अपने संस्मरण सुनाने और अपनी प्रिय किताबो से टुकडे पढने की शाम थी। उन्होने बहुत से गाने गाये और अच्छी तरह गाये। उनकी आवाजें दूर तक गूजी। उसके बाद कात्युशा जेलेनोवा और वोलिन्तसेवा एक अकार्डियन ले आई और कमरा उसकी रुपहली लयो और भारी, जानदार आवाजो से गूज उठा। उस शाम को पावेल ने और दिनो से भी ज्यादा अच्छा बजाया और जब सभी के दिलो मे खुशी बिखेरते हुए भारी-भरकम पाक्रातोव ने नाचना शुरू कर दिया, तो पावेल भी अपने बजाने की उदास शैली को भूल गया और बडी मस्ती से बजाने लगा।

देनिकिन जब आयेगा जान
कोलचक के भी कट गये कान
होगा तब वह भी सिढी सुलतान

अकार्डियन पिछले जमाने के गीत गा रहा था, उन तूफानी सालो के गीत और आज की दोस्ती और संघर्षों और आनन्दो के गीत। मगर जब वह बाजा वोलिन्तसेव को दिया गया और जब उस मेकेनिक ने "यावलेव्को" नृत्य की मस्त धुन शुरू की, तो कोर्चागिन से न रहा गया और वह सुधबुध भूलकर नाचने लगा। अपनी जिन्दगी में पावेल यह तीसरी और आखिरी बार नाचा था।

''तेरह

यह सरहद है। दो चौकिया है जो दो अलग-अलग दुनिया की प्रतीक है और अपनी निश्शब्द शत्रुता लिये आमने-सामने खडी है। उनमे से एक पर अच्छी तरह रन्दा किया हुआ है। उस पर पालिश भी है और काले व सफेद रग मे वह रगी हुई भी है और देखने मे पुलिस बॉक्स जैसी जान पडती है। उसके मस्तक पर एक सिर वाला ईगल मोट मोटे कीलो से अपनी जगह पर अच्छी तरह टका हुआ है। उसके डैने फैले हुए है, पजे धारीदार खम्भे को पकडे हुए हैं, टेढी चोच खुली हुई है और वह शिकारी पक्षी अपनी दर्पपूर्ण आखो से सामने के उस खम्भे को देख रहा है जिस पर हसिये-हथौडे का निशान है। यह एक ओक का मजबूत गोला, मोटा भद्दा गढा हुआ खम्भा है जो मजबूती से जमीन के ऊपर पैर जमाये खडा है। दोनो खम्भे समतल जमीन पर हैं, मगर उनके बीच एक गहरी खाई है और वह खाई यह है कि दोनो दो दुनियाओ के प्रतीक हैं। उनके दरमियान छ कदमो के बराबर जो जगह है, उसे आप अपनी जान को खतरे मे डाले बिना नही पार कर सकते।

यह सरहद है।

काले सागर से लेकर हजारो मील सुदूर उत्तर मे आर्कटिक महासागर तक, सोवियत समाजवादी प्रजातत्र के ये शान्त पहरुए अपने लोहे के कवच पर श्रम का महान प्रतीक लगाये मूर्तिवत खडे हैं। ईगल वाली चौकी पर सोवियत उक्रेन और पूजीवादी पोलैंड की सरहदे मिलती है। वह उक्रेन के भीतरी प्रदेश मे वेरेजदोव नामक कस्बे से करीब आठ मील पर स्थित है और उसके सामने कोरेक नामक पोलिश कस्बा है। स्लावुता से लेकर अनापोल तक के सरहदी इलाके मे उत्तरी सरहदी वटालियन का पहरा है।

सरहद पर के ये सैनिक बर्फ से ढके हुए मैदानो पर मार्च करते हैं, जगलो को काट कर उनके बीच से रास्ता बनाते है, नीचे वादियो मे घुसते हैं और पहाडियो पर चढते हैं, पहाडो की चोटियो के पीछे खो जाते हैं और एक नदी के घाट पर जाकर रुकते है और वहा से एक विरोधी देश के सर्द मैदानो को देखते हैं।

हड्डी को कपा देने वाली सर्दी पड रही है। यह एक ऐसा दिन है जब पाले की वजह से फेल्ट जूते के तल्ले से दब कर बर्फ चरमर करती है। लाल सेना का एक भीमाकार सैनिक पौराणिक वीरो के योग्य हेलमेट लगाये हसिये-हथौडे वाली चौकी से निकल कर अपने भारी कदमो से गश्त पर निकल जाता है। वह एक बडा सा भूरा बरानकोट और फेल्ट जूते पहने है। बरानकोट के ऊपर वह एक बडा सा भेड के ऊन का कोट पहने है जो उसकी एडी तक

पहुचता है और जिसका कालर भी वैसा ही बडा है। वह बर्फ के भयानक से भयानक तूफान मे भी आदमी को गर्म रखता है। उसके सिर पर कपडे का एक हेलमेट है और उसके हाथो मे भेड की खाल के दस्ताने हैं। अपनी राइफल उसने कधे पर लटका रखी है और गश्त लगाते समय जमीन पर लसरते हुए उसके कोट से बर्फ पर निशान बनता जाता है और वह अपने घर पर उगाई हुई तम्बाकू की सिगरेट का कश खूब मजे ले-लेकर खीच रहा है। खुले हुए मैदानो मे सोवियत के ये सरहदी सन्तरी एक-एक किलोमीटर की दूरी पर तैनात हैं ताकि एक सन्तरी हमेशा दूसरे को देख सके। दूसरी ओर पोलिश सीमा मे एक-एक किलोमीटर मे दो-दो सन्तरी है।

एक पोलिश पैदल सिपाही अपनी गश्त के रास्ते पर बढता हुआ लाल सैनिक की तरफ आता है। वह मोटे-मोटे फौजी बूट और कुछ हरापन लिये खाकी वर्दी पहने है और उसके ऊपर एक काला कोट है जिसमे चमचमाती बटनो की दो कतारें लगी हुई हैं। उसके सिर पर सफेद ईगल का चिह्न लिये उसकी वर्दी वाली चौखुटी टोपी है। उसके कधो के फीतो और कालर पर और भी सफेद ईगल बने हुए हैं, मगर उनसे उसके जिस्म को कोई गरमी नही मिलती। उस जाडे-पाले मे वह बुरी तरह ठिठुर गया है और अपने शरीर को गरमाने के लिए अपने मर्दी से सुन्न पडे हुए कानो को घिसता है और चलते-चलते एक एडी को दूसरी एडी से भी मिला लिया करता है। मगर पतले दस्तानो के भीतर उसके हाथ सर्दी से ऐठे जा रहे है। पाला इतने जोरो से गिर रहा है और सर्दी ऐसी भयानक है कि वह पोल एक क्षण को भी कही रुकने की जुर्रत नही कर सकता, क्योकि खतरा है कि पाला उसके अग को जकड देगा। लिहाजा वह बीच-बीच मे दौडने भी लग जाता है। जब दोनो सन्तरी पास आ गए तो पोलिश सिपाही लाल सैनिक के साथ साथ चलने के लिए घूम पडा।

सरहद पर सैनिको का आपस मे बातें करना मना है। मगर जब कोई आसपास न हो और एक किलोमीटर की दूरी पर ही दूसरा आदमी हो, तो फिर कौन कह सकता है कि सन्तरी चुपचाप गश्त लगा रहा है या अन्तर्राष्ट्रीय नियमो का उल्लघन कर रहा है।

पोलिश सिपाही को सिगरेट की जबर्दस्त तलब लगी है, मगर अपनी माचिस वह बारक मे भूल आया है और इस वक्त जैसे उसको और भी ललचाने के लिए सोवियत सरहद की तरफ से तम्बाकू की खुशबू आ रही है, गोया हवा उसको सताने के लिए ही यह खुशबू उडाकर ला रही हो। और उस पोलिश सिपाही की सिगरेट की प्यास और तेज हो जाती है। पोल अपना कान घिसना बद कर देता है और गर्दन मोड कर पीछे देखता है, कौन जाने कप्तान साहब

या हुजूर लेफ्टिनेंट साहब अपने घोड़े पर सवार, किसी टीले के पीछे से सामने आ जायें। अक्सर ही तो वे निगरानी के लिए निकला करते हैं। मगर उसे कुछ दिखाई नही देता, सिवा धूप मे चमकती हुई सफेद बर्फ के। आसमान मे बादल का नाम नही है।

"दियासलाई है कामरेड ?" उस पोल ने ही सबसे पहले नियम को तोड़ा। और अपनी तलवार जैसी संगीन लगी फ्रांसीसी राइफिल को ठेल कर कंधे पर डालते हुए उसने अपनी अकड़ी हुई उंगलियो से बड़ी मुश्किल से अपने कोट की जेब में से सस्ती सिगरेट का एक पैकेट निकाला।

लाल सैनिक ने उसकी बात तो सुन ली, मगर सरहद की दूसरी तरफ के आदमी से बात करना कायदे के खिलाफ है, इसलिए उसने कोई जवाब नही दिया। इसके अलावा यह भी था कि लाल सैनिक ठीक समझ नही पाया कि वह सिपाही क्या कहना चाहता है। इसलिए वह अपने रास्ते पर आगे बढ गया। उसके नर्म और गर्म फेल्ट के जूतो के नीचे बर्फ चरमर कर रही थी।

"कामरेड बोल्शेविक, दियासलाई है ? माचिस की डिबिया फेंक दो न !" इस बार पोलिश सिपाही ने रूसी में बात की।

लाल सैनिक ने अपने पड़ोसी को बहुत गौर से देखा। उसने अपने मन मे कहा, "लगता है कि पाले ने इन जनाब को बुरी तरह जकड़ लिया है। होने को तो बेचारा थैलीशाह का सिपाही है, मगर देखो कैसी भयानक जिन्दगी है। जरा सोचो, इतने कम कपड़ो में उसे बाहर की सर्दी में धकेल दिया गया है! क्या ताज्जुब कि वह खरहे की तरह उचकता फिर रहा है, और तब जब कि सिगरेट पीने का भी इंतजाम न हो।" बिना पीछे मुड़े लाल सैनिक ने माचिस की डिबिया उसकी तरफ फेंक दी। सिपाही ने उसे लपक लिया और कई बार की नाकाम कोशिश के बाद आखिरकार उसकी सिगरेट जली और उसने माचिस की डिबिया वापिस लाल सैनिक के पास फेंक दी। तब लाल सैनिक ने अनिच्छापूर्वक ही सही, नियम भंग करते हुए कहा

"रखे रहो, मेरे पास और भी माचिस है।"

सरहद के उस पार से जवाब आया

"धन्यवाद, मैं नही रखूंगा। कही उन्होंने मेरे पास यह डिबिया देख ली तो मुझे दो साल जेल मे काटना पड़ेगा।"

लाल सैनिक ने गौर से अपनी माचिस की डिबिया को देखा। उसके लेबुल पर एक हवाई जहाज बना था जिसमें प्रोपेलर की जगह एक मजबूत मुट्ठी बनी हुई थी और अल्टीमेटम लिखा हुआ था।

"ठीक है, उनके यहां यह चीज नही चलेगी।"

वह सिपाही लाल सैनिक के साथ-साथ गश्त लगाता रहा। इस वीरान मैदान मे वह बेहद अकेला महसूस कर रहा था।

घोडे इतमीनान से दुलकी चाल से चले जा रहे थे और उनकी चाल के अनुसार काठियो के चू-चू करने में भी एक लय थी। पाले की हवा मे घोडो के नथुनो से निकली हुई सास थोडी देर के लिए जम कर सफेद भाप सी बन जाती थी। काले घोडे के नथुने के इर्द-गिर्द थोडा सा पाला जमा हुआ था। अपनी खबसूरत गर्दन को तिरछी किये और बडी खबसूरती से डग भरती हुई बटालियन कमाडर की घोडी अपने मुह मे पकडे लगाम से खिलवाड कर रही थी। दोनो घुडसवार फौजी बरानकोट पहने हुए थे, उनकी कमर पर पेटी लगी थी और उनकी आस्तीनो पर तीन लाल चौखुटे बने हुए थे। दोनो मे फर्क बस इतना ही था कि बटालियन कमाडर गाव्रिलोव की वर्दी के कफ-कॉलर वगैरह हरे रग के थे और उसके साथी के लाल रग के। गाव्रिलोव सरहदी सैनिको के साथ था, इस पचपन मील लम्बे विस्तार मे उसी की बटालियन सरहदी चौकियो की देखभाल करती थी, वही इस सरहदी इलाके का इचार्ज था। उसका साथी बेरेजदोव से आया हुआ एक आदमी था—बटालियन कमिसार कोर्चागिन, जो सार्वजनिक फौजी शिक्षा-व्यवस्था की ओर से आया था।

रात को बर्फ गिरी थी और ताजी सफेद बर्फ के गाले कम्बल की तरह उस सारे इलाके पर पडे हुए थे जिन्हे आदमी या जानवर किसी ने हाथ तक नही लगाया था। दोनो आदमी दुलकी चाल से अपने घोडे को बढाते हुए जगल मे से निकले और खुले मैदान को पार करने ही वाले थे, जहा मे चालीस कदम पर सरहदी चौकिया थी, जब कि गाव्रिलोव ने एकाएक अपने घोडे को रोक लिया। कोर्चागिन ने पीछे मुड कर देखा कि गाव्रिलोव काठी से नीचे झुका हुआ बर्फ पर पडे कुछ अजीब से निशानो का मुआइना कर रहा है। उसको देख कर ऐसा लगता था जैसे कोई छोटा सा दानेदार पहिया उस पर से गुजरा हो। कोई मक्कार जानवर इधर से गुजरा होगा जो बर्फ पर ये दाग छोड गया है जो अब उलझन पैदा कर रहे हैं। यह तो पता लगाना मुश्किल था कि जानवर किधर गया, मगर बटालियन कमाडर के रुकने की वजह यह नही थी। उस निशान से दो कदम पर, बर्फ के हलके से चूरे के नीचे एक और निशान था, किसी आदमी के पैर का निशान। पैर के निशानो मे सशय की कोई बात न थी, वे सीधे जगल की ओर निर्देश कर रहे थे और इसमे जरा सा भी सन्देह नही था कि पोलिश सीमा से कोई आदमी आया था। बटालियन कमाडर अपने घोडे को आगे बढाता हुआ सन्तरी की गश्त के रास्ते

के साथ-साथ चल रहा था। पैर के ये निशान पोलिश सरहद पर दस-बारह कदम तक दिखलाई दे रहे थे।

बटालियन कमाडर ने बडबडाते हुए कहा, "रात को उधर से सरहद पार करके कोई आया था। तीसरा प्लैटून फिर ऊघने लगा है—इस चीज का कोई हवाला उनकी सवेरे की रिपोर्ट मे नही है। बहुत खराब बात है।" गाव्रिलोव की पकती हुई मूछें बर्फ और पाले मे उसकी सास मे और भी सफेद हो रही थी और इस तरह उसके ओठो पर बैठी हुई थी कि उनको देख कर डर लगता था।

दूर पर दो आकृतिया इन घुडसवारो के पास आ रही थी। उनमे से एक दुबला-पतला आदमी था जो काले कपडे पहने था और जिसकी फ्रासीसी सगीन धूप मे चमक रही थी, और दूसरा एक बहुत ऊचा-पूरा आदमी था जो पीले रग का भेड की खाल का कोट पहने था। चित्ती घोडी एड के जवाब मे तेजी से दौड रही थी और वे दोनो घुडसवार इन लोगो के पास जल्दी से पहुच गये। आकर लाल सैनिक ने राइफिल अपने कधे से उतार ली और अपने मुह मे दबा हुआ सिगरेट का टुकडा बर्फ मे थूक दिया।

"सुबह मुबारक हो कामरेड। तुम्हारे यहा क्या हालचाल है ?" बटालियन कमाडर ने अपना हाथ उस लाल सैनिक की तरफ बढाया। लाल सैनिक ने हाथ मिलाने के लिए जल्दी से अपने हाथ का दस्ताना अलग किया। वह सरहदी सन्तरी इतना लम्बा था कि उस तक पहुचने के लिए कमाडर को अपनी काठी से आगे झुकने की भी जरूरत नही पडी।

वह पोल दूर से देखता रहा। यहा पर दो बोल्शेविक अफसर एक सैनिक का ऐसे अभिवादन कर रहे थे जैसे वह उनका बडा गहरा दोस्त हो। क्षण भर के लिए उसकी आख के सामने भी यह तस्वीर आ गई कि जैसे वह मेजर जाक़ज्वेस्की से हाथ मिला रहा है। मगर यह विचार ही बेवकूफी से इतना भरा था कि उसने चौक कर अपने इर्द-गिर्द देखा।

"मैंने आज ही चार्ज लिया है, कामरेड बटालियन कमाडर," उस लाल सैनिक ने रिपोर्ट दी।

"वहा का सारा रास्ता देख लिया है ?"

"नही, अभी नही।

"यहा पर रात दो से छः बजे तक किसकी ड्यूटी थी ?"

"सुरोतेंको की, कामरेट बटालियन कमाडर।"

"अच्छा अच्छा, मगर जरा आखें खोल कर चलना।"

कमाडर ने अपने घोडे को बढाते-बढाते चेतावनी के ये शब्द कहे

"और देखो, उन आदमियो के साथ जरा कम घूमा करो।"

सरहद से बेरेजदोव जाने की चौडी सडक पर उनके घोडे दुलकी चाल से चले जा रहे थे। कमाडर ने अपने साथी से कहा, "यहा सरहद पर तुम अपनी आखें जरा खुली रखना। जरा सी भी अगर कोई चूक हुई, तो उसका बुरा भुगतान करना पडेगा। हम लोगो का काम ऐसा है कि हम जरा भी सुस्ताने की जुर्रत नही कर सकते। दिन-दहाडे तो सरहद मे घुस आना आसान नही है, मगर रात को काफी होशियार रहने की जरूरत है। तुम्ही सोचो कामरेड कोर्चागिन। मेरे हिस्से मे, हमारी सरहद चार गावो को काटती हुई जाती है, इससे मामला काफी पेचीदा हो जाता है। चाहे कितने ही पास-पास तुम सन्तरियो को क्यो न खडा करो, होगा यही कि सीमा-रेखा के एक तरफ के सम्बधी, रेखा की दूसरी तरफ होने वाली हर शादी और जशन मे जरूर शरीक होगे। और क्या ताज्जुब—इन झोपडियो और खाडी के छिछले पानी के बीच मुश्किल से पच्चीस कदम का फासला होगा और वह पानी भी इतना छिछला है कि मुर्गी का बच्चा तक उसे पाव-पाव पार कर दे। इतना ही नही, सरहद पर माल का लेन-देन भी चोरी से होता है। यह सही है कि ज्यादातर बहुत छोटे पैमाने पर यह चीज होती है, जैसे कोई औरत पोलिश शराब की एक-दो बोतल ले आई या इसी किस्म की चीजें। मगर थोडा बहुत यह काम बडे पैमाने पर भी होता है, बडे-बडे पैसेवाले इस काम को करते हैं। तुमने सुना है न कि सरहद पर के तमाम गावो मे पोलो ने दूकाने खोल दी हैं जिनमे तुम्हे जरूरत की हर चीज मिल सकती है? और यकीन मानो कि ये दूकानें उन्होंने अपने गरीब किसानो के लिए नही खोली हैं।"

बटालियन कमाडर की बात सुनते-सुनते कोर्चागिन सोचने लगा कि सरहद की जिन्दगी स्काउटिंग करने जैसी जिन्दगी है जिसका कोई भी ओर-छोर नही।

"तुम्हारा क्या ख्याल है कामरेड गाव्रिलोव, मैं तो सोचता हू कि शायद चोरी-चोरी माल की बिक्री के अलावा और भी कुछ ज्यादा गभीर चीजें यहा पर चल रही हैं?"

"यही तो मुसीबत है," बटालियन कमाडर ने चिन्ता के स्वर मे जवाब दिया।

बेरेजदोव एक छोटा सा कस्बा था जिसमे खास आबादी यहूदियो की थी। उसमे दो-तीन सौ छोटे-छोटे मकान थे जो बेतरतीबी से इधर-उधर फैले हुए थे और एक बडा सा बाजार का चौक था जिसके बीचोबीच कोई दो दर्जन दूकानें थी। वह चौक लीद-गोबर से गदा रहता था। खास कस्बे के चारो तरफ किसानो की झोपडिया थी। यहूदियों की आबादी वाले हिस्से

के बीच मे बूचडखाने के रास्ते पर एक पुराना यहूदी गिर्जाघर खडा था। उसकी बडी टूटी-फूटी गदी सी इमारत थी। गोकि इस गिर्जाघर मे सनीचर को भीड इकट्ठा होती थी, मगर तो भी अब उसके चहल-पहल के दिन गायब हो चुके थे और गिर्जाघर का यहूदी पादरी एक ऐसी जिन्दगी बसर करता था जो कि निश्चय ही उसको बहुत प्रिय न थी। १९१७ मे जो कुछ हुआ था, वह जरूर ही बुरी चीज थी क्योकि उसी की वजह से तो अब यह हालत थी कि इस मनहूस जगह मे भी जरा-जरा से छोकरे तक उसकी कोई इज्जत न करते थे जब कि उसे यह इज्जत पाने का हक था। यह सच है कि बूढे-पुराने लोग सिर्फ कोशर (हलाल) खाना खाते थे, मगर न जाने कितने छोकरे थे जो सुअर के गोश्त जैसी हराम चीज के बने हुए सॉसेज खाते थे। इस ख्याल से ही यहूदी पादरी को मितली मालूम होने लगती थी। और रवाई बोख्ख ने गुस्से मे आकर जोर से एक सुअर के लात लगाई जो लीद-गोबर के ढेर मे अपने खाने की चीज ढूढ रहा था। पादरी को इस बात की जरा भी खुशी नही थी कि बेरेजदोव को जिले का केन्द्र बना दिया गया और न उसे ये कम्युनिस्ट ही पसन्द थे जो भगवान जाने कहा से आ गये थे और अब तमाम चीजो को उलट-पलट कर रखे दे रहे थे। हर रोज कोई नई बदमजगी पैदा हो जाती। मिसाल के लिए, कल उसने पादरी के मकान के दरवाजे पर यह साइनबोर्ड लगा देखा "बेरेजदोव जिला कमिटी, उक्रेन की नौजवान कम्युनिस्ट लीग।"

रवाई ने सोचा कि इस साइनबोर्ड से सिवा चुराई के दूसरी किसी भी चीज की उम्मीद करना बेसूद होगा। वह अपने ख्याल मे इतना डूबा हुआ था कि उसने अपने गिर्जाघर के दरवाजे पर चिपकी हुई नोटिस को देखा ही नही, जब तक कि वह उसके ठीक सामने न पहुच गया। नोटिस मे लिखा हुआ था

> "मजदूर नौजवानो की एक आम सभा आज क्लब मे होगी। कार्यकारिणी समिति के चेयरमेन लिसित्सिन और नौजवान कम्युनिस्ट लीग की जिला कमिटी के कार्यवाहक मत्री कोर्चागिन के भाषण होगे। मीटिंग के बाद नौवर्षीय स्कूल के विद्यार्थी गाने-बजाने का कार्यक्रम पेश करेगे।"

रवाई ने गुस्से मे आकर नोटिस को नोच लिया और बोला, "अच्छा तो उन्होने बिस्मिल्ला कर भी दिया!"

स्थानीय गिर्जाघर से लगे हुए एक लम्बे-चौडे बाग के बीच मे एक बडा सा पुराना मकान खडा था जो किसी जमाने मे पादरी का था। मकान के

कमरो की, जिनमे पादरी अपनी बीबी के साथ रहता था, हवा मे घुटन भी महसूस होती थी और ऐसा मालूम होता था कि वहा के कोने-कोने मे भयानक ऊब और थकान भरी हुई है। यह मिया-बीवी उस मकान ही की तरह बुड्ढे और उतने ही जड थे और बहुत जमाने से एक-दूसरे से बिलकुल ऊबे हुए थे। मकान के नये मालिको के आने के साथ ही वहा की सारी ऊब और थकान भी जैसे साफ हो गई। उस बडे हॉल मे, जिसमे वे धर्मप्राण लोग सिर्फ गिर्जा-घर की छुट्टियो के रोज अपने मेहमानो का स्वागत-सत्कार करते थे, अब हमेशा भीड लगी रहती थी क्योकि वह मकान अब बेरेजदोव कम्युनिस्ट पार्टी कमिटी का हेडक्वार्टर था। सामने के हॉल के दाहिनी तरफ वाले छोटे कमरे के दरवाजे पर खडिये से "कोमसोमोल जिला कमिटी" लिखा हुआ था। यही पर कोर्चागिन, जो दूसरी यूनिवर्सिल मिलिटरी ट्रेनिंग बटालियन का फौजी कमिसार होने के साथ ही साथ नवसगठित कोमसोमोल जिला कमिटी का कार्यवाहक मत्री भी था, अपने दिन का काफी वक्त गुजारता था।

आना के घर की उस गोष्ठी मे गये उसको आठ महीने गुजर चुके थे, मगर उसको ऐसा लगता था कि जैसे यह अभी कल की ही बात हो। कोर्चा-गिन ने कागज के ढेर को एक तरफ सरका दिया और अपनी कुर्सी पर पीछे को झुका हुआ अपने ख्यालो मे डूब गया ।

घर मे शान्ति थी। रात काफी जा चुकी थी और पार्टी कमिटी का दफ्तर खाली हो गया था। कमिटी का मत्री त्रोफीमोव कोर्चागिन को घर मे अकेला छोड कर थोडी देर पहले अपने घर चला गया था। पहले से खिडकी पर अजीब-अजीब सी आकृतिया बनी हुई थी, मगर कमरा गर्म था। मेज पर मिट्टी के तेल का लैम्प जल रहा था। कोर्चागिन अभी कुछ दिन पहले की बातें याद कर रहा था। उसे याद आया कि कैसे अगस्त के महीने मे कारखाने के कोमसोमोल सगठन ने उसे नौजवानो का सगठनकर्ता बना कर एक मरम्मती गाडी के साथ एकातेरीनोस्लाव भेजा था। पतझड के आखिरी दिनो तक वह रेलगाडी के डेढ सौ लोगो के साथ-साथ एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन घूमता फिरा था। लडाई के बाद की गडबडी को दूर करके व्यवस्था स्थापित करना, टूटी-फूटी चीजों की मरम्मत करना और रेल के जले हुए और टूटे-फूटे डब्बो के अवशेषो की सफाई करना—यही उसका काम था। सिनेलनिकोवो से पोलोगी तक उन लोगो ने सफर किया और यही वह इलाका था जिसमे माखनो डाकू लूटपाट करके चारो तरफ तबाही व बर्बादी फैलाया करता था। गुलियाई-पोलिये मे वाटर-टावर की ईंट की बनी इमारत की मरम्मत करने और डाइनामाइट से उडाई गई पानी की टकी की दीवारो पर जहा-तहा लोहे की पत्तरें बिछाने मे पूरा एक हफ्ता लगा। गोकि पावेल फिटर नही था और इस

भारी काम का आदी नही था, तब भी औरो के साथ-साथ उसने भी रिंच सभाली और न जाने कितने हजार जग लगे बोल्ट कसे।

पतझड़ बीतते-बीतते रेलगाडी घर लौटी और कारखाने फिर अपने डेढ सौ काम करने वालो को पा गये...।

इलेक्ट्रीशियन पावेल अब अक्सर आना के घर जाया करता। उसके माथे की झुरिया साफ हो गईं और उसकी हसी फिर से सुनी जाने लगी।

रेलवे कारखाने के धूल-धक्कड से भरे चेहरे वाले मजदूर एक बार फिर उसके मुह से सघर्ष के पिछले वर्षों की कहानी सुनने के लिए जुटे, उन प्रयत्नो की कहानी जो गुलाम मगर विद्रोही रूस के किसानो ने अपने कधो पर सवार बादशाहो को उलटने के लिए किये थे, स्तेपान राजिन और पुगाचोव के विद्रोहो की कहानी।

एक शाम आना के घर पर, जब रोज से ज्यादा नौजवान इकट्ठा हुए थे, पावेल ने घोषणा की कि वह सिगरेट पीना छोड देगा, जिसकी आदत उसे लगभग अपने बचपन से ही पडी हुई थी।

उसने दृढ सकल्प के स्वर मे घोषणा की, "अब मैं कभी सिगरेट नही पीऊगा।"

यह चीज अचानक ही हुई। वहा पर मौजूद एक नौजवान ने यह कहा कि आदत—मसलन सिगरेट पीने की आदत—इच्छाशक्ति से ज्यादा मजबूत चीज होती है। इस सवाल पर दो मत थे। पहले तो पावेल ने कुछ नही कहा, मगर जब तालिया ने उसको बहस मे खीचा तो आखिरकार वह भी बहस मे शरीक हो गया।

"आदमी अपनी आदतो पर शासन करता है, न कि आदतें आदमी पर। अगर ऐसा न हो तो पता नही हम कहा पहुच जायें।"

स्वेतायेव ने एक कोने मे बैठे-बैठे अपनी जगह से कहा, "सुनने मे बात बहुत अच्छी लगती है, है न ? कोर्चागिन को बढ-चढ कर बात करना पसन्द है। मगर अपनी विद्वत्ता का इस्तेमाल वह अपने ऊपर क्यो नही करता ? वह सिगरेट पीता है, झूठ कहता हू ? यह भी उसे मालूम है कि यह बडी गदी आदत है। अच्छी तरह उसे यह बात मालूम है। मगर उसमे इतनी मर्दानगी नही कि इस आदत को छोड दे।" फिर अपने स्वर को बदलते हुए स्वेतायेव ने तीखे व्यग के स्वर मे कहा . "अभी कुछ ही रोज पहले वह अध्ययन केन्द्रो मे सस्कृति का प्रसार करने मे लगा था, मगर इससे उसका गाली बकना बद हुआ क्या ? कोई भी आदमी जो पावका को जानता है, यही कहेगा कि वह बहुत गाली नही बकता, मगर एक बार जब शुरू करता है तो फिर उसे कोई

रोकटोक पसन्द नही होती। दूसरे को उपदेश पिलाना खुद आचरण करने से हमेशा ज्यादा सरल पड़ता है।"

इसके बाद खामोशी छा गई जिसमे काफी तनाव था। स्वेतायेव के स्वर के तीखेपन ने सबको जैसे ठण्डा कर दिया था। कोर्चागिन ने तत्काल कोई जवाब नही दिया। धीरे-धीरे उसने अपने ओठो के बीच से सिगरेट निकाली और कहा

"अब मैं फिर कभी सिगरेट नही पीऊगा।"

फिर थोडी देर की खामोशी के बाद उसने कहा

"यह मै दिम्का की खातिर नही, खुद अपने खयाल से कर रहा हू। जो आदमी किसी बुरी आदत से अपना पीछा नही छुडा सकता, वह किस काम का आदमी है। इसके बाद अब सिर्फ वह गाली बकने वाली आदत रह जाती है, जिसकी मुझे फिक्र करनी होगी। मैं जानता हू कि मैं इस जलील आदत पर अब तक काबू नही पा सका हू, मगर दिम्का भी इस बात को मानता है कि अब वह मेरे मुह मे गालिया कम ही सुनता है। सिगरेट पीना बद करने से किसी बुरे शब्द का मुह से निकलना बन्द करना ज्यादा मुश्किल काम है। इसलिए अभी मैं यह नही कह सकता कि सिगरेट ही की तरह मैं आज से गाली बकना भी बन्द कर दूगा। लेकिन इसका मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हू कि यह बुरी आदत भी मैं छोड जरूर दूगा।"

पाला शुरू होने के ठीक पहले नदी मे बह कर आते हुए लकडी के कुन्दो ने नहर को जाम कर दिया। फिर पतझड की बाढो ने उन्हे तोड दिया और तेज बहता हुआ पानी उस लकडी को, जिसकी इतनी सख्त जरूरत थी, बहा ले गया। और तब तक एक बार फिर सोलोमेंका ने अपने लोगो को रक्षा के काम पर भेजा, इस बार उस अनमोल लकडी की रक्षा के लिए।

कोर्चागिन दूसरे लोगो से पीछे नही छूटना चाहता था, इसलिए उसने हफ्ते भर तक, जब तक कि किनारे पर लकडी का ढेर नही लग गया, किसी को यह नही बतलाया कि उसे सर्दी लग गई है। उस बर्फानी पानी और पतझड की उस ठडी सीलन ने उसके खून मे सोते हुए उसके पुराने दुश्मन को जगा दिया और उसे तेज बुखार चढ आया। वह फिर बिस्तर पर पड गया। दो हफ्ते तक उसके शरीर मे गठिये की सख्त तकलीफ रही और जब वह अस्पताल से लौटा तो उसकी यह हालत थी कि वह एक टाग बेन्च के इधर और एक टाग उधर रख कर ही अपनी जगह पर काम कर सका। फोरमैन उसको देखकर उदासी से सिर हिलाता था। कुछ दिन बाद एक मेडिकल बोर्ड

ने उसे काम के लिए अयोग्य घोषित कर दिया और उसको बर्खास्तगी की तनखा और पेंशन पाने के अधिकार का सर्टिफिकेट दे दिया गया। मगर कोर्चागिन ने गुस्से से उसको लेने से इनकार कर दिया।

वह कारखाने से चला तो उसका दिल भारी था। वह धीरे-धीरे अपनी छडी का सहारा लिए आ रहा था, मगर हर कदम पर उसे सख्त दर्द महसूस होता था। उसे अपनी मा के कई खत मिले थे जिसमे उसने पावेल को घर बुलाया था और हर बार जब उसे अपनी मा का खयाल आता, तो उसके मन मे अपनी मा के विदाई के समय के ये शब्द गूज जाते

"मैं तो तुम्हे तभी देखती हू जब तुम लाचार और मजबूर होते हो।"

सूबा कमिटी मे उसे अपना कोमसोमोल और पार्टी का कार्ड दिया गया और फिर वह जाते समय कम से कम लोगो से मिल कर, ताकि जुदाई मे उतना ही कम दर्द हो, चुपके से अपनी मा के पास जाने के लिए शहर से निकल गया। दो हफ्ते तक उसकी बुढिया मा ने उसकी सूजी टागो को भाप से सेंका और उनकी मालिश की और महीने भर मे ही वह इस काबिल हो गया कि बिना अपनी छडी का सहारा लिए चल सकता था। उसका मन उस समय खुशी से भर उठा जब उसकी जिन्दगी मे गोधूलि की जगह यह एक नया सवेरा फिर से आया। एक बार फिर रेलगाडी उसे सूबे के केन्द्र मे ले आई। तीन दिन उसने वहा पर गुजारे और सगठन विभाग ने उसे प्रादेशिक फौजी कमिसारियट मे एक फौजी शिक्षा की यूनिट मे राजनीतिक कार्यकर्ता का काम सौप दिया।

एक हफ्ता और गुजरा और पावेल दूसरे नम्बर की बटालियन का फौजी कमिसार बन कर एक छोटे से, बर्फ से ढके हुए, कस्बे मे पहुच गया। कोमसो-मोल की एरिया कमिटी ने भी उसे एक काम सौप दिया वह काम था इलाके के बिखरे हुए कोमसोमोल सदस्यो को इकट्ठा करना और उस जिले मे नौजवान सभा का सगठन कायम करना। और इस तरह जिन्दगी फिर चल निकली।

बाहर बडी सख्त, दम घोंटने वाली गर्मी थी। कार्यकारिणी समिति के दफ्तर की खुली खिडकी मे से चेरी के पेड की एक शाख भीतर झाक रही थी। सडक के उस पार एक पोलिश गिर्जे के गोथिक शैली के घटाघर के ऊपर लगा हुआ सुनहरा क्रॉस धूप मे चमक रहा था। और खिडकी के सामने हाते मे छोटे-छोटे, आसपास की घास के समान हरे-हरे बत्तख के बच्चे खाने की तलाश मे व्यस्त घूम रहे थे। ये बत्तख के बच्चे कार्यकारिणी समिति के रखवाले के थे।

कार्यकारिणी समिति के चेयरमैन ने उस खत को जो अभी-अभी उसे मिला था, पढ कर खतम किया। उसके चेहरे पर एक छाया सी आ गयी और उसका बडा सा गठीला हाथ उसके बडे-बडे बालो मे घूमने लगा और वही रुक गया।

वेरेजदोव कार्यकारिणी समिति के चेयरमैन निकोलाई निकोलायेविच लिसित्सिन की उम्र सिर्फ चौबीस साल की थी, मगर न तो उसके कर्मचारी और न कोई स्थानीय पार्टी कार्यकर्ता ही इस बात का विश्वास करता था। लिसित्सिन लम्बा-चौडा मजबूत आदमी था और देखने मे इतना कठोर कि अक्सर डर लगता था और इसी सबसे उसकी उम्र कम से कम पैंतीस की मालूम होती थी। उसका शरीर खूब तगडा था, मोटी सी गर्दन और उस पर बडा सा सिर, भूरे रंग की तेज नुकीली आखें जिनमे एक फौलादी चमक थी और मजबूत जबडे जिनको देखकर लगता था कि यह उत्साही आदमी है। वह नीले रंग की बिर्जिस और भूरी वर्दी पहनता था जो अब घिस गई थी और जिसकी बाई तरफ वाली जेब पर "ऑर्डर ऑफ द रेड बैनर" टका हुआ था।

अपने बाप और दादा की तरह लिसित्सिन भी बचपन से ही धातु का काम करने वाला मजदूर रहा था। और अक्तूबर क्रान्ति के पहले तुला नगर के एक तोप के कारखाने मे वह एक खराद का "कमाडर" था।

पतझड की उस रात से शुरू करके जब तुला का यह लुहार कधे पर राइ-फिल रख कर मजदूरो के राज के लिए लडने गया, तब से अब तक वह घट-नाओ के भवर मे ही चल रहा था। क्रान्ति और पार्टी ने कोलिया लिसित्सिन को एक कठिन जगह से दूसरी कठिन जगह भेजा और उन सभी जगहो मे अपने काम को शान से पूरा करते हुए लिसित्सिन लाल सेना के साधारण सैनिक से रेजीमेट का कमाडर और कमिसार बना।

लडाई की आग और तोपो की गरज अब अतीत का अग हो गयी थी। अब निकोलाई लिसित्सिन सरहद पर के एक जिले मे काम कर रहा था। जिन्दगी धीमे-धीमे सम-चाल से चली जा रही थी और कार्यकारिणी का चेयरमैन अपने दफ्तर मे बैठा हर रोज बडी रात तक खेती की फसल की रिपोर्टो को उल्टता-पलटता रहता था। इस वक्त उसके सामने जो खत था, उसने थोडी देर के लिए उसके हाल के गुजरे हुए जमाने की याद को ताजा कर दिया। यह तार की सक्षिप्त भाषा मे एक चेतावनी थी

"अत्यन्त गोपनीय। वेरेजदोव कार्यकारिणी समिति के चेयरमैन लिसित्सिन के नाम।

"इधर देखने मे आ रहा है कि सरहद पर पोल लोग हमारी सीमा मे सरहदी इलाके के लोगो मे आतक फैलाने के लिए बडे-बडे गिरोहो को भेज रहे है। बचाव का इतजाम करने की जरूरत है। हमारा प्रस्ताव है कि अर्थ-विभाग की तमाम कीमती चीजें, जिनमे जमा किया हुआ टैक्स भी शामिल है, एरिया सेंटर मे भेज दी जाये।"

अपनी खिडकी मे से लिसित्सिन जिला कार्यकारिणी समिति की इमारत मे आनेवाले हर आदमी को देख सकता था। उसने नजर उठाई तो पावेल कोर्चागिन को सायबान मे खडा पाया। क्षण भर बाद दरवाजे पर दस्तक पडी।

लिसित्सिन ने पावेल से हाथ मिलाते हुए कहा, "बैठ जाओ, मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

पूरे एक घटे तक दोनो दफ्तर मे बैठे बातें करते रहे।

कोर्चागिन के दफ्तर मे निकलते-निकलते दोपहर का वक्त हो गया था। जैसे ही वह दफ्तर से बाहर आया, लिसित्सिन की छोटी बहन, जो थी तो बच्ची मगर अपनी उम्र से कही ज्यादा गभीर थी, बागीचे मे से भाग कर उसके पास आई। कोर्चागिन को देख कर वह हमेशा बडे प्यार से मुस्करा देती थी। कोर्चागिन उसे प्यार मे अन्युत्का कह कर बुलाता था, जो उसके नाम का सक्षिप्त रूप था। इस वक्त भी उसने लजाते हुए पावेल का अभिवादन किया और सिर को झटका देकर एक बिखरी हुई लट को माथे पर से पीछे हटा दिया।

उसने पूछा, "क्या कोलिया बहुत व्यस्त है? मारिया मिखाइलोवना बडी देर से उसका खाना तैयार करके बैठी हुई है।"

"अदर चली न जाओ अन्युत्का, वह अकेला बैठा है।"

दूसरे रोज सवेरे, भोर होने के बहुत पहले तीन गाडिया, जिन्हे अच्छे मोटे-ताजे घोडे खीच रहे थे, आकर कार्यकारिणी समिति के सामने रुकी। उन गाडियो के साथ जो लोग आये थे, उन्होने धीमी आवाज मे आपस मे बातें की और इसके बाद कई मुहरबन्द बोरे अर्थ-विभाग से बाहर लाये गये। उन्हें गाडियो पर लादा गया और कुछ मिनट बाद गाडिया उनको लेकर चली गई और सडक पर उनकी दूर जाती हुई आवाज सुनाई देने लगी। इन गाडियो को हिफाजत से अपनी जगह पर पहुचाने की जिम्मेदारी एक सैनिक दस्ते की थी जिसका नायक कोर्चागिन था। वहा से प्रादेशिक केन्द्र तीस मील दूर था (जिसमे से कोई बाईस मील का रास्ता जगल होकर था)। सुरक्षित ढग से वे सारी कीमती चीजें एरिया अर्थ-विभाग की तिजोरियो मे पहुच गई।

इसके कुछ दिन बाद एक घुडसवार, जिसके घोडे के मुह से फिचकुर निकल रहा था, सरहद की ओर से सरपट बेरेजदोव मे आया। वह सडको के बीच से गुजरा तो शहर के नाकारे लोग अचभे से उसको घूरने लगे।

कार्यकारिणी समिति के फाटक पर पहुच कर सवार कूद कर घोडे से नीचे आ गया और अपनी तलवार को एक हाथ से सभाले, अपने भारी-भारी बूट पहने सीढियो पर धम-धम चढ गया। उसको देख कर लिसित्सिन के माथे पर परेशानी से बल पड गये और उसने उसके हाथ से खत ले लिया और लिफाफे पर दस्तखत करके लिफाफा उसे वापिस दे दिया। चिट्ठी देकर वह सरहदी सतरी अपने घोडे पर सवार हुआ और घोडे को सुस्ताने का जरा भी समय दिये बिना उसने घोडे को एड लगाई और जिधर से आया था, सरपट उधर ही चला गया।

कार्यकारिणी समिति के चेयरमेन के अलावा और किसी को नही मालूम था कि उस चिट्ठी मे क्या लिखा है, और अभी ही उसने उस चिट्ठी को पढा था। मगर शहर वालो की नाक भी अजीब होती है, उनको पता नही कैसे होने वाली घटनाओ का सुराग मिल जाता है। यहा के तीन मे से दो छोटे-मोटे सौदागर चोरी से माल लाने-ले-जाने का काम कुछ-न-कुछ जरूर करते थे और इस काम को करने के ही सिलसिले मे आने वाले खतरे को समझ जाने की एक सहज चेतना उनके अदर पैदा हो गई थी।

दो आदमी तेजी से फौजी ट्रेनिंग बटालियन के हेडक्वार्टर को जाने वाले चौडे रास्ते पर चले जा रहे थे। उनमे से एक पावेल कोर्चागिन था। वह हथियारो से लैस था मगर इससे दर्शको को कोई आश्चर्य नही हो रहा था। यह तो उसकी आदत थी। मगर इस बात से उनको खतरे का कुछ-कुछ आभास हो रहा था कि पार्टी कमिटी के मत्री त्रोफीमोव ने भी रिवाल्वर लटका रखी थी।

कुछ मिनट बाद एक दर्जन लोग अपनी राइफिलो मे सगीनें लगाये हेडक्वार्टर मे से निकले और फुर्ती से मार्च करते हुए चौराहे पर खडी मिल के पास पहुच गये। स्थानीय कम्युनिस्ट पार्टी और कोमसोमोल के बाकी सदस्यो को पार्टी दफ्तर मे हथियार दिये जा रहे थे। कार्यकारिणी समिति का चेयरमैन कौसेको वाली टोपी और हमेशा की तरह अपनी माउजर पेटी मे लगाये घोडे पर सरपट निकल गया। जरूर कुछ मामला है। खास चौक और आसपास की गलिया सूनी हो गई। चिडिया का पूत नजर नही आता था। देखते-देखते उन छोटी-मोटी दूकानो के दरवाजो पर बाबा आदम के वक्त के बडे-बडे ताले लटकने लगे और खिडकियो की चिटखनिया चढा दी गयी। सिर्फ निडर मुर्गिया और सुअर गर्मी से परेशान होकर गदगी के ढेर मे अपने खाने की तलाश मे घूमते रहे।

शहर के छोर पर के बागीचो मे वे सिपाही छिप गये। वहा से खुला मैदान और सीधी दूर तक चली जाती हुई सडक उन्हे साफ दिखाई देती थी।

लिसित्सिन को जो चिट्ठी मिली थी उसमे बहुत सक्षेप मे बस यह लिखा था

"कल रात लगभग सौ घुड़सवार दो हलकी मशीनगनें लेकर पोदुब्सी के इलाके में एक झड़प के बाद सोवियत क्षेत्र मे घुस आये। बचाव की तदबीर करो। हमलावर गिरोह का निशान स्लावुता के जगलो मे जाकर खो गया है। गिरोह का पीछा करने के लिए एक बोल्शेविक कौसेक कपनी भेजी गयी है। यह कपनी दिन के वक्त बेरेजदोव से गुजरेगी। उनको दुश्मन न समझना। गाविलोव, कमाडर, सरहदी बटालियन।"

मुश्किल से एक घटा गुजरा होगा जब एक घुड़सवार शहर जाने वाली सडक पर दिखाई दिया। उसके करीब पाच-छ फर्लांग पीछे और भी घुड़सवार चले आ रहे थे। कोर्चागिन बड़े गौर से उनको देख रहा था। आगे-आगे चलने वाला घुड़सवार सातवीं लाल कौसेक रेजीमेंट का एक नौजवान सैनिक था। बावजूद इसके कि वह बहुत होशियारी से आगे बढ रहा था, उसे सडक के पास के बागीचो मे छिपे हुए लोग दिखाई नही दिये। इससे पहले कि वह मामले को समझ पाये, हथियारो से लैस लोगो ने हरियाली मे से बाहर सडक पर आकर उसे चारो ओर से घेर लिया। उसने उन लोगो की वर्दियो पर कोमसोमोल का निशान देखा, तो खिसिया कर मुस्कराया। सक्षेप मे उसको बात समझाई गई और उसने अपना घोडा फेरा और पीछे दुलकी चाल से चले आते हुए घुड़सवारो के पास सरपट अपने घोडे को भगा ले गया। कोमसोमोल के इन लोगो ने लाल कौसैको को गुजर जाने दिया और वापस अपनी जगहो पर पहुच कर पहरा देने लगे।

लिसित्सिन के कई दिन बडी चिंता मे गुजरे। कई दिन बाद ही उसको यह खबर मिली कि हमलावर पोलो का वह गिरोह अपना काम करने मे नाकाम रहा था। लाल घुड़सवारो ने उसका पीछा किया और उसे भाग कर अपनी सरहद मे चला जाना पडा।

उन्नीस बोल्शेविको ने इस इलाके मे सोवियत जिंदगी के निर्माण के काम को उत्साह के साथ करना शुरू किया। यह एक नया इलाका था और इसलिए हर काम की शुरुआत नीव से करनी थी। इसके अलावा चूकि सरहद यहा से बहुत पास थी, इसलिए सबको बहुत सावधान रहना पडता था।

लिसित्सिन, त्रोफीमोव, कोर्चागिन और दूसरे मुट्ठी भर कार्यकर्ता, जिन्हे उन्होने इकट्ठा किया था, सवेरे से शाम तक सोवियतो के नये चुनाव का इतजाम, डाकुओ से लडना, सास्कृतिक काम का सगठन, चोरी से माल लाने-ले-जाने की रोकथाम वगैरह किया करते थे और इसके साथ-साथ अपनी सुरक्षा को मजबूत करने का पार्टी और कोमसोमोल का काम भी करते थे।

घोडे की पीठ पर से मेज पर और फिर मेज से मैदान मे, जहा फौजी शिक्षार्थी ड्रिल किया करते थे, फिर क्लब और स्कूल और दो-तीन कमिटी

मीटिंगें—दूसरी बटालियन के फौजी कमिसार की यही दिनचर्या थी। उसके बगल में माउजर लटकी रहती और अक्सर उसकी रातें घोडे की पीठ पर गुजरती थी—ऐसी रातें जिनकी निस्तब्धता "हाल्ट, कौन है ?" और चोरी से लाये गये माल से लदी हुई तेजी से भागती हुई गाडियो के पहियो की आवाज से ही भग होती थी।

बेरेजदोव की कोमसोमोल जिला कमिटी मे कोर्चागिन, लिदा पोलेविख और जेंका राजवालिखिन थे। लिदा वोल्गा की रहने वाली नीली आख की एक लडकी थी जो महिला विभाग की अध्यक्षा थी और जेंका राजवालिखिन एक लम्बा खूबसूरत नौजवान था जो अभी कुछ ही समय पहले हाई स्कूल का विद्यार्थी था। राजवालिखिन के मन मे रोमाचकारी साहसिक कारनामो के लिए जबरदस्त मोह था और शर्लक होम्स और लुई बुसेनार के बारे मे तो उससे ज्यादा कोई जानता ही न था। पहले वह पार्टी की जिला कमिटी का आफिस मैनेजर था और गोकि कोमसोमोल मे आये उसे अभी सिर्फ चार ही महीने हुए थे वह दूसरे नौजवानो के सामने अपने को "पुराना बोल्शेविक" कहता था। एरिया कमिटी ने कुछ हिचकते हुए उसको राजनीतिक शिक्षा का भार देकर बेरेजदोव भेजा था और इसलिए भेजा था क्योकि दूसरा कोई आदमी उपलब्ध नही था।

सूरज अपने शिखर पर था। हर तरफ गरमी थी और सभी जीवित प्राणी छाया मे शरण ढूढ रहे थे। यहा तक कि कुत्ते भी शेडो मे घुसे हुए हाफते, ऊघते और बेजान से पडे थे। गावो में जिदगी की अकेली निशानी एक सुअर था जो कुए के पास कीचड की एक तलैया मे मौज से पडा हुआ था।

कोर्चागिन ने अपने घोडे को खोला और घुटने के दर्द से ओठो को काटता हुआ कूद कर घोडे की पीठ पर सवार हुआ। उस्तानी स्कूल की इमारत की सीढियो पर खडी थी और धूप से बचने के लिए आख पर हथेली की आड लिए हुए थी।

उसने मुस्करा कर कहा, "कामरेड फौजी कमिसार, उम्मीद करती हू कि आप से फिर मुलाकात होगी।"

घोडा अधीर होकर पैर पटक रहा था और अपनी गर्दन तान कर रास पर जोर दे रहा था।

"अच्छा विदा कामरेड राकीतिना ! तो यह बात तय हो गई, कल पहला सबक आप ही पढायेंगी।"

रास को ढीला पाकर घोडा तेजी से चल दिया। तभी एकाएक पावेल के कानो मे जोर-जोर से चीखने की आवाजे आयी। यह गाव मे आग लग जाने

पर औरतो के चीखने जैसी आवाज थी। तेजी से अपने घोडे को लौटाते हुए फौजी कमिसार पावेल ने एक नौजवान किसान स्त्री को बेतहाशा गाव मे भाग कर आते देखा। राकीतिना ने जल्दी से आगे बढकर उस औरत को रोका। पास की झोपडियो से उनमे रहने वाले, जिनमे ज्यादातर बूढे स्त्री व पुरुष थे, क्योकि मेहनत कर सकने वाले किसान खेतो मे काम कर रहे थे, बाहर की ओर देखने लगे।

"ओह! भाइयो, जल्दी चलो, जल्दी चलो! वहा वे लोग एक-दूसरे को मारे डाल रहे है।"

कोर्चागिन जब सरपट भाग कर वहा पहुचा तो लोग उस औरत के इर्द-गिर्द भीड लगा रहे थे, उसके सफेद ब्लाउज को पकड कर तान रहे थे और बहुत चिंतित होकर उससे सवाल पर सवाल किये जा रहे थे। मगर उनकी समझ मे नही आ रहा था कि मामला क्या है, क्योकि वह औरत बेतहाशा चीखे जा रही थी। "कत्ल हो रहा है! वे लोग काट कर रख दे रहे है!" बस इतना ही कह पाती थी। उलझी हुई दाढी वाला एक बुड्ढा अपने हाथ के कते-बुने पाजामे को एक हाथ से सभाले दौडने की कोशिश करता हुआ वहा आया।

उसने उस घबराई हुई औरत से चिल्ला कर कहा, "बद करो अपना चीखना, साफ-साफ तो बोलो कुछ! किसका कत्ल हो रहा है? मामला क्या है? अपनी यह भौ-भौ तो बद करो!"

"हमारे आदमियो मे और पोदुब्सी वालो मे लडाई हो रही है। वे हमारे आदमियो का कत्ल कर रहे है!"

इसी से सारी बात उनकी समझ मे आ गई। औरते रोने लगी और बुड्ढे लोग गुस्से मे जोर-जोर से सास छोडने लगे। यह खबर गाव भर मे, कोनो-अतरो तक मे लहर की तरह फैल गई "वे पोदुब्सी वाले हसियो से हमारे आदमियो को काटे डाल रहे हैं . फिर वही पुराना सरहद वाला झगडा है!" सिर्फ वे लोग जो बिस्तर पकडे हुए थे, घर के अन्दर रहे, बाकी सारे लोग बाहर गाव की सडक पर निकल आये और लाठी, गडासा, कुल्हाडी, वगैरह से लैस होकर उन खेतो की तरफ दौडे जहा दोनो लोग मेड के झगडो को लेकर एक दूसरे का खून बहा रहे थे। और साल मे एक बार यह चीज जरूर होती थी।

कोर्चागिन ने अपने घोडे को चाबुक लगाया और घोडा सरपट भाग चला। घुडसवार कोर्चागिन की आवाजो से घोडा दौडता हुआ गाव वालो के पास से तीर की तरह निकल गया। उसके कान पीछे को दबे हुए थे और उसकी टापे जमीन को रौंद रही थी और उसकी चाल बराबर तेज होती जा रही थी।

सामने एक पहाडी पर एक हवा की चक्की बाहे फैलाये खडी थी मानो घोडे का रास्ता रोकना चाहती हो। दाहिनी तरफ नदी के किनारे ढाले मे चरागाह थी और बायी तरफ एक राई का खेत था जो दूर क्षितिज तक चला गया था। पकी हुई राई की बाले हवा मे झूम रही थी। दोनो तरफ पॉपी के लाल-लाल फूल थे। यहा पर शान्ति थी और गर्मी असह्य थी। मगर दूर से, जहा पर नदी एक रुपहले फीते सी नजर आती और धूप खाती जान पडती थी, लडाई की आवाजें आ रही थी।

घोडा चरागाहो पर बेतहाशा भागता चला जा रहा था। "अगर यह कही ठोकर खाकर गिरा तो *हम दोनो का काम तमाम हो जायगा।*" पावेल के मन मे एकाएक यह खयाल आया। मगर अब रुकने का वक्त न था और उसे इसी तरह बढते जाना था, काठी पर इसी तरह नीचे झुके हुए और कानो मे तेज हवा की सीटी सी बजती हुई।

आधी की तरह वह सरपट उस खेत पर पहुचा जहा लोग गुस्से से अधे होकर जगली जानवरो की तरह आपस मे लड रहे थे। बहुत से लोग लहू-लुहान होकर जमीन पर पडे थे।

घोडे ने एक दाढी वाले किसान को अपने पैरो मे कुचल दिया जो एक हसिया के बेंट का सिरा हाथ मे लिए एक नौजवान का पीछा कर रहा था और जिसके चेहरे से खून बह रहा था। उसके पास ही एक विशालकाय आदमी अपने बडे बडे भारी बूटो से अपने जमीन पर पडे हुए दुश्मन के पेट मे बेदर्दी से ठोकर मार रहा था।

इन लडते हुए आदमियो की भीड मे तेजी से घोडे को दौडाते हुए कोर्चागिन ने उन सबको तितर-बितर कर दिया। इस अचानक हमले से सभलने के पहले कोर्चागिन कभी एक आदमी पर और कभी दूसरे आदमी पर जा चढता था। क्योकि यह बात उसने समझ ली थी कि ये खून मे लिथडे हुए आदमी जो इस वक्त जानवर हो गये है, डरा कर ही तितर-बितर किये जा सकते है।

पावेल ने गुस्से मे जोर से चिल्ला कर कहा, "भाग जाओ, जानवर कही के! भाग जाओ लुटेरो, नही तो मै तुममे से एक-एक को गोली से भून दूगा!"

और अपनी पिस्तौल निकालते हुए उसने एक ऊपर उठे हुए, गुस्से से वहशियाना नजर आते हुए चेहरे पर गोली चलाई। घोडा फिर दौडा और पिस्तौल फिर बोली। कुछ लडने वालो ने अपने हसिये छोड दिये और लौट पडे। फौजी कमिसार पावेल ने अपने घोडे पर सवार इधर से उधर तक मैदान को रौद कर और लगातार गोली चलाते हुए स्थिति पर काबू पा लिया। किसान भाग निकले और चारो तरफ तितर-बितर हो गये, क्योकि वे इस

खूनी झगड़े की जिम्मेदारी से बचना चाहते थे और इस खतरनाक घुड़सवार से भी जो गुस्से से पागल होकर बेतहाशा गोली चलाये जा रहा था।

सौभाग्य से कोई मरा नही। और घायल लोग ठीक हो गये। बहरहाल, थोडी ही देर बाद इस मामले की सुनवाई के लिए पोदुव्सी मे जिले की अदालत बैठी, मगर बदमाशो के सरगना लोगो का पता लगाने की जज की सारी कोशिश नाकाम हुई। सच्चे बोल्शेविक की दृढता और धैर्य से जज ने अपने सामने के बिगडे हुए किसानो को यह दिखाने की कोशिश की कि उनका काम कितना बर्बर था। जज ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि इस तरह की मारकाट बर्दाश्त नही की जायगी।

किसानो ने कहा, "कामरेड जज, दोष हमारा नही, चौहद्दी का है। पता नही कैसे हर बार आपस मे गडमड हो जाती है और हर साल हमे उसके पीछे लडना पडता है।"

मगर खैर वह जो भी हो, कुछ किसानो को इस लडाई की जवाबदेही करनी पडी।

हफ्ते भर बाद एक कमीशन वहा आया और झगडे की जमीनो की छान-बीन करने लगा।

"जमीन की नाप-जोख करते मुझे तीस साल हो गये और मैंने देखा है कि हमेशा झगडा बटवारे की लाइन को लेकर होता है," कमीशन के बुड्ढे सर्वेयर ने अपना फीता लपेटते हुए कोर्चागिन से कहा। वह बुड्ढा गरमी के कारण और काफी पैदल चलने के कारण बिलकुल थक गया था और उसके शरीर से पसीना चू रहा था। "सचमुच अपनी आख पर यकीन नही आता, जरा देखो कैसे ये चरागाहे बाटी गई हैं। कोई शराबी भी इससे ज्यादा सीधी रेखाए खीच सकता था। और खेतो का हाल तो और भी बुरा है। तीन-तीन कदमो के बराबर जमीन की पट्टिया हैं और उस पर तुर्रा यह कि एक की टाग दूसरे मे घुसी हुई है—कोई उनको अलग करने की कोशिश करे तो पागल हो जाय। इस पर से जब लडके बडे होते हैं और बाप अपनी जमीनो के और भी टुकडे करते हैं, तो इन छोटी-मोटी पट्टियो के और भी टुकडे हो जाते है। मेरी बात का यकीन करो कि आज से बीस बरस बाद जोतने के लिए कोई धरती बाकी न रहेगी, सिर्फ मेडें ही मेडे रह जायेंगी। यो भी कुल जमीन का दस फीसदी मेडो के पीछे बर्बाद हो रहा है।"

कोर्चागिन मुस्कराया।

"कामरेड सर्वेयर, आज से बीस बरस बाद एक भी मेड बाकी न रहेगी।"

उस बुड्ढे ने पावेल को बहुत बडप्पन के भाव मे देखा, जैसे उसकी बेवकूफी पर तरस खा रहा हो।

"तुम्हारा मतलब कम्युनिस्ट समाज से है ? वह जरा बहुत दूर की बात है। है न ?"

"आपने वुदानोव्का कोलखोज के बारे मे सुना है ?"

"ओह, यह मतलब है तुम्हारा।"

"आपका क्या कहना है उसके बारे मे ?"

"मैं वुदानोव्का मे रह चुका हू। मगर वह बात अपवाद है, कामरेड कोर्चागिन।"

कमीशन धरती की पट्टियो की पैमाइश करता रहा। दो नौजवान खूटे गाड रहे थे। और दोनो तरफ खडे हुए किसान बडे गौर से यह देख रहे थे कि वे मडी भी डडिया ठीक उस जगह पर गडे जहा विभाजन की रेखा पहले थी, जो घास मे मुश्किल से दिखाई दे रही थी।

अपनी मरियल घोडी पर चाबुक फटकारते हुए बातूनी कोचवान अपनी सवारियों की तरफ मुडा।

उसने कहा, "मेरी समझ मे ही नही आता, ये कोमसोमोल के छोकरे कहा से फट पडे। आज से पहले ऐसी कोई चीज कभी न हुई थी, कम-से-कम मुझे तो याद नही। मैं तो दावे से कह सकता हू कि यह वही उस्तानी है जिसने यह सारा खेल-तमाशा शुरू किया है। उसका नाम राकीतिना है, हो सकता है आपने भी उसका नाम सुना हो ? है तो वह जवान औरत मगर किसी काम की नहीं। वह गाव भर की तमाम औरतो को भडकाती है। उनके दिमाग मे न जाने कहा-कहा की वाही-तबाही की बातें भर देती और उसीसे तो मुसीबत शुरू होती है। उसीके चलते तो आज यह हाल है कि कोई आदमी अपनी बीवी को पीट तक नही सकता। पुराने जमाने मे जरा भी अपनी तबियत नाराज होने पर तुम अपनी बुढिया के डण्डा लगा सकते थे, फिर चाहे वह कही जाकर कोने मे बिसूरती रहे। मगर अब तुमने कुछ किया नही कि वह इतना हल्ला मचाती है कि तुम कान पर हाथ धरने लगते हो कि मुझे क्या सूझी थी कि मैंने इसे छू दिया। आज तो वह तुम्हे जनता की अदालत की धमकी देती है। और जहा तक जवान लडकियों की बात है, वे तो तलाक की बात करती हैं और दुनिया भर के कानून सुनाने लगती हैं। मेरी गाका को ही देखो, कैसी खामोश औरत थी वह जैसी दुनिया मे न मिले। लेकिन अब उसे देखो जाकर, प्रतिनिधि बन गई है। इसका मतलब शायद यह होता है कि औरतो के समाज मे उसे बडा समझा जाता है। गाव भर की औरतें उसके पास आती हैं। मैंने जब इस चीज के बारे में सुना तो मेरे जी मे

आया कि चाबुक से उसकी जरा अच्छी तरह मरम्मत करू, मगर फिर मैंने जाने दिया, कहा, इस मामले मे हाथ डालना ठीक नही। जब सब जहन्नुम मे जाना ही चाहती हैं, तो जायें। जहा तक घर के काम-काज की बात है, तो वह औरत बुरी नही है।"

कोचवान की गाढे की कमीज की खुली हुई जगह मे से उसका बालदार सीना दिखाई दे रहा था। उसने अपने सीने को खुजलाया और घोडे की पीठ पर अपना चाबुक फटकारा। गाडी मे राजबालिखिन और लिदा बैठे हुए थे। उन दोनों को पोदुब्सी में काम था। लिदा महिला प्रतिनिधियो के एक सम्मेलन की योजना बना रही थी और राजबालिखिन को स्थानीय सेल के काम के सगठन मे मदद पहुचाने के लिए भेजा गया था।

लिदा ने मजाक के स्वर मे कोचवान से पूछा, "तो तुम्हे कोमसोमोल अच्छे नही लगते ?"

कोचवान जवाब देने के पहले थोडी देर तक अपनी छोटी सी खसखसी दाढी के बाल नोचता रहा।

"नही, मुझे बुरे नहीं लगते मैं इस बात का हामी हू कि नौजवानो को मस्ती का मौका देना चाहिए, लोग नाटक-बाटक किया करें। मुझे खुद हसने-हसाने वाले नाटक पसद है, अगर अच्छे हो। शुरू मे हमने जरूर सोचा था कि नौजवान हमारे काबू के बाहर हो जायेंगे, मगर बाद मे उलटी ही बात निकली। मैंने लोगों को कहते सुना है कि वे लोग शराब-वराब पीने और झगडे करने वगैरह के मामले मे बडे सख्त हैं। उनका ज्यादा झुकाव किताब पढने पर होता है। मगर पता नही क्यो वे लोग भगवान को अपनी जगह नही रहने देते, जब देखो तब वे गिर्जे छीन कर उनको क्लब मे बदलने की फिराक मे रहते हैं। यह बात ठीक नही है, इसी से हम बुड्ढे लोग उनके खिलाफ हो गये हैं। मगर कुल मिलाकर वे लोग बुरे नही है। अगर तुम मुझसे पूछो, तो मैं यह जरूर कहूगा कि गाव के सभी दरिद्र लोगो को अपने मे शरीक करके उन्होंने बडी गलती की। ऐसे लोगो को लेने से क्या फायदा जो खरीदे जा सकते हैं या जो अपनी खेती की देख-भाल ठीक से नही कर सकते। धनी किसानो के लडको से वे लोग कोई सरोकार ही नही रखते।"

गाडी खडखडाती हुई पहाडी के नीचे उतरी और स्कूल की इमारत के सामने जाकर रुक गयी।

दरबान की बीबी इन नये आगतुको के ठहरने का इतजाम करके पुआल पर सोने चली गयी थी। लिदा और राजबालिखिन अभी एक मीटिंग से लौटे थे जो जरा देर में खत्म हुई थी। झोपडी के अदर अधेरा था। लिदा ने जल्दी-जल्दी कपडे उतारे, कूद कर बिस्तर पर गई और पलक मारते सो गई।

उसकी नींद अपने शरीर पर फिरते हुए राजवालिखिन के हाथो के स्पर्श से अचानक खुली। राजवालिखिन के हाथ उसके शरीर पर इस तरह से फिर रहे थे कि लिदा के मन मे कोई सदेह न रहा कि राजवालिखिन का क्या इरादा है।

"क्या है ?"

"शू शू, लिदा, इतना हल्ला मत करो। अकेले पडे-पडे मैं तो उकता गया। इस तरह खर्राटे भरने से भी ज्यादा अच्छी कोई चीज हो सकती है, क्या यह तुम्हारी समझ मे नहीं आता ?"

"अपने पजो से मुझे इस तरह गूधो मत और फौरन मेरे बिस्तर पर से चले जाओ !" लिदा ने उसको धक्का देते हुए कहा। राजवालिखिन की तेल जैसी चिकनी मुस्कराहट से उसे हमेशा नफरत होती थी और उसके जी मे आया कि उसको लज्जित और अपमानित करने के लिए कोई कडी बात कहे, मगर नीद उस पर भारी हो रही थी और उसने आखें मूद ली।

"अरे मान भी जाओ ! यह कैसी बात तुम कर रही हो ?" तुम कोई सन्यासिन तो हो नही, तुम्हारा लालन-पालन किसी मठ में तो हुआ नही, तब फिर ऐसा क्यो ? बहुत भोली न बनो, तुम मुझे चरका नही दे सकती। अगर तुम सचमुच प्रगतिशील स्त्री होती तो मेरी इच्छा पूरी करके फिर मन चाहे जितना सोती।"

इस मामले को तय जानकर वह फिर लिदा के बिस्तरे की पाटी पर जाकर बैठ गया और लिदा के कधे पर उसने अपना हाथ रखा।

लिदा अब बिल्कुल अच्छी तरह जाग गई थी, बोली, "जहन्नुम मे जाओ ! मैं कल कोर्चागिन को इसके बारे मे बतला दूगी।"

राजवालिखिन ने उसका हाथ पकड लिया और झुझलाते हुए धीरे से बोला

"मैं तुम्हारे कोर्चागिन की खाक परवाह नही करता और देखो मेरी बात मान जाओ, मुझे रोकने की कोशिश मत करो, नही तो मुझे तुम्हारे साथ जबर्दस्ती करनी पडेगी।"

जरा देर हाथापाई हुई और फिर रात की निस्तब्धता मे कस कर जडे गये दो तमाचे गूज उठे। राजवालिखिन कूद कर अलग हो गया। लिदा टटोलती हुई दरवाजे के पास गई, धक्का देकर उसे खोला और दौड कर हाते मे निकल गई। वहा वह चादनी मे खडी थी, उसके अदर गुस्सा उबाल खा रहा था।

"अदर चली आओ, बेवकूफ कही की !" राजवालिखिन ने दुष्टता से उसको पुकारते हुए कहा।

वह खुद अपना विस्तर बाहर ओल्ती के नीचे निकाल लाया और बाकी रात उसने वही गुजारी। लिदा ने भीतर से कुडी बद कर ली और अपने विस्तर मे सिमट कर फिर से सो गई।

सवेरे वे लोग अपने घर के लिए रवाना हो गये। राजवालिखिन बूढे कोचवान के वगल मे बैठा सिगरेट पर सिगरेट पीता जा रहा था।

"यह छुई-मुई कही सचमुच जाकर कोर्चागिन के सामने मेरा भडाफोड न कर दे। अरे किसने सोचा था कि वह ऐसी सती-साध्वी निकलेगी! नखरे तो ऐसे है कि जैसे पता नही कहा की हसीना हो, मगर शकल-सूरत कुछ है नही। लेकिन उससे समझौता कर लेना अच्छा होगा, वरना मुसीवत होगी। यो भी कोर्चागिन की निगाह मुझ पर है।"

वह लिदा के पास पहुच गया। उसने ऐसा दिखलाया कि जैसे उसे अपने ऊपर बडी शर्म आ रही हो, उदास चेहरा बना लिया और माफी मागने के दो चार शब्द बुदबुदाये।

उससे काम बन गया। अभी उन्होने गाव की सरहद पार भी न की थी कि लिदा ने उसे वादा दे दिया कि रात की बात वह किसी से न वतलायेगी।

सरहद पर के गावो मे एक के बाद दूसरी जगह कोमसोमोल के सगठन बन रहे थे। जिला कमिटी के मेम्बर बडी सावधानी से कम्युनिस्ट आन्दोलन की इन पहली नयी कोपलो की देखभाल कर रहे थे। कोर्चागिन और लिदा पोलेविख अलग-अलग वस्तियो मे स्थानीय सगठन के मेम्बरो के साथ बहुत वक्त गुजारते थे।

राजवालिखिन को गावो मे जाना अच्छा नही लगता था। वह नही जानता था कि कैसे किसान लडको का विश्वास पाये और बस कोई न कोई गडबडी पैदा कर देता था। लिदा और पावेल को किसान नौजवानो से दोस्ती पैदा करने मे कोई मुश्किल न होती थी। लडकिया फौरन लिदा को चाहने लग जाती थी। वे उसे फौरन अपने मे से ही एक समझने लगती और लिदा धीरे-धीरे उनके मन मे कोमसोमोल आन्दोलन के प्रति दिलचस्पी पैदा करती। जहा तक कोर्चागिन की बात थी, जिले के सारे नौजवान उसको जानते थे। सौलह सौ नौजवान जो फौजी सर्विस के लिए बुलाये जाने वाले थे, वे आरंभिक फौजी शिक्षा उसकी वटालियन मे ही पाते थे। उसका अकार्डियन इस गाव मे प्रचार के काम मे जितना सहायक सावित हो रहा था, उतना पहले कभी नही हुआ था। अपने बाजे के कारण पावेल नौजवानो के वीच बडा लोकप्रिय था। वे नौजवान अवसर शाम को गाव की वस्तियो मे जमा हो जाते

ये और गाते-बजाते थे। और पता नही कितने बिगडैल जवानों ने यहीं से कोमसोमोल की तरफ अपना सफर शुरू किया था, अकार्डियन के इसी मोहक संगीत को सुन कर, जो कभी आवेगपूर्ण और उत्तेजक होता था, कभी ओजस्वी और साहसपूर्ण और कभी कोमल और दुलार-भरा जैसे कि उक्रेन के उदास, हसरत-भरे गाने ही हो सकते हैं। वे अकार्डियन सुनते थे और उस नौजवान आदमी की बात सुनते थे जो अकार्डियन बजाता था, जो कभी रेलवे मजदूर था और अब फौजी कमिसार और कोमसोमोल का मंत्री था। और तब उन्हें ऐसा महसूस होता कि जैसे अकार्डियन का संगीत उस नौजवान कमिसार की बात के अंदर डूब गया हो और दोनो के स्वर आपस मे मिल गये हो। फिर जल्दी ही नये-नये गाने गावो मे गूंजने लगते और झोपडियों मे बाइबिलो और प्रार्थना पुस्तको के पास दूसरी नई-नई पुस्तकें दिखाई देने लगती।

चोरी-चोरी माल को लाने-ले-जाने वालो को अब सरहद के संतरियो के अलावा एक दूसरी शक्ति का भी सामना करना पडता था। कोमसोमोल के सदस्यो की शकल मे सोवियत सरकार को अपने बडे पक्के दोस्त और उत्साही सहायक मिल गये थे। कभी-कभी सरहदी कस्बे के कोमसोमोल संगठन दुश्मन को पकडने के उत्साह मे हद से गुजर जाते थे और तब कोर्चागिन को अपने नौजवान साथियो की मदद के लिए आगे आना पडता था। एक बार ग्रिशुत्का खोरोवोदको को अपने निजी सूत्रो से यह पता चला कि उस रात को कुछ चोरी से लाया हुआ माल गाव की मिल मे आने वाला था। नीली आखो वाला ग्रिशुत्का खोरोवोदको पोदुत्सी ग्राम सेल का मंत्री था। वह गरम मिजाज का लड़का था और उसको बहस करना अच्छा लगता था और धर्म-विरोधी आन्दोलन मे वह बहुत सक्रिय रहता था। उसने कोमसोमोल के सारे सदस्यो को जगाया और एक ट्रेनिंग राइफिल और दो संगीनो से लैस होकर वे लोग आधी रात को बाहर आये, चुपके से मिल मे एक जगह छिप कर बैठ गये और अपने शिकार का इंतजार करने लगे। खुफिया विभाग की सरहदी चौकी को भी चोरी का माल लाने वालो के उस इरादे की खबर लग गयी थी और उन्होंने भी अपने आदमी भेजे थे। अंधेरे मे ये दोनो लोग एक-दूसरे से लड पडे और अगर सरहदी संतरियो ने सूझ-बूझ से काम न लिया होता, तो उस झगडे मे कोमसोमोल के बहुत से नौजवान मारे जाते या घायल होते। फिलहाल हुआ यह कि उन लडको से हथियार छीन लिये गये और उन्हें तीन मील दूर एक गाव मे ले जाकर हवालात मे बंद कर दिया गया।

संयोग से कोर्चागिन उस समय गाव्रिलोव के घर पर था। जब अगली सुबह को बटालियन कमाडर ने उसको यह खबर दी, तो पावेल घोडे पर सवार होकर अपने लडको को बचाने के लिए सरपट भागा।

खुफिया विभाग के आदमी ने, जो उस जगह ड्यूटी पर था, हंसते हुए उसको यह कहानी सुनाई।

उसने कहा, "कामरेड कोर्चागिन, मैं तुमको बतलाऊं कि हम लोग क्या करने जा रहे हैं। ये अच्छे लड़के हैं और हम उन्हें परेशान करना नहीं चाहते, मगर अच्छा हो कि तुम उन्हें जरा डांट-डपट दो ताकि आगे से वे हमारा काम करने की कोशिश न करें।"

संतरी ने शेड का दरवाजा खोला और ग्यारहो लड़के खड़े हो गये और खिसियाये हुए से कभी इस और कभी उस पैर पर जोर देते खड़े रहे।

खुफिया विभाग के आदमी ने जान-बूझ कर और भी कठोरता से कहा, "इनको देखो, इन्होंने लेकर सारा मामला गड़बड़ कर दिया और अब मुझे इन लोगों को एरिया हेडक्वार्टर भेजना होगा।"

तब ग्रिशुत्का बोल उठा।

"मगर कामरेड सखारोव," उसने आवेशपूर्ण स्वर में कहा, "हमने कौन सा जुर्म किया है ? हम लोग बहुत दिन से उन बदमाशों की टोह में थे। हम तो सोवियत अधिकारियों की मदद करना चाहते थे और आप हैं कि हमें लेकर यहां बंद कर दिया, जैसे हम कोई डाकू हों।" यह कहते हुए वह इस तरह दूसरी ओर मुंह फेर कर खड़ा हो गया कि जैसे उसके साथ बड़ा अन्याय हुआ हो।

कोर्चागिन और सखारोव में गंभीर परामर्श हुआ, मगर यह मामला ऐसा था कि उन्हें कई बार अपनी गंभीरता बनाये रखने में मुश्किल हुई। आखिरकार, सलाह-मशविरे के बाद उन्होंने फैसला किया कि बहुत हो गया, लड़कों को काफी तम्बीह हो गई, अब काफी डर गये होंगे।

सखारोव ने पावेल से कहा, "अगर तुम उनकी गारंटी लो और वादा करो कि अब वे फिर कभी चहलकदमी करते हुए सरहद पर न जा निकलेंगे, तो मैं उन्हें छोड़ दूंगा। अगर वे मदद ही करना चाहते हैं, तो उसके दूसरे तरीके हैं।"

"बहुत अच्छा, मैं उनकी गारंटी लेता हूं। मुझे उम्मीद है कि वे मुझे लज्जित होने का मौका न देंगे।"

कोमसोमोल के वे लड़के गाते हुए पोदुब्सी वापस आये। मामला दबा दिया गया। और कुछ ही दिन बाद वह मिल वाला पकड़ लिया गया। इस बार कानून ने उसको पकड़ा था।

मैदान-विला के जंगलों में धनी जर्मन किसानों की एक बस्ती थी। ये कुलक फार्म आधे-आधे किलोमीटर की दूरी पर थे और ऐसे मजबूत बने हुए थे मानो छोटे-मोटे किले हों। मैदान-विला को ही अपना केंद्र बना कर आन्तोन्युक

और उसके गिरोह वाले लूटपाट किया करते थे। आन्तोन्युक एक समय जारशाही फौज मे सार्जेन्ट मेजर रह चुका था। अब उसने अपने अजीज रिस्तेदारो मे से सात खूनियो को जमा कर लिया था और उन्हे पिस्तौलो से लैस करके गाव की सडको पर डकैतिया किया करता था। खून बहाने मे उसे कोई दरेग न था। अमीर सट्टेबाजो और मुनाफाखोरों को लूटने मे उसे आपत्ति न थी, मगर उसके साथ ही साथ वह सोवियत मजदूरो को भी लूटता था। आन्तोन्युक की खास बात उसकी तेज रफ्तार थी। एक रोज वह कोआपरेटिव स्टोर के दो क्लर्को को लूटता और उसके अगले ही रोज अठारह मील दूर किसी गाव मे डाकखाने के किसी कर्मचारी के हथियार वगैरह छीन लेता और उसके पास जो कुछ होता, कौडी-कौडी लूट लेता। आन्तोन्युक की प्रतियोगिता गोर्देई से थी जो उसी की तरह एक दूसरा लुटेरा था और किसी भी तरह आन्तोन्युक से बेहतर नही था। दोनो लुटेरो को लेकर उस इलाके की मिलीशिया और खुफियो के लोग बडे परेशान रहते थे। आन्तोन्युक का इलाका बेरेजदोव के ठीक बाहर था और धीरे-धीरे यह हालत पैदा हो गयी कि शहर जाने वाली सडक पर निकलना खतरनाक हो गया। उस लुटेरे को पकडना मुश्किल हो रहा था, वह हमेशा बच कर निकल जाता था। जब वह अपने को खतरे मे देखता, तो सरहद के उस पार चला जाता और कुछ दिनो तक खामोश पडा रहता और फिर अचानक जब कि किसी को उसकी उम्मीद न होती, वह दुबारा अपनी लूटपाट शुरू कर देता। उसका यह बार-बार बच कर निकल जाना ही उसको और भी खतरनाक बना रहा था। इस लुटेरे की किसी नई लूटपाट की रिपोर्ट मिलने पर लिसित्सिन गुस्से से अपने होठो को चबाने लगता।

"कब यह साप हमको काटना बन्द करेगा? मगर हरामजादे, अब जरा बच कर रहना नही तो मैं ही तेरी बोटी-बोटी अलग करूगा," उसने दात पीसते हुए कहा। दो बार जिला कार्यकारिणी के चेयरमैन ने कोर्चागिन और तीन दूसरे कम्युनिस्टो को लेकर उस लुटेरे का पीछा किया, मगर हर बार वह बच कर निकल गया।

लुटेरे से लडने के लिए एरिया सेंटर से एक खास टुकडी बेरेजदोव भेजी गयी। इस टुकडी का कमाडर फिलातोव नाम का बाका जवान था। कार्यकारिणी समिति के चेयरमैन को अपने आने की रिपोर्ट देने के पहले, जैसा कि उसे सरहदी नियमो के अनुसार करना चाहिए था, यह घमडी छैला जवान सीधे सबसे पास के गाव सेमाकी गया। आधी रात को वह गाव मे पहुचा और अपने आदमियो को लेकर गाव के छोर पर एक मकान पर ठहर गया। इन सशस्त्र लोगो के अचानक और रहस्यपूर्ण आगमन को बगल के घर के

एक कोमसोमोल मेम्बर ने लक्ष्य किया और झटपट गाव की सोवियत के चेयरमैन को इसकी रिपोर्ट देने चल दिया। गाव की सोवियत के चेयरमैन को इस टुकडी के बारे मे कुछ भी नही मालूम था। इसलिए स्वभावत उसने उन्हे लुटेरा समझा और उस युवा कम्युनिस्ट को फौरन जिला केन्द्र मे मदद हासिल करने के लिए भेजा। फिलातोव की इस अहमकाना बहादुरी से कई लोगो की जानें चली गयी होती। लिसित्सिन ने आधी रात को मिलिशिया वालो को जगाया और एक दर्जन आदमियो को लेकर सेमाकी के इन "लुटेरो" का सफाया करने के लिए चला। वे अपने घोडो पर सरपट उस मकान तक आये, घोडो से उतरे और बाडी को फादते हुए मकान के पास पहुचे। उस सन्तरी के, जो दरवाजे पर खडा पहरा दे रहा था, सिर पर रिवाल्वर से चोट मार कर उसे गिरा दिया गया। लिसित्सिन और उसके आदमी तेजी से उस कमरे में घुसे जिसमे छत से लटकते हुए एक तेल के चिराग का मद्धिम प्रकाश था। एक हाथ मे दस्ती बम और दूसरे मे रिवाल्वर लिए लिसित्सिन इतने जोर से गरजा कि खिडकी के शीशे खडखडा उठे

"हथियार डाल दो, नही तो मैं तुम लोगो को गोली से उडा दूगा।"

एक क्षण की ही बात और थी और वे निन्दासे लोग जो फर्श पर से उछल उछल कर खडे हो रहे थे, गोलियो की बौछार से वही ढेर कर दिये गये होते। मगर उस आदमी की शक्ल, जो दस्ती बम फेंकने के लिए तैयार खडा था, इतनी भयानक थी कि उन्होंने डर के मारे हाथ उठा दिये। कुछ मिनट बाद जाघिया पहने "लुटेरो" को बाहर ले जाया गया तो फिलातोव ने लिसित्सिन की वर्दी पर लगे हुए तमगे को देखा और उसको हालत की सफाई देने लगा।

लिसित्सिन को बडा गुस्सा आया। उसने नफरत से कहा, "गधा कही का!"

जर्मन क्रान्ति की खबरें हाम्बुर्ग के बैरीकेडो के रायफलो की हलकी गूजें, इस सरहदी इलाके मे भी पहुची। वातावरण मे बडा तनाव था। लोग बडी आतुर आशा से अखबार पढते थे। क्रान्ति की हवा पश्चिम से आ रही थी। कोमसोमोल जिला कमिटी मे नौजवान कम्युनिस्टो की अर्जियो पर अर्जिया आ रही थी कि वे लाल फौज मे भर्ती होना चाहते हैं। कोर्चागिन उन लोगों को समझाने मे व्यस्त था कि सोवियत देश शान्ति की नीति का अनुसरण कर रहा है और उसका कोई इरादा अपने पडोसियो से लडने का नही है। मगर इसका कोई खास असर नही पडा। हर इतवार को सारे जिले के कोमसोमोल सदस्य पादरी के मकान के बडे बागीचे मे मीटिंग करते थे और एक रोज दोपहर को

पोदुब्सी का सेल बाकायदा मार्च करता हुआ जिला कमिटी के हाते मे आया। कोर्चागिन ने उन्हे खिडकी में से देखा और बाहर सायबान मे निकल आया। वे ग्यारह लडके थे और खोरोवोदको सबसे आगे-आगे था। सब बडे-बडे फौजी बूट पहने हुए थे और सबके कधो पर बडे-बडे किरमिच के किटवैग थे। वे आकर दरवाजे पर रुके।

कोर्चागिन ने आश्चर्य से पूछा, "यह क्या है ग्रिशा ?"

खोरोवोदको ने जवाब देने के बदले पावेल को आख का इशारा किया और उसके साथ मकान के अन्दर चला गया। लिदा, राजवालिखिन तथा द। और कोमसोमोल के सदस्य खोरोवोदको के पास घिर आये और उससे पूछने लगे कि यह क्या मामला है। खोरोवोदको ने दरवाजा बन्द कर दिया और अपनी भवो मे झुर्री डालते हुए बोला

"साथियो, यह एक तरह का टेस्ट मोबिलाइजेशन है। यह मेरी ही सूझ है। आज सवेरे मैंने लडको को बतलाया कि जिला केन्द्र से एक बहुत खुफिया तार आया है कि जर्मन पूजीशाहो से हमारी लडाई ठननेवाली है और जल्दी ही पोलिश जागीरदारो से भी हमे लडना होगा। मैंने उनको बतलाया कि मास्को से हमको आदेश मिला है कि तमाम नौजवान कम्युनिस्टो को मोर्चे के लिए जमा करो। जिस किसी को भी डर लगता हो, वह अर्जी दे सकता है और उसे घर पर रहने की इजाजत मिल जायगी। मैंने उनसे कहा कि किसी से लडाई के बारे मे एक शब्द भी न कहे, बस एक डबल रोटी और थोडा सा गोश्त लेकर आ जाय और जिनके पास गोश्त न हो, वे लहसुन-प्याज भी ला सकते हैं। हम लोग गाव के बाहर गुप्त रूप से मिलने वाले थे और फिर वहा से जिला केन्द्र मे जाने का हमारा इरादा था और फिर जिला केन्द्र से एरिया केन्द्र मे जहा हथियार मिलने की बात थी। तुम देखते कि लडको पर इस चीज का कैसा गहरा असर पडा था। उन्होंने मुझको बहुत परेशान करने की कोशिश की, मगर मैंने उनसे कहा कि चटपट तैयारी करने मे लग जाओ और फिजूल के सवालात मे मत पडो। वे लोग जो मोर्चे पर न जाना चाहते हो, बतला दे। हमें सिर्फ स्वयसेवको की जरूरत है। खैर इसके बाद मेरे लडके चले गये और मैं परेशान होने लगा। मान लो उनमे से कोई न लौटा ? अगर ऐसा हुआ तो मैं पूरी सेल को तोड दूगा और किसी दूसरी जगह चला जाऊगा। मैं गाव के बाहर धडकते हुए दिल से उनका इतजार करता बैठा रहा। थोडी देर बाद, एक के बाद एक उनका आना शुरू हुआ। उनमे से कुछ रोये थे, उनके चेहरे से यह बात साफ थी गोकि वे छिपाने की कोशिश कर रहे थे। दस के दसो आ गये, हमारे बीच एक भी भगोडा नहीं था। ऐसा है हमारा पोदुब्सी सेल !" उसने विजयोल्लास के स्वर में अपनी बात खतम की।

उसकी बात से लिदा पोलेविख को झटका सा लगा और जब उसने खोरो-वोदको को डाटना शुरू किया तो वह उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगा।

"तुम्हारी बात मेरी समझ मे नही आई ? मेरी समझ मे तो यह उनकी परीक्षा का सबसे अच्छा तरीका है। इस तरह हर आदमी को एकदम आरपार देखा जा सकता है। यहा पर किसी धोखे-धडी की गुजाइश नही है। मैं नाटक को पूरा करने के लिए उन्हें सीधे एरिया सेंटर तक घसीट ले जाना चाहता था, लेकिन वे बुरी तरह थक गए हैं। कोर्चागिन, तुम्हे उनके सामने छोटी सी तकरीर करनी होगी। करोगे न ? तकरीर के बिना बात कुछ बनेगी नही। उनमे बतला देना कि भरती बद हो गई है या इसी किस्म की कोई बात, मगर उसमे क्या, हमे अपने जवानो पर गर्व है।"

कोर्चागिन एरिया सेंटर मे कम ही जाता था क्योंकि रास्ते मे कई रोज लग जाते थे और काम की ऐसी भीड थी कि उसका हरदम अपने जिले मे रहना जरूरी था। इसके विपरीत राजवालिखिन छोटे-छोटे बहाने से भी हरदम शहर जाने के लिए तैयार रहता था। सिर से पैर तक अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित होकर वह निकलता था और शायद अपने दिल मे खुद को फेनीमोर कूपर का नायक समझता था। जगल मे से गुजरते वक्त वह कौओं और गिलहरियो पर गोली का निशाना लगाता, अकेले राहगीरों को रोक लेता और उनमे सवाल करता कि तुम कौन हो, कहा से आ रहे हो, कहा जा रहे हो। शहर के पास पहुच कर वह अपने हथियार अलग रख देता, अपनी राइफिल गाडी मे घास के नीचे डाल देता और रिवाल्वर अपनी जेब में छिपा कर रख लेता और जब कोमसोमोल की एरिया कमिटी के दफ्तर में पहुचता तो अपने साधारण रूप मे दिखाई देता।

"कहो बेरेजदोव की क्या खबर है ?" एरिया कमिटी के मत्री फेदोतोव ने एक रोज दफ्तर से आने पर राजवालिखिन से पूछा।

फेदोतोव के दफ्तर मे हर वक्त भीड लगी रहती थी और सब लोग एक साथ ही बाते करते थे। ऐसी हालत मे काम करना आसान नही था। एक ही साथ चार लोगो की बात सुनना, पाचवें आदमी की बात का जवाब देना और फिर बीच-बीच मे लिखते भी जाना। गोकि फेदोतोव की उम्र बहुत कम थी, तब भी वह १९१९ से ही पार्टी मेंबर था। उन तूफानी दिनो मे ही यह बात मुमकिन थी कि कोई पन्द्रह बरस का लडका पार्टी के अन्दर लिया जा सकता था।

राजवालिखिन ने लापरवाही से जवाब दिया, "अरे तमाम खबरें ही खबरें हैं। इतनी खबरें हैं कि सब एक साथ बतलाना भी मुश्किल है। सवेरे से

लेकर रात तक हम लोग पिसे रहते है। इतना ज्यादा काम है। आप जानते ही हैं कि हमे एकदम नीव से शुरू करना पडा। हमने दो नये सेल बनाये। अब बतलाइये कि आपने मुझे यहा काहे के लिए बुलाया है ?" और वह एक आराम कुरसी पर बडे कामकाजी आदमी के ढग से बैठ गया।

अर्थ विभाग के प्रधान, क्रिम्स्की ने एक पल के लिए अपनी मेज पर फैले हुए कागजो के ढेर से आख उठाकर देखा।

उसने कहा, "हमने तो कोर्चागिन को बुलाया था, तुमको तो बुलाया नही था।"

राजवालिखिन ने मुह से सिगरेट के धुए का बादल छोडा।

"कोर्चागिन को यहा आना अच्छा नही लगता, इसलिए दूसरे कामो के अलावा यह काम भी मुझे ही करना पडता है आम तौर पर कुछ सेक्रेटरियो की जिंदगी मजे से गुजर रही है। वे खुद कुछ काम नही करते और मुझ जैसे गधो को ही सारा बोझ ढोना पडता है। एक बार सरहद के इलाके मे चले जाने पर कोर्चागिन फिर दो-तीन हफ्ते नही लौटता और फिर सारा काम मेरे सिर आ पडता है।"

राजवालिखिन के इस इशारे को सबने यही समझा कि जिला मत्री बनने के लिए वह अपने को ज्यादा योग्य समझता है।

राजवालिखिन के चले जाने पर फेदोतोव ने अपने दूसरे साथियो से कहा, "यह आदमी मुझे अच्छा नही लगता "

राजवालिखिन की चालबाजी का पर्दाफाश यो ही अचानक हो गया। एक रोज लिसित्सिन अपनी डाक लेने के लिए फेदोतोव के दफ्तर मे आया। देहात मे काम करने वालो का यही आम कायदा था। दोनो आदमियो की बातचीत के दौरान मे राजवालिखिन का पर्दाफाश हो गया।

"कोर्चागिन को यहा जरूर भेजो। हम तो अभी तक उसे अच्छी तरह जानते भी नही," फेदोतोव ने लिसित्सिन से चलते समय कहा।

"बहुत अच्छा। मगर देखना, उसको हम लोगो के पास से छीनने की कोशिश मत करना। यह हम कभी न होने देंगे।"

इस साल सरहद पर अक्तूबर क्राति की साल-गिरह और सालो से भी ज्यादा उत्साह से मनायी गई। सरहद के गावो मे इस उत्सव का सगठन करने के लिए जो कमिटी बनायी गई थी, उसका चेयरमैन कोर्चागिन को चुना गया। पोदुब्सी की मीटिंग के बाद आसपास के तीन गावो के पाच हजार किसान आधा मील लम्बा जुलूस बना कर, बडे-बडे लाल झण्डे लिए और फौजी

बैण्ड और ट्रेनिंग बटालियन को आगे किये सीमात की तरफ बढे। सोवियत सीमा मे वे लोग बाकायदा मार्च कर रहे थे। वे सरहदी चौकी के बराबर-बराबर चले जा रहे थे और उन गावो की तरफ बढ रहे थे जिन्हे विभाजन रेखा ने दो टुकडो में बाट दिया था। इसके पहले पोलो ने अपनी सीमा पर ऐसे लोगो को नही देखा था। बटालियन कमाडर गाव्रिलोव और कोर्चागिन अपने घोडो पर सवार जलूस के आगे-आगे चल रहे थे और उनके पीछे बैण्ड बज रहा था, झण्डे हवा मे फरफरा रहे थे और लोगो के गाने की आवाज दूर-दूर तक गूज रही थी। किसान नौजवान अपने बेहतरीन कपडे पहने हुए थे और बडे जोश मे थे। गाव की लडकिया खूब मगन थी और हस रही थी। प्रौढ लोग गभीरतापूर्वक मार्च कर रहे थे और बुड्ढो के चेहरों पर विजय के उल्लास का शान्त भाव था। जहा तक दिखाई देता था, यह मानव समुद्र फैला हुआ था। इसका एक किनारा सरहद पर था, मगर किसी ने उस निषिद्ध रेखा के उस पार कदम भी नही रखा। कोर्चागिन ने आदमियों के इस समुद्र को गुजरते देखा। कोमसोमोल के गाने "घने जगलो से लेकर ब्रिटेन के समुद्रो तक लाल फौज ही सबसे मजबूत है!" की जगह लडकियो का यह समवेत गान चल रहा था "उधर पहाडी के उस पार लडकिया खेत काट रही हैं ।"

सोवियत सतरियो ने अपनी सतुष्ट मुस्कराहट मे इस जुलूस का स्वागत किया। पोलिश सतरी हैरान खडे देख रहे थे। इस प्रदर्शन से सरहद की दूसरी तरफ काफी खलबली मची, बावजूद इसके कि पोलिश कमाड को पहले से ही इस चीज के बारे मे पता था। घोडे पर सवार सिपाही गश्त करते हुए बेचैनी मे ऊपर-नीचे और आगे-पीछे आ-जा रहे थे। सरहदी सतरियो की सख्या पचगुनी कर दी गयी थी और पहाडियो के पीछे रिजर्व फौज को भी रखा गया था जो जरूरत के वक्त तत्काल बुलाई जा सकती थी। मगर जलूस अपने ही हिस्से मे घूमता और मस्ती से मार्च कर रहा था और हवा उसके गाने से भरी हुई थी।

एक पोलिश सतरी एक टीले पर खडा था। जलूस नपी-तुली चाल से करीब आता जा रहा था। मार्च करने के समय का एक गीत शुरू हुआ। उस पोल ने फुर्ती से अपनी राइफल नीचे कर ली और सलामी दी और कोर्चागिन ने उसके शब्द स्पष्ट सुने "मजदूरो का राज जिंदाबाद!"

इस सैनिक की आखो से पावेल को मालूम हो गया कि उसी के मुह से ये शब्द निकले थे। पावेल मुग्ध होकर अपलक उसे देखता रहा।

एक दोस्त! सिपाही की वर्दी के भीतर जो दिल धडक रहा है, उसे प्रदर्शनकारियो से सहानुभूति है। पावेल ने धीरे से पोलिश मे जवाब दिया

"बधाई कामरेड!"

संतरी उसी मुद्रा में खड़ा रहा और प्रदर्शनकारी गुजर गये। पावेल उस छोटी सी काली आकृति को देखने के लिए कई बार पीछे मुड़ा। यह एक और पोल था। उसकी गलमुच्छें पकने लगी थीं और उसकी टोपी के चमकदार छज्जे के नीचे उसकी आंखें एकदम भावशून्य थीं। पावेल ने अभी थोड़ी देर पहले जो बात सुनी थी, उसका संस्कार अब भी उसके मन पर था, इसलिए उसने जैसे अपने आप से बुदबुदा कर पोलिश जबान में कहा :

"बधाई, कामरेड !"

मगर कोई जवाब न मिला।

गाव्रिलोव मुस्कराया। जो कुछ बातें हुई थीं उसने सुन लिया था।

उसने कहा, "तुम जरूरत से ज्यादा उम्मीद करते हो। वे सब के सब सीधे-सादे सिपाही नहीं हैं। उनमें से कुछ ऊंचे पद के सैनिक भी हैं। तुमने उसकी आस्तीन पर वह चिह्न नहीं देखा ? निश्चय ही वह फौजी पुलिस का आदमी है।"

जलूस का अगला हिस्सा पहाड़ी के नीचे उतरने लगा था और एक गांव की तरफ बढ़ रहा था जिसे सरहद ने दो हिस्सों में बांट दिया था। गांव का सोवियत वाला आधा हिस्सा मेहमानों के स्वागत की जबर्दस्त तैयारी कर रहा था। गांव के सारे रहने वाले नदी के किनारे सरहद के पुल पर खड़े इंतजार कर रहे थे। सड़क के दोनों तरफ नौजवान खड़े थे। गांव के पोलिश हिस्से के घरों और शेडों की छतों पर लोग भरे हुए थे। वे नदी के इस पार की कार्रवाइयों को बड़ी गहरी और सतर्क दिलचस्पी से देख रहे थे। घरों के सायबानों में और बागीचों की बाड़ियों पर किसानों की भीड़ थी। आदमियों के उस गलियारे में दाखिल होने पर जलूस ने "इंटरनेशनल" गान की तान छेड़ी। उसके बाद एक मंच पर से, जिसे हरी-हरी पत्तियों से सजाया गया था, खूब जोरदार तकरीरें हुईं। नौजवानों और सफेद बाल वाले बुड्ढे क्रांतिकारियों ने भाषण दिये। कोर्चागिन ने भी अपनी मातृभाषा उक्रेनी में भाषण दिया। उसके शब्द उड़ते हुए सरहद के उस पार पहुंचे और नदी पार के लोगों ने उनको सुना। फौजी पुलिस के आदमियों ने वहां पर जमा देहातियों को भगाना शुरू कर दिया क्योंकि उन्हें डर था कि वे शब्द उन सुनने वालों के दिलों में भी आग लगा देंगे। गोलियां हवा में छोड़ी जाने लगीं।

सड़कें खाली हो गईं। नौजवान फौजी पुलिस की गोलियों से डर कर छतों पर से हट गये। सोवियत सरहद के लोग इन चीजों को देखते रहे और उनके चेहरे गंभीर हो गये। जो कुछ अभी देखा था, उससे अत्यन्त क्रुद्ध होकर एक बुड्ढा गड़ेरिया गांव के कुछ लड़कों की मदद से मंच पर चढ़ आया और उत्तेजित होकर भाषण देने लगा।

"तुमने देखा मेरे बच्चो ! यही सलूक कभी हमारे साथ भी होता था। मगर अब किसान हमारे यहा गाव का राजा है और अब कही नगाइका नही है। जागीरदारो, ताल्लुकेदारो का राज खतम हो गया है और हमारी पीठ पर अब उनके कोडे नही पडते। बच्चो, यह तुम्हारा काम है कि तुम अब फिर कभी उन जागीरदारो और थैलीशाहो को लौटने न दो। मैं बुड्ढा आदमी हू और मुझे भाषण-वापण देना नही आता। लेकिन अगर मैं बोल सकता, तो मेरे पास कहने को बहुत कुछ है। जारशाही मे हम लोग सारी जिंदगी बैलो की तरह काम करते थे और भूख और बदहाली मे रहते थे उन बेचारो की ही तरह !" कहते हुए उसने अपने दुबले-पतले हाथ से नदी के उस पार इशारा किया और फूट-फूट कर रोने लगा जैसे बच्चे और बुड्ढे ही रो सकते हैं।

उसके बाद ग्रिशुत्का खोरोबोदको बोला। उसकी गुस्से से भरी हुई तकरीर को सुनते हुए गाव्रिलोव ने अपना घोडा मोडा और नदी के दूसरे किनारे पर यह देखने के लिए निगाह डाली कि कोई इन तकरीरो का नोट ले रहा है या नही। मगर नदी का किनारा वीरान था। पुल पर तैनात सतरी भी हटा लिया गया था।

उसने हसते हुए कहा, "अच्छा है, लगता है कि विदेशी मामलो की कमिसारियट के पास कोई प्रतिवाद नही भेजा जायगा।"

पतझड के आखिरी दिनो मे एक बरसाती रात को आन्तोन्युक और उसके सात आदमियों की खून और तबाही की कहानी आखिरकार खतम हो गई। वह लुटेरा मैदान-विला की जर्मन बस्ती मे एक धनी किसान के घर एक शादी के मौके पर पकडा गया। खोलिन्स्की कम्यून के किसानो ने उसको पकडा था।

गाव की औरतो ने शादी मे आये हुए इन मेहमानो के बारे मे खबर दी और बाहर कोमसोमोल फौरन इकट्ठा हो गए और जो भी हथियार मिले, उनसे लैस होकर गाडी पर चढ कर मैदान-विला के लिए रवाना हुए और एक आदमी को खबर लेकर बेरेजदोव भेज दिया। सेमाकी में सयोग से उस खबर ले जाने वाले आदमी की मुलाकात फिलातोव की टुकडी मे हो गई जो खबर मिलते ही लुटेरो को पकडने के लिए चल दी। खोलिन्स्की के आदमियो ने फार्म को घेर लिया और उनमे और आन्तोन्युक के गिरोह के लोगो मे राइफिलें चलने लगी। आन्तोन्युक के गिरोह वाले मकान के एक हिस्से मे किलेबन्दी करके बैठ गये और जो भी उनकी राइफिल की मार मे आता, उस पर फौरन गोली चलाते। उन्होने एक बार भाग निकलने की भी कोशिश की। मगर उन्हें

मार कर फिर उस इमारत के अदर घुसने पर मजबूर कर दिया गया। इस कोशिश मे उनका एक आदमी मारा गया। आन्तोन्युक ऐसी अनेक कठिन घड़ियों से गुजर चुका था और अपने दस्ती बमो और अधेरे की मदद से लड कर अपना रास्ता बनाने में कामयाब हुआ था। इस बार भी वह भाग गया होता, क्योंकि खोलिन्स्की के नौजवान कम्युनिस्टो के दो आदमी मारे जा चुके थे। मगर सयोग से उसी वक्त फिलातोव मौके पर पहुच गया। आन्तोन्युक ने समझ लिया कि उसका खेल अब खतम हो गया। सवेरे तक वह तमाम खिड़कियों मे से गोलिया चलाता ही रहा, मगर भोर होते-होते उसे पकड लिया गया। उन छ मे से एक ने भी आत्म-समर्पण नही किया। इन लुटेरो का सफाया करने मे चार जाने गई। उनमे से तीन हाल ही मे सगठित खोलिन्स्की के कोमसोमोल दल के लडके थे।

कोर्चागिन की बटालियन को इलाकाई फौजों की पतझड के दिनो की फौजी कार्रवाइयो के लिए बुला लिया गया। बटालियन मूसलाधार बारिश मे एक ही दिन मे तीस मील मार्च करके डिवीजनल कैम्प पर पहुची। वे सबेरे रवाना हुए और बहुत रात गये अपनी मजिल पर पहुचे। बटालियन कमाडर गुसेव और उसका कमिसार दोनो घोडो पर सवार थे। बटालियन के आठ सौ ट्रेनिंग पाने वाले जब बारक मे पहुचे तो थक कर चूर हो रहे थे और वे फौरन सो गये। दाव-पेंच की कार्रवाइया अगले रोज सुबह शुरू होने वाली थी, टेरीटोरियल डिवीजन के हेडक्वाटर ने बटालियन को बुलाने मे देर कर दी थी। बटालियन के लोग जब अपनी वर्दिया पहने और राइफलें लिये मुआइने के लिए कतार मे खडे हुए, तो उनकी शकल एकदम बदली हुई थी। इन नौजवानो को फौजी ट्रेनिंग देने में गुसेव और कोर्चागिन ने बहुत समय और शक्ति लगाई थी और उन्हें इस बात का पूरा विश्वास था कि उनकी यूनिट इम्तहान मे पास हो जायगी। जब सरकारी मुआइना खतम हो गया और बटालियन ने ड्रिल के मैदान मे अपनी योग्यता भी दिखला दी, तब एक कमांडर ने, जो खूबसूरत मगर थुलथुल आदमी था, कोर्चागिन की तरफ मुडकर तेज स्वर मे जवाब तलब किया

"तुम घोडे पर क्यों सवार हो ? हमारी ट्रेनिंग बटालियनो के कमाडरो और कमिसारो को घोडे पर सवार होने का हक नही। अपने घोडे को अस्तबल मे रख दो और पैदल आकर इन कार्रवाइयो मे शरीक होओ।"

कोर्चागिन जानता था कि अगर वह घोडे से उतर पडा तो परेड में हिस्सा न ले सकेगा क्योंकि उसकी टागो मे एक कदम भी चलने की ताकत न थी।

मगर वह अपनी बात कैसे उस बढ़-बढ़ कर बात करने वाले छैले को समझाये जो इतने ठाठबाट में अपने फीते-गोते लगाये हुए है ?

"मैं पैदल परेड में हिस्सा न ले सकूंगा।"

"क्यों ?"

यह समझ कर कि उसे कोई न कोई जवाब देना ही होगा, कोर्चागिन ने धीरे से कहा

"मेरी टांगें सूजी हुई हैं और मैं एक हफ्ते तक इस दौड़ने-भागने को बर्दाश्त नहीं कर सकूंगा। मगर यह तो बतलाओ कामरेड कि तुम कौन हो ?"

"पहली बात तो यह कि मैं तुम्हारी रेजिमेंट का चीफ आफ स्टाफ हूं, और दूसरी बात यह कि मैं एक बार फिर तुमको घोड़े पर से उतरने का हुक्म देता हूं। अगर तुम बीमार हो, तो तुम्हें फौज में नहीं होना चाहिए।"

पावेल को ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी ने उसके मुंह पर चाबुक मार दिया। उसने जोर से लगाम को अपनी तरफ खींचा और जैसे उतरने को हुआ, मगर गुसेव के मजबूत हाथ ने उसे रोक दिया। कुछ देर तक पावेल के मन में आहत स्वाभिमान और आत्मसंयम के बीच द्वन्द्व हुआ। मगर पावेल कोर्चागिन अब मामूली लाल सैनिक न था जो बहुत आसानी से इस यूनिट से उस यूनिट तक जा सकता था। अब वह बटालियन कमिसार था और उसके पीछे उसकी बटालियन खड़ी थी। अगर वही हुक्म न माने, तो अपने आदमियों के सामने अनुशासन की दृष्टि से वह कैसा बुरा उदाहरण रखेगा! इस घमंडी गधे के लिए तो उसने अपनी बटालियन को तैयार किया नहीं था। उसने रकाब में से अपने पैर निकाले, घोड़े से उतर पड़ा और घुटनों के भयानक दर्द से लटता हुआ दाहिनी तरफ चला गया।

कई दिन तक मौसम बहुत ही अच्छा रहा। परेड और दूसरी फौजी कार्रवाइयां अब खतम होने आ रही थीं। पांचवें रोज सैनिक शेपेतोवका के करीब थे और यहीं ये कार्रवाइयां खतम होने वाली थीं। बेरेजदोव की बटालियन को क्लिमेन्तोविची गांव की तरफ से स्टेशन पर कब्जा करने का काम दिया गया था।

कोर्चागिन ने, जो अब अपने घर की जमीन पर था, स्टेशन पर पहुंचने के सभी रास्ते गुसेव को दिखला दिये। बटालियन दो हिस्सों में बंट गई और एक लम्बा घेरा लेते हुए दुश्मन की पिछली पांतों में जा निकली और खुशी से जोर-जोर से चिल्लाते हुए स्टेशन की इमारत में घुस गई। इस काम की बड़ी प्रशंसा हुई। बेरेजदोव के लोगों का कब्जा स्टेशन पर कायम रहा और जिस

बटालियन ने स्टेशन की रक्षा की थी, वह जगल मे चली गई और फैसला करने वालो ने यह फैसला किया कि उन्होने अपने आधे आदमी गवा दिये थे।

कोर्चागिन बटालियन के आधे हिस्से का कमाडर था। उसने अपने आदमियो को मैदान मे फैल जाने का हुक्म दे दिया था और कमाडर और तीसरी कम्पनी के राजनीतिक शिक्षक के साथ सडक के बीच मे खडा था, जब कि एक लाल सैनिक उसके पास दौडता हुआ आया।

उसने हाफते हुए कहा, "कामरेड कमिसार, बटालियन कमाडर जानना चाहते हैं कि क्या तोपची रेलवे क्रॉसिंगो का बचाव करेंगे। कमीशन के लोग इधर ही आ रहे है।"

पावेल और उसके साथ के कमाडर एक क्रॉसिंग पर गये। रेजिमेंटल कमाडर और उसके सहायक वहा पर थे। गुसेव को इस कामयाब फौजी कार्रवाई के लिए बधाई दी गई। हारी हुई बटालियन के प्रतिनिधि खिसियाये से खडे थे और उन्होने अपनी सफाई मे भी कुछ नही कहा।

गुसेव ने कहा, "इस चीज का श्रेय मैं नही ले सकता। कोर्चागिन ने ही हमको रास्ता दिखलाया था। वह यही का आदमी है।"

चीफ आफ स्टाफ घोडे पर सवार होकर पावेल के पास आया और व्यग के स्वर मे बोला, "तो तुम अच्छा-खासा दौड लेते हो, कामरेड। घोडा जो तुमने ले रखा था, वह केवल रोब जमाने के लिए, क्यो ?" वह और भी कुछ कहने जा रहा था, मगर कोर्चागिन के चेहरे के भाव को देख कर रुक गया।

जब बडे कमाडर चले गये तो कोर्चागिन ने गुसेव से पूछा, "तुम्हें इस आदमी का नाम तो नही मालूम ?"

गुसेव ने उसके कधे पर हाथ मारा।

"अरे छोडो भी, क्यो फिजूल उस छिछोरे के पीछे अपना दिमाग खराब करते हो। उसका नाम चुजानिन है। पहले वह शायद अलमबरदार था।"

उस रोज पावेल ने कई बार अपने दिमाग पर जोर डालकर यह याद करने की कोशिश की कि यह नाम उसने पहले कहा सुना था, मगर उसे याद नही आया।

दाव-पेंच की कार्रवाइया खतम हो गई थी। बटालियन बहुत प्रशसित होकर बेरेजदोब लौट गई। कोर्चागिन अपनी मा से मिलने के लिए एक-दो दिन के लिए रुक गया। उसकी मा के दिन बडी मुश्किल से कट रहे थे। दो रोज तक वह बारह-बारह घटे सोया और तीसरे रोज आर्तेम से मिलने के लिए यार्ड मे गया। इस धूल से अटे हुए, धुए से काले घर मे पावेल को बडा अच्छा

मालूम हुआ। उसने भूखे आदमी की तरह कोयले के धुएं को अपने फेफड़ों में भरा। यही उसकी असली जगह थी और यहीं पर वह रहना चाहता था। उसको लगा कि जैसे उसकी कोई बहुत ही प्यारी चीज खो गई हो। इंजन की सीटी सुने महीनों हो गये थे और पहले के इस फायरमैन और बिजली वाले के मन में अपने परिचित परिवेश के लिए वैसी ही प्यास थी जैसी किसी मल्लाह के दिल में बहुत दिनों तक समुद्र के किनारे पर रहने के बाद समुद्र के असीम विस्तार के लिए होती है। इस भावना पर विजय पाने में उसे काफी समय लगा। वह अपने भाई से ज्यादा नहीं बोला। उसका भाई अब लुहारखाने में काम करता था। आर्तेम के माथे पर उसने नई झुर्रियां देखीं। अब वह दो बच्चों का बाप था। साफ जाहिर था कि आर्तेम की जिंदगी आराम की जिंदगी न थी। उसने कोई शिकायत नहीं की, मगर पावेल खुद इस बात को समझ गया।

दोनों ने संग-संग एक-दो घंटे काम किया और फिर अलग हो गये।

रेलवे क्रॉसिंग पर पावेल ने अपने घोड़े की लगाम खींची और रुका और बड़ी देर तक स्टेशन को देखता रहा। फिर उसने घोड़े को चाबुक लगाया और जंगल में होता हुआ सरपट सड़क पर निकल गया।

जंगल की सड़कें अब काफी सुरक्षित थीं। बोल्शेविकों ने सभी छोटे-बड़े लुटेरों का सफाया कर दिया था और उस इलाके के गांव अब शांति से जिंदगी बसर करते थे।

दोपहर होते-होते पावेल बेरेजदोव पहुंचा। लिदा पोलेविख उसके स्वागत के लिए दौड़ कर जिला कमिटी के सायबान में निकल आई।

उसने बड़ी प्यार-भरी मुस्कराहट के साथ कहा, "स्वागत! घर लौटने पर! तुम्हारे बिना यहां बहुत बुरा लगता था!" उसने पावेल को अपनी बांहों में ले लिया और फिर दोनों कमरे में चले गये।

अपना कोट उतारते हुए उसने लिदा से पूछा, "राजवालिखिन कहां है?"

लिदा ने अनमने ढंग से जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम। अरे हां, याद आया। उसने आज सुबह ही मुझसे कहा था कि वह तुम्हारे बदले समाज शास्त्र का क्लास लेने स्कूल जा रहा है। वह कहता है कि यह तुम्हारा नहीं, उसका काम है।"

पावेल को अचानक मिलने वाली इस खबर से तकलीफ हुई। राजवालिखिन उसे कभी अच्छा नहीं लगता था। पावेल ने चिढ़ते हुए अपने मन में कहा, "स्कूल में यह सारा मामला गड़बड़ कर देगा, पता नहीं क्या अनाप-शनाप पढ़ाये।"

उसने लिदा से कहा, "उसकी तुम फिक्र न करो। मुझे बतलाओ, यहां

की अच्छी-अच्छी खबरें क्या हैं। तुम क्रूसेव्का गई थी ? वहा लडकों का क्या हाल है ?"

लिदा जब उसको सारी खबरें दे रही थी, उस वक्त पावेल अपने थके हुए शरीर को आराम देने के लिए कोच पर लेटा हुआ था।

"परसो राकीतिना को पार्टी का उम्मीदवार सदस्य बना लिया गया। इससे हमारा पोदुल्सी सेल बहुत मजबूत हो जायगा। राकीतिना अच्छी लडकी है, मैं उसे बहुत पसन्द करती हू। यहा की उस्तानिया अब हमारे साथ आने लगी हैं, उनमे से कुछ तो आ भी चुकी हैं।"

कोर्चागिन और पार्टी की जिला कमिटी का नया मत्री लिव्चीकोव, यह दोनो अक्सर शाम को लिसित्सिन के घर पर मिलते थे और फिर तीनो उस बडी मेज पर बैठे बडी रात तक पढते रहते थे।

जिस कमरे मे लिसित्सिन की बीवी और बहन सोती थी, उसका दरवाजा कस कर बद कर दिया जाता और फिर तीनो किसी छोटी सी किताब पर झुके हुए धीमे-धीमे आपस मे बात करते। लिसित्सिन को पढने का वक्त सिर्फ रात को मिलता था। तब भी जब कभी पावेल अपनी अक्सर होने वाली गाव की यात्राओ से लौटता, तो उसे यह देख कर बडी खीझ होती कि उसके साथी बहुत आगे निकल गये हैं।

एक दिन पोदुल्सी के सदेशवाहक ने यह खबर दी कि न जाने किन लोगो ने अगली रात को ग्रिशुत्का खोरोवोदको की हत्या कर दी थी। पावेल फौरन भागा-भागा कार्यकारिणी समिति के अस्तबल मे गया और अपनी टागो के दर्द को भूल कर पागल आदमी की तरह जल्दी-जल्दी एक घोडे की जीन कसी और उस पर सवार होकर सरपट सरहद की तरफ चल दिया।

ग्रिशुत्का गाव की सोवियत के मकान मे सनोवर की शाखो से ढका एक मेज पर पडा था और सोवियत का लाल झडा उस पर पडा हुआ था। एक सरहदी सतरी और एक कोमसोमोल दरवाजे पर खडे पहरा दे रहे थे और जब तक कि अधिकारी नही आ गये, वे किसी को अदर नही जाने देते थे। कोर्चागिन मकान के अदर दाखिल हुआ, मेज के पास गया और झण्डे को उलट दिया।

ग्रिशुत्का का चेहरा मोम की तरह पीला था और उसकी आखे फैली हुई थी जैसी मौत की यत्रणा मे हो गई होगी और उसका सिर एक तरफ को लुढका हुआ था। सनोवर की एक टहनी सिर के पिछले हिस्से मे उस जगह को ढके हुए थी, जिसे किसी तेज हथियार ने काट दिया था।

इस नौजवान की जान किसने ली ? विधवा खोरोवोवको के इस इकलौते बेटे की ? उस विधवा के बेटे की जिसका पति मिल का मजदूर था और बाद मे गरीब किसानो की कमिटी का मेम्बर हो गया था और जिसने क्राति के लिए लडते हुए जान दी थी ?

अपने बेटे की मृत्यु से बुढिया को जो आघात लगा, उससे उसने बिस्तर पकड लिया। अभागी मा को पडोसी सात्वना देने की कोशिश कर रहे थे। और उसका बेटा सर्द और बेजान पडा था, अपनी असामयिक मृत्यु के रहस्य को छिपाये हुए।

ग्रिशुत्का के कत्ल से गाव के सारे लोगो मे गुस्सा छा गया। कोमसोमोलो के इस नौजवान नेता और गरीब किसानो के हिमायती के गाव मे दुश्मनो से कही ज्यादा दोस्त निकले।

राकीतिना को उस खबर से बडी सख्त चोट लगी और वह अपने कमरे मे बैठी फफक-फफक कर रोती रही। कोर्चागिन कमरे मे आया तो उसने आख उठाकर भी नही देखा।

"राकीतिना, तुम्हारा क्या खयाल है किसने यह हत्या की ?" कोर्चागिन ने थकान से बेदम होकर कुर्सी पर बैठते हुए भर्राई हुई आवाज मे पूछा।

"यह वही मिल वाले बदमाश होगे, वही जो चोरी से माल लाते-ले-जाते है। ग्रिशा उनके पहलू का काटा था।"

दो गाव के लोग ग्रिशा खोरोवोटको के जनाजे मे शरीक हुए। कोर्चागिन अपनी बटालियन को ले आया और कोमसोमोल के सभी लोग अपने साथी को अतिम श्रद्धाजलि देने के लिए इकट्ठा हुए। गाव्रिलोव ने गाव सोवियत के सामने वाले चौक मे ढाई सौ सरहदी सतरियो की एक कपनी को जमा किया। अर्थी मार्च की मातमी धुनो के बीच लाल झण्डे मे लिपटा हुआ ताबूत बाहर लाया गया और चौक मे रखा गया। वहा गृहयुद्ध मे जान देने वाले बोल्शेविक छापेमारो की कब्रो के पास एक नयी कब्र खोदी गई।

ग्रिशुत्का की मौत ने उन सभी लोगो को एकता की डोर मे बाध दिया जिनके हितो के लिए वह बराबर उद्योग करता रहा था। नौजवान खेतिहर मजदूरो और गरीब किसानो ने कोमसोमोल की मदद करने की शपथ ली और उस मौके पर जितने लोग बोले, उन सबने गुस्से के साथ इस बात की माग की कि खूनियो का पता लगाया जाय और यही इस चौक मे, इस कब्र के पास ही उन पर मुकदमा चलाया जाय ताकि हर कोई देख सके कि वे दुश्मन कौन है जिन्होने यह खून किया।

राइफिलें तीन बार गरजी और सनोबर की ताजी टहनिया कब्र पर रखी गई। उसी शाम को सेल ने राकीतिना को अपना नया मंत्री चुना। पुफिया की सरहदी चौकी में कोर्चागिन के पास खबर आई कि वे लोग खूनियो का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं।

एक हफ्ते बाद जब कस्बे के थियेटर हॉल मे जिले की सोवियत का दूसरा सम्मेलन शुरू हुआ, तो लिसित्सिन ने गभीर उल्लास के स्वर मे घोषणा की

"साथियो, मुझे इस सम्मेलन को यह खबर देते हुए बडी खुशी हो रही है कि पिछले एक साल मे हमने बहुत सफलताए प्राप्त की है। इस जिले मे सोवियत सत्ता मजबूती से कायम हो गई है, लुटेरो का सफाया कर दिया गया है और चोरी से माल लाने-ले-जाने के व्यापार का भी लगभग खातमा कर दिया गया है। गावो मे गरीब किसानो के मजबूत सगठन पैदा हो गए हैं, कोमसोमोल के सगठन पहले से दस गुना ज्यादा मजबूत है और पार्टी के सगठनो मे भी विस्तार आया है। पोदुब्मी के कुलको की उस आखिरी काली करतूत का भी पर्दाफाश कर दिया गया है जिसने हमारे कामरेड खोरोवोदको की जान ली। खूनी पकड लिए गये हैं। मिल वाले और उसके दामाद ने यह खून किया था। कुछ ही दिनो मे सूबे की अदालत मे उन पर मुकदमा चलेगा। गावो के कई प्रतिनिधि मडलो ने माग की है कि यह सम्मेलन प्रस्ताव पास करे कि इन लुटेरो और खूनियो को मौत की सजा दी जाय।"

इस बात के समर्थन मे एक तूफान सा उठा जिससे हॉल हिल उठा।

"जरूर-जरूर! सोवियत सत्ता के दुश्मनो को मौत की सजा दी जाय!"

लिदा पोलेविख पीछे के एक दरवाजे पर दिखाई दी। उसने इशारे से पावेल को बुलाया।

बाहर गलियारे मे पहुच कर उसने पावेल को एक लिफाफा दिया जिस पर "बहुत जरूरी" लिखा हुआ था। पावेल ने लिफाफा खोला और पढा

> "कोमसोमोल की बेरेजदोव जिला कमिटी के नाम। नकल पार्टी की जिला कमिटी को। सूबा कमिटी के फैसले के अनुसार कामरेड कोर्चागिन को जिले से सूबा कमिटी मे कोमसोमोल के जिम्मेदार काम के लिए बुलाया जाता है।"

पावेल ने इस जिले से छुट्टी ली जहा उसने पिछले साल भर काम किया था। उसके जाने के ठीक पहले पार्टी की जिला कमिटी की जो आखिरी मीटिंग हुई उसके सामने एजेंडे मे ये दो खास बातें थी (१) कामरेड कोर्चागिन को

कम्युनिस्ट पार्टी की मेम्बरी देना, (२) कोमसोमोल की जिला कमिटी के मंत्री पद से पावेल को मुक्त करते हुए उसके सर्टिफिकेट की तसदीक करना।

विदा होते समय लिमितिसन और लिदा ने जोर से पावेल से हाथ मिलाया और प्यार से उसे गले लगाया और जब उसका घोडा हाते में से निकल कर सडक पर पहुचा तो एक दर्जन रिवाल्वरों ने उसको विदा की सलामी दी।

चौदह

ट्राम फुन्दुकलियेव पहाडी पर चढते हुए धीरे-धीरे रेंग रही थी और उसका इजन जैसे थकान से कराह रहा था। ऑपेरा हाउस पर पहुच कर वह रुक गई और उसमे से कुछ नौजवान बाहर निकले। ट्राम फिर चढाई चढने लगी।

पाक्रातोव ने दूसरो को ठेलते हुए कहा, "चलो जरा तेज रफ्तार से चलो, नही तो देर हो जायगी।"

ओकुनेव ने थियेटर के दरवाजे पर जाकर पाक्रातोव को पकड लिया।

"हम लोग ऐसी ही परिस्थितियो मे तीन साल पहले यहा आये थे। तुम्हे याद है न सेंका? यह उस वक्त की बात है जब दुबावा अपना मजदूरो का विरोधी दल लेकर हमारे पास आया था। कैसी शानदार मीटिंग हुई थी। और आज फिर हमे उसी से मोर्चा लेना है।"

वे अपने पास देकर हाल मे दाखिल हो गये थे जब कि पाक्रातोव ने जवाब दिया।

"हा, इतिहास ठीक उसी जगह पर अपने-आपको दुहरा रहा है।"

हाल मे बैठे हुए दूसरे लोगो ने उन्हे चुप होने के लिए कहा। सम्मेलन का शाम का अधिवेशन शुरू हो गया था और जो भी सीट मिल जाय, उसी पर उन्हे बैठ जाना था। एक नौजवान औरत मंच से बोल रही थी।

पाक्रातोव ने ओकुनेव की पसली मे उगली गडाते हुए धीरे से कहा, "हम लोग बिलकुल ठीक वक्त पर आये है। अब चुप बैठो और सुनो बीबी जी क्या कहती है।"

" यह सच है कि हम लोगो ने इस बहस मे अपना बहुत वक्त और ताकत खर्च की है। मगर मेरा खयाल है कि हम सबने इसमे बहुत-कुछ सीखा है। आज हमे यह देख कर बडी खुशी होती है कि हमारे सगठन मे त्रॉत्स्की के अनुयायी हार गये है। वे यह शिकायत नही कर सकते कि लोगो ने उन्हे सुना

नही। बात इसकी उल्टी है उन्हे अपना दृष्टिकोण दूसरो के सामने रखने का पूरा मौका दिया गया है। सच बात यह है कि उनको दी गई आजादी का उन्होंने बेजा इस्तेमाल किया है और पार्टी के अनुशासन को बहुत बार बुरी तरह भग किया है।"

तालिया बहुत उत्तेजित थी। बोलते समय उसके बालो की जो लट आखों पर आ जाती थी, उनको पीछे करने के लिए जिस तरह वह सिर को झटक रही थी, उससे यह बात साफ जाहिर थी।

"देहातो के बहुत से साथी यहा पर बोले हैं और उन सबके पास ऑत्स्की-पथियो के कारनामो के बारे में कुछ-न-कुछ कहने को रहा है। इस सम्मेलन मे काफी ऑत्स्की-पथी भी हैं। देहात के लोगो ने समझ-बूझ कर उनको यहा भेजा है ताकि हम पार्टी के इस शहर सम्मेलन मे उनकी बात को सुनने का एक और मौका पायें। अगर वे इस अवसर का पूरा लाभ नही उठा रहे हैं, तो इसमे हमारा कोई दोष नही है। देहातो और सेलो मे जिस प्रकार वे पूरी तरह पराजित हुए हैं, उससे जरूर उन्होने कुछ-न-कुछ सबक लिया है। यही वजह है कि उन्हे इस बात का साहस नही हुआ कि जो बातें अभी वे कल तक कह रहे थे, उन्हे आज इस सम्मेलन के सामने कहे।"

हॉल के दाहिने कोने से आती हुई एक करख्त आवाज ने इस जगह पर तालिया को टोका .

"अभी तक हम अपनी पूरी बात नही कह पाये हैं।"

तालिया उस आवाज की तरफ मुडी

"बहुत अच्छा दुबावा, तुम अभी आ जाओ और बोलो, हम तुम्हारी बात सुनेंगे।"

दुबावा ने चिंता मे डूबे-डूबे उसको देखा और उसके ओठ क्रोध मे ऐंठ गये।

उसने चिल्ला कर कहा, "हम भी बोलेंगे, वक्त आने दो।" खुद अपने इलाके मे एक रोज पहले उसे जो करारी हार खानी पडी थी, उसका खयाल दुबावा को आया। उसकी याद अब भी उसके दिल मे खटक रही थी।

हॉल मे एक धीमी भुनभुनाहट फैल गई। पाक्रातोव अब अपने को बस मे नहीं रख सका और चिल्ला उठा

"फिर पार्टी को उलटने-पुलटने का इरादा है क्या ?"

दुबावा ने आवाज को पहचान लिया, मगर उस ओर मुडा नही। उसने ओठ भीच लिये और सिर झुका लिया।

तालिया बोली, "ऑत्स्की-पथी किस तरह पार्टी-अनुशासन का उल्लघन कर रहे हैं, खुद दुबावा इसकी बहुत अच्छी मिसाल है। उसने बहुत दिन कोमसोमोल

में काम किया है। हममें से बहुत से लोग उसको जानते हैं, और खासकर हथियार कारखाने के मजदूर। वह खारकोव कम्युनिस्ट यूनीवर्सिटी का छात्र है, फिर भी पिछले तीन हफ्ते से यहां पर शुम्स्की के साथ है और हमको यह वात मालूम है। यूनीवर्सिटी खुली हुई है, ऐसे वक्त वह कौन सी चीज है जो इन लोगों को यहां पर लाई है? इस कस्बे में एक भी देहात नहीं है, जहां पर उन्होंने भाषण न दिये हों। यह सही है कि पिछले कुछ दिनों में यह देखने में आया है कि शुम्स्की की अक्ल ठिकाने पर आ रही है। उसको किसने यहां पर भेजा है? उनके अलावा भिन्न-भिन्न संगठनों के और भी कई त्रॉत्स्की-पंथी यहां पर उपस्थित हैं। इन सभी ने एक न एक वक्त यहां पर काम किया है और अब ये लोग यहां पार्टी में गड़बड़ी फैलाने के लिए आये हैं। उनके पार्टी संगठनों को क्या यह वात मालूम है कि वे कहां गये हैं? बिलकुल नहीं।"

सम्मेलन को यह आशा थी कि त्रॉत्स्की-पंथी आगे आकर अपनी गलतियों को कबूल कर लेंगे। तालिया को भी यह उम्मीद थी कि वह उनको ऐसा करने के लिए राजी कर लेगी, इसीलिए उसने सच्चे दिल से उनसे इस बात की अपील की। दोस्ताना लहजे में उसने सीधे-सीधे उनको संबोधित करते हुए कहा :

"तीन साल पहले इसी हॉल में दुवावा अपने 'मजदूरों के विरोधी दल' की वात लेकर आया था। याद है? और उसने क्या कहा था, यह भी याद है? तब उसने कहा था : 'हम कभी पार्टी झंडे को अपने हाथ से गिरने न देंगे।' मगर अभी मुश्किल से तीन साल ही गुजरे हैं और दुवावा ने फिर वही काम किया है। हां, मैं अपनी वात को दुहराती हूं कि उसने पार्टी झंडे को गिरा दिया है। वह कहता है, अभी हमने अपनी पूरी वात नहीं कही है। इसका मतलब है कि वह और उसके दूसरे सहयोगी त्रात्स्की-पंथी अभी और भी आगे बढ़ने का इरादा रखते हैं।"

पिछली कतारों से एक आवाज आई, "तुफ्ता हमको वैरोमीटर के वारे में वताए। वही इन लोगों के मौसमी उतार-चढ़ाव का विशेषज्ञ है।"

इसके जवाब में क्रुद्ध आवाजें आई :

"यह इस तरह के मजाकों का वक्त नहीं है!"

"ये लोग पार्टी से लड़ना वंद करेंगे या नहीं? हमें इस बात का उत्तर चाहिए!"

"ये लोग हमको वतायें कि वह पार्टी-विरोधी प्लान किसने लिखा!"

हॉल के अन्दर गुस्सा तेज से और तेज होता गया और चेयरमैन ने लोगों को चुप कराने के लिए वार-वार और बड़ी-वड़ी देर तक घंटी वजाई। तालिया की आवाज शोर में डूब गई और तूफान के थमने में काफी देर लगी। और तूफान के हलके पड़ने पर ही वह अपनी वात जारी रख सकी।

"दूरदराज के अपने साथियो के जो खत हमको मिलते है, उनसे पता चलता है कि वे लोग हमारे साथ हैं और इस चीज से हमको बहुत बल मिलता है। मैं आपको ऐसे ही एक खत का कुछ हिस्सा पढ कर सुनाना चाहती हू। यह खत ओल्गा यूरेनेवा ने भेजा है। आप मे से बहुत से लोग उसको जानते है। वह कोमसोमोल की एक एरिया कमिटी के सगठन विभाग की इचार्ज है।"

तालिया ने अपने सामने पडे हुए ढेर मे से एक कागज निकाला, उस पर निगाह दौडाई और पढना शुरू किया।

> "असली काम की तरफ कोई ध्यान नही दिया गया है। पिछले चार दिन से सारे ब्यूरो मेम्बर देहातो मे गये हुए है जहा त्रात्स्की-पथियो ने पहले से भी ज्यादा जहरीला प्रचार शुरू कर दिया है। कल एक ऐसी घटना हुई जिससे सगठन के सभी लोग बहुत बिगड उठे हैं। जब विरोधियो को शहर के एक भी सेल मे बहुमत नही प्राप्त हुआ, तो उन्होने अपनी सारी शक्ति को जमा करके एरिया फौजी कमिसारियट की सेल मे लडने का फैसला किया। एरिया फौजी कमिसारियट की सेल मे एरिया प्लैनिंग कमीशन और शिक्षा-विभाग मे काम करने वाले कम्युनिस्ट भी शामिल है। इस सेल मे बयालीस मेम्बर है। मगर वहा के सारे त्रात्स्की-पथी एक होकर काम करते है। उस मीटिंग मे जैसे पार्टी-विरोधी भाषण हुए, वैसे हमने पहले कभी नही सुने थे। फौजी कमिसारियट का एक मेम्बर उठ पडा और साफ-साफ बोला 'अगर पार्टी की मशीन हमारी बात नही मानती तो हम उसे अपनी ताकत से तोड देंगे।' जब उसने यह बात कही तो विरोधी दल वालो ने खूब तालिया बजाई। तब कोर्चागिन बोलने के लिए उठा। उसने कहा, 'आप कैसे पार्टी मेम्बर है जो उस फासिस्ट की बात पर ताली बजा रहे है?' मगर इन लोगो ने इतना शोर मचाया, चीखे-चिल्लाये, कुर्सिया बजाई कि कोर्चागिन नही बोल सका। विरोधियो के इस बेहूदा आचरण से बिगड कर सेल के मेम्बरो ने माग की कि कोर्चागिन को अपनी बात कहने का मौका दिया जाय। मगर जैसे ही कोर्चागिन ने बोलना शुरू किया कि फिर वैसा ही शोर मचा। कोर्चागिन ने उस शोर को अपनी आवाज से दबाते हुए और भी चीख कर कहा, 'इसी को आप जनवाद कहते हैं! मगर कोई बात नही, इतने पर भी मैं बोलूगा और जरूर बोलूगा!' उसी वक्त कई लोग उस पर टूट पडे और उसे मच से घसीट कर अलग करने लगे। बडा हगामा मचा। पावेल उनका मुकाबला करता रहा और बोलता गया मगर उन्होने उसे मच से घसीट कर, बगल के एक दरवाजे से बाहर सीढी के पास धकेल

दिया। किसी बदमाश ने उसके चेहरे पर चाकू मार दिया। उसके बाद लगभग सभी सेल मेम्बर मीटिंग छोड कर चले गये। इस घटना ने बहुत से लोगों की आखे खोल दी ।"

इसके बाद तालिया मच मे हट गई।

पार्टी की सूबा कमिटी के प्रचार-आन्दोलन विभाग के काम की देखभाल पिछले दो महीनो से सेगल कर रहा था। सेगल सभापति मडली मे तोकारेव के बगल मे बैठा हुआ था और बडे गौर से प्रतिनिधियो के भाषण सुन रहा था। अब तक सम्मेलन मे नौजवान लोग ही बोले थे जो अभी कोमसोमोल मे ही थे।

सेगल सोच रहा था, "इन पिछले कुछ सालो मे इनकी बुद्धि कितनी प्रौढ हो गई है!"

उसने तोकारेव से कहा, "विरोधियो को अच्छी मार पड रही है और जब कि अभी बडी-बडी तोप मैदान मे उतारी ही नही गयी। अभी तो यह लडके ही त्रॉत्स्की-पथियो को खदेडे दे रहे हैं।"

उसी वक्त तुफ्ता कूद कर मच पर आ गया। उसके आते ही लोगो ने अपनी नापसन्दी का इजहार करते हुए भुनभुनाना शुरू किया और एक कहकहा भी पडा। तुफ्ता अपने इस स्वागत का प्रतिवाद करने के लिए सभापति मडली की तरफ मुडा, मगर तब तक हाल मे काफी शान्ति छा गयी थी।

"किसी ने यहा पर मुझको मौसम के उतार-चढाव का विशेषज्ञ कहा है। आप साथियो का यहा पर बहुमत है और इस तरह आप मेरे राजनीतिक विचारो का मखौल उडाते है!" उसने एक सास मे कह डाला।

एक जोर के कहकहे से उसके शब्दो का स्वागत हुआ। तुफ्ता ने बिगड कर चेयरमैन से अपील की।

"आप हस सकते है, मगर मैं एक बात फिर आपको बतलाना चाहता हू कि युवक बैरोमीटर होते है। लेनिन ने बार-बार यह बात कही है।"

पल भर के लिए हाल मे शान्ति छा गयी।

"लेनिन ने क्या कहा है?" श्रोताओ मे से आवाज आई।

तुफ्ता की जान मे जान आई।

"जिस वक्त अक्तूबर क्रान्ति की तैयारिया हो रही थी, लेनिन ने निर्देश किया था कि हिम्मतवर मजदूर युवको को जमा करो, उन्हे हथियार दो और सबसे अहम मुकामो पर उन्हे जहाजियो के साथ-साथ भेजो। क्या आप चाहते है कि मैं वह टुकडा पढकर आपको सुनाऊ? मेरे पास सारे उद्धरण यहा कार्ड पर लिखे हुए रखे हैं।" कहते हुए, तुफ्ता ने अपने बस्ते मे हाथ डाला।

"जाने दो, जाने दो, उसकी जरूरत नही, हमें मालूम है !"

"मगर यह तो बताओ कि लेनिन ने पार्टी की एकता के बारे मे क्या लिखा है ?"

"और पार्टी अनुशासन के बारे मे ?"

"लेनिन ने कब नये लोगो को पुराने बोल्शेविको के मुकाबले मे खड़ा किया ?"

लुफ्ता के विचारो की कड़िया टूट गयी और वह दूसरी ही बात कहने लगा

"अभी लयुतिना ने यूरेनेवा का एक खत पढकर आपको सुनाया। वहस-मुबाहसे के दौरान मे अगर कोई ज्यादतिया हो जाती हैं, तो हमसे उनका जवाब तलब करने का क्या मतलब है ?"

शुम्स्का के बगल में बैठे हुए स्वेतायेव ने गुस्से से दात पीसते हुए कहा, "गदहा !"

शुम्स्की ने वैसे ही फुसफुसा कर जवाब दिया, "हा, यह बेवकूफ हमारा काम बिलकुल बिगाड देगा।"

तुफ्ता की तीखी बुलन्द आवाज श्रोताओ के कान मे सीमा उडेलती रही

"अगर आप बहुमत का दल सगठित कर सकते है, तो हमको भी अधिकार है कि हम अल्पमत का दल सगठित करें।"

हॉल मे शोर मचा।

चारो तरफ से लोगो की क्रुद्ध आवाजें तुफ्ता पर बरसने लगी

"यह क्या ? फिर वही बोल्शेविक और मेंशेविक का झगडा !'

"रूसी कम्युनिस्ट पार्टी कोई पार्लियामेंट नही है !"

"ये लोग म्यासनिकोव से लेकर मार्तोव तक सबका काम कर रहे हैं।"

तुफ्ता ने इस तरह अपनी बाहे उठाई जैसे नदी मे कूदने जा रहा हो और जल्दी-जल्दी जवाब देने लगा।

"हा, हमको अपना दल बनाने की आजादी मिलनी चाहिए। वरना कैसे हम लोग, जो अलग विचार रखते हैं, अपने मत के लिए एक ऐसे सगठित अनुशासित बहुमत के खिलाफ लड सकते हैं ?"

शोर बढता गया। पाक्रातोव उठा और चिल्ला कर बोला :

"उसको बोलने दो। हम सुने तो कि वह क्या कहना चाहता है। तुफ्ता मे इतनी बात तो अच्छी है कि जिन बातो को दूसरे लोग अपने दिल मे रखे हुए हैं, उनको वह उगले दे रहा है।"

हॉल शात हो गया। तुफ्ता ने महसूस किया कि वह हद से गुजरा जा रहा है। शायद उसको यह बात अभी नही कहनी चाहिए थी। उसके

विचार दूसरी ही ओर मुड गये और उसने तेजी से बोलते हुए अपनी बात खतम की

"आप चाहे तो हमे निकाल बाहर कर सकते हैं। वह चीज शुरू भी हो गई है। आपने मुझे कोममोमोल की सूबा कमिटी मे से निकाल दिया है। मगर कोई बात नही, जल्दी ही यह बात साफ हो जायगी कि कौन सही था और कौन गलत।" यह कहते हुए वह मच से कूद कर हॉल मे आ गया।

श्वेतायेव ने एक पुर्जा लिख कर दुबावा के पास भेजा।

"मितियाई, अब तुम बोलो। मैं जानता हू कि इसमे बात कुछ खास बदलेगी नही। हमे यहा बुरी मार पड रही है। तुफ्ता की अक्ल हमे ठीक करनी होगी। यह बिल्कुल गदहा है और जो जी मे आता है, बक डालता है।"

दुबावा ने बोलने की इजाजत मागी जो उसे फौरन मिल गई।

वह मच पर चढा तो हॉल मे शाति छा गई और लोग आतुरता से उसकी बात का इतजार करने लगे। यह किसी भी भाषण के पहले छाने वाली शाति थी, मगर दुबावा को लगा कि जैसे उसमे शत्रुता का भाव मिला हुआ हो। जिस जोश मे वह सेल मीटिंगो मे बोला करता था, वह जोश अब ठडा पड गया था। रोज-ब-रोज उसका उत्साह कम होता जा रहा था और अपने पुराने साथियों के हाथ ऐसी करारी हार खाकर और उनकी उस सख्त डाट-फटकार मे उसकी हालत उस आग जैसी हो रही थी जिस पर पानी डाल दिया गया हो। आग अब नही थी और केवल धुआ रह गया था, उसके आहत अहकार का तीखा धुआ जिसका तीखापन इस बात से और भी बढ जाता था कि वह अपनी गल्ती मानने मे बराबर इनकार किये जा रहा था। उसने सीधे-सीधे अपनी बात कहने का सकल्प किया, गोकि वह समझ रहा था कि ऐसा करने मे वह बहुमत के लोगो से और भी कट कर दूर जा पडेगा। बोलते समय उसकी आवाज मे कोई उतार-चढाव नही था, मगर आवाज साफ थी।

"बराय मेहरबानी मुझे टोकियेगा नही और न बेकार के सवाल पूछ कर मुझे चिढाने की कोशिश कीजिएगा। मैं अपने लोगो का पूरा विचार आपके सामने रखना चाहता हू, गोकि मैं पहले से जानता हू कि इसका कोई फायदा नही है। आप बहुमत में हैं।"

उसने बोलना खतम किया तो ऐसा लगा कि जैसे हॉल मे बम फूटा हो। चारो तरफ से लोगो की गुस्से से भरी बिफरी हुई आवाजो का तूफान उस पर टूटा और उसको लगा कि जैसे उसके शरीर पर कोडे पड रहे हो।

"शर्म की बात है!"

"फूट डालने वालो का नाश हो!"

"यह कीचड उछालना बन्द करो!"

लोग मजाक उडाते हुए हंस रहे थे और उनकी इस हंसी के बीच दुबावा अपनी सीट पर जाकर बैठ गया और उस हंसी ने ही मानो उसका काम तमाम कर दिया। अगर लोगो ने अपने गुस्से का इजहार किया होता और बिगड कर उस पर हमला किया होता, तब शायद उसके मन को सतोष होता। मगर यह तो ऐसा था कि जैसे वह कोई निकृष्ट अभिनेता हो, जिसकी आवाज गलत जगह पर फट गई हो और लोग उसका मजाक उडा रहे हो।

सभापति ने ऐलान किया, "अब शुम्स्की बोलेगा।"

शुम्स्की ने खडे होकर कहा, "मै बोलने से इनकार करता हू।"

तब पिछली कतारो मे से पाक्रातोव की भारी आवाज गूजती हुई सुनाई दी "मुझको बोलने दो!"

उसकी आवाज से दुबावा जान गया कि पाक्रातोव के दिल मे तूफान मचल रहा है। उस मल्लाह की भारी आवाज इसी तरह गूजती थी जब उसका जबर्दस्त अपमान होता था और दुबावा के मन मे तब बडी बेचैनी हुई जब उसने लम्बी, कुछ झुकी हुई उस आकृति को जल्दी-जल्दी मच की ओर जाते हुए अपनी सचिन्त आखो से देखा। वह जानता था कि पाक्रातोव क्या कहने जा रहा है। उसे दो रोज पहले सोलोमेका मे अपने पुराने दोस्तो के साथ अपनी मुलाकात की बात याद आई और याद आया कि कैसे उन्होने उस पर जोर दिया था कि वह विरोधियो से अपना सम्बध तोड ले। उसके साथ स्वेतायेव और शुम्स्की भी थे। तोकारेव के घर पर उससे मुलाकात हुई थी। पाक्रातोव, ओकुनेव, तालिया, वोलिन्तसेव, जेलेनोवा, स्तारोवेरोव और आर्त्युखिन भी मौजूद थे। एकता कायम करने की बडी कोशिश की गई, लेकिन दुबावा ने उस पर कोई कान न दिया। बहस के बीच मे ही वह स्वेतायेव के साथ बाहर निकल गया और इस तरह उसने यह चीज और भी दिखला दी कि अपनी गलती मानने के लिए वह कतई तैयार नही है। शुम्स्की रुक गया था। और अब उसने बोलने से इनकार कर दिया था। "बेदम, बुद्धिजीवी! रीढ ही नही है! जरूर उन लोगो ने उसको मिला लिया है," दुबावा ने गुस्से के साथ सोचा-विचारा।

इस कठिन सघर्ष मे वह एक के बाद दूसरा दोस्त खोता जा रहा था। यूनिवर्सिटी मे जार्की के सग उसकी दोस्ती टूट गई थी। जार्की ने पार्टी की ब्यूरो की एक मीटिंग मे "छियालीस लोगो" की घोषणा की कडी आलोचना की थी। और बाद मे जब सघर्ष और तेज हुआ, तो उनकी आपस मे बोलचाल भी बन्द हो गई थी। उसके बाद जार्की कई बार आना से मिलने उसके घर आया था। दुबावा और आना की शादी हुए एक साल हो चुका था। दोनो अलग-अलग कमरो मे रहते थे और दुबावा को इस बात का पक्का यकीन था

कि आना के साथ उसके बिगाड का कारण यही नही था कि आना का मत उससे नही मिलता था, बल्कि यह भी कि जार्की के बार-बार आने से आना और उसके सम्बध मे और भी तनाव आ गया था। यह ईर्ष्या की बात नही थी, उसने अपने मन को समझाने की कोशिश की। लेकिन उन हालतो मे जार्की के साथ आना की दोस्ती से उसको चिढ जरूर मालूम होती थी। इसके बारे मे उसने आना से बात की थी, मगर कोई खास नतीजा न निकला, सिर्फ लडाई होकर रह गई। आना को बिना यह बतलाये कि वह कहा जा रहा है, वह सम्मेलन मे चला आया था।

उसके विचार तेजी से उडे चले जा रहे थे जब कि पाक्रातोव की बात ने उसको बीच ही मे काट दिया।

पाक्रातोव ने मच के छोर पर खडे होते हुए अपनी गूजती हुई आवाज मे कहा, "साथियो ! पिछले नौ दिन से हम विरोधियो की बाते सुनते आ रहे हैं और मैं साफ-साफ कहना चाहूगा कि वे लोग वर्गयुद्ध मे हमारे साथियों की तरह, सग-सग लडने वालो की तरह, क्रातिकारियो की तरह नही बोल रहे थे। उनकी तकरीरें दुश्मनो जैसी थी, उनमे उनके मन का मैल था, वे गाली देने के अदाज मे बाते कह रहे थे। हा साथियो, गाली देने के अदाज मे ! उन्होने हम बोल्शेविको की ऐसी तसवीर खीची है मानो हम पार्टी के अदर लाठी का राज कायम करने की कोशिश कर रहे हो, जैसे हमने अपने वर्ग और क्राति के हितो के साथ विश्वासघात किया हो। उन्होने हमारे पुराने बोल्शेविको को, जो हमारी पार्टी के सबसे तपे हुए और विश्वसनीय लोग है उनको, पार्टी तानाशाह कहा है—उन लोगो को जिन्होने रूसी कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण किया है, जिन्होने जारशाही कैदखानो मे तकलीफे सही है, जिन्होने कामरेड लेनिन के नेतृत्व मे दुनिया भर के मेशेविको और त्रॉत्स्की के खिलाफ निर्मम सघर्ष किया है। क्या दुश्मन के अलावा और कोई इस तरह की बात कह सकता था ? क्या पार्टी और उसके कार्यकर्ता एक सम्पूर्ण इकाई नही है ? तब मैं यह जानना चाहता हू कि ऐसी बातें क्यो कही जा रही हैं ? हम ऐसे लोगो को क्या कहेगे जो नौजवान लाल सैनिको को अपने कमाडरो और कमिसारो के खिलाफ और फौजी हेडक्वार्टर के खिलाफ भडका रहे हैं—और ऐसे समय मे जब कि यूनिट दुश्मनो से घिरी हुई है। त्रॉत्स्की-पथियो के अनुसार मैं जब तक मेकेनिक हू तब तक ठीक हू, लेकिन अगर कल के रोज मैं पार्टी का मत्री हो जाऊ तो 'तानाशाह' और 'कुरसी तोडने वाला' हो जाऊगा। क्या यह बात कुछ अजीब-सी नही है साथियो, कि विरोध करने वालो मे, जो तानाशाही के खिलाफ और जनवाद के लिए सघर्ष कर रहे हैं, तुफ्ता जैसे लोग हैं जिसे अभी हाल ही मे तानाशाही के जुर्म मे अपने काम से अलग किया गया था ? या

स्वेतायेव को ही लीजिए जिसे सोलोमेका के लोग अच्छी तरह जानते हैं कि वह जनवाद का कैसा हामी है, या अफानासिएव को ही लीजिए जिसे सूबा कमिटी ने तीन-तीन बार पोदोल्स्क के इलाके मे मनमाने ढग से काम करने के जुर्म मे अलग किया है ? देखने मे यह आता है कि वे तमाम लोग जिन्हे पार्टी ने सजा दी है, पार्टी से लडने के लिए एक हो गये हैं। मैं चाहता हू कि हमारे पुराने बोल्शेविक हमे त्रॉत्स्की के बोल्शेविज्म के बारे मे बतलाए। नौजवानो के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि कैसे त्रॉत्स्की ने बोल्शेविको के खिलाफ लडाई लडी, कैसे वह बराबर एक कैम्प से दूसरे कैम्प मे पहुचता रहा। विरोधियो के खिलाफ इस सघर्ष मे हमारी एकता बढी है और विचारो की सफाई के खयाल से हमारे नौजवानो का स्तर भी ऊचा हुआ है। निम्न मध्य-वर्गीय प्रवृत्तियो के खिलाफ बोल्शेविक पार्टी और कोमसोमोल और भी मजबूत हुए हैं। हमारे विरोधी, जो लोगो मे घबराहट फैलाना चाहते है, यह कह रहे है कि हमारा आर्थिक और राजनीतिक सर्वनाश हो जायगा। यह तो हमारा आगामी कल ही बतलाएगा कि इन भविष्यवाणियो मे कोई सार था या नही। वे लोग माग कर रहे हैं कि हम तोकारेव जैसे पुराने बोल्शेविको को पीछे करके उनकी जगह दुबावा जैसे अवसरवादी को रख दें। उनका यह खयाल है कि पार्टी के खिलाफ वह जो सघर्ष कर रहा है, वह कोई बडी बहादुरी का काम है। नहीं साथियो, हम कभी यह बात नही मान सकते। पुराने बोल्शेविको की जगह नये आदमी रखे जायेंगे, लेकिन ये नये आदमी उन लोगो मे मे नही आयेंगे जो हर कठिन घडी मे पार्टी-नीति पर आक्रमण किया करते हैं। हम अपनी महान पार्टी की एकता को भग नही होने देंगे। कभी भी पुराने और नये साथियो के बीच दरार नही पडने पायेगी। लेनिन के झडे के नीचे हम निम्न मध्य-वर्गीय प्रवृत्तियो के खिलाफ जमकर सघर्ष करते हुए विजय की ओर आगे बढते जायेंगे।"

पाक्रातोव तालियो की जबर्दस्त गडगडाहट के बीच मच से नीचे उतर आया।

अगले रोज दस लोग लुप्ता के घर पर मिले।

दुबावा ने कहा, "मैं और शुम्स्की आज खारकोव जा रहे है। यहा पर अब हमारा कोई काम नही। तुम लोग अपनी एकता को बनाये रखने की कोशिश करना। अब हमे सिर्फ यह करना है कि इतजार करें और देखे कि क्या होता है। यह बिलकुल जाहिर बात है कि अखिल रूसी सम्मेलन हमारी निन्दा करेगा, मगर मेरा खयाल है कि अभी हमारे खिलाफ दमन की कार्रवाइयो

का वक्त नहीं आया है। बहुमत वालों ने हमें और एक मौका देने का फैसला किया है। अब इस सम्मेलन के बाद खुलेआम संघर्ष चलाने का मतलब तो यह होगा कि हमें पार्टी में से ठोकर मार कर निकाल दिया जायगा। इसलिए अब खुलेआम लड़ाई चलाना तो हमारी योजना में नहीं है। यह तो कहना मुश्किल है कि भविष्य में क्या होगा। फिलहाल मैं समझता हूं कि कहने की बात इतनी ही है।" यह कह कर दुबावा जाने के लिए उठा।

दुबला-पतला स्तारोवेरोव भी उठा जिसके ओंठ पतले-पतले थे।

उसने कुछ-कुछ हकलाते हुए कहा, "मैं तुम्हारी बात नहीं समझ पाता मितियाई। क्या मैं यह समझूं कि सम्मेलन के फैसले हमारे ऊपर लागू नहीं होते?"

"जाब्ते के हिसाब से तो होते हैं," स्वेतायेव ने एकाएक बीच में कहा, "वरना तुम्हारा पार्टी-कार्ड छिन जायगा। मगर असल बात यह है कि हम इंतजार करेंगे और हवा का रुख देखेंगे और इस बीच इधर-उधर बिखर जायेंगे।"

तुफ्ता अपनी कुर्सी में बेचैनी से हिला। शुम्स्की जर्द हो रहा था, उसकी तबियत बुझी हुई थी और उसकी आंखों के नीचे नीले दाग पड़ गये थे। वह खिड़की के पास बैठा दांत से नाखून काट रहा था। स्वेतायेव की बात को सुन कर उसने नाखून काटना बंद कर दिया और मीटिंग की तरफ मुड़ा।

एकाएक उसने गुस्से से कहा, "मैं इस तरह की कार्रवाइयों के खिलाफ हूं। मेरा निजी खयाल यह है कि सम्मेलन के फैसले हमारे ऊपर लागू होते हैं। हम लोगों ने अपने विश्वासों के लिए संघर्ष किया, लेकिन अब हमें लिये गए फैसलों को मानना चाहिए।"

स्तारोवेरोव ने उसकी ओर समर्थन-सूचक आंखों से देखा।

उसने तुतलाते हुए कहा, "यही बात मैं कहना चाहता था।"

दुबावा ने शुम्स्की को तरेरा और अपनी आवाज में व्यंग भर कर कहा:

"यह कौन कह रहा है कि तुम कुछ करो। अब भी तुम्हें सूबा सम्मेलन में पश्चाताप करने का मौका मिलेगा!"

शुम्स्की उछल कर खड़ा हो गया।

"मुझे तुम्हारी बात के स्वर से एतराज है दिमित्री! और मैं साफ-साफ कहना चाहूंगा कि तुम जो बात कह रहे हो, उससे मुझे सख्त नफरत होती है और वह मुझे मजबूर कर रही है कि मैं दुबारा अपनी स्थिति पर विचार करूं।"

दुबावा ने ऐसे हाथ हिलाया जैसे उसकी बात को उड़ा रहा हो।

"मैं ठीक समझ रहा था कि तुम यही बात करने की सोचोगे। भाग कर जाओ और उनके सामने रो-गा आओ, कहीं देर न हो जाय।" यह कह कर दुबावा ने तुफ्ता और दूसरे लोगों से हाथ मिलाया और चला गया। उसके ठीक बाद शुम्स्की और स्तारोवेरोव भी चले गये।

बडी सख्त और बेदर्द सर्दी से सन १९२४ की शुरुआत हुई। जनवरी का बर्फानी पंजा बर्फ से ढकी हुई धरती पर जमा हुआ था और महीने के दूसरे पखवारे मे आधी और तूफान का जबर्दस्त जोर था।

दक्षिण-पश्चिमी रेलवे लाइनें बर्फ से ढकी हुई थी। आदमी पगलाई हुई प्राकृतिक शक्तियो से लड रहे थे। बर्फ की सफाई करने वाले फावडे बर्फ को काट-काट कर रेलगाडियो के लिए रास्ता बना रहे थे। टेलीग्राफ के तार बर्फ के बोझ से आधी और तूफान के कारण टूटे जा रहे थे और बारह लाइनो में से कुल तीन काम कर रही थी—एक इडो-योरोपियन और दो सरकारी लाइनें।

पेपेतोवका स्टेशन के तार घर मे तीन आले अनवरत खटखटा रहे थे, मगर उनकी भाषा ऐसी थी जो सिर्फ जानकार आदमी की ही समझ मे आ सकती थी।

ऑपरेटर लडकिया अभी जवान थी, मगर अभी उन्होने बीस किलोमीटर से ज्यादा फीता न टपटपाया होगा जब कि उनके बगल का बुड्ढा तार बाबू दो सौ किलोमीटर से ज्यादा कर चुका था। अपने नौजवान साथियो की तरह उस बुड्ढे को तार से भेजा गया सदेश समझने के लिए उस फीते को पढना नही पडता था, न वह मुश्किल शब्दो और वाक्याशो की ही पहेली मे उलझता था, और न उसके माथे पर झुर्रिया ही पडती थीं। उसका ढग यह था कि शब्द पढता जा रहा था और मशीन टपटपाता जा रहा था। तभी उसके कान मे शब्द पडे, "सब के लिए, सब के लिए, सब के लिए!"

"बर्फ साफ करने के बारे मे कोई दूसरा सरकुलर होगा," बुड्ढे तार बाबू ने उन शब्दो को लिखते हुए अपने मन मे कहा। बाहर बर्फ का तूफान जोरो से चल रहा था जिससे कडी-कडी बर्फ आकर खिडकी से टकराती थी। तार बाबू ने सोचा कि खिडकी पर कोई दस्तक दे रहा है। उसकी आखें आवाज की ओर मुड गई और वह क्षण-भर के लिए खिडकी के शीशे पर बर्फ से बनी हुई आकृतियो को देखने लगा। कोई भी नक्काश पत्ती की ऐसी नक्काशी न कर सकता था।

उसके विचार इधर-उधर बहने लगे और थोडी देर के लिए उसने तार के आले को सुनना बन्द कर दिया। मगर थोडी ही देर बाद उसने निगाह नीची की और उन शब्दो को पढने के लिए, जिन्हे उसने बीच मे ही छोड दिया था, फीते की तरफ हाथ बढाया।

तार की मशीन ने ये शब्द लिखे थे

"२१ जनवरी की शाम को छ बज कर पचास मिनट पर "

तार बाबू ने जल्दी-जल्दी ये शब्द लिखे, फीते को नीचे रख दिया और अपने सिर को हाथ पर टिका कर आगे की बात सुनने लगा।

"कल गोर्की में मृत्यु हो गई " धीरे, धीरे उसने ये शब्द कागज पर उतार दिये। अपनी लम्बी जिन्दगी मे उसने न जाने कितने सदेश लिखे थे,

खुशी के सदेश और गम के सदेश, कितनी बार दूसरो के दर्द और दूसरो की खुशी की खबर उसी ने सबसे पहले सुनी थी। अपने काम के सिलसिले मे उसने न जाने कब से तार के उन छोटे मदेशो के अर्थ पर ध्यान देना छोड दिया था। उसका तो काम बस इतना था कि ध्वनियो को पकडे और मशीन की तरह उनको कागज पर उतार दे।

यह भी किसी की मौत की खबर थी और किसी को इसकी सूचना दी जा रही थी। तार बाबू को शुरू के वे शब्द "सबके लिए, सबके लिए, सबके लिए" भूल गये। मशीन ने टिक् टिक् करके "व्लादीमीर इलिच" लिखा और बुड्ढे तार बाबू ने उनको अक्षरो मे उतार दिया। उसके ऊपर कोई असर नही हुआ, बस थोडी-सी थकान मालूम हुई। व्लादीमीर इलिच नाम का आदमी कही मर गया था और किसी को दुख की यह खबर मिलेगी, दर्द की एक चीख किसी के सीने से निकलेगी मगर उसको इससे क्या? मशीन डेश-डॉट-डेश-डॉट बोलती जा रही थी। अपनी उस सुपरिचित ध्वनि मे से तार बाबू ने पहला अक्षर पकडा और उसे तार के फारम पर लिखा। यह अंग्रेजी का "एल" था। फिर दूसरा अक्षर था "ई"। उसके बाद ही उसने लिखा "एन" फिर जल्दी ही जोडा "आई", फिर आखिरी अक्षर लिखा "एन"।

इसके बाद मशीन ने विराम दिया और क्षण भर के लिए तार बाबू की आखें अपने लिखे हुए शब्द "लेनिन" पर ठहर गईं।

मशीन टपटपाती रही, मगर अब वह परिचित नाम तार बाबू की चेतना मे दाखिल हुआ। उसने एक बार फिर उस सन्देश के आखिरी शब्द पर निगाह डाली "लेनिन"। क्या? लेनिन? तार की सारी इबारत उसके मन मे बिजली की तरह कौंध गई। वह तार के फारम को घूरता हुआ बैठा रहा और अपने काम की बत्तीस बरस की जिन्दगी मे पहली बार वह अपने लिखे हुए शब्दो का विश्वास नही कर सका।

उसने तीन बार उस लाइन पर जल्दी-जल्दी निगाह दौडाई, मगर वे शब्द जरा भी नही बदले "व्लादीमीर इलिच लेनिन की मृत्यु हो गई।" बुड्ढा उछल कर खडा हो गया, उसने फीते को उठा लिया और उसको ऐसे घूरने लगा जैसे उसमे छेद कर देगा। जिस बात का विश्वास करने से वह इनकार कर रहा था, उस पर कागज के उस टुकडे ने तसदीक की मुहर लगा दी थी। उसका चेहरा ऐसा जर्द पड गया जैसे उसमे जान ही न बाकी हो। वह अपने दूसरे साथियो की तरफ मुडा और उसकी चीख उनके कानो मे पडी: "लेनिन मर गए!"

इस भयानक मृत्यु की खबर तार घर के खुले हुए दरवाजे मे से निकली और आधी की तरह स्टेशन मे फैल गई और तूफान के डैनो पर सवार होकर

रेल की पटरियो और स्विचो से जाकर टकराई और बर्फ के तूफान के साथ-साथ रेलवे वर्कशाप के बर्फ से ढके हुए फाटको को चीरती हुई अदर घुस गई।

मरम्मत करने वाले कुछ मजदूर पहले से ही पिट पर खडे हुए एक इजन की मरम्मत कर रहे थे। बूढा पोलेन्तोव्स्की खुद अपने इजन के नीचे घुस कर उन जगहो को बतला रहा था जिनमे गडबडी थी। जखार, ब्रुजाक और आर्तेम आविशदान की मुडी हुई लोहो की सलाखो को सीधा कर रहे थे। जखार उसको निहाई पर रखे हुए था और आर्तेम हथौडा चला रहा था।

जखार अधेड हो गया था। पिछले कुछ सालो ने उसके माथे पर गहरी झुर्रिया डाल दी थी और उसकी कनपटी के बाल सफेद हो चले थे। उसकी कमर झुक गई थी और उसकी गढे मे धसी हुई आखो मे स्याही थी।

दरवाजे मे खडे हुए किसी आदमी की छायाकृति क्षण-भर के लिए दिखाई दी और फिर रात का अधेरा उसको निगल गया। लोहे पर हथौडो की चोटो ने उसकी पहली चीख को दुबा दिया, मगर जब वह इजन पर काम करते हुए आदमियो के पास पहुचा तो आर्तेम के हाथ का हथौडा उठा का उठा रह गया।

"साथियो ! लेनिन मर गये !"

हथौडा धीरे-धीरे आर्तेम के कधे से नीचे आ गया और उसके हाथो ने खामोशी से उसको नीचे ककरीट के फर्श पर रख दिया।

"क्या हुआ ? तुमने क्या कहा ?" कहते हुए आर्तेम ने यह भयानक खबर लाने वाले आदमी की चमडे की जाकट को पागल की तरह झटके से पकड लिया।

और उसने हाफते हुए, बर्फ से ढके हुए, अपनी धीमी, टूटी हुई आवाज में दुहराया ·

"हा साथियो, लेनिन मर गये !"

और चूकि उस आदमी ने बात धीरे से कही थी, इसलिए आर्तेम ने समझ लिया कि यह भयानक खबर जरूर सही होगी। कुछ देर बाद उसने इस आदमी को पहचाना। यह स्थानीय पार्टी सगठन का मत्री था।

इजन की मरम्मत करने वाले मजदूर पिट मे से कूद कर बाहर आये और उन्होने मौन होकर उस आदमी की मौत की खबर सुनी जिसका नाम सारी दुनिया मे गूज रहा था।

फाटक के बाहर कही एक इजन सीटी दे रहा था, जिसे सुन कर ये लोग काप गये। इजन की इस दर्द मे डूबी हुई आवाज के बाद वैसी ही आवाज दूर पर एक और इजन ने की, उसके बाद एक और ने। उनकी इस आवाज मे बिजलीघर के साइरेन ने योग दिया। साइरेन की आवाज बुलन्द और बम

के उडते हुए छर्रों की तरह तेज और चुभने वाली थी। फिर ये आवाजें जरा देर बाद कीव के लिए रवाना होने वाली मुसाफिर गाडी के खूबसूरत "एस" इजन की भारी गूजती हुई आवाज मे डूब गईं।

खुफिया का आदमी चौंक गया जब शेपेतोवका-वार्सा एक्सप्रेस के पोलिश इजन के ड्राइवर ने इजनों की इन सीटियो का कारण जानने पर, कान लगा कर उसको सुना और फिर धीरे-धीरे अपना हाथ उठा कर सीटी की रस्सी को खींचा। वह जानता था कि यह आखिरी बार उसको ऐसा करने का मौका मिल रहा है, इसके बाद उसे फिर कभी यह गाडी चलाने को न मिलेगी। मगर उसके हाथ ने सीटी के तार को न छोडा और उसके इजन की चीख ने पोलिश दूतो और कूटनीतिज्ञो को चौंका कर उन्हे अपने नरम कोचो से उठा दिया।

रेलवे के हाते में लोगो की भीड जमा थी। वे तमाम फाटकों के अन्दर चले आ रहे थे और जब वह विशाल इमारत ठसाठस भर गई, तो शोक सभा निस्तब्ध शान्ति के वातावरण में आरम्भ हुई। पार्टी की शेपेतोवका एरिया कमिटी के मत्री, पुराने बोल्शेविक शराब्रिन ने तकरीर की।

"साथियो! लेनिन, दुनिया भर के मजदूरो के नेता लेनिन मर गये। पार्टी की अपूरणीय क्षति हुई है क्योंकि वह आदमी उठ गया जिसने बोल्शेविक पार्टी का निर्माण किया और उसको दुश्मनो के प्रति निर्मम होना सिखलाया .. हमारी पार्टी और हमारे वर्ग के नेता की मृत्यु मजदूर वर्ग की सर्वोत्तम सन्तानों के लिए एक पुकार है कि वे आकर हमारी पार्टी मे शामिल हो .. ।"

शोक सगीत की धुनें गूज उठी। वहा पर उपस्थित उन सैकडो लोगो ने अपनी टोपिया उतार ली और वह आर्तेम जो पन्द्रह बरस से नही रोया था, उसको लगा कि जैसे दर्द से उसका गला घुट रहा है और उसके वे मजबूत चौडे कधे हिल उठे।

आदमियों की भीड के दबाब से रेलवे मजदूरों के क्लब की दीवारें भी मानो कराह रही थीं। बाहर बडी सख्त सर्दी थी, हॉल के दरवाजे के पास खडे हुए दो लम्बे-लम्बे फर के दरख्त बर्फ का लबादा पहने खडे थे। मगर हॉल के अन्दर अगीठियों और छ सौ लोगो की सासों के कारण घुटन महसूस हो रही थी। ये छ सौ लोग पार्टी द्वारा बुलाई हुई इस शोक-सभा मे आये थे।

हॉल मे कही बातचीत की भुनभुनाहट नही थी। गहरे दर्द ने लोगो की आवाजें रूध दी थी और वे एक-दूसरे से धीरे-धीरे फुस-फुसा कर बातें कर रहे थे और उन तमाम सैकडो लोगो की आखो मे दुख और चिन्ता के भाव थे। वे एक ऐसी किश्ती के मल्लाह थे जिसकी पतवार चलाने वाला तूफान में ही उनसे बिछुड गया था।

ब्यूरो के मेम्बरो ने शान्ति से मच पर आसन ग्रहण किया। मोटे-तगडे सिरोतेंको ने सावधानी से घटी उठायी, धीरे से उसको बजाया और वापिस मेज पर रख दिया। इतने ही से हॉल मे शान्ति छा गयी।

मुख्य भाषण के बाद पार्टी सगठन का मत्री सिरोतेंको बोलने के लिए उठा। और यद्यपि उसने जो घोषणा की, वह शोक सभा के लिए कुछ असाधारण ही थी, मगर किसी को उससे आश्चर्य नही हुआ।

उसने कहा, "कई मजदूरो ने इस सभा से माग की है कि वह पार्टी मेम्बरी की अर्जी पर विचार करे। इस अर्जी पर सैंतीस साथियो के हस्ताक्षर हैं।" और उसने वह अर्जी पढकर सुना दी

> "दक्षिण-पश्चिम रेलवे शेपेतोवका स्टेशन की बोल्शेविक पार्टी के रेलवे सगठन की सेवा मे।
>
> "हमारे नेता की मृत्यु हमारे लिए पुकार है कि हम बोल्शेविक पार्टी मे शामिल हो। और हम इस सभा से अनुरोध करते है कि वह इस बात पर विचार करे कि हम लेनिन के पार्टी के सदस्य होने के योग्य हैं या नही।"

इस छोटे से वक्तव्य पर दो कालम भर कर हस्ताक्षर थे।

सिरोतेंको ने उन्हें पढ कर सुना दिया और हर नाम के बाद वह थोडी देर के लिए रुक जाता था ताकि श्रोताओ को वह नाम याद हो जाय।

"स्तानिस्लाव जिग्मन्दोविच पोलेनताव्स्की, इजन ड्राइवर, छत्तीस साल की सर्विस।"

हॉल मे समर्थन की ध्वनि गूज गयी।

"आर्तेम आन्द्रीएविच कोर्चागिन, मेकेनिक, सत्रह साल की सर्विस।"

"जखार फिलिप्पोविच ब्रुजाक, इजन ड्राइवर, इक्कीस साल की सर्विस।"

मच पर बैठा हुआ वह आदमी जैसे-तैसे गठीले हाथो वाले और रेलवे मजदूरो की बिरादरी के पुराने तपे हुए लोगो के नाम पुकारता जाता था, वैसे-वैसे हॉल मे शोर बढता जाता था।

मगर फिर शाति छा गई जब पोलेनताव्स्की, जिसका नाम सूची मे सबसे पहले था, आकर सभा के सामने खडा हुआ।

अपनी जिन्दगी की कहानी सुनाते समय उसके मन मे जो उद्वेग था, उसको वह बुड्ढा इजन ड्राइवर छिपा नही सका।

" मैं आपको क्या बतलाऊ साथियो ? आप सभी जानते हैं कि उन दिनो मे हम मजदूरो की जिन्दगी कैसी थी। मैंने जिन्दगी भर गुलाम की तरह मेहनत की, फिर भी बुढापे मे आकर मैं भिखमगे का भिखमगा ही रहा। जब

क्राति आई तो मुझे यह कहने में सकोच नही है कि मैं अपने को गिरस्ती की परेशानियो के बोझ से दवा हुआ एक बुड्ढा आदमी समझता रहा और पार्टी के अन्दर नही आया । और गोकि मैंने कभी दुश्मन का साथ नही दिया, फिर भी खुद सघर्ष मे मैंने कम ही भाग लिया। १९०५ में मैं वार्सा मे मोटर के कारखाने मे हडताल कमिटी का मेम्बर था और बोल्शेविको के साथ था। तब मैं जवान था और मुझ मे लडने की शक्ति थी। मगर अब उन बीती बातो को याद करने से क्या फायदा। इलिच के मरने से मेरे दिल पर भारी धक्का सा लगा है, हमने अपना दोस्त और साथी खो दिया है और आज यह आखिरी बार मैं अपने बुड्ढे होने की बात कह रहा हू। मैं समझ नही पा रहा हू कि कैसे अपनी बात कहू, क्योकि मुझे कभी भाषण देना नही आया। मगर मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हू कि मेरा रास्ता बोल्शेविको का रास्ता है, दूसरा कोई रास्ता नही है।"

उस इजन ड्राइवर ने अपने पके बालो वाले सर को झटका दिया और उसकी सफेद भवों के नीचे उसकी आखें श्रोताओ को दृढता से देखती रही जैसे उनके फैसले का इतजार कर रही हो।

उस छोटे से पके बालो वाले आदमी की अर्जी के खिलाफ विरोध की एक भी आवाज नही उठी और सब लोगो ने वोट दिया। इस वोट मे गैर-पार्टी लोगो को भी शरीक किया गया।

पोलेनताव्स्की जब सभापति मडली की मेज से हटा, तो वह कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर था।

हर आदमी समझ रहा था कि कोई ऐतिहासिक बात हो रही है। अब उस इजन ड्राइवर की जगह विशालकाय आर्तेम खडा था। उस मेकेनिक की समझ मे नही आ रहा था कि अपने हाथो का क्या करे, लिहाजा वह बार-बार अपनी खूब बालों वाली फर की टोपी को तान रहा था। उसकी भेड की खाल की जाकट, जिसके सिरे एकदम घिस गए थे, खुली हुई थी। मगर उसकी भूरी फौजी वर्दी के गले तक पहुचने वाले कालर मे पीतल के दो बटन लगे हुए थे, जिससे उसकी आकृति बडी चुस्त-दुरुस्त नजर आ रही थी, जैसी छुट्टी के दिन अच्छे-अच्छे कपडों के पहनने पर नजर आती है। आर्तेम हॉल की ओर मुडा और उसे एक परिचित स्त्री के चेहरे की झलक मिली। यह राजगीर की लडकी गालिना थी जो अपनी दर्जिन साथियो के साथ वहा बैठी हुई थी। वह उसे सहानुभूतिपूर्ण मुस्कराहट की आखो से देख रही थी और उस मुस्कराहट मे आर्तेम ने समर्थन पाया, और और भी कुछ जिसे शब्दो मे रख सकना उसके लिए सभव न था।

उसने सिरोतेंको को कहते सुना, 'लोगो को अपने बारे मे बतलाओ आर्तेम।"

मगर आर्तेम के लिए अपनी कहानी शुरू करना आसान न था। ऐसी बडी सभा में बोलने का वह आदी न था और उसने एकाएक महसूस किया कि जिंदगी ने जो कुछ उसके अदर भर दिया था, उन सबको व्यक्त करना उसकी शक्ति के बाहर था। शब्दो के लिए वह अटक रहा था और अपनी घबराहट के कारण ही बोलने मे उसे और भी मुश्किल हो रही थी। इसके पहले उसने कभी ऐसा नही महसूस किया था। उसको इस बात की तीक्ष्ण चेतना थी कि वह किसी बडे परिवर्तन के मोड पर खडा है, कि वह एक ऐसा कदम उठाने जा रहा है जो उसकी कठोर, ऐंठी हुई, घुटी हुई जिंदगी मे गरमाहट भर देगा और उसकी जिंदगी फिर बेमानी न रह जायगी।

आर्तेम ने शुरू किया, "हम लोग चार आदमी थे।"

हॉल मे शांति थी। छ सौ लोग उत्सुकता से इस टेढी नाक वाले लम्बे मजदूर को सुन रहे थे, जिसकी आखें घनी भवो के नीचे छिपी हुई थी।

"मेरी मा अमीर लोगो के घरो मे रसोई पकाया करती थी। मुझे अपने बाप की कुछ खास याद नही है, उसमे और मेरी मा मे नही बनती थी। वह बहुत ज्यादा शराब पीता था। इसलिए मेरी मा को ही हम बच्चो की देखभाल करनी पडती थी। इतने लोगो के खाने का इतजाम करना उसके लिए आसान न था। सबेरे से लेकर रात तक वह बैल की तरह काम मे जुटी रहती थी और इसके लिए उसे महीने मे चार रूबल और खाना मिलता था। मैं इतना खुशकिस्मत था कि मुझे दो साल स्कूल मे पढने का मौका मिला। उन्होने मुझे पढना-लिखना सिखाया। मगर मैं जब नौ साल का हुआ तो मेरी मा के सामने इसके अलावा कोई रास्ता न था कि मुझे ले जाकर एक कारखाने मे भर्ती करा दे। तीन साल तक मैंने सिर्फ खाने पर काम किया उस कारखाने का मालिक फेस्टर नाम का एक जर्मन था। पहले वह मुझे लेना न चाहता था, क्योकि मैं बहुत छोटा था। मगर मैं बहुत तगडा था और फिर मेरी मा ने मेरी उम्र दो साल बढा कर बतलाई थी। तीन साल तक मैंने उस जर्मन के लिए काम किया मगर कोई काम न सीख सका क्योकि मुझे घर की सेवा-टहल के काम करने पडते थे और दौड-दौड कर वोदका लानी पडती थी। मेरा मालिक बुरी तरह पीता था.. वह मुझे कोयला और लोहा लाने के लिए भी भेजता।.. मालकिन ने तो मुझे बिलकुल गुलाम ही बना लिया था मुझे आलू छीलने पडते, बर्तन धोने पडते। अक्सर मार पडती और खामखाह, क्योकि उनको मारने की आदत पडी हुई थी। अगर मैं अपनी मालकिन को खुश न कर सकता, तो वह कस कर मेरे मुह पर थप्पड मारती और उसकी हालत यह थी कि अपने पति के पीने के कारण वह हमेशा गुस्से मे भरी बैठी रहती थी। मैं उससे भाग कर सडक पर पहुच जाता, मगर कहा जाता, किससे

शिकायत करता ? मेरी मा चालीस मील दूर थी और फिर मुझे वह अपने पास रख भी तो नही सकती थी...और कारखाने में भी तो हालत कुछ बेहतर न थी। मालिक के भाई उसके इचार्ज थे। बडा सूअर आदमी था वह। उसे मुझको तग करने मे मजा आता था। कभी वह मुझसे कहता, 'ए छोकरे, वह वाघर तो उठा ला,' और कोने मे भट्ठी की तरफ इशारा करता। मैं दौड कर जाता और वाघर को उठा लेता और जोर से चीख पडता क्योंकि वह ताजा-ताजा भट्ठी से निकल कर पडा होता, और गोकि जमीन पर पडा हुआ वह काला नजर आता, मगर छूते ही आग लग जाती। और तब मैं दर्द से चीखता खडा होता और उसके पेट मे हसते-हसते बल पड जाते। मैं यह तकलीफ बर्दाश्त न कर सका और भाग कर अपने घर मा के पास चला गया। मगर वह समझ नही पाती थी कि मेरा वह क्या बदोबस्त करे, लिहाजा वह फिर मुझे एक जर्मन के यहा ले गई। मुझे याद है, वह पूरे रास्ते रोती गई। कही तीसरे साल जाकर उन्होने मुझको कुछ-कुछ काम सिखलाना शुरू किया, मगर मार-पीट बदस्तूर चलती रही। मैं फिर भाग गया और इस बार स्तारोकोन्स्तान्तिनोव पहुचा। वहा मुझे एक सॉसेज के कारखाने मे काम मिल गया और मैंने डेढ साल डब्बे धोने के पीछे बरबाद किये। फिर हमारे मालिक ने जुए के पीछे कारखाने को तबाह कर दिया, चार महीने तक हमे एक कौडी भी न दी और गायब हो गया। इस तरह मैं उस खदक मे से निकला। तब मैंने अमेरिका की गाडी पकडी और वहा काम ढूढने निकला। सयोग से वहा पर मुझे एक रेलवे मजदूर मिला जिसे मुझ पर दया आई। जब मैंने उसको बतलाया कि मैं थोडा-बहुत मेकेनिक का काम जानता हू, तो वह मुझको अपने मालिक के पास ले गया और बोला कि यह मेरा भतीजा है और मुझे काम देने की सिफारिश की। मेरा डील-डौल ऐसा था कि उन्होने मुझको सत्रह साल का समझा और इस तरह मुझे एक मैकेनिक के मददगार का काम मिल गया। जहा तक मेरे मौजूदा काम का ताल्लुक है, मैं आठ साल से यहा काम कर रहा हू। अपनी पिछली जिन्दगी के बारे मे इससे ज्यादा मुझे कुछ नही कहना है। यहा की मेरी जिन्दगी के बारे मे आप सब जानते ही हैं।"

आर्तेम ने अपनी टोपी से माथा पोछा और एक लम्बी सास ली। अभी तक उसने खास बात नही कही थी। और इसी को कहना सबसे कठिन काम था, मगर कहना तो था ही और कोई वह अनिवार्य सवाल पूछ बैठे इसके पहले ही कहना था। लिहाजा अपनी घनी भवो मे बल डालते हुए उसने अपनी कहानी को जारी रखा

"आप सबको मुझसे यह सवाल पूछने का हक है कि मैं क्राति के पहले दिनो मे बोल्शेविक पार्टी मे क्यो नही शरीक हुआ ? आप मुझसे यह सवाल

पूछ सकते हैं। मगर मैं इसका क्या जवाब दू ? अभी मैं बुड्ढा तो हुआ नही, तब नही तो अब सही। मगर सवाल यह है कि अब तक मुझे यह रास्ता क्यो नही दिखाई दिया ? मैं सीधे-सीधे बात करूगा, क्योकि मेरे पास छिपाने को कुछ नही। वह रास्ता हमे दिखाई नही दिया और यह हमारी ही गलती थी। हमे १९१८ मे ही इस रास्ते को पकडना चाहिए था जब हमने जर्मनो के खिलाफ बगावत की थी। मल्लाह ज़ुखराई ने हमसे बहुत बार यही बात कही। १९२० आकर ही मैंने पहली बार राइफिल उठाई। तूफान के खतम होने पर और श्वेत रूसियो को काले सागर मे ढकेल कर हम लोग लौट आये। उसके बाद फिर परिवार, बच्चे मैं घर-गृहस्थी मे एकदम उलझ गया। मगर अब जबकि कामरेड लेनिन नही हैं और पार्टी ने हमको पुकारा है, तो मैंने पीछे मुडकर अपनी जिन्दगी को देखा है और समझ रहा हू कि उसमे किस चीज की कमी ॰ । अपने राज की हिफाजत करना ही काफी नही है, हमे लेनिन की जगह एक बडे परिवार की तरह एकता की मजबूत डोर मे बध कर रहना है ताकि सोवियत राज फौलाद के पहाड की तरह मजबूती से खडा रहे और उसे कोई हिला न सके। हमको बोल्शेविक बनना ही है। यही हमारी पार्टी है, या मैं झूठ कहता हू ?"

इन्ही सीधे-सादे शब्दो से मगर गहरी ईमानदारी से मेकेनिक आर्तेम ने अपनी बात कही। और जब उसकी बात खतम हुई, तो जहा उसे थोडी-थोडी लाज भी लग रही थी कि वह कैसे यो धारा-प्रवाह बोलता गया, वहा उसे यह भी महसूस हुआ कि जैसे उसके कधे पर से कोई भारी बोझ उतर गया और अच्छी तरह तनकर खडे होते हुए वह आनेवाले सवालो का इतजार करने लगा।

"कोई सवाल ?" सिरोतेंको की आवाज ने शाति को भग किया।

उपस्थित लोगो मे खलबली-सी मची, मगर किसी ने पहले सभापति की बात का जवाब नही दिया। तब एक फायरमैन, जो सीधे अपने इजन से चला आ रहा था और कालिख की तरह काला हो रहा था, निश्चयात्मक स्वर मे बोला

"पूछने को क्या है ? हम उसे जानते नही क्या ? उसे पार्टी मे ले लो और क्या !"

लुहार गिलियाका का चेहरा गर्मी और आवेश से लाल हो रहा था। उसने अपनी फटी हुई आवाज मे चिल्ला कर कहा

"यह बिलकुल ठीक ढग का कामरेड है, कभी गद्दारी नही करेगा। तुम उस पर भरोसा कर सकते हो। वोट ले लो सिरोतेंको !"

हॉल के पिछले हिस्से मे से, जहा कोमसोमोल बैठे हुए थे, और जो उस अधेरे मे दिखाई नही दे रहा था, कोई उठा और बोला

"कामरेड कोर्चागिन बतलाएं कि उन्होंने क्यों किसानी जीवन अपनाया है और कैसे उसका मेल मजदूर मनोवृत्ति के साथ बिठाते हैं।"

हाल में नाराजगी की एक हलकी-सी भुनभुनाहट पैदा हुई और किसी ने एतराज करते हुए कहा :

"तुम ऐसे क्यों नहीं बोलते जिससे सीधे-सादे लोग भी तुम्हारी बात समझ सकें ? खूब वक्त चुना तुमने भी काबलियत बघारने के लिए...।"

मगर आर्तेम ने जवाब देना शुरू कर दिया था :

"यह बिलकुल ठीक बात उसने पूछी है, कामरेड। उसने बिलकुल ठीक कहा है कि मैंने किसानी जीवन अपना लिया है। मगर मैं कहना चाहता हूं कि मैंने अपने मजदूर विवेक के साथ विश्वासघात नहीं किया है। बहरहाल, आज से वह चीज खतम हो गई। मैं अपने परिवार को रेलवे यार्ड के और पास ले आ रहा हूं। यहां ज्यादा अच्छा रहेगा। वह मनहूस खेत बहुत दिन से मेरे गले में फंसता रहा है।"

एक बार फिर आर्तेम का दिल कांपा जब उसने अपने समर्थन में उठे हुए हाथों के उस जंगल को देखा, और सिर ऊंचा करके जब वह आकर अपनी सीट पर बैठा तो उसे ऐसा लग रहा था जैसे उड़ा जा रहा हो। अपने पीछे उसने सिरोतेंको को ऐलान करते सुना : "सर्वसम्मति से पास।"

मंच पर खड़ा होने वाला तीसरा आदमी पोलेनताव्स्की का पहले का मददगार जखार ब्रुजाक था। यह खामोश तबियत का बुड्ढा आदमी खुद बहुत दिनों से इंजन ड्राइवर था। उसने जब अपनी मेहनत की जिन्दगी का वर्णन खतम किया और कहानी को उस दिन तक ले आया, तो उसकी आवाज धीमी पड़ गयी और वह धीमे-धीमे बोलता रहा, पर इतने धीमे नहीं कि लोग उसकी बात सुन न सकें :

"मेरे बच्चों ने जो चीज शुरू की, उसको पूरा करना मेरा कर्तव्य है। उनको हरगिज यह बात पसन्द नहीं होती कि मैं अपने दर्द को लेकर एक कोने में मुंह छिपाये पड़ा रहूं। इस चीज के लिए उन्होंने जान नहीं दी। उनके मर जाने से जो कमी हो गयी है, अब तक मैंने उस कमी को पूरा करने की कोशिश नहीं की है। मगर हमारे नेता लेनिन की मृत्यु से मेरी आंखें खुल गयी हैं। मुझको अपने पिछले जमाने की जवाबदेही करने के लिए न कहो। आज से हमारी नयी जिन्दगी शुरू होती है।"

जखार के दिल में दर्द से भरी हुई यादें घुमड़ रही थीं, उसके चेहरे पर मानो बादल सा छा गया था, मगर उसका चेहरा कठोर था। लेकिन जब उसको पार्टी में लेने के समर्थन में हाथों का एक समुन्दर लहराया, तो उसकी आंखें चमकने लगीं और उसका पके बालों वाला सिर गर्व से तन गया।

नये लोगो को पार्टी मे लेने की यह कारंवाई बहुत रात गये तक चलती रही। सबसे अच्छे और ऐसे लोग ही लिए गये, जिन्हे सब लोग जानते थे और जिनके जीवन मे कही कोई धब्बा न था।

लेनिन की मृत्यु ने लाखो मजदूरो को बोल्शेविक बनाया। नेता चला गया, मगर पार्टी बदस्तूर कायम रही, उसमे कही कोई कमजोरी नही आई। कोई दरख्त जिसकी विशाल जडे धरती मे मजबूती के साथ गडी होती है, उसके सिरे को अगर काट भी दिया जाय, तब भी वह मरता नही।

१२ पन्द्रह

होटल के कसर्ट हॉल के दरवाजे पर दो आदमी खडे थे। उनमे लम्बा वाला नाक के ऊपर ठहरा हुआ चश्मा लगाये था और उसकी बाह मे एक लाल फीता बधा था जिस पर लिखा था "कमाडेट।"

रिता ने पूछा, "उक्रेन के डेलीगेशन की मीटिग यही हो रही है ?"

उस लम्बे आदमी ने सर्द शिष्टाचार के स्वर मे जवाब दिया, "हा। आपको क्या काम है कामरेड ?"

वह लम्बा आदमी रास्ते को रोक कर खडा हो गया और रिता को ऊपर से लेकर नीचे तक देखने लगा।

"आपके पास डेलीगेट कार्ड है ?"

रिता ने अपना कार्ड पेश कर दिया जिस पर सुनहले अक्षरो मे लिखा था "केन्द्रीय समिति की सदस्य।" उसको देखते ही उस आदमी का वर्ताव फौरन बहुत नम्र और मीठा हो गया।

"अन्दर चलिए कामरेड, आपको उधर बाई तरफ कुछ खाली सीटें मिल जायेंगी।"

रिता गई और एक खाली सीट पर जाकर बैठ गई।

स्पष्ट ही मीटिंग खतम होने जा रही थी क्योकि सभापति का अन्तिम भाषण चल रहा था। उसकी आवाज रिता को परिचित लगी।

"अखिल रूसी काग्रेस की कौंसिल का निर्वाचन हो गया। काग्रेस की कारंवाई दो घटे मे शुरु होगी। इस बीच मैं आपकी इजाजत से डेलीगेटो की फेहरिस्त को एक बार फिर दुहरा देना चाहता हू।"

यह अकिम था ! रिता ध्यानावस्थित होकर सुनती रही और वह फेहरिस्त को जल्दी-जल्दी पढ रहा था। हर डेलीगेट अपना नाम पुकारे जाने पर अपना लाल या सफेद पास लेकर हाथ उठाता था।

तभी रिता ने एक परिचित नाम सुना पाक्रातोव।

एक हाथ तेजी से उठा। रिता ने मुडकर उसको देखा मगर बीच मे इतनी कतारें थीं कि वह उस मल्लाह का चेहरा न देख सकी। नामो का पढा जाना चलता रहा और फिर रिता ने एक परिचित नाम सुना—ओकुनेव और उसके बाद एक और, जार्की।

डेलीगेटो के चेहरो को गौर से देखते हुए उसकी नजर जार्की पर पडी। वह उससे थोडी ही दूर पर बैठा हुआ था और उसका चेहरा आधा उसी की तरफ मुडा हुआ था। हा, यह वान्या ही था। वह उस चेहरे को लगभग भूल ही गई थी। उसको देखे कई बरस भी तो बीत गये थे।

नाम पुकारे जाते रहे। और तब अकिम ने एक नाम पढा जिसे सुन कर रिता जोर से चौंक पडी .

"कोर्चागिन।"

दूर पर सामने की कतार मे एक हाथ उठा और गिरा और अजीब बात थी कि रिता उस्तिनोविच के मन मे उस आदमी के चेहरे को देखने की दारुण चाह हुई जिसका नाम वही था जो उसके बिछुडे हुए साथी का था। वह उस जगह से अपनी आख अलग न कर सकी, जहा से वह हाथ उठा था। मगर पीछे से सामने की कतार मे बैठे हुए सब लोगो के सिर एक-जैसे नजर आते थे। रिता उठ खडी हुई और बीच के रास्ते से सामने वाली कतारों की तरफ बढी। उसी वक्त अकिम ने नाम पढना खतम किया। लोगों ने जोर से अपनी कुर्सिया पीछे खिसकायी और हॉल आवाजो की भुनभुनाहट और नौजवानों की हसी से भर उठा। इस शोर मे अपनी बात लोगो के कानो तक पहुचाने के लिए अकिम ने चिल्ला कर कहा

"बोलशोय थियेटर सात बजे। देरी न हो !"

हॉल से निकलने के अकेले दरवाजे पर डेलीगेटों की भीड लग गई। रिता ने देखा कि इस भीड मे वह अपने किसी भी पुराने दोस्त को कभी न ढूढ सकेगी। अकिम के जाने के पहले उसी को पकडने की कोशिश करनी चाहिए, दूसरो को ढूढने मे उसी से मदद मिलेगी। तभी कुछ डेलीगेट दरवाजे की तरफ बढते हुए उसके पास से गुजरे और उसने किसी को कहते सुना

'अच्छा कोर्चागिन, अब हम लोगो को भी चलना चाहिए।"

और एक आवाज ने, जो इतनी परिचित थी और हमेशा याद रहने वाली, जवाब दिया

"हा, चलो।"

रिता झट से मुडी। उसके सामने एक लम्बा, दबे रग का नौजवान खाकी वर्दी और नीली बिजिस पहने खडा था। उसकी वर्दी मे एक पतली सी काकेशियन पेटी लगी हुई थी।

रिता ने आख फाड कर उसको देखा। फिर उसने उसकी बाहो को अपने गिर्द महसूस किया और उसकी कापती हुई आवाज को धीरे से कहते सुना "रिता," और वह जान गई कि यह पावेल कोर्चागिन ही था।

"तो अभी तुम जिंदा हो ?"

इन शब्दो से पावेल की समझ मे सारी बात आ गई। मतलब कि रिता को यह नही मालूम हुआ था कि उसकी मौत की खबर गलत थी।

हॉल बडी देर का खाली हो चुका था और त्वेस्कार्या का शोर-शराबा खुली हुई खिडकी मे से अन्दर आ रहा था। घडी ने छ बजाया। मगर उन दोनो को ऐसा लग रहा था कि जैसे अभी क्षण भर पहले मिले हो। मगर घडी की आवाज सुन कर उनको बोलशोय थियेटर का खयाल आया। सब चौडी सीढी से उतर कर रिता ने एक बार और पावेल को गौर से देखा। अब वह उससे काफी ऊचा हो गया था और ज्यादा परिपक्व और आत्मसयमी दीख पडता था। इसके अलावा पावेल मे कुछ भी नही बदला था और वह वही पुराना पावेल था।

रिता ने कहा, "मुझे देखो कि मैंने तुमसे यह भी नही पूछा कि कहा काम कर रहे हो ?"

पावेल ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "मैं कोमसोमोल की एरिया कमिटी का मत्री हू, दुबावा के शब्दो मे कलम-घिस्सू !"

"तुम उससे मिले हो ?"

"हा, और उस मुलाकात की मेरी याद बहुत कडवी है।"

वे सडक पर निकल आये। मोटरें जू-जू करती भागी जा रही थी और शोर करती भीड पक्के फुटपाथो पर जमा थी। थियेटर के रास्ते मे उनमे आपस में कोई बात नही हुई, एक ही से विचार दोनो के दिमागो मे भरे हुए थे। उन्होने जाकर देखा कि थियेटर बहुत से लोगो के एक तूफानी समुदर से घिरा हुआ है, जिसकी लहरें थियेटर की इमारत के पत्थरो से आ-आ कर टकरा रही हैं ताकि दरवाजो पर पहरा देते हुए लाल सैनिको के घेरे को तोड कर अदर घुस जायें। मगर सतरी सिर्फ डेलीगेटो को अदर आने दे रहे थे और वे अपने पास शान से दिखला कर अदर चले आते थे।

यह कोमसोमोल का समुदर था जो थियेटर को घेरे हुए था, नौजवानो का एक समुदर जिन्हे काग्रेस के उद्घाटन-समारोह का टिकट नही मिल पाया

था मगर जो किसी भी कीमत पर अदर घुसने पर तुले हुए थे। उनमे से कुछ नौजवान जो ज्यादा फुर्तीले थे, डेलीगेटो की टोली मे पहुच गये थे और कागज का कोई लाल टुकडा दिखला कर दरवाजे तक पहुचने मे कामयाब हुए थे। •

कुछ थोडे से वे लोग दरवाजे के अदर घुसने मे भी कामयाब हुए थे। मगर अदर पहुच कर उन्हे ड्यूटी पर तैनात केंद्रीय समिति के आदमी या कमाडेंट से डाट खानी पडती थी जो अतिथियो और डेलीगेटो को उनकी नियुक्त जगहे दिखला रहे थे। और फिर उन्हे बाहर निकाल दिया जाता था जिससे उन तमाम लोगो को, जिनके पास टिकट नही थे, अपार सतोप होता था।

जितने लोग उपस्थित होना चाह रहे थे, उनके दसाश लोगो के लिए भी थियेटर मे जगह नही थी।

रिता और पावेल बडी मुश्किल से हॉल के दरवाजे तक पहुचे। डेलीगेट लोग आते रहे, कुछ लोग ट्राम गाडी से आये, कुछ लोग मोटर से आये। वे सब दरवाजे पर इकट्ठा हो गये थे और लाल सैनिक, जो खुद भी कोमसोमोल थे, दीवार से चिपक कर खडे थे। उसी वक्त दरवाजे के पास भीड मे से एक शोर उठा

"बाउमान इस्टीच्यूट, यह चला!"

"चलो दोस्तो, हमारी जीत हो रही है!"

"हुर्रा!"

पावेल और रिता के साथ ही हॉल मे तेज आखो वाला एक लडका घुसा, जो कोमसोमोल का बैज लगाये हुए था और कमाडेंट की आख बचा कर थियेटर के बाहर वाले बडे कमरे की तरफ सीधे लपका। क्षण भर मे वह भीड मे खो गया।

रिता ने पीछे की कतार मे एक कोने की दो सीटो की तरफ इशारा करते हुए कहा, "आओ यहा बैठे।"

बैठने पर रिता ने कहा, "मै तुमसे एक सवाल पूछना चाहती हू। इसका ताल्लुक गुजरे हुए जमाने से है, मगर मुझे यकीन है कि तुम जवाब देने से इन-कार नही करोगे। बतलाओ तुमने क्यो उस वक्त हम लोगो का सग-सग पढना छोड दिया और हमारी दोस्ती तोड दी?"

और गोकि पावेल बडी देर से इस सवाल का इतजार कर रहा था, जब से रिता मिली थी तभी से, फिर भी इस सवाल से उसे परेशानी हुई। उनकी आखें मिली और पावेल ने देख लिया कि रिता असली कारण जानती है।

"मेरा खयाल है कि तुम खुद अपने सवाल का जवाब जानती हो रिता। यह चीज तीन बरस पहले हुई थी और अब मैं सिर्फ यह कह सकता हू कि उस

बात के लिए पावका की निन्दा करू । सच बात यह है कि कोर्चागिन ने अपनी जिन्दगी मे बहुत-सी छोटी-बडी भूलें की हैं । वह भी उन्ही मे से एक है ।"

रिता मुस्कराई ।

"भूमिका तो बहुत अच्छी है । मगर अब जवाब दो !"

पावेल ने धीमी आवाज मे शुरू किया, "इसमे दोष अकेले मेरा न था । इसमे गैड-फ्लाई का भी दोष था, उसके क्रातिकारी रोमास का । उन दिनों मुझ पर ऐसी किताबो का बडा गहरा असर था, जिनमे तपे हुए साहसी क्रातिकारियो का सजीव चित्रण होता था, ऐसे लोगो का जिन्होने अपने पवित्र लक्ष्य के लिए अपने को न्यौछावर कर दिया । ऐसे लोगों का मुझ पर बडा गहरा असर पडता था और मैं भी उन्ही की तरह बनना चाहता था । तुम्हारे प्रति मेरे मन के जो भाव थे, उन पर मैंने उस गैड-फ्लाई नाम की किताब का असर पडने दिया । अब वह बात बडी बेवकूफी की मालूम होती है और मेरे पास शब्द नही हैं कि मैं बतला सकू कि मुझे इस चीज के लिए कितना खेद है ।"

"तो तुमने उस किताब के बारे मे अपनी राय बदल दी है ?"

"नही रिता, बुनियादी तौर पर नही, लेकिन हा, इतना मैंने जरूर किया है कि अपनी इच्छाशक्ति की बार-बार परीक्षा लेने की कष्टदायी प्रक्रिया और उससे पैदा होने वाली अनावश्यक ट्रेजेडी की व्यर्थता को समझ लिया है । मैं अब भी उस किताब की सबसे अहम बातो का हामी हू, उसके साहस का, उसकी असीम सहन शक्ति का । मेरे नजदीक वह एक ऐसे आदमी का रूप है जो अपने दर्द को हर ऐरे-गैरे को दिखलाये बगैर मौन होकर अपनी पीडा को झेल सकता है । मैं उस तरह के क्रातिकारी होने का समर्थक हू जो पूरे समाज की जिन्दगी के सामने अपनी निजी जिन्दगी को कुछ नही समझता हो ।"

"कितने अफसोस की बात है पावेल कि तीन बरस पहले तुमने मुझे यह बात न बतलाई," रिता ने एक ऐसी मुस्कराहट के साथ कहा जिससे पता चल रहा था कि उसके विचार कही दूर भटक रहे हैं ।

"अफसोस की बात तुम इसीलिए कहती हो न रिता कि मैं तुम्हारे नजदीक कभी एक कामरेड से ज्यादा कुछ नही था ?"

"नही पावेल, तुम उससे ज्यादा बन सकते थे ।"

"मगर वह तो अब भी हो सकता है ।"

"नही कामरेड गैड-फ्लाई, अब बहुत देर हो गई ।"

रिता ने मुस्कराते हुए अपनी बात साफ की, "बात यह है कि अब मेरी एक छोटी-सी लडकी है । मैं उसके पिता को बहुत प्यार करती हू । हम तीनो मे बडी दोस्ती है और अभी तो तीनो अविभाज्य हैं ।"

उसकी उगलिया पावेल के हाथ को छू रही थी। पावेल के प्रति सहानुभूति से ही उसने ऐसा किया था, मगर फौरन ही उसने समझ लिया कि इस चीज की जरूरत नही है। हा, इन तीन सालो मे पावेल परिपक्व हुआ था और शारीरिक रूप से ही नही, मानसिक रूप से भी। उसकी आखो को देख कर रिता ने समझ लिया कि उसकी स्पष्टोक्ति से पावेल को कितनी चोट लगी है। मगर पावेल ने सिर्फ यह कहा

"जो कुछ मैंने अभी-अभी खोया है, उसके मुकाबले मे जो कुछ अभी मेरे पास बचा हुआ है, वह कही वडा है, कही ज्यादा।" और रिता ने समझा कि यह कोई खोखले शब्द नही हैं जो पावेल ने कहे हैं, यह तो सीधा-सादा सत्य है।

मच के पास जाकर बैठने का समय हो गया था। वे उठे और उस कतार की तरफ बढे जिनमे उक्रेन के डेलीगेशन के लोग बैठे हुए थे। बैंड बजने लगा। हॉल मे लगी हुई झडियो पर लिखा हुआ था, "भविष्य हमारा है!" हजारों लोग उस हॉल की सीटो पर बैठे हुए थे। ये हजारो लोग मिल कर एक विराट इकाई बन गये थे जिनमे अशेष उत्साह लहरें मार रहा था। देश के औद्योगिक मजदूरो की बिरादरी की श्रेष्ठतम नई सतानें यहा पर उपस्थित थी। हजारो आखो में सामने के भारी पर्दे के इन जलते हुए अक्षरो की प्रतिच्छाया चमक रही थी "भविष्य हमारा है!" और अब भी लोगो की भीड अन्दर चली आ रही थी। कुछ ही क्षण बाद वह मखमल का भारी पर्दा हट जायगा और फिर रूसी कम्युनिस्ट युवक सघ की केन्द्रीय समिति का मत्री इस महान अवसर पर क्षण भर के लिए उद्विग्न होकर घोषणा करेगा

"अब रूसी कम्युनिस्ट युवक सघ की छठी काग्रेस की कार्रवाई शुरू होती है।"

इसके पहले कभी पावेल कोर्चागिन को क्राति की महत्ता और शक्ति की ऐसी गहरी मार्मिक चेतना नही हुई थी और यह सोच कर उसका मन वर्णनातीत आनन्द और गर्व से भर उठा कि जिन्दगी उसे नौजवान बोल्शेविको की विराट रैली मे ले आई थी, उसको जो खुद भी एक सैनिक और निर्माता था।

भोर से लेकर बहुत रात तक उसका सारा समय काग्रेस मे चला जाता था। इसलिए कई दिन बाद, जब काग्रेस खतम होने आ रही थी और उसके आखिरी इजलास हो रहे थे, पावेल की रिता से दुबारा मुलाकात हुई। वह उक्रेनियनो के एक दल के साथ थी।

रिता ने उसको बतलाया, "काग्रेस खतम होते ही मैं कल चली जाऊगी। मैं नही जानती कि मुझे फिर तुमसे बात करने का मौका मिलेगा या नहीं और इसलिए मैंने अपनी डायरी की दो पुरानी नोटबुकें और एक छोटी-सी चिट्ठी

तुम्हारे लिए तैयार की है। उनको पढ लेना और पढ कर डाक से मुझे वापस भेज देना। वे तुम्हे वह सब कुछ बतला देंगी जो मैं तुम्हें नही बतला सकी।"

पावेल ने रिता का हाथ दबाया और बड़ी देर तक उसको देखता रहा जैसे उसके चेहरे को दिमाग मे पक्की तरह बिठा रहा हो।

अगले रोज वायदे के अनुसार वे दोनो बडे दरवाजे पर मिले और रिता ने उसको एक पैकेट और एक बद लिफाफा पकडा दिया। वे अकेले नही थे, उनके आस-पास और लोग थे, इसलिए उन्हे अपने ऊपर सयम रखते हुए एक-दूसरे से विदा होना पडा। मगर तब भी पावेल ने रिता की कुछ-कुछ आर्द्र आखो में एक गहरे ममत्व को पढा जिसमे दर्द भी मिला हुआ था।

अगले रोज उनकी गाडिया उन्हें अलग-अलग दिशाओ मे लेकर चली गई। जिस गाडी मे पावेल सफर कर रहा था, उसके कई डब्बो मे उक्रेन के डेलीगेशन के लोग थे। उसके कम्पार्टमेंट मे कीव के कुछ डेलीगेट थे। शाम को जब दूसरे मुसाफिर सो गये और पास की बर्थ पर ओकुनेव आराम से खर्राटे भरने लगा, तब पावेल ने लैम्प को पास सरकाया और चिट्ठी को खोला।

"पावेल, मेरे प्यारे पावेल! यह सब बातें मैं तुम्हे उस वक्त बतला सकती थी जब हम साथ थे। मगर इस तरह और अच्छा होगा। मैं सिर्फ एक बात की कामना करती हू कि कांग्रेस के पहले हम लोगो ने जो बातें की, उनके घाव का कोई निशान तुम्हारी जिन्दगी पर न रहे। मैं जानती हू कि तुम मजबूत आदमी हो और मैं यह भी जानती हू कि तुमने जो कुछ कहा था, उसको अच्छी तरह समझ-बूझ कर ही कहा था। जीवन के प्रति मेरा कोई बधा-टका दृष्टिकोण नही है। मैं समझती हू कि अपने व्यक्तिगत सम्बधो मे, चाहे कभी-ही-कभी, अपवाद किये जा सकते हैं बशर्ते कि वे एक सच्चे और गहरे प्यार पर आधारित हो। मैं तुम्हारे लिए यह अपवाद कर सकती थी, मगर मैंने जवानी के उस आवेश को ठुकरा दिया। मैं समझती हू कि ऐसा करने से हम दोनो मे से किसी को सच्चा सुख नही मिलेगा। मगर फिर भी मैं यह कहूगी पावेल, कि तुम्हे अपने साथ इतना कठोर न होना चाहिए। हमारी जिन्दगी मे केवल सघर्ष ही नही है, उसमे उस सुख के लिए भी जगह है जो सच्चे प्यार से मिलता है।

"जहा तक तुम्हारे जीवन के मूल अभिप्राय, उसके मर्म की बात है, मुझे उसके बारे मे किसी तरह की कोई शका नही है। मैं अपने हृदय के समस्त प्यार से तुम्हारे हाथ को अपने हाथ मे लेती हू।

—"रिता"

पावेल ने अपने विचार मे डूबे-डूबे उस चिट्ठी के टुकडे-टुकडे कर दिये। उसने खिडकी मे से हाथ निकाला और हवा उसके हाथ से कागज के उन टुकडो को उडा ले गई।

सवेरा होते-होते उसने रिता की डायरी की दोनो नोटबुकें पढ ली थी और उन्हें लपेट और बाध कर डाक मे छोडने के लिए तैयार कर दिया था। ओकुनेव, पाक्रातोव और दूसरे कुछ डेलीगेटो के साथ वह खारकोव मे गाडी से उतर पडा। ओकुनेव तालिया को ले आने के लिए कीव जा रहा था। तालिया वहा पर आना के साथ ठहरी हुई थी। पाक्रातोव उक्रेन की कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति का सदस्य चुना गया था। उसको भी कीव मे काम था। पावेल ने उनके साथ कीव जाने और वहा जाकर दुबावा और आना से मिलने का फैसला किया।

कीव स्टेशन के डाकघर मे रिता के पार्सल को छोड कर वह बाहर आया तो उसने देखा कि बाकी लोग जा चुके थे, इसलिए वह अकेला ही चल पडा। ट्राम आना और दुबावा के घर के सामने रुकी। पावेल सीढी चढ कर दूसरी मजिल पर पहुचा और बाईं तरफ आना के कमरे के दरवाजे पर दस्तक दी। कोई जवाब नही मिला। अभी तो काम पर निकल जाने का समय नही हुआ। "जरूर सो रही होगी," उसने सोचा। पास के कमरे का दरवाजा खुला और आखो मे नींद भरे दुबावा बाहर निकला। उसका चेहरा मुरझाया हुआ था और उसकी आख के नीचे नीले हल्के धब्बे थे। उसके शरीर से प्याज की तेज गध आ रही थी। और पावेल की तेज नाक को शराब की भी बदबू मिली। आधे खुले हुए दरवाजे मे से पावेल ने बिस्तर पर लेटी हुई किसी औरत की मासल जाघो और कधो की झलक पाई।

दुबावा ने पावेल को उधर देखते हुए पाकर पैर से धक्का देकर दरवाजे को बद कर दिया।

पावेल की आखो को बचाते हुए उसने फटी हुई आवाज मे पूछा, "तुम शायद कामरेड बोहार्ट से मिलने आये हो? अब वह यहा नही रहती। तुमको यह बात नही मालूम थी क्या?"

कोर्चागिन का चेहरा कठोर हो गया था। उसने दुबावा पर अपनी पैनी दृष्टि गडाई।

"नही, मुझे नही मालूम था। कहा चली गई?"

अचानक दुबावा के दिमाग का पारा गर्म हो गया।

उसने चिल्ला कर कहा, "मैं क्या जानू!" उसने डकार ली और दबे हुए झेंप के स्वर मे कहा "उसे ढाढस देने आये हो, है न? तुम ठीक मौके से आये हो, जो जगह खाली हुई है, उसको भर सकोगे। अब तुम्हारा मौका

है। फिक्र न करो, वह इनकार न करेगी। वह मुझे बहुत बार बतला चुकी है कि तुमको वह कितना चाहती है। जाओ जाओ, लोहा जब गरम हो, तभी उस पर घन की चोट मारनी चाहिए। ठीक अर्थों मे यही शरीर और आत्मा का मिलन होगा।"

पावेल ने महसूस किया कि उसके चेहरे पर खून उतरा आ रहा है। उसने बडी मुश्किल से अपने को वश मे किया और मद्धिम आवाज मे कहा

"अपनी यह तुम क्या गत बना रहे हो, मितियाई! मैंने कभी यह नही सोचा था कि तुम्हारा ऐसा पतन होगा। एक समय ऐसा भी था जब तुम खासे अच्छे आदमी थे। तुम क्यों अपने-आपको बर्बाद कर रहे हो ?"

दुबावा दीवार के सहारे टिक गया। स्पष्ट ही सीमेंट का फर्श उसके नगे पैरो को बहुत ठडा लग रहा था क्योंकि वह काप रहा था।

दरवाजा खुला और एक औरत का चेहरा दिखाई दिया। उसकी आखें सूजी हुई और गाल फूले हुए थे।

"अदर आ जाओ प्यारे, बाहर खडे क्या कर रहे हो ?"

उसके और कुछ कहने के पहले दुबावा ने दरवाजा झटके से बद कर दिया और टिक कर खडा हो गया।

"अच्छी शुरुआत है," पावेल ने कहा, "जरा देखो कैसे लोगो की सगत तुम कर रहे हो। इस चीज का अत कहा होगा ?"

मगर दुबावा अब और कुछ सुनने को तैयार न था।

उसने चीखते हुए कहा, "अब क्या तुम मुझे यह भी बतलाओगे कि मैं किसके साथ सोऊ और किसके साथ न सोऊ ? बहुत हो चुका, अब मुझे तुम्हारे और उपदेश की जरूरत नही है। जहा से आये हो, वही लौट जाओ। भागते हुए जाओ और सबसे जाकर कह दो कि दुबावा शराब पीने लगा है और बदचलन औरतो के साथ सोता है।"

पावेल उसकी ओर बढा और अपने मन के आवेग को दबाते हुए बोला

"मितियाई, उस औरत को भगा दो। मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हू, आखिरी बार . ।"

दुबावा का चेहरा काला पड गया। वह मुडा और बिना एक शब्द बोले अपने कमरे मे वापस चला गया।

"सुअर का बच्चा!" पावेल ने कहा और धीरे-धीरे सीढी से नीचे उतरने लगा।

दो साल गुजर गये। समय की निर्बाध गति से दिन और महीने बीतते जा रहे थे, मगर जिदगी मे रगो का मेला था जिससे उसकी दीख पडने वाली

एकरसता मे सदा कोई नवीनता रहती थी और दो दिन एक से न रहते थे। सोलह करोड जनता का यह महान राष्ट्र, धनधान्य से पूर्ण अपने विशाल देश के भविष्य को अपने हाथो मे लेने वाली ससार की पहली जनता, युद्ध से तहस-नहस आर्थिक व्यवस्था को ठीक करने के विराट काम मे लगी हुई थी। देश की शक्ति बढी, उसकी रगो मे नया उत्साह बढने लगा और अब कही भी ऐसे उजडे कारखाने नही थे जिनसे धुआ न उठता हो और जिन्हे देख दिल को तकलीफ होती हो।

पावेल के लिए वे दो साल अनवरत काम के प्रवाह मे तेजी से बीत गये। वह जिंदगी को आराम से बिताने वाला आदमी नही था कि नये दिन का स्वागत इतमीनान की एक जम्हाई से करता और दस का घटा बजते ही सोने के लिए बिस्तर पर पहुच जाता। उसकी जिंदगी की रफ्तार तेज थी और वह न खुद अपने को और न किसी दूसरे को एक भी क्षण बर्बाद करने देता था।

सोने के लिए उसने कम-से-कम वक्त दिया था। अक्सर उसकी खिडकी की रोशनी बहुत रात गये तक जलती रहती और कमरे के भीतर लोग एक मेज के इर्द-गिर्द बैठे हुए पढाई मे मशगूल नजर आते। इन दो सालो मे उन्होने "कैपीटल" के तीसरे खड का गहरा अध्ययन कर लिया था और पूजीवादी शोषण की सूक्ष्म कार्य-प्रणाली का चित्र अब उनके सामने बिलकुल स्पष्ट हो गया था।

जिस इलाके मे इन दिनो कोर्चागिन काम करता था, उसी मे राजवालिखिन भी आ गया था। उसको सूबा कमिटी ने इस सिफारिश के साथ वहा भेजा था कि उसे देहात के किसी कोमसोमोल सगठन का मत्री बना दिया जाय। राजवालिखिन जब आया तब पावेल कही बाहर गया हुआ था और उसकी अनुपस्थिति मे ब्यूरो ने राजवालिखिन को एक देहात मे भेज दिया। लौटने पर पावेल को यह खबर मिली और उसे सुन कर वह कुछ नही बोला।

महीने भर बाद पावेल एक रोज अचानक राजवालिखिन के देहात मे पहुच गया। वहा ज्यादा कुछ देखने को तो नही मिला, मगर जो कुछ मिला, वह काफी निन्दनीय था। नया मत्री शराब पीता था, उसने अपने इर्द-गिर्द खुशामदी लोगो को जमा कर लिया था और ईमानदार सच्चे सदस्यो की आगे बढ कर काम करने की प्रवृत्ति को दबा रहा था। पावेल ने यह चीज ब्यूरो के सामने रखी और जब मीटिंग ने यह प्रस्ताव रखा कि राजवालिखिन को कडाई से फटकार सुनाई जाय, तो पावेल ने उठ कर कहा

"मैं प्रस्ताव करता हू कि उसको सगठन से निकाल दिया जाय और यह एक अतिम निश्चय हो जिसकी कही भी सुनवाई न हो।"

पावेल के इस प्रस्ताव से दूसरे लोग हैरत मे आ गये। उनका ख्याल था कि यह सजा परिस्थिति को देखते हुए जरूरत से ज्यादा कडी है। मगर पावेल ने अपनी बात पर जोर दिया।

"उस बदमाश को निकाल देना ही चाहिए। उसे एक अच्छे इसान बनने के सारे मौके थे, मगर वह कोमसोमोल के अन्दर आज भी एक परदेसी बना हुआ है।" और पावेल ने ब्यूरो को वेरेजदोव वाली घटना के बारे मे बतलाया।

राजवालिखिन ने चिल्ला कर कहा, "मैं इसका प्रतिवाद करता हू। कोर्चागिन व्यक्तिगत झगडो के आधार पर ऐसा कह रहा है। उसकी बात मे कोई सार नही है। उससे कहिए कि अपने अभियोगों के समर्थन मे तथ्य पेश करे, कागजात पेश करे। मान लीजिए मैं आपके पास आकर यह कहू कि कोर्चागिन चोरी से माल लाता-ले-जाता है, तो क्या उसकी बिना पर आप कोर्चागिन को कोमसोमोल से निकाल देंगे? उसे लिखित प्रमाण देना चाहिए।"

कोर्चागिन ने जवाब दिया, "फिक्र न करो, मैं सारे जरूरी प्रमाण दूगा।"

राजवालिखिन कमरे से बाहर चला गया। आध घटे बाद पावेल ने ब्यूरो को अपनी बात समझा कर इस फैसले के लिए राजी कर लिया था कि राजवालिखिन को कोमसोमोल से निकाल दिया जाय, क्योंकि वह कोमसोमोल के भीतर एक विजातीय तत्व है।

गर्मी आई और उसके साथ गर्मी की छुट्टिया आई। पावेल के साथ काम करने वाले एक के बाद दूसरे अपनी छुट्टिया बिताने चले गये। ये छुट्टिया पाने का उन्हे हक था क्योंकि उन्होने अपने कठिन श्रम से उन्हे अर्जित किया था। जिन लोगो को स्वास्थ्य के खयाल से समुद्र-किनारे जाने की जरूरत थी, वे लोग वहा गये और पावेल ने उनको सेनेटोरियम मे जगह और रुपये-पैसे दिलाने मे उनकी मदद की। वे गये तो पीले और कुम्हलाये हुए थे, मगर छुट्टियो के खयाल से बडे खुश थे। उनके काम का बोझ पावेल के कधो पर आ गया और पावेल ने बिना एक शब्द कहे इस अतिरिक्त बोझ को उठा लिया। कुछ समय बाद वे जीवन और उत्साह से भर कर और धूप मे सिक कर लौट आये और दूसरे लोग चले गये। गर्मी भर दफ्तर मे काम करने वालो की कमी रही। मगर उससे जीवन की तेज गति मे कोई कमी नही पडी और पावेल एक दिन का भी काम छोडने की स्थिति मे नही था।

गर्मी बीत गई। पावेल को इस खयाल से ही डर मालूम हो रहा था कि अब पतझड और उसके बाद जाडा आयेगा क्योंकि इन ऋतुओ मे उसे बहुत शारीरिक यातना होती थी।

उस साल उसने विशेष उत्सुकता से गर्मी के आने की प्रतीक्षा की थी। क्योंकि चाहे उसे अपने तईं भी यह बात मानने मे कितनी ही तकलीफ क्यो न होती हो, यह बात सही थी कि वह साल-ब-साल अपनी ताकत को कम होते महसूस कर रहा था। उसके सामने सिर्फ दो रास्ते थे या तो वह इस बात को मजूर कर ले कि उतनी कडी मेहनत उसके लिए मुमकिन न थी और अपनी असमर्थता की घोषणा कर दे या जब तक दम-मे-दम है, तब तक अपनी चौकी पर मुस्तैदी से जमा रहे। उसने यह बाद वाला रास्ता ही अख्तियार किया।

एक रोज पार्टी की एरिया कमिटी की ब्यूरो मीटिंग मे डाक्टर वार्तेलिक उसके पास आकर बैठ गये। वह पार्टी के एक पुराने अडरग्राउड कार्यकर्ता थे जो इन दिनो पब्लिक हेल्थ के इचार्ज थे।

"तुम काफी कमजोर नजर आ रहे हो, कोर्चागिन ! तुम्हारी सेहत कैसी है ? मेडिकल बोर्ड ने तुम्हारी जाच की है ? नही ? मेरा भी यही खयाल था। मगर दोस्त मैं समझता हू कि तुम्हे पूरी ओवरहॉलिंग की जरूरत है। बृहस्पति की शाम को चले आना, हम लोग तुमको देख लेंगे।"

पावेल नही गया। वह बहुत व्यस्त था। मगर वार्तेलिक उसे नही भूले और कुछ दिन बाद आकर पावेल को जाच के लिए अपने साथ मेडिकल बोर्ड में ले गये। वहा वे न्यूरोपैथालॉजिस्ट की हैसियत से काम करते थे। मेडिकल बोर्ड ने पावेल की जाच करके लिखा "पावेल कोर्चागिन को फौरन छुट्टी दी जानी चाहिए ताकि वह क्रीमिया जाकर रह सके और अपना इलाज काफी दिनो तक करा सके। उसके बाद उसका बाकायदा इलाज होना चाहिए। अगर यह नही किया गया तो परिणाम भयकर हो सकता है।"

मेडिकल बोर्ड की सिफारिश के साथ लैटिन जबान मे जिन तमाम बीमारियो की लम्बी फेहरिस्त थी, उनको देख पावेल की समझ मे सिर्फ इतनी बात आई कि खास बीमारी उसकी टागो में नहीं, बल्कि उसकी केन्द्रीय स्नायु व्यवस्था मे है जो काफी खराब हो गयी है।

वार्तेलिक ने बोर्ड का फैसला ब्यूरो के सामने रखा और उनके इस प्रस्ताव का किसी ने विरोध नही किया कि कोर्चागिन को फौरन काम से छुट्टी दे दी जाय। मगर खुद कोर्चागिन ने जरूर यह बात कही कि उसकी छुट्टी तब तक स्थगित रखी जाय जब तक कि सगठन विभाग का प्रधान स्वितनेव लौट नही आता। वह कमिटी को नेतृत्वहीन नही छोडना चाहता था। ब्यूरो ने उसकी बात मान ली गोकि वार्तेलिक ने इस देरी पर आपत्ति की।

और इस तरह अब तीन हफ्ते बाद पावेल छुट्टी पर चला जायेगा जो कि उसकी जिन्दगी की पहली छुट्टी थी। येपेत्तोरिया के सेनेटोरियम मे रहने के लिए

जगह रिजर्व कर दी गयी थी और इस आशय का एक कागज उसकी मेज की दराज मे पडा हुआ था।

इस बीच पावेल ने और भी तेजी से काम करना शुरू किया। उसने एरिया कोमसोमोल के सभी सदस्यो की एक मीटिंग की और अपने साथ वेदर्द होते हुए जी जान से इस बात की कोशिश की कि सभी बिखरे हुए सूत्रो को बटोर ले ताकि वह शान्ति से जा सके।

और उसके जाने के ठीक पहले, जब कि उसे समुद्र की पहली झलक मिलने वाली थी, एक बडी घृणित बात हुई जिस पर यो शायद वह विश्वास भी न करता।

उस दिन काम के बाद पावेल पार्टी के प्रचार आन्दोलन विभाग की एक मीटिंग मे गया हुआ था। जब वह पहुचा तब कमरे मे कोई नही था और इसलिए वह दूसरे लोगो के आने के इतजार मे किताबो की आलमारी के पीछे खुली हुई खिडकी पर बैठा हुआ था। थोडी ही देर बाद कई लोग अन्दर आ गये। किताब की आलमारी के पीछे से वह उन्हे देख तो न सकता था, मगर एक आवाज पहचानी-सी मालूम हुई। यह फाइलो की आवाज थी। फाइलो एरिया के अर्थ-विभाग का इचार्ज था, लम्बा, खूबसूरत, फौजी चाल-ढाल। शराब पीने और औरतो के पीछे भागने के लिए वह बदनाम था।

किसी जमाने मे फाइलो छापेमार रहा था और अब भी वह टीग हाकने का कोई मौका हाथ से जाने न देता था और बहुत हस-हस कर बतलाया करता था कि कैसे उसने माखनो डाकू के दर्जनो लोगो के सिर उडा दिये। पावेल को इस आदमी से सख्त नफरत थी। एक रोज एक कोमसोमोल लडकी पावेल के पास रोती हुई आई और उसने बतलाया कि फाइलो ने उसको शादी करने का वचन दिया था, मगर एक हफ्ते तक उसे अपने पास रख कर उसे छोड कर चला गया और अब मुलाकात होने पर साधारण नमस्कार भी नही करता। जब यह मामला कट्रोल कमीशन के सामने आया तो फाइलो साफ बच कर निकल गया क्योकि वह लडकी कोई प्रमाण न दे सकी। मगर पावेल को उसकी बात का विश्वास हो गया था। अब वह उन लोगो की बात सुन रहा था। वे लोग आपस मे खुल कर बाते कर रहे थे और उन्हे पावेल की उपस्थिति का ज्ञान नही था।

"कहो फाइलो, क्या हाल-चाल है? इधर तुमने कौन से नये गुल खिलाये?"

यह ग्रिबोव था, फाइलो का लगोटिया यार। किसी कारण से ग्रिबोव को अच्छा प्रचारक समझा जाता था गोकि वह बिलकुल अनपढ, सकुचित दिमाग का और बेवकूफ आदमी था। मगर वह सब जो भी हो, ग्रिबोव को इस बात का

गर्व था कि उसे प्रचार कार्यकर्ता कहा जाता है और वह हर मौके पर लोगो को इस बात की याद दिला ही देता।

"मुझे बधाई दो दोस्त। कल मैंने एक नयी फतह की है—कोरोतायेवा की। तुम कहते थे कि कोई नतीजा न निकलेगा। यही तो तुम्हारी गलती है यार। जब मैं किसी औरत का पीछा करू तो अच्छी तरह समझ लिया करो कि आगे-पीछे मैं उसे जरूर हथिया लूगा," फाइलो ने घमड से कहा और उसके साथ एक अश्लील बात कही।

पावेल के अन्दर जब कोई गहरी खलबली मचती तो उसका शरीर बुरी तरह कापने लगता। इस वक्त भी उसका वही हाल हो रहा था। कोरोतायेवा महिलाओ के काम की देखभाल करती थी और उसके साथ ही एरिया कमिटी मे आई थी। पावेल जानता था कि कोरोतायेवा एक खुशदिल लगन वाली पार्टी कार्यकर्ता है जो उन औरतो के साथ सहानुभूति का बरताव करती है जो उसके पास मदद के लिए और सलाह-मशविरे के लिए आती है। पावेल यह भी जानता था कि कमिटी के दूसरे लोग उसको आदर की दृष्टि से देखते थे। पावेल जानता था कि उसकी शादी नही हुई है और उसे कोई शक नही रहा कि फाइलो उसी की बात कर रहा है।

"सुनाओ फाइलो यह कैसे हुआ! उस औरत के बारे मे इस बात पर यकीन नही आता। लगता है तुम यो ही उडा रहे हो।"

"मैं उडा रहा हू? तुमने मुझे समझा क्या है? मैंने इससे भी बडे-बडे मार्के सर किये हैं, यह छोकरी किस खेत की मूली है! सारी बात यह है कि तुमको काम करने का ढग आना चाहिए। हर लडकी के पास पहुचने का अलग ढग होता है और वही मालूम हो जाय तो मामला फतह समझो। उनमे से कुछ होती है जो फौरन अपने-आपको दे डालती हैं। मगर ऐसी लडकिया किसी काम की नही होती। कुछ होती हैं जिन्हे पटियाने में पूरा एक महीना लग जाता है। महत्व की बात यह है कि उनके मनोविज्ञान को समझ लेना चाहिए। कैसे उन पर हमला किया जाय, यही खास बात है। अरे यार, यह तो पूरा विज्ञान है, मगर मैं भी तो आखिर उसका एक पडित हू। सारा विज्ञान घोंके बैठा हू। हो-हो-हो।"

फाइलो अपनी ही बात पर बेइन्तहा मगन हो रहा था। उसका श्रोता उसे कुरेद रहा था ताकि वह उसको और भी रसभरी तफसीलें सुनाये।

कोर्चागिन उठ खडा हुआ। उसने कस कर अपनी मुट्ठी बन्द कर ली। उसका दिल जोरो से धडक रहा था।

"मैं जानता था कि साधारण चारे से कोरोतायेवा को पकडने की कोई उम्मीद न थी। मगर मैं इस शिकार को छोडना न चाहता था, खास कर इसलिए

कि मैंने ग्रिबोव से इसी चीज के लिए शराब की एक दर्जन बोतलो की शर्त बदी थी। इसलिए मैंने अन्दरूनी दाव-पेंच का इस्तेमाल किया। मैं उससे मिलने के लिए एक-दो बार गया, मगर मैंने देखा कि उस पर कोई खास असर नही पड रहा है। इसके अलावा एक मुसीबत यह भी तो है कि मेरे बारे मे दुनिया भर की बातें कही जा रही है और उनमे से कुछ बातें उसके कानो मे भी पहुची ही होगी । सक्षेप मे यह कि जब सीधा बार खाली गया, तो मैंने बगल से वार किया। हो-हो ! बडा मजा आया उसमे ! हा तो मैंने उसे अपनी करुण कहानी सुनाई कि कैसे मैं मोर्चे पर लडा, दुनिया भर मे भटका और ठोकरें खायी, मगर मुझे अपने मन की स्त्री न मिली और इसी तरह भटक रहा हू, एक अकेला आदमी जिसे कोई प्यार करने वाला नही और इसी तरह की बहुत सी बकवास। देखते हो न, मैं उसके मर्म की कमजोर जगह पर चोट कर रहा था। यह तो मुझे मानना ही चाहिए कि उसे फसाने मे काफी मुश्किल हुई। एक बार मैंने यह भी सोचा कि क्या रखा है इसमे, जाने भी दो साली को ! मगर अब तो सिद्धान्त की बात आ गयी थी और इसलिए मैंने निश्चय किया कि मैं मामले को यो ही अधूरा नही छोड सकता। कहने का मतलब कि आखिरकार मैंने उसे फतह कर ही लिया और जानते हो ? वह कुमारी निकली, अक्षतयोनि कुमारी ! हा-हा ! बडा मजा आया !"

और इसी तरह फाइलो अपनी उस घिनौनी कहानी को सुनाता रहा।

पावेल गुस्से से उबलता हुआ फाइलो के बगल में जा पहुचा था।

उसने गरज कर कहा, "सुअर !"

"ओह, मैं सुअर हूं और तुम क्या हो जो चोरी-चोरी दूसरो की बातें सुनते हो ?"

पावेल ने जरूर और भी कुछ कहा, क्योंकि फाइलो ने, जो होश मे नही था, उसकी वर्दी को सामने से पकड लिया था।

"मेरा अपमान करने आये हो ?" वह चीखा और पावेल पर घूसा चलाया।

पावेल ने ओक की लकडी का बना हुआ एक भारी स्टूल उठा लिया और एक ही चोट में उसे ढेर कर दिया। फाइलो किस्मत का धनी था कि उस समय पावेल के पास अपना रिवाल्वर नही था नही तो वह मर ही गया होता।

मगर वह अजीब बेसिर-पैर का काड हो ही गया। अतएव जिस दिन पावेल क्रीमिया के लिए रवाना होने वाला था, उस दिन वह पार्टी की अदालत के सामने खडा था।

पार्टी के सभी लोग कस्बे के थियेटर हॉल मे इकट्ठा हो गये थे। इस घटना से सब लोगो के अन्दर बडी खलबली मच गयी थी और मामले की सुनवाई पार्टी की नैतिकता, उसके आचार-विचार और व्यक्तिगत सम्बधों की एक गभीर बहस मे तब्दील हो गयी। इस मामले में जो सिद्धान्त की बातें निहित थी, उनकी बहस के लिए इस मामले ने सिगनल का काम किया और खुद यह घटना गौण हो गयी। फाइलो ने बहुत ही उद्धत ढग से आचरण किया, बडी दुष्टता से मुस्कराया और बोला कि इस मामले को जनता की अदालत के सामने ले जायगा और कोर्चागिन को उसका सिर फोडने के जुर्म मे कडी मशक्कत की सजा मिलेगी। उसने किसी भी सवाल का जवाब देने से साफ इन्कार कर दिया।

"तुम मुझे लेकर गप-शप का मसाला पाना चाहते हो? वह नही होने का। तुम मुझ पर चाहे जो भी अभियोग लगाओ, मगर सचाई यह है कि यहा की औरतें मुझसे खार खाये रहती हैं क्योंकि मैं उनको कुछ समझता ही नहीं। और तुम्हारा यह पूरा मामला तो बिल्कुल फिजूल की बकवास है। अगर यह १९१८ होता तो मैंने अपने ही तरीके से इस पागल कोर्चागिन से अपना झगडा सुलझा लिया होता। और अब आप मेरे बिना भी काम चला सकते हैं," यह कहते हुए फाइलो हॉल से निकल गया।

तब चेयरमैन ने पावेल से घटना का विवरण देने के लिए कहा। पावेल ने काफी शाति से आरम्भ किया गोकि अपने को सयत रखने मे उसे काफी कठिनाई हो रही थी।

"यह सारी घटना इसलिए हुई कि मैं अपने को काबू में नहीं रख सका। मगर वे दिन कब के विदा हो गये जब कि मैं अपनी अक्ल की बनिस्पत अपने हाथो से ज्यादा काम लिया करता था। इस बार जो चीज हुई है, वह एक आकस्मिक घटना है। मुझे याद भी नही कि मैंने कब और कैसे फाइलो को मार कर गिरा दिया। पिछले कई वर्षों मे यह मेरी पहली 'छापेमार' कार्रवाई है जिसका मैं दोषी हूं और जिसकी मैं खुद भी निन्दा करता हू, गोकि मैं समझता हू कि फाइलो की हरकत इसी के योग्य थी। फाइलो घृणित आदमी है। मैं कभी नही समझ सकता और मैं कभी इस बात का विश्वास नही करूगा कि एक क्रातिकारी, एक कम्युनिस्ट ऐसा बदमाश और जालिम जानवर भी हो सकता है। इस मामले ने सिर्फ एक अच्छी बात की है और वह यह कि इसने हमारा ध्यान इस बात पर केन्द्रित कर दिया है कि हमारे सहयोगी कम्युनिस्ट कार्यकर्ता अपनी व्यक्तिगत जिन्दगी मे कैसा आचरण करते हैं।"

सदस्यो के एक विशाल बहुमत ने इस प्रस्ताव के पक्ष मे वोट दिया कि फाइलो को पार्टी से निकाल दिया जाय। प्रिवोव को झूठी गवाही देने के जुर्म

मे कडी फटकार मिली और उसे चेतावनी दी गई कि अगर फिर उसने कोई जुर्म किया, तो उसे भी पार्टी से निकाल दिया जायगा। बाकी लोगो ने, जो उस दिन की बातचीत मे शरीक थे, अपनी गलती मान ली और उन्हे डाट कर छोड दिया गया।

तब बार्तेलिक ने सभा को पावेल की स्नायविक स्थिति के बारे मे बतलाया और सभा ने कडे शब्दो मे अपना विरोध व्यक्त किया जब इस मामले की छानबीन के लिए पार्टी की ओर से नियुक्त साथी ने प्रस्ताव रखा कि कोर्चागिन को भी चेतावनी दी जाय। उस साथी ने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया और पावेल निर्दोष घोषित करके रिहा कर दिया गया।

कुछ रोज बाद पावेल खारकोव के लिए रवाना हो गया। पार्टी की एरिया कमिटी ने आखिरकार उसका यह आग्रह मान लिया था कि उसे अपने मौजूदा काम से छुट्टी देकर उक्रेन के कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति के साथ लगा दिया जाय। अकिम भी केन्द्रीय समिति का एक मंत्री था। खारकोव पहुचते ही पावेल उससे मिलने गया और उसे पूरी कहानी सुनाई।

अकिम ने पावेल के सर्टिफिकेट पर नजर डाली। उसमे लिखा था कि वह "पार्टी मे असीम श्रद्धा रखता है," मगर साथ ही यह भी लिखा था . "कुल मिला कर वह सन्तुलित बुद्धि का कार्यकर्ता है, मगर कभी-कभी अपना आत्म-सयम खो बैठता है। इसका कारण उसकी स्नायविक बीमारी है।"

अकिम ने कहा, "यह बात लिख कर उन्होने एक अच्छे टेस्टीमोनियल को खराब कर दिया पावेल। मगर कोई बात नही दोस्त, ऐसी चीजें मजबूत से मजबूत आदमियो के साथ भी होती हैं। दक्षिण जाओ और अपनी सेहत बनाओ और जब तुम लौट आओगे तब हम तुम्हारे काम के बारे मे बातें करेंगे।"

अकिम ने दिल खोल कर बडी मुहब्बत से उससे हाथ मिलाया।

केन्द्रीय समिति का कम्युनार्ड सेनेटोरियम। गुलाब की झाडियो के बागीचे के बीचोबीच सफेद इमारतें जिन पर लताए चढी हुई हैं, और चमकते हुए फव्वारे और वहा छुट्टिया बिताने के लिए आये हुए लोग गर्मी के सफेद कपडे और नहाने के चुस्त कपडे पहने हुए। एक नौजवान डाक्टरनी ने उसका नाम रजिस्टर मे दर्ज किया और वह कोने वाली इमारत के एक बडे कमरे मे पहुच गया। हस के पर जैसे सफेद तकिए और बिस्तर की चादर, चारो ओर अत्यधिक स्वच्छता और शांति, पूर्ण शांति, कही कोई शोर-शराबा नही।

वह नहा कर ताजा हुआ और कपडे बदल जल्दी-जल्दी समुद्र किनारे चला गया।

उसके सामने समुद्र फैला हुआ था, शात, अत्यत सुन्दर, शानदार मानो पॉलिश किये हुए सगमरमर का नीला-काला विस्तार दूर क्षितिज पर फैला हुआ हो। बहुत दूर पर, जहा समुद्र आकाश से मिलता था, नीला-सा कुहासा छाया हुआ था और उसकी सतह पर सूरज की लाल-लाल चमक फैली हुई थी। सवेरे के उस कुहासे के बीच से एक पर्वत शृखला की रूपरेखा धुधली-धुधली दिखाई दे रही थी। पावेल ने गहरी सास लेकर ताजी समुद्री हवा को अपने फेफडो मे भरा और उस नीले विस्तार की असीम शाति को निर्निमेष देखता रहा।

एक लहर धीरे-धीरे उसके पैरो तक आई और किनारे पर की सुनहरी बालू को छू गई।

११ सोलह

सेंट्रल पोलिक्लिनिक का बागीचा केन्द्रीय समिति के सेनेटोरियम के मैदान से लगा हुआ था, केन्द्रीय समिति के सेनेटोरियम के मरीज समुद्र-किनारे से घर लौटते हुए उस बागीचे मे से होकर गुजरते थे क्यो कि उधर से आने से कम चलना पडता था। पावेल को एक बडे से प्लेन के पेड की छाया मे विश्राम करना बहुत अच्छा लगता था। यह पेड चूने के पत्थर की एक ऊची दीवाल के बगल मे उगा हुआ था। अपनी इस शात जगह से वह बागीचे के रास्ते पर टहलते हुए लोगो को देख सकता था और शाम को बैण्ड का सगीत सुन सकता था, अपने उस कोने मे बैठ कर, उस बडे सेनेटोरियम के मस्त लोगो की भीड के धक्के खाये बिना वह सगीत सुन सकता था।

आज भी वह अपनी चुनी हुई जगह पर पहुच गया था। धूप और समुद्र मे नहाने के कारण उसे नीद सी मालूम हो रही थी और वह इतमीनान से आराम कुर्सी पर लेट गया और तन्द्रा मे डूब गया। उसकी तौलिया और वह किताब, जो वह पढ रहा था, फुर्मानोव का विद्रोह, दोनो चीजें उसकी बगल मे कुर्सी पर पडी हुई थी। अभी सेनेटोरियम आने के अपने पहले दिनो मे तो उसके स्नायुओ को कोई फायदा नही पहुचा था और उसके सिर का दर्द अब भी बदस्तूर चल रहा था। सेनेटोरियम के डाक्टर अब तक उसकी बीमारी को समझ नही पा रहे थे और परेशान थे, मगर वे बीमारी की जड को पकडने की कोशिश जरूर कर रहे थे। बार-बार की डाक्टरी जाच से पावेल परेशान

था। उससे उसको थकान मालूम होती थी और वह अपने वार्ड की डाक्टर से बचने की हर मुमकिन कोशिश करता था। उसके वार्ड की डाक्टर एक खुश-दिल औरत थी, वह पार्टी मेम्बर थी और उसका अजीब-सा नाम था, येरूसा-लिम्चिक। अपने इस मरीज को खोज निकालने मे और उसे इस बात के लिए राजी करने मे कि वह कभी एक विशेषज्ञ और कभी दूसरे विशेषज्ञ के यहा चले, उसे बहुत कठिनाई होती थी।

पावेल उससे याचना के स्वर मे कहता, "मैं तो इस चीज से तग आ गया हू। दिन मे पाच बार मुझे वही कहानी दुहरानी पडती है और एक-से-एक बेहूदा सवालो का जवाब देना पडता है क्या तुम्हारी दादी का दिमाग खराब था, क्या तुम्हारे परदादा को गठिया हुआ था ? मुझे क्या मालूम कि उन्हे क्या हुआ था, क्या नही हुआ था ? मैंने तो उन्हे देखा तक नही। हर डाक्टर मुझे बहलाने की कोशिश करता है कि मैं मान लू कि मुझे सूजाक या उससे भी कोई बुरी बीमारी हुई थी और ऐसे सवाल इतनी देर तक चलते रहते हैं कि मेरा जी होने लगता है कि उनके गजे सिरो पर कस कर एक धौल जमा दू। मुझे आराम करने का मौका दो, मुझे किसी और चीज की जरूरत नही, बस आराम की जरूरत है। अगर पूरे छ हफ्ते, जब तक कि मुझे यहा रहना है, इसी तरह मेरा रोग-निदान चलता रहा, तो मैं निश्चय ही समाज के लिए एक खतरा बन जाऊगा।"

येरूसालिम्चिक हसती और उसके साथ मजाक करती, मगर फिर कुछ मिनट बाद बडी नरमी से उसकी बाह पकडती और रास्ते भर बकबक करती हुई उसे सर्जन के पास ले जाती।

मगर आज कोई जाच नही होनी थी और खाने मे अभी घंटे भर की देर थी। तभी अपनी तंद्रा की अवस्था मे उसने पास आते कदमो की आहट सुनी। उसने आखें नही खोली, "वे सोचेंगे कि मैं सो रहा हू और चले जायगे," उसने अपने मन मे कहा। मगर यह कोरी दुराशा थी। उसने अपने पास की कुर्सी का चरमराना सुना और कोई उस पर बैठा। उसे इत्र की हलकी-सी खुशबू मिली जिससे उसने समझ लिया कि यह कोई औरत है। उसने आखें खोली। पहली चीज जो उसने देखी वह एक चमचमाती हुई सफेद पोशाक थी। उसके साथ ही उसने नर्म चमडे की स्लीपर पहने हुए पैर देखे, फिर लडको की तरह के कटे हुए बाल, दो बडी-बडी आखें और सफेद दातो की एक पक्ति, वैसे दात जो चूहे के दातो जैसे तेज नजर आते थे। वह स्त्री उसे देख कर कुछ झेंपी और मुस्कराई।

"मेरे यहा रहने से आपके आराम मे खलल तो नही पड रही है ?"

पावेल ने कोई जवाब नही दिया। यह शिष्टाचार के खयाल से कोई अच्छी बात न थी, मगर अब भी पावेल को उम्मीद थी कि वह चली जायगी।

"यह क्या आपकी किताब है ?" वह "विद्रोह" के पन्ने पलट रही थी।

"जी हा, मेरी ही है।"

क्षण भर को शाति छा गई।

"कम्युनार्ड सेनेटोरियम मे हैं न ?"

पावेल बेचैनी से हिला। यह कैसी औरत है कि खामखाह परेशान कर रही है ? वाह रे, यह तो खूब आराम हो रहा है। अभी देखना, वह मेरी बीमारी के बारे मे सवाल पूछने लग जायगी। कोई चारा नही, मुझे यहा से जाना ही होगा।

उसने रुखाई से जवाब दिया, "नही।"

"मेरा तो खयाल है, मैंने आपको वहा देखा है।"

पावेल उठने ही वाला था कि उसे अपने पीछे किसी स्त्री की एक गहरी और अच्छी लगने वाली आवाज सुनाई दी।

"क्यो डोरा, तुम यहा क्या कर रही हो ?"

एक मोटी-ताजी, धूप से तपे हुए रग की, सुनहरे बालो वाली लडकी समुद्र किनारे लेटने के कपडे पहने हुए एक कुर्सी के छोर पर बैठ गई थी। उसने तेजी से कोर्चागिन पर निगाह डाली।

"मैंने तुमको कही देखा है, कामरेड ! तुम खारकोव के हो न ?"

"हा।"

"कहा काम करते हो ?"

पावेल ने इस वातचीत को खतम करने का फैसला किया।

उसने जवाब दिया, "कूडे-करकट की सफाई के विभाग मे।" उसके इस मजाक पर जो हसी हुई, उससे पावेल चौक पडा।

"तुम्हे कोई यह दोष नही दे सकता कामरेड कि तुम जरूरत से ज्यादा शिष्ट हो !"

इसी तरह उनकी दोस्ती शुरु हुई। बाद मे मालूम हुआ कि डोरा रादकिना खारकोव की पार्टी की शहर कमिटी ब्यूरो की मेम्बर थी और बाद मे जब दोनो मे दोस्ती हो गई, तो वह अक्सर अपनी पहली मुलाकात की इस मजेदार घटना को लेकर पावेल को चिढाया करती।

एक रोज तीसरे पहर थलासा सेनेटोरियम के मैदान की खुली जगह मे सगीत का एक आयोजन हुआ और वहा पर पावेल की अचानक अपने पुराने दोस्त जार्की से मुलाकात हो गई। और अजीब बात यह थी कि एक नाच के सिलसिले मे उनकी मुलाकात हुई।

सबसे पहले एक अच्छी, खूबसूरत, भरे जिस्म की स्त्री ने अपनी पतली, सुरीली और तेज आवाज मे, वह दिलफरेब गाना "आह, हमारी वो रग-रगीली मद-भरी रातें !" बडे मार्मिक स्वर मे श्रोताओ को सुनाया। उसके बाद एक स्त्री और पुरुष कूद कर स्टेज पर आ गये। पुरुष एकदम नगा था, बस उसके सिर पर एक लाल टॉप हैट थी और कूल्हो पर कुछ चमकदार सलमा-सितारे, बदन पर एक चमकदार सफेद कमीज का सामने का हिस्सा और गले में बो टाई, और कुल मिला कर वह आदमी किसी हबशी की नकल मालूम हो रहा था। गुडिये के-से चेहरे वाली उसकी सगिन ढेरो कपडो मे लिपटी हुई थी। आराम कुर्सियो और खाटो पर सेनेटोरियम के मरीज बैठे थे और उनके पीछे मोटी-मोटी गर्दनो वाले नेपमेनो की भीड बेहद मगन होकर तरह-तरह की आवाजें कर रही थी और वह जोडा स्टेज पर फाक्स-ट्रॉट की ताल पर चक्कर लगा-लगा कर नाच रहा था। इससे ज्यादा घृणित दृश्य की कल्पना भी नही की जा सकती थी। वह मोटा थुलथुल आदमी घामड की तरह टॉप हैट लगाये अपनी सगिन को कस कर अपने शरीर से चिपकाये ऐसी मुद्राओ मे नाच रहा था जिसके अन्दर नगे इशारे छिपे हुए थे। पावेल ने पीठ पीछे किसी मोटे थुलथुल आदमी की भारी सास की एक गडगडाहट सुनी। वह जाने के लिए मुडा ही था कि सामने बैठा हुआ कोई आदमी उठा और जोर से चिल्लाया

"यह वेश्यालयो का तमाशा बन्द करो ! भाड मे जाय !"

यह जार्की था।

पियानो बजाने वाले ने बजाना बन्द कर दिया और वायलिन एक पतली चीख की आवाज करके चुप हो गयी। सामने स्टेज पर नाचते हुए जोडे ने नाच बन्द कर दिया जिसे देखकर नर-मादा कीडो की किलबिल का आभास मिलता था। पीछे की भीड ने मारपीट पर उतारू ढग से शोर मचाना शुरू किया।

"कैसी बदतमीजी है, बीच मे लेकर नाच को रोक दिया !"

"सारा योरप नाच रहा है, एक इन्ही को ।"

"हद हो गयी बदतमीजी की !"

मगर सर्योजा जवानोव ने, जो चेरेपोवेत्स कोमसोमोल का मत्री था और कम्युनार्ड सेनेटोरियम मे रहता था, अपनी चार उगलिया मुह मे डाली और जोर से सीटी बजाई। दूसरो ने भी उसका अनुकरण किया और देखते-देखते वे दोनो नाचने वाले स्टेज से ऐसे गायब हो गये जैसे हवा उन्हे उडा ले गयी हो।

नाचने वाली मडली के खुशामदी सरदार ने, जो देखने मे अर्दली मालूम होता था, ऐलान किया कि मडली जा रही है।

"चलो गलाजत मिटी, पाप कटा!" एक लडके ने, जो नहाने के कपडे पहने हुए था, चिल्ला कर कहा और सब लोग उसकी बात सुन हसने लगे।

पावेल सामने की कतार मे पहुचा और वहा जार्की से उसकी मुलाकात हुई। दोनो दोस्तो मे बडी देर तक पावेल के कमरे में बातचीत होती रही। जार्की ने पावेल को बतलाया कि वह पार्टी की एक एरिया कमिटी के प्रचार—आन्दोलन विभाग मे काम कर रहा है।

जार्की ने कहा, "तुम्हे पता है या नही कि मेरी शादी हो गयी? जल्दी ही मेरी बीबी को बच्चा होने वाला है, पता नही लडका है कि लडकी।"

पावेल ने आश्चर्य से कहा, "शादी हो गयी? किससे?"

जार्की ने अपनी जेब से एक फोटो निकाली और पावेल को दिखाई।

"पहचानते हो?"

यह उसकी और आना बोर्हार्ट की फोटो थी।

"और दुबावा का क्या हुआ?" पावेल ने और भी आश्चर्य से पूछा।

"वह मास्को मे है। पार्टी से निकाले जाने के बाद उसने यूनीवर्सिटी छोड दी। अब वह बाउमान टेकनिकल इन्स्टीच्यूट मे है। मैने सुना है कि उसे फिर पार्टी मे ले लिया गया। अगर यह खबर सही है, तो कहना होगा कि बहुत बुरा हुआ। वह तो ऊपर से नीचे तक एकदम सड गया था जानते हो, पाक्रातोव क्या कर रहा है? वह एक शिपयार्ड का सहायक डाइरेक्टर है। दूसरो के बारे मे मुझे कुछ खास नही मालूम। इधर हम लोगो का सम्बध टूट-सा गया है। हम सब देश के अलग-अलग कोनों मे काम करते है। मगर कभी-कभी इस तरह मिल लेने और पुराने दिनो की याद कर लेने से बहुत अच्छा मालूम होता है।"

डोरा अन्दर आयी और अपने साथ और भी कई लोगो को लाई। उसने जार्की के जाकेट पर लगे हुए तमगे को देखा और पावेल से पूछा

"क्या तुम्हारे यह साथी पार्टी मेम्बर है? कहा काम करते है?"

पावेल को कुछ हैरानी हुई, मगर उसने सक्षेप मे उस लडकी को जार्की के बारे मे बतलाया।

लडकी ने कहा, "अच्छा, तब इनके रहने मे कोई बुराई नही है। यह साथी अभी-अभी मास्को से आये है। यह हमको पार्टी की ताजी खबरें सुनायेंगे। हमने तय किया है कि तुम्हारे कमरे मे चलकर एक छोटी-सी पार्टी मीटिंग की जाय," उसने बात साफ की।

पावेल और जार्की को छोड बाकी वे सब पुराने बोल्शेविक थे। बार्तागेव

ने, जो मास्को कन्ट्रोल कमीशन का मेम्बर था, उन लोगो को उस नये विरोधी द ऽ की बात बतलाई जिसके नेता ऑत्स्की, जिनोवियेव और कामेनेव थे।

बार्तशेव ने अपनी बात खतम करते हुए कहा, "ऐसे सगीन मौके पर हम सबको अपनी-अपनी जगह पर होना चाहिए। मैं कल यहा से जा रहा हू।"

पावेल के कमरे की इस मीटिंग के तीन दिन बाद सेनोटोरियम एकदम खाली हो गया। पावेल भी कुछ रोज बाद, अपना वक्त खतम होने के पहले ही वहा से चला गया।

कोमसोमोल की केंद्रीय समिति ने उसको अपने पास नही रोका। उसे कोमसोमोल का मत्री बना कर एक औद्योगिक इलाके मे भेज दिया गया और हफ्ते भर मे ही वह फिर स्थानीय सगठन की एक मीटिंग मे बोल रहा था।

उसी पतझड के आखिरी दिनो मे वह मोटर, जिसमे पावेल तथा दो और पार्टी कार्यकर्ता दूर के देहात जा रहे थे, एक खाई मे जा गिरी और उलट गई।

मोटर में बैठे हुए सभी लोगो को चोटें लगी। पावेल का दाहिना घुटना पिस गया था। कुछ दिन बाद उसे खारकोव के सर्जिकल इन्स्टीच्यूट मे ले जाया गया। जाच के बाद और जख्मी घुटने का एक्सरे करके मेडिकल बोर्ड ने राय दी कि फौरन ऑपरेशन होना चाहिए।

पावेल के स्वीकृति दे दी।

"तो फिर कल सवेरे," उस मोटे प्रोफेसर ने कहा जो बोर्ड का प्रधान था। वह उठा और बाकी लोग भी उसके पीछे-पीछे चले गये।

एक छोटा खूब रोशनीदार वार्ड था जिसमे सिर्फ एक खाट पडी थी। वहा खूब सफाई थी और अस्पताल की वह खास गध थी जिसे वह बहुत दिनो से भूला हुआ था। उसने आसपास निगाह डाली। खाट की बगल मे एक छोटी मेज थी जिस पर बर्फ जैसा सफेद मेजपोश पडा हुआ था और उसके पास ही सफेद रोगन से पुता हुआ एक स्टूल था। और बस।

नर्स उसका खाना लाई। पावेल ने उसे लौटा दिया। अपने बिस्तर पर बैठ कर वह चिट्ठिया लिख रहा था। घुटने का दर्द उसके विचार क्रम को भग कर रहा था और इसी दर्द के कारण उसकी भूख भी गायब हो गई थी।

उसने अपनी चौथी चिट्ठी लिख ली थी, तभी दरवाजा धीरे से खुला और सफेद साया पहने और टोपी लगाये एक युवती उसके बिस्तर के पास आई।

उस धुधलके मे पावेल ने उसकी नाजुक भवो और बडी-बडी आखो को देखा जो काली नजर आ रही थी। उसके एक हाथ मे एक चमडे का बैग था और दूसरे मे एक पन्ना कागज और एक पेंसिल।

युवती ने कहा, "मैं तुम्हारे वार्ड की डाक्टर हू। अब मैं तुमसे बहुत से सवाल पूछूगी और तुम्हे अच्छा लगे चाहे न लगे, मुझको अपने बारे मे सब कुछ बतलाना होगा।"

बडे प्यारे ढग से वह मुस्कराई और उसकी मुस्कराहट से पावेल के मन से आनेवाली "जिरह" का डर टूट गया। करीब एक हफ्ते तक पावेल उसको न सिर्फ अपने बारे मे, बल्कि कई पुश्त पीछे तक के अपने तमाम रिश्तेदारो के बारे मे बतलाता रहा।

ऑपरेशन थियेटर। लोग नाक पर और मुह पर बारीक जालिया लगाये हुए थे। चमचमाते हुए निकेल के औजार, एक लम्बी मकरी-सी मेज, जिसके नीचे एक बडी-सी चिलमची रखी थी।

प्रोफेसर अभी हाथ धो रहा था जबकि पावेल ऑपरेशन टेबुल पर लेट गया। उसकी पीठ पीछे ऑपरेशन की तैयारिया जल्दी-जल्दी की जा रही थी। उसने उधर को अपना सिर घुमाया। नर्स ऑपरेशन के तमाम औजार, नश्तर के चाकू और चिमटिया वगैरह निकाल कर रख रही थी।

"इधर मत देखो कामरेड कोर्चागिन," उसकी वार्ड डाक्टर बाजानोवा ने उसकी टाग की पट्टी खोलते हुए कहा, "यह स्नायुओ के लिए अच्छा नही पडता, खामखाह घबराहट मालूम होने लगती है।"

"किसके स्नायु और कैसी घबराहट, डाक्टर ?" पावेल ने मजाक के ढग से मुस्कराते हुए पूछा।

कुछ मिनट बाद उसके चेहरे पर एक भारी मास्क लगा दिया गया और उसने प्रोफेसर साहब की आवाज को कहते सुना

"हम तुम्हे क्लोरोफार्म देने जा रहे हैं। नाक से लम्बी सास लो और गिनती गिनना शुरू करो।"

"बहुत अच्छा," मास्क के भीतर से एक घुटी हुई शात आवाज ने जवाब दिया, "बेहोशी की हालत मे अगर मैं कोई बहुत भद्दी बात बोल बैठू तो मैं नही जानता। मैं पहले से ही उसके लिए माफी माग लेता हू।"

प्रोफेसर बरबस मुस्करा पडा।

क्लोरोफार्म की पहली बूदें। वह दम घोटनेवाली, घिनौनी गध।

पावेल ने लम्बी सास ली और जोर लगा कर साफ स्वर मे गिनना शुरू किया। उसके जीवन के दुखान्त नाटक के पहले अक का पर्दा उठ गया था।

आर्तेम ने लिफाफा फाडा और चिट्ठी की परतें खोली। पहली कुछ पक्तियो पर उसने जोर से आख गडाई और बाकी चिट्ठी को जल्दी-जल्दी पढ गया।

"आर्तेम ! हम लोग एक-दूसरे को कितनी कम चिट्ठिया लिखते है, साल मे मुश्किल से एक-दो बार ! मगर कितनी बार लिखते हैं, यह तो मेरी समझ मे कोई बडी अहम बात नही है। तुमने लिखा है कि तुम अपने परिवार को लेकर शेपेतोवका से कजातिन के रेलवे यार्ड मे पहुच गये हो, क्योकि तुम देहात से अपना सम्बध काटना चाहते हो, वहा की जमीन से अपनी जडो को उखाडना चाहते हो। मैं जानता हू कि असल मे वे जडें स्त्योशा और उनके सम्बधियो की पिछडी हुई, निम्न-पूजीवादी मनोवृत्ति मे हैं। स्त्योशा की तरह के लोगो का पुनर्निर्माण कठिन काम है और मुझे आशका है कि तुम इसमे भी सफल नही होगे। तुमने लिखा है कि अब इस बुढापे मे तुम्हे अध्ययन करने मे काफी कठिनाई हो रही है, मगर मैं तो सोचता हू कि तुम्हारी प्रगति बुरी नही है। तुम जो कारखाने को छोड शहर की सोवियत के चेयरमैन का काम सभालने से बराबर इनकार करते जा रहे हो, यह बात ठीक नही है। बतलाओ कि क्या तुम इसी मजदूर राज के लिए लडे थे या नही ? तब फिर अब उसे अपने हाथ मे क्यो नही लेते ! कल ही तुम शहर की सोवियत का काम अपने हाथ मे ले लो और उसमे जुट जाओ !

"अब मैं तुम्हे अपने बारे मे बतलाऊ। मेरे साथ कोई बडी गडबडी हो गई है। मैं बार-बार अस्पताल पहुचने लगा हू। दो बार मेरा ऑपरेशन हो चुका है, काफी खून भी गया है और ताकत भी, कुछ पता नही चलता कि यह चीज कब खतम होगी।

"मैं अपने काम से अलग पड गया हू और अब एक नया ही धधा मैंने अपना लिया है और वह धधा यह है कि मै मरीज हू। मुझे बहुत दर्द सहना पडता है और कुल मिला कर इस सबका नतीजा यह है कि मैं अपने दाहिने घुटने को हिला भी नही सकता, मेरे शरीर के तमाम अगो मे नश्तर के तमाम घावो के निशान है और उसके बाद यह ताजी डॉक्टरी खोज सुनने को मिली है सात बरस पहले मेरी रीढ की हड्डी मे चोट लगी थी और अब उन लोगो का कहना है कि यह चोट मेरे लिए बहुत महगी पड सकती है। मगर मैं कुछ भी सहने के लिए तैयार हू बशर्ते मैं लौट कर अपने मोर्चे पर फिर पहुच सकू।

"जिदगी मे मेरे लिए इससे ज्यादा भयानक बात कोई नही है कि मैं अपनी फौज से कट कर अलग जा पडू। यह एक ऐसी सभावना है जिस पर विचार करने के लिए भी मैं कभी तैयार नही हो सकता। और इसलिए वे लोग मेरे साथ जो भी करना चाहते है, मै सब कुछ उन्हे करने देता हू। मगर मेरी हालत मे कोई सुधार नही हो रहा है और

बादल रोज-ब-रोज और भी काले, और भी घने होते जा रहे हैं। पहले ऑपरेशन के बाद मैं जैसे ही चलने-फिरने के काबिल हुआ, फौरन अपने काम पर वापिस पहुच गया। मगर कुछ ही दिन बाद वे लोग फिर मुझे यहा ले आये। अब मुझे योपेतोरिया के एक सेनेटोरियम मे भेजा जा रहा है। मैं कल यहा से चला जाऊगा। मगर उदास मत हो आर्तेम, तुम जानते हो कि मैं जल्दी हार मानने वाला आसामी नही हू। मुझमे तीन आदमियो के बराबर प्राण-शक्ति है। मेरे भाई, अभी तुमको और मुझको बहुत काम करना है। अब तुम अपनी सेहत की फिक्र करो, बूते से बाहर अपनी ताकत को खर्च न करो क्योकि सेहत की मरम्मत की भारी कीमत पार्टी को चुकानी पडती है। वह सारा तजुर्बा जो हमे काम के दौरान मे मिलता है, और ज्ञान जो हमें अध्ययन से मिलता है, बडी अनमोल चीजें हैं और उन्हे इस तरह अस्पताल मे बद रह कर बर्बाद नही किया जा सकता। प्यार के साथ . —"पावेल"

जिस वक्त आर्तेम, माथे पर झुरिया डाले अपने भाई का खत पढ रहा था, पावेल अस्पताल मे डाक्टर बाजानोवा से विदा हो रहा था।

युवती ने पावेल के हाथ मे अपना हाथ देते हुए कहा, "तो कल तुम क्राइमिया के लिए रवाना हो जाओगे ? बाकी दिन भर तुम्हे क्या करना है ?"

पावेल ने जवाब दिया, "कामरेड रादकिना थोडी देर मे यहा आने वाली हैं। वह मुझे अपने परिवार वालो से मिलाने के लिए अपने घर ले जायेंगी। रात मैं वही गुजारूगा और कल वही मुझे स्टेशन ले जायेंगी।"

बाजानोवा डोरा को जानती थी क्योकि वह पावेल से मिलने कई बार अस्पताल आयी थी।

"मगर कामरेड कोर्चागिन, क्या तुम अपने वायदे को भूल गये कि जाने से पहले एक बार मेरे पिता से मिलोगे ? मैंने उनको तुम्हारी बीमारी के बारे मे विस्तार से बताया है और मैं चाहती हू कि वह एक बार तुम्हारी जाच कर लें। क्या आज शाम को नही हो सकता ?"

पावेल ने फौरन उसकी बात मान ली।

उसी शाम को बाजानोवा पावेल को अपने पिता के बडे और साफ-सुथरे दफ्तर मे ले गई।

उस मशहूर सर्जन ने बडी सावधानी से पावेल की जाच की। उनकी बेटी क्लिनिक से पावेल के एक्सरे की तमाम तसवीरें और रिपोर्ट लेती आई थी। पावेल ने भी लक्ष्य किया कि जब बाजानोवा के पिता ने लैटिन मे कोई बात कही, तो उसका चेहरा अचानक पीला पड गया। पावेल ने अपने ऊपर झुके

हुए प्रोफेसर के बडे गजे सिर को बहुत गौर से देखा और उनकी तेज आखो मे अपने सवाल का जवाब ढूढने की कोशिश की। मगर बाजानोवा के चेहरे के भाव से उसे कुछ पता न चल सका।

पावेल ने कपडे पहन लिये तो प्रोफेसर ने बडी आजिजी से उससे छुट्टी ली और बतलाया कि उन्हे एक सम्मेलन मे जाना है और अपनी जाच का नतीजा पावेल को बतलाने का काम अपनी लडकी पर छोड दिया।

पावेल बाजानोवा के खूबसूरती से सजे हुए कमरे मे कोच पर लेटा हुआ डॉक्टरनी के बोलने का इतजार कर रहा था। मगर बाजानोवा की समझ मे नही आ रहा था कि बात कैसे शुरू करे। उसकी हिम्मत नही पड रही थी कि उसके पिता ने जो कुछ उसे बतलाया था, उसको दुहरा दे—कि दवाइया अब तक पावेल के शरीर मे होने वाली घातक सूजन की रोक-थाम नही कर सकी थी। प्रोफेसर साहब ऑपरेशन के हक मे नही थे। "इस नौजवान को लकवे का खतरा है और इस दुखदाई बात को रोकना हमारी ताकत के बाहर है।"

न तो डाक्टर की हैसियत से और न दोस्त की हैसियत से ही उसने पूरी बात पावेल को बतलाना ठीक समझा। इसलिए थोडे से शब्दो मे उसने पावेल को सचाई का एक अश ही बतलाया।

"मुझे यकीन है कामरेड कोर्चागिन कि योपेतोरिया की गीली मिट्टी से तुम्हें फायदा होगा और पतझड आते-आते तुम अपने काम पर लौट सकोगे।"

मगर वह भूल गई थी कि पावेल की तेज आखें उसे गौर से देख रही थी।

"तुम जो कुछ कह रही हो, बल्कि यो कहू कि जो कुछ तुमने नही कहा है, उससे मैं समझ रहा हू कि मेरी हालत सगीन है। याद करो, मैंने तुमसे कहा था कि मुझे खोल कर पूरी बात बतला दिया करना। मुझसे कुछ छिपाने की जरूरत नही है। सुन न तो मैं बेहोश हो जाऊगा और न अपना गला ही काटने की कोशिश करूगा। मगर यह मैं जरूर जानना चाहता हू कि मुझे आगे अभी और क्या भुगतना है।"

बाजानोवा जी को खुश करने वाली दिल्लगी की बात कह कर सीधे जवाब को बचा गई और पावेल को उस रात सच्ची बात नही मालूम हो सकी।

विदा होते समय डाक्टर ने धीमे से कहा, "मेरी दोस्ती को मत भूल जाना, कामरेड कोर्चागिन। कौन जाने हमारे लिए जिन्दगी मे कब क्या होना है। अगर कभी तुम्हे मेरी मदद या मेरे सलाह-मशविरे की जरूरत पडे, तो मुझे लिखना। मैं जो कुछ भी तुम्हारे लिए कर सकूगी, जरूर करूगी।"

खिडकी मे से उसने उस लम्बी, चमडे का कोट पहनी हुई, आकृति को छडी का सहारा लेकर बहुत दर्द के साथ दरवाजे से बस तक जाते देखा जो उसका इतजार करती खडी थी।

एक बार फिर योपेतोरिया की गरम दक्खिनी धूप। धूप से सवलाये हुए, शोर मचाते लोग, वेल-बूटेदार टोपिया लगाये हुए। मोटर का दस मिनट का सफर नये आने वालो को चूने के पत्थर की वनी एक दुमजिला भूरी इमारत पर ले आया—यह माइनाक सेनेटोरियम था।

ड्यूटी पर तैनात डाक्टर को जब यह मालूम हुआ कि पावेल के रहने की जगह उक्रेन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने रिजर्व की है, तो वह उसें ग्यारह नम्बर के कमरे मे ले गया।

"मैं तुम्हे कामरेड एवनर के साथ रखूगा। वह जर्मन हैं और उन्होने अपने कमरे मे एक रूसी साथी की माग की है," डाक्टर ने दरवाजे पर दस्तक देते हुए कहा। भीतर से किसी जर्मन की आवाज सुनाई दी, "आ जाओ।"

पावेल ने अपना सफरी थैला रख दिया और उस सुनहले वालो और चमकती हुई नीली आखो वाले आदमी की तरफ मुडा जो विस्तर पर लेटा हुआ था। उस जर्मन ने मुहव्वत-भरी मुस्कराहट से उसका स्वागत किया।

जर्मन ने पहले अपनी भाषा मे उसका अभिवादन किया, मगर फिर अपने को सुधारते हुए रूसी मे कहा, "दिन मुबारक हो," और अपनी लम्बी-लम्बी उगलियो वाला पीला हाथ पावेल की तरफ बढाया।

कुछ क्षण वाद पावेल उसके विस्तर के पास बैठा हुआ था और दोनो "अन्तर्राष्ट्रीय भाषा" मे घुट-घुट कर बातें कर रहे थे, उस भाषा मे जिसमे शब्दो का महत्त्व गौण होता है और कल्पना, मुद्राए और सकेत—अलिखित भाषा के वे सारे माध्यम—शब्दो की कमी को पूरा कर देते हैं।

पावेल को मालूम हुआ कि एवनर एक जर्मन मजदूर था जिसे १९२३ के हाम्बुर्ग विद्रोह मे कूल्हे पर चोट लगी थी। वह पुराना जख्म फिर खुल गया था और इसीलिए वह विस्तर पकडने पर मजबूर हुआ था। वह प्रसन्न चित्त से अपनी सारी यातनाओ को सह रहा था और इसीलिए तत्काल पावेल का मन उसके लिए आदर से भर उठा।

उससे अच्छे साथी की आकाक्षा पावेल नही कर सकता था। सबसे अच्छी वात उसमे यही थी कि सुवह से लेकर रात तक वह अपनी तकलीफो और बीमारियो का दुखडा न रोयेगा। इसके विपरीत, उसकी सगत मे आदमी खुद अपनी तकलीफ को भूल जा सकता था।

"मगर कितनी बुरी बात है कि मुझे जर्मन नही आती," पावेल ने खिन्न होते हुए सोचा।

सेनेटोरियम के मैदान के एक कोने में कुछ "झूलने वाली कुर्सिया," वास की एक मेज और दो लम्बी आराम कुर्सिया रखी हुई थी। इसी जगह पर ये

पाच मरीज, जिन्हे बाकी लोग "कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की कार्यकारिणी" के नाम से पुकारते थे, इलाज के बाद अपना समय गुजारा करते थे।

एबनर आराम कुर्सी पर अधलेटा पडा था, पावेल भी जिसे टहलने की मुमानियत थी, दूसरी कुर्सी पर लेटा हुआ था। इनके अलावा उस टोली के बाकी तीन सदस्य ये लोग थे वाइमान, जो एस्तोनिया का रहने वाला एक मोटा-तगडा मजदूर था, और वाणिज्य-व्यापार की कमसारियट मे काम करता था, मार्ता लॉरिन, जो एक नौजवान, भूरी आखो की, लताविया की रहने वाली स्त्री थी और देखने मे अठारह साल की लडकी मालूम होती थी, और लम्बा-तगडा साइबेरियन लेदेनेव, जिसकी कनपटी के बाल पक चले थे। इस छोटी-सी टोली मे वस्तुत पाच भिन्न जातियो के प्रतिनिधि थे—जर्मन, एस्तोनियन, लतावियन, रूसी और उक्रेनियन। मार्ता और वाइमान जर्मन जबान बोलते थे और एबनर उनसे दुभाषिये का काम लेता था। पावेल और एबनर दोस्त थे क्योकि दोनो एक ही कमरे मे रहते थे, मार्ता, वाइमान और एबनर भी दोस्त थे क्योकि उनकी जबान एक थी। लेदेनेव और कोर्चागिन के बीच दोस्ती का आधार शतरज थी।

लेदेनेव के आने से पहले कोर्चागिन सेनेटोरियम मे शतरज का चैम्पियन था। उसने बडी कठिन लडाई के बाद वाइमान से यह पद जीता था। अपनी हार से उस मोटे एस्तोनियन को काफी धक्का-सा लगा था और बहुत दिन तक वह कोर्चागिन को इस बात के लिए माफ नही कर सका कि उसने उसको हराया था। मगर एक रोज एक लम्बा आदमी सेनेटोरियम मे आया जो अपनी पचास बरस की उम्र को देखते हुए बहुत ही नौजवान नजर आता था। उसने कोर्चागिन से शतरज की एक बाजी खेलने के लिए कहा। पावेल को इस बात का कोई गुमान नही था कि कैसे खिलाडी से उसका पाला पडा है, इसलिए उसने बडे इतमीनान से एक ऐसी चाल चली जिससे जाहिरा तो उसका वजीर कट जाता था, मगर दूसरे खिलाडी की मात हो जाती थी। लेदेनेव मजा खिलाडी था, इसलिए वह मजे मे चाल समझ गया और उसका जवाब उसने बीच के पैदलो को आगे बढा कर दिया। चैम्पियन की हैसियत से पावेल को हर नये आने वाले के साथ बाजी खेलनी पडती थी और खेल मे दिलचस्पी रखने वाले बहुत से दर्शक शतरज की बिसात के इर्द-गिर्द खडे हो जाते थे। नवी चाल के बाद पावेल ने महसूस किया कि उसका विरोधी बराबर अपने पैदलो को आगे बढाता हुआ उसके खेल को अपग करके रखे दे रहा है। अब पावेल को समझ मे आया कि खतरनाक खिलाडी से उसका पाला पडा है और उसे मन मे दुख होने लगा कि वह शुरू मे इतनी लापरवाही से क्यो खेला।

तीन घटे तक उनकी लडाई चली और इस बीच पावेल ने पूरा जोर

लगाया। आखिरकार उसे हार माननी पडी। दर्शको के वहुत पहले ही उसने इस वात को देख लिया था कि उसकी हार लाजमी है। उसने अपने विरोधी की ओर नजर उठाई और देखा कि लेदेनेव विजेता-सुलभ मुस्कराहट से उसकी ओर देख रहा है। स्पष्ट था कि उसने भी देख लिया था कि वाजी का क्या अन्त होने वाला है। वह एस्तोनियन भी खेल देख रहा था जिसे पावेल ने हराया था। वह वडे गौर से खेल को देख रहा था और अपनी इस ख्वाहिश को छिपा भी नही रहा था कि कोर्चागिन हार जाय। मगर अभी उसकी समझ मे नही आ रहा था कि ऊट किस करवट बैठेने वाला है।

"मैं हमेशा अपने आखिरी पैदल तक खेल खेलता हू और हार नही मानता," पावेल ने कहा और लेदेनेव से उसके समर्थन मे अपना सिर हिलाया।

पाच दिन मे पावेल ने लेदेनेव के साथ दस वाजी खेली जिनमे से सात वह हारा, दो जीता और एक मे वाजी वरावरी पर छूट गयी।

वाइमान वहुत खुश था।

"शुक्रिया, शुक्रिया कामरेड लेदेनेव! उसकी तुमने अच्छी मरम्मत की! उसको इसी की जरूरत थी! उसने हम सव पुराने खिलाडियो को हरा कर नाक मे दम कर दिया था और आखिरकार उसे एक पुराने खिलाडी से हार खानी ही पडी। हा.. हा!"

पहले के विजयी और अव के हारे हुए पावेल को चिढाते हुए उसने कहा, "कहो, हारने मे कैसा लगता है?"

लेदेनेव के आने से पावेल का चैम्पियन का पद तो छिन गया, मगर उसे एक दोस्त जरूर मिल गया जो आगे चल कर उसके लिए वहुत अनमोल साबित हुआ। अव उसकी समझ मे आया कि शतरज मे उसकी हार स्वाभाविक ही थी। शतरज के दाव-पेंच की उसकी जानकारी वहुत उथली थी। और उसने एक ऐसे खिलाडी के हाथ हार खाई थी जिसे खेल के सारे राज, खेल के दाव-पेंच का पूरा रहस्य मालूम था।

कोर्चागिन और लेदेनेव को पता चला कि उनकी जिन्दगी मे एक तारीख समान थी : पावेल जिस साल पैदा हुआ था, उसी साल लेदेनेव पार्टी मे दाखिल हुआ था। दोनो अपनी-अपनी जगह पुराने और नये वोल्शेविको के ठेठ प्रतिनिधि थे। एक के पीछे गहरे राजनीतिक कामो की, हलचलो की लम्बी जिदगी थी, अडरग्राउड आदोलन मे छिप-छिप कर कई साल का काम और जारशाही की कैदें और उन सबके वाद महत्व का सरकारी काम, दूसरे के पीछे थी उसकी जलती हुई जवानी और सिर्फ आठ साल का सघर्ष। मगर ये आठ साल ऐसे थे जो एक पूरी जिन्दगी को जलाकर खाक कर देने के लिए

काफी थे। और ये दोनो, जिनमे से एक बूढा था और दूसरा नौजवान, जिन्दगी से बेहद प्यार करते थे, मगर उनकी तदुरुस्ती टूटी हुई थी।

शाम के वक्त एबनर और कोर्चागिन का कमरा क्लब जैसा बन जाता था। सारी राजनीतिक खबरें यही से शुरू होती थी। कमरा कहकहो और बातचीत से गूजता रहता। वाइमान अक्सर बातचीत मे छोटा-मोटा गदा लतीफा घुसेडने की कोशिश करता। मगर हमेशा दो तरफ से उसके ऊपर हमला होता, मार्ता की तरफ से और कोर्चागिन की तरफ से। आम तौर पर मार्ता कोई तेज व्यगपूर्ण बात कह कर उसका मुह बन्द करने मे कामयाब होती। मगर जब उससे काम न चलता तो कोर्चागिन को दखल देना पडता।

मार्ता कहती, "वाइमान, तुम्हारा मजाक हमे कुछ पसद नही आता।"

कोर्चागिन गुस्से मे भरते हुए कहता, "मेरी समझ मे नही आता कि तुम्हारे मुह से ऐसी गदी बात क्योकर निकलती है।"

वाइमान अपना मोटा निचला होठ निकाल कर अपनी छोटी-छोटी आखो मे व्यग्य की चमक भर कर देखता।

"हमे राजनीतिक शिक्षा-विभाग के अन्तर्गत एक सदाचार का विभाग भी खोलना पडेगा और मैं प्रस्ताव करता हू कि कोर्चागिन को उसका चीफ इस्पेक्टर बनाया जाय। मार्ता क्यो आपत्ति करती है, यह बात मेरी समझ मे आ सकती है, क्योकि वह स्त्री है और विरोध करना उसका धर्म है। मगर कोर्चागिन तो खामखा भोला बनने की कोशिश करता है, जैसे वह कोई नन्हा-सा कोमसोमोल बच्चा हो और जगल मे खो गया हो इतना ही नही, खास आपत्ति तो मुझे इस बात पर है कि अडा मुर्गी को पाठ पढाने की कोशिश कर रहा है।"

कम्युनिस्ट नैतिकता के सवाल पर गरमागरम बहस हुई और उसके बाद गदे मजाको के मसले पर सिद्धात की दृष्टि से बहस की गई। लोगो की अलग-अलग रायो को मार्ता ने अनुवाद करके एबनर को बतलाया।

एबनर ने कहा, 'ये गदे लतीफे अच्छे नही कहे जा सकते। मैं पावेल से सहमत हू।"

वाइमान को मजबूर होकर पीछे हटना पडा। उसने भरसक इस मामले को हस कर उडाने की कोशिश की। मगर इतना हुआ कि इसके बाद उसने फिर कभी अपने गदे लतीफे नही सुनाये।

पावेल ने मार्ता को कोमसोमोल का मेम्बर समझा था क्योकि उसका खयाल था कि वह उन्नीस से ज्यादा की न होगी। उसे यह जान कर बडा अचरज हुआ कि वह १९१७ से पार्टी मे थी, उसकी उम्र इकतीस साल की थी और वह लताविया की कम्युनिस्ट पार्टी की बहुत सक्रिय मेम्बर थी। १९१८ मे क्राति-विरोधी श्वेत रूसियो ने उसको गोली से उडाने की सजा दी

थी, मगर वह बच गई क्योंकि जब कैदियो की अदला-बदली हुई तो कुछ और साथियो के साथ वह सोवियत सरकार के हवाले कर दी गई। इन दिनो वह "प्रावदा" के सम्पादकीय विभाग मे काम कर रही थी और इसके साथ ही यूनीवर्सिटी मे पढ रही थी। न जाने कब उसके और पावेल के बीच दोस्ती पैदा हो गई और वह छोटी-सी लतावियन स्त्री, जो अक्सर एवनर से मिलने आया करती थी, इन पाचो की टोली का एक जरूरी अग बन गई।

इस मामले को लेकर एग्लिट, जो लताविया का एक अडरग्राउड कार्यकर्त्ता था, उसे अक्सर चिढाया करता था, 'अब उस बेचारे ओजोल का क्या होगा जो मास्को मे घर पर बैठा तुम्हारे लिए आहें भर रहा है? अरे मार्ता, यह तुमने क्या गजब किया?"

एक रोज सुबह को, बिस्तर छोडने की घटी बजने से ठीक पहले, एक मुर्गे ने सैनेटोरियम मे जोर से बाग दी। उसकी आवाज सुन कर परेशान नौकर इधर-उधर उस चिडिया की तलाश मे दौडने लगे जिसने यह गलत काम किया था। उनको इस बात का खयाल भी नही आया कि एवनर ने, जो मुर्गे की बाग की हू-बहू नकल कर लेता था, उनको हैरान करने के लिए ऐसा किया था। कई रोज तक सुबह यही चीज होती रही और एवनर इस चीज का मजा लेता रहा।

सैनेटोरियम मे अपने महीने भर रहने के आखिरी दिनो मे पावेल की हालत और खराब हो गई। डाक्टरो ने उसे बिस्तर पर लेटे रहने का आदेश दिया। एवनर को इससे बडी बेचैनी हुई। वह इस हिम्मती नौजवान बोल्शेविक से बहुत प्यार करने लगा था, जिसमे इतना जीवन और इतना उत्साह था और जो इतनी कच्ची उम्र मे अपनी सेहत खो बैठा था। और जब मार्ता ने एवनर को बतलाया कि कोर्चागिन के भविष्य के बारे मे डाक्टर कैसी दर्दनाक बात कहते हैं, तो एवनर को सख्त तकलीफ हुई।

बाकी जितने दिन पावेल सैनेटोरियम मे रहा, उसमे वह लगातार बिस्तर पर ही पडा रहा। वह अपने आसपास के लोगो से अपनी तकलीफ छिपा लेता था और अकेले मार्ता उसके चेहरे की भयानक जर्दी से भाप जाती थी कि उसे बहुत दर्द हो रहा है। अपने जाने के एक हफ्ता पहले पावेल को उक्रेनियन केन्द्रीय समिति का खत मिला जिसमे लिखा था कि डाक्टरो की सलाह के अनुसार उसकी छुट्टी और दो महीने बढाई जाती है क्योकि उनका कहना है कि वह काम करने के अयोग्य है। खत के साथ ही खर्चे के लिए पैसा आया।

पावेल ने इस पहली चोट को उसी तरह सह लिया जिस तरह उसने बरसो पहले घूसेबाजी का सबक लेते हुए जुखराई के घूसे खाये थे। तब भी वह गिर पडा था, मगर फौरन ही फिर उठ खडे होने के लिए।

उसको मा की एक चिट्ठी मिली जिसमे उसने पावेल को यह लिखा था कि वह जाकर उसकी एक पुरानी दोस्त से मिल आये। इस दोस्त का नाम अलबिना क्युत्सम था। वह योपेतोरिया के पास ही समुद्र के किनारे एक छोटे से कस्बे मे रहती थी। पावेल की मा अपने दोस्त मे पन्द्रह साल से नही मिली थी और उसने पावेल से बहुत अनुरोध किया था कि जब तक वह क्राइमिया मे है, उसी बीच जाकर उससे मिल ले। इस चिट्ठी ने पावेल की जिन्दगी मे आगे चल कर बहुत महत्त्व की भूमिका अदा की।

एक हफ्ते बाद उसके सेनेटोरियम के दोस्तो ने उसे जहाज के घाट पर जाकर बहुत मोहब्बत से विदा किया। एबनर ने भाई की तरह गले से लगाया और चूमा। मार्ता उस वक्त कही गई हुई थी और पावेल बिना उससे विदा लिये हुए ही चला गया।

दूसरे रोज सुबह जब वह घाट पर पहुचा, तो घोडागाडी उसे एक छोटे से मकान मे ले गई जिसके सामने एक वैसा ही छोटा सा बगीचा था।

क्युत्सम परिवार मे पाच लोग थे मा अलबिना, जो एक अधेड स्थूल-काय स्त्री थी और जिसकी आखें काली और उदास थी। उसके बूढे हो रहे चेहरे पर पुराने सौन्दर्य की निशानिया थी। मा के अलावा उस परिवार मे थी दो बेटिया—लोला और ताया, लोला का नन्हा-सा बेटा और बूढा क्युत्सम, जो घर का स्वामी था। बूढा क्युत्सम मोटा-सा चिडचिडा आदमी था और देखने मे सुअर-जैसा था।

बूढा क्युत्सम को-ऑपरेटिव स्टोर मे काम करता था। छोटी लडकी ताया जो भी काम हाथ लग जाय, करती थी और लोला, जो टाइपिस्ट रह चुकी थी, हाल ही मे अपने पति से अलग हुई थी। उसका पति शराबी और बदमिजाज आदमी था। लोला अब घर पर रहकर अपने छोटे से लडके की देखभाल करती थी और घर के काम मे अपनी मा का हाथ बटाती थी।

इन दो बेटियो के अलावा घर मे एक बेटा भी था जिसका नाम जोर्ज था और जो उस वक्त, जब पावेल वहा पहुचा तब, लेनिनग्राद मे था।

घरवालो ने पावेल का हार्दिक स्वागत किया। सिर्फ बुड्ढे ने अतिथि को सन्देह और शत्रुता की आखो से देखा।

पावेल ने धैर्यपूर्वक अलबिना को अपने घर के बारे मे सारी खबरें बतायी और उसके जवाब मे उसे भी क्युत्सम के कुनबे की जिन्दगी के बारे मे बहुत कुछ जानने का मौका मिला।

लोला बाईस बरस की थी। वह एक सीधी-सादी लडकी थी जिसके भूरे बाल कटे हुए थे। उसका चौडा-सा खुला हुआ चेहरा था और उसने फौरन पावेल को अपना अन्तरग बना लिया और उसे अपने घर के सारे राज़ बतला

दिये। उसने बतलाया कि बुड्ढा निरकुश राजा की तरह पूरे परिवार पर शासन करता है और घर के लोगो मे किसी भी तरह की स्वतन्त्रता की भावना के आते ही फौरन उसे दबा देता है। वह सकीर्ण बुद्धि का कट्टर और जिद्दी आदमी था और घरवालो को आतकित करके रखता था। इसी वजह से घर के सारे बच्चे उससे बहुत चिढते थे और उसकी बीवी उससे नफरत करती थी। उसकी बीवी ने पच्चीस साल तक उसकी निरकुशता के खिलाफ सघर्ष किया मगर कोई नतीजा न निकला। लडकिया हमेशा अपनी मा का साथ देती थी। घर में होने वाले उन रोज-रोज के झगडो ने उनकी जिन्दगी मे जहर घोल दिया था। दिन-के-दिन गुजर जाते थे और झगडे, गाली-गुफ्ता, तू-तू मैं-मैं खत्म ही न होने आते थे।

ल्योला ने पावेल को बतलाया कि घर की जिन्दगी का एक और पाप उसका भाई जौर्ज था जो एक बिलकुल नाकारा, जीटियल, घमडी लडका था, जिसे अच्छे खाने, तेज शराबो और ठाठदार कपडो के अलावा और किसी चीज की फिक्र न थी। स्कूल की पढाई खतम करने पर जौर्ज ने ऐलान किया कि वह राजधानी जा रहा है और उसने अपने इस सफर के लिए पैसे मागे।

"मैं यूनीवर्सिटी मे जा रहा हू। लोला अपनी अगूठी बेच सकती है और तुम्हारे पास भी कुछ चीजें हैं जिन्हे गिरवी रख कर तुम पैसे पा सकती हो। मुझे पैसों की जरूरत है और मुझे इससे बहस नही कि तुम कहा से उन पैसो को लाती हो।"

जौर्ज को अच्छी तरह मालूम था कि उसकी मा कभी किसी चीज के लिए उससे इनकार नही करेगी और इसलिए वह अपने प्रति मा के प्यार का बेजा फायदा उठाता था। अपनी बहनो के साथ उसका बर्ताव ऐसा था जैसे वे उसके सामने कुछ न हो, जैसे वे उसकी बादिया हो। मा अपने पति से जो भी पैसे खीचतान कर निकाल पाती थी, उन्हे अपने बेटे के पास भेज देती थी और उसके अलावा ताया जो कुछ भी कमाती थी वह भी। इस बीच जौर्ज मैट्रिक की परीक्षा मे फेल होकर अब लेनिनग्राद मे मजे उडा रहा था। वह अपने मामा के साथ रहता था और बार-बार तार से पैसे मगा-मगा कर अपनी मा को सताया करता था।

पावेल जिस रोज वहा पहुचा, उस रोज कही रात मे जाकर उसकी मुलाकात ताया से हुई। उसकी मा अपनी बेटी से मिलने के लिए झट से बाहर हॉल वाले रास्ते मे गई और पावेल ने मा को फुसफुसा कर उसके आने की खबर अपनी बेटी को देते सुना। उस लडकी ने शर्माते हुए इस अपरिचित नौजवान से हाथ मिलाया और मारे शर्म के उसका चेहरा लाल हो गया। पावेल काफी देर तक उसके मजबूत घाठीदार हाथको अपने हाथ मे लिए रहा।

ताया उन्नीसवें साल मे चल रही थी। वह खूबसूरत न थी, मगर फिर भी उसकी बडी-बडी भूरी आखे और उसका मगोलो जैसा चेहरा, अच्छी-सी नाक और भरे हुए ताजे होठ, इन सबको मिलाकर वह आकर्षक लगती थी। धारी-दार ब्लाउज के नीचे उसकी कसी हुई जवान छातिया उभरी हुई थी।

दोनो बहनो के पास अपनी-अपनी दो छोटी-छोटी कोठरिया थी। तायां के कमरे में लोहे की एक तग खाट थी, दराजो की एक आलमारी थी जिसमे दुनिया भर की छोटी-मोटी चीजें भरी हुई थी, एक छोटा-सा आइना था और दीवारो पर दर्जनो फोटो और तसवीरो वाले पोस्टकार्ड थे। खिडकी पर दो गुलदान रखे थे जिनमे लाल जेरेनियम और हलके पीले और गुलाबी ऐस्टर के फूल लगे हुए थे। लैस के परदे मे एक हल्का नीला फीता टका हुआ था।

लोला ने अपनी बहन को चिढाते हुए कहा, "आम तौर पर तायां पुरुषो को अपने कमरे मे नही घुसने देती। तुम्हारे लिए वह इस नियम का अपवाद कर रही है।"

दूसरे रोज शाम को घर के लोग बूढे दम्पत्ति के रहने की जगह मे चाय पर बैठे हुए थे। क्युत्सम तेजी से अपनी चाय चला रहा था और बीच-बीच मे सामने बैठे हुए अतिथि पावेल को अपनी ऐनक के ऊपर से देख लेता था।

उसने कहा, "आजकल जो शादी के कानून बन रहे हैं, उनको मैं बिलकुल बेकार समझता हू। आज शादी हुई और कल के रोज शादी नही रही। जो जी चाहे कीजिए। पूरी आजादी है।"

बुड्ढे का गला फस रहा था और वह बडबडा रहा था। उसकी सास लौटी तो उसने लोला की तरफ इशारा किया।

"इसको देखो, यह गई और बिना किसी की इजाजत लिए अपने उस आदमी से शादी कर बैठी और फिर उसी तरह बिना किसी से कुछ पूछे-जाचे उससे अलग भी हो गई। और अब मुझे ही उसके और उसके छोकरे दोनो के खाने का बदोबस्त करना पडता है। कैसी बेहूदा बात है!"

लोला को बडी चोट लगी और वह शर्म से गड गई। उसने अपनी नम आखे पावेल से छिपा ली।

"तो आपका खयाल है कि उसे उस बदमाश के साथ रहना चाहिए था, क्यो?" पावेल ने पूछा और उसकी आखो में गुस्से की चमक आ गई।

"उसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिए था कि वह किससे शादी कर रही है।"

अलबिना ने बीच-बचाव किया। किसी-न-किसी तरह अपने गुस्से को दबाते हुए उसने तेजी से कहा, "कैसे हो, एक नये आदमी के सामने ऐसी बातो पर बहस कर रहे हो? तुम्हारे पास बात करने के लिए और कुछ नही है?"

बुड्ढा मुडा और उसी पर झपट पडा

"मै खूब जानता हू कि मै क्या बात कह रहा हू ! यह तुम कब से मुझे नसीहत करने लगी कि मुझे क्या कहना चाहिए !"

उस रात को पावेल बडी देर तक अपने बिस्तर मे जागता पडा रहा और क्युत्सम परिवार के बारे मे सोचता रहा। सयोग से ही वह यहा आ गया था और अनजाने ही इस पारिवारिक नाटक मे शरीक हो गया था। उसकी समझ मे नही आता था कि वह किस तरह मा और बेटियो को इस बधन से मुक्त करने मे सहायक हो सकता था। खुद उसकी जिन्दगी बिलकुल अव्यवस्थित थी, बहुत से मसले थे जिन्हे अभी हल करना बाकी था और कोई हिम्मत का कदम उठाना उसके लिए और दिनो से ज्यादा मुश्किल काम था।

स्पष्ट ही केवल एक रास्ता था यह कि इस परिवार को तोड दिया जाय और मा और बेटिया बुड्ढे को छोड कर अलग हो जाय। मगर यह आसान काम न था। पावेल इस पारिवारिक क्राति का बोझ उठाने की स्थिति मे नही था क्योकि उसे कुछ ही दिनो मे वहा से चला जाना था और मुमकिन है कि फिर कभी उसकी उन लोगो से मुलाकात भी न हो। क्या यह ज्यादा अच्छा न होगा कि वह उस चीज को जैसे-का-तैसा छोड दे और जो होना हो, हो ? तलैया के इस गदे पानी को हिलाने डुलाने से क्या फायदा ? मगर उस बुड्ढे के घिनौने चेहरे की याद उसे चैन न लेने देती। बहुत-सी योजनाए पावेल के दिमाग मे आई, मगर उन्हे अव्यावहारिक समझ कर उसने छोड दिया।

अगले दिन इतवार था और जब पावेल टहल कर शहर से वापस आया तो उसने ताया को घर मे अकेला पाया। बाकी लोग रिश्तेदारो से मिलने बाहर गये हुए थे।

पावेल उसके कमरे मे गया और थका हुआ तो था ही, एक कुरसी पर लस्त होकर पड गया।

उसने ताया से पूछा, "तुम कभी बाहर क्यो नही जाती और अपनी खुशी का कोई सामान क्यो नही करती ?"

ताया ने धीमे स्वर मे जवाब दिया, "मेरा कही जाने को जी नही चाहता।"

पावेल को अपनी रात की सोची हुई योजनाओ की याद आई और उसने उन्हे ताया के सामने रखने का फैसला किया।

जल्दी-जल्दी बोलते हुए ताकि दूसरो के आने के पहले ही वह अपनी बात खतम कर ले, पावेल सीधे अपनी खास बात पर आ गया।

"सुनो ताया, हम दोनो अच्छे दोस्त है। तब फिर हम लोग क्यो एक-दूसरे के साथ झूठा शिष्टाचार बरतें। मै जल्दी ही यहा से चला जाऊगा। बडे दुख की बात है कि मैने तुम्हारे परिवार को ठीक ऐसे समय मे जाना जब कि मैं

खुद मुसीबत मे हू, नही तो सूरत कुछ दूसरी ही होती। अगर यह चीज साल-भर पहले हुई होती तो हम सब लोग एक साथ यहा से चले जा सकते थे। तुम्हारे और लोला जैसे लोगो के लिए चारो तरफ तमाम काम-ही-काम है। बुड्ढे को छोडो, उसकी बात अलग है, उसकी अकल को ठीक नही किया जा सकता। मगर वह तो खैर जो भी है, इस वक्त कोई रास्ता नही है। मैं अभी यही नही जानता कि मेरा क्या होगा। इस वक्त मैं बिलकुल असहाय हू। मगर उसका तो खैर कोई इलाज नही है। मैं इस बात पर जोर देने जा रहा हू कि मुझे वापिस काम पर भेजा जाय। डाक्टरो ने मेरे बारे मे पता नही क्या-क्या वाहियात बातें लिख दी हैं और साथी लोग मेरा पीछा ही नही छोडते। उनका कहना है कि मैं कयामत के रोज तक अपना इलाज कराता बैठा रहू। मगर खैर उसके बारे मे देखेंगे कि क्या किया जा सकता है। मैं मा को चिट्ठी लिखूगा और तुम्हारे यहा के झगडे के बारे मे उससे सलाह लूगा। मैं इस तरह इस चीज को चलने नही दे सकता। मगर तुम्हे समझना चाहिए ताया कि इसका मतलब होगा कि तुम्हे अपने को अपनी मौजूदा जिन्दगी से काट कर जबरन अलग करना होगा। क्या तुम्हे यह चीज पसद होगी और इसकी ताकत तुम अपने अदर पाओगी ?"

ताया ने आख ऊपर उठा कर देखा।

फिर धीमे से कहा, "मुझे यह चीज जरूर पसद होगी और जहा तक ताकत की बात है, मैं नही कह सकती।"

पावेल उसके अनिश्चय को समझ गया।

"कोई बात नही ताया ! अगर तुम्हारे अदर इस चीज की चाह है तो सब ठीक हो जायगा। क्या तुम सचमुच अपने परिवार को बहुत चाहती हो ?"

इस सवाल ने ताया को थोडा परेशानी मे डाल दिया क्योकि वह इसके लिए तैयार न थी और जवाब देने मे पल भर को हिचकिचाई।

आखिरकार उसने कहा, "मुझे मा के लिए बडा दुख है। पिताजी ने उसकी जिन्दगी दूभर कर रखी है और अब जोर्ज उसको सता रहा है। मुझे उसके लिए सचमुच बेहद दुख होता है गोकि मैं जानती हू कि उसने कभी मुझे जोर्ज के बराबर प्यार नही किया ..।"

दोनो बडी देर तक इसी तरह दिल खोल कर बाते करते रहे। घर वालो के लौटने के थोडी देर पहले पावेल ने मजाक मे कहा

"ताज्जुब की बात है कि बुड्ढे ने अब तक तुम्हे किसी से ब्याह नही दिया।"

इस विचार से ही डर के मारे ताया ने हाथ फटकारे।

"न बाबा, मैं कभी शादी न करूगी। मैंने देखा है कि बेचारी लोला को क्या-क्या भुगतना पडा है। मैं कभी किसी कीमत पर शादी न करूगी।"

पावेल हसा।

"अच्छा तो तुमने अपनी पूरी जिन्दगी के लिए आखिरी बार इस मामले का फैसला कर डाला है ? और मान लो कोई अच्छा-भला खूबसूरत नौजवान तुम्हारी जिन्दगी मे आ जाय, तो क्या हो ?"

"नही, मैं कभी शादी न करूगी। शादी के पहले सब बडे अच्छे रहते हैं।"

पावेल ने उसको मनाने के अदाज मे उसके कधे पर अपना हाथ रखा।

"बहुत अच्छी बात है ताया। पति के बिना भी तुम बडे मजे मे चल सकती हो। मगर तुम्हें सभी नौजवानो के बारे मे ऐसी बेइसाफी की बात न कहनी चाहिए। यह अच्छा है कि तुम मुझ पर यह सन्देह नही कर रही हो कि मैं तुमसे प्रणय-निवेदन करने की कोशिश कर रहा हू, वरना मुसीबत ही थी !" और उसने बडे भाई के अदाज मे ताया की बाह को थपथपाया।

ताया ने धीमे से कहा, "तुम्हारी तरह के आदमी किसी और ही तरह की लडकियो से शादी करते हैं।"

कुछ दिन बाद पावेल खारकोव के लिए रवाना हो गया। ताया, लोला और अपनी बहन रोजा के साथ अलबिना उसे विदा करने स्टेशन पर आई। अलबिना ने पावेल से वचन ले लिया कि वह उनकी लडकियो को न भूलेगा और उन्हें अपनी मौजूदा परेशानी मे से निकलने मे मदद पहुचायेगा। उन्होने पावेल को उसी तरह विदा किया जैसे किसी बहुत सगे और प्यारे आदमी को किया जाता है। उस वक्त ताया की आखो मे आसू थे। अपने डब्बे की खिडकी मे से पावेल ने लोला की सफेद रूमाल और ताया के धारीदार ब्लाउज को बराबर छोटे-से-छोटा होते देखा जब तक कि वे नजर से ओझल न हो गये।

खारकोव पहुच कर वह सीधे अपने दोस्त पेत्या नोवीकोव के घर गया क्योंकि वह डोरा को परेशान नही करना चाहता था। सफर की थकान मिटते ही वह केंद्रीय समिति मे गया। वहा उसने अकिम का इतजार किया और आखिर मे जब दोनो अकेले रह गये, तो उसने कहा कि उसे फौरन काम पर भेजा जाय। अकिम ने अस्वीकृति मे सिर हिलाया।

"यह चीज नही हो सकती पावेल ! हमारे सामने मेडिकल बोर्ड और सेंट्रल कमिटी का फैसला है। उसके मुताबिक तुम्हारी तदुरुस्ती की सगीन हालत को देखते हुए तुम्हे इलाज के लिए न्यूरो-पैथोलॉजिकल इस्टीच्यूट भेजा जाना चाहिए और यह कि किसी हालत मे तुम्हें काम नही करने देना चाहिए।"

"मुझे खाक परवाह नही कि वे लोग क्या कहते है, अकिम ! मैं तुमसे बिनती करता हू, मुझे काम करने का मौका दो ! एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल मे जाना मुझे कोई फायदा नही पहुच रहा है।"

अकिम ने इनकार करने की कोशिश की, "हम लोग फैसले के खिलाफ नही जा सकते। तुम इस बात को नही देखते पावलुशा कि यह तुम्हारे फायदे की बात है।" उसने तर्क करते हुए कहा। मगर पावेल ने इतने जोरो से वकालत की कि आखिर मे अकिम को उसकी बात माननी ही पडी।

अगले ही रोज पावेल केंद्रीय समिति के सेक्रेटेरियट के विशेष विभाग मे काम करने लगा। उसका खयाल था कि काम शुरू करते ही उसकी गई हुई ताकत लौट आयेगी। मगर जल्दी ही उसने देख लिया कि ऐसा सोचना उसकी भूल थी। वह दोपहर का खाना खाये बगैर आठ-आठ घटे तक मेज पर बैठा काम करता रहता था और सिर्फ इसलिए कि खाना खाने के लिए तीन-तीन जीना नीचे उतर कर पब्लिक भोजनालय मे जाने की ताकत उसके अदर नही थी। अक्सर उसके हाथ-पैर अचानक सुन्न पड जाते और कभी-कभी उसका पूरा शरीर थोडी देर के लिए ऐसा हो जाता जैसे उसे लकवा मार गया हो। हरारत उसे हमेशा ही बनी रहती। किसी-किसी रोज सुबह को वह अपने अदर इतनी ताकत भी न पाता कि बिस्तर से उठ सके और जब तक लकवे का हमला थमता, तब तक उसे काम पर जाने मे एक घटे की देर हो गई रहती और उसका उसे बहुत दुख होता। आखिरकार वह दिन आया जब उसे काम पर देर से आने के लिए सरकारी तौर पर तम्बीह की गई। यह उस चीज की शुरुआत थी जिससे अपनी जिन्दगी मे वह सबसे ज्यादा डरता था— वह आगे बढने वाले सैनिको की कतार मे पीछे छूटा जा रहा था।

दो बार अकिम ने उसको दूसरे काम पर लगा कर उसकी मदद की, मगर जो चीज अनिवार्य थी वह होकर रही। काम पर लौटने के महीने भर बाद पावेल ने फिर से बिस्तर पकड लिया। उस वक्त उसे बिदाई के समय कहे हुए बाजानोवा के शब्द याद आये। उसने उसको चिट्ठी लिखी और वह उसी दिन आ गई। और आकर उसने पावेल को वह बात बतलाई जिसे वह जानना चाहता था यह कि अस्पताल मे जाना एकदम जरूरी नही है।

"तो मेरा हाल इतना अच्छा है कि मुझे इलाज की भी जरूरत नही है?" उसने दिल्लगी के स्वर मे कहा। मगर वह दिल्लगी का मौका न था, इसलिए मजाक बेमानी होकर रह गया।

जैसे ही उसने अपने भीतर कुछ और ताकत महसूस की, वह वापिस केन्द्रीय समिति मे पहुच गया। इस बार अकिम ने दृढता से उसका विरोध किया। उसने इस बात पर जोर दिया कि पावेल अस्पताल जाय।

पावेल ने थके हुए स्वर मे कहा, "मैं कही नही जा रहा हू। उससे कोई फायदा नही। यह बात मुझे अच्छे-अच्छे डाक्टरो से मालूम हुई है जिन्हे इस चीज के बारे मे राय देने का हक है। मेरे लिए करने को सिर्फ अब एक चीज

बची है कि पेन्शन ले लू और रिटायर हो जाऊ। मगर मैं ऐसा नही करूगा। तुम मुझे काम छोडने पर मजबूर नही कर सकते। मैं अभी सिर्फ चौबीस साल का हू और बीमार की तरह इस अस्पताल से उस अस्पताल का चक्कर लगाते हुए अपनी जिन्दगी काटने के लिए तैयार नही हू। मैं यह जानता हू कि अस्पताल मे जाने से मुझे कोई फायदा नही होगा। तुम्हे चाहिए कि मुझे कोई काम दो, ऐसा काम जो मेरी स्थिति के अनुकूल हो। मैं घर पर बैठकर काम कर सकता हू या दफ्तर मे रह सकता हू। बस एक दर्ख्वास्त है कि क्लर्की का ऐसा काम मत दो जिसमे मुझे सिर्फ दफ्तर से बाहर जाने वाले कागजात पर नम्बर दर्ज करना पडे। मुझे ऐसा काम मिलना चाहिए जिससे मुझे यह सन्तोष हो कि अब भी मेरी कुछ उपयोगिता है।"

भावावेश मे पावेल की आवाज बुलन्द से बुलन्द होती गई।

अकिम को पावेल से गहरी सहानुभूति थी। वह समझता था कि इस जोशीले नौजवान की जिन्दगी की यह सबसे बडी ट्रैजेडी थी—इस नौजवान की जिसने अपनी छोटी-सी जिन्दगी का एक-एक क्षण पार्टी को दिया था। पावेल को सघर्ष से मजबूरन अलग होना पड रहा था और दूर एक कोने मे घुटने तोड कर बैठना पड रहा था। इस विचार से पावेल को कितनी मानसिक यातना हो रही होगी, यह बात अकिम समझ रहा था। उसने तय किया कि उसकी मदद के लिए जो कुछ बन पडेगा, वह जरूर करेगा।

"बहुत अच्छा पावेल, तुम परेशान न हो। कल सेक्रेटेरियट की मीटिंग होगी और मैं तुम्हारे मामले को साथियो के सामने रखूगा। मैं तुम्हे वचन देता हू कि मुझ से जो कुछ बन पडेगा, मैं तुम्हारे लिए करूगा।"

पावेल थका हुआ, भारी पैरो से उठा और अकिम का हाथ पकड लिया।

"अकिम, क्या तुम सचमुच यह सोचते हो कि जिन्दगी एक कोने मे ढकेल कर मुझे कुचल सकती है? जब तक मेरे दिल मे यहा यह धडकन बाकी है"—कहते हुए उसने अकिम का हाथ अपने सीने पर रख लिया ताकि वह उसके दिल की धडकन को महसूस कर सके—"जब तक यह धडकन है, तब तक कोई भी मुझे पार्टी से काट कर अलग नही कर सकता। सिर्फ मौत ही मुझे लडने वाले सैनिको की कतार से अलग कर सकती है। इसे याद रखना, मेरे दोस्त।"

अकिम ने कुछ नही कहा। वह जानता था कि यह कोरी लफ्फाजी नही है। यह एक ऐसे सिपाही की चीख थी जिसे लडाई मे सख्त चोट लगी है। वह जानता था कि कोर्चागिन जैसे लोग इसके सिवा किसी और तरह से बोल नही सकते और न महसूस ही कर सकते हैं।

दो दिन बाद अकिम ने पावेल को बतलाया कि उसे एक बडे अखबार के कार्यालय मे काम करने का अवसर दिया जाने वाला है, बशर्ते उसमे साहित्यिक

काम करने की योग्यता हो। सम्पादकीय दफ्तर मे पावेल का बहुत अच्छा स्वागत हुआ और सहायक सम्पादिका ने, जो एक पुरानी पार्टी कार्यकर्ता और उक्रेन की केन्द्रीय कट्रोल कमिटी की सदस्या थी, उससे पूछताछ की।

उसने पावेल से पूछा, "तुम्हे क्या शिक्षा मिली है कामरेड ?"

"प्राथमिक पाठशाला मे तीन साल।"

"क्या तुम पार्टी के किसी सियासी स्कूल मे भी रहे हो ?"

"नही।"

कोई बात नही, कुछ लोग इसके बिना भी अच्छे पत्रकार बनते देखे गये है। कामरेड अकिम ने तुम्हारे बारे मे हमको बतलाया है। हम तुम्हे ऐसा काम दे सकते है जिसे तुम घर बैठे कर सको और मोटे तौर पर हम तुम्हारे लिए ऐसा इतजाम करने के लिए तैयार है कि तुम सहूलियत से काम कर सको। मगर इस तरह के काम मे काफी जानकारी की जरूरत होती है। खास करके साहित्य और भाषा के क्षेत्र मे।"

इस सबमे पावेल को लगा कि इस काम मे उसकी हार अवश्यभावी है। आध घटे की उस पूछताछ से उसे पता चल गया कि उसकी जानकारी काफी नही है। और उसका इम्तहान लेने के लिए जो लेख उससे लिखाया गया था, वह जब उसके पास लौटा तो उसमे शैली और हिज्जे की तीन दर्जन गलतिया थी जिन पर लाल पॅसिल से निशान लगा हुआ था।

सम्पादिका ने कहा, "कामरेड कोर्चागिन, तुममे काफी योग्यता है और अगर कुछ मेहनत करोगे तो काफी अच्छा लिखने लगोगे। मगर इस वक्त तुमसे व्याकरण की भूलें हो जाती हैं। तुम्हारे लेख से पता चलता है कि तुम अच्छी तरह रूसी भाषा नही जानते। यो इसमे ताज्जुब की कोई बात नही है क्योकि तुम्हे पढने का मौका ही नही मिला। हमे खेद है कि हम तुम्हारा उपयोग नही कर सकते, गोकि जैसा मैंने अभी कहा, तुम्हारे अन्दर योग्यता है। अगर तुम्हारे लेख को सुधारा जाता, बिना उसके विषय-वस्तु को बदले, तो इसमे सन्देह नही कि वह बहुत अच्छा हो जाता। मगर बात यह है कि हमे ऐसे लोगो की जरूरत है जो दूसरो के लेखो को सुधार सकें।"

कोर्चागिन छडी का सहारा लेते हुए उठा। उसकी दाहिनी पलक फडकी।

"ठीक है, मैं आपकी बात समझ गया। सचमुच मैं किस काम का पत्रकार होऊ गा। किसी जमाने मे मै बुरा फायरमैन नही था और इलेक्ट्रीशियन भी बुरा नही था। घुडसवारी मैं अच्छी करता था और कोमसोमोल के नौजवानो को आन्दोलित करना भी मुझे आता था। लेकिन जहा तक अपने मोर्चे की बात है, निश्चय ही मैं उसके लिए किसी काम का साबित नही होऊ गा, यह बात मेरी समझ मे आ गई।"

उसने हाथ मिलाया और चला गया।

गलियारे के एक मोड पर वह लडखडाया और अगर पास से गुजरती हुई एक औरत ने उसे पकड न लिया होता, तो वह गिर पडता।

"क्या बात है कामरेड ? तुम तो काफी बीमार नजर आते हो !"

पावेल को होश आने मे कुछ क्षण लगे। तब उसने धीरे से उस औरत को एक ओर कर दिया और अपनी छडी के सहारे आगे बढ गया।

उस दिन के बाद से पावेल ने महसूस किया कि उसकी जिन्दगी ढलवान पर है। काम करने का अब सवाल ही नही उठता था। उसे बार-बार और पहले से कहीं ज्यादा बिस्तर पकडना पडता। केन्द्रीय समिति ने उसे काम से छुट्टी दे दी और उसकी पेन्शन का प्रबन्ध कर दिया। ठीक समय पर पेंशन आ गई और उसके साथ-साथ बीमार होने का सार्टिफिकेट भी। केन्द्रीय समिति ने उसे पैसा दिया और उसके कागजात उसके हवाले कर दिये जिनसे उसे हक मिल गया कि वह जहा चाहे जाय।

मार्ता के पास से उसे एक खत मिला जिसमे उसने पावेल को मास्को आने और उसके यहा रह कर कुछ दिन आराम करने की दावत दी थी। मास्को जाने का तो पावेल का इरादा यो भी था, क्योकि उसके मन मे अभी तक यह धुधली-सी आस बाकी थी कि ऑल यूनियन सेन्ट्रल कमिटी उसे ऐसा कोई काम दे सकेगी जिसमे इधर-उधर दौडने-भागने की जरूरत न होगी। मगर मास्को मे भी उसे डाक्टरी इलाज कराने की सलाह दी गई और एक अच्छे अस्पताल मे जगह देने की बात कही गई। मगर उसने इनकार कर दिया।

उसके उन्नीस दिन तो मार्ता के घर मे, जहा वह अपने दोस्त नादिया पीटर्सन के साथ रहती थी, जल्दी से बीत गये। पावेल ज्यादातर घर मे अकेला ही रहता क्योकि दोनो युवतिया सवेरे ही घर से काम पर निकल जाती और शाम को लौटती। पावेल मार्ता की अच्छी लाइब्रेरी मे से किताबें ले-लेकर पढने मे अपना वक्त गुजारता। शामे उन दोनो लडकियो और उनके दोस्तो की सोहबत मे मजे से कट जाती।

क्युत्सम परिवार के खत आते जिनमे उसे वहा बुलाया जाता। वहा पर जिन्दगी असह्य होती जा रही थी और पावेल की मदद की जरूरत थी।

लिहाजा एक रोज सवेरे कोर्चागिन ने गुस्यातनिकोव स्ट्रीट का वह खामोश छोटा सा फ्लैट छोड दिया। रेलगाडी उसे तेजी से दक्खिनी समुद्र की तरफ ले चली, नम बरसाती पतझड से दूर दक्खिनी क्राइमिया के गर्म तट की तरफ। वह खिडकी पर बैठा तार के खभो का तेजी से गुजरना देखता रहा। उसके माथे पर बल पडे हुए थे और उसकी काली-काली आखो मे हठीली चमक थी।

नीचे समुद्र की लहरें चट्टान से टकरा कर पछाड खा रही थी। दूर तुर्की से आती हुई तेज खुश्क हवा उसके चेहरे को स्पर्श कर रही थी। बन्दरगाह, जिसे सीमेन्ट का एक रास्ता बनाकर समुद्र के सीधे हमले से बचाया गया था, टेढे-मेढे अर्धवृत्त आकार में फैला हुआ था। और उस सबके ऊपर से दीख पड रही थी शहर के छोर पर की छोटी-छोटी सफेद इमारते जो पहाड के ढलवान पर बनी थी और ठीक नीचे समुद्र का नीला विस्तार था।

शहर के बाहर इस पुराने पार्क मे बहुत शाति थी। मेपुल के दरख्त की पीली-पीली पत्तिया उड-उड कर धीरे-धीरे पार्क के रास्तो पर गिर रही थी और रास्तो पर घास उगी हुई थी।

वह बूढा ईरानी गाडीवान, जो पावेल को शहर से वहा ले आया था, पावेल के गाडी से उतरने पर यह सवाल पूछ ही बैठा

"यहा क्यो आये हो ? न यहा जवान औरतें हैं, न दिल बहलाने का और कोई सामान। यहा तो बस गीदड हैं यहा क्या करोगे ? मिस्टर कामरेड, बेहतर हो कि मैं तुम्हें शहर मे वापस ले चलू !"

पावेल ने गाडी का किराया चुकाया और बूढा गाडी लेकर चला गया।

वह पार्क सचमुच एक जगल था। पावेल को पहाडी पर एक खाली बेंच मिल गई और वह उस पर बैठ गया। पावेल ने पतझड के हलके सूरज की ओर मुह उठाया। पहाडी समुद्र के किनारे पर थी।

वह इस खामोश जगह मे यह सोच कर आया था कि अपनी जिन्दगी पर गौर करेगा, उसकी जिन्दगी जो राह पकड रही थी, उसके बारे मे और यह कि अब उसको क्या करना चाहिए। परिस्थिति पर विचार करने और कोई फैसला लेने का वक्त आ गया था।

दूसरी बार जब वह क्युत्सम के यहा गया तो घर के झगडे और भी बढ गये और ऐसी हालत पैदा हो गई कि उस झगडे को खतम करने के लिए कोई-न-कोई कदम उठाना जरूरी जान पडने लगा। बुड्ढे को जब उसके आने की बात मालूम हुई तो वह आग-बबूला हो गया और उसने इस चीज के खिलाफ बडा शोर मचाया। स्वभावत उसका मुकाबला करने की जिम्मेदारी कोर्चागिन पर आ गई। बुड्ढे को बडा ताज्जुब हुआ जब उसकी बीवी और लडकियो ने डट कर उसका विरोध किया, क्योकि उसको इस चीज की उम्मीद न थी। पावेल के आने के पहले रोज से ही घर दो विरोधी शिविरो में बट गया। मकान के जिस आधे हिस्से मे मा-बाप रहते थे, उसके दरवाजे मे ताला जड दिया गया और बगल का एक छोटा कमरा कोर्चागिन को किराये पर दे दिया गया।

पावेल ने किराया पेशगी दे दिया और इस चीज से बुड्ढे का गुस्सा कुछ कम हुआ। अब उसकी लडकिया उससे अलग हो गई थी और इसलिए उनके भरण-पोषण की जिम्मेदारी उसकी न रह गई थी।

कूटनीतिक कारणो से अलबिना अपने पति के साथ ही रही। जहा तक बुड्ढे की बात थी, तो वह अपने ही हिस्से मे रहता था और उस आदमी से मिलना बचाता था जिससे उसको इतनी सख्त नफरत थी। मगर बाहर हाते में वह ज्यादा से ज्यादा शोर मचाता था ताकि यह बात किसी को भूलने न पाये कि वही घर का मालिक है।

को-आपरेटिव मे काम करने से पहले बुड्ढा बमुत्सम जूते बना कर और बढईगिरी के काम से अपनी रोजी चलाता था और अब अपने लिए उसने एक छोटी सी वर्कशाप घर के पिछवाडे के हाते मे बना ली थी। अब पावेल को तग करने के लिए उसने अपने काम करने की बेन्च शेड से हटाकर पावेल की खिडकी के ठीक सामने हाते मे जमा ली थी और वहा बैठा घटो ताबडतोड हथोडी चलाया करता और उसको इस बात से एक ढग का सतोष मिलता कि उसके काम से कोर्चागिन की पढाई मे बाधा पड रही है।

वह दात पीस कर अपने मन मे कहता, "रुको बच्चू, मैं ऐसी हालत पैदा कर दूगा कि सर पर पैर रख कर भागोगे।"

दूर क्षितिज पर स्टीमर का काला धुआ पानी पर फैला हुआ था। समुद्री चिडियो का झुड तीखी आवाज में शोर करता हुआ समुद्र पर टूटता था।

पावेल हथेली पर अपनी ठुड्डी टिकाये अपने विचारो मे डूबा बैठा था। उसकी पूरी जिन्दगी, बचपन से लेकर आज तक, जल्दी-जल्दी उसकी मन की आखों के आगे घूम गई। उसकी जिन्दगी के चौबीस बरस कैसे बीत गये थे ? उसने अपनी जिन्दगी को ठीक से बिताया था या नही ? उसने साल-के-साल उनके ऊपर दुबारा गौर किया, गभीरता मे, निष्पक्ष होकर, और तब उसे यह जान कर बडा सन्तोष मिला कि उसने जिन्दगी को कुछ यो ही नही बिताया था, उसका ठीक ही इस्तेमाल उसने किया था। उसमे गलतिया जरूर हुई थी, जवानी की अनुभवहीनता की गलतिया और मुख्य रूप से समझदारी की कमी की गलतिया। मगर सोवियत सत्ता के लिए होने वाले सघर्ष के तूफानी दिनो मे वह लडाई के तूफान मे रहा था और क्राति के लाल झडे पर उसके अपने खून की भी कुछ बूदें जरूर थी।

जब तक उसकी शक्तियो ने जवाब न दे दिया, वह बराबर लडने वालो की कतार मे रहता आया और अब घायल हो जाने पर, जबकि गोली चलाने वालो की कतार मे खडे रहना उसके लिए मुमकिन न था, इसके सिवा वह और कर भी क्या सकता था कि मैदानी अस्पताल मे दिन गुजारे ? उसे उस समय की

याद आई जब उन लोगो ने वारसा पर हमला किया था और लडाई जब अपने शिखर पर थी, तो कैसे एक सिपाही को गोली लगी थी। वह अपने घोडे की टापो के नीचे जमीन पर गिर पडा। उसके साथियो ने जल्दी-जल्दी उसके जख्म पर पट्टी बाधी, उसे स्ट्रेचर वालो के सिपुर्द किया और दुश्मन का पीछा करते हुए तेजी से आगे निकल गये। एक घायल सैनिक के लिए आगे बढता हुआ दस्ता रुका न था। एक महान लक्ष्य के लिए लडी जाने वाली लडाई मे ऐसा ही हो सकता था और ऐसा ही हुआ। यह सही है कि उसने ऐसे तोपची भी देखे थे जिनकी टागें न थी और जो तोप को खीचने वाली गाडियो पर सवार होकर लडाई मे जाते थे। ऐसे आदमी दुश्मन को दहला कर रख देते थे, उनकी तोपें चारो तरफ मौत और तबाही बिखेर देती थी और अपनी इस्पाती हिम्मत और कभी न चूकने वाली आख के कारण वे अपनी टुकडियो के लिए गौरव योग्य भी होते थे। मगर ऐसे लोग बहुत कम थे।

अब उसे क्या करना था, जब पराजय ने उसे छा लिया था और लडने वालो की कतार मे वापस पहुचने की कोई उम्मीद न थी? क्या उसने वासा-नोवा से खोद-खोद कर यह बात नही पूछ ली थी कि उसे भविष्य मे और भी बडी यातनाए भुगतनी पडेंगी? तो अब क्या किया जाय? यह सवाल, उसके पैरो के पास फैली हुई चौडी-सी खाई की तरह, मुह बाये उसके सामने खडा था और इसका कोई जवाब उसके पास न था।

अब वह किस चीज के लिए जीये, जब वही चीज न रही जो उसकी नजर मे सबसे अनमोल थी, यानी लड सकने की क्षमता? वह क्या कह कर अपने मन को समझाये कि वह आज किस चीज के लिए जी रहा है और कल किस चीज के लिए जीयेगा, जब कही कोई खुशी नही? किस तरह वह अपनी जिंदगी के दिनो को गुजारे? जीये सिर्फ सास लेने के लिए, खाने के लिए, पीने के लिए? जब उसके साथी लडते हुए आगे बढ रहे हो, तो क्या वह असहाय दर्शक की तरह खडा रहे? एक बोझ बन जाय अपनी फौजी टुकडी के लिए? क्या यह बेहतर न होगा कि वह अपने शरीर को खतम कर दे जिसने उसके साथ दगा की? सीने मे एक गोली—और मामला साफ, यह बेमतलब जिंदगी खत्म! एक जिंदगी जो अच्छी तरह बिताई गई, जिसके लिए आदमी को फख्र हो सकता है! उसका यही मुनासिब अत होगा! इसके बाद भी जीना तो लाश को घसीटना होगा! अपनी यत्रणा को खतम करने के लिए जिस सिपाही ने अपने-आपको खतम कर दिया, उसकी निंदा कोई क्यो करेगा?

उसने अपनी जेब मे पडी हुई चपटी ब्राउनिंग पिस्तौल का स्पर्श अनुभव किया। उसके हत्थे पर उसकी उगलिया मजबूती से जम गईं और धीरे-धीरे उसने अपनी पिस्तौल बाहर निकाली।

"किसने सोचा था कि तुम्हारा यह अंत होगा ?"

पिस्तौल की नली ठंडी उपेक्षा से उसकी ओर देख रही थी। उसने पिस्तौल अपने घुटने पर रख ली और अपने-आपको बुरा-भला कहने लगा।

"वीरता का यह प्रदर्शन बहुत सस्ता है दोस्त ! खुद को गोली मार कर तुम दिखलाना चाहते हो कि बडी बहादुरी का काम कर रहे हो ! मगर इसमे क्या रखा है कोई भी अपने-आपको गोली मार सकता है, बेवकूफ-से-बेवकूफ आदमी भी। यह तो सबसे आसान रास्ता है, कायर आदमी का रास्ता। जब जिंदगी भारी हो जाय, तब गोली तो मारी ही जा सकती है। मगर क्या तुमने जिंदगी से लड कर उसे हराने की कोशिश की ? क्या तुम विश्वास के साथ यह कह सकते हो कि इस फौलादी घेरे को तोड कर निकलने की तुमने हर मुमकिन कोशिश की ? क्या तुम नोवोग्राद-वोलिन्स्की की उस लडाई को भूल गये जिसमे हमने दिन-भर मे सत्रह बार हमले किये और आखिरकार सभी मुश्किलो के बावजूद कामयाबी हासिल की ? पिस्तौल को रख दो और फिर कभी इसकी बात किसी से न कहो। जीवन जब असह्य हो उठे, तब भी जीने की कला सीखो। अपने जीवन को उपयोगी बनाओ।"

वह उठ खडा हुआ और सड़क पर चलने लगा। उधर से गुजरते हुए एक पर्वतारोही ने उसे अपनी गाडी पर चढा लिया। शहर पहुंच कर वह उतर गया और उसने एक अखबार खरीदा और देमियान वेदनी क्लब मे शहर के पार्टी ग्रुप की एक मीटिंग का ऐलान पढा। उस रात को जब पावेल घर लौटा तो बहुत देर हो गई थी। वह उस मीटिंग मे बोला भी था और उसे इस बात का कतई गुमान न था कि वह अपनी जिंदगी मे आखिरी बार किसी बडी आम मीटिंग मे बोल रहा है।

वह घर लौटा तो उसने देखा कि ताया अब भी जगी हुई थी। पावेल के इतनी देर तक न आने से वह परेशान हो रही थी। सोच रही थी कि उसके साथ क्या बात हो गई जो वह घर नही लौटा। उसे इसलिए और भी परेशानी हो रही थी कि उस सुबह को उसने पावेल की आखो मे एक अजीब कठोर, ठंडा भाव देखा था, उन आखो मे जो हमेशा जिंदगी से इतनी भरपूर नजर आती थी। उसे अपने बारे मे बात करना अच्छा नही मालूम होता था। मगर ताया महसूस कर रही थी कि पावेल को कोई गहरी मानसिक परेशानी है।

उसकी मा के कमरे की दीवाल घडी ने जिस वक्त दो का घंटा बजाया, उसने फाटक के चू करने की आवाज सुनी और अपनी जाकट चढाती हुई दरवाजे को खोलने के लिए गई। ताया उसके पास से गुजरी तो लोला, जो अपने कमरे मे सो रही थी, बेचैनी से बडबडाई।

"मुझे परेशानी होने लगी थी," ताया ने खुशी और इतमीनान से फुस-फुसा कर उस समय कहा जब कि पावेल हाल के अदर दाखिल हुआ।

पावेल ने भी वैसे ही धीमे से जवाब दिया, "ताया, जब तक मैं जिदा हू, मुझे कुछ नही हो सकता। लोला सो रही है? किसी वजह से मुझे जरा भी नीद नही आ रही है। मुझे तुमसे कुछ बात कहनी है। चलो हम लोग तुम्हारे कमरे मे चलें ताकि लोला की नीद खराब न हो।"

ताया हिचकिचाई। रात बहुत जा चुकी थी। इतनी रात गये वह कैसे पावेल को अपने कमरे मे ले जाय? मा क्या सोचेगी? मगर वह इनकार न कर सकी क्योकि उसे डर था कि पावेल का जी दुखेगा। उसने मन मे कहा, "क्या बात हो सकती है," और उसे अपने कमरे से ले गई।

"बात यह है ताया," पावेल ने धीमी आवाज मे कहना शुरू किया। कमरे मे मद्धिम प्रकाश था और पावेल ताया के ठीक सामने बैठ गया, इतने पास कि ताया उसकी सास को महसूस कर सकती थी। "जिदगी कभी-कभी ऐसे अजीब मोड ले लेती है कि आदमी हैरान रह जाता है। मेरे पिछले कुछ दिन बहुत ही बुरे गुजरे है। मेरी समझ ही मे नही आता था कि मैं जीऊ कैसे। इसके पहले कभी मुझे जिदगी इतनी अधेरी न नजर आई थी। मगर आज मैंने अपने मन के पोलिटिकल ब्यूरो की एक मीटिंग की और उसमे एक बहुत अहम फैसला किया। मैं जो कुछ तुमसे कहने जा रहा हू, उसे सुन कर चौकना मत।"

उसने ताया को वह सब-कुछ बतलाया जो पिछले महीनो उस पर गुजरा था और बहुत-सी वे बाते भी जो उस दिन पार्क मे उसके मन मे आई थी।

"तो यही मेरी परिस्थिति है। अब वह सबसे जरूरी बात मैं तुमसे कहना चाहता हू। इस घर के अदर तूफान अब शुरू ही हो रहा है। हमे इस कुए मे से जितनी दूर मुमकिन हो सके, बाहर ताजी हवा मे चले जाना चाहिए। हमे नये सिरे से अपनी जिदगी शुरू करनी चाहिए। एक बार जब मैंने इस लडाई मे हिस्सा लिया है, तो मैं अत तक उसको निबाहूगा। हम लोगो की, यानी तुम्हारी और मेरी जिदगी इस वक्त कुछ बहुत सुखी नही है। मैंने फैसला किया है कि इसके अदर कुछ नई गरमाहट डालूगा। क्या तुम जानती हो कि मेरा क्या मतलब है? तुम क्या मेरी जीवन-सगिनी, मेरी पत्नी बनोगी?"

ताया सास रोक कर उसकी बातो को सुन रही थी और इन अतिम शब्दो को सुन कर चौक पडी।

पावेल अपनी बात कहता गया, "मैं आज रात ही तुमसे जवाब देने के लिए नही कह रहा हू। तुम अच्छी तरह इस चीज पर विचार कर लो। मैं समझता हू कि तुम्हारी समझ में यह बात नही आ रही है कि पहले बहुत दिन तक प्रेम का किस्सा चलाये बिना कैसे यह चीज ऐसे लट्ठमार तरीके से कही

जा सकती है। मगर हमको इस तरह की वाहियात बातो की कोई जरूरत नही है ? यह लो, मै तुम्हे अपना हाथ देता हू। अगर तुम मुझ पर विश्वास करोगी तो मुझे गलत न समझोगी। हम दोनो एक-दूसरे को बहुत कुछ दे सकते है। मैने जो निश्चय किया है, वह यह कि हमारा सम्बध तब तक कायम रहेगा जब तक कि तुम एक सच्ची इसान, एक सच्ची बोल्शेविक नही बन जाती। अगर मै तुम्हारे लिए इतना भी न कर सकू तो मेरा मोल कौडी के बराबर भी नही। तब तक हमे यह सम्बध नही तोडना होगा। मगर जब तुम बडी हो जाओगी, समझदार हो जाओगी, तब तुम्हारे ऊपर किसी किस्म की कैद नही रहेगी। कौन जानता है क्या हो ? हो सकता है कि मेरा शरीर बिलकुल टूट जाय और उस हालत मे इस बात को याद रखना कि तुम अपने-आपको किसी भी तरह मुझमे बधा हुआ न समझना।"

कुछ क्षणो के लिए वह खामोश हो गया और फिर प्यार से भरी हुई, नरम आवाज मे बोला "और फिलहाल मै तुम्हे अपनी दोस्ती और अपना प्यार देना चाहता हू।"

उसने ताया का हाथ अपने हाथ मे ले लिया और बडा इतमीनान महसूस करने लगा मानो ताया अपनी रजामदी दे चुकी हो।

"तुम वादा करते हो कि मुझे कभी नही छोडोगे ?"

"मै तुम्हे सिर्फ वचन दे सकता हू ताया। तुम चाहे विश्वास करो, चाहे न करो, लेकिन तुम्हे समझना चाहिए कि मेरे जैसे आदमी अपने दोस्तो के साथ दगा नही करते...इतना बहुत है कि वे मेरे साथ दगा न करे," उसने तीखेपन से इतना और जोड दिया।

ताया ने जवाब दिया, "मै आज रात तुमको जवाब नही दे सकती। मुझे सोचने का समय दो, यह तो बडी अचानक बात हो गई।"

पावेल उठ खडा हुआ।

"सो जाओ ताया। सुबह होने मे अब देर नही है।"

वह अपने कमरे मे चला गया और बिना कपडे उतारे बिस्तर पर लेट गया और इधर उसका सिर तकिये से लगा और उधर वह नीद मे डूब गया।

पावेल के कमरे मे खिडकी के पास वाली मेज पर पार्टी की लाइब्रेरी की किताबो, अखबारो और कई कापियो का ढेर लगा था जिनमे पावेल ने अपने नोट लिख रखे थे। इसके अलावा उसके कमरे मे था एक बिस्तर, दो कुर्सिया और चीन का एक बडा-सा नक्शा जिस पर काली और लाल झडिया पिन से खुसी हुई थी और जो उसके और ताया के कमरे के बीच के दरवाजे के ऊपर पिन से जडा हुआ था। स्थानीय पार्टी कमिटी के लोगो ने पावेल को उसकी जरूरत की किताबें और पत्र-पत्रिकाए देना मजूर कर लिया था और वादा

किया था कि शहर की सबसे बडी पब्लिक लाइब्रेरी के मैनेजर से कह देंगे कि पावेल जो-कुछ भी मागे, वह उसे भेज दिया करे। कुछ ही दिन बाद किताबो के बडे-बडे पार्सल आने लगे। लोला को यह देख कर बडी हैरानी होती थी कि वह बडे सवेरे से उठ कर अपनी किताबें लिये बैठा होता और सारा दिन पढता और नोट बनाता रहता। सिर्फ नाश्ते और खाने के लिए थोडी-थोडी देर के लिए उठता। शाम का वक्त वह दोनो लडकियो के साथ गुजारता और उन्हें अपनी दिन भर की पढी हुई बातें बतलाया करता।

आधी रात के भी बहुत बाद तक बुड्ढा क्युत्सम अपने इस आवाछित अतिथि, पावेल के कमरे के दरवाजे की सध मे से आती हुई रोशनी की पतली किरणो को देखता। वह पजे के बल खिडकी तक जाता और दरवाजे की सध से भीतर को झाकता तो देखता कि पावेल मेज पर सिर झुकाये पढ रहा है।

बुड्ढा अपने कमरे मे लौटते हुए बडबडाता, "शरीफ लोग न जाने कब सो गये मगर इसे देखो कि रात-भर रोशनी जलाता रहता है। समझता है जैसे वही यहा का मालिक हो। जब से वह यहा आया है, लडकिया भी हाथ से बिलकुल निकल गई।"

आठ साल मे पहली बार पावेल को खूब अवकाश मिल रहा था और उस पर किसी तरह के काम की कोई जिम्मेदारी न थी। उसने अपने वक्त का अच्छा इस्तेमाल किया और खूब उत्साह से पढता रहता, ऐसा उत्साह जो नये जिज्ञासुओ मे ही पाया जाता है। वह दिन मे अठारह घटे पढता रहता। कहा नही जा सकता कि इस कदर मेहनत को उसकी सेहत और कितने दिन तक बर्दाश्त कर सकेगी। मगर एक रोज ताया ने यू ही एक बात कह दी जिसने सारा नक्शा ही बदल दिया।

"तुम्हारे कमरे मे खुलने वाले दरवाजे से जो आलमारी अडी हुई थी, उसको मैंने अलग कर दिया है। अब अगर कभी तुम्हारी इच्छा मुझसे बात करने की हो तो तुम सीधे मेरे कमरे मे आ सकते हो। लोला के कमरे मे से होकर आने की कोई जरूरत नही।"

आवेग से पावेल का चेहरा तमतमा गया। ताया खुशी से मुस्कराई। उनके सम्बध पर मुहर लग गई।

बुड्ढे को अब कोने वाले कमरे की बद खिडकी की सध मे से रोशनी नजर नही आती। ताया की मा ने भी बेटी की आखो मे एक ऐसी चमक देखी जो एक ऐसे सुख का पता दे रही थी जिसे वह लडकी छिपा न पाती थी। उसकी आखो के नीले हलके विनिद्र रातो की कहानी कहते थे। अब अक्सर उस छोटे-से घर मे ताया के गाने और गिटार के बजने की गूज सुनाई देती।

मगर ताया का सुख बिना काटो का नही था। उसका जागा हुआ नारीत्व उनके सम्बन्ध की गोपन प्रकृति के खिलाफ विद्रोह करता था। हर आवाज पर वह काप-काप जाती थी, क्योंकि उसे लगता था कि जैसे वह अपनी मा के कदमो की आहट सुन रही हो। मान लो अगर वे पूछ बैठे कि वह क्यों रात को अपने कमरे की कुडी चढा लेती है तो ? पावेल ने उसके इस भय को लक्ष्य किया और उसे आश्वस्त करने की कोशिश की।

वह बडी नरमी से कहता, "तुम्हे किस चीज का डर है ? हम दोनो ही तो यहा के मालिक है। इतमीनान से सोओ। कोई हमारी जिन्दगी मे मदाखलत नही करने पायेगा।"

आश्वस्त होकर वह अपना गाल उसके सीने पर रख लेती और अपने प्रेमी को बाहो मे भरे हुए सो जाती और वह जागता पडा रहता और उसकी निश्चिन्त निर्द्वन्द्व सासे सुनता रहता। वह जरा भी न हिलता-डुलता ताकि ताया की नीद न खराब हो और भीतर-बाहर से उसका मन इस लडकी के लिए गहरे प्यार से भर उठता जिसने अपनी जिन्दगी उसके हाथो मे सौंप दी थी।

ताया की आखो की चमक का राज सबसे पहले लोला ने समझा और उस दिन से दोनो बहनो के बीच एक खाई-सी पड गई। जल्दी ही मा ने भी इस चीज का पता पा लिया, या यू कहे कि उसने भाप लिया। और तब उसे परेशानी हुई। उसे कोर्चागिन से इस चीज की उम्मीद न थी।

उसने लोला से कहा, "ताया का इस आदमी के साथ ठीक जोड नही बैठता। मैं तो समझ नही पा रही हू कि इसका क्या नतीजा निकलेगा ?"

उसके मन मे तरह-तरह की चिन्ताए उठी। मगर उसे इतना साहस न हुआ कि कोर्चागिन से कुछ कह सके।

बहुत से नौजवान पावेल के पास आने लगे और कभी-कभी इतने लोग हो जाते कि उस छोटे से कमरे मे उन सब के लिए काफी जगह ही न रहती। मधुमक्खियो की गुजार की तरह उन लोगो की आवाजें बुड्ढे के कान मे पडती और अक्सर वह उन लोगो का कोरस गान सुनता

गूज रहा है यह डरावना पागल सागर
गूज रहा दिन-रात क्रुद्ध भीषण इसका स्वर...

और पावेल का प्रिय गाना ·

सारी दुनिया भीज गई आखों के जल से

यह नौजवान कार्यकर्ताओ का वह स्टडी सर्किल था जिसे पार्टी कमिटी ने पावेल के जिम्मे सौंपा था, क्योकि वह बार-बार माग कर रहा था कि उसे प्रचार का काम दिया जाय। इसी तरह पावेल के दिन गुजरते थे।

उसने एक बार फिर अपने दोनो हाथो से मजबूती से पतवार पकड ली थी और उसकी जिंदगी की किश्ती, जो कई बार चट्टानो से टकराते-टकराते बची थी, अब फिर एक नई राह पर आगे बढी जा रही थी। उसका यह सपना कि वह अध्ययन के जरिये फिर से लडने वाले सैनिको की कतार मे शरीक हो सकेगा, पूरा होने आ रहा था।

मगर जिंदगी उसकी राह मे काटे बिछाती जा रही थी और वह हर काटे को बहुत तकलीफ और क्षोभ के साथ देखता था, क्योकि उसके कारण उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने मे देर हो रही थी।

एक रोज वह अभागा विद्यार्थी जौर्ज मास्को मे आ गया और अपने साथ अपनी बीवी को भी लेता आया। वह अपने बैरिस्टर ससुर के घर ठहरा और वहा से अपनी मा को पैसे के लिए परेशान करने लगा।

जौर्ज के आने से क्युत्सम घराने की खाई और चौडी हो गई। जौर्ज ने निस्सकोच होकर अपने बाप का साथ दिया और अपनी बीवी के घर वालो की मदद से, जो कुछ-कुछ सोवियत-विरोधी थे, उसने बेजा तरीको का इस्तेमाल करके कोर्चागिन को घर से निकालने की कोशिश की और ताया को बहलाना चाहा कि वह कोर्चागिन से सम्बध-विच्छेद कर ले।

जौर्ज के आने के दो हफ्ते बाद लोला को एक दूसरे शहर मे नौकरी मिल गई और वह अपनी मा और छोटे-से लडके को लेकर चली गई। कुछ रोज बाद पावेल और ताया भी समुद्र तट के एक शहर मे चले गये।

आर्तेम को अपने भाई के खत बहुत कम ही मिलते थे। मगर कभी-कभी जब उसे अपनी परिचित लिखावट का लिफाफा शहर की सोवियत मे अपनी मेज पर पडा मिलता तो वह बडे आवेग से उसके पन्नो पर नजर दौडाता। यह आवेग आर्तेम के लिए असाधारण चीज थी। आज भी जब उसने लिफाफा खोला तो प्यार से भरते हुए सोचा

"आह पावेल! काश कि तुम मेरे और पास रहा करते। मुझे तुम्हारी सलाह की कितनी जरूरत पडती है!"

उसने पढा

"आर्तेम, मैं आज तुम्हे वह सब-कुछ बतलाने के लिए खत लिख रहा हू जो पिछले दिनो मुझ पर गुजरा है। ऐसी बाते मै तुम्हे छोड और किसी को नही लिखता। मगर मैं जानता हू कि मै अपनी गुप्त-से-गुप्त बात तुमसे कह सकता हू क्योकि तुम मुझे अच्छी तरह जानते हो और मेरी बात को समझोगे।

"तन्दुरुस्ती के मोर्चे पर जिंदगी मुझे बराबर दबाती जा रही है और एक के बाद दूसरी चोट लगा रही है। एक चोट के बाद मैं किसी-किसी तरह अपने पैरो पर खडा हो पाता हू कि दूसरी चोट, पहली से भी ज्यादा निर्मम, ज्यादा कठोर, आकर मुझे ढेर कर देती है। सबसे भयानक बात यह है कि इसका मुकाबला करने की ताकत अब मेरे अदर नही है। पहले मेरी बाई बाह मे लकवा लगा। और अब जैसे कि इतना ही काफी न हो, मेरी टागो ने जवाब दे दिया है। पहले ही मैं मुश्किल से चल फिर सकता था (यानी अपने कमरे के अदर)। मगर अब तो मेरे लिए बिस्तर से मेज तक घिसट कर जाना भी मुश्किल हो गया है। और अभी और भी पता नही क्या-क्या देखना है। कोई नही जानता कि कल क्या होगा।

"मैं कभी घर से बाहर नही जाता और मेरी खिडकी से समुद्र का एक बहुत छोटा-सा टुकडा दिखाई देता है। क्या इससे ज्यादा करुण कोई बात हो सकती है कि एक ही आदमी मे दो विरोधी चीजो का मेल हो जाय—एक दगाबाज शरीर जिस पर किसी का वश न हो और एक बोल्शेविक का दिल, ऐसे बोल्शेविक का जो काम के लिए तरसता है, लडने वालो की कतार मे, तुम्हारी बगल मे, आकर खडा होना चाहता है, उन लोगो की कतार में जो आधी और तूफान मे पूरे मोर्चे पर आगे बढ रहे हैं।

"मुझे अब भी विश्वास है कि मैं लडने वालो की कतार मे शरीक हो सकूगा और हमला करने वाले दस्तो में मेरी सगीन की भी अपनी जगह होगी। मुझे यह विश्वास करना ही होगा। इस विश्वास को मैं छोड दू, इसका मुझे अधिकार नही है। दस साल तक पार्टी और कोमसोमोल ने मुझे लडना सिखाया है और हमारे नेता के शब्द, जो सबको सम्बोधित करके कहे गये थे, मेरे ऊपर उसी तरह लागू होते हैं 'ऐसे कोई किले नही हैं जिन्हे बोल्शेविक फतह नही कर सकते।'

"मेरी जिन्दगी इन दिनो पूरी तरह पढाई में ही गुजर रही है। किताबें, किताबें और किताबें। मैंने बहुत-कुछ पढ लिया है, आर्तेम। मैंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद की तमाम बुनियादी किताबें अच्छी तरह पढ ली हैं और कम्युनिस्ट यूनिवर्सिटी की पत्रो द्वारा दी गयी शिक्षा का पहले साल का इम्तहान पास कर लिया है। शाम को मैं कम्युनिस्ट नौजवानो का स्टडी सर्किल लेता हू। ये नौजवान साथी पार्टी सगठन की असली जिन्दगी के साथ मेरे सम्बध की कडी हैं। फिर ताया है जिसकी राजनीतिक शिक्षा और सामान्य ज्ञान को बढाने की मैं भरसक कोशिश कर रहा हू। और फिर प्यार तो है ही और मेरी छोटी-सी बीवी की मुहब्बत की बातें। हम दोनो, ताया और मैं, एक-दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त हैं। हमारा घर

बडी सादगी से चलता है – मेरी बत्तीस रूबल की पेन्शन और ताया की कमाई से हमारा काम अच्छी तरह चल जाता है। ताया उसी रास्ते पर चल रही है जिस रास्ते से मैं पार्टी मे पहुचा : कुछ दिन तक उसने एक घर में नौकरानी का काम किया और अब एक पब्लिक डाइनिंग रूम में (इस कस्बे मे कोई उद्योग-धंधे नही हैं) रकाबी धोने का काम करती है।

"अभी उस रोज की बात है कि ताया ने बडे गर्व से मुझे अपना डेलीगेट का पहला पास दिखलाया जो उसे महिला विभाग ने दिया है। उसके लिए यह कोरी एक दफ्ती का टुकडा नही है। उसके अन्दर मैं नई जिन्दगी को जन्म लेते देख रहा हू और नये के इस जन्म मे मैं उसकी मदद करने की हर कोशिश कर रहा हू। इसके बाद का अगला कदम होगा एक बडे कारखाने मे काम करना। वहा मेहनतकशो की एक बडी जमात के अग के रूप मे उसमे धीरे-धीरे राजनीतिक परिपक्वता आयेगी। मगर यहा तो जो अकेला रास्ता उसके लिए खुला है, उसी को वह ले रही है।

'ताया की मा दो बार हमसे मिलने आ चुकी हैं। अपने अनजाने में ही वह इस बात की कोशिश कर रही है कि ताया को फिर उन्ही ओछी बातों की जिन्दगी मे घसीट लिया जाय, उसी टुच्ची जिन्दगी में जो चारो तरफ छोटे-मोटे स्वार्थों से घिरी हुई है। मैंने अल्बिना को यह समझाने की कोशिश की कि उसे ऐसा कुछ न करना चाहिए जिससे कि उसके पिछले कुत्सित जीवन की छाया उस रास्ते को अधेरा कर दे जिसे उसकी लडकी ने अपने लिए चुना है। मगर कोई नतीजा नही निकला। मैं महसूस कर रहा हू कि एक-न-एक रोज मा अपनी बेटी के रास्ते मे आडे आयेगी और तब झगडा होकर रहेगा। प्यार लो,

"तुम्हारा—पावेल"

पुराने मत्सेस्ता मे सेनेटोरियम नम्बर पाच.. ईंट की एक तिमजिला इमारत, पहाड के कगार पर खडी हुई। चारो तरफ घना जगल और एक टेढा-मेढा रास्ता समुद्र की तरफ को। खिडकिया खुली हुई हैं और हवा के साथ गधक के सोतो की गध कमरे मे आ रही है। पावेल कोर्चागिन कमरे मे अकेला है। कल नये मरीज आयेंगे और तब उसे अपने कमरे का साथी मिलेगा। खिडकी के बाहर वह पैरो की आहट और एक परिचित आवाज सुनता है। कई लोग बात कर रहे हैं। मगर यह गहरी भारी आवाज उसने पहले कहा सुनी है ? स्मृति के धुधले पर्दों के पीछे मे, जहा वह छिपा पडा था मगर भूला न था, वह नाम उसके दिमाग मे आता है लेदेनेव इन्नोकेंती पावलोविच। वही है और कोई नही।

पावेल ने विश्वास से अपने मित्र को आवाज दी और क्षण भर बाद लेदेनेव उसके बिस्तर के बगल में खड़ा उ ापे हाथ मिला रहा था।

"तो कोर्चागिन अब भी मजे मे चला आ रहा है ? हा, तो तुम्हें अपने बारे में क्या कहना है ? मैं यह नही सुनना चाहता कि तुमने लम्बी बीमारी का फैसला किया है ? नही, यह नही होने का ! तुम्हें मुझसे नसीहत लेनी चाहिए। डाक्टरो ने मुझे भी उठाकर ताक पर रखने की कोशिश की, मगर मैं बावजूद उनके मजे मे चला जा रहा हू।" और लेदेनेव दिल खोल कर हसा।

मगर पावेल ने उस हसी के पीछे छिपी हुई सहानुभूति और वेदना को अनुभव किया।

उन्होने दो घटे साथ गुजारे। लेदेनेव ने पावेल को मास्को की ताजी-ताजी खबरें सुनाईं। उसी से पावेल को खेती के समूहीकरण और गावो की जिन्दगी के पुनर्संगठन के बारे में पार्टी के अहम फैसलो की बात पहले-पहल मालूम हुई और उसने प्यासे की भाति उसके एक-एक शब्द को पी लिया।

लेदेनेव ने कहा, "मैं तो सोच रहा था कि तुम अपने उक्रेन मे कुछ हलचल मचा रहे होगे। मगर तुमने तो मुझे निराश कर दिया। पर कोई बात नही, मेरी हालत तो तुम से भी खराब थी। मैं तो सोचता था कि मैंने हमेशा के लिए बिस्तर पकड लिया और अब देखो मैं मजे मे चल-फिर रहा हू। आजकल जिन्दगी मे आराम नही है। उससे काम ही नही चल सकता ! मैं अपने दिल का चोर तुमसे कहू, मैं कभी-कभी सोचता हू कि कैसा अच्छा हो अगर थोडा आराम कर सकू। यही समझो कि चैन से सास ले सकू। यह भूलने से तो काम नहीं चलेगा कि मैं अब पहले की तरह जवान नही हू और कभी-कभी दिन मे दस-बारह घटे काम करना मेरे लिए मुश्किल हो जाता है। मगर उससे होता क्या है, मैं थोडी देर इस विचार से अपने जी को बहला लेता हू और अपने बोझ को कम भी करने लग जाता हू। मगर उसका नतीजा कुछ खास नही निकलता। पता नही कब और कैसे फिर तुम काम के पहाड के नीचे दब जाते हो और आधी रात के पहले घर लौटना नसीब नही होता। जितनी ही ताकतवर मशीन होती है, उतने ही तेज उसके पहिये दौडते हैं और हम लोगो का तो यह हाल है कि हमारी रफ्तार रोज-ब-रोज बढती जाती है, यहा तक कि हमारे जैसे बुड्ढो को भी नौजवान बने रहना पडता है।"

लेदेनेव ने अपनी चौडी पेशानी पर हाथ फेरा और नरमी मे बोला :

"और अब तुम मुझे अपने बारे में बतलाओ।"

अपनी पिछली मुलाकात से लेकर अब तक पावेल ने लेदेनेव को अपनी जिन्दगी का ब्यौरा दिया और बोलते समय उसने अपने दोस्त की प्यार भरी निगाहें अपने ऊपर महसूस की, मानो वे उसकी बात का समर्थन कर रही हो।

चट्टान के एक कोने में पेडों की छाया मे सेनेटोरियम के कुछ मरीज एक छोटी-सी मेज के चारो तरफ बैठे हुए थे। उनमे से एक "प्रावदा" पढ रहा था, उसकी घनी भवो मे बल पडे हुए थे। उसकी काली रूसी कमीज, पुरानी-सी चिमुडी-मिमुडी टोपी, और दाढी बढा हुआ चेहरा, गढ्ढे मे धसी हुई नीली आखें—इन सबसे पता चलता था कि वह पुराना खान मजदूर है। खिलाफ चेर्नोकोजोव को खान छोडे और एक महत्वपूर्ण सरकारी पद पर पहुचे बारह बरस हो चुके थे, मगर उसको देखकर ऐसा लगता था कि जैसे वह अभी-अभी खान मे से निकल कर आ रहा हो। उसकी चाल-ढाल, उसका बोलने का तरीका, उसकी हर चीज मे पता चलता था कि वह खान-मजदूर है।

चेर्नोकोजोव पार्टी की इलाकाई ब्यूरो का मेम्बर और सरकार का सदस्य था। एक बहुत तकलीफदेह बीमारी उसकी ताकत को खाये जा रही थी चेर्नोकोजोव की टाग म गैंगरीन था जिससे उसे सख्त नफरत थी, क्योकि उसीके कारण वह करीब छ महीने से बिस्तर पर पडा हुआ था।

उसके सामने अपने विचार मे डूबी हुई और सिगरेट का कश खीचती हुई जिगारेवा बैठी थी—अलेक्जाड्रा अनेक्सीयेवना जिगारेवा। उसकी उम्र सैंतीस साल थी और उनम से उन्नीस साल से वह पार्टी मेम्बर थी। पीटर्सबर्ग के अडरग्राउड आन्दोलन के साथी उसे "बानु मजदूर शुरोचका" पुकारते थे। वह जब लडकी ही थी, तभी उसे साइबेरिया निर्वासित किया गया था।

इस टोली का तीसरा सदस्य पाकोव था। उसका खूबसूरत सिर जो किसी मूर्तिकार की छेनी से तराशा हुआ मालूम होता था, एक जर्मन पत्रिका पर झुका हुआ था। वह बीच-बीच मे हाथ उठा कर सीग का डडी वाली अपनी बडी-सी ऐनक को ठीक कर लेता था। कसरती शरीर वाले इस तीस साल के आदमी को अपनी लकवे की मारी टाग को घसीटते देख कर बडी तकलीफ होती थी। पाकोव सम्पादक और लेखक था और शिक्षा की कमिसारियट मे काम करता था। योरुप के बारे मे उसे बहुत जानकारी थी और उसे कई विदेशी जबाने आती थीं। वह काफी पढा-लिखा आदमी था, और कम बोलने वाला चेर्नोकोजोव उसके साथ आदर का बरताव करता था।

"तो वही तुम्हारे कमरे का साथी है ?" जिगारेवा ने धीमे से चेर्नोकोजोव स कहा और उस कुर्सी की तरफ इशारा किया जिस पर पावेल बैठा था।

चेर्नोकोजोव ने अखबार पर से निगाह उठाई और उसकी पेशानी की झुर्रिया साफ हो गई।

"हा ! वह कोर्चागिन है। तुम्हें उसे जानना चाहिए शुरा। बडी बुरी बात है, बीमारी ने उसको लगो मार दी है, नही तो वह हमारे बडे काम का हो सकता था। वह कोमसोमोल की पहली पीढी का आदमी है। मुझे इस बात

का यकीन है कि अगर हम उसकी मदद करें—और यही करने का मैंने फैसला किया है—तो वह अब भी काम कर सकेगा।"

पांकोव ने भी चेर्नोकोजोव की बात सुनी।

"उसे क्या बीमारी है?" शुरा जिगारेवा ने धीमे से पूछा।

"गृह-युद्ध का उपसंहार। उसकी रीढ़ की हड्डी में कोई तकलीफ है। मैंने यहां के डाक्टर से बात की थी और उसने मुझे बतलाया कि उसके पूरे शरीर में लकवा मार जाने का खतरा है। बेचारा लड़का!"

"मैं जाकर उसे यहां ले आती हूं," शुरा ने कहा।

यही उनकी दोस्ती की शुरुआत थी। पावेल उस समय यह नहीं जानता था कि आगे चल कर उसे जिगारेवा और चेर्नोकोजोव से इतना प्यार हो जायगा और आगामी बीमारी के मार्गों में वे ही उसका सहारा बनेंगे।

जिन्दगी बदस्तूर चलती रही। ताया काम करती थी और पावेल पढ़ता था। स्टडी सर्किल के काम को दुबारा शुरू करने से पहले एक और मुसीबत अनचिते में उस पर टूट पड़ी। लकवे स उसकी दोनों टांगें बिलकुल बेकार हो गईं। अब उसे सिर्फ अपने दाहिने हाथ पर बस रह गया। जब बार-बार कोशिश करने के बाद आखिरकार उसकी समझ में यह बात आ गई कि अपने शरीर पर उसका कोई बस नहीं रहा, तो उसने इतने जोर से दांत अपने होंठ पर गड़ाये कि खून आ गया। ताया को इस बात से बड़ा क्षोभ और बड़ी पीड़ा होती थी कि वह पावेल की कोई मदद करने में असमर्थ थी। मगर उसने बड़ी वीरता से अपने मन के उस भाव को छिपा लिया। लेकिन पावेल ने मुस्करा कर मानो क्षमा मांगते हुए ताया से कहा

"ताया अब हम दोनों को एक-दूसरे से अलग हो जाना चाहिए। यह चीज हमारे इकरारनामे में नहीं थी। आज मैं इस बारे में ठीक से सोचूंगा।"

ताया ने उसको बोलने नहीं दिया। वह सिसकियां लेने लगी और रोते-रोते अपना चेहरा उसने पावेल के सीने में छिपा लिया।

आर्तेम को जब अपने भाई की इस आखिरी बदनसीबी की खबर मालूम हुई तो उसने अपनी मां को खत लिखा। मारिया याकोवलेवना सब कुछ छोड़ कर फौरन अपने बेटे के पास गई। अब तीनों साथ रहने लगे। ताया और पावेल की मां में शुरू से ही बनने लगी।

पावेल सब कुछ के बावजूद अपना अध्ययन चलाता रहा।

जाड़े की एक शाम को ताया ने घर आकर अपनी पहली विजय का समाचार दिया—वह शहर सोवियत के लिए निर्वाचित हुई थी। उसके बाद पावेल की ताया से बहुत कम मुलाकात हो पाती। सेनेटोरियम की रसोई में दिन भर काम करने के बाद, और उसका काम रकाबियां धोना था, ताया

सीधे सोवियत में आती और जब बहुत रात गये घर लौटती तो थकी होती। मगर तमाम खयालात उसके अन्दर भरे होते। कुछ ही रोज बाद वह पार्टी मेम्बर की उम्मीदवारी के लिए दरखास्त देगी और वह बडा आतुर उत्सुकता से अपने उस चिर-प्रतीक्षित दिन की तैयारी कर रही थी। और तभी दुर्भाग्य ने पावेल पर एक और चोट की। पावेल की बराबर बढती हुई बीमारी अन्दर-ही-अन्दर अपना काम किये जा रही थी। पावेल की दाहिनी आख मे तेज जलन और भयानक दर्द हुआ जो तेजी से बाईं आख मे भी पहुच गया। एक काला पर्दा गिर गया और उसके चारो तरफ की दुनिया बुझ गई और जिन्दगी मे पहली बार पावेल ने अधे हो जाने की भयानकता को समझा।

एक नई बाधा चुपके-चुपके आकर उसके रास्ते मे खडी हो गई थी—एक भयंकर, अजेय दीख पडने वाली बाधा। उसके कारण ताया और पावेल की मा को बडी निराशा हुई। मगर पावेल बर्फ की तरह सर्द और खामोश था। उसने मन मे सकल्प करते हुए कहा

"मुझे इन्तजार करना चाहिए, देखू क्या होता है। अगर सचमुच आगे बढने की कोई सभावना न हो, अगर लडने वालों की कतार में वापस पहुचने की मेरी तमाम कोशिशो को यह आख की रोशनी का चला जाना खतम किये दे रहा हो, तो मैं जिन्दगी की कहानी को ही समाप्त कर दूगा।"

पावेल ने अपने दोस्तो को चिट्ठिया लिखीं और उसके दोस्तों ने उसे जवाब देते हुए यह लिखा कि हिम्मत से काम लो और अपनी जिन्दगी की लडाई को बुलन्दी से जारी रखो।

कठिन संघर्ष के इन्हीं दिनों में एक रोज ताया बहुत खुश-खुश घर आई और उसने ऐलान किया

"मैं पार्टी की उम्मीदवार हो गई, पावलुशा!'

पावेल ने उस सेल-मीटिंग का वृत्तान्त आवेश मे भरी हुई ताया के मुह से सुना जिसमें उम्मीदवारी की उसकी अर्जी मजूर हुई थी और उस समय पावेल को अपने वे दिन याद आये जब उसने पार्टी के अन्दर कदम रखा था।

उसने ताया का हाथ दबाते हुए कहा, "अच्छा तो कामरेड कोर्चागिन, तुम और मैं मिल कर अब एक कम्युनिस्ट फैक्शन बन गये।"

अगले रोज उसने पार्टी की जिला कमिटी के मत्री को एक खत लिखा जिसमें उससे दरखास्त की कि वह आकर उससे मिले। उसी शाम को कीचड मे सनी हुई एक गाडी मकान के सामने आकर रुकी और उसके एक मिनट बाद वोलमर पावेल का हाथ खूब जोरों मे दबा रहा था। वोलमर एक अधेड लतावियन था और उसकी खूब फैली हुई, कानो तक पहुचती हुई दाढी थी।

"कहो क्या हाल है ? तुम्हारी इन हरकतो का क्या मतलब है ? फौरन उठ बैठो। हम तुम्हे गाव मे काम करने भेज देंगे," उसने हसते हुए कहा।

वह दो घटे तक पावेल के पास रहा और उस मीटिंग के बारे मे भी भूल गया जिसमे उसे जाना था। वह कमरे मे टहलता रहा और पावेल के इस आग्रहपूर्ण अनुरोध को सुनता रहा कि उसे कोई काम दिया जाय।

पावेल ने जब अपनी बात खतम कर ली तो उसने कहा, "स्टडी सर्किलो की बात करना छोड दो। तुम्हे आराम करना है। और हमे तुम्हारी आख की भी फिक्र करनी है। मुमकिन है अब भी कुछ हो सके। कैसा रहे अगर तुम अपनी आख मास्को के किसी विशेषज्ञ को दिखलाओ ? सोच देखो ।"

मगर पावेल ने उसको बीच मे ही टोकते हुए कहा

"कामरेड वोलमर, मुझे आदमी चाहिए, जीते-जागते रक्त व मास के आदमी ! आज मुझे उन्ही की जरूरत है और जितनी जरूरत आज है, उतनी पहले कभी नही थी। मेरे पास लडको को भेजिए, उनको जिनके पास सबसे कम अनुभव है। वे यहा गावो मे बहुत उग्र वामपक्षी होते जा रहे है। पचायती खेती से उनकी शक्तियो को काफी निकास नही मिलता, वे अपने कम्यून बनाना चाहते हैं। कोमसोमोलो को तो आप जानते ही हो, अगर उन्हें पीछे न खीचा जाय तो कुछ अजब नही कि वे दस्ते के आगे-आगे चलने लगें। मैं खुद भी ऐसा ही था।"

वोलमर टहलता-टहलता रुक गया।

"तुम्हें यह बात कैसे मालूम हुई ? आज ही तो देहात मे यह खबर मिली है।"

पावेल मुस्कराया।

"मेरी बीवी ने मुझे बतलाया। तुम्हे शायद उसकी याद हो। उसे कल पार्टी के अन्दर ले लिया गया।"

"तुम्हारा मतलब कोर्चागिन से है जो रकाबिया धोती है ? अच्छा तो वह तुम्हारी बीवी है ! मुझे नही मालूम था !" कुछ देर के लिए वह चुप हो गया। मगर तभी उसे कोई खयाल आया और उसने अपने माथे पर हाथ मारा। मैं समझ गया कि तुम्हारे पास किसे भेजूगा— लेव बर्सेनेव को। उससे अच्छे साथी की तुम आकाक्षा नही कर सकते। वह बिलकुल तुम्हारे दिल का आदमी है। तुम दोनो मे खूब पटेगी—दो हाई फ्रीक्वेन्सी ट्रान्सफार्मरो की तरह। मैं भी कभी बिजली का काम करता था और उसी के शब्द अब तक मुझे याद है। लेव तुम्हारे लिए रेडियो तैयार कर देगा। इस काम मे वह बहुत उस्ताद है। मैं अक्सर उसके घर पर कान मे इयरफोन लगाये दो-दो बजे रात तक बैठा रहता हू। मेरी बीवी को तो मुझ पर शक होने लगा। वह जानना चाहती थी कि मैं क्यो इतनी-इतनी देर करके घर लौटता हू।"

कोर्चागिन मुस्कराया।

उसने पूछा, "वर्सेनेव कौन है ?"

वोलमर ने टहलना बंद कर दिया और बैठ गया।

"वह हमारा नाजिर है, मगर सच पूछो तो उसको यह काम उतना ही आता है जितना मुझे बैले नृत्य करना। अभी हाल तक वह एक महत्वपूर्ण पद पर था। सन् १९१२ से वह आदोलन मे है और क्रांति के समय से ही पार्टी मेम्बर है। गृहयुद्ध के दिनो मे वह दूसरी घुडसवार फौज की क्रातिकारी अदालत मे काम कर चुका है। यही वह वक्त था जब ह्वाइट-गार्ड पिस्सुओ की सफाई की जा रही थी। वह जारित्सिन मे भी था और दक्खिनी मोर्चे पर भी। फिर कुछ दिनों तक वह सुदूर-पूर्वी प्रजातत्र की सर्वोच्च फौजी अदालत का भी सदस्य था। वहा उसे बहुत काम करना पडता था, और उसके दिन आसान नही गुजरते थे। आखिरकार उसे तपेदिक हो गया। तब वह उस सुदूर-पूर्वी इलाके को छोड कर यहा काकेशस में चला आया। पहले वह यहा एक सूबाई अदालत का चेयरमैन और टेरीटोरियल अदालत का नायब चेयरमैन रहा। फिर उसकी फेफडे की बीमारी ने उसे बिलकुल ही माजूर कर दिया। तब उसके सामने यही रास्ता रह गया कि या तो यहा आकर आराम करे या मर जाय। इस तरह हमको इतना अच्छा नाजिर मिला। यह काम भी अच्छा ही है। इसमे बहुत भाग-दौड नही करनी पडती और उसके लिए ऐसे ही काम की जरूरत थी। धीरे-धीरे यहा के लोगो ने उसके जिम्मे एक सेल कर दिया। उसके बाद वह जिला कमिटी के अन्दर चुना गया। और फिर देखते-देखते एक राजनीतिक स्कूल का भार उसे सौंप दिया गया और अब वह कन्ट्रोल कमीशन मे है। वह ऐसे तमाम महत्वपूर्ण कमीशनो का स्थायी सदस्य है जो कठिन झगडो को सुलझाने के लिए बनाये जाते हैं। इसके अलावा उसे शिकार का शौक है। उसे रेडियो भी बहुत अच्छा लगता है और गोकि अब उसके पास सिर्फ एक फेफडा है, लेकिन यह तुम उसको देख कर भाप नही सकते। उसके अन्दर शक्ति तो फूटी पडती है। मैं अच्छी तरह जानता हू कि उसकी मौत जिला कमिटी और अदालत के रास्ते में ही कही होगी।"

पावेल ने उसकी बात को काटा।

तेज स्वर मे उसने पूछा, "तुम लोगो ने आखिर क्यो उस पर इतना बोझ लाद दिया है ? यहा तो वह पहले से भी ज्यादा काम कर रहा है।"

वोलमर ने उसको मजाक के अन्दाज मे देखा और कहा

"और मान लो मैं तुम्हे कोई स्टडी सर्किल या ऐसा ही कोई काम थमा दू, तो लेव जरूर यही कहेगा 'तुम लोगो ने आखिर क्यो उस पर इतना बोझ

लाद दिया है ?" मगर जहा तक उसकी अपनी बात है, वह यही कहता है कि मुझे एक साल तक डट कर काम करना मजूर है, मगर पाच साल अस्पताल मे पडे रह कर खटिया तोडना मजूर नही। ऐसा लगता है कि समाजवाद कायम होने के पहले हम लोग अपने आदमियो की ठीक देखभाल न कर सकेंगे।"

"यह बात बिलकुल सच है। मुझे खुद जीवन और उत्साह का एक वर्ष, बेकार के पाच वर्षो से ज्यादा पसद है। मगर यह भी मानना पडेगा कि हम लोग कभी-कभी अपनी शक्तियो को बहुत बुरी तरह बर्बाद कर देते हैं, जिसका हमे कोई हक नही है। अब मैं इस बात को समझ गया हू कि यह चीज वीरता का चिह्न उतना नही है, जितना कि अयोग्यता और गैर-जिम्मेदारी का। अब मैं इस बात को समझने लगा हू कि मुझे अपनी तदुरुस्ती के बारे मे इतनी लापरवाही करने का हक नही था। अब मैं देख रहा हू कि ऐसा करके मैंने कोई बडी वीरता का काम नही किया। अगर मैंने अपने साथ वे सब फिजूल सख्तिया न की होती, तो शायद कुछ और साल चल सकता था। दूसरे शब्दों मे, वामपथी बालव्याधि ही एक मुख्य खतरा है।"

वोलमर ने सोचा, "अभी तो यह ऐसी बात कह रहा है, मगर जरा पैर पर खडे होने दो और फिर वह सारी बातें भूल जायगा और उसे सिर्फ काम की ही याद रह जायगी।" मगर उसने कुछ कहा नही।

दूसरे रोज शाम को लेव बर्सेनेव आया। आधी रात को वह पावेल के यहा से गया तो उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसे अपना भाई मिल गया हो।

सवेरे के वक्त लोग कोर्चागिन के घर की छत पर रेडियो का एरियल लगाने लगे और लेव घर मे बैठा रेडियो तैयार करने लगा। वह काम करता जाता था और पावेल को अपनी पिछली जिन्दगी की दिलचस्प कहानिया सुनाता जाता था। पावेल उसको देख नही सकता था, मगर उसके बारे मे ताया ने पावेल को जो-कुछ बताया था, उसके आधार पर उसने समझ लिया था कि लेव एक लम्बा, सुनहरे बालो और नीली आखो वाला नौजवान है जिसकी भाव-भगिमाओ मे हृदय का आवेग भरा होता है। लेव से पहली बार मिलने पर पावेल ने अपने मन मे उसकी ठीक यही छवि उतारी थी।

शाम होते-होते कमरे मे रेडियो के तीन वॉल्व चमकने लगे। लेव ने गर्व से पावेल को इयरफोन पकडाया। तमाम आवाजें हवा मे भरी हुई थी। पोर्ट के ट्रासमिटर चिडियो की तरह चू-चू कर रहे थे और पास ही समुद्र पर किसी जहाज का वायरलेस डॉटो और डैशो की लहरें भेज रहा था। मगर इन सब तरह-तरह के शोरो और आवाजो के बीच से तार ने एक शात और आत्म-विश्वास से भरी हुई आवाज को पकड लिया

"यह मास्को है ।"

उस छोटे से वायरलेस ने दुनिया के तमाम हिस्सों के आठ ब्राडकास्टिंग स्टेशन पावेल की पहुच के भीतर ला दिये। वह जिन्दगी, जिससे अब वह वंचित कर दिया गया था, इयरफोन के अन्दर से अब फिर उसके पास तक पहुचने लगी। एक बार फिर वह जिन्दगी की तेज धडकन महसूस करने लगा।

पावेल की आखो मे खुशी की चमक देखकर थका हुआ बर्सेनेव सतोष से मुस्कराया।

उस बडे से मकान मे चारो ओर निस्तब्धता थी। ताया नीद मे बेचैनी से बडबडा रही थी। इन दिनों पावेल की मुलाकात अपनी बीवी से बहुत कम ही हो पाती थी। वह बहुत रात गये थकी और सर्दी से कापती हुई घर लौटती। उसका काम उसका ज्यादा से-ज्यादा समय लेता आ रहा था और शायद ही कभी उसको एक खाली शाम मिलती। इस चीज के बारे मे बर्सेनेव ने उससे जो-कुछ कहा था, उसकी याद पावेल को आई

"अगर किसी बोल्शेविक की बीवी भी पार्टी कामरेड हो, तो दोनो में शायद ही कभी भेंट हो पाती है। मगर इसके दो फायदे हैं एक तो वे कभी एक-दूसरे से ऊबते नही और दूसरे उन्हें झगडने का वक्त ही नही मिलता।"

और सचमुच पावेल आपत्ति करता भी तो किस आधार पर? आखिर इसी चीज की तो सभावना थी। एक वक्त था कि ताया की सभी शामें उसी को समर्पित थीं। तब उनके आपसी सम्बध मे ज्यादा गरमाहट, ज्यादा प्यार और नरमी थी। मगर तब वह केवल उसकी पत्नी थी, अब वह उसकी शिष्या और पार्टी कामरेड है।

वह जानता था कि ताया में जितनी ही राजनीतिक प्रौढता आयेगी, उतना ही कम वक्त वह दे सकेगी और उसने इस अनिवार्यता के आगे सिर झुका दिया।

उसे एक स्टडी सर्किल लेने का काम दिया गया और एक बार फिर शाम के वक्त घर मे आवाजें गूजने लगी। ये घटे, जो पावेल इन नौजवानो के साथ गुजारता था, उसके अदर नई शक्ति और नया उत्साह भर देते थे।

बाकी वक्त रेडियो सुनने में निकल जाता था, यहा तक कि खाने के वक्त भी उसकी मा को उसके हाथ से इयरफोन छुडाने में मुश्किल होती थी।

रेडियो उसे वह चीज देता था जो उसके अधेपन ने उससे छीन लिया—ज्ञान प्राप्त करने का अवसर। उसके अदर ज्ञान प्राप्त करने की यह जो जबर्दस्त भूख थी, उसके कारण वह उस दर्द को भूल जाता था जो उसके शरीर को तोडे डाल रहा था, उस आग को जो उसकी आखों में सलाखें चुभो रही थी और उन मुसीबतो को जिनका पहाड उसके ऊपर टूटा था।

जब पावेल की पीढी के बाद के नौजवान कम्युनिस्टो की सफलताओ की खबर मैगनितोगोर्स्क मे रेडियो पर आई तो पावेल को बेहद खुशी हुई।

उसकी सूनी आखो के आगे उन निर्मम वर्फ के तूफानो की तसवीर खिच गई, यूराल के उस तीखे जाडे-पाले की जो भूखे भेडियो की तरह क्रूर था। उसने हवा का तेज सनसनाना सुना और उडती हुई वर्फ के बीच से दूसरी पीढी के कोमसोमोलो की एक टुकडी को, आर्क लैम्पो की रोशनी मे, एक विशाल कारखाने की इमारत की छत पर, उस कारखाने को वर्फ के हमले से वचाने के काम मे लगा देखा। इसकी तुलना मे जगल का वह रेल की पटरी विछाने का काम, जिसमे कीव के कोमसोमोलो की पहली पीढी ने प्रकृति के खिलाफ लडाई लडी थी, कितना छोटा था! देश ने प्रगति की थी और उसके साथ ही जनता ने।

और नीपर नदी पर पानी ने लोहे के वाधो को तोड दिया था, आदमी और मशीनो को वहा ले गया था। और एक वार फिर कोमसोमोल नौजवानो ने उस दरार के वीच अपने को झोक दिया था और दो दिन तक उस निरकुश प्रवाह के खिलाफ डट कर मोर्चा लेते हुए उस पर काबू पा लिया था। इस महान सघर्ष मे एक नई पीढी आगे-आगे चल रही थी और इन वीरो मे पावेल ने अपने पुराने साथी पाक्रातोव का नाम सुना।

अठारह

मास्को मे पहले कुछ दिन वे लोग एक सस्था के पुराने कागजात रखने की जगह मे रहे। उसका प्रधान पावेल को एक खास क्लिनिक मे ठहराने का वदोवस्त कर रहा था।

अव पावेल की समझ मे आया कि तव वहादुरी कितनी आसान थी, जव उसके पास अपनी जवानी थी और एक मजवूत जिस्म था। लेकिन अव जव जिन्दगी ने उसे अपने फौलादी पजे मे दवोच लिया था, यह सव उसके लिए इज्जत की वात हो गई थी।

पावेल कोर्चागिन को मास्को आये डेढ साल हो गये थे—वर्णनातीत पीडा के अठारह महीने।

आख के क्लिनिक मे प्रोफेसर आवरवाक ने पावेल को साफ-साफ वतला दिया था कि उसकी आख की रोशनी लौटने की कोई उम्मीद नहीं है।

भविष्य मे जब सूजन गायब हो जायगी, तब मुमकिन है आपरेशन हो सके। तब तक उसने सूजन को रोकने के लिए एक आपरेशन की सलाह दी।

पावेल से जब उसकी अनुमति मागी गई, तो उसने डाक्टरो से कहा कि वे जो कुछ भी जरूरी समझें, करे।

तीन बार उसने मौत के स्याह डैनो के स्पर्श को अनुभव किया जब वह घटो आपरेशन की मेज पर लेटा रहा और डाक्टर का चाकू उसके थाइरॉयेड ग्लैन्ड को निकालने के लिए उसके गले मे घूमता रहता था। मगर पावेल कस कर जिन्दगी को पकडे हुए था और कई घटो की अनिश्चय-भरी प्रतीक्षा की यातना के बाद ताया फिर अपने प्रिय पावेल को पा लेती। उसके चेहरे पर मौत सरीखा पीलापन होता, मगर वह हमेशा की तरह सजीव, शात और नम्र दिखाई देता

"घबराओ मत प्यारी, मुझे मारना इतना आसान नही है। मैं जिन्दा रहूगा, अगर और किसी के लिए नही तो इसीलिए कि मैं इन विद्वान डाक्टरो की कही हुई तमाम बातो को उलट-पुलट कर रख देना चाहता हू। मेरी तन्दुरुस्ती के बारे मे वे जो कुछ कहते है, सब ठीक है, मगर उनकी सबसे बडी गलती यह है कि वे मुझे काम के लिए बिलकुल अयोग्य करार देकर घूर पर उठा कर रख देना चाहते हैं। देखूगा कि वे ऐसा कैसे कर पाते है।"

पावेल का सकल्प था कि नई जिन्दगी के निर्माताओ की कतार मे अपनी जगह लिये बिना वह नही रहेगा। अब उसे मालूम हो गया था कि उसे क्या करना चाहिए।

जाडा बीत गया था और खुली खिडकियो मे से बसन्त अन्दर घुस रहा था। पावेल का एक और ऑपरेशन हुआ और वह उससे जिन्दा निकल आया। उसने सकल्प किया कि वह कितना ही कमजोर क्यो न हो, अस्पताल मे अब और नही रहेगा। इतने महीनो तक लोगो की इतनी पीडा के बीच रहना, चारो तरफ ऐसे लोगो के रोने-कराहने से घिरे रहना, जिन लोगो के बचने की कोई उम्मीद न थी, खुद अपनी तकलीफ को सहने से ज्यादा मुश्किल था।

और इसलिए जब एक और ऑपरेशन का प्रस्ताव किया गया तो उसने रुखाई से जवाब दिया

"नही, अब नही। बहुत हो चुका। मैंने विज्ञान के लिए अपना काफी खून दे दिया। अब जो बचा है, उसके लिए मेरे पास दूसरा उपयोग है।"

उसी रोज पावेल ने केंद्रीय समिति को खत लिखा जिसमे उसने बतलाया कि चूकि इलाज की तलाश मे अब और भटकना बेकार है, इसलिए वह मास्को मे रहना चाहता है जहा उसकी बीवी इन दिनो काम करती है। यह पहला मौका था जब उसने पार्टी से सहायता मागी थी। उसकी दरखास्त मजूर

हो गई और मास्को की सोवियत ने उसको रहने की जगह दे दी। वह अस्पताल से चला तो उसके मन मे यही कामना थी कि फिर कभी वहा लौटना न पडे।

क्रोपोटिंस्काया के पास की एक खामोश गली मे उसका यह मामूली-सा कमरा उसके लिए शान-शौकत की सबसे ऊची चोटी था। और अक्सर रात को जागते समय पावेल को यह विश्वास करने मे कठिनाई होती कि अब अस्पताल सचमुच उसके लिए बीते दिनो की एक चीज हो गया था।

ताया अब तक पूरी पार्टी मेम्बर हो गई थी। वह बहुत अच्छी कार्यकर्ता थी और व्यक्तिगत जिन्दगी की दुखद घटनाओ के बावजूद कारखाने के सबसे आगे बढे हुए मजदूरो से किसी मामले मे पीछे नही रहती थी। उसके साथ के मजदूरो ने इस शात और विनम्र युवती के प्रति अपना सम्मान दिखलाने के लिए उसे कारखाने की ट्रेड यूनियन कमिटी का मेम्बर चुन लिया। पावेल को अपनी पत्नी के लिए गर्व होता था क्योंकि वह धीरे-धीरे एक सच्ची बोल्शेविक बनती जा रही थी और इससे पावेल को खुद अपनी तकलीफ को सहने मे मदद मिलती थी।

बाजानोवा किसी काम से मास्को आई और पावेल से मिलने गई। उन दोनो मे बडी देर तक बातें हुई। पावेल जब उसको अपनी योजनाए बतलाने लगा कि कैसे वह जल्दी ही नई जिन्दगी के निर्माताओ की कतार मे पहुच जायगा, तो उस वक्त वह आवेश से चचल हो उठा।

बाजानोवा ने पावेल की कनपटी पर चादी के तारो को देखा और धीमे से कहा

"साफ दिखाई देता है कि तुम्हे बहुत तकलीफो के बीच से गुजरना पडा है मगर तब भी तुम्हारा उत्साह जरा भी कम नहीं हुआ। तुम्हे और क्या चाहिए? मुझे खुशी है कि तुमने उस काम को शुरू करने का फैसला किया है जिसके लिए तुम पिछले पाच सालो से अपने-आपको तैयार करते आ रहे हो। मगर कैसे करोगे?"

पावेल आत्मविश्वास से मुस्कराया।

"कल मेरे दोस्त मुझे दफ्ती का एक स्टॅसिल लाकर देंगे जिसकी मदद से मैं लाइनो को एक-दूसरे पर चढाये बिना सीधे-सीधे लिख सकूगा। उसके बिना मैं लिख ही नही सकता। बहुत सोचने के बाद मुझे यह तदबीर सूझी। होगा यह कि दफ्ती के बडे सिरे मेरी पेन्सिल को सीधी लाइन से इधर-उधर बहकने न देंगे। इसमे क्या शक कि ऐसे बिना देखे लिखना, और जब कि तुम अपने लिखे हुए को पढ भी न सको, बहुत मुश्किल काम है। मगर नामुमकिन

नही। मैंने उसे करके देखा है और जानता हू कि किया जा सकता है। इसका तरीका समझने मे मुझे बहुत वक्त लगा, मगर अब मैंने धीरे-धीरे, हर अक्षर को एक-एक कर लिखना सीख लिया है और परिणाम काफी सतोपजनक है।"

और इस तरह पावेल ने काम शुरू किया।

उसने वीर कोतोव्स्की डिवीजन के बारे मे एक उपन्यास लिखने की बात सोची थी, उसका शीर्षक अपने-आप उसे सूझ गया तूफान के बेटे।

उसकी समूची जिन्दगी अब इस उपन्यास के लिखने मे ही लगी हुई थी। धीरे-धीरे एक-एक लाइन करके पन्ने निकलने लगे। काम करते वक्त वह अपनी तसवीरों की दुनिया मे पूरी तरह डूबा रहता और उसे अपने आस पास की किसी चीज का ध्यान न रह जाता। जीवन मे पहली बार उसे सृजन की पीडा की अनुभूति हुई और उसने उस क्षोभ और दर्द को महसूस किया जिसे कलाकार उस वक्त महसूस करता है जब जीते-जागते, कभी न भूलने वाले दृश्य, जो आखो के सामने खडे दिखते हैं, कागज पर उतरते ही बेजान और पीले लगने लगते हैं।

उसे अपना लिखा हुआ एक-एक शब्द याद रखना पडता। जरा-सी भी बाधा से उसके विचारो की शृखला टूट जाती और उसका काम रुक जाता। उसकी मा अपने बेटे के काम को भय और शका की दृष्टि से देखती थी।

कभी-कभी उसे पूरे पूरे सफे और यहा तक कि अध्याय भी अपनी याद से सुनाने पडते थे और ऐसे मौके आते थे जब उसकी मा को डर लगने लगता था कि पावेल का दिमाग खराब हो रहा है। उसके काम करते समय उसके पास जाने का मा को साहस न होता, मगर फर्श पर गिरे हुए कागजो को चुनते समय वह डरते-डरते पावेल से कहती

"मेरी बडी इच्छा है पावलुशा कि तुम और कोई काम करो। इस तरह जो तुम हरदम बैठे लिखा करते हो, यह तुम्हारे लिए अच्छी बात नही ..।"

पावेल हस कर उसकी शकाओ को उडा देता और अपनी बुढ्ढी मा को आश्वासन देता कि घबराने की कोई बात नही है। अभी उसका दिमाग ठीक है।

उसकी किताब के तीन अध्याय हो गये थे। पावेल ने उन्हे कोतोव्स्की डिवीजन के अपने पुराने सैनिक साथियो के पास राय के लिए ओदेसा भेजा और थोडे ही रोज बाद उसे एक खत मिला जिसमे उसके काम की तारीफ की गई थी। मगर उसकी पाडुलिपि लौटते समय डाक मे खो गई। छ महीनो के काम पर पानी फिर गया। यह उसके लिए एक भयानक आघात था। उसे बहुत क्षोभ हो रहा था कि उसने क्यो अपनी पाडुलिपि, जिसकी नकल भी उसके पास नही थी, बाहर भेजी। लेदेनेव को जब यह बात मालूम हुई तो उसने पावेल को डाटा ·

"तुम इतने लापरवाह कैसे हो गये ? मगर कोई बात नही, बीती बात को भूल जाओ, उस पर सिर धुनने से कोई लाभ नही। अब फिर से शुरू करो।"

"मगर इन्नोकेंती पावलोविच ! मेरी तो छ महीने की मेहनत लुट गई। हर रोज मैंने आठ-आठ घंटे काम किया था। जहन्नुम मे जायें सब।"

लेदेनेव ने अपने दोस्त को सात्वना देने की पूरी कोशिश की।

काम को दुबारा शुरू करने के अलावा कोई चारा न था। लेदेनेव ने उसे कागज लाकर दिया और पाडुलिपि के टाइप कराने मे उसकी मदद की। छ हफ्ते बाद पहला अध्याय दुबारा लिख लिया गया था।

कोर्चागिन के घर के ही एक हिस्से में अलेक्सियेव नाम का एक परिवार रहता था। उनका बडा लडका अलेक्जाडर कोमसोमोल की एक जिला कमिटी का मत्री था। उसकी बहन गालिया एक कारखाने के ट्रेनिंग स्कूल मे पढती थी। गालिया अठारह साल की एक खुशमिजाज लडकी थी। पावेल ने अपनी मा से कहा कि वह गालिया से बात करे और पता लगाये कि क्या वह पावेल के सेक्रेटरी की हैसियत से उसके काम मे मदद करने के लिए तैयार होगी। गालिया फौरन राजी हो गई। वह एक रोज मुस्कराती हुई आई और उसे बडी खुशी हुई जब उसे मालूम हुआ कि पावेल एक उपन्यास लिख रहा है।

उसने कहा, "कामरेड कोर्चागिन, मैं बडी खुशी से तुम्हारे काम मे हाथ बटाऊगी। पिता जी भी उन उबा देने वाली गश्ती चिट्ठियो से, जिनमें बतलाया जाता है कि पचायती घरो मे कैसे सफाई रखनी चाहिए, कही ज्यादा मजा इस काम मे आयेगा।"

उस दिन से पावेल का काम दुगनी तेजी से होने लगा। सचमुच एक महीने मे इतना काम हो गया कि पावेल को अचम्भा हुआ। गालिया के प्रसन्नचित्त सहयोग और सहानुभूति से उसे अपने काम में बडी मदद मिलती थी। उसकी पेन्सिल तेजी से कागज पर चलती जाती थी और जब कोई टुकडा उसे खास तौर पर अच्छा मालूम होता, तो वह उसे कई-कई बार पढती और पावेल की सफलता से उसे हार्दिक खुशी होती। उस घर मे सभवत वह अकेली थी जिसे पावेल के काम मे विश्वास था। बाकी लोग सोचते थे कि इसका कोई नतीजा न निकलेगा और पावेल मजबूर होकर बेकार बैठे रहने की हालत मे अपनी सूनी घडियो को भरने के लिए कुछ कर रहा है।

लेदेनेव किसी काम से शहर से बाहर गया हुआ था। मास्को लौटने पर उसने पहले के कुछ अध्याय पढे और कहा

"लिखे जाओ दोस्त। मुझे कोई सदेह नही कि तुम्हारी विजय होगी। कामरेड पावेल, तुम्हारे सामने महान सुख का साम्राज्य बिखरा हुआ है। मुझे पक्का विश्वास है कि तुम्हारा लडने वालो की कतार में वापस पहुचने का सपना जल्द ही पूरा होगा। उम्मीद मत हारो बेटा।"

वह बूढ़ा पावेल को इतने उत्साह मे देखकर बड़ा ही सतुष्ट था।

गालिया नियमित रूप से आती और उसकी पेन्सिल सफो पर तेजी से दौडती रहती और अविस्मरणीय अतीत के दृश्य फिर से जी उठते। उन क्षणो में जब पावेल स्मृतियों की बाढ मे बहता हुआ अपने विचारो मे खो जाता, तो गालिया को उसकी बरौनियो का फडकना दिखाई देता और उसकी आखो से पता चलता कि विचार कैसी तेजी से उसके आगे आ रहे हैं। इस बात पर विश्वास करने को जी नही होता कि वे आखें देख नही सकती थी क्योकि उसकी साफ बेदाग पुतलियों मे बहुत जान नजर आती थी।

दिन का काम खतम होने पर वह अपना लिखा हुआ पावेल को पढ कर सुनाती। पावेल गौर से उसे सुनता और उसकी पेशानी पर झुरिया पड जाती।

"तुम्हारी त्यौरी मे बल क्यो पड रहे है ? अच्छा नही हुआ क्या ?"

"नही गालिया, बात बनी नही।"

जो सफे उसे अच्छे न लगते, उन्हे वह फिर से खुद ही लिखता। स्टेन्सिल के उस तग, सकरे-से टुकडे के कारण उसे काम मे रुकावट होती और वह कभी-कभी झुझला कर उसे दूर फेक देता। और फिर जीवन से क्रुद्ध होकर, क्योंकि उसीने उसकी आख की रोशनी छीन ली थी, वह अपनी पेन्सिल को तोड देता और ओठो को चबाने लगता, यहा तक कि खून निकल आता।

जैसे-जैसे काम समाप्ति पर आ रहा था, निषिद्ध भावनाए उसकी चिर जागरूक इच्छाशक्ति के बधनो को तोडे डाल रही थी। ये निषिद्ध भावनाए थीं—उदासी और सीधी-सच्ची मानवीय अनुभूतिया, प्यार की और दुलार की अनुभूतिया, जिनका अधिकार अकेले उसको छोड कर दुनिया मे सब को था। मगर वह जानता था कि अगर उनमे से किसी एक के सामने भी उसने घुटना टेक दिया, तो उसका परिणाम अत्यत करुण होगा।

ताया जब रात को कारखाने से घर लौटती तो उस वक्त भी पावेल को काम करता पाती और मारिया याकोवलेवना मे बहुत धीमे धीमे दो-एक बात करके, ताकि पावेल के काम मे रुकावट न पडे, वह सोने के लिए चली जाती।

आखिरकार अतिम अध्याय लिखा गया। फिर कुछ दिन तक गालिया ने पावेल को पूरी किताब पढ कर सुनाई।

कल पाण्डुलिपि प्रादेशिक पार्टी कमिटी के सास्कृतिक विभाग के पास लेनिनग्राद भेजी जायगी। अगर किताब मजूर होती है, तो उसे प्रकाशक को दिया जायगा और फिर ।

इस ख्याल से उसका दिल जोर से धडकने लगा। अगर सब-कुछ ठीक-ठाक रहा तो उसकी नई जिन्दगी शुरू होगी जिसके लिए उसने बरसो हाडतोड मेहनत की थी, मगर हिम्मत न हारी थी।

किताब की किस्मत का फैसला खुद पावेल की किस्मत का फैसला होगा। अगर पाडुलिपि अस्वीकृत होती है, तो इसका मतलब होगा कि पावेल का जीवन शेष। अगर उसके कुछ अशों को ही खराब पाया जाता है और उसके दोषों को और मेहनत करके दूर किया जा सकता है, तो वह फिर फौरन अपने नये उद्योग में लग जायगा।

उसकी मा पांडुलिपि का पार्सल डाकखाने मे ले गई। आतुर प्रतीक्षा के दिन शुरू हुए। इसके पहले जीवन मे कभी पावेल ने किसी चिट्ठी के लिए ऐसी आतुर प्रतीक्षा न की थी और न कभी उसे इस दुविधा ने इतना सताया था कि पता नही कैसी चिट्ठी आये। सवेरे से लेकर शाम तक वह डाक का इन्तजार करता रहता मानो यही उसकी जिन्दगी का अकेला काम हो। मगर लेनिनग्राद से कोई समाचार न आया।

प्रकाशको की इस चुप्पी से पावेल को डर मालूम होने लगा। रोज-ब-रोज उसकी यह आशका बढती गई और पावेल ने इस बात को अपने तई स्वीकार किया कि किताब के पूरी तरह अस्वीकृत किये जाने के बाद वह जी नहीं सकेगा। यह चीज उसकी सहन-शक्ति के बाहर होगी। तब जीने के लिए उसके पास कोई कारण ही नही बचेगा।

ऐसे क्षणों में उसे समुद्र के किनारे वाली पहाडी के उस पार्क की याद आती और वह यही सवाल अपने से बार-बार पूछता

"क्या तुमने इस फौलादी शिकजे से बाहर निकलने और लडने वालो की कतार में वापस पहुचने की, अपने जीवन को उपयोगी बनाने की, हर मुमकिन कोशिश की ?"

और उसे जवाब देना पडता· "हा, मैं समझता हू कि मैंने सब-कुछ किया।"

आखिरकार जब प्रतीक्षा की पीडा प्राय· असह्य हो गई तो उसकी मा, जिसे अपने बेटे के बराबर ही वह पीडा हो रही थी, एक रोज दौडती और चिल्लाती हुई कमरे में आई.

यह प्रादेशिक कमिटी का तार था। तार की सक्षिप्त भाषा मे लिखा हुआ था : "उपन्यास बहुत पसद किया गया। प्रकाशको को दे दिया गया। सफलता पर बधाई।"

उसका दिल तेजी से धडक रहा था। उसका हमेशा-हमेशा का सजोया हुआ सपना पूरा हो रहा था। वह फौलादी शिकजा छिन्न-भिन्न पडा था और अब एक नये हथियार से लैस होकर पावेल एक बार फिर जिन्दगी के मैदान मे लडनेवालों की कतार में वापस आ गया था।